THE BOOK WAS DRENCHED

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180823

UNIVERSAL
LIBRARY

जननायक

महाकाव्य

सम्पूर्ण

गाँधी

चरित्र

रचयिता

रघुवीर शरण 'मित्र'

भूमिका-लेखक

देशरत्न डा० राजेन्द्रप्रसाद



प्रकाशक—
अ० भा० राष्ट्रीय साहित्य
प्रकाशन परिषद्,
मेरठ।

प्रथम संस्करण
८१वीं गांधी जयन्ती
२ अक्तूबर १९४९

मूल्य १५)

मुद्रक—
मदन मोहन बी. ए.
निष्काम प्रेस, मेरठ।


अमृत के दानी को अर्घ्य



उस दिन सन्ध्या समय जब शून्य गी रो रहा था,
तब जिसने मेघों के मन्दिर में आंसो
के अर्घ्य से यह शब्दमय
अमृत का झरना दिया
उस महिमामयी
माँ की एक
झांकी

भूमिका

कई महीने बीत चुके "मित्र जी" ने जब "जननायक" का कुछ अंश पढ़ कर मुझे सुनाया था तो सुन कर मेरे हृदय पर अच्छा प्रभाव पड़ा था. और मैंने उनका आग्रह मानकर कहा था कि जब यह पुस्तक छप कर तैयार हो जायेगी तो मैं चन्द शब्द भूमिका के रूप में लिख दूँगा।

इसी आशा से जैसे जैसे पुस्तक छपती गयी वह मेरे पास छपे फारम भेजते गये पर समयाभाव के कारण मैं उसे पढ़ नहीं पाया। अब जब उसके प्रकाशित होने के दिन आ गये तो मैंने उसे उलट पुलट कर देखा।

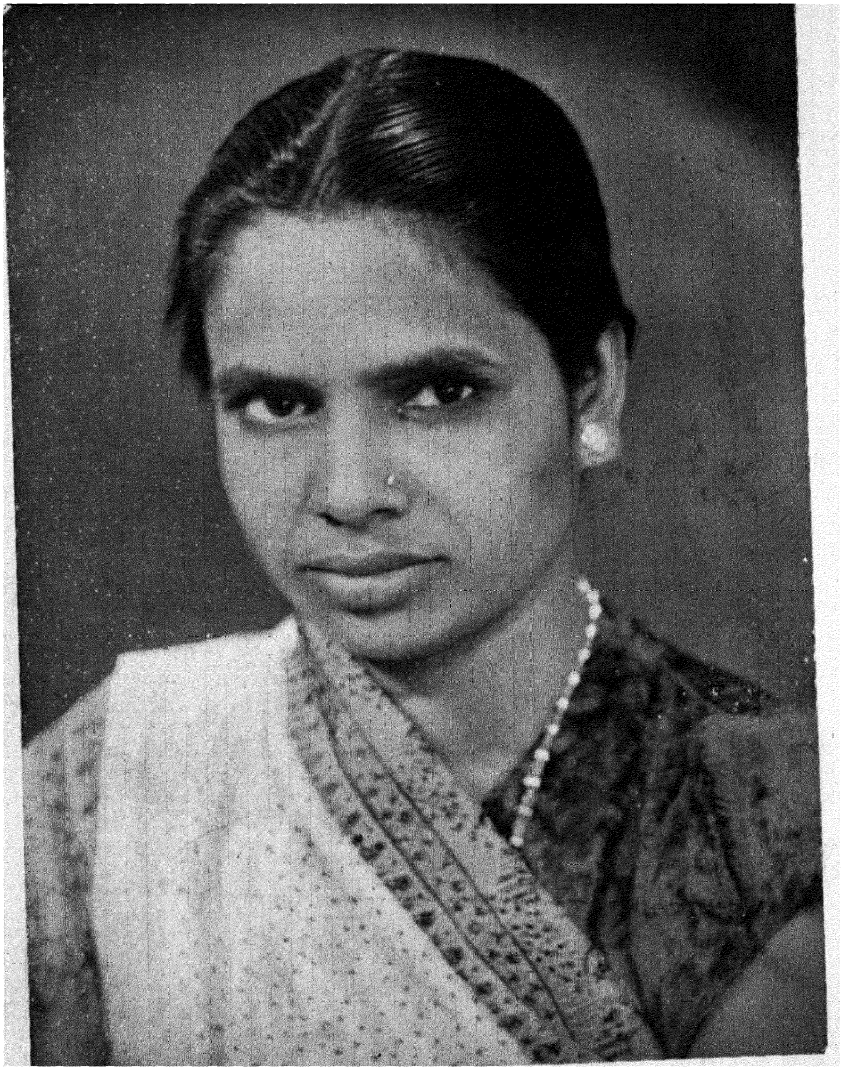
मैं कवि नहीं हूँ और न अपने को कविता का पारखी मानता हूँ। जिस तरह साधारण मनुष्य कविता पढ़ते हैं और उसमें रसास्वादन पाते हैं, वैसा ही मैं भी करता हूँ। मुझे इस में रस मिला।

यह केवल एक छन्दबद्ध महात्मा गाँधी जी के जीवन की कहानी मात्र नहीं है। इसमें ओज है. सुन्दर वर्णन है, करुणा है, और ललकार भी है।

आशा है पाठक इसे अपनायेंगे।

जवाहरलाल

प्रवास : पिलानी
२८. ६. ४६



दिवंगता पुष्पा 'भारती'

तुम तो मुझे साधना दे गईं–
पर मैं मर्त्यलोक का बुलबुला तुम्हें क्या दूँ ?
केवल ईश्वर का नाम ही है मेरे पास–
लो उसे सादर .....

प्राण का दीपक बुझा कर,
सो गई कविता चिता पर,
किन्तु उसकी एक अद्भुत ज्योति जग में जल रही है।

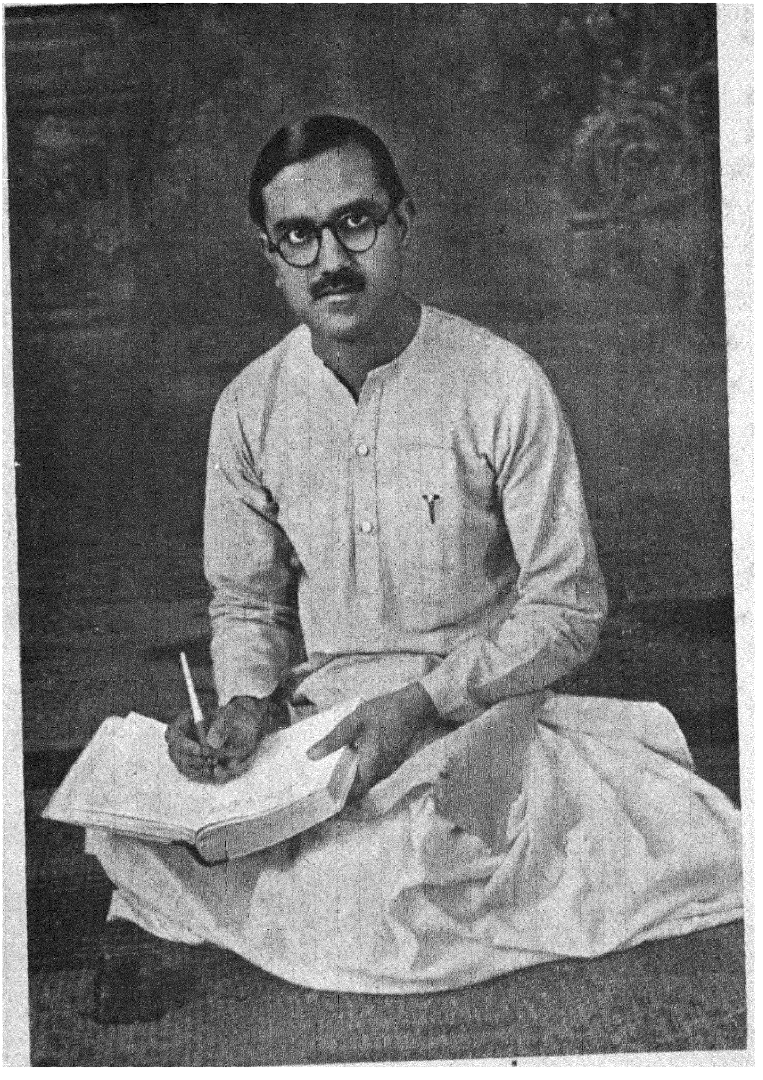
हृदय की जलती चिता पर—
आँसुओं का काव्य लेकर—
ढूँढती गति एक ज़िन्दा लाश जग में चल रही है।

महाकाव्य लिखते लिखते एक दिन मैंने 'पुष्पा' से कहा—
कहते हैं महाकाव्य की पूर्त्ति पर किसी निकटवर्ती की मृत्यु होती है।

उसने बिना एक पल भी सोचे तुरन्त कहा—
मेरी मृत्यु होगी; क्योंकि मैं ही आपके सबसे अधिक निकट हूँ।

और जब महाकाव्य के अन्तिम मृत्यु सर्ग में अन्तिम पद्य लिख रहा था तो मेरी सहचरी इस संसार से विदा हो गई। पर देह से दूर होकर वह आत्मा में तादात्म्य हो गई है। तब मैं उसे मिट्टी के उस देह में देखता था जिसे हम गंगा-तट पर जला आये और अब वह मुझे सब में दिखाई देती है।

—**'मित्र'**



"मित्र"

अधूरी बात

समय की गति पर निर्मिति के पल महात्मा के पगों से आते हैं। पूजा के पद-पद्म ही मर्त्यलोक में मुखरित हैं। जलज और जीवन लहरों से अलग कहें या लहरों में! प्रकाश की किरणें तिमिर में कहें या तिमिर से पृथक्! तमिस्रा ज्योति को बुझाती नहीं, अपितु प्रज्ज्वलित करती है। दीपक दिन में नहीं, रात में प्रकाश करता है। उजाला यह नहीं देखता कि मैं अँधेरे पर प्रकाश क्यों कर रहा हूँ! वह तो खँडहर हो या प्रासाद सभी पर अपनी किरणें बिखेरता है। दीपमालिका की रात अँधेरी होते हुए भी पूज्य है, क्योंकि प्रकाश ने उसे स्वयम् में मिला लिया, और जब प्रकाश तम का तादात्म्य स्वयम् में कर लेता है तभी तो दिन निकलता है। रात दिन में समा जाती है। आलिंगन में बँधी हुई वह किसी को दिखाई नहीं देती। तथा जब दिन दूर चला जाता है तो रात जागती हुई ओस के आँसू बहाती रहती है। अन्धकार के अत्याचारों में वह अग्नि-परीक्षा देती है। बस तभी विरह-वेदना से पिँघल प्रकाश महामानव के रूप में दर्शन देता है। उन प्रकाशमान पगों के आते ही धरती पर अँधेरा नहीं रहता।

मर्त्यलोक में वे पग कभी कभी आते हैं। युगों के बाद अनन्त के वे पैर प्राप्त होते हैं। पूजा के वे चरण ही तो समष्टि हैं। उस व्यष्टि में समष्टि व्याप्त रहती है। धरा की गोलाकार गति पर भूत भविष्यत् वर्तमान का नृत्य क्या कभी किसी ने पहिचाना है? एक ही के अनेक रूपों को हम भिन्नता कहते हैं। छाया का सुख और रहस्य का आनन्द अलौकिक आवर्त्तन ही तो है। प्रदर्शन दृश्य है एवं अदृश्य अनुभूति की पहुँच। जहाँ भावों की पहेली कल्पना नहीं रहती, साकार होती है; जहाँ सब चित्र बोलने लगते हैं— वहीं तो आत्मा का प्रेम में विस्तार एवं तादात्म्य होता है। एवं जब कला प्रेम की अमूल्य निधि ले अनन्त कलाकार में लीन होना चाहती है, तब उसी कलात्मक के पैर पखारने के लिये हृदय से गंगा निकलती है; जिसे हम कविता कहते हैं। प्रवाह होता है उसमें, भाव होते हैं उसमें, जीवन की अभिव्यक्ति और भक्ति होती है, नवीनता होती है, शाश्वत अनुभूति का उदय रहता है। कला की क्रीड़ा एवं पीड़ा पर चिरन्तन चाह चुपके चुपके गाती है। बस यही चाह आपके मंगलमय हाथों में समर्पित महाकाव्य की भूमि है।

समय ने अनेकों आवर्त्तन और परिवर्त्तन देखे हैं। बड़े बड़े पद-चिह्न हैं इस पृथ्वी पर। परिस्थितियों के अनुसार महापुरुषों का आविर्भाव होता रहा है। बड़े बड़े आदर्श हुए हैं यहाँ। जिनमें एक सर्वतोमुखी आदर्श महात्मा गाँधी हैं। जिनका उदय अँधेरे में उजाले की तरह हुआ। मेरे विश्वास और अध्ययन में तो वे अवतारों से भी ऊपर आये हैं। भक्त भगवान् से बढ़ भी जाते हैं।

पुण्यों के प्रताप से हमने जननायक को सगुण देखा। उनके रचनात्मक चरण हमारे हृदयों पर अंकित हैं। उनके अमृत भरे दयापूर्ण नेत्र नयनों में बस गये हैं। उस हृदय के मधु में मधुरिमा से मधुर संजीवन है। उसकी भाषा में शाश्वत भावनायें हैं। उसकी रसना पर सरस्वती विराजती है। उसकी बुद्धि में बुद्ध हैं। उस में वह सब है जिसे हम अच्छा कहते हैं। वह स्वयम् दीपक बन कर जला। शलभ उसमें समाने लगे। जन और जननायक एकात्मा बन गये। व्यष्टि में समष्टि और समष्टि में व्यष्टि वही है।

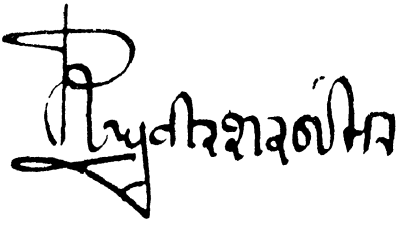
उस महात्मा को मैंने भी तब पहिचाना जब उसे धरा से आकाश के देवता उठा ले गये, जब उसके रक्त से हम ने अपना आँचल भिगो लिया।

हे राम! यह तूने क्या किया? एक हाथ में काव्य दिया और दूसरे में चिता की राख। 'जननायक' की निर्मिति और देवी 'भारती' स्वप्न हो गई। सत्य तो कभी स्वप्न नहीं होता प्रभु!

इस निर्मम दुनिया में मैं दोषों का कीड़ा तेरी निष्काम भक्ति टटोल रहा हूँ।

सत्य ही मैं सहचरी पुष्पा को पाऊँ। बापू के दर्शन बापू के आदर्शों में करूँ। मैं मँझधार की लहरों से लड़ता हुआ तुझे टेर रहा हूँ। हे ईश्वर! तू मुझे अपनी शरण में ले!

काव्य तो रचा पर मेरी भूमिका अधूरी है।



शब्द मात्र

ईश्वर का तो सारा प्रसाद ही है। पर प्रसाद के मूर्त्त स्वरूप मनुष्य ही हैं। मैं मर्त्यलोक का तुच्छ प्राणी कृपात्रों की पगडण्डी पर चल रहा हूँ। पूज्य राजेन्द्र प्रसाद जी ने अपने व्यस्त राजनैतिक जीवन से समय निकाल भूमिका लिखने की कृपा की। भाई भवानी ने मुख पृष्ठ का चित्र रचा। 'कलाकुञ्ज' ने भी चित्रों में सहयोग दिया। मान्य मदन मोहन जी का मुद्रण-प्रयास सराहनीय है। मेरे अनुज परमात्मा शरण के अथक प्रयास से यह काव्य प्रस्तुत हो सका है।

इन सब के प्रति धन्यवाद तो बहुत छोटा है; और श्रद्धा मैं अपने हृदय में रखता हूँ।

—रघुवीरशरण 'मित्र'

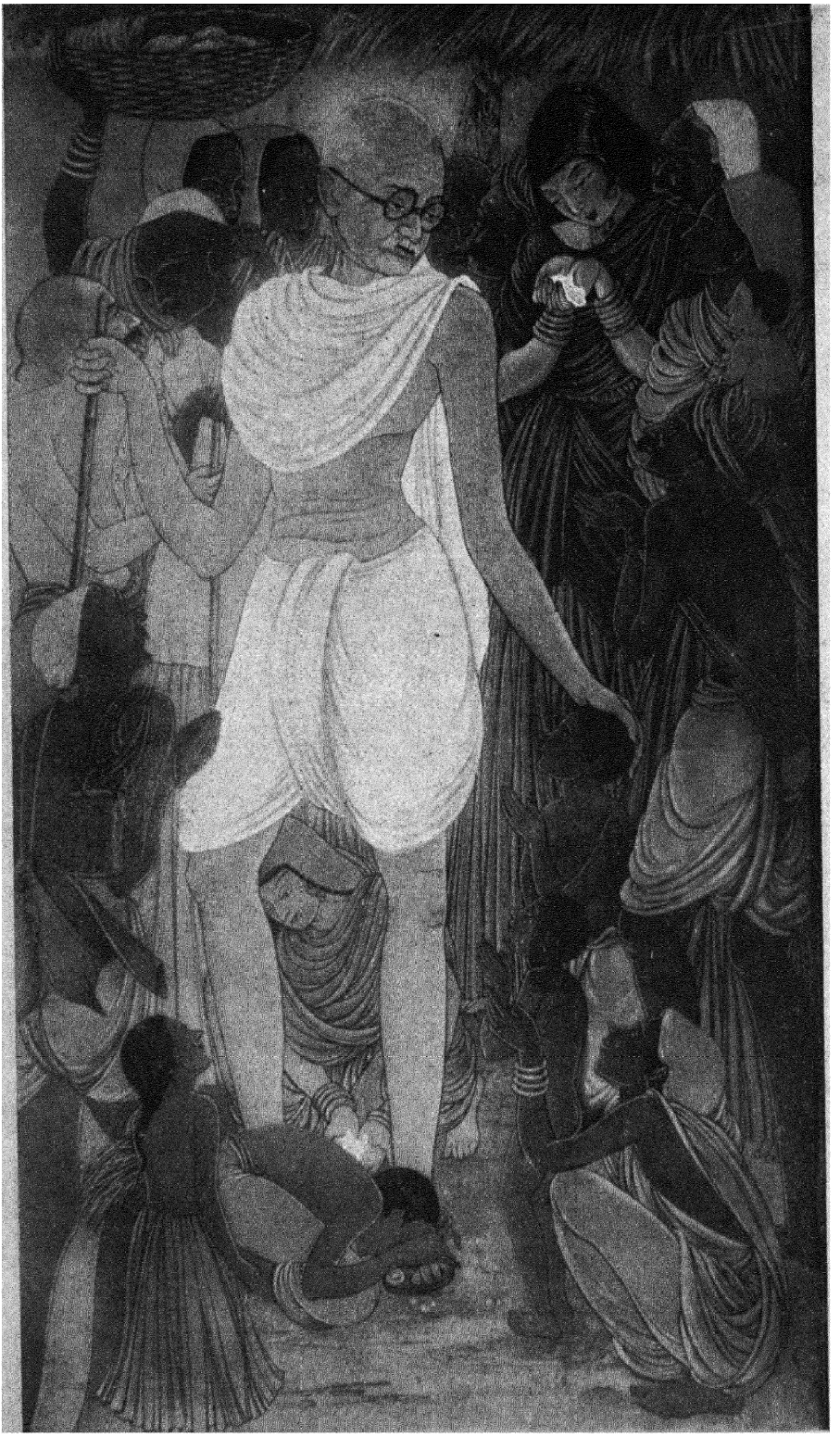
क्रम

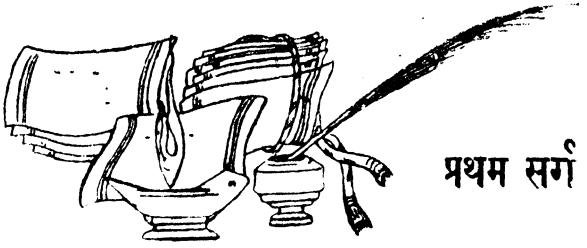
				पृष्ठ
प्रथम सर्ग	...	...	...	१५
द्वितीय सग	...	...	...	३७
तृतीय सर्ग	...	...	...	४६
चतुर्थ सर्ग	...	...	...	६०
पंचम सर्ग	...	...	...	७०
षष्टम सर्ग	...	...	...	८१
सप्तम सर्ग	...	...	...	६६
अष्टम सर्ग	...	...	...	११६
नवम सर्ग	...	...	...	१२६
दशम सर्ग	...	...	...	१३६
एकादश सर्ग	...	...	...	१५६
द्वादश सर्ग	...	...	...	१७८
त्रयोदश सर्ग	...	...	...	१६३
चतुर्दश सर्ग	...	...	...	२०६
पंचदश सर्ग	...	...	...	२२५
षोडष सर्ग	...	...	...	२३७
सप्तदश सर्ग	...	...	...	२५३
अष्टादश सर्ग	...	...	...	२८१
ऊनविंश सर्ग	...	...	...	२६३
विंश सर्ग	...	...	...	३०७
एकविंश सर्ग	...	...	...	३१८
द्वाविंश सर्ग	...	...	...	३३२
त्रयोविंश सग	...	...	...	३५१
चतुर्विंश सर्ग	...	...	...	३७१

पृष्ठ

पंचविंश सर्ग ४०२
षड्विंश सर्ग ४२७
सप्तविंश सर्ग ४५२
अष्टाविंश सर्ग ४६७
ऊनत्रिंश सर्ग ४८४
त्रिंश सर्ग ५२३
एकत्रिंश सर्ग ५५५

जननायक





प्रथम सर्ग



जिनकी चरण-धूलि चन्दन है, दीपक ! उनके चरणों में जल।
जिनकी पूजा में प्रसाद है, वाणी ! उनके मन्दिर में चल॥
जहाँ अनेक एक में मिलते, काव्य-कला ! उस सङ्गम पर गा।
आँखें अर्घ्य चढ़ाने आईं, भक्ति ! रसामृत-गङ्गा भर गा॥

आँसू वे हैं जो आँचल में, मानस के मोती बन जायें।
मोती वे हैं जिनकी माला, हंस आरती को पहिनायें॥
पूजा उसकी जो विष पीले, नर से नारायण बन जाये।
हलचल में सन्तरण वही जो, तरणि बिना तट तक खे लाये॥

जीवन वह जो पीड़ा में भी, शान्त रहे मुस्काता जाये।
जीवन के अनमोल पलों से, खिलता और खिलाता जाये॥
जीवन और जवानी वह है, लहरों के प्रतिकूल चले जो।
मैं तो दीपक उसे कहूँगा, झंझाओं के बीच जले जो॥

पंकज पर परमेश्वर देखें, सूर्य खड़ा हो छाया ताने।
प्यासी धरती की पीड़ा से, आँखें चलें मेघ बरसाने॥
निर्मिति वह है जो कि कला से, युग युग का प्रकाश बरसादे।
वर्षा वह है जो बंजर में, 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' लादे॥

कवि वह है जिसके जीवन में, दीप-शिखा जल करे उजाला।
सुन्दरता वह नित्य नयी जो, अन्धकार में गूँथे माला॥
गति वह है जो समय बदल दे, प्रेम वही जो प्यास बढ़ाये।
विरह वही जो रचना रच दे, पीर वही जो पार लगाये॥







जनायक

प्रेम भक्ति से जड़ चेतन में, मंगल की चिर चाह लिये हूँ।
बल है बस आँखों के जल का, खारी जल मथ अमृत पिये हूँ॥
श्री गणेश, शारदे, नेति, जय! मेरी पूजा से मुस्कादो।
थोथी पूजा की थाली में, भावों के मोती बरसादो॥



स्नेह जल चुका था दीपों का, नयन ज्योति को तरस रहे थे।
आहों से कम्पित धरती पर, रह रह आँसू बरस रहे थे॥
कलियुग की काली रातों में, घिरा हुआ था घोर अँधेरा।
पापों से पीड़ित मानवता, ढूँढ रही थी स्वर्ण-सवेरा॥
तड़प रही थी प्रकृति पतन में, हृदय रक्त में डूब रहे थे।
झुके हुए थे नयन शर्म से, प्रेम-पन्थ से ऊब रहे थे॥
अमर पुत्र अमरत्व छोड़ कर, धरा रक्त से सींच रहे थे।
जग-जननी धरती माता की, खाल पुत्र ही खींच रहे थे॥
भारत माता सिसक रही थी, मानवता मुँह ढक रोती थी।
जड़ के पिँजरे में चेतनता, आँखें बन्द किये सोती थी॥
पशुता के नंगे नर्त्तन में, विश्व-वेदना चसक रही थी।
क्रान्ति, भ्रान्ति में शान्ति बन्द थी, कवि की वाणी कसक रही थी॥
सिले हुए थे ओठ झूठ से, मन पिँजरों में बन्द पड़े थे।
'तेरह तीन हो गये थे हम', तम के तीखे शूल खड़े थे॥
भूल रहे थे, भटक रहे थे, खटक रहे थे नयन नयन में।
पश्चिम में दिनमान बन्द था, पराधीन थे जलज शयन में॥
पहिन दासता की ज़ंजीरें, झूठे टुकड़े चबा रहे थे।
राम नाम सब भूल काम में, बड़े बड़े देवता बहे थे॥
'हाय! हाय! हिंसा! हिंसा!' में, हक़ की चिता जलाते थे हम।
कृषकों की मूखी टटरी पर, पैने दाँत चलाते थे हम॥
सेवा करने वालों को हम, 'दुर! दुर! दुर!' दुतकार रहे थे।
'हट भंगी! हट वे चमार! हट', हम मद में फटकार रहे थे॥
श्रमिकों के श्रम-कण पी पी कर, खूनी प्यास बुझाते थे हम।
विधवाओं के व्यथित हृदय पर, घी के दीप जलाते थे हम॥





मुँह पर कुछ मन में कुछ रखकर, द्वेष- अग्नि में जलते थे हम।
उलटे सीधे जाल डाल कर, सच्चाई को छलते थे हम॥
ग्रामीणों की झोंपड़ियों पर, अपने महल खड़े करते थे।
सब कुछ था लेकिन सब देकर, सब के सब भूखे मरते थे॥

पश्चिम की झूठी सजधज में, कठपुतली से नाच रहे थे।
क्रूद्ध सर्पिणी सी लहरों में, बड़े बड़े तैराक बहे थे॥
हिंसा की पतवार हाथ ले, खूनी पाल डाल पापों की—
माँझी बिना खोल दी तरणी, अग्नि जल उठी अभिशापों की॥

प्रलयङ्कर तूफ़ान उठे थे, लगी डूबने नाव हमारी।
तट था कोसों दूर, फूट गे— भरी हुई थी नौका सारी॥
डूब रही थी नाव भँवर में, तट पर कोई तप करती थी।
मन से प्रभु के चरण पकड़ कर, चरणों में दीपक धरती थी॥

ईश्वर की अर्चना साधना, करती थी निष्काम भाव से।
पूजा करती, फूल चढ़ाती, हाथ जोड़ती बड़े चाव से॥
चौमासों में व्रत करती यह, सूर्य देख कर ही खाऊँगी।
जब तक सूर्य नहीं निकलेगा, तब तक प्रभु के गुण गाऊँगी॥

श्रद्धा और भक्ति से दिव्या, तप व्रत साधे जप करती थी।
कभी चढ़ाती फूल कूल पर, कभी पगों में सर धरती थी॥
उस देवी ने तट पर से जब, देखी जग की नाव भँवर में।
सहसा नाव पार करने को, पहुँचे उसके भाव भँवर में॥

'पुतलीबाई' की पुतली में, दुनिया की तस्वीर खिँच गई।
दयामूर्त्ति के दिव्य दृगों में, दुखियों की तक़दीर खिँच गई॥
उसकी आँखों के आगे आ, दुनिया 'त्राहि! त्राहि!' चिल्लाई।
मानो दुःखों ने दिव्या को, अपनी सारी व्यथा सुनाई॥
मानो मन ने माँ के आगे, रोया अपना सारा रोदन।
देख देश की दशा दया से— दयामूर्त्ति का पिँघल गया मन॥
डूब रही थी नाव, तैरते- चले भाव-तृण राम-नाम से।
उसको कौन डुबा सकता है, जिसकी लौ लग गई राम से॥









अच्छे कर्म किये पुतली ने, राम नाम से ध्यान लगाया।
वर में 'करमचन्द' को पाकर, दुनिया भर में दीप जलाया॥
स्नेह भरी हंसों सी जोड़ी, बनी भाग्य-लिपि मानव मन की।
मरणासन्न तृषित जनता को, ज्योति दिखाई दी जीवन की॥

दम्पति की दीपित दिवि द्युति में, दीनबन्धु ने दया दिखाई।
बजी काम की मधुर बाँसुरी, यौवन मद ने ली अँगड़ाई॥
सब कहते हैं काम बुरा है, किन्तु काम ही काम आ गया।
कहते हैं अभिशाप जिसे सब, वह बन कर वरदान छा गया॥

जब मनोज की केलि कला में, दुइ दोनों ने मार हटाई।
निराकार साकार ज्योति बन, दम्पति की गोदी में आई॥
'करमचन्द' 'पुतलीबाई' के, मन मोहन ने जन्म ले लिया।
ईश्वर ने सारी दुनिया को, युग युग का वरदान दे दिया॥

खेले तीनों लोक गोद में, खिला उजाला अन्धकार में।
संवत् उन्निस सौ पचीस में, रूप धरा उस निराकार ने॥
आश्विन बदी द्वादशी तिथि को, उगने वाला सूर्य धन्य है!
उस अनन्त को अभिवादन है— जो जनता है, जो अनन्य है॥

जिस दिन जन्म लिया मोहन ने, शशि ने सुधा-धार बरसाई।
मीठे मीठे गाने गा गा, पक्षी देने लगे बधाई॥
निशि ने कर शृङ्गार चाव से, जन्मोत्सव में दीप जलाये।
कवि अपने कोमल भावों की, माला गूँथ गूँथ कर लाये॥

चली सुगन्धित वायु विश्व में, मानो उसको 'राम' मिल गये।
मंगल गाते हुए घिरे घन, स्वागत में सब फूल खिल गये॥
मानो पाप भस्म करने को, आग उगलते आँसू आये।
या जननी की व्यथा देखकर, अम्बर ने मोती बरसाये॥

आज बधाई, आज बधाई, सरिताओं की लहरें बोलीं।
गाओ गाओ, खुशी मनाओ, नगर नगर की नहरें बोलीं॥
स्वागत, स्वागत, स्वागत, स्वागत! हरी हरी हरियाली बोली।
धन्य आज जग! धन्य आज जग! नभ से नई दिवाली बोली॥



धन्य ! 'सुदामापुरी' जहाँ पर— मन-मोहन ने जन्म ले लिया।
माता पिता धन्य ! वे जिनको— प्रभु ने दिव्य प्रकाश दे दिया ॥
धन्य ! 'पोरबन्दर' की मिट्टी— मोहन जहाँ खेलते डोले।
धन्य ! धन्य !! वे सब जिन जिन से—मोहन तुतला तुतला बोले ॥

जिसमें चित्र लिखे मोहन के, उस मिट्टी का प्यार धन्य है।
जिसमें जन्म लिया मोहन ने, वह 'गाँधी परिवार' धन्य है ॥
आँखों के तारे मोहन को, पुतलीबाई लगी खिलाने।
बड़े प्यार से झोंटे दे दे, मन-मोहन को लगी झुलाने ॥

कभी पिलाती दूध, कभी वह — चूम चूम कर शाक चटाती।
कभी पिता की गोदी में से, माँ मोहन को पास बुलाती ॥
कभी बदलती वस्त्र, कभी वह— अच्छी अच्छी बात सुनाती।
कभी लगाती चपत, कभी वह— अपनी छाती से चिपटाती ॥

कभी लोरियाँ दे दे कर माँ, कहती, 'मेरे मुन्ना ! सो जा।'
कभी प्यार से वर देती यह, 'तू भी 'राम' 'कृष्ण' सा हो जा' ॥
कभी बाँधती हाथ खाट से, मन-मोहन के दोष देख वह।
मुँह से कहती "मर जा, गड़ जा", मन से कहती "सदा अमर रह ॥"

सब कुछ खोकर सब कुछ मिलता, माँ सा प्यार नहीं मिलता है।
रवि से खिलते कमल, पुत्र से— माँ का मुरझा मन खिलता है ॥
भूलभुलैया में भूले थे, शाश्वत को पहिचान न पाये।
ले माँ ! 'पकल' 'दौलता' हूँ मैं, शिश ने माँ को खेल खिलाये ॥

मृत्युलोक में नेति नित्य की, बाल-चरित में बहुत कथायें।
उस चरित्र की इति न कभी भी, चाहे कितने ही कवि गायें ॥
उन मीठे तुतले बोलों में, भरा वेद रस सार शान्ति का।
भक्ति ज्ञान के हृदय दीप से, जल जाता है भेद भ्रान्ति का ॥

मीठे मीठे हृदय-निधि के तोतले बोल भाते।
प्यारे प्यारे कमल-कुल से तैरते हंस आते ॥
ढूँढा मोती मनन मन के, हंस लाया मराली !
गोदी में ले सुमन शिशु को गीत गा गा उजाली !







लीला देखो परम प्रिय की, खेल कैसे खिलाते ।
वीणा जैसी पकड़ उँगली, बीन माँ को सुनाते ॥
चन्दा मामा 'पकल' मुझको ! दौड़ता, देखता है ।
गंगा जैसी मधुरगति में, चाँद सा खेलता है ॥

जाओ मेरे हृदय ! पढ़ने, भेजती माँ सवेरे ।
पाओ विद्या नयन-गुरु से, दूर होंगे अँधेरे ॥
जाओ पूजो चरण गुरु के, बात मानो बड़ों की ।
वे ही तो हैं जनक जन के, जान हैं वे जड़ों की ॥

जो पाते हैं प्रणय गुरु का, ज्ञान की नाव पाते ।
तूफानों में प्रलय-जल में, तैरते पार जाते ॥
काले काले कुलिश घन भी, ज्ञान से हारते हैं ।
ज्ञानी ही तो निविड़ तम को, प्रेम से मारते हैं ॥



धन्य ! धन्य !! वे मित्र जिन्होंके, मोहन साथ रहे बचपन में ।
धन्य ! धन्य !! वे नयन जिन्होंने, किये मुक्ति-दर्शन मोहन में ॥
मानो देशभक्ति ने उस दिन, पहिन लिया बालक का चोला ।
मानो फिर 'प्रह्लाद' जन्म ले, बालक के चोले में बोला ॥

मानो 'हरिश्चन्द्र' का सच फिर, प्रभु को देने लगा परीक्षा ।
सात वर्ष का मोहन बालक, गुरु से लेने पहुँचा दीक्षा ॥
व्यर्थ खेल में मन न लगाता, पढ़ने लगा पाठशाला में ।
डरता रहा झूठ से बालक, गूँथा रहा सच की माला में ॥

ईर्ष्या-ज्वाला बुझा स्नेह से, गुरु पर श्रद्धा-सुमन चढ़ाये ।
जाग उठी जिज्ञासा मन में, सङ्कल्पों के बादल आये ॥
बुरी बुरी बातों को मोहन, दूर दूर ही रहा भगाता ।
झेंपा करता था बच्चों में, छेड़खानियों से शर्माता ॥

विद्यालय में एक दिवस जब, 'श्री जाईल्स महोदय' आये ।
पहली कक्षा के छात्रों से, शब्द पट्टियों पर लिखवाये ॥
मन-मोहन ने उन शब्दों में, 'केटिल' शब्द अशुद्ध लिख लिया ।
और सभी ने टीप टीप कर, शब्द स्लेट पर शुद्ध लिख दिया ॥



तूने टीप न शुद्ध लिखा क्यों ? शिक्षक ने यह भूल बताई ।
स्लेट देख लेता दिवान की, अरे बावले ! मूर्ख ! 'गदाई' !
मैंने मार बूट की ठोकर, तुझ को चुपके से चेताया ।
सब समझे संकेत देख कर, तेरी नहीं समझ में आया ॥

मोहन बोला — आप उस समय, देख रेख को घूम रहे थे ।
चोरी करना महापाप है, तुमने ही ये शब्द कहे थे ॥
यदि दिवान की स्लेट देख कर, 'कैटिल' शब्द शुद्ध लिख लेता ।
'श्री जाईल्स' निरीक्षक को मैं, अन्धा होकर धोखा देता ॥

चोरी नहीं करूँगा गुरु जी ! ग़लती को स्वीकार करूँगा ।
चाहे मुझे जला दो ज़िन्दा, सच्चाई से प्यार करूँगा ॥
जिस में 'हरिश्चन्द्र' राजा थे, मैं हूँ उसी देश का बालक ।
मैं भी 'ध्रुव' 'प्रह्लाद' बनूँगा, शान्ति, अहिंसा, सत का पालक ॥

वह सच्चा बालक जो जग की, तृष्णाओं में नहीं भटकता ।
इस दुनिया की गरल घूँट से, वह भी हाय ! नहीं बच सकता ॥
वह भी जग से बच न सका जो, फूक फूक कर पग धरता था ।
वह भोला बालक जो माँ से, तुतला कर बातें करता था ॥

वह जो अभी खेल मिट्टी में, कपड़े मैले कर लेता था ।
ब्याह-जाल में डाल दिया वह, जो 'माँ ! माँ !' कह रो देता था ॥
खेल समझ कर ब्याह, चाव में — मोहन फूले नहीं समाये ।
मैं यह नया खेल खेलूँगा, मन में नये भाव ये आये ॥

एक नई लड़की देखूँगा, सर पर स्वर्ण-मौर बाँधूँगा ।
नये नये कपड़े पहिनूँगा, घोड़ी की चड़ी खालूँगा ॥
वह कलिका सी कन्या होगी, मैं मधु-कुमुद-समीर बनूँगा ।
वह सुन्दर सी सरिता होगी, मैं तट की तस्वीर बनूँगा ॥

वह वीणा वाली सुकुमारी, मैं उसकी झनकार बनूँगा ।
वह 'रत्ना' सी रमणी होगी मैं 'तुलसी' का प्यार बनूँगा ॥
वह थाली की पूजा होगी, मैं थाली का फूल बनूँगा ।
वह नौका पतवार बनेगी, मैं नौका का कूल बनूँगा ॥







वह चन्दा सी हँसती होगी, मैं चकोर की चाह बनूँगा।
वह दुनिया में राही होगी, मैं दुनिया में राह बनूँगा॥
वह तम में दीपक सी होगी, मैं दीपक पर बनूँ पतंगा।
जिस में सारा विश्व बहा ले, ऐसी बहे प्रेम की गंगा॥



वह आँगन में रास रचेगी, मैं उस रस की प्यास बनूँगा।
वह कल्याणी क्रीड़ा होगी, मैं उसमें मधुमास बनूँगा॥
ऐसे कितने ही भावों में, मोहन गोते मार रहे थे।
मानो चाव भाव में मोहन, कर 'बा' का शृङ्गार रहे थे॥

बोले मन ही मन में फिर वे, हम सुख का संसार रचेंगे।
सत्य अहिंसा और शान्ति से, जनता का दरबार रचेंगे॥
वह 'कस्तूरी' की सुवास है, मैं मृग की चिर चाह बनूँगा।
वह दुखियों का हृदय बनेगी, मैं दुखियों की आह बनूँगा॥

बड़े चाव में मन ही मन में, मोहन लड्डू फोड़ रहे थे।
भावनगर में ब्याह रचाकर, सुख से नाते जोड़ रहे थे॥
और उधर 'बा' के मन में भी, रंग बिरंगे बहुत भाव थे।
गुड्डे गुड़िया ब्याह करेंगे, 'बा' के मन में उठे चाव थे॥

गुड़ियों से वह खेल रही थी, सखियों से बातें करती थी।
ब्याह रचा गुड्डे गुड़िया का, भावों की पत्तल धरती थी॥
वह सुन्दर कलिका थी जिस पर—प्रकृति-रश्मियाँ झलक रही थीं।
जिस पर अभी पराग नहीं था, भावुक लहरें छलक रही थीं॥

छलक रही थी उस कलिका पर, गंगा की निर्मल कल कल ध्वनि।
छलक रही थी उन आँखों में, दुखी आँसुओं की छल छल ध्वनि॥
उस पार्थिव शरीर में मानो, व्यापक थी त्रिभुवन की लीला।
गोरी गोरी सखियों ने मिल, 'बा' के मला उबटना पीला॥

मानो त्याग तपस्या को वे—प्रेमामृत में नहलाती थीं।
मानो कलिका को रवि-किरणें, धीरे धीरे सहलाती थीं॥
बड़े प्यार से स्नान करा कर, सखियों ने शृङ्गार सजाया।
हाथों में कंगन पहिनाये, चन्दा का झूमर लटकाया॥



पहिना दिया हार हीरों का, कानों में कुण्डल पहिनाये।
तोड़ों से सज गई कलाई, मछली से बुन्दे लटकाये॥
तारों जैसा दामन दमका, चमक उठी चुँदड़ी बनारसी।
उँगली उँगली में अंगूठी, अंगूठे में सजी आरसी॥

सब सखियों ने फूल गूँथ कर, चोटी करी मेघमाला सी।
मोहन के मन में बसने को, 'बा' सज गई देवबाला सी॥
'बा' की माँ 'ब्रजकुँवरि' मग्न थी, देख कली सी सुता मनोहर।
सोच रही थी पर-धन है यह, मन-मोहन की धरी धरोहर॥

'गोकुलदास मकन जी' पति से, 'ब्रजकुंवरि' मुस्का कर बोली—
चार दिनों खेली आँगन में, अब 'बा' मनमोहन की हो ली॥
आवभगत में कमी न आये, जनवासे का हाल बताओ।
यह सुन कर कह उठे 'मकन जी'— बारौठी का थाल सजाओ॥

द्रव्य निकालूँगा दहेज को, कहाँ तिजोरी की ताली है?
ले जाते हैं अभी बटहरी, बस बरात आने वाली है॥
'गोकुलदास' और 'ब्रजकुंवरि', अभी यहाँ तो अभी वहाँ थे।
आवभगत में बेटी वाले, कभी वहाँ तो कभी यहाँ थे॥

दौड़ दौड़ कर काम ब्याह का, मज़दूरों से करते थे वे।
आवभगत में कमी न आये, इसी बात से डरते थे वे॥
सज धज कर बरात जा पहुँची, नौशे से चन्दा शर्माया।
बाजे बजे, बजीं शहनाई, दर्वाज़े पर दूल्हा आया॥

'ब्रजकुंवरि' ने थाल सजा कर, नौशे की आरती उतारी।
दूल्हे के दर्शन करने को, आगे आईं सखियाँ सारी॥
हृदय-हार ले शर्माती सी, 'बा' खिड़की से लगी झाँकने।
मानो अपने प्रेम मूल्य से, अपनी निधि को लगी आँकने॥

मन में मनमोहन के बस के,
दृग में मन मोहन मूँद लिये।
मन से मन का शुभ ब्याह रचा,
दृग-फूल चढ़ा, पग चूम लिये॥







जनानायक

हृदहार गले प्रिय के पहिना,
शशि सी कलिका मधु सी बरसी।
छलकी मन-मोहन की मदिरा,
मद-दर्शन को दुनिया तरसी॥



देख दूर से छटा मनोहर, 'वा' मन ही मन में मुस्काई।
आँखें चार हुईं दोनों की, दुलहन घूंघट में शर्माई॥
सिमट एक दम सकुचाती सी, घर के अन्दर चली गई वह।
'वा' की मनहर चञ्चल सखियाँ, समझ गईं गोरखधन्धा यह॥
बोलीं 'वा' से शर्मा मत अलि! आ हम दूलहा तुझे दिखायें।
कमला के कमरे में चल तू, तेरे मन का कमल खिलायें॥
वहाँ झरोखे में से आली! दूलहा तुझे दिखाई देगा।
पर अपना मुँह तब दिखलाना, जब वह मुँह दिखलाई देगा॥
'वा' शर्माती सी यह बोली, मत छेड़ो अलि! जाओ, जाओ।
मैं कब गई देखने दूलहा, अपने मन से बात बनाओ॥
सब सखियों ने फिर चुटकी ली, मन में लड्डू फोड़ रही है।
दूलहे के दिल में जा बैठी, साथ हमारा छोड़ रही है॥
फिर सब सखियाँ बड़े चाव से, गाने लगीं गीत स्वागत में।
पलक पाँवड़े बिछे मार्ग में, प्रीति बस गई अभ्यागत में॥
केलों के मण्डप में दूलहा, चन्दा सा बैठा फेरों पर।
शुभ्र चाँदिनी सी ज्योतिर्मय, 'कस्तूरी वा' सजी बराबर॥
ऊँचे स्वर से मन्त्र बोल कर, पंडित ने फेरे फिरवाये।
अग्नि-ज्योति के आगे 'वा' को, जीवन के दर्शन करवाये॥
वर ने वचन दिये कन्या को, 'वा' ने वर से वचन भर लिये।
दोनों हृदय एक स्वर में थे, दिल से दिल करार कर लिये॥
गा गा देने लगीं सीठनें, समधी को समधनें सलोनी।
'वा' यह सब ऐसे सुनती थी, सुनती हो जैसे मृगछोनी॥
फेरे फिरे, बरात जीम ली, आई सुता-विदा की बेला।
मानो लेने लगा विदाई, 'ब्रजकुंवरि' के घर का मेला॥



'ब्रजकुंवरि' ने जोड़ जोड़ कर, सबको सजा दहेज दिखाया।
तियल रेशमी, बर्तन, भूषण, शीशे वाला पलँग सजाया॥
जो कुछ भी वह दे सकती थी, सब दहेज में ला कर रक्खा।
करने लगे विदा बेटी को, माँ ने हाथ हृदय पर रक्खा॥

बारह वर्ष रही गोदी में, अब बिटिया हो गई पराई।
करते समय विदा कन्या को, डब डब डब आँखें भर आईं॥
बेटी पर-धन ही होती है, पिता रो पड़े कहते कहते।
रोईं सब सखियाँ सुकुमारी, इन्द्रधनुष में बादल बहते॥

रम्भाई वह गाय जिसे 'बा'— बड़े प्यार से सहलाती थी।
बोल उठा वह तोता जिसको— राम नाम 'बा' सिखलाती थी॥
और पड़ोसिन के बच्चे ने, रो रो 'बा' का पल्ला पकड़ा।
बोला— मैं भी साथ चलूँगा, छेड़ा उसने मीठा झगड़ा॥

और घुटनियों चल चाची का— 'ई' 'ई'' करता मुन्ना आया।
'बा' ने बड़े प्यार से उसको, अपनी छाती से चिपटाया॥
पर उतारने लगी उसे जब, बालक पटरागो सा चिपटा।
'बा' ने दिये खिलौने शिशु को, तब शिशु का मधु झगड़ा निबटा॥

बड़ी कठिनता से वह बालक, चाचा जी की गया गोद में।
दुनिया विदा समय रोती है, या रोती है मिलन-मोद में॥
इस समाज में बेटीवाला, जब तक चाहो तब तक रोले।
चलते समय पूछ कर आँखें, 'गोकुलदास मकन जी' बोले—

मैं ग़रीब हूँ, क्षमा करो सब, सेवा में जो कमी रह गई।
मानो श्रद्धा हाथ जोड़ कर, अपने मन की बात कह गई॥
फिर जननी ने नयन पूछ कर, सुन्दर शुभ सन्देश दिया यह।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान में, बेटी! तेरी अमर कीर्त्ति रह॥

यदि पति ससुर सास डाटें तो, बेटी! कभी क्रोध मत करना।
सत्य बोलना, सेवा करना, बुरे मार्ग पर पैर न धरना॥
भारत माँ की आशा है तू, देश-भक्ति की दीपशिखा बन।
राम नाम हृदयंगम करले, पति ही है तेरा तन, मन, धन॥







तू दो घर की लाज आज से, बेटी ! इस पर आँच न आये ।
चाँद ! चाँद पर कालस कह कह, कोई उँगली नहीं उठाये ॥
मोहन के मन की वंशी बन, घर की दीप्त दिवाली बन तू ।
अखिल विश्व की फुलवारी बन, मन की मधुर उजाली बन तू ॥



मन-मोहन के मन की मुरली—
छवि-सागर में शशि सी चलती ।
चलते चलते बिछुवे बजते,
किरणें उतरीं, बिजली जलती ॥

जग की जय सी वह दीपशिखा—
जिस ओर चली, जय-दीप जले ।
कच-मेघ मयंक लिये निकले,
चितचोर मयूर चकोर चले ॥

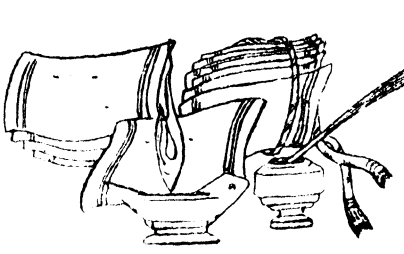
दृग नाच रहे मन-आँगन में,
बँधते दृग दो दृग चंचल में ।
जल में तरणी चलती गति से,
मछली फुदकी फिरती जल में ॥

लहरें जग-जीवन-सागर में,
पुतली-मृग-नाव उतार रहीं ।
नभ-दीप लिये विधु-वाहन में,
परियें दृग-पंख पसार रहीं ॥









द्वितीय सर्ग



करुणा बने बीन जन जन की, रोये तो बरसे गंगा-जल।
बोले तो दीपक जल जायें, उमड़े तो खिल जायें उत्पल॥
लहरे तो झरडे लहरायें, मचले तो हिल उठे धरातल।
चंचल हो तो चन्दा नाचे, प्यास लगे तो बरसें बादल॥

तान छिड़े तो विषधर रीझें, छेड़े से बरसें अंगारे।
झूमे तो वीणा झंकृत हो, रिमझिम हो तो झरें फुहारे॥
सिहरे तो फूलों पर नाचे, उलझे तो उलझन बन जाये।
रंग भरे तो बने तूलिका, सुलझे तो उलझन सुलझाये॥

प्यासी आँखों की पुतली ने, चन्द्रमुखी दुलहन को देखा।
मानो प्यासी धरती माँ ने, करुणा के सावन को देखा॥
मोर नाचने लगे बनों में, आँगन में कल कल ध्वनि गूँजी।
रुनझुन करती दुलहन आई, नयनों की छल छल ध्वनि गूँजी॥

'करमचन्द' 'पुतली बाई' के– घर में 'बा' बन गई दिवाली।
पास पड़ौसिन लगीं देखने– दीपक सी दुलहन उजियाली॥
कुछ दिन की मधु रँगरलियों में– कलिका खिल कर फूल हो गई।
रति पति के मनहर आँगन में– दो फूलों से भूल हो गई॥

कैसे खेल समझ में आया, यह है उलझी एक पहेली।
मेल किसी से जब हो जाता, खेल सकी है कौन अकेली॥
'मोहन' 'बा' के साथ खेलकर, जल्दी ही पति देव बन गये।
उस भोले भावुक बालक पर, कामदेव के तीर तन गये॥





जनायक

प्रति पल मधुर मोम से मन में, रस की चाह बनी रहती थी।
कब हो रात्रि मिलूँ कब 'बा' से, मन की कली यही कहती थी॥
बात किया करते पत्नी से, सोने नहीं दिया करते थे।
मन के उजियाले दीपक को, मन्दा नहीं किया करते थे॥



यौवन की तरंग में पति ने, यौवन की अँगड़ाई आँकी।
पत्नी प्रियतम की आँखों में, खंजन-नयन झुका कर झाँकी॥
हृदय नाचने लगा मोर सा, नयनों की निर्मल निधि पाई।
दमक उठी चाँदिनी गुलाबी, मन में चाह मचल शर्माई॥

चंचल चाव चकोर लिये अलि!
आज कहो मत चाँद न चूमा।
रात रँगी मधु घोल रहे मन,
पावस पाकर कौन न झूमा?
सावन में रस पी प्रिय का छवि!
झूल प्रिया कब डाल न झूली?
बात बड़ी रस की रति की अलि!
बादल पा कर कौन न भूली?

पति पत्नी के प्रथम प्यार में, शिशु से आशाओं के मोती।
पति पर रीझ रिझाने वाली, पत्नी कितने हार पिरोती॥
'बा' बोली ऊपर के मन से- देखो मुझे शर्म आती है।
कोई देख न ले दोनों को, कहते हुए सिमट जाती हैं॥
जब से मैं आई हूँ तब से, घर में नाथ! घुसे रहते हो।
घर का काम न करने देते, अपनी ही अपनी कहते हो॥
आप चले जाते हैं घर से, मेरी आँख झुकी रहती हैं।
पति के साथ सिली रहती है, सखियाँ छेड़ छेड़ कहती हैं॥
घंटों तक बातें करते थे, पत्नी हाँ में हाँ कहती थी।
चलते फिरते भी मोहन के, पत्नी ही मन में रहती थी॥
किन्तु एक पत्नी व्रत लेकर, मोहन ने यह प्यार सजाया।
मानो उस व्रत ने दुनिया को, पत्नी व्रत का दीप दिखाया॥





पर इस व्रत वश पत्नी को पति, अलग नहीं होने देते थे।
बिना बात ही पत्नी से वे, कृत्रिम बदला ले लेते थे॥
पत्नी व्रत पालक बन कर वे, पत्नी की रखवाली करते।
सती साधना गंगा जल सी, निर्मल रूप-ज्योति से डरते॥

या पवित्रता की रक्षा हित, वे चौकीदारी करते थे।
दाग़ न आ जाये चादर पर, मोहन इस डर से डरते थे॥
बिना पढ़ी थी पर अनुभव से, 'बा' ने सब कुछ जान लिया था।
जान गई थी पति को पत्नी, अपने को पहिचान लिया था॥

कभी खेलते, कभी खीजते, कभी लड़ाई, कभी मेल था।
कभी रूठना, कभी मनाना, दम्पति का यह मधुर खेल था॥
नौ रस षट रस प्रभा-पुंज से, पत्नी का शृङ्गार सजाते।
कभी पढ़ाते, कभी खिलाते, कभी स्नेह से दीप जलाते॥

इधर प्यार का आकर्षण था, उधर पाठशाला जाते थे।
पर इस प्रेम-प्यास में मोहन, माँ के आगे शर्माते थे॥
पढ़ते थे वे हृदय लगाकर, वाणी की पूजा करते थे।
श्रद्धा रखते थे गुरुजन में, झूठी बातों से डरते थे॥

रसिक देववाणी के थे वे, रस-घट थे सच्ची बातों से।
पर कुरीतियों के शिकार बन, वातचक्र थे व्याघातों से॥
पढ़ने से या संस्कारों से, मोहन छात्र-वृत्ति पाते थे।
रोज़ पिता के पैर दबाते, रोज़ भ्रमण करने जाते थे॥

कभी कृषक की खेती में वे, हरियाली के दर्शन करते।
कभी मेघमालाओं में वे, जगतीतल के मोती भरते॥
कभी किनारे पर सागर के- लहरों से बातें करते थे।
कभी चाँद के दर्शन करके- मन में शान्ति-सुधा भरते थे॥

कभी खिले फूलों से बोले, बातें करीं कभी कलियों से।
मन की कही कभी कमलों से, प्रिय की सुनी कभी अलियों से॥
कभी रात्रि के चित्र आँकते, रोज़ देखते थे 'ध्रुव तारा'।
सुमन चढ़ा कर कह देते थे- तू त्रिलोक का पूज्य किनारा॥







जनाय क

कभी प्रकृति के दृश्य देखते, कभी नाचता मोर देखते।
पश्चिम के पीले प्रकाश में, स्वतन्त्रता का भोर देखते॥
संकल्पों के बीच तैरते, करते थे कल्पना करोड़ों।
कभी कहीं से यह ध्वनि सुनते, तोड़ो, माँ के बन्धन ताड़ो!

रजनी रानी से कहते थे– दीपक अभी जला मत पगली!
स्वतन्त्रता के लिये रोक ले, मोती अभी गला मत पगली!
उस भावुक बालक के मन में– संकल्पों की बाढ़ें आईं।
सागर की चंचल लहरों पर— अम्बर की निधियाँ लहराईं॥

एक तरफ कड़वी धारा थी, एक तरफ थी मधु की धारा।
लौकिक और अलौकिक रस में, जा कूदा आँखों का तारा॥
इस जग की कड़वी धारा में, किसने कड़वी घूँट नहीं पी?
कहो कौन वह जिया विश्व में, जिसने कड़वी घूँट नहीं पी?

मोहन खिला फूल सा बालक, कैसे काँटों से बच जाता?
अप्रिय यदि होता न जगत में, कैसे कवि प्रिय के गुण गाता?
खेल खेल में ही मोहन का, दुश्चरित्र से मेल हो गया।
मेल भयंकर भूल, भूल से– कहीं स्वप्न सा खेल खो गया॥

एक मित्र से हुई मित्रता, जिसमें बहुत बुरी बातें थीं।
चोरी करता, जुवा खेलता, वेश्या के कटती रातें थीं॥
मुन्ने! इसका साथ छोड़ दे, माँ ने मोहन को समझाया।
मत पड़ तू इसके कुसंग में, भाई भाई पर झुँझलाया॥

पत्नी ने समझाया पति को, स्वामी! इस का साथ छोड़ दो।
नाथ! साथ मत लगो बुरे के, बुरे मार्ग से दृष्टि मोड़ लो॥
पर होनी बलवान, किसी के– समझाये से कैसे रुकते?
अपने पर अभिमान बहुत था, समझाये से कैसे झुकते?

कहने सुनने समझाने से, दुश्चरित्र का साथ न छोड़ा।
वह कैसे बचता गड्ढे से, जिसने आँखों से मुँह मोड़ा॥
बिना चाँद के गहरे तम में, किसे चाँदिनी दी दिखलाई?
बुरे मित्र के संग-दोष से, मोहन में दुर्बलता आई॥







बहका फुसला जाल डाल कर, उस दुर्गुण ने मांस खिलाया।
बातों की ज़ंजीर डाल कर, बकरे का शोरबा पिलाया॥
मातृ-भक्त ने मांस खा लिया, पर माँ से यह बात छिपाई।
दुश्चरित्र उस कुटिल मित्र में- मन की क्रीड़ा दी दिखलाई॥

छिप छिप कर, आँखों से बचकर, मन मसोस कर आमिष खाया।
मांस खा लिया लेकिन मन में- मरा हुआ बकरा रम्भाया॥
कुटिल मित्र के साथ साथ रह, उन्हें मांस की चाट पड़ गई।
पर आत्मा में यही भाव था, मन की कोई कली सड़ गई॥

मन में यही सोचते मोहन, मैंने माँ से बात छिपाई।
धोखा दिया स्वयम् को, उनको, अपने मन की ज्योति बुझाई॥
इन भावों के तेजपुञ्ज में, किया एक दिन यह दृढ़ निश्चय।
'मांस नहीं खाऊँगा अब से', इससे मन की हुई पराजय॥

दुष्ट मित्र के इन्द्रजाल ने, फिर उस बालक को फुसलाया।
बातें छेड़ीं व्यभिचारों की, कामदेव का जाल बिछाया॥
काम कामना करते ही बस, अपना जाल डाल देता है।
बिना रस्सियों के मनुष्य को, मन का भूत बाँध लेता है॥

किसी कामिनी की चर्चा ही, पल में पागल कर देती है।
माया की छाया पड़ते ही, रति मति पकड़ खींच लेती है॥
नारी की छाया छूते ही, लोहा पिँघल मोम बन जाता।
कोई नहीं काम से बचता, काम कल्पना ही से आता॥

तरुणी के उठते यौवन में, बड़े बड़े ऋषि मुनि तक डूबे।
उस चुम्बक में लोहे चिपके, बन्दी राम-भक्ति से ऊबे॥
बिना पिये चढ़ती शराब यह, नशा कामिनी का चढ़ जाता।
गर्दन तोड़ बुखार सदृश यह, हवा मूँघते ही चढ़ आता॥

यौवन की ज़ंजीर डाल कर, नारी नचा दिया करती है।
एक मधुर मुस्कान हृदय को, बरबस खींच लिया करती है॥
तृप्ति नहीं तेरी मनुष्य! यह, प्यास नहीं बुझती पी पी कर।
अन्त पिपासा ही जायेगा, चाहे जितनी पी जीवन भर॥







जननायक

राम नाम वेदों का रस है, जो पीता वह अमित पाता।
वह न छूटता जन्म जन्म में, जो इन जालों में फँस जाता॥
उटती आयु और मन चंचल, मोहन पहुँचे वेश्या के घर।
मन के साथ पैर बढ़ते थे, पर पग पग पर ठिठक ठिठक कर॥



डर था लेकिन कामदेव-चर, मन का घोड़ा खींच ले चला।
हाय! कुसंगति के जालों ने, मन-मोहन का मधुर मन छला॥
पर ईश्वर जिसका रक्षक है, वह कैसे गड्ढे में जाता?
जिसने राम नाम अपनाया, वह नर मुँह माँगा वर पाता॥

वेश्या के कमरे में पहुँचे, झिझके से बैठे खटिया पर।
आँखें नीची हुई शर्म से, मन के अन्दर बैठ गया डर॥
मानो कोई अन्धा गूंगा, बैठा था वेश्या के आगे।
बाई ने गालियाँ सुनाईं, मोहन नंगे पैरों भागे॥

गणिकाओं की यही कहानी, जो जाता वह चोंच चलाता।
याद बुढ़ापे की न इन्हें क्या, इनका यौवन इनको खाता॥
क्या निर्धनता की मारीं ये, बेच रहीं तन मन टुकड़ों पर।
या कुछ पापी मांस खा रहे, इनके तन मन बेच बेच कर॥

खेल रहे हैं हम इनसे या, ये हम सब से खेल रही हैं।
हम इनको विष पिला रहे हैं, या ये ज़हर उड़ेल रही हैं॥
गणिके! कर ईश्वर उपासना, चला गया बालक समझाता।
राम नाम वह जादू है जो – भवसागर तक से तैराता॥

बड़ी भूल करने वाले थे, पर ईश्वर ने उन्हें बचाया।
गड्ढे में गिरने वाले थे, ईश्वर ने दीपक दिखलाया॥
हाय! कुसंगति से मोहन में, एक निमिष को दुर्गुण आया।
सिगरट पीने के चस्के ने, मोहन को झूठा खिलवाया॥

चुरा चुरा सिगरट की झूठन, गाँठ पाप की सर पर धरली।
बालक साँप पकड़ने दौड़ा, मन मसोस कर चोरी करली॥
उनका मांसाहारी भाई, बुरी चाट में ऋण ले आया।
उस भाई ने मन-मोहन को, अपने चक्कर में फुसलाया॥





कड़ा काट, बेचा सोने को, दोनों ने मिलकर चोरी की।
कर्ज़ चुकाया, चाट उड़ाई, पर्वत ने हिलकर चोरी की॥
कड़ा काट कर बेच दिया पर, मन बेचैन हुआ मोहन का।
बार बार यह लगे सोचने, कैसे धुले दाग़ तन मन का॥

चोरी की बातें बापू से– सच कह उसे रुलाई आई।
पिता रो पड़े, उस रोने ने– जीवन भर की ज्योति दिखाई॥
मोहन ने यह करी प्रतिज्ञा– अब मैं चोरी नहीं करूँगा।
पिता! तुम्हारी शपथ मुझे है, बुरी बात से सदा डरूँगा॥

किन्तु कुसंगति से दुनिया में, किस प्राणी ने दुःख न भोगा?
गिरा कुसंगति में जो कोई– उसको कहाँ सहारा होगा?
सत्संगति में सुधा-धार है, और कुसंगति में विष-धारा।
तैर पार हो जाता है वह– जिसने पिया सन्त-रस प्यारा॥

सत्संगति वह मधु है जिसमें– रस मिलता आनन्द-लोक का।
सत्संगति वह दिव्य लोक है– नाम नहीं है जहाँ शोक का॥
सन्त दूसरों के हित अपने– जीवन की आहुति देते हैं।
सज्जन सन्त मान्य मानव-मन, नाव प्रलय में भी खेते हैं॥

सत्संगति की ज्योति अमर है, तम कुसंग में भरा हुआ है।
सत्संगति से ही इस युग में, सत्य धरा पर धरा हुआ है॥
तम में जीवन ज्योति सत्य है, और कुसंगति काली नागिन।
जो सत्संगति पा न सकी हो, वह क़िस्मत कितनी हतभागिन॥

अनुभव करके लिखता है कवि, ज़हर कुसंगति का मत पीना।
आँख खोल कर चलो विश्व में, आँख मूँद कर कैसा जीना?
फँस कुसंग में मोहन 'वा' से, बिना बात झगड़ा करते थे।
संग-दोष लग गया उन्हें, जो– बुरी आदतों से डरते थे॥

यदि सत्संग न मिलता उनको, कैसे बच जाते जलने से?
हृदय-कमल मुरझा जाते हैं, सत्संगति-सूरज ढलने से॥
सत्संगति के ही प्रभाव से, मोहन ने भूला पथ पाया।
'रम्भा बाई' के प्रताप से, मुँह में राम नाम-रस आया॥







'रम्भा' थी सेविका राम की, मोहन की सेवा करती थी।
चातक से प्यासे कानों में, राम नाम का रस भरती थी॥
मोहन डरते थे भूतों से, उसने मन का भूत भगाया।
जीवन-पथ के अन्धकार में, राम रूप-दीपक दिखलाया॥

और चचेरे भाई उनके, मन से रामायण पढ़ते थे।
प्रति दिन राम नाम गुण गाते, उन्नति की सीढ़ी चढ़ते थे॥
जो नर राम नाम रस पीते, वे नर अमर हुआ करते हैं।
जो नर राम नाम भजते हैं, उनसे बुरे काम डरते हैं॥



सत्संगति के सद्प्रभाव से, मुँह में राम-नाम-रस आता।
राम-नाव में बैठ गया जो, वह वैतरणी से तिर जाता॥
राम-नाम का ध्यान न छोड़ो, सद्ग्रन्थों का पाठ न छोड़ो।
तोड़ कुसंगति-जाल जलादो, सत्संगति से मुँह मत मोड़ो॥

सत्संगति से ही मोहन ने, राम नाम लिख लिया हृदय में।
वही सहारा हुआ उन्हों का, मनुष्यता की महा विजय में॥
सुनने लगे भागवत मोहन, सद्ग्रन्थों में हृदय लगाया।
और पिता जी की सेवा में, स्नेह भरा सेवामृत पाया॥

सेवा से मेवा मिलती है, चमड़ी का क्या घिस जाता है।
क्या नश्वर तन का घट जाता, सेवा कर नर सुख पाता है॥
सच्ची सेवा में ईश्वर है, सुख का मुक्ति द्वार खुल जाता।
सेवा से दीपक जल जाते, दिल का अमिट दाग़ धुल जाता॥

सेवा करते रहो हृदय से, सब के आशीर्वाद मिलेंगे।
सेवा से तुम सूर्य बनोगे, सृष्टि-पंक में कमल खिलेंगे॥
सेवा के सागर को मथ कर, जिसने चौदह रत्न निकाले।
आँखों से मोती बरसा कर, कवि-वाणी ! उसके गुण गा ले !

हृदय-सुमन से पैर पूज कर भावों से आरती उतारूँ।
धन्य ! धन्य !! गोरे मन-मोहन ! तुझ पर मैं तन-मन-धन वारूँ॥
झुका पिता के चरणों में सर, धीरे धीरे चरण दबाये।
देख पुत्र का स्नेह पिता की- आँखों में आँसू भर आये॥





पैर दबाता रहा प्रेम से, बालक अपने परम पिता के।
रोगी करमचन्द खटिया पर, देख रहे थे स्वप्न चिता के॥
खुलीं स्वप्न से आँखें उनकी, बोले, अब जा सोजा मोहन!
मन से आशीर्वाद दिया यह, जग का जीवन हो जा मोहन!

मोहन की मधु सेवाओं से, रोगी का मानस भर आया।
प्यार उमड़ कर चला दृगों से, सुत को छाती से चिपटाया॥
कहा प्रेम से, दिन में ही अब- रात बहुत हो गई अँधेरी।
जग के अन्धकार के दीपक! बेटे! बड़ी आयु हो तेरी॥

'करमचन्द' के छोटे भाई- बोले, सोजा मोहन बेटे!
लेकर आशीर्वाद पिता का, मोहन शयन-कक्ष में लेटे॥
मोहन ओझल हुए दृगों से, होने लगी रात अँधियारी।
उस दिन मोहन के मानस में, शर्माई थी शर्म बिचारी॥

'करमचन्द' के हृदय-अनुज ने, प्रिय अग्रज के चरण दबाये।
मानो 'रामचन्द्र' के 'लक्ष्मण'- फिर अवतार धारकर आये॥
'करमचन्द' के लिये आ गया- नारायण का अटल बुलावा।
लम्बे लम्बे श्वास चल पड़े, मुँह पर किया मृत्यु ने धावा॥

मिट्टी के पिँजरे को तज कर, प्राण-पखेरू उड़े हवा में।
कहा किसी ने दवा पिलाओ, पर अब क्या था वहाँ दवा में!
नहीं मौत की दवा कहीं भी, खेल स्वप्न सा खत्म हो गया।
पाँच तत्त्व का पुतला जग से, अपनी आँखें मूँद सो गया॥

एक निमिष में हंस उड़ गया, मिट्टी का तन पड़ा रह गया।
क्षण में छिपा उषा का तारा, पानी का बुलबुला बह गया॥
सेवक शयन-कक्ष में पहुँचा, मोहन को आवाज़ लगाई-
जल्दी चलो, बड़े बापू की- तबियत बहुत अधिक घबराई॥

सुनकर भौचक्के से मोहन, कूद खाट से खड़े हो गये।
बोले, 'क्या?' उत्तर यह आया- पिता सदा के लिये सो गये॥
'हाय! पिता चल दिये छोड़कर, उठी छत्र छाया सर पर से।
अन्त समय में मैं हतभागा, दूर रहा अपने अन्तर से॥'









जनायक

निकली एक टीस मानस से, मानस पतझड़ सा मुरझाया।
पिता-मृत्यु से रोया मानस, काम-वासना से शर्माया॥
लज्जा से दृग झुके पुत्र के, मन से मन की बात कही थी।
लेकिन हंस उड़ चुका था अब, केवल पीड़ा शेष रही थी॥



शव से चिपट चिपट कर मोहन, छाती फाड़ फाड़ कर रोये।
नहीं बोलते, दृग न खोलते, पिता! आज तुम कैसे सोये!
रोया सब परिवार उस समय, पर रोने से क्या होता है?
इसी तरह से आँख मूँद कर, एक दिवस प्राणी सोता है॥

शव की अर्थी बना ले चले, तट पर शव की चिता बनाई।
प्यारे मोहनदास पुत्र ने, पूज्य पिता की चिता जलाई॥
धू धू करके चिता जल उठी, धुवां गगन में उड़ा चिता का।
मोहन ही क्या कर सकता था, दाह देखता रहा पिता का॥

अरे! यही है अन्त मनुज का, उड़ता उड़ता धुवां कह गया।
पाँच तत्त्व का पुतला जल कर, एक राख का ढेर रह गया॥
बुझी पिता की चिता, फूल चुग, गंगा जी में फूल बहाये।
कवि ने भी उनकी समाधि पर, शब्दों के आँसू ढुलकाये॥

एक दिवस मरना निश्चित है, फिर भी पाप किया करता वह।
अन्त सोच कर भी न सँभलता, हाय! हृदय कैसा पापी यह॥
अहंकार में भरा हुआ मन, क्षण-भंगुर की पूजा करता।
करता पाप, सताता सब को, पापी नहीं 'राम' से डरता॥

मृत्यु अन्त, परिणाम सामने, फिर भी तो मन नहीं मानता।
एक रोज़ सब का यह पथ है, कौन नहीं यह बात जानता?
फिर भी तो सर्पिणी भयंकर, लिपट लिपट फुंकार रही है।
दुनिया की इस रंगीनी में, घोर तपस्या हार रही है॥

समझ स्वयम् को अमर भोग में, मानव रोगी हो जाता है।
निकल नहीं पाता दलदल से, मनुज नशे में खो जाता है॥
राम-रोष से डर मोहन ने, जीवन-पथ पर पैर बढ़ाया।
तम कब ठहरा उसके पथ में, जिसे राम ने दीप दिखाया॥





ऊँचे नीचे टेढ़े जग में, बड़े बड़े ठोकर खाते हैं।
पर जो 'राम! राम'! रटते हैं, वे गिरने से बच जाते हैं॥
राम नाम के प्रिय प्रकाश में, सारे दृश्य दिखाई देते।
वे 'तुलसी' की तरह अमर हैं, जो जन राम नाम ले लेते॥

उसे सहारा राम मात्र है, जो अति पापों से घिर जाता।
उसके दर्शन कर सेवा में, जन भवसागर से तिर जाता॥
राम नाम को भूल विश्व में, मानव सुख खोजा करता है।
मानो सूखे हुए कुवे में, डोल डाल पानी भरता है॥
राम-चरण मिल गये जिसे वह- जग में राम-रूप हो जाता।
जिसके सर पर हाथ राम का, वह जन हृदय-भूप हो जाता॥
राम नाम दीपक ले मोहन, अपने पथ पर बढ़े अगाड़ी।
लघु जीवन से लगे खींचने, जग-जीवन की भारी गाड़ी॥

रहो मेरी आँखों में राम!
तुम्हें पूजूँ निशि दिन निष्काम!
न छोड़ूँ मैं क्षण भर को तुम्हें,
न भूलूँ मैं तुम को भगवान!
हृदय में रहो, दृगों में बसो-
राम! तुम भव-जलनिधि के यान।
नहीं कुछ मुझे चाहिये और-
बना बस रहे तुम्हारा ध्यान।
सामने खड़े रहो साकार-
हृदय-निधि निराकार भगवान!
तुम्हारा रसना पर हो नाम!
रहो मेरी आँखों में राम!
दीप मानस के जलाकर, आरती उसकी उतारो!
प्रेम से उसको रिझाओ, हृदय से उसको पुकारो!
दुःख जिसका दीप बनता, आह उसकी चाह बनती।
चाँदना जिसके हृदय में, चाह उसकी राह बनती॥









जनानायक



फूल स्वागत में उसी के, डाल पर मुस्का रहे हैं।
आरती उसकी पुजारी, मन्दिरों में गा रहे हैं॥
रात की रानी दिवाली, आरती के दीप आली!
उन पगों की धूलि है यह, चाँद सूरज की उजाली॥

ओस के आँसू लिये निशि, भोर की लिखती कहानी।
कालिमा धोता सवेरा, जागती सोयी जवानी॥
तप रहा दिनमान देखो! चल रहा पथ पर निरन्तर।
ढूँढता फिरता उसे वह, वेद कहते जिसे ईश्वर॥

ढूँढने उसको चला जो, वह स्वयम् बनता उजाला।
प्रेम की प्यासी बरसती, उन पगों में मेघ-माला॥
नाम-नाविक से गिरा-गुरु, नाव ले आती किनारे।
प्यास बुझती है उसी से, चातकी जिसके सहारे॥

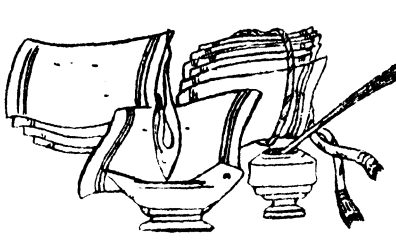
चाँद उगा बरसी रसना, रस-
से तिरती जल में अलि! चाँदी।
पागल पावस! चाँद चुरा कर-
आग लगा मत, छीन न नाँदी॥

सिन्धु लिये दृग में भव-भारत-
माँ जल गूँथ सुहार पिरोती।
कीचड़! नीरज से चिपटे मत-
तोड़ न हंस! धरा पर मोती॥









तृतीय सर्ग



दुनिया क्या है ? नयी समस्या, जीवन क्या है ? प्रश्न और हल।
जन्म मरण है एक कल्पना, जन्म मरण में सँभल सँभल चल !
कहाँ जा रहा है ओ यात्री ! मंज़िल भूल कंटकित पथ पर।
भग्न स्वप्न से पागल प्राणी ! पैर न अपना इधर उधर धर ॥

ओ मनुष्य ! तू बैठ न थक कर, पथ के साथ साथ आगे बढ़ !
रुक न देखकर चट्टानों को, सागर में घुस, पर्वत पर चढ़ !
यहाँ वही ज़िन्दा रहता है, जिसने सीख लिया है चलना।
वह न बुझेगा बादल दल से, जिसको सिखा दिया है जलना।

अभी फूल से बच्चे कोमल, और अर्थ-संकट सर पर था।
पुतलीबाई के पुण्यों से– सर पर जगत-पिता ईश्वर था ॥
पिता सिधारे स्वर्ग, आ गई– बच्चों के कन्धों पर गाड़ी।
किसलय से कन्धों के बल से– खेल खेलने लगे खिलाड़ी ॥

'करमचन्द' के मित्र एक थे, जिनको 'जोशी जी' कहते थे।
नाम 'माव जी दवे' उन्हों का, परामर्श देते रहते थे ॥
वे 'पुतलीबाई' से बोले, "मोहन चला विलायत जाये।
पढ़ना उन्नति की सीढ़ी है, पढ़कर बैरिस्टर हो आये ॥

केवल तीन वर्ष में मोहन, बैरिस्टर बनकर आयेगा।
बहुत बड़ा हो जायेगा यह, बहुत अधिक यह पढ़ जायेगा ॥"
जोशी जी मोहन से बोले, "पुत्र ! विलायत पढ़ने जाओ !"
"बात बहुत अच्छी चाचा जी ! जाने की उलझन सुलझाओ ॥







जनायक



रोक रही है अर्थ-समस्या, रूढ़िवाद ने पकड़ लिया है।
मन की कलिका सी इच्छा को, बाधाओं ने जकड़ लिया है॥
आशीर्वाद मिले माता का, भैया से आज्ञा दिलवाओ।
किसी तरह भी मुझे विलायत, चाचा जी! पढ़ने भिजवाओ॥

यही पिता जी की इच्छा थी, पढ़कर मैं वकील बन जाऊँ।
दूर देश में पढ़ूँ हृदय से, भारत-माता के गुण गाऊँ॥"
आशा-वृक्ष लगा मानस में, 'जोशी जी' चल दिये वहाँ से।
मोहन लगे सोचने मन में, जाऊँ कैसे और कहाँ से!

कहा बड़े भैया ने, "मोहन! 'लैली साहब' से मिल आओ।
उन पर है अधिकार हमारा, उनको मन की बात सुनाओ॥
हो सकता है किसी तरह से, तुम्हें विलायत भिजवादें वे।
शायद बाबा के प्रभाव से, अर्थ-समस्या सुलझादें वे॥'

'लैली साहब' के बँगले को, घर से मोहनदास चल पड़े।
संकल्पों के सुमन साथ थे, उलझन में थे फूल हल खड़े॥
'राजकोट' से गाड़ी में वे- पहिले तो 'धोरा जी' आये।
'धोरा जी' से बैठ ऊँट पर, भाव-लहरियों में लहराये॥

कहीं उलझते, कहीं सुलझते, पहुँचे शीघ्र 'पोरबन्दर' वे।
शर्माये से खड़े हो गये, जा 'लैली' के बँगले पर वे॥
'लैली साहब' से यह बोले, "मुझे विलायत पढ़ने भेजो।
अपनी कृपा-कोर से मुझको, उन्नति पथ पर चढ़ने भेजो॥"

सुन 'लैली साहब' यह बोले, "पहिले 'बी. ए.' पास करो तुम!
तब मिलना, तब मदद करूँगा, उर में अभी प्रकाश भरो तुम!"
कहते हुए चल दिये 'लैली', मोहन मन मसोस कर आये।
जला न आशा-दीप वहाँ पर, उल्टी और निराशा लाये॥

लेकिन मृगतृष्णा से मन में चाह विलायत जाने की थी।
मन में प्रखर प्रबल ज्योतिर्मय, आशा-दीप जलाने की थी॥
पथ में आशा और निराशा, चक्कर काटा ही करती हैं।
पर जो नहीं रुकें बाधा से, बाधायें उनसे डरती हैं॥







जग की बाधाओं से भिड़ भिड़, जो जन आगे बढ़ते जाते।
पथ के पत्थर तोड़ तोड़ वे, लक्ष्य-शिखा पर चढ़ते जाते॥
'लैली' के बँगले से मोहन, सीधे 'राजकोट' फिर आये।
अपने, 'लैली' के जो कुछ थे– वे सारे सम्वाद सुनाये॥

भैया ने यह आशा बाँधी, "अच्छा मैं प्रबन्ध कर दूँगा।
शिक्षा सब से बड़ा धर्म है, इसके लिये कर्ज़ कर लूँगा॥"
पर माँ ने यह कहा उसी क्षण, "मैं न विलायत जाने दूँगी।
मदिरा पीने नहीं भेजती, मांस नहीं मैं खाने दूँगी॥"

मोहन ने यह करी प्रतिज्ञा, "माँ! मैं माँस नहीं खाऊँगा।
कभी नहीं मदिरा पीऊँगा, कभी न दुर्पथ पर जाऊँगा॥
माँ! मुझ पर विश्वास करो तुम, कभी न दुर दुष्कर्म करूँगा।
मदिरा, माँस, संग-दोषों से, ज्योति! मरण-पर्यन्त डरूँगा॥"

'जोशी जी' 'बेचर स्वामी' ने, माता को विश्वास दिलाया।
जननी ने भी आज्ञा दे दी, मातृ-प्रेम ने मार्ग दिखाया॥
पत्नी ने प्रिय प्यार सजाकर, जीवन-पथ पर दीप जलाये।
टेढ़ी मेढ़ी पगडण्डी पर, सद्भावों ने दीप दिखाये॥

माँ के भाव नाव बन आये, शुभ इच्छा पतवार बन गई।
भैया नाविक बने नाव के, पत्नी सरल विचार बन गई॥
सब सहपाठी छात्रों ने मिल, मोहन का उत्साह बढ़ाया।
सूरज ने उसके स्वागत में, पथ पर स्वर्ण-विहान बिछाया॥

पर कुछ ऐसे भी हैं जिनको– सूरज नहीं दिखाई देता।
कौन जानता नहीं उसे जो– आँसू सोख, सिँचाई लेता॥
मोहन जाने लगे विलायत, किन्तु जाति में मची खलबली।
आगे बढ़ता देख किसी को, जग के मन में ज्योति कब जली?
उसे देख दुनिया जलती है, जो उठने को क़दम उठाता।
दुनिया उसको भी डस लेती, जो अपना भण्डार लुटाता॥
हाय! पथिक के पथ पर दुनिया, रोड़ा बनकर अड़ जाती है।
बचने वाले बच जाते हैं, लड़ने वाली लड़ जाती है॥







जनायक



अपनी ईर्ष्या सिक्त अग्नि से, जलने वाली जल जाती है।
आँखों के ढलते पानी से, ढलने वाली ढल जाती है॥
आती है तूफ़ान बनी वह, तिनका बनकर उड़ जाती है।
सीधे पैरों आती है पर, उल्टे पैरों मुड़ जाती है॥

नहीं 'मोढ़ बनियों' में अब तक, गया विलायत पढ़ने कोई।
मोहन का दुस्साहस है यह, उसने लाज जाति की खोई॥
वह जा सकता नहीं विलायत, पंचों ने यह बात सुनाई।
'मोढ़ जाति' के इस निर्णय पर, मन-मोहन ने लात लगाई॥

इस पर उन निर्मम पंचों ने, उनका बहिष्कार कर डाला।
हुक्का पानी बन्द कर दिया, 'मोढ़ जाति' से उन्हें निकाला॥
मोहन के सागर से भैया, तनिक न इस निर्णय से डोले।
'सोच न कर, जा चला विलायत!' अटल हिमालय से वे बोले॥

भाई से हिमगिरि सा बल पा, कर्मवीर 'बम्बई' आ गये।
बड़ी बड़ी आशायें लेकर, भावों के घन घुमड़ छा गये॥
यात्रा का सामान साथ ले, करी 'विलायत' की तैयारी।
'मजमुदार त्र्यम्बका राय' के- साथ यान में मिली सवारी॥

शर्माये से, सकुचाये से, चले 'बम्बई' के बन्दर से।
वातायन से झाँक रहा था, यात्रा में प्रकाश अन्दर से॥
भारत और भारती दोनों, बैठ गईं अन्तर में आकर।
संस्कृति की गति विधि यति संसृति, बनी हिमालय चंचल मन पर॥

देश प्रेम बन गया गुप्तचर, माँ का प्रेम बन गया छाया।
अटल प्रतिज्ञा से दृढ़ मन का, लहरों ने कुछ पार न पाया॥
लहरें उसको हिला सकीं कब, जो हिमगिरि सा अटल रहा है।
धरती हिले, हिले न प्रतिज्ञा, समय, सत्य ने सदा कहा है॥

भारत की पवित्र मिट्टी में, लोट लोट वह फूल खिला था।
दूषित रुग्ण वायु को मानो, सौरभ सा वह फूल मिला था॥
उस दूषित समीर ने शिशु पर, अपना कृत्रिम जाल बिछाया।
मदिरा पीने को ललचाया, माँस खिलाने को फुसलाया॥





कहा, 'छुरी काँटे से खाओ, खेलो खूब पश्चिमी रँग में।
मौन न बैठे रहो यान में, बातें करो हवा के सँग में॥'
भारत के भविष्य तारण को, उनकी उल्टी बात न भाई।
जब जब जाल बिछे पश्चिम के, तब तब याद प्रतिज्ञा आई॥

भूखा रहा किन्तु तापस ने– फुसलाने से माँस न खाया।
वह वह लोहा रहा कि जिसको– ज्वाला ने भी नहीं गलाया॥
फलाहार में पत्ते खाये, आत्मा का सम्मान न खोया।
वह आगे काटा करता है, जिसने बचपन में कुछ बोया॥

अपने साथ ले गये थे वे, थोड़ा सा पकवान मिठाई।
खाया वही कठिन यात्रा में, पानी पी पी प्यास बुझाई॥
इसी तरह हलचल में चलकर, जा पहुँचा जलयान किनारे।
'साउदेम्पटन बन्दर' पर जा, उतरे 'मोहनदास' हमारे॥

श्वेत कोट पतलून पहिन कर, वह यात्री जहाज़ से उतरा।
शान्ति सुधा वर्षा करने को, मानो चाँद ताज से उतरा॥
'मजमुदार' के साथ यान से– जाकर वे होटल में ठहरे।
वहाँ विलायत में मोहन के, मित्र 'प्राण जीवन' थे गहरे॥

तार दे दिया था मोहन ने, वे मोहन से मिलने आये।
नये देश में प्रिय मोहन को, पथ के रंग ढंग समझाये॥
देख निराले ढंग वहाँ के, वे मन ही मन में शर्माये।
'विक्टोरिया' विकट होटल में, अपना खर्च देख घबराये॥

होटल छोड़ दिया मोहन ने, लिया एक कमरा भाड़े पर।
लेकिन उस सूने कमरे में, आने लगा याद उनको घर॥
माँ का प्रेम याद आते ही, आँखों से आँसू बह जाते।
मानो आँसू माँ की पीड़ा, बह बह बच्चे से कह जाते॥

तड़प कर जो भाव निकलें, गीति वे ही हैं।
दृगों से जो पिघल निकलें, प्रीति वे ही हैं॥
आँसुओं के रँग भरे हैं, चित्र कैसे ये?
दुःख सह पाते न आँसू, मित्र कैसे ये?







रोते रात रात भर मोहन, उनको नींद नहीं आती थी।
मातृभूमि के बिना वहाँ पर, वह सरिता सूखी जाती थी॥
कभी याद करते भैया को, कभी याद पत्नी की आती।
कभी साथियों से मिलने की, मन में टीस चीस भर जाती॥

इसी तरह से पीड़ित मन में, रह रह चीस चुभा करती थी।
मानो आ आ नई परीक्षा, प्रति पल नये प्रश्न धरती थी॥
क्षण क्षण नई समस्या आकर, मोहन को उलझा लेती थी।
पर ईश्वर की अमर प्रेरणा, प्रश्न सभी सुलझा देती थी॥

संयम् वचन भंग करने को, दौड़े बाधाओं के घोड़े।
पीड़ाओं के पत्थर बरसे, धर्म न छोड़ा, वचन न छोड़े॥
जो सच्चे पथ पर चलते हैं, उनका सदा सहायक ईश्वर।
सच्चे पर ईश्वर की करुणा, सच्चे को जग में किसका डर॥

'मोहनदास करमचँद गाँधी' टस से मस न हुए तिल भर भी।
हिला न पाई वह रंगीनी, गा गा और गले मिल कर भी॥
अन्त विजय पाई मोहन ने, हार गईं सारी बाधायें।
भूल भक्त की फूल रूप हों, तज कर कीच कमल बन जायें॥

एक निरामिष भोजनगृह की- ओर उन्हें ले चले दयानिधि।
जो रचना में रचना करता, वह साधक बन जाता है विधि॥
उस दिन पेट भरा मोहन का, मन-चाहा आहार मिल गया।
जो डाली पर मुरझाया था, पानी पी वह फूल खिल गया॥

खिला फूल लेकिन पश्चिम की- सुन्दरता ने जाल बिछाया।
सभ्य देश की रंगीनी ने, अपना रूप अनूप दिखाया॥
रंग बिरंगे साज सजा कर, मनहर छटा दिखाने आई।
बड़े बड़े मद भरे नयन से, बालक को फुसलाने आई॥

कभी बनी नर्तकी सुन्दरी, कभी काम के स्वर में बोली।
कभी 'मेनका' सी मस्ती बन, मन-मोहन के पीछे होली॥
गोरे गोरे अङ्ग नचाकर, कभी नचाने लगी हृदय को।
सन्ध्या से काले बालों में, कभी फँसाने लगी निलय को॥







वह विलायती जादूगरनी, अपना जादू लगी चलाने।
पर मन-मोहन आत्मा-बल से, उसके जादू लगे जलाने॥
उस रंगीन देश में मोहन, रंग देखने लगे रँगीले।
वह कृत्रिम सौन्दर्य देखकर, उनके नयन हो गये गीले॥

पर वह सभ्य देश था उसमें– कैसे वे असभ्य कहलाते!
इन भावों के ज्वार भाट में, कभी कभी बह कर तिर जाते॥
धन्य! धन्य!! भैया मोहन के, किया न हृदय अनुज का छोटा।
धन्य! धन्य!! वह मोहन जिसने– किया न काम कभी भी खोटा॥

निर्धनता में भी भैया ने– भेजी स्वर्ण घड़ी भैया को।
धन्य! धन्य!! वह स्नेह उन्हों का, तट तक ले आये नैया को॥
बढ़िया वस्त्र पहिन मोहन ने, बाँधी नई घड़ी सोने की।
धन्य! धन्य!! वह घड़ी कि जिससे– आई घड़ी मुक्त होने की॥

छैल छबीले बन मन-पाहुन, मानो चले छलों को छलने।
रोड़े चूर चूर करने को, मोम लगा रोड़ों पर चलने॥
मानो आग शान्त करने को, पानी चलने लगा आग में।
सोने के पिँजरे में गिर गिर, आँसू जलने लगे फाग में॥

पैर नृत्य के लिये उठाया, किन्तु ठिठक कर वहीं रुक गये।
या कि उन्हों के आत्मा-बल से, दुर्व्यसनों के तीर झुक गये॥
'वॉयोलिन' भी सीख बजाया, पर उससे भी ऊब गये वे।
सीख लिया संगीत सुरीला, खेलों में भी खूब गये वे॥

यौवन में अँगड़ाई लेती, युवती एक लुभाने आई।
अपना रूप अनूप उभारे, रमणी उन्हें रिझाने आई॥
उसका रूप अनूप देख कर, मुस्काया मन-मारुत का मन।
मन– शिशु से हँस हँस कर खेला, युवती का मदमाता यौवन॥
वह वह सुन्दर मस्ती जिस पर– लहरें साथ चिपक जाती हैं।
जिसे देख कर चंचल आँखें, वीणा सी गति में गाती हैं॥
सँगमर्मर से मुखमण्डल पर, शशि सी आभा चमक रही है।
बिजली जैसी हँसी हृदय की, दो ओठों पर दमक रही है॥



H1866







जनायक



काले बाल मेघमाला से, इधर उधर को बल खाते हैं।
मन-मानस में भाव लहर से, लहरों पर घन लहराते हैं॥
कोमल खिले फूल से तन पर, मन-मदिरा बिखरी पड़ती है।
सौरभ से समीर से हिल मिल, रूप ज्योति निखरी पड़ती है॥

नील कमल से उन नयनों में, साध साधनायें करती हैं।
या कि साधनायें आँखों में, श्रद्धा से मस्तक धरती हैं॥
या नयनों ने होड़ बदी है, या कि तपस्या करते हैं दृग।
या आँखों के स्नेह-नीर पर, उलझ रहे हैं तृष्णा में मृग॥

या मानस-मछलियाँ दृगों में, छल छल जल-क्रीड़ा करती हैं।
या मनहर मस्तानी आँखें, मस्ती में क्रीड़ा भरती हैं॥
पक्षी सी पुतलियाँ उलझ कर, दृग-नीड़ों में क़ैद पड़ी हैं।
मधुकर सी वे नाच रहीं हैं, चंचल मन में गड़ी खड़ी हैं॥

मानो धवल दूध की गंगा- मौन निमंत्रण देने आई।
या कि दिव्य सुन्दरता कोई- फूलों से आँचल भर लाई॥
"बेटर" की उस रूप राशि ने- मोहन पर लीला फैलाई।
ललित लाज की चादर सी वह, मन-मोहन के मन पर छाई॥

ले मोहन को साथ सुन्दरी, रोज़ हवा खाने जाती थी।
मन-मोहन के मीठे मन को, अपने साथ खींच लाती थी॥
चंचल, इठलाती, बल खाती, पग पग पर मुस्काती जाती।
मधुर कल्पना सी उड़ती थी. बातों के मोती बरसाती॥

सुन्दर सुन्दर उपवन में वह, झरनों के नीचे गाती थी।
कभी घास पर बैठ रागिनी, मन के पास खिसक आती थी॥
कभी हवा में उड़ती थी वह, कभी पहाड़ी पर चढ़ जाती।
कभी हृदय से हृदय बाँध कर, बरबस हर लेती थी थाती॥

एक दिवस वह मन-मोहन को, किसी पहाड़ी पर ले आई।
देख प्रकृति का रम्य रूप रँग, वह मन ही मन में शर्माई॥
घूम पहाड़ी पर वह देवी, बिजली सी उतरी कानन में।
मानो दमक दामिनी दौड़ी, पलक मारते ही साधन में॥





पर मन-मोहन खड़े रह गये, क्षण में उतर गई वह तरुणी।
हँसी उड़ाने लगी उन्हों की, रह रह कुछ कुछ कह कह तरुणी॥
बोली, "ऊपर आकर मोहन! हाथ पकड़ कर खींच ले चलूँ।
तुम बच्चे हो या मैं तुमको, निज गोदी में भींच ले चलूँ॥

शर्माये से हँसकर मोहन, धीरे धीरे नीचे आये।
उस देवी ने 'शाबाशी' दी, सुन मोहन मन में शर्माये॥
मधुबाला के मधुर प्यार में, अद्भुत रस अद्भुत मिठास था।
कोयल और सुधा सी बोली, कवियों जैसा हृदय पास था॥

वह न वासना की पुतली थी, उसमें जीवन-सार भरा था।
प्रीति-रीति की गति-विधि थी वह, कुन्दन जैसा हृदय खरा था॥
उसके कोमल मधुर रसीले, भाव हृदय के लिये नाव थे।
भाव लहरियों पर अनन्त के, सुन्दर सुन्दर बहुत चाव थे॥

करती थी सत्कार अतिथि का, मन की हारी हुई जीत से।
हार-जीत की वीणा लेकर, रिझा रही थी मधुर गीत से॥
वह पागल है जो कहता है, पश्चिम का सौन्दर्य ज़हर है।
वह चंचल है जो कहता है, पश्चिम का सौन्दर्य लहर है॥

हम अपनी सिकुड़ी आदत से, नाप रहे उनकी गहराई।
हम अपनी थोथी दुनिया में, कहते हैं पर्वत को राई॥
ऐसे, एक "ब्रायटन" में भी, मिली एक देवी चमकीली।
बड़ी रँगीली अलबेली छवि, बातें करती बड़ी रसीली॥

मधुर स्नेह की दीपशिखा वह, दिल की दुनिया दिखा रही थी।
या कि प्रीति की रीति विश्व को, वह कल्याणी सिखा रही थी॥
मोहन छिपा ब्याह की बातें, बोले हुई न मेरी शादी।
क्षण भर को उस प्रेम रंग में, पिँघल गया मानस फ़ौलादी॥

उसकी चमकीली चंचलता, चिपकी मन-मोहन के मन से।
मचलो मत मानस की लहरें, तरुणी के क्रीड़ा-बन्धन से॥
मैं वन वन का विहग, मुझे तुम, कोमल बन्धन में मत बाँधो।
मुझे मुक्त कर दो पिँजरे से, मिट्टी के तन से मत बाँधो॥







जनायक



जो अणु अणु में व्याप्त शुभे ! तुम, उस जीवन-धन से मिलने दो ।
हर पत्ते पर, हर डाली पर, हर नर के मन में खिलने दो ॥
संजीवन को भूल अभागिन ! क्यों नागिन से खिला रही हो ?
राम नाम गंगा-जल तज कर, रूप-गरल क्यों पिला रही हो ?

बहुत पी चुका गरल आज तक, अब दो घूँट सुधा पीने दो ।
बहुत रह चुका बन्धन में मैं, अब मुझको स्वतन्त्र जीने दो ॥
मुझे बन्द कर रूप-जाल में, मेरे जीवन से मत खेलो ।
मुझे छोड़ दो राम नाम पर, मेरे यौवन से मत खेलो ॥

मत पकड़ो मदमाती तितली ! नश्वर यौवन में मत बाँधो ।
मिल जाने दो उस अनन्त में, मदमाते तन से मत बाँधो ॥
पिँघले मानस का जीवन-रस, मानसरोवर ही में ठहरा ।
हृदय-हंस मोती चुगने को, लगा तैरने लहरा लहरा ॥

भूल रहे थे अपना सतपथ, हृदय-ज्योति ने पथ दिखलाया ।
या कि बचाने को दलदल से, 'बा' का प्यार दौड़ कर आया ॥
मुक्ति-मूर्ति उस पथ की मणि ने, मरघट का कंकाल दिखाया ।
या माँ 'पुतली' के तप व्रत की, छाई चंचल मन पर छाया ॥

साफ़ साफ़ कह दिया उन्होंने, 'बा' से मेरा ब्याह हो गया ।
झूठ बोलता रहा बहिन ! मैं, जाने क्यों मैं कहाँ खो गया ॥
नहीं ब्याह ही केवल देवी ! एक हो चुका है बालक भी ।
झूठ नहीं चल सकता पैरों, देख रहा सबका पालक भी ॥

सुन मोहन की बात सुन्दरी, सहम गई, पर फिर मुस्काई ।
बड़े प्रेम से उस दिव्या ने, बाल-ब्याह की हँसी उड़ाई ॥
तन से दूर हो गई देवी, मन के बिल्कुल पास आ गई ।
अब तक थी अधरों पर, पर अब- बदली बनकर प्यास छा गई ॥

उस दिन से वह मनमोहन से, 'भैया ! भैया !' कह कर बोली ।
बही प्रेम की गंगा मन में, जली वासनाओं की होली ॥
जिस होली में झूठ जल गया, जिस गंगा में ज़हर बह गया ।
बजी प्रेम की अनहद वंशी, मन में केवल सत्य रह गया ॥





वे जो कुछ लिखते थे उसमें– सत्य स्वयम् बैठा रहता था।
मुँह से शब्द निकलता था वह– जो जय जय जय जय कहता था॥
पैर पड़ गया था फिसलन पर, गिरते गिरते सँभल गये वे।
बीच भँवर में डूब रहे थे, तट के ऊपर निकल गये वे॥

जब से सत्य हृदय में देखा, सच न बोलने में सकुचाये।
धन्य! धन्य!! वह देवी जिसने– मानस में भगवान दिखाये॥
पश्चिम की हर सुन्दरता में– कला उन्हें दर्शन देती थी।
या कि कला चातुरी बालिका– उनसे नया सबक़ लेती थी॥

विश्व की उलझी पहेली, हृदय उलझाती रही है।
चेतना की चाह भंगुर, स्वप्न सुलझाती रही है॥
मुक्त को बन्दी बनाते, स्वप्न छाया से रँगीले।
कल्पना साकार करते, आँसुओं के गीत गीले॥

खेल बिखेर विलीन कहाँ खग,
टूट गिरा नभ से जब तारा?
स्वप्न गिरा पल में नभ से वह,
शेष रहा दृग में कण खारा॥



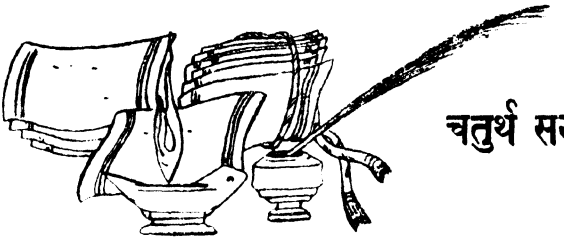


गा मत प्यार! सितार बजाकर,
सागर ने दृग नीर सुखाया।
स्वप्न न देख यहाँ प्रिय पावस!
धूप! न ढूँढ यहाँ तरु-छाया॥





जनायक



चतुर्थ सर्ग



खिला चन्दा गाता, कुमुद खिलते, दीप चलते ।
उषा की प्याली में- कमल खुलते, सूर्य जलते ॥
कभी बन्दी भौंरे, नयन मुँदते, लाज ढलती ।
कभी नौका डूबी, जल भर कभी नाव चलती ॥

पिपासे पीड़ा के, मृगतृषित तोते तरसते ।
निराली आँखों से- घन हृदय धो धो बरसते ॥
चिता के शोलों में- जल जलज का गौरव बढ़ा ।
शिखा से पूछो जाकर, पथिक कैसे बढ़ चढ़ा ॥

जीवन-पथ पर चलते चलते, बड़ी बड़ी उलझन आती हैं ।
आँखें कभी उठा करती हैं, कभी शर्म से झुक जाती हैं ॥
मन में टीस चीस होती है, फिर भी मुस्काना पड़ता है ।
छाती को छलनी करके भी, मन को समझाना पड़ता है ॥

आँखों के निर्मल पानी में, साध बहानी ही पड़ती है ।
अपने ही हाथों से अपनी, चिता जलानी ही पड़ती है ॥
मानव अमर बिम्ब ईश्वर का, मानव-जीवन दीप धूप है ।
दुःखों में जो सुख बन जाये वह केवल सच्चा स्वरूप है ॥

मेरे मोहन के पथ में भी, बड़ी बड़ी बाधायें आईं ।
उस सुलझन से उलझ उलझनें, हार हार कर भी टकराईं ॥
विषय वासना के चिन्तन से- संग-दोष पैदा होता है ।
संग दोष से काम, काम से- इच्छा में मानव रोता है ॥





इच्छा ही से क्रोध, क्रोध से- मोह, मोह से भ्रम आता है ।
स्मृति भ्रम की जलती ज्वाला में, बुद्धिमान नर जल जाता है ॥
सद्ग्रन्थों के पढ़ने से ही, वह सच्चा स्वरूप मिलता है ।
श्रद्धा और तपस्या से ही, मन का सत्य-सुमन खिलता है ॥

सद्ग्रन्थों में सत्संगति है, सद्ग्रन्थों में सुधा भरा है ।
सोने में सुगन्ध, ग्रन्थों में, ऋषि मुनियों का हृदय धरा है ॥
सत्साहित्य सुधा-सागर है, जिसमें कमी नहीं रत्नों की ।
कमी नहीं है किसी बात की, कमी सदा रहती यत्नों की ॥

सद्ग्रन्थों को मथ मथ कर जो- रत्नों का भण्डार लुटाते-
वे हैं अमर देवता, उनके- युग युग में पग पूजे जाते ॥
सद्ग्रन्थों एवं ईश्वर में, जिसका भी विश्वास नहीं है-
वह पीड़ित है, वह मिट्टी है, उसमें कोई श्वास नहीं है ॥

मोहनदास करमचँद गाँधी- सद्ग्रन्थों के भक्त बन गये ।
जिस से ज़हर हार जल जाये, वे वह निर्मल रक्त बन गये ॥
वे 'शंकर' की तरह ज़हर का- प्याला पीते ही जाते थे ।
माँ के फटे हुए पल्ले को, मन से सीते ही जाते थे ॥

लेकिन सुख की उलझी लड़ियाँ, पथ से उन्हें हटाने आईं ।
बड़ी बड़ी चमकीली आँखें, सत् से उन्हें डिगाने आईं ॥
"पोर्टस्मथ" बन्दर में मोहन, सम्मेलन में गये निमन्त्रित ।
वहाँ बहुत हैं दुराचारिणी, पथ कर देती हैं अनियन्त्रित ॥

नारी किस को नहीं बाँधती, नारी के आगे नर हारा ।
नारी भँवर भयंकर जिसमें- नर को मिलता नहीं किनारा ॥
कैसा भी तैराक मनुज हो, डूबे बिना नहीं रह सकता ।
नारी के मँझधार पार का, सारा सार नहीं कह सकता ॥

एक सुन्दरी के घर पर ही, मेरे मोहन को ठहराया ।
खेल खेल में मचल उठा मन, विष सा काम-नाग लहराया ॥
निर्बल के बल राम, राम ने- जिसको चाहा उसे उठाया ।
भारत माता की क़िस्मत ने- बीच भँवर से उन्हें बचाया ॥







देख कुपथ पर पैर उन्हों का, उनके साथी ने मुँह खोला।
'यह कलियुग', 'यह पाप', 'अरे यह'– 'भागो भागो' वह यह बोला॥
शर्मिन्दे से हो मनमोहन– बुरे मार्ग से तभी हट गये।
राम-नाम की तेज़ धार से– कामदेव के पंख कट गये॥



जो ईश्वर के भक्त उन्हों को, ईश्वर गोदी में ले लेता।
अपनी छाती से चिपटाकर, अपनी अमर ज्योति दे देता॥
राम-भक्ति के ही प्रताप से– बचे गढ़े में गिरते गिरते।
जो नर विमुख राम-चरणों से– उसके पथ में बादल घिरते॥

राम-नाम की ज्योति-रश्मि से– काले बादल फट जाते हैं।
सत्संकल्पों के प्रभाव से– पथ के पत्थर हट जाते हैं॥
चाहे जितना कठिन कार्य हो, राम-कृपा से पूरा होगा।
जिसने आश्रय लिया राम का, उसने कभी नहीं दुख भोगा॥

जीवन की सारी बाधायें, राम-कृपा से फूल बनेंगी।
जीवन की सारी मँझधारें, राम-कृपा से कूल बनेंगी॥
बड़े ध्यान से राम-नाम ले, मोहन आगे बढ़े हमारे।
मैं भी तुम्हें ढूँढता हूँ प्रभु! कहाँ मिलेंगे चरण तुम्हारे॥

वह आगे बढ़ता जाता है, जिसने उसकी क़ीमत आँकी।
नारायण के साथ उन्होंने– देखी "हेमचन्द्र" की झाँकी॥
'नर नारायण हेमचन्द्र' के– मन की गाँठें टूट चुकी थीं।
कृत्रिमता की कलुषित बातें– उनके मन से छूट चुकी थीं॥

शान्त सादगी में रहते थे, 'हेमचन्द्र' के भाव शुद्ध थे।
उनके पावन मन मानस में, शुद्ध भाव से बसे "बुद्ध" थे॥
उस लेखक ने इस भावुक पर– अपने मन की छाप छोड़ दी।
मन के उच्छृङ्खल घोड़े की– सीधी ओर लगाम मोड़ दी॥

मेरे मोहन 'हेमचन्द्र' से, रोज़ नई बातें करते थे।
भरते थे जागृति जीवन में, अपव्यय-डाकू से डरते थे॥
आर्ष "कार्डिनल मैनिंग" ऋषि से– मिलने को पहुँचे आश्रम में।
वह मानवता का प्रतीक था, कमी न थी जीवन के क्रम में॥



ये भारतवासी उनसे मिल– जीवन-पथ पर धन्य हो गये।
मिले महात्माओं से जो जन– वे जन मन के मैल धो गये॥
आर्ष 'कार्डिनल मैनिंग' ऋषि ने– उनकी आवभगत की रह रह।
भला करे भगवान तुम्हारा, ऋषि ने आशीर्वाद दिया यह॥

साधु पुरुष से मिल वे दोनों, साधु बन गये, साध बन गये।
मन में जितने भी कीड़े थे, सत्संगति से सभी छन गये॥
प्रिय 'नारायण हेमचन्द्र' फिर– चले गये 'पेरिस' प्रदेश में।
इसी तरह जीवन भर राही, रहे घूमते देश देश में॥

देश विदेश घूमते डोले, लेकिन अपना देश न भूले।
कभी कहीं शूलों पर झूले, कभी कहीं फूलों पर झूले॥
मेरे मोहन भी 'पेरिस' में– गये देखने को प्रदर्शिनी।
निर्धनता में यात्रा की वह, मन की साधें रहीं संगिनी॥

निर्धनते! मत रोक मुझे तू, मंज़िल मेरे साथ चलेगी।
इस ग़रीब यात्री के पथ पर मनुष्यता की ज्योति जलेगी॥
पगली! नहीं जानती क्या तू, वे अमीर तेरे बल पर हैं।
तू फ़क़ीर इसलिये कि ये सब– बादशाह तेरे दम पर हैं॥
वैसे तो यदि करो कल्पना, यह सारी दुनिया मेला है।
इस दुनिया में वही अमर है, जो पाषाणों से खेला है॥
अपव्यय किये बिना मोहन ने– 'पेरिस' की सुन्दरता देखी।
शीशों सी सुन्दर सड़कों पर– यौवन की निर्मलता देखी॥

संसृति की अलकों पर 'पैरिस'–
या विधु हास सुहाग लुटाता।
मानव की उस काव्य-कला पर–
नृत्य रचा अलि-गायक गाता॥
सावन की बरसात वही मधु,
केसर फूल गुलाब वही है।
हीरक-हार वही घन में, मणि–
मानव की जग-आब वही है॥







जनायक

'पैरिस' रूप-राशि मानव की, 'काश्मीर' की एक मद-झलक।
मनु की निर्मित नयी सुन्दरी, श्री पर खड़ी हुई है अपलक॥
दृश्य वहाँ के देख मनोहर, दृग-गायक गाते रहते हैं।
'पैरिस' की प्रिय सुन्दरता से, यौवन शर्माते रहते हैं॥



'पेरिस' के वे मन्दिर देखे, जिनमें स्वयम् शान्ति रहती है।
'नाट्रेडम' की कला चातुरी, जिसमें कृषि कविता कहती है॥
चित्रकार की चित्रकला में- कलियाँ क्रीड़ा करती देखीं।
चित्रकला में 'इन्द्रपुरी' की- परियाँ पानी भरती देखीं॥

सुन्दर शान्त मूर्त्ति 'मरियम' की, जिसके आगे बैठे थे नर।
श्रद्धा से उस दिव्य रूप पर, झुका रहे थे सब अपना सर॥
कला-केलि के उस आँगन में, 'पेरिस' का फ़ैशन भी देखा।
भोग विलास प्यास अधरों की, बल खाता यौवन भी देखा॥

'एफिल टावर' पर भी चढ़ कर, पढ़ी भावनाओं की रेखा।
जो न कभी बूढ़ा होता है, 'पेरिस' में वह यौवन देखा॥
कर कर केलि कला-कानन में, कुन्दन-धन से रहे बिखरते।
जितने भी वे घुसे आग में, उतने ही वे रहे निखरते॥

मिले विलायत के मित्रों में, 'सत्रों' में भी हुए उपस्थित।
लेकिन उन सारे 'सत्रों' में, मेरे मोहन रहे व्यवस्थित॥
इन भोजों में गये किन्तु वे- पास नहीं फटके शराब के।
भोजों में फल फूल चखे पर- किये नहीं दर्शन कबाब के॥

प्रिय छात्रों के साथ भोज में- पथ से विचलित नहीं हुए वे।
जो ईश्वर के भक्त, पंक में- कण भर कलुषित नहीं हुए वे॥
वे विश्वासी' कीचड़ में भी, श्वेत कमल की तरह रहे हैं।
उसने उतने ही सुख भोगे, जिसने जितने दुःख सहे हैं॥

दुःख कसौटी है जीवन की, जिस पर नर परखा जाता है।
दुःखों में जो धैर्य छोड़ता, वह दर दर ठोकर खाता है॥
दुःख और सुख के झूले में, मोहन अपना देश न भूले।
वे फूलों की तरह खिले हैं, जो नर शूलों पर भी झूले॥





गोरों के गर्वित प्रदेश में– इसी तरह शिक्षा मिलती है।
सभ्य देश में खिला पिला कर, विद्या की भिक्षा मिलती है॥
गुरु से नहीं, वहाँ तो मानव- भोजों से बैरिस्टर होते।
पढ़ना पड़ता नहीं वहाँ पर, शिक्षक देख देख कर होते॥

जो न पिये मदिरा के प्याले, वह विलायती बन्दर कैसा?
जो न विलायत के व्यसनों में, वह पागल बैरिस्टर कैसा?
लेकिन सब दुर्व्यसनों से बच, मोहन देते रहे परीक्षा।
पढ़ते रहे प्रेम से प्रतिदिन, दुर्व्यसनों से भी ली दीक्षा॥

इस दुनिया की बात बात में, यदि खोजो तो पाओगे कुछ।
बुरी बात में भी अच्छाई, यदि ढूँढो तो लाओगे कुछ॥
जो खो गया खतम है वह नर, जिसने खोजा उसने पाया।
जो कि खोजने चला विश्व में, वह भगवान अमर फल लाया॥

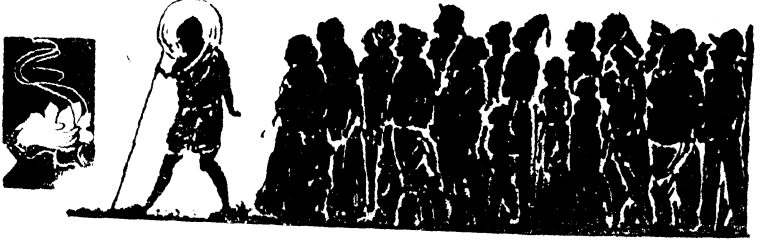
'ब्रुम' की 'कॉमन लॉ' पुस्तक पढ़, कुछ क़ानूनी ज्ञान बढ़ाया।
और 'इक्विटी' पुस्तक में भी, मनमोहन ने हृदय लगाया॥
'ह्वाइट' 'ट्यूडर' के पढ़ने से, उन्हें बहुत कुछ मिला मसाला।
क़ानूनी साहित्य पढ़ा वह, जो उलझा मकड़ी का जाला॥

इसी तरह से मेरे मोहन, पढ़ क़ानून हुए बैरिस्टर।
प्रश्नों में उत्तीर्ण हो गये, ले ले तूफ़ानों से टक्कर॥
जीवन-पथ पर प्रश्न अनेकों, और अनेकों ही हैं उत्तर।
पूरी करी परीक्षा अपनी, बाँधा घर चलने को बिस्तर॥

बैरिस्टर तो हुए किन्तु मन- मेरे मोहन का अशान्त था।
बैरिस्टरी किस तरह होगी, इस दुविधा से हृदय भ्रान्त था॥
जितना ज्ञान हुआ था उनको, उतने पर विश्वास नहीं था।
बड़ी बड़ी आशायें थीं पर- बढ़ा चढ़ा अभ्यास नहीं था॥

जो कुछ वहाँ पढ़ा था वह तो- भारतीय अध्याय नहीं था।
अपने देश धर्म का उसमें, न्याय और अन्याय नहीं था॥
हृदयंगम क़ानून नहीं था, इसीलिये उससे डरते थे।
अपनी दुर्बलता की बातें, अपनी ताक़त से करते थे॥







जनायक



भारत की पवित्र देवी का– पश्चिम में सम्मान नहीं था।
हिन्दू शास्त्र तथा इस्लामी– क़ानूनों का ज्ञान नहीं था॥
अपने मित्रों से मोहन ने– अपनी दुर्बलता बतलाई।
उन मित्रों ने कहा उन्हों से, उपयोगी हैं 'दादा भाई'॥

उनसे जाकर मिलो, तुम्हें वे– आगे का पथ बतलायेंगे।
अन्धकार के दुर्गम पथ पर– 'दादा' दीपक दिखलायेंगे॥
या तुम 'कट्टर पंथी' दल के– 'मिस्टर पिंकट' से मिल आओ।
वे सहृदयता के प्रतीक हैं, उनको अपनी बात सुनाओ॥

स्वच्छ सौम्य सरिता सा मानस, सब से मधुर बात करते हैं।
प्रेम पूर्ण पावन भावों से, मानस की पीड़ा हरते हैं॥
मोहनदास करमचँद गाँधी, मिले उन्हों से जिज्ञासा से।
'फ्रेडेरिक पिंकट' ने उनको– समझाया दीपित आशा से॥

इन बुज़ुर्ग ने मोहन का मन– अपने सद्भावों से धोया।
सज्जनता की कृपा-कोर से– उनके मन में मोती बोया॥
जिस पर कृपा करी सज्जन ने, उसको दुर्दिन नहीं सताता।
जिस पर हाथ धरा दुर्जन ने, वह जीवन भर ठोकर खाता॥

कहा हृदय में मोहन ने यह– 'मिस्टर पिंकट' बड़े भले हैं।
अपने भावों की गंगा से– मानस धोते हुए चले हैं॥
'फ्रेडेरिक' से मिल मोहन ने– मातृभूमि की राह पकड़ ली।
मोह विलायत का तज डाला, भारत माँ की चाह पकड़ ली॥

स्मृति भारत की उनके मन में–
मचली जल में मछली जैसी।
पल में मन में बनतीं मिटतीं,
उठतीं स्मृति में लहरें कैसी॥

हम देख रहे पथ को कब से,
दृग भारत-दर्शन के प्यासे।
किसकी पग-धूलि टटोल रहे,
तरुओं! झुक के किस आशा से॥





भारत देश महान जहाँ पर–
सागर-हार, हिमालय ऊँचा।
जो विष पी शिव से शुभ से मृदु,
शंकर रूप शिवालय ऊँचा॥

पीर जहाँ, पतवार जहाँ, रण–
धीर जहाँ, ऋषि-लोक जहाँ है।
ज्ञान लिये, सुर-सार लिये गुरु–
गौरव भारत देश वहाँ है॥



छोड़ विलायत की रंगीनी, कूच किया 'आसाम यान' से।
आशा और निराशा-नैया, टकराई विधि के विधान से॥
क्षुब्ध उदधि था, क्षुब्ध हृदय था, सागर में सागर चलता था।
या कि हृदय में सागर भर कर, सागर में गागर चलता था॥

उधर गर्जतीं सिन्धु-लहरियाँ, इधर हृदय में लहरें लहरी।
उधर अथाह थाह सागर की, इधर थाह मानस की गहरी॥
उधर सुधा-घट था सागर में, इधर सुधा था उन पाँखों में।
उधर नीर में रत्न छिपे थे, इधर रत्न थे दो आँखों में॥

मोती हीरे लाल जवाहर, मणियों का था जल में संगम।
लाखों लाल जवाहर मोती, मन मोहन के थे हृदयंगम॥
आँखों में वह वर्षा जिससे– मन के रत्न बरस पड़ते थे।
फूलों के प्रासाद उन्हों की– रसना-जलनिधि पर झड़ते थे॥

सागर की गोदी में शशि था, उनका मुख था पूर्ण शान्त शशि।
जिस से महाकाव्य लिख जाते, उनकी उँगली में थी वह मसि॥
कवि ने मोहन के जीवन से– महाउदधि की होड़ लगादी।
सागर के तूफ़ानी जल में– गागर जैसी नाव चलादी॥

कवि की उड़ी कल्पना जिसने– देखी सागर की गहराई।
सागर के अन्तस्तल में घुस, गिरि पर अपनी ध्वजा चढ़ाई॥
सारे अम्बर में उड़ उड़ कर– गहन गगन का हृदय टटोला।
वे ही बोल सुने कानों में– जो मोहन बचपन में बोला॥







अतल तलातल भूतल में उड़, घूम वहीं आ गई कल्पना।
मन-मोहन की चरण-धूलि से, व्यापक में छा गई कल्पना॥
बातें करते हुए उदधि से, मन-मोहन 'बम्बई' आ गये।
तट पर गले मिले भैया से, आज 'भरत' भगवान पा गये॥



दुनिया का विस्तार साथ ले, सागर की गहराई लेकर।
उड़ते हुए कल्पनाओं में, मेरे मोहन आये तट पर॥
दीप जलाने वाला हो यदि, जग में रहता नहीं अँधेरा।
दूर देश जाने वाला वह, लेकर आया नया सवेरा॥

स्वर्ण सवेरे का मधु-मंगल, सूरज सा भाई करता था।
प्यासी मिट्टी में आँखों से, सूरज गंगाजल भरता था॥
चन्दा ढूँढ रहा सूरज को, सूरज चन्दा के वियोग में।
कुमुद कमल दोनों खिलते हैं, चन्दा सूरज के सुयोग में॥

वर्षों से प्यासे नयनों ने- प्रिय भाई के दर्शन पाये।
बही प्रेम की गंगा धारा, दोनों ने आँसू बरसाये॥
दोनों भैया के पल्लों में- बरस पड़े आँखों से मोती।
कहीं गले मिलते हैं भाई, कहीं प्रेम की हत्या होती॥

मिल कर गले कहा मोहन ने, भैया! जल्दी घर चलना है।
मेरा मानस भटक रहा है, जल्दी से माँ से मिलना है॥
उत्तर में उनकी दृग-वाणी- डब डब डब बरसात बन गई।
दिन से दीपित ज्योति-सुन्दरी- क्षण को काली रात बन गई॥

सिसक सिसक कर अग्रज बोले, भैया! माँ परलोक सिधारी।
अन्त समय तक उत्सुकता से, बाट देखती रहीं तुम्हारी॥
दुःख न हो तुमको विदेश में, इसीलिये यह खबर न भेजी।
निर्मम काल कराल निमिष में- खींच ले गया प्राणों से जी॥

आँसू निकल पड़े मोहन के, भिगो दिया धरती का आँचल।
मानो फूट पड़ा धरती पर- मानस आज हिमालय का गल॥
माता का प्रतिबिम्ब धरा की- गोदी में मोहन ने देखा।
माँ की प्यार भरी सेवा ही- संसृति पर नदियों की रेखा॥









अपना मानस खुदवा कर माँ– पुत्रों को देती है मोती।
मूक धरा पर लिखी हुई है– माँ की कैसी छाती होती॥
माँ वात्सल्य-मूर्ति है, माँ के ऋण से उऋण कौन हो पाया?
भैया! कहाँ गई बतलाओ, उस अमूल्य छाया की छाया?

'माँ मर गई!' हाय! मैं माँ के– अन्त समय दर्शन न कर सका।
अन्त समय माँ के चरणों में– रो रो कर आँसू न भर सका॥
ईश्वर की इच्छा है इसमें, कोई कर ही क्या सकता है?
क्षण-भंगुर दुनिया में नश्वर, अधिक ठहर ही क्या सकता है??

एक दिवस सब को जाना है, चार दिनों का यह मेला है।
पानी की लहरों के ऊपर, क्षणिक बुलबुलों का रेला है॥
बच्चों जैसा खेल ज़िन्दगी, जिसमें हम भूले रहते हैं।
हम प्रभात के तारे हैं पर, व्यसनों में फूले रहते हैं॥

आता एक, एक जाता है, प्रतिपल खेल यही होता है।
कोई रोता आता, कोई– अर्थी के ऊपर सोता है॥
इसी तरह रोते मानस को– मन-मोहन ने शान्त कर लिया।
आत्म-ज्ञान से मार मृत्यु को, मन में जीवन-दीप धर लिया॥



लहरों पर लिख रही लेखिनी–
जीवन और मरण का लेखा।
लोल बुलबुलों के मेले में–
मेरा तेरा रेला देखा॥

हरे हरे हिलते पल्लव ये–
पतझड़ की कह रहे कहानी।
हँसने की आँखों से तोलो,
रोने की आँखों का पानी॥











पंचम सर्ग



आशा और प्यार की प्रतिमा, मोती लिये देखती थी पथ।
तृषित दृगों का तीर्थ आ गया, मंगल गाने लगे मनोरथ॥
मानो भरी हुई भावों से, पलक-किनारे नाव आ गई।
या कि प्रतीक्षा करते करते, प्रतिमा की मनुहार छा गई॥

मोती लुटा लुटा मानस के, स्वाति-बिन्दु चख रही चातकी।
छाई चारों ओर चाँद के, चाह मधुर चाँदिनी रात की॥
मन के भाव अधर तक आकर, पति की ओर चोर से लपके।
अमृत बरसने लगा चौक में, हँस हँस शिशु चकोर से लपके॥

मुरझा गई प्रतीक्षा में 'बा', पर प्रिय को पा हरी हो गई।
उन्हें देख कर मुख-मण्डल के- पीलेपन की हवा खो गई॥
प्रणय लाज से चाव हृदय के, उन चरणों में झुके रह गये।
मानस की लहरों के मोती, पद-पद्मों से कथा कह गये॥

चूम रहीं लहरें मधु का मुँह,
पाँखुड़ियों पर पावस नाचा।
अंकित योग वियोग युगों पर,
योग वियोग प्रभा पर बाँचा॥

मेघ मिले कृषि से करुणा कर,
आज हँसी हरि पा प्रिय खेती।
ग्रीष्म गया, बरसात सुहागिन,
प्यास बुझा मधु के घट देती॥







बोल उठे मोहन के आँसू, आज कहीं यदि माँ भी होती।
'बा' का प्यार चढ़ाता मोती, माँ का प्यार लुटाता मोती॥
धरती माँ! मेरी माँ को क्यों- भेज दिया अपनी गोदी से?
कहाँ गई माँ जिसने मुझको- तेज दिया अपनी गोदी से॥

माँ के दर्शन को अधीर थे, नीर किन्तु रह गया दृगों में।
वह भी सुखा लिया आँखों में, संयम् कर इन्द्रियाँ मृगों में॥
जल में जलते रहे किन्तु मन- जन जन के आगे न दिखाया।
पथ पर चलते रहे प्राण प्रिय, मन में माँ का घाव छिपाया॥

प्रिय भैया के साथ साथ वे- मित्र 'मेहता' के घर आये।
'रेवा शंकर जगजीवन' से, हाथ जोड़कर हाथ मिलाये॥
स्नेह-गाँठ बँध गई उन्हों से, 'रायचन्द्र' का परिचय पाया।
'रायचन्द्र' के निर्मल मन में- सद्भावों का संचय पाया॥

सत्चरित्र, ज्ञानी, कवि थे वे, भावुक मित्र, शतावधान थे।
शब्द-कोष थे, आत्म-ज्ञान थे, शास्त्र-विज्ञ थे, बुद्धिमान थे॥
कवि के मानसरोवर में थी- केवल चाह आत्म-दर्शन की।
हरि-दर्शन की प्यासी आँखें, राह देखती थीं भगवन की॥

व्यापारी थे पर आँखों में- दुनिया का व्यापार नहीं था।
ईश्वर-दर्शन के भूखे थे, नश्वर जग से प्यार नहीं था॥
लाखों के सुलझे व्यापारी, जग की गति विधि निरख रहे थे।
सद्ग्रन्थों के सागर में से- हीरे मोती परख रहे थे॥

शुद्ध आत्म-ज्ञानी ऋषि कवि ने- मोहन का मन किया प्रभावित।
मेरे गुणग्राहक मोहन ने- अपना मानस किया प्रकाशित॥
'रायचन्द्र कवि' मन मोहन से- हर क्षण धार्मिक वार्ता करते।
मन-मोहन गाँधी के मन में- प्रति पल धर्म-भावना भरते॥

हृदय लगाकर सुनते थे वे, 'रायचन्द्र' की अनहद बातें।
बातों में दिन घट जाते थे, बातों में घट जातीं रातें॥
धर्म ज्ञान को छोड़ वहाँ पर, और नहीं बातें होती थीं।
'रायचन्द्र' की छाप हृदय में, भावों के मोती बोती थीं॥







'रायचन्द्र' के धर्म ज्ञान ने– उनको जीवन-मार्ग दिखाया।
उस ज्ञानी ने मन-मोहन को– सच्चा ईश्वर-ज्ञान सिखाया॥
आध्यात्मिक कार्यों में वे कवि– राह बताते रहे उन्हों को।
दुनिया के इस अन्धकार में– दीप दिखाते रहे उन्हों को॥



'रायचन्द्र भाई' को मोहन– श्रेष्ठ मानते रहे हृदय से।
उन्हें बहुत कुछ मिला सहारा, उनके हृदय-कोष अक्षय से॥
'रायचन्द्र' के गुण-दर्शन से, मोहन के मन में गुण आये।
यद्यपि नहीं धर्म-गुरु थे वे, पर गुरुओं जैसे गुर पाये॥

गुरु के बिना ज्ञान-गंगा में, कोई नहीं नहा सकता है।
गुरु-साबुन के बिना 'भगीरथ'– मैला नहीं बहा सकता है॥
गुरु वह माली है जो मन में, सद्भावों के फूल खिलाता।
जो न देख पाता ब्रह्मा भी, गुरु वह सब जन को दिखलाता॥

बड़े पुण्य से, बड़े भाग्य से, बड़े ज्ञान से, गुरु मिलते हैं।
जिज्ञासा की अमिट चाह से, मानस में मोती खिलते हैं॥
गुरु-सेवा जिज्ञासु करे जब– तब होती पहिचान स्वयम् की।
गुरु-चरणों के प्रिय प्रताप से– रह पाती है आन स्वयम् की॥

जिसको गुरु दर्शन दे देते, वह न कभी होता है गाफ़िल।
पा कवि से गुण ज्ञान ध्यान गुर, प्राण हुए दुनिया में दाखिल॥
मोहनदास करमचँद गाँधी– अब दुनियादारी में आये।
ऊँची नीची पगडण्डी पर– उल्टे सीधे थप्पड़ खाये॥

मोहन के ऊपर भाई ने– बड़ी बड़ी आशायें बाँधी।
आशा के शिशु से सुमनों पर– नाच उठी चावों की आँधी॥
मोहन बैरिस्टर हो आये, फूले नहीं समाये भैया।
बहुत बड़े हो जायेंगे हम, पार लगेगी घर की नैया॥

मन में सोचे बैठे थे वे– घर में ढेर लगेंगे धन के।
कीर्ति मिलेगी, पद पायेंगे, भाव मनचले मचले मन के॥
इन चावों में भोले भैया– नई कामना में उड़ते थे।
कभी पहुँच जाते रत्नों में, कभी कल्पना में उड़ते थे॥





मोहनदास हुए बैरिस्टर, अब घर में लक्ष्मी आयेगी।
बड़े बड़े ओहदे मिलेंगे, मुँह माँगी निधि मिल जायेगी॥
ऋण का बोझ उतर जायेगा, सब घर का सम्मान करेंगे।
रहन सहन में, बोल चाल में, मोहन पर अभिमान करेंगे॥

घोड़ा गाड़ी, कोठी होगी, कमी न होगी किसी बात की।
देखेंगे अवसान रात का, देखेंगे किरणें प्रभात की॥
चावों में वे पंख लगा कर– हृदय-गगन में उछल रहे थे।
मानो तम के बज्र चीर कर– मन के सूरज निकल रहे थे॥

इस जग में क्षण-भंगुर मानव– कितनी चाह किया करता है।
आशा और निराशा में नर– आँसू घोल पिया करता है॥
पग पग पर ठोकर खाता है, पग पग पर उठता जाता है।
दुःखों को सह सह कर प्राणी, दुःखों से छुटता जाता है॥

आशा के स्वर्णिल स्वप्नों में, भाई ने सज धज दिखलाई।
अपने मन-मोहन भैया की, बड़ी शान से शान बढ़ाई॥
चीनी के बर्तन मँगवाये, चाय और काफ़ी मँगवाली।
'कोको' आया, बिस्कुट आये, 'ओटो की लपसी' भी आली॥

कोट, बूट, पतलून डाटकर, मोहनदास ठाठ से निकले।
या मोहन के शुद्ध देह पर, खटमल चन्द खाट से निकले॥
भाई से मिलकर मन-मोहन, पत्नी के कमरे में आये।
अपनी आँखों के प्रकाश से, 'बा' ने अपने नयन मिलाये॥

नये रूप में देख नाथ को, 'बा' पति से मुस्का कर बोली–
चोली जैसा कोट पहिन कर, किससे चले खेलने होली?
यह इजार सी क्या पहनी है, सर पर धरा टोकरा सा क्या?
मुच्छ कहाँ उड़ गईं तुम्हारी, दिल पर धरा मोगरा सा क्या??

मिले नयन से नयन प्रेम में, मुँह में मुँह की बात रह गई।
आँखों से प्रेमामृत बरसा, जिसमें सारी याद बह गई॥
सीता सी पतिव्रता प्रिया ने, लगा लिया प्रियतम छाती से।
और फूल से सुन्दर शिशु को, प्यार किया मन की थाती से॥







अपने, भाई के बच्चों को- मोहन भैया लगे पढ़ाने।
शारीरिक शिक्षा से उनका- शारीरिक बल लगे बढ़ाने॥
और मानसिक शिक्षा से मन, सद्भावों से भर देते थे।
आध्यात्मिक बातें कह कह कर, मन को निर्मल कर देते थे॥

बच्चों को शिक्षा देते थे, बच्चों से मन बहलाते थे।
रसना-रस की सुधा धार से, सब बच्चों को नहलाते थे॥
किन्तु जाति का झगड़ा अब भी- उनके सर पर चढ़ा हुआ था।
रूढ़ी की चिपटू जौकों का- गुस्सा अब भी बढ़ा हुआ था॥

डर कर भाई ने मोहन को- गंगा-जल में स्नान कराया।
फिर भैया ने 'राजकोट' में- क्रूर जाति को भोज खिलाया॥
खा खा भोज जाति वालों का- गुस्सा कुछ कुछ शान्त हो गया।
हाय! रूढ़ियों के रोगों का- मस्तक कितना भ्रान्त हो गया॥

भारत माता के घावों से, इन के पत्थर हृदय न हिल सके।
बहिष्कार के कारण मोहन, सास ससुर तक से न मिल सके॥
सास ससुर कहते थे इनसे, हमसे छिप छिप कर मिल जाओ।
मोहन को यह बात न भाई, साफ़ कहा चोरी न कराओ॥

लोगों की आँखों से छिप छिप, कैसे तुमसे मिल जाऊँगा?
कहो कि, ईश्वर की आँखों से, कैसे भेद छिपा पाऊँगा?
जिसने सब को आँखें दी हैं, उस प्रभु को अन्धा करते हो।
चार आदमी के आगे तुम, मुझसे मिलने से डरते हो॥

तो मैं हरगिज़ नहीं मिलूँगा, चाहे तरस तरस मर जाऊँ।
अपनी आँखों के अम्बर से, चाहे बरस बरस झर जाऊँ॥
निश्चय पर रह अटल उन्होंने- आशाओं से ख़र्च बढ़ाया।
नई नई रंगीनी में रँग- दर्वाज़े पर हाथी आया॥

किन्तु ख़र्च के साथ आय का, हुआ नहीं था कहीं ठिकाना।
बिना विचारे जो करता है, उसको पड़ता है पछताना॥
और वकालत करने का भी, उन्हें अभी अभ्यास नहीं था।
अभी नये बैरिस्टर थे वे, अपने पर विश्वास नहीं था॥





किसी मवक्किल से फिर गाँधी– फ़ीस दसगुनी कैसे लेते ?
कैसे किसी मवक्किल को वे– मानव होकर धोखा देते ?
इन्हीं विचारों के ग़ोतों में, मोहन फिर 'बम्बई' आ गये।
अनुभव, आशा, अभ्यासों के, मानस में संकल्प छा गये॥

रचा नया घर, रख रसोइया, मोहन रहने लगे वहाँ पर।
पर सीधा ब्राह्मण रसोइया, खिला न सकता था रोटी कर॥
मैली धोती, मैला कुर्ता, जग का कुछ भी ज्ञान नहीं था।
बिना पढ़े ग्रामीण सत्य में, लेशमात्र अभिमान नहीं था॥

'सन्ध्या थी हल और कुदाली', ईश्वर उसके लिये खटकरम।
जाने किन पुण्यों से पाया, उसने सत्यम् शिवम् सुन्दरम्॥
'रविशंकर' के शिक्षक बनकर– मोहन लगे बनाने रोटी।
जो होते हैं बड़े उन्हों को– बात नहीं कोई भी छोटी॥

अच्छे को तो सभी निभाते, किन्तु बुरे को कोई बिरला।
ज़हर बुराई, नहीं बुरा विष, सोना खरा खोट तप निकला॥
बुरी बात से घृणा करो पर– टुकराओ मत किसी बुरे को।
उसके लिये बुराई काफ़ी, तुम क्यों ख़ूनी करो छुरे को ?

उसे प्यार से पुचकारो तुम, उसकी बुरी बात छुड़वाओ।
बुरा न कोई बने विश्व में, 'गाँधी' की भाषा में गाओ॥
इसी तरह बम्बई शहर में– अपनी बैरिस्टरी जमाई।
आया नहीं मुक़दमा कोई, गाँधी की तबियत घबराई॥

'तैयब जी' की सुनी प्रशंसा, सुनीं 'फिरोज शाह' की बातें।
छक्के छूट गये मोहन के, अपनी हालत पर शर्माते॥
किसी तरह से मिला मुकदमा, पहली बार 'ममी बाई' का।
घर का खर्च बढ़ा जाता था, इनके हृदय बड़े भाई का॥

रुपए तीस उन्हों के ठहरे, इस पर भी दलाल चढ़ आये।
कहा, कटौती लाओ हमको, सुन सुन कर मोहन घबराये॥
किन्तु कटौती दी न उन्होंने, टस से मस न हुए तिल भर भी।
बड़े भाग्य से मिला मुकदमा, वापिस किन्तु गया मिल कर भी॥







'स्मॉलकॉज़ न्यायालय' में वे- गये मुक़दमे में पहिले दिन।
पहिली बार अदालत में वे- गये प्रश्न के उत्तर गिन गिन॥
मुद्दाले के बैरिस्टर थे, पहिली बार जिरह करनी थी।
पहिली बार परीक्षा थी यह, शिक्षा की लज्जा रखनी थी॥



पर न्यायालय में जब पहुँचे- पैर काँपने लगे उन्हों के।
जब जज के आगे आये तब- भाव हाँपने लगे उन्हों के॥
खड़े जिरह के लिये हुए पर- हृदय धड़कने लगा उन्हों का।
धरती काँपी, घूम गया सर, धैर्य तड़कने लगा उन्हों का॥

गाँधी की आँखों के आगे- न्यायालय तक लगा घूमने।
मानो गाँधी के मस्तक में- दुर्बल पागल लगा झूमने॥
भूल गये सब कुछ मन-मोहन, आँखों में छा गया अँधेरा।
हँसी आ गई जज साहब को, मोहन को मूर्च्छा ने घेरा॥

रख कर मिसल अदालत ही में, बैठ गये मोहन मूर्च्छित से।
और पैरवी करने की वह- चाह हट गई उनके चित से॥
कोई और वकील करो तुम, कहा मवक्किल से गाँधी ने।
मैं न पैरवी कर पाऊँगा, साफ़ कहा दिल से गाँधी ने॥

छोड़ मुक़दमा चले गये वे, मन ही मन में लज्जित होकर।
निश्चय किया, करूँ न वकालत, जब तक निकल न जायेगा डर।
उसके बाद अर्जियाँ लिख लिख, डग मग डग मग चले अगाड़ी।
बिना आय के घर के व्यय की, कैसे खिँच सकती है गाड़ी॥

सोचा, कहीं पाठशाला में- जाकर अध्यापक बन जाऊँ।
बिना आय के घर गृहस्थ का- कैसे आगे काम चलाऊँ?
घर की चिन्ता में घुल घुलकर, गाँधी घुलते ही जाते थे।
बिना अर्थ के अब मोहन पर, बड़े बड़े संकट आते थे॥

इस गृहस्थ के चक्कर ने भी- बड़ों बड़ों का पथ रोका है।
जब भी पैर बढ़ा बढ़ने को- तब गृहस्थ ने ही रोका है॥
पिलते पिलते, पिसते पिसते, घर में शान्ति नहीं मिल पाती।
फ़ुकते फ़ुकते, बिँधते बिँधते, छाती छिल छलनी हो जाती॥





कैसे गृहस्थ उनको मन से न बाँधे !
कोई कहो हृदय की निधि छोड़ता क्या ?
प्यारा प्रभात पकड़ा शशि ने दिवा पा।
खोया किसान दिन में शशि सा बिचारा ॥

जाड़े और धूप में गाँधी, रोज़ कचहरी पैदल जाते।
लेकिन कुछ भी हाथ न आता, खाली हाथ हिलाते आते ॥
होकर व्यय से तंग उन्होंने- दिया प्रार्थना-पत्र कहीं पर।
मिली नहीं नौकरी वहाँ भी, वापिस आये धक्के खाकर ॥

किया बहुत श्रम, फल न मिला कुछ, वे लाचारी में क्या करते ?
चिन्तित हुए बड़े भाई भी, भाग्य-चक्र में रहे विचरते ॥
हार गये "बम्बई" शहर से, भागे डण्डा डेरा लेकर।
झोली झाड़ चल दिये वापिस, अपने टके गाँठ के देकर ॥

मानो विपदाओं ने आ आ- गाँधी जी का हृदय टटोला।
'राजकोट' आ गये पुनः वे, अलग एक कार्यालय खोला ॥
डाल कचहरी में कुर्सी को- बैठ गये कुर्सी पर खाली।
भाई के कहने सुनने से- मोहन देने लगे दलाली ॥

बड़े परिश्रम से गाँधी का- थोड़ा सा सिलसिला बन गया।
मानो पिघल शुद्ध मानस से, उनका रूठा भाग्य मन गया ॥
एक बार क्या, जीवन में तो- बार बार धक्के आते हैं।
दुर्बल गिरते, सबल सँभल कर- दलदल में से उठ जाते हैं ॥

एक बार गद्दी पर बैठे- 'राणा' एक 'पोरबन्दर' में।
मन्त्री बने इन्हीं के भाई, किन्तु नाव आ गई भँवर में ॥
'राणा साहब' को भाई जी- परामर्श देते रहते थे।
उल्टी बात सिखाते हैं ये- दुनिया वाले यह कहते थे ॥

'राणा' को भड़काते हैं ये, इन पर यह अभियोग लगाया।
गये 'राजनीतिक प्रतिनिधि' पर, उसने इन्हें तलब करवाया ॥
तुम इस पद से अलग हटोगे, उसने इनको धमकी दी यह।
कहीं विलायत में मोहन को- पहिले कभी मिल चुका था वह ॥







घर आकर भाई मोहन से- बोले, "तुम उनसे मिल आओ।
तुम हो उनके मित्र, उन्हें तुम- मेरे भावों को समझाओ॥
कहो 'राजनीतिक प्रतिनिधि' से- बुरे नहीं हैं मेरे भाई।
वे हैं उनके शत्रु जिन्होंने- तुम से आकर करी बुराई॥"



जो आगे बढ़ता है उसको- जग पीछे खींचा करता है।
पर वह बढ़ता ही जाता है, सत न दुर्जनों से डरता है॥
सुन भाई की बात ध्यान से, गाँधी ने यह बात विचारी।
उनके मानस-सागर में यह- बात लगी लोहे सी भारी॥

बोले- "आशा नहीं मुझे कुछ, दो दिन का परिचय ही क्या है।
अभी मित्रता, अभी शत्रुता, कलियुग का अभिनय ही क्या है॥
मेल रेल का खेल जिस तरह, ऐसे ही मेरा परिचय है।
यहाँ मित्रता कहाँ? यहाँ तो- स्वार्थ भरा झूठा अभिनय है॥

फिर जब नहीं बुराई की कुछ, तब क्यों हाथ फलायें आगे।
सब को देने वाला ईश्वर, लेने वाले से क्यों माँगें?"
हठ हो गई किन्तु भाई को, आज्ञा-पालक अनुज चल पड़े।
चलते चलते ठिठके, झिझके, अन्तस्तल में बहुत बल पड़े॥

बात न टाल सके भाई की, इच्छा के विपरीत गये वे।
मन में कोई कहता था यह- सतयुग के दिन बीत गये वे॥
जब दुःखों की करुण कहानी- मानवता मन में सुनती थी।
जब कि योग्यता योग्य पुरुष को- अपनी आँखों से चुनती थी॥

बातें करते हुए स्वयम् से, गये 'राजनीतिक प्रतिनिधि' पर।
किन्तु विलायत और यहाँ पर- पाया बहुत उन्होंने अन्तर॥
अब वे मित्र नहीं थे, अब तो- अधिकारों की कुर्सी पर थे।
कहाँ मित्रता? कहाँ हुकूमत? अलग अलग धरती अम्बर थे॥

आज 'राजनीतिक प्रतिनिधि' थे, कैसे याद मित्रता होती?
उससे बात न करती कुर्सी, जिसकी निर्धनता निधि होती॥
बड़ी कठिनता से गाँधी ने- उन साहब को याद दिलाई।
मिले विलायत में जब उनसे, वह पहली मित्रता बताई॥





कही हृदय की बात उन्हों से, कच्चे पक्के चिट्ठे खोले।
किन्तु हुकूमत की कुर्सी पर- साहब टेढ़े मेढ़े बोले॥
कहीं बहुत सी उल्टी बातें, अच्छा बुरा बहुत कुछ कह कह।
दोष तुम्हारे भाई का है, क्षमा नहीं हो सकता है वह॥
यह सब सह सह कर भी मोहन- अपनी बातें रहे सुनाते।
बड़ी युक्तियों से भैया को- बार बार निर्दोष बताते॥
जो कुछ कभी माँगने जाता- वह नर धरती में गड़ता है।
अपनी गरज़ बावली होती, सब कुछ सहना ही पड़ता है॥
मद की कुर्सी पर मतवाला, जो कुछ भी कहले वह थोड़ा।
घोड़ा तब सीधा चलता है, जब कि कमर पर पड़ता कोड़ा॥
साहब गुस्से से यह बोले- "तुम कमरे से बाहर जाओ।
हम न एक भी बात सुनेंगे, वापिस तुम अपने घर जाओ॥"
इस पर पुनः कहा गाँधी ने- "पूरी बात सुनो तो मेरी।"
साहब ने यह कहा बिगड़ कर- "मुझे हो रही है अब देरी॥
चपरासी! चपरासी!! जल्दी;" "जी हुज़ूर! हाँ, जी हुज़ूर! खाँ!"
"इसको अभी निकालो बाहर", लपका वह दरबान नूरखाँ॥
हाथ खींचकर धक्का देकर- उसने बाहर उन्हें निकाला।
भाई की खातिर गाँधी को- पीना पड़ा ज़हर का प्याला॥
किन्तु आज कलियुग है जिसमें- भ्रातृ-प्रेम का सार नहीं है।
भारत माता के दो बेटे, 'राम भरत' सा प्यार नहीं है॥
स्वाभिमान की चोटें चसकीं, गाँधी मन ही मन में रोये।
मानस में आँसू भर भर कर, गहरे घाव हृदय के धोये॥
घर आकर अपने भैया से- गाँधी ने सब कही कहानी।
सुन सुन मोहन की बातों को- आँखों में भर आया पानी॥
स्वाभिमान की हत्या करके- करी उन्होंने सहन भर्त्सना।
चीस रहा था हृदय चोट से, सिर्फ शेष थी शान्ति-सान्त्वना॥
किन्तु किया निश्चय गाँधी ने, ऐसा नहीं करूँगा अब मैं।
स्वाभिमान की छाती पर मैं- पत्थर नहीं धरूँगा अब मैं॥







जनानायक

समय बड़ा बलवान, समय पर- सगे शत्रु होते देखे हैं।
बुरे समय के विपद घनों में- बड़े बड़े रोते देखे हैं॥
नृप से रंक, रंक से राजा, इस दुनिया की रीति यही है।
ठोकर खाकर उठे सँभल कर, समझदार की नीति यही है॥

एक नहीं, दो नहीं, दस नहीं- पग पग पर ठोकर खाओगे।
यदि तुम को पाना है कुछ तो- अपना कुछ खोकर पाओगे॥
दुनिया में इतिहास प्यार का- आँसू से लिखना पड़ता है।
जग में वही लक्ष्य पर पहुँचा- जो चट्टानों पर चढ़ता है॥

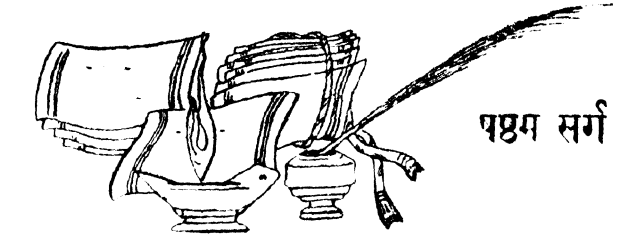


मानस ऊजड़, बोल न कोयल!
गा मत सुन्दर गीत रसीले।
आँचल आज पसार रहे मृग,
आकुल गायक के दृग गीले॥

सावन के घन! बोल! धरा पर-
क्यों दृग से धन-कोष लुटाया?
आज खिला, कल फूल गया गिर,
ठोकर ने कब फूल उठाया??







षष्ठम सर्ग



सागर में बड़वानल या,
लहरें लघु दीपक चूम रही हैं।
दीपक से स्मृतियाँ जलतीं जब,
क्यों बदली बन घूम रही हैं!
आग लिये मधु मेघ! रहो चुप,
पत्थर के मन क्या सुनते हैं?
शूल खड़े पर फूल खिले अलि!
प्यार पतंग यहाँ चुनते हैं॥

शिव की तरह अमर है वह नर– जिसने पिया ज़हर का प्याला।
छाला वही देख सकता है– जिसकी छाती में हो छाला॥
जिसका हृदय शुद्ध गंगा-जल– वही मुक्त है, वही मुक्ति है।
शूलों पर जो खिले फूल सा– वही युक्त है, वही युक्ति है॥
सागर में घुस, शूलों पर चढ़, जो आगे बढ़ते जाते हैं।
शूल चूम कर पैर उन्हों के, धरती में गड़ते जाते हैं॥
मन की हलचल में मनमोहन, सोच रहे थे पथ आगे का।
कहा किसी ने, तेरे पथ में– जाल बिछा कच्चे धागे का॥
तेरी आँखों के पानी से– जाल स्वयम् गलता जायेगा।
तेरे अन्तर की ज्वाला से– पाप स्वयम् जलता जायेगा॥
हल बादल से भाई उनके, यह सुन्दर सन्देशा लाये।
प्रिय! 'दक्षिण अफ्रिका' देश से– तेरे लिये निमन्त्रण आये॥





जननायक

बहुत बड़े 'मेमन व्यापारी', रहते यहाँ 'पोरबन्दर' में।
उनकी खुली हुई दूकानें, दूर दूर के शहर शहर में॥
'दादा अब्दुल्ला' के साझी, बड़े सेठ 'अब्दुल करीम' हैं।
बड़े भले व्यापारी हैं वे, मन में सच, मुँह में रहीम हैं॥



उनका एक मुकदमा भारी, जो चालीस हज़ार पौंड का।
तुम 'दक्षिण अफ्रिका' देश में- दिखा सकोगे काम कौंध का॥
बड़े बड़े बैरिस्टर उसमें- "अब्दुल्ला" ने किये हुए हैं।
'अमेरिकन' 'अंग्रेज़' हर्ष से- बड़ा मुकदमा लिये हुए हैं॥

ख्याति मिलेगी, अनुभव होगा, उन सबका परिचय पाओगे।
यह अवसर है, चले गये यदि- तो तुम पारस बन जाओगे॥
भैया 'लक्ष्मीदास' दीप की- बात बहुत गाँधी को भायी।
मानो शुभ अवसर देने को- आई ईश्वर की परछायी॥

मिले सेठ 'अब्दुल करीम' से, उसने सब घटना समझाई।
कहा, अधिक कुछ काम नहीं है, जाने में है बहुत भलाई॥
पहुँच गये अफ्रिका अगर तुम- परिचय बड़ों बड़ों से होगा।
जिसने अनुभव किया विश्व में- उसने अनुभव का सुख भोगा॥

दूर दूर का पानी पी पी- भारत में जीवन लाओगे।
मेरा आशीर्वाद तुम्हें है- नर! नारायण बन जाओगे॥
एक वर्ष तक रहना होगा, काम अधिक कुछ नहीं वहाँ पर।
जो कुछ वहाँ मिलेगा तुमको, मिल न सकेगा अभी यहाँ पर॥

तुम्हें एक सौ पाँच पौंड हम- व्यय से अलग भेंट कर देंगे।
और जीत यदि गये मुकदमा- तुम्हें बहुत कुछ ईश्वर देंगे॥
बात मान 'अब्दुल करीम' की, करी कल्पना गाँधी ने यह।
अनुभव होगा, जागृति होगी, सर पर है रक्षक ईश्वर वह॥

एक नयी दुनिया देखूँगा, दुनिया की पहिचान मिलेगी।
कवि की काव्य-कला यह बोली- भारत माँ को शान मिलेगी॥
जाने का, निश्चय कर मन में, करी 'अफ्रिका' की तैयारी।
पति को जाता देख पास से, पत्नी रोने लगी बिचारी॥





बोली, दूर देश जाते हो, स्वामी ! मुझे भूल मत जाना।
प्राण ! प्रतीक्षक है मेरा मन, दूर देश से जल्दी आना ॥
पथ पर भूखी प्यासी आँखें– तका करेंगी राह तुम्हारी।
यह विश्वास दिला जाओ तुम, तुम्हें रहेगी याद हमारी ॥

सारे दुःख सहन होते हैं, पर वियोग कब सहन हो सका ?
कहो आँख से आँसू गिर कर, कब धरती का ख़ून धो सका ??
योग नहीं भाता वियोग में, प्राण ! 'कृष्ण' की कथा न भूलो।
मछली सी तड़पी थी 'राधा', विरह कथा वह तथा न भूलो ॥

पति ने पत्नी को समझाया– प्रिये ! हृदय में हो तुम मेरे।
बुरे मार्ग से बच जाता हूँ, देवी ! अमर प्यार से तेरे ॥
पत्नी ने यह कहा प्यार से– उन्नति पथ में सदा साथ हूँ।
तुम ईश्वर हो, मैं श्रद्धा हूँ, चरणों की सेविका नाथ ! हूँ ॥

मेरे मानस की प्रतिध्वनि ले, पवन प्राण के साथ चले।
स्वप्नों में मैं चरण दबाऊँ, कुसुम झूम झुक व्यजन झले ॥
माला बनें विरह के आँसू, स्मृति की पलकें हों वाहन।
देखूँ तुम्हें चाँद में प्रियतम ! मधु बरसाते हों सावन ॥

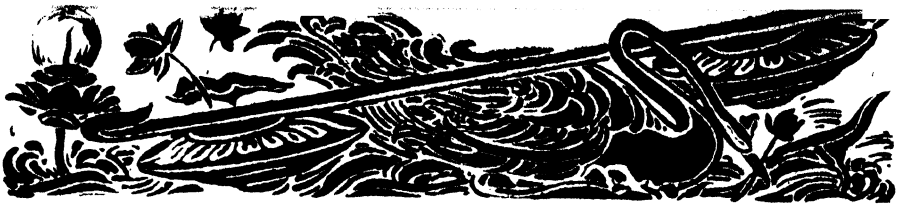
सर पर जो सन्दूक बने वह– पत्नी क्या, पथ की दलदल है।
जीवन में जो बने सहारा– वह पत्नी जीवन का हल है ॥
यात्रा का सामान बाँध कर, पत्नी ने तैयार कर दिया।
यात्रा के हर उठते पग में, 'बा' ने अपना प्यार भर दिया ॥

चले 'पोरबन्दर' से गाँधी, आकर चढ़ बैठे जहाज़ में।
जगह कठिनता से मिल पाई, बड़े अफ़सरों के समाज में ॥
बैठ गये गाँधी जहाज़ में, घर घर घर जलयान चल पड़ा।
भारत का अभिमान खोजने– भारत का उत्थान चल पड़ा ॥

और यान के नायक के वे– कुछ ही क्षण में मित्र बन गये।
आदि अन्त के अन्तस्तल पर– दुखी दृगों के चित्र बन गये ॥
वे शतरंज खेल में प्रति दिन– गाँधी से चिपटे रहते थे।
'जीवन ही शतरंज खेल है', नायक गाँधी से कहते थे ॥









उनके साथ साथ गाँधी भी– यात्रा में शतरंज खेलते।
ऐसे खेले खेल खिलाड़ी, जैसे जल में कंज खेलते॥
खेल खेलते हुए बुद्धि से– चलते चलते तट पर पहुँचे।
तेरह दिन की यात्रा करके– पहिले "लामू" बन्दर पहुँचे॥

तीन चार घंटे बन्दर पर– वहाँ यान ठहरा करता था।
लेकिन सागर के उस तट से– सावधान! नायक डरता था॥
गाँधी से नायक यह बोला– सावधान सागर से रहना।
धोखेबाज़ समुद्र यहाँ का, ध्यान रहे यह मेरा कहना॥

जल्दी से वापिस आ जाना, कह कर यह कप्तान चल दिया।
किन्तु पहेली सी बातों का– गाँधी ने कुछ नहीं हल किया॥
उतर यान से जल्दी जल्दी– चले गये वे गाँव देखने।
वहाँ डाकघर में जा पहुँचे, रहन सहन के भाव देखने॥

हिन्दुस्तानी भाई भी कुछ– मिले उन्हों से वहाँ चाव से।
उनके साथ करीं कुछ बातें, गाँधी जी ने प्रेम भाव से॥
बातों में कुछ समय न सूझा, मानो लगे देखने अभिनय।
रहन सहन में दिलचस्पी ली, किया हड्डियों से भी परिचय॥

तट पर आकर चढ़े नाव में, सागर में था ज्वार ज़ोर का।
थोड़ी दूर यान था लेकिन– पता नहीं था ओर छोर का॥
नाव यान से टकरा टकरा– फिर फिर पीछे हट जाती थी।
बाँध रहे थे नाव किन्तु वह– नहीं यान से बँध पाती थी॥

सीटी दे दी थी जहाज़ ने, गाँधी जी मन में घबराये।
'सागर धोखेबाज़' शब्द वे– अब उनके मस्तक में आये॥
लेकिन वह कप्तान यान का– ऊपर से यह देख रहा था।
आँखों से यह कहा चीख़ कर– मैंने तुमसे तभी कहा था॥

रोका उसने यान किन्तु वह– सीढ़ी ऊपर खिंच आई थी।
बार बार जा जाकर जिससे– नाव बिचारी टकराई थी॥
अन्त एक मल्लाह गाँधी को– कन्धे पर ले गया उठा कर।
रस्सी के बल से मल्लाह ने– गाँधी को पहुँचाया ऊपर॥





जनायक

मछवा क्या, भगवान स्वयम् ही– गाँधी को ऊपर ले आये।
ईश्वर हम तुम में रहता है, पर हम तुम पहिचान न पाये॥
भक्तों की पुकार पर ईश्वर– नंगे पैर इस तरह आते।
करुणा हृदय की तड़प देखकर– वे तो बिना बुलाये जाते॥

यान चल पड़ा और बहुत से– यात्री ऊपर नहीं चढ़ सके।
जो चढ़ने से डरे कभी भी– वे मंज़िल तक भी न बढ़ सके।
वे यात्री देखते रह गये, यान सिन्धु में बढ़ा अगाड़ी।
जो धीरे धीरे चलते हैं– पड़े रहे वे सदा पिछाड़ी॥

'लामू' से "मुम्बासा" आया, आये "जंजीबार" वहाँ से।
आगे की यात्रा करनी थी, नये यान में बैठ जहाँ से॥
उतरे 'जंजीबार' यान से, बड़े यान के बन्धन खोले।
चलो! सैर कर आयें चलकर, नायक गाँधी से यह बोले॥

एक और अंग्रेज़ मित्र भी– साथ साथ चल दिया घूमने।
बड़े प्रेम से तीनों साथी– नये नगर में लगे झूमने॥
एक मुहल्ले में जा पहुँचे, थीं हब्शी औरतें जहाँ पर।
गाँधी जी यह लगे सोचने, हम तीनों आ गये कहाँ पर॥

नायक के मन की बातों को– गाँधी नहीं समझ पाये थे।
सिर्फ़ घूमने के विचार से– गाँधी वहाँ चले आये थे॥
हब्शी सुकुमारी के घर में– उनको एक दलाल ले गया।
घर में घुसे, किन्तु गाँधी के– निर्मल मन को काल ले गया॥

बैठे रहे मूक कमरे में, औरों ने करली मनमानी।
औरत के तीखे कटाक्ष पर– पागल है दुनिया दीवानी॥
उस अंग्रेज़ और नायक ने– आँखों पर से शर्म उतारी।
किन्तु शर्म के मारे गाँधी– बन बैठे घूँघट में नारी॥

ईश्वर का उपकार कि उसने– बचा लिया उनको ज्वाला से।
छाया रूप साथ पत्नी थी, बचे रहे हब्शी बाला से॥
कमरे में तो चले गये पर– मन में बार बार शर्माये।
ईश्वर की आँखों के आगे– गाँधी बार बार पछताये॥









निकल आग से चले घूमने, तीनों साथ प्रकृति-कानन में।
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् देखा, प्रकृति सुन्दरी के आनन में॥
कवि कर सकते नहीं कल्पना, जैसी वह हरियाली देखी।
बड़े बड़े तरु और फूल फल, दैविक दिव्य दिवाली देखी॥

आठ रोज़ के बाद यान से- तैरे 'जंजीबार' छोड़ कर।
चले तैरते हुए यान में- दुर्बलता के बाँध ताड़ कर॥
करते हुए सैर सागर की, पहुँच गये "नेटाल" हृदय-धन।
प्रकृति परी सज कर ले आई- गाँधी के स्वागत में चन्दन॥

नभ में नाच उठीं मालायें, गा गा नभ ने दीप जलाये।
गाँधी जी का स्वागत करने- वहाँ 'सेठ अब्दुल्ला' आये॥
आये वहाँ बहुत से गोरे, स्वागत में अपनों अपनों के।
देखे चित्र यथार्थ वहां पर, भारत माता के स्वप्नों के॥

उन गोरों के लाल दृगों में- भारतीय का मान नहीं था।
क्षुद्र समझते थे गाँधी को, उस गुरुता का ज्ञान नहीं था॥
देख कुतूहल से गाँधी को- मन मन में दुतकार रहे थे।
पगड़ी बाँधे हुए देख कर- बार बार फटकार रहे थे॥

अब भारत ठोकर खाता था, कभी चरण पूजे जाते थे।
कभी विश्व के शिक्षक थे जो, अब दर दर ठोकर खाते थे॥
बुल्ला कुल्ले पर लड़ता है, यह हिन्दू है, वह है मुल्ला।
किन्तु प्रेम से गाँधी जी को- घर ले गये 'सेठ अब्दुल्ला'॥

गाँधी जी से मिले इस तरह- जैसे गले मिले हों भाई।
बुरा न देखें, बुरा न सुनते, बुरा न करते, करें भलाई॥
जो जल जल औरों के सर पर- छाते से छाया करते हैं-
वे ही तप तप कर दुनिया में- ईश्वर बन जाया करते हैं॥

शिशु के पैर पालने में ही- कवि पहिचान लिया करते हैं।
होनहार को विश्वनियन्ता- अपना रूप दिया करते हैं॥
और 'सेठ अब्दुल्ला' प्रिय को- व्यवहारिक अध्ययन बहुत था।
तत्व ज्ञान इस्लाम धर्म का, मन मानस में मनन बहुत था॥







पढ़े नहीं थे अधिक किन्तु वे- अनुभव से सुलझे ज्ञानी थे।
हृदय शुद्ध था, बुद्धि तेज़ थी, वे सच्चे हिन्दुस्तानी थे॥
उनकी 'पेढ़ी' बहुत बड़ी थी, पर कुछ खोजी सा स्वभाव था।
पढ़ा धर्म साहित्य उन्होंने, दृष्टान्तों का बहुत चाव था॥

बात बात में सुन्दर सुन्दर, वे दृष्टांत दिया करते थे।
गाँधी से इस्लाम धर्म की- चर्चा रोज़ किया करते थे॥
गाँधी जी से धर्म विषय पर- वार्तालाप रोज़ ही होता।
मूल्य उसी का हुआ विश्व में- जो जन समय ज्ञान में खोता॥

गाँधी ने इस्लाम धर्म का- पाया था व्यवहार ज्ञान तब।
मथ कर सार सुरक्षित रक्खा, जो कुछ उनको मिला जहाँ जब॥
'सेठ' साथ अपने गाँधी को- 'डरबन' न्यायालय में लाये।
अपने सब परिचित मित्रों से- गाँधी के परिचय करवाये॥

पास बैठ अपने वकील के- परिचय से परिचय करवाया।
उस वकील से हाथ जोड़कर- गाँधी जी ने हाथ मिलाया॥
पगड़ी पहिने हुए प्रेम से- पहुँचे न्यायालय में गाँधी।
मजिस्ट्रेट को गुस्सा आया, दौड़ गई मस्तक में आँधी॥

रहा देखता मुँह गाँधी का, कहा, 'उतारो अपनी पगड़ी!'
गाँधी ने इन्कार कर दिया, मजिस्ट्रेट की त्यौरी अकड़ी॥
किन्तु एकदम उठकर गाँधी- न्यायालय से बाहर आये।
झगड़े सह सह कर गाँधी ने- बड़े बड़े झगड़े सुलझाये॥

जीवन ही संघर्ष यहाँ है, जड़ में कब संघर्ष हुआ है?
संघर्षों के निष्कर्षों से- वीरों का उत्कर्ष हुआ है॥
भारत का अपमान तड़प कर, उस क्षण गाँधी से यह बोला-
मेरे उर में धधक रहा है- उड़ता हुआ फूट का शोला॥

जिससे जल कर पंगु हुआ मैं, दर दर से दुतकारा जाता।
मेरे मन-मरघट में कोई, प्रतिपल मेरी चिता जलाता॥
देखा यही वहाँ गाँधी ने, अलग अलग खिचड़ी पकती थी।
मेरे तेरे के झगड़े में- कोई और खून छकती थी॥







जनायक

यह हिन्दू, वह अरब, पारसी, तू तामिल, मैं गिरमिटया हूँ।
तू है 'ऑस्टिन' कार और मैं- 'सबललेट' की फिटफिटया हूँ॥
अलग अलग जत्थों में उनकी- अलग अलग तूती बजती थी।
मिलकर नहीं बैठ सकते थे, स्वतन्त्रता माला भजती थी॥



इसीलिये तो भारतवासी- कहलाते थे "कुली" वहाँ पर।
कैसे लगे न आग वहाँ पर, दहक रही हो फूट जहाँ पर॥
वे गोरे भारतवासी को- "सामी" कहकर बुलवाते थे।
दो टुकड़ों का लालच देकर- मानव से दुम हिलवाते थे॥

उस गोरी चमड़ी के आगे- भारतीय इन्सान नहीं थे।
माथों के कलंक थे हम सब, भारत के सम्मान नहीं थे॥
'कुली!' 'कुली बैरिस्टर!' कहकर- गाँधी से बोला करते थे।
हृदय-तराजू में भारत के- आँसू वे तोला करते थे॥

भारत माँ के स्वाभिमान से- तड़प उठा गाँधी का अन्तर।
मेरी पगड़ी नहीं, यहाँ पर- भारत की पगड़ी है सर पर॥
चाहे मर जाऊँगा लेकिन- पगड़ी नहीं उतरवाऊँगा।
अगर उतार धरी पगड़ी तो- माँ को क्या मुँह दिखलाऊँगा?

गाँधी जी के शुद्ध हृदय में- जाग उठा देशाभिमान था।
और 'सेठ अब्दुल्ला' के भी- मन में माँ का स्वाभिमान था॥
बड़े धैर्य से कहा उन्होंने- बात नहीं हलकी हो सकती।
भारत की बरसाती पीड़ा- दिल के दाग़ नहीं धो सकती॥

हमें लूटने वाले ही अब- हमको यहाँ 'कुली' कहते हैं।
सुन सुन कर गालियाँ उन्हों की- हम चुपचाप पड़े रहते हैं॥
समाचार पत्रों में भेजी- गाँधी ने पगड़ी की घटना।
करने लगे विरोध वहाँ पर, मन में लगा राम से रटना॥

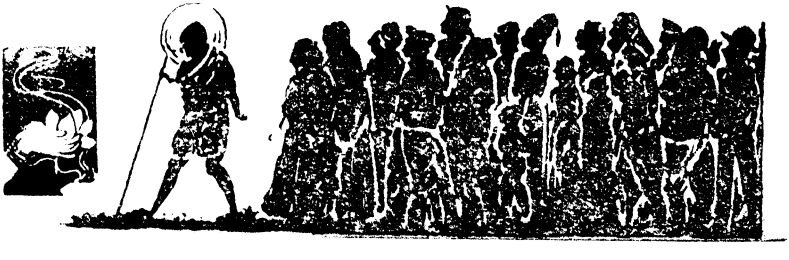
कोई उनका हुआ विरोधी, कोई उनसे हुआ समर्थित।
अख़बारों ने गाँधी जी को- लिखा सूचना में अनिमन्त्रित॥
"बिना बुलाया हिन्दुस्तानी- अतिथि एक 'नेटाल' नगर में।"
इस घटना से गाँधी जी की- ख्याति हो गई डगर डगर में॥



वे 'दक्षिण अफ्रिका' देश में– सूरज से प्रख्यात हो गये।
काली रजनी की चोरी में– गाँधी स्वर्ण प्रभात हो गये॥
मेरे गाँधी का 'डरबन' में– परिचय बढ़ता ही जाता था।
भारतीय ईसाई दल भी– उनसे कुछ शिक्षा पाता था॥



इसी बीच में 'प्रिटोरिया' से– बैरिस्टर का तार आ गया।
शुरू हो गया यहाँ मुकदमा, सर पर सारा भार आ गया॥
शीघ्र 'सेठ अब्दुल्ला' आयें, या वे भेजें और किसी को।
चूक न जायें, देर न करदें, आना है तारीख़ इसी को॥
'अब्दुल्ला' ने गाँधी जी को– 'प्रिटोरिया' का पत्र दिखाया।
कहा, वहाँ तुमको जाना है– शीघ्र वकीलों ने बुलवाया॥
सुन 'आ ई ऊ' से गाँधी जी– पढ़ने लगे मुकदमा सारा।
समझ बही खाता दिमाग़ में– मन से सारा विषम विचारा॥
बड़ी कठिनता से गाँधी जी– समझ बही खाता पाये थे।
भली भाँति हृदयंगम करके– सारा भेद खोज लाये थे॥
जब गाँधी ने बात समझ ली– हुआ आत्म-विश्वास उन्हें तब।
कहा 'सेठ' से गाँधी जी ने– 'प्रिटोरिया' जाता हूँ मैं अब॥
बोले सेठ, "कहाँ ठहरोगे?" उत्तर मिला "जहाँ बतलाओ।"
उत्तर सुन 'अब्दुल्ला' बोले– यह मेरी चिट्ठी ले जाओ॥
पहिले तुम मिलना वकील से, वे ही तुमको ठहरायेंगे।
आगे क्या कैसे करना है– वे ही तुमको बतलायेंगे॥
'प्रिटोरिया' में तुम्हें मिलेंगे– मेरे 'मेमन' मित्र बहुत से।
और उन्हीं 'मेमन' मित्रों के– प्रतिपक्षी जन मित्र बहुत से॥
'मेमन' मित्रों से प्रतिपक्षी– अक्सर मिलते ही रहते हैं।
यह मानव-स्वभाव है, मन की– बात दूसरे से कहते हैं॥
इसीलिये 'मेमन' मित्रों से– तुमको अलग ठहरना होगा।
जिसने अपना भेद बताया– उसने जीवन भर दुख भोगा॥
गाँधी जी ने कहा 'सेठ' से– चिन्ता तज, सानन्द रहो तुम!
आपस में भी निपटाने का– यत्न करूँगा, अगर कहो तुम!!





जैसे भी होगा वैसे ही– मैं सब वहाँ ठीक कर लूँगा।
सेठ! "सेठ तैयब" जी को मैं– समझा कर राज़ी कर दूँगा॥
"हाजी ख़ान मुहम्मद तैयब"– आख़िर रिश्तेदार तुम्हारे।
आपस में जो चला मुकदमा– काम हुआ यह बिना विचारे॥



व्यर्थ वकीलों का घर भरना– मुझे नहीं अच्छा लगता है।
मौत मुकदमा 'ठग बनारसी'– जो बहका बहका ठगता है॥
लोटा और तवा तक बिकता, हाथ नहीं कुछ भी आता है।
जिसके सर पर चढ़ा मुकदमा– वह सर धुन धुन पछताता है॥

सुन गाँधी की बात चौंक कर, कहा सेठ अब्दुल्ला ने यह–
"भावुकता के इस प्रवाह में– गिरे न यह तैराक कहीं बह॥"
गाँधी बोले– "सावधान हूँ, मैं प्रवाह में बह न सकूँगा।
जाल नहीं चल सकता मुझ पर, बात भेद की कह न सकूँगा॥

यदि सचाई से मानेंगे- तो मुझ को इन्कार नहीं है।
किसी जाल में फँस कर उनके– समझौते से प्यार नहीं है॥"
कहा सेठ ने–"हाँ····आ····आ···"यदि–समझौता हो तो सुन्दर है।
पर प्रतिपक्षी बाहर से कुछ, चाल जाल उसके अन्दर है॥

इन जालों से सावधान रह– तुम उनसे बातें कर लेना।
जो कुछ करो, सुनो जो कुछ भी– हमको शीघ्र खबर दे देना॥"
'प्रिटोरिया' के लिये सेठ ने– गाँधी का बिस्तर बँधवाया।
कहा, ख़र्च में कमी न करना, अपना सब अनुभव बतलाया॥

'डरबन' स्टेशन से गाँधी ने– टिकट लिया पहली श्रेणी का।
यात्रा में निशान लहराया– भारत की ऊँची वेणी का॥
पाँच शिलिंग अधिक देने से– गाड़ी में सोने देते थे।
लेकिन हठ मद में गाँधी जी– 'बिस्तर-टिकट' नहीं लेते थे॥

गाँधी "मेरित्सबर्ग" आ गये, प्रकृति देखते हुए रेल में।
बड़े बड़े झगड़े आते हैं– जीवन के इस बड़े खेल में॥
कोई गोरा यात्री आया– 'मेरित्सबर्ग' बड़े स्टेशन पर।
पहली श्रेणी के डिब्बे में– गाँधी से यह कहा बिगड़ कर–



तू हिन्दुस्तानी है, तुझको– बता यहाँ किसने बैठाया ?
निकल यहाँ से ! बैठ 'थर्ड' में, गोरे ने इनको धमकाया ॥
गाँधी ने यह कहा नम्र हो– "फर्स्ट क्लास का टिकट पास है ।"
गोरे ने यह कहा अकड़ कर– "यह गोरों के लिये खास है ॥

काला हिन्दुस्तानी कोई– सफ़र 'फर्स्ट' में कर न सकेगा ।
वह गुलाम है, बँधे पैर हैं, पैर यहाँ पर धर न सकेगा ॥"
पर उस गोरे के कहने से– गाँधी हिले नहीं बिस्तर से ।
उस गोरे ने उतर रेल से– किस्सा कहा एक अफ़सर से ॥

एक रेलवे अधिकारी ने– आकर गाँधी को फटकारा ।
निर्दयता से गाँधी जी को– धक्के दे कर तले उतारा ॥
बिस्तर फेंक दिया गाँधी का, सच्चाई का खून कर दिया ।
जाड़े की ठिठरी रजनी में– पाले का अंगार धर दिया ॥

रेल चल पड़ी, पर गाँधी जी– स्टेशन पर ही पड़े रह गये ।
मानो उस सुनसान डगर में– पथ खोये से खड़े रह गये ॥
गोरों से ठुकराये जाते– हम भारत माता के बेटे ।
बाँध अपने कपड़े लत्ते, स्टेशन पर कोने में लेटे ॥

कभी सोचते थे वे मन में– भारतवर्ष चला जाऊँ मैं ।
कभी सोचते बढ़ूँ अगाड़ी– क़दम लक्ष्य पर फैलाऊँ मैं ॥
भारत माता के मस्तक से– दाग़ गुलामी का धो डालूँ ।
चढ़ा रक्त का अर्घ्य देश पर– पूजा से स्वतन्त्रता पालूँ ॥

सन सन करती हवा उन्हों को– उनके पथ से लगी हटाने ।
जाड़ों की नागिन सी रजनी– गाँधी पर फण लगी चलाने ॥
पर गाँधी ने साहस बल से– सब नागों का ज़हर उतारा ।
जब भी कोई पड़ी मुसीबत– उसने अपना 'राम' पुकारा ॥

सुबह दूसरी गाड़ी से वे– साहस कर चल दिये अगाड़ी ।
गाड़ी पर वे चले या चली– गाँधी के कन्धों पर गाड़ी ॥
कभी उलझते, कभी सुलझते– सुबह 'चार्ल्स टाउन' में आये ।
और "चार्ल्स टाउन" में गाँधी– घोड़ा गाड़ी पर घबराये ॥







कहा सेठ ने, "गाड़ी पर तुम– मिले नहीं, मैं ढूँढ आ गया।"
"प्रिय ! पहिचान न पाया तुमको, मैं धोखा इसलिये खा गया॥"
होटल की वह सारी घटना– गाँधी जी ने उन्हें सुनाई।
यही हाल है यहाँ हमारा, बड़े सेठ ने बात बताई॥

हमें लात खानी पड़ती है– इन गोरी चमड़ी वालों की।
कौड़ी भर भी क़द्र नहीं है– अंग्रेज़ों में हम कालों की॥
हमें बना ताशों के पत्ते– खेल रहे हैं खेल ताश का।
आगे का "जोहान्सबर्ग" से– टिकट ले लिया फर्स्ट क्लास का॥

बैठ रेल में चले अगाड़ी, 'जर्मिस्टन' स्टेशन पर आये।
उस डिब्बे में टिकट देखने– गोरे गार्ड तोप भर लाये॥
बैठा देख वहाँ गाँधी को– गोरा गार्ड बहुत झल्लाया।
"अबे ! तीसरे दर्जे में जा", 'नादिरशाही' हुकुम सुनाया॥

"प्रथम कक्ष का टिकट पास है"– कहा गार्ड से गाँधी ने यह।
इसपर उसने कहा बिगड़ कर–"कुली ! थर्ड में जा ! जा !! चुपरह॥"
उसी कक्ष में कोई गोरा– यात्री अफ़सर दयावान था।
वह मानव था, उसके मन में– मानवता का भरा मान था॥

बोला वह इन्सान गार्ड से– "इन्हें सताते बिना बात क्यों ?
फर्स्ट क्लास का टिकट पास फिर– इन्हें हटाते बिना बात क्यों ?"
गाँधी जी की तरफ देखकर– बोला, बैठे रहो यहीं पर।
बक बक करता गार्ड चल दिया– अपना सा काला मुँह लेकर॥

अच्छे और बुरे दोनों ही– दुनिया में देखे जाते हैं।
सागर में यदि सुधा भरा है– तो शंकर विष भी खाते हैं॥
कमल कीच से ऊपर रहकर– नित आदर्श कथा कहते हैं।
नदी किनारे अलग अलग हैं, लेकिन साथ साथ रहते हैं॥

कोई कितना भी दोषी हो, उसमें भी कुछ अच्छाई है।
बुरी बात में छिपी भलाई, भली बात भी शर्माई है॥
शूलों में ही फूल यहाँ पर– दुनिया ने खिलते देखे हैं।
तिमिर ज्योति में, ज्योति तिमिर में– निर्गुण गुण मिलते देखे हैं॥





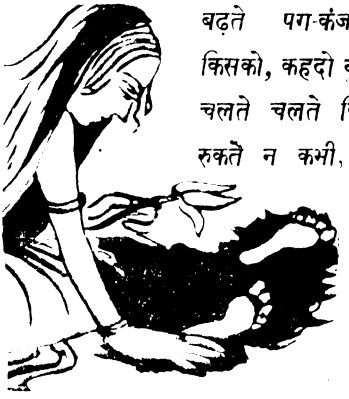


यात्रा में पग पग पर प्राणी– प्रलय-सिन्धु में लहराता है।
कोई डूबा बीच भँवर में, कोई तैर निकल जाता है॥
पैरों से शोणित चूता है, शूलों से छाती छिलती है।
जब होता तादात्म्य सत्य में– तब जाकर मंज़िल मिलती है॥

जिसके दृढ़ संकल्प सत्यमय– उसने मन-मोती पिरो दिया।
गाली और तमाचे खाते– गाँधी जी पहुँचे 'प्रिटोरिया'॥
स्टेशन पर रजनी रानी के– मन्द मन्द दीपक जलते थे।
धुँधले दीपों के प्रकाश में– मन्द मन्द गाँधी चलते थे॥

इधर उधर देखा स्टेशन पर, अपना कोई नज़र न आया।
अब क्या करूँ ? निमिष भर सोचा, सोच समझ कर पैर बढ़ाया॥
'प्रिटोरिया' स्टेशन से राही– चल 'जॉन्स्टन होटल' में आये।
होटल में तो आये लेकिन– बार बार मन में सकुचाये॥

"मुझको जगह मिल सकेगी क्या ?" 'जॉन्स्टन' से झिझके से बोले।
"हाँ, हाँ, जगह मिलेगी तुमको," कमरे के दरवाज़े खोले॥
'श्री जॉन्स्टन' ने कहा उन्हों से– "काले गोरे सभी एक हैं।
एक तत्त्व अमरत्त्व सत्य है, मानवता के पथ विवेक हैं॥"



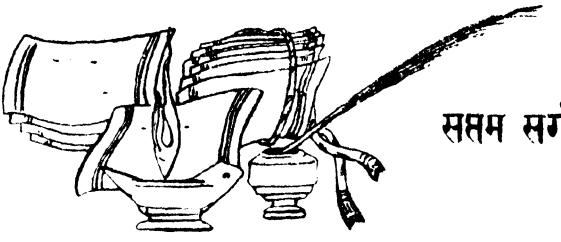
बढ़ते पग-कंज टटोल रहे–
किसको, कहदो कुछ चाँद सितारे !
चलते चलते छिलते पग भी,
रुकते न कभी, जलते पथ हारे॥

जलते जग में जल के झरने,
झरते झरते बन पावस झूमे।
बढ़ता जन मंज़िल मंज़िल जो,
पथ ने उसके पग-पंकज चूमे॥









सप्तम सर्ग



बाँध दो पत्थर परों से, पर न उड़ने से रुकूँगा।
कह रहा अम्बर उदधि से– मैं न चरणों में झुकूँगा॥
पर क्षितिज को चूम लहरें– चाँद सागर में बुलातीं।
लोरियाँ दे दे गगन को– सिन्धु की लहरें सुलातीं॥

क्षितिज किसके चूमता पग, सिन्धु छूकर उस किनारे?
जागरण की चन्द्रिका में– ढूँढते किसको सितारे??
वश्यता वर्त्तुल विगत पर– वर्त्म की लिखती कहानी।
वश्य वर्जन से तिरोहित– तैरता दो बूँद पानी॥

चिन्ते चिते! घेर मत मुझको, जीवन में कुछ सुस्ताने दे।
पतझड़ के पीले पत्ते पर, दो पल को तो मुस्काने दे॥
दुःख और सुख में समान मैं, चिन्ते! मेरा क्या कर लेगी?
पीड़ा मुझे न डस पायेगी, मेरी नहीं पराजय होगी॥

होटल के कमरे में गाँधी, फिर तेरे विचार धारा में।
मुक्ति-मार्ग ढूँढा करता है, आत्मा नित तन की कारा में॥
बाँध बाँधने लगे बुद्धि से, मन की खाई और झील के।
तारे गिन गिन रहे सोचते, प्रातः घर पहुँचे वकील के॥

"ए० डबल्० बेकर" वकील से- गाँधी जी ने हाथ मिलाया।
परिचित थे परोक्ष में दोनों, अब प्रत्यक्ष मिलन दर्शाया॥
ऐसे मिले जिस तरह मिलतीं– सूखी खेती से बरसातें।
मानो दो युग युग के बिछड़े– करने लगे प्रेम से बातें॥





ईश्वर भक्त 'पादरी बेकर', प्राड्विवाक पंडित प्रांजल थे।
यहाँ पैरवी, वहाँ पैरवी, संगम के शुभ गंगाजल थे॥
ईश्वर सम्बन्धी चर्चा में- गाँधी जी भी रस लेते थे।
'बेकर' सुन प्रष्टव्य प्रश्न सब, प्रेमामृत प्रसाद देते थे॥

कहा ब्रह्म 'बेकर' ने उनसे- "रंग-भेद है बहुत यहाँ पर।
रंग-भेद मैं नहीं मानता, मेरे लिये सत्य है ईश्वर॥
रंग-भेद का भूत यहाँ पर- मानवता को डस जाता है।
जो भी भारतीय आता है, वही यहाँ गाली खाता है॥

रंग-भेद का भूत देखकर- छाती का छाला छिलता है।
हिन्दुस्तानी के रहने को- घर तक यहाँ नहीं मिलता है॥
किन्तु एक भटियारी के घर, चलो! तुम्हें मैं ठहरा आऊँ।
वह निर्धन है, उस बाई से- चलो मित्र! परिचय करवाऊँ॥"

साथ साथ 'बेकर साहब' के- वे भटियारी के घर आये।
उस बाई के घर पर उनके- रहने के प्रबन्ध करवाये॥
होटल छोड़ दिया गाँधी ने, उस बाई के घर पर आये।
गाँधी जी को भक्ति मिल गई, या कि 'राम मिलनी' ने पाये॥

'बेकर' की छप्पर-छाया में- गाँधी जी मन लगे लगाने।
दूर देश का यात्री आया, स्वतन्त्रता का परिचय पाने॥
'दादा अब्दुल्ला' के परिचित- मित्रों से मित्रता बढ़ाली।
हिन्दुस्तानी के कष्टों की- हृदयंगम तस्वीर बनाली॥

मन में निश्चय किया उन्होंने, सब बातों का मनन करूँगा।
जो भी चीज़ सामने आये, उसका मैं अध्ययन करूँगा॥
उनके भारतवासी भाई- निज दुःखों के चित्र दे गये।
एक रोज़ अपने मन्दिर में- उनको 'बेकर' मित्र ले गये॥

'देवीहैरिस', 'बेग', 'कोट्स' से- परिचय वहाँ कराया इनका।
सुन्दर हृदय और सुन्दर तन, रह रह दमक रहा था जिनका॥
घुटने टेक टेक मन्दिर में, सब ने किया याद ईश्वर को।
मुक्ति शान्ति माँगी उन सब ने, दे दे धन्यवाद ईश्वर को॥







जनायक

हाथ जोड़ कर कहा सभी ने– हम सब को तू राह दिखाना।
भक्ति-भाव से गा गा बोले– सब को सच्चा ज्ञान सिखाना॥
'हैरिस' और 'वेग' दोनों ही– प्रौढ़ कुमारी रूप-राशि थीं।
या कि किसी कवि के भावों की– भाषा-रंजित-स्तूप-राशि थीं॥



उनके घर पर साथ 'कोट्स' के– गाँधी मधुर चाय पीते थे।
धर्म विषय पर बात चीत कर– अन्तर का चोला सीते थे॥
उमड़े घन से 'कोट्स' सभी से– पावन प्यार किया करते थे।
गाँधी के सुन्दर भावों का– वे सत्कार किया करते थे॥
और 'कोट्स' के प्रिय मित्रों से– भक्ति-उदधि गाँधी मिलते थे।
मित्रों के शाश्वत प्रकाश से– मानो श्वेत कमल खिलते थे॥
बड़े बड़े सद्ग्रन्थ 'कोट्स' से– माँग माँग कर गाँधी पढ़ते।
सन्तों की रश्मियाँ पकड़ कर, धरती से अम्बर में चढ़ते॥
'वैष्णव कण्ठी' देख कण्ठ में, 'कोट्स' मित्र गाँधी से बोले–
"यह क्या ढोंग गले में डाला? बुद्धिमान हो कर भी भोले॥
लाओ, इसे तोड़ दूँ गाँधी! यह ढकोसला ढोंग छोड़ दो।
तुम्हें नहीं शोभा देती यह, गाँधी! इसको अभी तोड़ दो॥"
गाँधी यह बोले विनम्र हो– "यह मुझको माँ ने पहनाई।
इसे न बस इसलिये तोड़ता– नहीं बुराई, नहीं भलाई॥"
यह सब सुनकर 'कोट्स' हँस पड़े, हँस कर बोले, अच्छा भाई!
'कोट्स' मित्र से लगे सीखने– गाँधी धर्म मर्म "ईसाई"॥
केवल सत्य धर्म 'ईसाई'– कहा 'कोट्स' ने गाँधी से यह।
गाँधी बोले, दृग अदृश्य में– व्यापक है सब का ईश्वर वह॥
परिचय से परिचय गाँधी का– इसी तरह बढ़ता जाता था।
मानो गाँधी के दर्शन को– परिचय स्वयम् चला आता था॥
'तैयब हाजी खान मुहम्मद', सेठ वहाँ पर बहुत बड़े थे।
ऊँची ऊँची दूकानें थीं, ऊँचे ऊँचे महल खड़े थे॥
शुद्ध हृदय की दिव्य मूर्ति ने– किया उन्हों से गहरा परिचय।
मुक्ति मार्ग पर खड़ा पुजारी– मिटा रहा था मन का संशय॥





गली गली में घूम घूम कर, ढूँढे हिन्दुस्तानी भाई।
गोरे जिन्हें समझते कीचड़, कमल कीच में दिये दिखाई॥
अपने देशवासियों की तब- गाँधी जी ने सभा बुलाई।
भूल दिखाई, प्रेम सिखाया, हक़ की सच्चाई समझाई॥

"चाहे कुछ भी कार्य करो पर- व्यवहारों में सत्य न छोड़ो।
करो बड़े व्यापार किन्तु तुम- सच्चाई से मुँह मत मोड़ो॥"
'प्रिटोरिया' में गाँधी जी का- गुण सबसे पहिला भाषण यह।
भेद भाव का भूत भगादो, यही कह रहे थे वे रह रह॥

यह हिन्दू, वह मुसलमान क्या? कौन पारसी? क्या ईसाई?
मानव मानव सभी एक हैं, सब आपस में भाई भाई॥
देख रहे हो यहाँ तुम्हारा- कौड़ी भर सम्मान नहीं है।
गोरे तुम्हें 'कुली' कहते हैं, यह थोड़ा अपमान नहीं है॥

भारत माँ के स्वाभिमान को- तुम गोरों से रुँदवाते हो।
अपनी दुर्बलता के कारण- अपने पैर उखड़वाते हो॥
तुम क्या जानो, इन गोरों ने- बाँध दिये हैं पैर तुम्हारे।
गोरों की छाती के नीचे- दबे हुए अधिकार हमारे॥

'ट्रान्सवाल' में देखो देखो- अधिकारों की लाश चल रही।
और 'स्टेट ऑरेञ्ज फ्री' में- कानूनों से चिता जल रही॥
केवल "कुली" रह गये हो तुम, छीन लिये अधिकार तुम्हारे।
होटल में "वेटर" बन रह लें, केवल ये अधिकार हमारे॥

कुत्ते बन कर रह सकते हो, झूठ चाटने को होटल में।
वे तुमको 'सामी' कहते हैं, जो पीते शराब बोतल में॥
मत देने का, या चलने का, अब तुमको अधिकार नहीं है।
गोरों का अधिकार यहाँ पर, कालों का सत्कार नहीं है॥

अब आगे से भारतवासी- 'फुटपाथों' पर चल न सकेगा।
और नौ बजे बाद रात को- काला यहाँ निकल न सकेगा॥
तीन पौंड देकर प्रवेश पा, दब कर यहाँ ठहर सकते हो।
गोरे जहाँ चलें उस पथ पर- पैर नहीं तुम धर सकते हो॥









यहाँ रेल से भारतीय का- बिस्तर फेंक दिया करते हैं।
यहाँ देख गोरी चमड़ी को- भोले भारतीय डरते हैं॥"
जितने भी थे वहाँ सभा में, सबने बात उन्हों की मानी।
गाँधी जी के साथ बढ़ चली- हक़ के पथ पर बदल कहानी॥

उमड़ घुमड़ कर भारत माँ ने- गाँधी पर आशायें बाँधी।
भाषण-सुधा बहा वाणी से- नये मार्ग पर विचरे गाँधी॥
'प्रेसीडेण्ट स्ट्रीट' से होकर- गाँधी जी चल पड़े घूमने।
गाँधी जी के मन सरोज पर- कवि भौरों से लगे झूमने॥

आया जब 'फ़ुटपाथ' चल पड़े- गाँधी जी अनुभव करने को।
मानवता का वीर पुजारी- आगे बढ़ा पीर हरने को॥
बढ़ा एक दो क़दम सिपाही, देख सन्तरी दौड़ा आया।
गाँधी को धक्के दे उसने- पगडण्डी से तले गिराया॥

बुरी बुरी गालियाँ सुनाकर, बड़ी ज़ोर से लात जमाई।
अत्याचार देख गाँधी पर, धरती 'त्राहि त्राहि' चिल्लाई॥
जहाँ पिट रहे थे गाँधी जी- वहाँ कहीं से 'कोट्स' आ गये।
पिटता देख मित्र गाँधी को- लाल घनों से नयन छा गये॥

ख़ून उतर आया आँखों में, मानो हिला हृदय आँधी से।
'इस पर करो मुकदमा दायर', कहा नम्र होकर गाँधी से॥
"मैंने यह सब देख लिया है, इसको मज़ा चखा दूँगा मैं।
यह काला क़ानून मिटा कर, सच आदर्श सिखा दूँगा मैं॥

इसकी काली करतूतों से- मुझे बहुत अफ़सोस मित्र! है।
मेरे दिल में दाग़ हो गया, आँखों में खिच गया चित्र है।"
गाँधी बोले, "इस भाई का- लेश मात्र भी दोष नहीं है।
गोरों के साम्राज्यवाद को- भले बुरे का होश नहीं है॥"

अपनी पशुता पर शर्मा कर- चरणों में गिर पड़ा सन्तरी।
क्षमा कर चुका था पहिले ही- भारत माँ का बड़ा सन्तरी॥
इसी तरह पढ़, सुन, अनुभव से- भारतीय दुर्दशा निहारी।
गाँधी की आँखों से झाँकी- देशवासियों की लाचारी॥





चीस टीस से पीड़ित गाँधी- मुक्ति-मार्ग प्रति पल टटोलते।
प्रश्न और हल सोच सोच कर- जन के सुख के द्वार खोलते॥
पर 'दादा अब्दुल्ला' वाला- प्रथम मुक़दमा सुलझाना था।
मृत्यु मुक़दमे के फन्दे से- अब्दुल्ला को छुड़वाना था॥

उलझा हुआ मुक़दमा था पर, सुलझा हुआ वकील वहाँ था।
वह उस न्यायालय में पहुँचा, कुर्सी पर भगवान जहाँ था॥
हाथ जोड़ कर करी प्रार्थना, इसका न्याय करो तुम ईश्वर!
दो सम्बन्धी डूब रहे हैं, अदालतों में भटक भटक कर॥

दुनिया का क़ानून नहीं कुछ, ईश्वर का क़ानून अमर है।
सत्य हक़ीकत ही विधान है, निर्बल की आशा ईश्वर है॥
वादी प्रतिवादी दोनों ही- पिसे जा रहे, राम! बचालो।
मैं यथार्थ सब तुम्हें सुनाता, ईश्वर! इनका पिंड छुड़ालो॥

ईश्वर से विनती कर गाँधी- 'तैयब' जी के घर पर आये।
कहा, "मुक़दमेबाजी छोड़ो, निर्णय आपस में हो जाये॥
निर्णय होगा और साथ ही- मनमुटाव भी मिट जायेगा।
अमृत मित्रता का पाओगे, खोया द्रव्य हाथ आयेगा॥

व्यर्थ वकीलों के चक्कर में- अपने को बर्बाद मत करो।
लड़वाना ही इनका पेशा, भेद-भाव से हृदय मत भरो॥"
बिगड़ी बातें सुलझाने को- गाँधी जी जी तोड़ लग गये।
सच की करने लगे वकालत, गिरते तरु को छोड़ खग गये॥

दोनों रिश्तेदार तंग थे, पर हठवश हठधर्मी पर थे।
और अदालत के खर्चों से- दोनों काँप रहे थर थर थे॥
गाँधी जी की बात मानकर- उन दोनों ने पंच बनाये।
पंचों के सुन्दर निर्णय से- दोनों सीधे पथ पर आये॥

प्रिय पंचों ने 'तैयब' जी से- 'अब्दुल्ला' को धन दिलवाया।
पंच फैसले में ईश्वर है, गाँधी ने यह सत्य सिखाया॥
दोनों पक्ष प्रसन्न हो गये, दोनों ही की बढ़ी प्रतिष्ठा।
उनके संकट टल जाते हैं, जिनकी परमेश्वर में निष्ठा॥







गाँधी को सन्तोष मिल गया, उन दोनों की प्रीति बढ़ गई।
मानो हिमगिरि की चोटी पर- दोनों ही की जीत चढ़ गई॥
गाँधी जी ने उसी रोज़ से- उज्ज्वल पक्ष खोजना सीखा।
हृदय प्रवेश, प्रार्थना सीखी, गुण में नर नारायण दीखा॥



जो खोजा करता सच्चाई- वह नर सब कुछ पा लेता है।
जो यथार्थ बल पर लड़ता है- वह नर मुक्ति-नाव खेता है॥
'प्रिटोरिया' में सत्य सतत धन- गाँधी सत्य स्वरूप हो गये।
सार्वजनिक सेवाओं में लग- हृदयासन के भूप हो गये॥
'प्रिटोरिया' में गाँधी जी ने- धर्म कर्म की कुंजी पाई।
जग की नब्ज़ देखनी सीखी, मन के हाथ हक़ीकत आई॥
वादी प्रतिवादी न रहे अब, दोनों सच्चे मित्र बन गये।
दो मित्रों को बचा भँवर से- गाँधी मन के चित्र बन गये॥
फिर 'श्री बेकर' गाँधी जी को- ईसाई मन्दिर में लाये।
अपना धर्म श्रेष्ठ बतलाने- बड़े बड़े 'ईसाई' आये॥
गाँधी जी से कहा उन्होंने, 'तुम भी बन जाओ 'ईसाई'।
'ऐसी भूल न करना गाँधी!' ध्वनि अन्तर आत्मा से आई॥
आत्मा जो कुछ भी कहता था- गाँधी वही किया करते थे।
करने से पहिले ईश्वर से- गाँधी पूछ लिया करते थे।
मन-रज्जू से मथ मानस को- सार हृदय में भर लेते थे।
फेंक फाक, फल फूल चढ़ाकर- तत्त्व सामने धर देते थे॥
हृदय-तुला पर तोल बात को- बुद्धि-कसौटी पर कसते थे।
धर्म बदलने की बातें सुन, मन में बार बार हँसते थे॥
करो धर्म परिवर्त्तन अपना- बार बार 'ईसाई' बोले।
लेकिन गाँधी के मानस के- दर्वाज़े ईश्वर ने खोले॥
गाँधी अटल सत्य से बोले, अपने अन्तर से निर्णय कर।
'ईसा' ईश्वर सम हैं यदि तो- जग का हर प्राणी है ईश्वर॥
'ईसा' में श्रद्धा है मेरी, 'ईसा' ईश्वर नहीं मानता।
अद्वितीय दैविक शिक्षक थे, मानवता की ज्योति मानता॥





उदाहरण बलिदान उन्हों का, और न कोई चमत्कार था।
पूजनीय श्रद्धेय सत्य है, 'ईसा' का जो भी विचार था॥
लेकिन मैंने तो मथ मथ कर- हिन्दू धर्म पूर्ण पाया है।
मेरा सच्चा धर्म वही है- जो जननी ने सिखलाया है॥

एक तरफ ईसाई उनको- अपने पथ पर बहकाते थे।
और बहुत से मुस्लिम भाई- इस्लामी पथ दिखलाते थे॥
दो धारों के बीच तैरते- गाँधी अपने तट पर आये।
तनिक भँवर में आये थे वे- पर 'कवि राय' किनारे लाये॥

गाँधी जी को लिखा उन्होंने- "काम न करना बिना विचारे।
कहीं फिसल कर गिर मत पड़ना, भारत माँ के भाग्य-सितारे!
हिन्दू धर्म पूर्ण सागर है, खोज खोज कर रत्न निकालो।
आत्म निरीक्षण, सूक्ष्म, गूढ़ सब- जो कुछ भी चाहो वह पालो॥

मथो सभी धर्मों को भाई! देखो, रत्न कहाँ मिलते हैं?
देखो, कहाँ रात है काली- देखो, कहाँ कमल खिलते हैं?"
सब धर्मों की पुस्तक पढ़ पढ़- किया धर्म-मन्थन गाँधी ने।
वेद विधाता के चरणों में- चढ़ा दिया चन्दन गाँधी ने॥



घर जाने की इच्छा मचली, गाँधी जी "डरबन" में आये।
'धन्यवाद' के लिये 'सेठ' ने- सुन्दर सुन्दर साज सजाये॥
'अब्दुल्ला' ने गाँधी जी की- बार बार की बहुत बड़ाई।
काव्य-कला स्वागत कर बोली- मेरे गाँधी! तुम्हें बधाई॥

सब मित्रों को किया निमन्त्रित, खान पान के ठाठ सजाये।
दावत करी 'सिडेवहैम' में, सब मिल हृदय-बधाई लाये॥
यहीं कहीं अखबार पड़ा था, गाँधी जी वह लगे बाँचने।
एक खबर पढ़ चौंक पड़े वे, पुनः खबर वह लगे जाँचने॥

"फ्रेंचाइज़ इण्डियन" सूचना- गाँधी जी ने पढ़ी ध्यान से।
चिन्ता दौड़ गई माथे पर, हृदय हट गया खान पान से॥
बोले सब मित्रों से गाँधी- "देखो, देखो! खबर पढ़ो यह।
तुमको 'मत-अधिकार' न होगा- बनता है क़ानून यहाँ वह॥







भारतीय के लिये यहाँ ये- क़ानूनी विष घोल रहे हैं।
भारतवासी चुप बैठे हैं, शब्द न मुँह से बोल रहे हैं॥
'फ्रेञ्चाइज़ क़ानून' ज़हर है, इसका करो विरोध आज से।
अधिकारों के लिये लड़ो तुम! दृढ़ होकर गोरे समाज से॥"

उस जलसे में से कुछ बोले- 'आप जो कहें वही करें हम।
आप न जायें अभी यहाँ से, तभी हट सकेगा काला तम॥'
जलसे में से बोला कोई- 'गाँधी जी को यहीं रोक लो!'
कहा दूसरे ने सहसा यह- 'महापुरुष की कृपा- कोर लो!!'
जलसे भर में शोर मच गया- 'यही ठीक है, यही ठीक है।'
प्रतिध्वनि में मानवता बोली- 'यही लीक है, यही लीक है॥
गाँधी जी को यहीं रोक लो, गाँधी जी को यहीं रोक लो!
इनके चरणों के प्रताप से- अन्धकार खो, देख भोर लो!!'

सुधा छिड़कते गाँधी बोले- 'काम करो तो रुक जाऊँ मैं।
तन मन धन यदि खर्च कर सको- तो आन्दोलन फैलाऊँ मैं॥"
एक साथ आवाज़ें गूंजी- जो आज्ञा हो, वही करें हम।
हम सब तन मन धन से प्रस्तुत- कहो, कलेजा चीर धरें हम॥

गाँधी जी के अभिभाषण से- जलसा क्षण में 'दधिचि' बन गया।
फिर क्या था! स्वागत का जलसा- कार्यकारिणी समिति बन गया॥
पंचम स्वर में कहा आह ने- गाँधी सब की चाह बन गये।
लक्ष्य-दीप ले बोल उठा यह- गाँधी सब की राह बन गये॥

वह वाणी क्या, जिसने जग को- पीड़ा की पहिचान नहीं दी।
वह पतंग क्या, जिसने जल जल- देश- दीप पर जान नहीं दी॥
वह बादल क्या, जो कि बरस कर- बुझा न दे धरती की ज्वाला।
वह दीपक क्या, जो जल जल कर- दे न सके सब को उजियाला॥

जहाँ हुआ अन्याय तनिक भी- गाँधी जी बस गये वहाँ पर।
'फ्रेञ्चाइज़ बिल' के विरोध में- खड़े हो गये कमर बाँध कर॥
रुक 'दक्षिण अफ्रिका' गये वे- सार्वजनिक सेवा करने को।
भेद भाव का भूत भगा कर- मन में देश-भक्ति भरने को॥





'दादा अब्दुल्ला' के घर पर– गाँधी जी ने सभा बुलाई।
सभी हुए शामिल बैठक में– हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई॥
बैठे सज प्रधान कुर्सी पर– 'हाजी सेठ मुहम्मद दादा'।
भाषण होने लगा सभा में– गाँधी जी का सीधा सादा॥
महापुरुष ने कहा वहाँ पर– "मिलकर सभी एक हो जाओ।
'फ्रैंचाइज़ बिल' के विरोध में– फौरन एक तार भिजवाओ॥
कल 'अध्यक्ष' महोदय को तुम– एक प्रार्थनापत्र भेज दो।
और उसी की प्रतिलिपियाँ कर– यत्र तत्र सर्वत्र भेज दो॥
देश-भक्ति के लिये भाइयों! शीघ्र स्वयम् सेवक बन जाओ।
बनो 'भगीरथ', गंगाजल से– अपने घर की आग बुझाओ॥"
'फ्रैंचाइज़ बिल' के विरोध में– लिखा प्रार्थनापत्र सोचकर।
देश प्रेम में दौड़ दौड़ कर– करवाये सबके हस्ताक्षर॥
'रुस्तम जी' 'जीवा जी' जैसे– भारतीय सेवा में आये।
गाँव गाँव में घूम घूम कर– दस हज़ार हस्ताक्षर लाये॥
शीघ्र प्रार्थनापत्र उन्होंने– धारा सभा मध्य भिजवाया।
प्रतिलिपि अख़बारों को भेजो, अख़बारों का निर्णय आया॥
सब पत्रों ने किया समर्थन, अपने अग्रलेख भी छापे।
'फ्रैंचाइज़ बिल' के अभ्यासी– ऊपर हँसे, हृदय में काँपे॥
बड़े बड़े नेताओं ने भी– उस विरोध को उचित बताया।
दुनिया भर में ख़बर छप गई, भारत के जी में जी आया॥
वह पहिला प्रार्थनापत्र था– जो दुनिया में बना ढिँढोरा।
वह पहिला देशाभिमान था– जिससे काँप उठा रँग गोरा॥
अब 'अफ्रिका' छोड़ कर गाँधी– भारत कैसे जा सकते थे?
आन्दोलन को छोड़ बीच में– वापिस कैसे आ सकते थे??
अब "नेटाल" निवासी भाई– दूरी कैसे सह सकते थे?
गाँधी जी के बिना वहाँ पर– ज़िन्दा कैसे रह सकते थे??
बन्धन मुक्त कराने वाले– पकड़े गये प्रेम-बन्धन में।
गाँधी जी बस गये प्रेम से– मन मन्दिर के नन्दन वन में॥











गाँधी के बढ़ते गौरव को– गोरे सहन नहीं कर पाये।
डरे बन्दरों से जितने हम– बन्दर उतने ही घुर्राये॥
न्यायालय है धर्म-तराजू, जिस पर सत्य तुला करता है।
गोरा हो या काला कोई, सत्य किसी से कब डरता है?

सत्य तोलने वाली बुढ़िया– न्यायालय में तोल रही है।
वर्णभेद से तिलक न करती, जिसमें सच है योग्य वही है॥
पर गोरे तो यह कहते थे– हम ही यहाँ वकील रहेंगे।
यदि कोई काला आया तो– हम सब उसको 'कुली' कहेंगे॥

गोरों ने यह समझ लिया था– जड़ ख़रीद 'नेटाल' हमारा।
गोरों ही की यहाँ वकालत, कालो! क्या है काम तुम्हारा?
काली गोरी मूरत से तो– 'सौदे वाली' सौदा करतीं।
मोल वहाँ होता शक्लों से, पर वे भी ईश्वर से डरतीं॥

भंगी हो या भिश्ती कोई, वे सब को सौदा देती हैं।
अपने दोनों लोक बेचतीं, सब कुछ खो कर क्या लेती हैं?
कागज़ या चाँदी के टुकड़े– उसके दोनों लोक छीनते।
वेश्या अपना सब कुछ देती, नर उसकी अस्थियाँ बीनते॥

गोरों की ये बात देखकर– गाँधी जी को गुस्सा आया।
पर गुस्सा पी गये शान्ति से, उन्हें न्याय का पृष्ठ दिखाया॥
बड़ी शान्ति से न्यायालय में– माँगा न्याय उन्होंने जाकर।
बोले, "वर्ण भेद यह कैसा? काले गोरे सभी बराबर॥"

न्यायालय ने आज्ञा दी यह– गाँधी का कुछ दोष नहीं है।
जो गाँधी को ग़लत बताते– उनको अपना होश नहीं है॥
बोले न्यायाधीश न्याय से– गोरों की उक्तियाँ व्यर्थ हैं।
गाँधी जी हैं ठीक मार्ग पर, गोरों के इन पर अनर्थ हैं॥

पगड़ी को उतार गाँधी ने– न्यायालय में शपथ उठाई।
करने लगे वकालत जग की, महाउदधि में नाव चलाई॥
आग्रह और अनाग्रह दोनों– सत्याग्रह के लिये ज़रूरी।
हठ से हक़ की हत्या होती, रह जाती साधना अधूरी॥



केवल अपना पेट पालना– शिक्षा का उद्देश्य नहीं है।
पूछ हिला कर पेट दिखाना, भिक्षा का उद्देश्य नहीं है॥
भिक्षा अगर माँगनी है तो– अपने सद्भावों की माँगो।
औरों का सुख फिरो माँगते, फाँसी की डोरी मत टाँगो॥

बने भिखारी का भिक्षुक जो– वह नर से नारायण होता।
जो दुःखों में सुख बन जाये– वह नर धर्म परायण होता॥
पेट पालना, पड़ कर सोना– गाँधी जी का ध्येय नहीं था।
भिक्षुक के भिक्षुक गाँधी का– जीवन-जलधि प्रमेय नहीं था॥

गाँधी जी का मुख्य लक्ष्य था– करना सार्वजनिक सेवायें।
आओ, सेवक पर श्रद्धा से– भावों के दो फूल चढ़ायें॥
भारत भाग्य 'मताधिकार बिल'– नाच रहा था उनके आगे।
जब सारी दुनिया सोई थी– तब गाँधी पहरे पर जागे॥

दुनिया ने जीवन पाया है– विष पीनेवाले 'शंकर' से।
मात्र प्रार्थनापत्र भेज कर– 'फ्रेंचाइज़ बिल' टला न सर से॥
तब उस कर्मवीर गाँधी ने– पूरे आन्दोलन की ठानी।
पीड़ा से बिजली सी तड़पी– उनकी जागी हुई जवानी॥

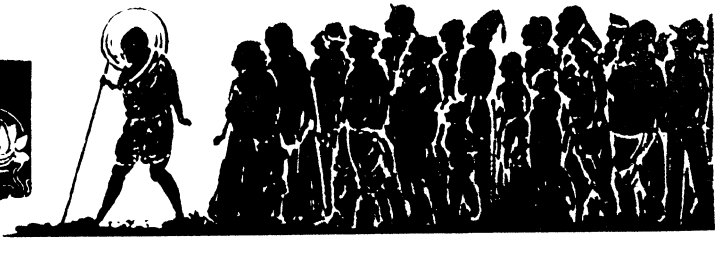
बादल बन कर गिरा आग पर– गाँधी की वाणी का पानी।
शब्द शब्द में नया ग्रन्थ है, शब्द शब्द में अमर कहानी॥
आन्दोलन के लिये उन्होंने– सार्वजनिक संस्था रच डाली।
हम उपवन के खिले फूल हैं, गाँधी जी उपवन के माली॥

'महासभा कांग्रेस' देश की, भारत में भारत-माता है।
सत्यं शिवं सुन्दरम् सी माँ, दुःखों में सब की त्राता है॥
'भारतीय नेटाल कांग्रेस', नाम वहाँ भी रखा सभा का।
कहाँ कहाँ तक गुण गायें कवि, गाँधी! तेरी अमर प्रभा का॥

बैठ नाव पर संकल्पों की– गाँधी ने 'काँग्रेस' बनाई।
'भारतीय कांग्रेस' वहाँ भी– मानो नई जवानी लाई॥
या कि भारती ज्योति फूट कर– आ चमकी 'नेटाल' देश में।
या उस कल्याणी वाणी ने– दीप धरा दक्षिण प्रदेश में॥









जननायक

'दादा अब्दुल्ला' की बैठक- बदली, बनी भक्ति कार्यालय।
गाँधी जी को मानव कहदूँ, या भारत माँ का न्यायालय॥
ऐसे बढ़े सदस्य सभा के, जैसे बढ़ी कीर्ति गाँधी की।
ऐसे उठी भावना उनकी, जैसे परछाई आँधी की॥



बड़ी कठिनता से गाँधी जी- चन्दा प्राप्त किया करते थे।
एक पौंड प्रतिमास सभा को- गाँधी स्वयं दिया करते थे॥
मन्त्री थे इसलिये उन्हों के- कन्धों पर गाड़ी चलती थी।
भारत जननी के दुःखों से- गाँधी की छाती जलती थी॥

मन्त्री अगर योग्य हो कोई- तो संस्था चलती रहती है।
अगर स्नेह भर दो दीपों में- दीप-शिखा जलती रहती है॥
सद्भावों से लक्ष्य मार्ग पर- जो आगे आगे चलता है।
वह मानवता के मन्दिर में- हृदय- दीप बन कर जलता है॥

सार्वजनिक कामों की महिमा- गाँधी जी ने पहिचानी थी।
सार्वजनिक पथ की कठिनाई- उस बिरले ही ने जानी थी॥
चलते चलते पैर छिल गये, लेकिन चलता रहा बराबर।
प्रलयंकर तूफ़ानों में भी- दीपक जलता रहा बराबर॥

जो न परिश्रम से थकता है- उससे बाधा दूर भागती।
जिसकी वाणी में जीवन है- जनता सोती हुई जागती॥
जागो हिन्दुस्तानी भाई! गाँधी जी ने आँखें खोली।
गूंजी गाँधी जी की वाणी, जनता पीछे पीछे होली॥

पूजा की थाली सी चमकी- 'महासभा' 'नेटाल' देश में।
मानो कष्ट दूर करने को- ईश्वर थे दक्षिण प्रदेश में॥
गाँधी के साधन शोभन से- हारे बड़े बड़े दुर्योधन।
गाँधी का नेतृत्व वहाँ पर- करने लगा तीव्र आन्दोलन॥

भारतीय 'अफ्रिका' निवासी- अपनी स्थिति पहिचान रहे थे।
उनके प्रेम भाव की महिमा- अन्तर्वासी जान रहे थे॥
गाँधी- ज्ञान प्रचार सार से- हम निर्माण मार्ग पर आये।
बने उन्हों के मित्र बहुत से, सब ने प्रेम भाव दर्शाये॥





गाँधी नर थे या नारायण– यह सब भेद भक्त ही जाने।
जो खुद को पहिचान न पाया– वह उनको कैसे पहिचाने॥
जिसके अन्तर में आँखें हैं– वही उन्हें पहिचान सका है।
नर नारायण दोनों ही थे, कवि केवल यह जान सका है॥

एक दिवस गाँधी के आगे– पिटा छिता मदरासी आया।
जिसे देख कर मन ही मन में– मेरा राम हृदय भर लाया॥
मुँह से खून, दाँत टूटे थे, रोता रोता हाँफ रहा था।
हिड़की बँधी हुई थी उसकी, डर के मारे काँप रहा था॥

फटे पुराने वस्त्र देह पर– तन की चमड़ी उधड़ रही थी।
डर की डायन आँख फाड़ कर– अब भी उससे अकड़ रही थी॥
उसे हृदय से लगा हृदय ने– पूछा, कहो बात क्या भाई!
बोला वह, "गोरे मालिक ने– मार मार कर खाल उड़ाई॥

मैं हूँ 'बालसुन्दरम्' स्वामी! गोरे की नौकरी करी थी।
बेक़सूर, यह दशा बना दी, चाय मेज़ पर नहीं धरी थी॥
इसी बात पर बिगड़ गया वह, मुझको बेदर्दी से मारा।
अब तुम ही हो मेरे रक्षक, भला करे भगवान तुम्हारा॥
हत्यारे से मुझे छुड़ा लो, मेरा कोई नहीं यहाँ पर।
उससे मेरा पिंड छुड़ा दे, ओ मुझ बेक़सूर के ईश्वर!"
बालसुन्दरम् की हालत से– गाँधी जी के दृग भर आये।
पर आँखों ही में आँसू पी, चरण न्याय के लिये बढ़ाये॥

न्यायालय से न्याय माँगने– गाँधी दीनदयालु चल पड़े।
गाँधी तब शिव रूप हो गये, जब माथे में तीन बल पड़े॥
सत्य उक्तियाँ रख गाँधी ने– न्यायालय से न्याय कराया।
'बाल सुन्दरम्' का गोरे से– गाँधी जी ने पिंड छुड़ाया॥

जो होते हैं सन्त उन्हों का– हृदय बहुत कोमल होता है।
सन्त हृदय में गिर कर आँसू, दुनिया में मोती बोता है॥
बालसुन्दरम् ने गाँधी के– आगे अपनी पगड़ी धर दी।
और आँसुओं के मोती से– गाँधी जी की गोदी भर दी॥







ज
न
ना
य
क



गाँधी जी शर्मा कर बोले, पहिले पगड़ी धर लो सर पर।
ईश्वर का अधिकार मित्र! यह, मुझको देख रहा है ईश्वर!
जाने कोई सता किसी को, कैसे स्वयम् बड़ा बन जाता?
जाने पीकर रक्त किसी का, कैसे कोई नर कहलाता?

सच पूछो तो 'बालसुन्दरम्', भारत का साक्षात् चित्र था।
जिसके कपड़े फटे हुए थे, जिसका कोई नहीं मित्र था॥
बूटों से उधेड़ कर जिसके- तन की चमड़ी चमड़ी छीली।
शरण माँगती थी पुत्रों से- जिस भारत की आँखें गीली॥

घूँसे मार मार गोरों ने- जिसके दाँत तोड़ डाले थे।
'कुली' कहाने को गोरों से- दर पर पड़े हुए काले थे॥
भारतमाता के शोणित की- उनके ओठों पर प्याली थी।
क़ानूनों के छुरे भोंक कर- हक़ की हत्या कर डाली थी॥

गोरों की थी सड़क वहाँ पर, गोरों की थी रेल वहाँ पर।
हमें खिलौना समझ तोड़ना, गोरों का था खेल वहाँ पर॥
धरती माता की गोदी तो- सब पुत्रों के लिये बराबर।
सड़क नहीं है बहू, छिपे जो- काले स्वामी से शर्मा कर॥

नये नये क़ानून विपैले- लदे 'अफ्रिका' में कालों पर।
विष फैलाने लगे देश में- श्वेत साँप फुङ्कार मार कर॥
एक सर्प ने 'तीन पौंड कर'- लदवाया हिन्दुस्तानी पर।
अपने गाल सुर्ख़ कर डाले, 'गिरमिटियों' का खून चूस कर॥

यम का कर था या पिशाच का, बच्चों तक पर भी वह कर था।
मानवता की शव-यात्रा में- काले गोरे का अन्तर था॥
खून पसीना बहा बहा कर- भारतीय खेती करते थे।
पर भूखे मरते थे काले, गोरे बड़े पेट भरते थे॥

गोरे क्या! उनके कुत्ते भी- भारतीय पर घुर्राते थे।
दूध पिया करते थे गोरे, ढोर उन्हीं से चरवाते थे॥
कहते थे, काले जँगली हैं, ये अच्छा खाना कब जाने?
इन्हें पहिनना कब आता है, कब अपनी क़ीमत पहिचाने?





अत्याचारों के विरोध में– गाँधी ने आवाज़ उठाई।
जिनको अपना पता नहीं था– उनको उनकी दशा बताई॥
जन जन में जय जय लय जागी, जीवन में ज्वाला दहकादी।
आँधी सी दौड़ी रग रग में, गाँधी जी ने क्रान्ति मचादी॥

बाह्य जगत के साथ हृदय में– महाशक्ति ने शक्ति जगाई।
अन्तरतम के अन्धकार में– महापुरुष ने ज्योति जलाई॥
मानव की मानसिक गुलामी– गाँधी के मानस ने धोई।
दुनिया की पीड़ा आ आकर– गाँधी की आँखों में रोई॥

महासभा काँग्रेस वहाँ की, मानवता की शान्ति ढूँढती।
जिस जीवन में जान नहीं थी– उस जीवन में क्रान्ति ढूँढती॥
यदि गाँधी नेतृत्व न करते– महासभा काँग्रेस न होती।
और अगर काँग्रेस न होती– तो मानवता रह रह रोती॥

या मानवता की छाती पर– पशुता छुरा चलाये जाती।
या मानव की लाश चूट कर– पशुता डायन खाये जाती॥
धन्य ! धन्य !! वे व्यापारी जो– गाँधी जी के लिये 'कर्ण' थे।
वर्ण-भेद से दूर दूर जो– महासभा काँग्रेस-वर्ण थे॥

आन्दोलन के लिये कमर कस– जो तन मन धन से तत्पर थे।
धन्य ! धन्य !! वे वीर विजेता– जिनके धरे हाथ पर सर थे॥
'अफ्रीका' में छिड़ी लड़ाई– गाँधी जी ने शंख बजाया।
सत्य, अहिंसा, आत्मशक्ति से– शान्तिपूर्ण संसार रचाया॥

गाँधी जूझ पड़े गोरों से– 'गिरमिटियों' की सेना लेकर।
जय जय जय जय जय चिल्लाये– भारतवासी सर दे देकर॥
कोड़े खाये, गये जेल में, फाँसी के तख़्तों पर झूले।
तन मन धन बलिदान कर दिया, पर न देश का गौरव भूले॥

भूत, भविष्यत्, वर्तमान में– अन्त सत्य की विजय हुई है।
श्रद्धा भक्ति तपश्चर्या से– भारत भक्ति अनन्य हुई है॥
जो क्षणभंगुर भय से डरते– वे नर बार बार मरते हैं।
जो न कभी रोके से रुकते– वे दुनिया स्वतन्त्र करते हैं॥







आत्मज्ञान हो गया जिसे वह– मानव से समष्टि बन जाता।
जो गहराई में जाता है– वह नर रत्न खोज कर लाता॥
जिसने सच्चाई से ढूँढा– वह कीचड़ में भी नीरज है।
वह जीवन जागृति ज्योतिर्मय– जिसके जीवन में धीरज है॥



मेरे हृदय हंस गाँधी जी– मानस के मोती चुगते थे।
मेरे गाँधी के जीवन से– नये नये पौधे उगते थे॥
जो जीवन में वही जगत में– वही व्यक्ति ऊँचा चढ़ता है।
रहन सहन वह खान पान का– असर दूसरों पर पड़ता है॥

कितना खोट, स्वर्ण कितना है, हृदय-कसौटी पर कसते थे।
किन्तु किसी के धर्म-जाल में– गाँधी-ज्ञान नहीं फँसते थे॥
बड़े बड़े ईसाई पंडित– कर न सके खंडित गाँधी को।
मस्तानी हथकड़ियाँ आ आ– कर न सकीं दंडित गाँधी को॥

गाँधी जी के खान पान से– मचल गया ईसाई बालक।
गाँधी जी को देख बन गया– गाँधी जी का आज्ञा-पालक॥
इस पर ईसाई महिला ने– गाँधी को घर से दुतकारा।
उस सीधे सच्चे बालक को– माँ ने बार बार फटकारा॥

और कहा गाँधी से उसने– तुम तो माँस नहीं खाते हो।
लेकिन मेरे बच्चे से क्यों– आमिष खाना छुड़वाते हो?
इससे वह बीमार पड़ेगा, कमज़ोरी भी आ जायेगी।
और तुम्हारी मीठी वाणी– भोला बालक बहकायेगी॥

इस पर गाँधी जी यह बोले– अब मैं यहाँ नहीं आऊँगा।
बालक अपनी माँ से बोला– माँ! मैं माँस नहीं खाऊँगा॥
गाँधी-वाणी हृदय खींचकर– सच की गंगा में नहलाती।
उन आँखों के आकर्षण से– मुक्ति स्वयम् चरणों में आती॥

गाँधी की तस्वीर खिच गई– 'अफ्रीका' के अन्तस्तल पर।
बड़े प्रेम से बसा हुआ था– हृदय हृदय में गाँधी का घर॥
अच्छा बुरा सभी कुछ देखा, किन्तु चले वे सँभल सँभल कर।
उलझाने वाली रंगीनी– डाल न पाई जादू उन पर॥





'अफ्रीका' में रहते रहते– तीन वर्ष हो गये उन्हें जब–
'बा' की याद बुलाने आई– अपने स्वामी गाँधी को तब ॥
रह रह कर 'भारत' जाने की– चाह तड़पने लगी हृदय में ।
मानो पत्नी के वियोग की– आह तड़पने लगी हृदय में ॥

स्मृति की पलकों पर प्यार लिये–
बरसे किसकी सुधि के मोती ?
किसकी कविता कहती कहती–
सरिता घन में करुणा रोती ??

बिजली बन 'बा' मन में चमकी,
तड़पी स्मृति बोल उठी, आ ! आ !!
प्रिय आ ! प्रिय आ !! मधुमास लिया,
कब से कहती कलिका गा गा ॥

पावस सी चिर प्यास लिये प्रिय !
मैं दृग-कोष बिखेर रही हूँ ।
पीर भरी, मधु नीर भरी प्रिय !
गीत भरी पथ घेर रही हूँ ॥

भूल गये सुधि क्या करुणानिधि ?
लूट रहा जग, रात अँधेरी ।
क्यों बन वायु न प्राण ! गये तुम,
जीवन को अब याद न मेरी ॥



अपने मित्रों से गाँधी ने– घर जाने की आज्ञा चाही ।
आगे का पथ बता रहा था– आगे चलने वाला राही ॥
बोले, "मैं छः मास बाद ही– पास तुम्हारे आ जाऊँगा ।
और यहाँ के लिये वहाँ से– नये नये साधन लाऊँगा ॥
हम पर जो कुछ यहाँ बीतती– वह सब वहाँ सुना आऊँगा ।
भारत के अन्तस्तल तक मैं– दशा तुम्हारी पहुँचाऊँगा ॥
क्योंकि यहाँ रहना है मुझको– अतः बाल बच्चे ले आऊँ ।
यदि 'काँग्रेस' और 'शिक्षादल'– तुम सँभाल लो तो मैं जाऊँ ?"





जनायक

गाँधी जी के सब मित्रों ने- गाँधी की धड़कन पहिचानी।
गाँधी जी ने आज्ञा चाही- गाँधी जी की आज्ञा मानी॥
'आदम जी' को मन्त्री पद दे- गाँधी जी ने क़दम उठाया।
उमड़ घुमड़ छल छल बादल दल- उनके स्वागत में घिर आया॥



दृगदीपों के प्रिय प्रकाश में- गाँधी ने सुन्दरता आँकी।
अन्तस्तल पर अंकित करली- 'दक्षिण अफ्रीका' की झाँकी॥
प्रकृति-परी के साथ साथ चल- वह विस्तृत भूखण्ड निहारा।
हवा बदलते रहे वहाँ पर, उमड़ी देशभक्ति की धारा॥
ऊँचे ऊँचे सुन्दर सुन्दर- शैलों पर संगीत सुनाये।
मानो पर्वत के मानस से- देशभक्ति के गीत लुटाये॥
सरिताओं के रम्य तटों पर- जीवन देते गाँधी घूमे।
लहरों की कल कल ध्वनि से वे- भावों के सागर में झूमे॥
ऋतुओं के रूपों को देखा, रिमझिम की पग ध्वनि पर बोले।
करुणा की बरसातें देखीं, कलियों के अवगुण्ठन खोले॥
डाल डाल पर कोयल देखी, किन्तु दृगों से नीर बहाती।
फूल फूल से बरस रही थीं- कितनी ही आँखें बरसाती॥
आँसू आँचल में भर गाँधी- सारे जग को फिरे दिखाते।
पलकों से काँटे चुग चुग कर- सींच सुमन से फूल खिलाते॥
'पोंगोला' जहाज़ चलता था, गाँधी रूप निहार रहे थे।
उमड़ उमड़ कर ज्वार जलधि से- उन पर मोती वार रहे थे॥
मानो श्वेत हंस पर बैठे- गाँधी जल-विहार करते थे।
या सागर के खारी जल में- चुग चुग कर मोती भरते थे॥
मन की लहरों में लहराते- लहरों पर मोहन चलते थे।
लहरें साथ साथ चलती थीं, दीपक साथ साथ जलते थे॥
आध्यात्मिक बातों के रस में- गाँधी का जलयान चल रहा।
देखो, कभी न बुझने वाला- अखिल भुवन में दीप जल रहा॥
मेरे गाँधी की आँखों ने- एक तत्त्व सर्वत्र निहारा।
मन-मोहन पर अर्घ्य चढ़ाने- आ पहुँची गंगा की धारा॥





जनायक

यात्रा का आनन्द लूटता– यान किनारे पर आ पहुँचा।
या वियोगिनी के दृग-तट पर, तड़पा हुआ प्यार जा पहुँचा॥
'हुगली' का सौन्दर्य देखते– गाँधी जी 'कलकत्ते' आये।
मातृभूमि के लिये उदधि से– चुग चुग हीरे मोती लाये॥

पल्लव ! प्रात-समीर लुटा अब,
क्योंकि बजी प्रिय पावस-पायल।
गीत रसाल भरे भव में भर,
स्वागत में मधु कोयल श्यामल !

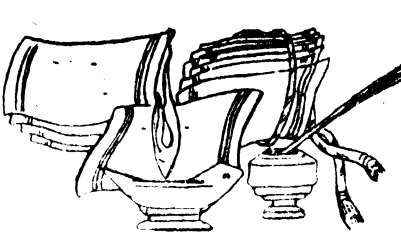


चाँद नहीं चित-चोर चकोर !
मयूर ! न मेघ लिये शशि सावन।
चाँद झुका कच-मेघ लिये अलि !
पूज रही पति के पग-पावन॥









अष्टम सर्ग





दीपक की यह ज्योति नहीं जग !
मोहन की मुख-ज्योति निराली ।
सूरज जान न पंकज ! तू खिल,
नीरज में अलि ! रूप उजाली ॥
मेघ नहीं, अलि, अञ्जन 'बा' दृग–
में मल वाल सँवार रहो है ।
बादल आज कहाँ बदली ! फिर–
क्यों यह चाँद उभार रही है ?

पागल ! बादल आज नहीं पर,
मैं प्रिय के अभिनन्दन में हूँ ।
जो बन में सब को मधु दे अलि !
मैं वह सौरभ चन्दन में हूँ ।
दीपक पूजन के जलते अलि !
तू इनको समझी नभ-तारे ।
जा ! मुझ निर्धन को न चिढ़ा अलि !
दो दिन के सब फूल उधारे ॥

धरती माता ने गाँधी के– स्वागत को संसार बसाया ॥
गउओं ने गा गा गाँधी को– मीठा मीठा दूध पिलाया ।
स्वागत की वेदी पर कवि ने– लाकर दीप धर दिया घी का ॥
उदित उषा ने मंगल गा गा– लगा दिया रोली का टीका ।







बैठी प्रिया प्रतीक्षा में जो– उस वियोगिनी का धन आया।
युग युग से प्यासी धरती को– मेघों ने मधु घोल पिलाया॥
'कलकत्ते' से बढ़े अगाड़ी– प्रिय 'प्रयाग' के दर्शन करने।
गंगा, यमुना, सरस्वती को– अपने अन्तस्तल में भरने॥

या कि त्रिवेणी के संगम पर, गागर में सागर जाता था।
या कि मानवों के हृदयों का, संगम पर संगम आता था॥
जग के संगम को पहिनाई, संगम की लहरों ने माला।
लहरों की लड़ियों पर बैठा, जग की आग बुझाने वाला॥

तीर्थ प्रयाग जहाँ मन-मोहन,
पूज रहे रस अर्घ्य-त्रिवेणी।
आँक रहे जन-गायक गो–कुल,
बाँध रहीं लहरें जल-वेणी॥

पैर पखार चले जल में जल,
दीप जहाँ दृग में जलते थे।
'बा'– दृग देख रहे कब से पथ,
दो दृग से झरने चलते थे॥

मन-सागर में संगम लेकर– मोहन 'राजकोट' में आये।
'बा' देवी ने चरण पखारे, घर में घी के दीप जलाये॥
वर्षों से सिंचत आँखों के– मोती प्रियतम पर बरसाये।
निर्निमेष आँखों से पति पर– 'बा' ने अन्तर-सुमन चढ़ाये॥

गाँधी जी के दर्शन करने– लेकर प्यार पड़ौसी आये।
बचपन के साथी मित्रों से– शैशव से बीते दिन पाये॥
सीता सावित्री सी 'बा' ने– तीन वर्ष तक करी तपस्या।
पतिव्रत-धर्म-परायण 'बा' ने– सुलझाई यह अग्नि-समस्या॥

ज्वाला चिता की सुलगें फणों सी–
देवी सती भी कब हारती है?
आदर्श पत्नी जलती चिता में–
न छोड़ती है पति-धर्म सत्या॥







जनानायक



प्रेमी पतंगे ! प्रण प्रेम तेरा–
न है पगों की रज भी सती के।
प्रदीप्त हो दीप जले तभी तू–
पा लाश ठण्ढी जलती सती ही ॥

ढूँढा, न पाया अति प्रेम ऐसा–
न है, कभी भी न त्रिकाल होगा।
जले चिता में शव साथ पत्नी–
प्रेमी पतंगा जलता, जलाता ॥

जाता चला दीप जला जहाँ भी–
कभी न होता वह एक ही का।
परन्तु होता पति एक प्रेमी–
प्रमाण पूरा जलती सती का ॥

श्मशान जाते शव साथ में ले–
जाता न कोई पर साथ नाता।
जाती सती ही शव अंक में ले–
जाता न कोई जलती चिता में ॥

देखो, चिता से लपटें उठी हैं–
मानो सती के पग चूमने को।
उठी हुईं ये लपटें सती को–
ले जा रही हैं पति-लोक में क्या ?

विश्वास आदर्श सतीत्व मुक्ता–
'सीता' सती 'बा' जननी जहाँ हैं–
कमी न होगी सुरलोक की भी–
ध्रुवो ! सती की करलो परीक्षा ॥

वर्षों से प्यासे चकोर ने– आज चाँद की कोली भरली।
आज विरह मे व्यथित मोर ने– नाच नाच मन-चाही करली ॥
चुम्बक से उस मधुर मिलन में– गाँधी अपना मार्ग न भूले।
कच्चे धागों के झूलों पर– गाँधी सँभल सँभल कर झूले ॥





याद न भूल सके जननायक,
दक्षिण के अवसाद खड़े थे।
फूल वहाँ पग चूम रहे पर,
अन्तर में अति शूल गड़े थे॥

वे कब जान सके सुख के दिन,
जो सुख में दुख के दिन भूले?
घायल की पहिचान उन्हें कब,
जो असि की कटु धार न झूले??



'हरी पुस्तिका' रची उन्होंने– 'अफ्रीका' की लिखी कहानी।
जिसके पृष्ठों पर दिखलाया– कालों की आँखों का पानी॥
'हरी पुस्तिका' पर पत्रों ने– लम्बे लम्बे लेख निकाले।
अग्रलेख भी लिखे बहुत ने, दिखलाये भारत के छाले॥

'हरी पुस्तिका' ने दुनिया में– कालों की दुर्दशा दिखाई।
'न्याय नहीं है! न्याय नहीं है!' कानों में यह प्रतिध्वनि आई॥
गाँधी के पत्रों ने खींची– कालों के दुःखों की रेखा।
'अफ्रीका' के चित्र दिखाये, भारत के कीड़ों को देखा॥

फैला प्लेग किन्तु गाँधी जी– नहीं मौत से डर कर भागे।
दुनिया पैर फला कर सोई, गाँधी जी पहरे पर जागे॥
घर घर गली गली में जा जा– गन्दे पाखाने धुलवाये।
शुद्ध हवा आने जाने को– घर में वातायन खुलवाये॥

रहन सहन को देख देख कर– गाँधी जी मन में शर्माये।
धनियों की गन्दगी देख कर– उठे न उनके नयन उठाये॥
सोते वहीं, वहीं खाते थे, और वहीं गन्दा कर देते।
कभी भूल कर भी वाणी से– नाम नहीं ईश्वर का लेते॥

गली, सड़क, मन्दिर, मस्जिद सब– गाँधी जी ने साफ़ कराये।
पलटा पृष्ठ नागरिकता का, रहन सहन के ढङ्ग बताये॥
अन्तर के उस राजनिष्ठ ने– राजभक्ति का मुँह भी चूमा।
श्रद्धा के कानन में मोहन– भौरों के झुरमुट सा झूमा॥





किन्तु राजनिष्ठा गाँधी की– कभी स्वार्थ के लिये नहीं थी।
कोई ऐसी बात न बोले– जो परार्थ के लिये नहीं थी॥
किसी बात में भी गाँधी ने– कभी व्यक्तिगत स्वार्थ न देखा।
पर-सेवा के लिये जिये वे, अङ्कित करी सत्य की रेखा॥

सेवा करने लगे सत्य की– नर नारायण ईश्वर सेवी।
गाँधी जी के हृदय-कमल पर– गाने लगी अहिंसा देवी॥
बढ़ती चली अहिंसा मन में, वाणी पर शुभ शान्ति विराजी।
जहाँ शान्ति सरिता बहती है– वहाँ नहीं रहती नाराजी॥

सब की सेवायें कर गाँधी– सेवा-सुधा पिया करते थे।
अपने जीवन की पूजा को– गाँधी नहीं जिया करते थे॥
सेवा सच्चाई में जो सुख– वह न लोक लोकान्तर में है।
वह परमेश्वर की परिभाषा– जिसका मानस ईश्वर में है॥

'अफ्रीका' का दर्द पिँघल कर– आँखों में बादल बन छाया।
नगर नगर में घूम घूम कर– गाँधी जी ने दर्द दिखाया॥
'न्यायमूर्त्ति रानडे' भक्त से– मिलने को 'बम्बई' आगये।
'न्यायमूर्त्ति' के खुले दृगों में– गाँधी जी के चित्र छा गये॥

'तैयब जी' से मिल गाँधी ने– अपने मन की बात सुनाई।
'तैयब जी' ने गाँधी जी को– अगली पगडण्डी बतलाई।
'बिना ताज के बादशाह सर– शेर फ़िरोज़शाह' पर आये।
या कि भक्ति से किसी भक्त ने– अपने प्रभु के दर्शन पाये॥

चित्रित किये चित्र 'दक्षिण' के– गाँधी जी ने उनके आगे।
सुन सुन कर गाँधी की वाणी– सोते हुए शेर सब जागे॥
'बिना ताज के बादशाह' ने– गाँधी जी को गले लगाया।
'वाचा' 'कामा', दो हाथों से– गाँधी का परिचय करवाया॥

शेरों ने बम्बई शहर में– प्रिय जनता की सभा बुलाई।
न्यायमूर्त्ति के दर्शन करने– सारी जनता दौड़ी आई॥
एक तरफ़ सागर की लहरें– और इधर जन-सागर उमड़ा।
या कि उदधि से होड़ लगाने– सागर-तट पर जन-घन घुमड़ा॥







सारी रात जाग गाँधी जी– अपना भाषण लिख लाये थे।
भाषण पढ़कर 'न्यायमूर्ति' की– आँखों में आँसू आये थे॥
गाँधी की वाणी सुनने को– तट पर जन-समुद्र लहराया।
'बिना ताज के बादशाह' की– वाणी सुनने सागर आया॥

न्याय-मूर्ति मन के राजा जब– दिव्य ज्योति से चढ़े मंच पर–
जनता में जय जय ध्वनि गूंजी– उछल पड़े करतल ध्वनि कर कर॥
'बिना ताज के बादशाह' की– जय जय जय जय जय जय बोले।
गाँधी जी के लिये उन्होंने– अन्तर के दर्वाज़े खोले॥

भाषण देने खड़े हुए जब– मेरे मन-मोहन प्रिय गाँधी।
गाँधी की आँखों के आगे– भावुकता की आई आँधी॥
'बिना ताज के बादशाह' ने– गाँधी का उत्साह बढ़ाया।
गाँधी जी का भाषण गूंजा, जनता में सन्नाटा छाया॥

वाचा से अथ से इति तक वह– भाषण सब ने सुना ध्यान से।
जय जय ध्वनि से बादल उमड़े, गर्ज उठे देशाभिमान से॥
गाँधी जी के उस भाषण ने– श्रोताओं पर छाप छोड़ दी।
मोहन ने मन के घोड़े की– ठीक मार्ग पर रास मोड़ दी॥

'न्यायमूर्ति' ने गाँधी जी की– बड़े गर्व से करी बड़ाई।
गाँधी जी के यश-दर्पण ने– मुक्ति-पर्व की दिशा दिखाई॥
एक एक करके गाँधी ने– सब मित्रों के हृदय टटोले।
कुछ तो उनके सुर में बोले, कुछ बेसुरे राग में बोले॥

गाँधी जी का प्रेम देखकर– भारत माता मुग्ध हो गई।
उसके दृष्टि बिन्दु को समझो, जिसकी वाणी दाग़ धो गई॥
सच्चे देशभक्त गाँधी ने– हर कम्पन की चाल टटोली।
तब तब मधु बरसा धरती पर, जब जब मनु ने वाणी खोली॥

'लोकमान्य' को हृदय चीर कर– दुखियों की तस्वीर दिखाई।
'लोकमान्य' ने बीहड़ पथ पर– फूलों की बटिया बतलाई॥
बोले, "भण्डारकर" धैर्य से– गाँधी! तुम जाकर मिल आओ।
स्वर हो एक, एक ही लय हो, एक सूत्र में सब बँध जाओ॥







'भण्डारकर' सभापति पद लें– तो सारे दल मिल जायेंगे।
शोणित सनी मेदिनी पर फिर– फूल गुलाबी खिल जायेंगे॥
मिलो "गोखले" से भी जाकर, उनसे तुमको मदद मिलेगी।
उनकी वाणी के मधु से सिँच– भारत की वाटिका खिलेगी॥
जब जब भी आवश्यकता हो– तब तब मुझ से मिलते रहना।
शूलों की दुनिया में मोहन! तुम गुलाब से खिलते रहना॥"
'लोकमान्य' के दर्शन करके– गाँधी जी कृत-कृत्य हो गये।
मोहन मधुर लोक-प्रियता से– देश-भक्ति के सुमन बो गये॥



मिले 'गोखले' से गाँधी जी, बड़े प्रेम से मिले 'गोखले'।
जो न प्रेम के प्यासे चातक– निश्चित समझो उन्हें दोगले॥
पहिला ही परिचय था लेकिन– मिले 'गोखले' पूर्व मित्र से।
गंगाधारा के गीतों पर– अंकित थे साकार चित्र से॥
गंगाधारा बने 'गोखले'– 'लोकमान्य' सागर से गरजे।
'शेर फिरोज़शाह' हिमगिरि थे– जिनसे अत्याचारी लरजे॥
हिमगिरि पर चढ़ना दुर्भर है, थाह नहीं मिलती सागर की।
गंगा की महिमा अथाह है, गति है नागर के गागर की॥
गंगा की गोदी में खेले, गाँधी थाह अथाह चाह के।
लहरों ने उनको नहलाया– तार छिड़ गये जब प्रवाह के॥
जलतरंग' पर गाँधी जी की– वीणा सरस्वती सी बोली।
"सामवेद" के शाश्वत सुर सुन, दुनिया पीछे पीछे होली॥
'भण्डारकर' मिले गाँधी से, प्रातः भूले शाम मिले थे।
'रामकृष्ण' के दर्शन करके– नयनों से आराम मिले थे॥
दोपहरी में मेरे मोहन– प्यास बुझाने वहाँ गये थे।
स्वाति-बिन्दु पाये चातक ने, चरण उन्हीं के जहाँ गये थे॥
'भण्डारकर' भक्त ने मन से– गाँधी जी की बात मानली।
जीवन दिया हृदय-पौधे को, गाँधी की पहिचान जानली॥
'पूना' के इन विद्वानों ने– त्याग तपस्या से तरु सींचा।
तरु पर खिले सुमन, सुमनों से– प्यासे भौंरों ने मधु खींचा॥



'पूना' से 'मदरास' पहुँच कर- गाँधी जी ने गीत सुनाये।
'बालसुन्दरम्' की घटना ने- गाँधी जी पर सुमन चढ़ाये॥
'जी परमेश्वर पिल्ले' प्रिय ने- गाँधी सुमन सुधा से सींचा।
और 'सुब्रह्मण्यम्' भाई ने- डोल डाल कर जीवन खींचा॥

बच्चे बच्चे के मानस में- मन-मोहन का प्रेम बस गया।
बन्धन नहीं प्रेम में होता- किन्तु प्रेम में हृदय फँस गया॥
चाहे लोहे के बन्धन हों- किन्तु स्नेह से गल जाते हैं।
प्रेमी के नयनों के जल से- पथ के काँटे जल जाते हैं॥

बीते हुए बेल भावों की- गाँधी जी 'कलकत्ता' आये।
इधर उधर बिखरे फूलों की- माला एक गूँथ कर लाये॥
कहीं प्रेम से मिले 'बनर्जी', कहीं 'मुखर्जी' में मधु पाया।
कहीं किसी ने धूलि समझ कर- ईश्वर को दर से दुलराया॥

पथ के बड़े बड़े शूलों से- गाँधी जी ने हार न मानी।
पानी आग अवनि अम्बर से- जूझी उठती हुई जवानी॥
'स्टेट्समैन' के सम्पादक ने- जग में गाँधी-सुधा बहाया।
सच्चे 'इँगलिशमैन' पत्र ने- गाँधी जी का स्वर अपनाया॥

न्याय धर्म है, न्याय नीति है, न्याय नीति की सदा विजय है।
शत्रु मित्र के लिये बराबर, गाँधी का गौरव अतिशय है॥
'अफ्रीका' की स्वतन्त्रता का- झण्डा लहराते चलते थे।
भारत की हर गली सड़क पर- गाँधी दीपक से जलते थे॥

टूट गिरे जब फूल धरा पर,
बाग उजाड़ रही जब आँधी-
गूँथ रहे तब फूल कली पर,
पूज रहे जन के पग गाँधी॥

मानव का जब शङ्ख बजा तब-
गूँज उठी जग में जन-वाणी।
पैर जहाँ पड़ते प्रभु के मृदु,
मन्दिर भीड़ वहाँ पर प्राणी॥





जननायक



सहसा 'डरबन' से गाँधी को– तार मिला, जल्दी आजाओ !
'पार्लमेंट' की बैठक होगी– तट पर तुम मँझधार लगाओ ॥
पत्नी को वह तार सुनाया, बोली– "चरण कहाँ पाऊँगी ?
मुझे छोड़ कर गये अगर तुम– मैं वियोग में मर जाऊँगी ॥
अब न अकेले जा पाओगे, स्वामी ! मैं भी साथ चलूँगी ।
अगर छोड़ जाओगे स्वामी ! तो ज़िन्दी दिन रात जलूँगी ॥"
लगा हृदय से, बोले गाँधी– "तुम न अकेली यहाँ जलोगी ।"
मेरे पथ के अन्धकार में– तुम दीपक सी साथ चलोगी ॥

सुन स्वामी की बात स्नेह से– सूखी सरिता में जल आया ।
पतझड़ में बसन्त ऋतु दौड़ी– मन में खिला फूल लहराया ॥
पहिन 'पारसी साड़ी' 'बा' ने– फूलों जैसे बाल सजाये ।
गाँधी जी ने गूँथ गूँथ कर– फूलों के गहने पहिनाये ॥

गाँधी जी के दोनों बच्चे– 'बा' की उँगली पकड़ चल पड़े ।
मानो दीपक-राग छिड़ गया– दीपक अपने आप जल पड़े ॥
प्रेमामृत से सींच हृदय को– 'बा' मानस का मैल धो गई ।
बैठ गये 'कुरलैंड यान' में– फिर से यात्रा शुरू हो गई ॥

चला इधर से यान, उधर से– आग लिये तूफ़ान आ गये ।
काले बादल घिरे गगन में, छाती पर अङ्गार छा गये ॥
सागर गरजा, अम्बर लरजा, तूफ़ानों से यान हिल गया ।
बड़े भाग्यशाली थे यात्री, गाँधी जी का साथ मिल गया ॥

सबने साहस छोड़ा लेकिन– हिम्मत नहीं उन्होंने हारी ।
माँझी ने पतवार हाथ ले– दूर करीं बाधायें सारी ॥
सागर की उत्ताल तरंगें– उससे आ आ कर टकराईं ।
किन्तु हिमालय के सीने से– वे चंचल लहरें घबराईं ॥

बोला यात्री, डरो न माँझी ! तट पर यह मँझधार चलेगा ।
आज भँवर से होड़ लगी है, आज जीत का दीप जलेगा ॥
डगमग डगमग यान हो गया, फण फैला लहरें टकराईं ।
तूफ़ानों के लगे थपेड़े, लहरें छाती पर चढ़ आईं ॥





यान डूबने लगा बीच में, यात्री 'राम ! राम !' चिल्लाये।
दुखियों के मन की पुकार सुन- ईश्वर वहाँ दौड़ कर आये॥
मौत नाचती है जब सर पर- उसकी याद तभी आती है।
समय काम करता है अपना, आयु समय में बह जाती है॥

बड़े बड़े भूचाल काँप कर- गाँधी-वाणी से भागे थे।
'कुम्भकर्ण से सोने वाले- गाँधी-वाणी से जागे थे॥
काली काली घटा हट गई, सूर्य निकल आये सागर में।
मोहन ने कन्धे पर रक्खा- सारा सागर भर गागर में॥

मँझधार जहाज़ चला डिगता-
लहरें लपकीं भभकीं जल में।
जल में मनमोहन याद किये-
भगवान पुकार लिये पल में॥

तम चीर प्रभा-किरणें बिखरीं-
दुख में सुख के प्रिय दीप जले।
पतवार सँभाल सुहाग चले-
दिनमान विहान लिये निकले॥

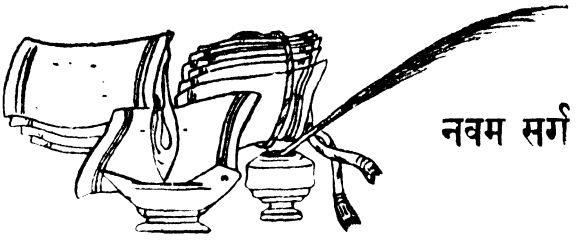












नवम सर्ग



वे सावन के सरस मेघ थे, रसना से झरते थे मोती।
पीड़ा पूछ रही प्राणों से, बदली क्यों सावन में रोती?
किसके कोमल भाव कुसुम हैं? जिसका सौरभ फूल फूल में।
माली की कह रहे कहानी, खिले हुए वे फूल शूल में॥

वे फूलों की तरह डाल पर– खिल खिल कर झूला करते थे।
वे रोटी की तरह आग पर– तप तप कर फूला करते थे॥
वे दीपक की तरह तिमिर में– जल जल कर प्रकाश भरते थे।
वे कीचड़ से निकल उदधि में– पंकज पर निवास करते थे॥

बड़वानल की लहरों में घुस, 'डरबन'-तट पर लंगर डाला।
सूर्य तैर कर तट पर पहुँचा, सारे जग में बिछा उजाला॥
खार खा रहे थे गाँधी पर– गोरे आग बबूला होकर।
पर परमेश्वर के प्रतीक को– डरा न पाया कोई भी डर॥

गोरे जले भुने बैठे थे, वह गंगा-धारा सा निकला।
चला खेलने अङ्गारों से, कहीं न बैठा, कहीं न फिसला॥
'डरबन' के गोरे कहते थे– हम गाँधी को खा जायेंगे।
वह गोरों का दुश्मन, उसको– हम फाँसी पर लटकायेंगे॥

कालों से 'नेटाल' भरेगा– इसीलिये गाँधी आया है।
काले भारतवासी भर भर– वह 'कुरलैंड यान' लाया है॥
सत्य अहिंसा की गंगा पर– हिंसा के अङ्गारे धधके।
आग बबूला होकर गोरे– भोले गाँधी जी पर भभके॥





दाँत पीस कर कहा उन्होंने, गाँधी जी को कच्चा खालो।
लाल लाल हो, सुर्ख़ आँख कर, धमकी दी– सागर में डालो॥
गली गली में, सड़क सड़क पर– सुलग रही थी दुर्द्धर ज्वाला।
अन्यायों की आग बुझाने– चला घुमड़ता बादल काला॥

डाल दिया लङ्गर गाँधी ने, आँधी से गोरे घिर आये।
रूई नहीं, हिमालय गाँधी, कैसे आँधी उसे उड़ाये॥
गाँधी के गोरे साथी ने– गाँधी पर भेजा सन्देशा।
सावधान रहना गोरों से, पल पल प्राणों का अन्देशा॥

मिस्टर 'लाटन' आकर बोले– "गाँधी! मेरे साथ चलो तुम।
डरो न गोरों की धमकी से, पकड़ मित्र का हाथ चलो तुम॥
लुक छिप कर प्राणों के भय से– मुझे नहीं भाता है जाना।
जब की लिख दी, तभी मरेंगे, मरने से कैसा घबराना?

गोरे इधर उधर बिखरे हैं, आम मार्ग पर शान्ति इस समय।
छिप कर जाना उचित नहीं है, सारे जग में विचरो निर्भय॥
अच्छा सुनो, बाल बच्चे तुम– 'रुस्तम जी' के घर भिजवाओ।
मेरे साथ साथ गाँधी जी! आम राह से पैदल आओ॥"

गाँधी साथ चले 'लाटन' के, भेज बाल बच्चे गाड़ी में।
'राम', 'कृष्ण' का रक्त भरा था, उस मृत्युञ्जय की नाड़ी में॥
रुका नहीं वह पथिक आग से– तूफ़ानों से हार न मानी।
मानो उठी जवानी लेकर– मचल उठा सागर का पानी॥

जैसे ही उतरे जहाज़ से– गोरे बच्चों ने पहिचाना।
'गाँधी! गाँधी!!' चिल्लाये वे, बन्द हो गया आना जाना॥
भीड़ इकट्ठी हुई सड़क पर, क़ैद हुए चौराहे चारो।
'गाँधी! गाँधी!! दौड़ो! दौड़ो!! पकड़ो! पकड़ो!! मारो! मारो!!'

भीड़ चीखती चली साथ में, गोरों ने घेरा गाँधी को।
पथ पर खड़ी हुई दीवारें, रोक नहीं सकतीं आँधी को॥
बढ़ने लगा भीड़ का हल्ला, गोरे दौड़ पड़े गाँधी पर।
मिस्टर 'लाटन' अलग कर दिये, गाँधी जी पर बरसे पत्थर॥







जनायक

पगड़ी फेंकी, कपड़े फाड़े, गले सड़े अंडों से मारा।
कंकड़ मारे, पत्थर मारे, डाला भर नाली का गारा॥
थप्पड़ लात और घूँसों से- गाँधी जी की कमर तोड़ दी।
गोरों ने अपने घूँसों से- अपनी ही तक़दीर फोड़ दी॥

हड्डी, चर्बी, माँस फेंक कर- गाँधी को बेहाल कर दिया।
इतने ही में और किसी ने- उनके सर पर बूट धर दिया॥
गाँधी जी को मूर्च्छा आई, चक्कर खाते गिरे धरा पर।
पकड़ सींखचे खड़े हो गये, रुके नहीं थे अब भी पत्थर॥

बदन छिल गया, सूज गया मुँह, गर्म रक्त बह चला कमर से।
धन्य! धन्य!! मन-मोहन गाँधी! पीछे भागे नहीं समर से॥
सत्य अहिंसा के दर्शन में- ईश्वर स्वयम् व्याप्त होता है।
जिसे सहारा राम नाम का- वह नर कभी नहीं रोता है॥

पिटते पिटते गाँधी जी ने- मुँह से 'राम! राम!!' उच्चारा।
'राम! राम!!' की वाणी सुनकर- प्रभु ने राम रहीम निहारा॥
राम-नाम-पतवार हाथ ले- माँझी पार चला जाता है।
बीच भँवर मँझधार हार कर- गीत किनारे के गाता है॥

राम! कृपा करके सुनलो-
हम आज पुकार रहे तुमको।
प्यास भरे जल से तरसे-
दृग राम! निहार रहे तुमको॥

आज कृपा करक दुख में-
मन से न ढलो तन से ढलना।
दीप जले तम में तुम हो-
दृग! देख रहे अपना जलना॥

चतुर्भुजी भगवान राम! तुम रक्षा करो हमारी-
हम आये शरण तुम्हारी।
तुमने ही 'प्रह्लाद' बचाये- आज बचाओ हमको।
तुम प्रकाश हो, मार्ग दिखादो- भस्मसात् कर तम को॥





जननायक

राम ! हमारे पीछे गोरी– चमड़ी पड़ी हुई है ।
राम ! बीच में भावुकता की– कविता खड़ी हुई है ॥
मन-मोहन के लिये बन गई– स्नेह सृष्टि हत्यारी ।
चतुर्भुजी भगवान राम ! तुम, रक्षा करो हमारी—

राम-प्रेरणा से आ पहुँची– पत्नी वहाँ पुलिस-नायक की ।
या कि स्वयम् ईश्वर ही आये– सुन पुकार अपने बालक की ॥
वीर-काव्य की महामूर्त्ति या– मानवता की माया आई ।
छाता खोल दिया देवी ने, गाँधी जी पर छाया छाई ॥

अब यदि चोट करें भी गोरे– तो गाँधी जी बच जाते थे ।
'अलेकजेंडर' की छाया में– गाँधी 'राम ! राम !!' गाते थे ॥
गाँधी जी की रक्षा करने– पुलिस पुलिस-चौकी से आई ।
आग बरसती थी मानव पर, छाया जैसी देवी छाई ॥

कहा पुलिस ने गाँधी जी से– आप पुलिस-चौकी पर ठहरें ।
जब तक भीड़ हटे गोरों की– तब तक मेरे ही घर ठहरें ॥
लेकिन गाँधी जी ने उनकी– प्रेम पगी यह बात न मानी ।
बोले, जग की रीति यही है, मैंने यह दुनिया पहिचानी ॥

न्याय बुद्धि पर अटल भरोसा, ईश्वर मेरे साथ रहेगा ।
सागर बन कर बरस पड़ेगा, दृग से जितना नीर बहेगा ॥
रुके न रोके से गाँधी जी, 'रुस्तम जी' के घर पर आये ।
'रुस्तम जी' ने चोटें सेकीं, सती प्रिया ने पैर दबाये ॥

मरहम पट्टी कर न सके थे, गोरों ने आकर घर घेरा ।
'रुस्तम जी' के दर्वाज़े पर– डाल दिया गोरों ने घेरा ॥
शाम हुई, हो गया अँधेरा, गुस्से से गोरे चिल्लाये ।
'रुस्तम जी' के दर्वाजे पर– लाल लाल गोरे घुर्राये ॥

गोरों की किलकारी गूँजी, गाँधी जी को करो हवाले ।
हम गाँधी को क़त्ल करेंगे, यहाँ नहीं रह सकते काले ॥
देख वहाँ संगीन मामला, दौड़े 'अलेकजेंडर' आये ।
तिकड़म तरकीबों से उसने– गाँधी जी के प्राण बचाये ॥











बुद्धिमान ने गाँधी जी पर- भेजे दो तैराक गुप्तचर।
उन दोनों ने गाँधी जी से- करी प्रार्थना हाथ जोड़ कर॥
'रुस्तम जी', पत्नी, बच्चों की- तुमको जान बचानी होगी।
बीच भँवर में नाव आ गई, मिल कर पार लगानी होगी॥

पहिनो शीघ्र पुलिस का बाना, वेश बदल कर निकल चलो तुम।
ये भूखे भेड़िये, इन्हों को- वेश बदल कर आज छलो तुम॥
इसी तरह से 'रुस्तम' जी का- जान माल हम बचा सकेंगे।
इसी चाल से ये लोहे के- चने वज्र से पचा सकेंगे॥

और अगर यह नहीं करोगे- गोरे अभी फूक देंगे घर।
गाँधी जी ने बात मान ली- रक्खा निज छाती पर पत्थर॥
पहिन पुलिस की वर्दी, सर पर- पीतल की तश्तरी बाँध ली।
ऊपर सर पर कसा रुपट्टा, दुष्ट जनों से करी धाँधली॥

वे दो गुप्त पुलिस के अफ़सर- कपड़े बदल बने व्यापारी।
हिन्दुस्तानी के चोले में- नौ दो ग्यारह की तैयारी॥
गाँधी जी को बचा पास की- किसी गली से दूर ले गये।
गोरे लड़ते रहे, तोड़ कर- गाँधी जी अंगूर ले गये॥

आँखों में मिर्चें भरते वे- अपनी गाड़ी तक आ पहुँचे।
गोरों के जमघट से बचकर- गाँधी थाने पर जा पहुँचे॥
खुफिया अफ़सर, पुलिस एस० पी०- गाँधी जी के बसे हृदय में।
मानो ईश्वर आ बैठे थे- मानस के कोमल किसलय में॥

बिना आग में तपे स्वर्ण को- कभी निखरते देखा है क्या?
रवि के बिना प्रकाश विश्व में- कभी बिखरते देखा है क्या??
जो जितना भी तपा आग में- उतना ही वह निखर रहा है।
पृष्ठों पर गाँधी का जीवन- रूप-रश्मि सा बिखर रहा है॥

शोलों के सागर में बह कर- गाँधी जी थाने पर आये।
गोरों पर 'अलेकजेंडर' ने- उनके ही हथियार चलाये॥
बुद्धिमान ने भीड़ रोक ली- 'रुस्तम जी' के दर्वाज़े पर।
अपने दाँव चलाते थे वे- गोरों को बहका फुसला कर॥



हँसी उड़ा बोले गोरों से– गाँधी जी को सबक़ बतादें।
"चलो, इसी इमली के ऊपर– गाँधी को फाँसी लटकादें॥"
जब कि नीति से गाँधी जी को– जाल डाल कर दिया सुरक्षित।
तब उन सब गोरों के आगे– बात भेद की करी प्रस्फुटित॥

बोले, अन्दर जाकर देखो– अब तो वहाँ शिकार नहीं है।
क़ानूनों की हत्या करना– मानव का अधिकार नहीं है॥
अपने लिये क़ब्र मत खोदो, बीच भँवर से नाव बचालो।
फिर भी यदि हठधर्मी ही है– तो तुम उनको ढूँढ निकालो॥

यदि वे घर में मिल जायेंगे– तो जो चाहो वह कर लेना।
जीवन–जलधि उफान ले रहा, सुधा छोड़, विष मत भर लेना॥
गोरों ने निज प्रतिनिधि भेजे, हाथ हिलाते वापिस आये।
आँखें नीची हुईं उन्हों की, बार बार मन में शर्माये॥

कुछ गुस्से में, कुछ शर्माते, कुछ पछताते हुए चल दिये।
उलझी हुई गुत्थियाँ सुलझीं, गाँधी जी ने प्रश्न हल किये॥
सत्य अहिंसा महाशक्ति ने– न्याय-दण्ड को नहीं पुकारा।
बदला नहीं लिया करता था– क्षमामूर्ति गाँधी बेचारा॥

सत्य अहिंसा के आराधक– मृत्युञ्जय की अमर कला है।
स्वतन्त्रता देवी के आगे– वीरों का बलिदान फला है॥
क्षमामूर्ति के चरणों में झुक– अन्यायी ही शर्माता है।
प्रेम-पंथ पर चलने वाला– अपना लक्ष्य ढूँढ लाता है॥

उलझन में सुलझन गाँधी से– बोल उठी पत्नी बेचारी–
"सब की उलझन सुलझाते हो, घर की चिन्ता नाथ! बिसारी॥
बिना अर्थ के आँसू पी पी– कब तक जीवन चल सकता है?
बिना स्नेह के नाथ! बताओ, कब तक दीपक जल सकता है??"

चाँद पर रीझ चाँदिनी आज–
मान पर रीझ मानिनी आज–
कला पर रीझ कामिनी आज–
मेघ पर रीझ दामिनी आज–







कह रही अपने मन की व्यथा।
कह रही पीड़ा जग की कथा॥
कह रहे आँसू मन की बात।
कह रही तारों से कुछ रात॥



गाँधी बोले, मैं भूला पर- ईश्वर तुम्हें नहीं भूला है।
झूलो, बड़े प्रेम से झूलो, उसकी वाणी में झूला है॥
बच्चों के पढ़ने लिखने की- वही व्यवस्था करने वाला।
वह बच्चों का पालक पोषक, अन्धकार में वही उजाला॥

जनता के सेवक को अपने- घर का ध्यान नहीं रहता है।
जिसने उसको जहाँ पुकारा- वह भगवान वहीं रहता है॥
बच्चे पढ़ने लगे उन्हों के, गाँधी उनको लगे पढ़ाने।
अपने शुद्ध ज्ञान की गंगा- तृषित भूमि पर लगे बहाने॥

कोढ़ चूता द्वार उनके, एक दिन आया भिखारी।
भीख दे बाबा! मुझे कुछ, प्रश्न यह लाया भिखारी॥
या परीक्षा को उन्हों की- आ गया कोढ़ी बिचारा।
या स्वयम् भगवान ने ही- हाथ भिक्षुक बन पसारा॥

सामने भिक्षुक खड़ा था, सोच में गाँधी पड़े थे।
द्वार पर पल्ला पसारे- स्वयम् नारायण खड़े थे॥
कहा गाँधी ने द्रवित हो- आपकी सेवा करूँ मैं।
पूछ पलकों से पसीना- कोढ़ पर मरहम धरूँ मैं॥

धोने लगे घाव कोढ़ी के- अमर 'भगीरथ' गंगा-जल से।
सेवाओं का सुधा पिलाया, रत्न लुटाये अन्तस्तल से॥
चतुर नर्स की तरह हृदय से- वे रोगी की सेवा करते।
सेवाओं के आराधक पर- कवि-वाणी से झरने झरते॥

अस्पताल में बीमारों की- सच्ची सेवा करते हैं वे।
पलकों से चोटें सहलाते, घाव हृदय से भरते हैं वे॥
एक दिवस की बात कि गाँधी- घर में बच्चे खिला रहे थे।
मीठी मीठी बातें कह कह- दूध गर्म कर पिला रहे थे॥





सहसा पत्नी बोली उनसे– मेरी तबियत घबराती है।
प्रसव-वेदना शुरू हो गई, रह रह उबकी सी आती है॥
दाई बहुत दूर है घर से, जल्दी नाथ! उपाय करो कुछ।
साहस से गाँधी यह बोले, किसी बात से नहीं डरो कुछ॥

दाई स्वयम् बन गये गाँधी, सारा प्रसव-कार्य निमटाया।
'बा' की भरी हुई गोदी में– सुन्दर लाल और चमकाया॥
ईश्वर की अद्भुत लीला है, महिमा का प्रतिबिम्ब छा रहा।
रति क्रीड़ा से जिसके ऊपर– इति-स्वर से संसार गा रहा॥

उसी भूमि पर मेरे ईश्वर, बच्चों से क्रीड़ा करते हैं।
कभी खिलाते, कभी हँसाते, कभी सुधा-धारा भरते हैं॥
मानो मानव में ईश्वर वे, जीवन-ज्योति दिखाने वाले।
राम-नाम-रस की रसना से– रस की धार बहाने वाले॥

अनहद शब्द सुनो वाणी के, कल्याणी तस्वीर निहारो।
ईश्वर तुम्हें निहार रहा है, ईश्वर की आँखों के तारो!
जीवन नहीं खिलौना जिसको– खेल खेल में तोड़ फोड़ दें।
जो युग युग में दीप दिखायें– जीवन में वे पृष्ठ जोड़ दें॥

राग मिटा, मन बोध बना अब,
काम कला तज ब्रह्म जवानी!
क्यों कब डूब गई गल के वय,
याद न क्यों वह आयु पुरानी?

काम बड़ा बलवान भयंकर,
फूल गिरा चलती यह आँधी।
ब्रह्म प्रभात स्वरूप बने अब,
आग बुझा जल में चल गाँधी!

पत्नीव्रत धारण कर गाँधी– राम रूप में दीख रहे थे।
संयम से पत्नीव्रत पर रह– शान्त सत्य व्रत सीख रहे थे॥
जीवन धन्य तभी होता है– जब जन को आसक्ति न घेरे।
भोग मात्र की वस्तु न दारा, ब्रह्मचर्य में सत् के डेरे॥







जनायक

ब्रह्मचर्य व्रत बिना विश्व में- कीचड़ से उद्धार नहीं है।
ईश्वर में तादात्म्य नहीं है, जीवन में विस्तार नहीं है॥
ब्रह्मचर्य व्रत के साधक को- ईश्वर अमर शक्ति देता है।
अपनी गोदी में बैठाकर- अपनी अमर भक्ति देता है॥



मन संयम-रज्जू से बाँधा- ब्रह्मचर्य व्रत हित गाँधी ने।
मानस में तूफ़ान उठाये- रस्सा तोड़ तोड़ आँधी ने॥
पर आसक्ति दबाकर 'बा' ने- कामदेव पर विजय प्राप्त की।
शिव शंकर की महाशक्ति से- ब्रह्मचर्य की शक्ति व्याप्त की॥
गाँधी के वैराग्य मार्ग पर- जब भी कोई बाधा आई।
तभी भस्म कर भाव गर्त के, अमर ज्योति ने ज्योति दिखाई॥
शक्ति स्वरूप नारियाँ जाने, क्यों आसक्ति बनी जाती हैं।
देशभक्ति रूपी 'बा' की जय, सतियाँ ज्वाला पर गाती हैं॥
ब्रह्म' ब्रह्म को खोज रहा है, यह कैसी रहस्य की लीला?
आँखें जिसे टटोल रही हैं, कहाँ छिपा है वह चमकीला??
महापुरुष गाँधी की जय है, जिसने मन मथ ब्रह्म निकाला।
उस मानव के ब्रह्म तेज ने- सारे जग में किया उजाला॥
ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर वह- सारे जग में फिरा झूमता।
बारम्बार प्रणाम उसे है- कवि आँखों से चरण चूमता॥
जिसने ब्रह्मचर्य-रस पाया- उसे नहीं अमरत्त्व चाहिये।
जो न कभी घटता बढ़ता है- कवि को भी वह स्वत्त्व चाहिये॥
ब्रह्मचर्य व्रत की महिमा का- मैंने ज्ञान नहीं जाना है।
'भीष्म' और 'शिव' को प्रणाम है- जिनसे काम हार माना है॥
यह व्रत वह आनन्द कि जिसमें- कोई चाह नहीं रहती है।
ब्रह्मचर्य व्रत से रस झरता, मन से सुधा-धार बहती है॥
यह व्रत पैनी धार कि जिस पर- 'नारद' जैसे हार चुके हैं।
भंग तपस्या हुई जिन्हों की- वे ऋषि 'विश्वामित्र' झुके हैं॥
पर गाँधी जी व्रत धारण कर- श्रद्धा से भगवान बन गये।
ब्रह्म रूप के दर्शन करके- सेवा से सम्मान बन गये॥





जनाय क

यह वह विष की घूँट कि जिसको– 'शङ्कर' जैसे ही पी पाये।
यह वह सुधा-धार है जिसको– गाँधी सागर मथ कर लाये॥
ब्रह्मचर्य-रस चखना है यदि– तो जिह्वा के स्वाद त्याग दो।
खट्टी मीठी चाट छोड़ कर– काम कला की याद त्याग दो॥

वन के खिले फूल फल खाओ, मन उपवासों से ठहराओ।
संयम से रोको घोड़े को, मन न इन्द्रियों से बहलाओ॥
बनो वियोगी काम कला के, बढ़े चलो वैराग्य-मार्ग पर।
चाहे जितनी लहरें आयें, 'शिव' से पहुँचो पार तैर कर॥

उभरे यौवन को मत देखो, देखो ईश्वर के स्वरूप को।
नाच सिनेमा के मत देखो, देखो 'नटवर' के स्वरूप को॥
गन्दे गन्दे गीत मत सुनो, भक्ति-मार्ग के गीत गवाओ।
काम कला की बात मत करो, ईश्वर के गुण-गान सुनाओ॥

भक्त देव-दर्शन करता है, कामी कीचड़ में धँस जाता।
एक देह की पूजा करता, एक अनश्वर के गुण गाता॥
आँखों से देखो क्षणभंगुर! दर्पण में ईश्वर स्वरूप को।
श्रद्धा से पूजो, पर पूजो– नटवर के नागर स्वरूप को॥

मन है पवन, वेग गति जिसकी, वशमें करना सरल नहीं है।
किन्तु अलौकिक रस इस व्रत में, राई भर भी गरल नहीं है॥
काम कला वरदान सृष्टि की, पर अभिशाप बनी जाती है।
जब उड़ जाता हंस हाथ से– तब यह दुनिया पछताती है॥

धधक उठी वासना भूख सी, रक्त तृषित मानव की भूखी।
नागिन गाती, नाश नाचता, चूस न पागल! हड्डी सूखी॥
रूखी राख उड़ा मत अपनी, देख सामने चिता धधकती।
सुन्दरता के रंग महल में– पल भर की रागिनी भभकती॥

तिमिर-मार्ग में दीप जलाओ, मुक्ति मिलेगी राम-भक्ति से।
भंगुर शाश्वत बन जाते हैं, ब्रह्मचर्य की महाशक्ति से॥
फूस जला देती चिनगारी, पानी में गिर कर बुझ जाती।
शलभ! दीप पर क्यों जलता है? शिखा स्वयम् जल तुझे जलाती॥







चाह का यह चमकीला जाल–
बना जाता जीवन का काल ॥
सादगी तुझको रही पुकार।
एक मँझधार, एक पतवार ॥



जीवन में सादगी साध कर– गाँधी ने सादगी सिखाई।
नाई को तकलीफ़ नहीं दी, दाढ़ी अपने आप बनाई ॥
गोरे नाई ने गाँधी के– बाल न काटे, मना कर दिया।
अपने आप हजामत करके, अपना जीवन सरल कर लिया ॥

कैंची और उस्तरा लेकर– खड़े हुए शीशे के आगे।
उलटे सीधे बाल काट कर– गाँधी छोड़ गुलामी भागे ॥
कपड़े धोने लगे हाथ से, मानस की रस-धार निचोड़ी।
आ, हम भी कुछ शिक्षा ले लें, इस दम्पति से अरी निगोड़ी !

पहली बार कलफ कालर में– सूखे पत्ते सा दे डाला।
गाँधी से मज़ाक करने का– मित्रों को मिल गया मसाला ॥
पर हँसने वालों पर गाँधी– मन में मन्द मन्द मुस्काते।
सबके लिये विनोद बन गये, गाँधी हँसते और हँसाते ॥

स्वावलम्ब से गाँधी जी ने– स्वतन्त्रता का सुख भोगा है।
अपना ही अवलम्ब जिसे है– उसने कभी न दुख भोगा है ॥
बेचारी 'बा' बड़े प्रेम से– पति की सेवा में रत रहती।
कपड़े धाती, पैर दबाती, गा गा प्रेम-नदी में बहती ॥

बच्चों के लालन पालन में– कोई चूक नहीं करती थी।
कोई उलटा काम न करदूँ, इसी बात से वह डरती थी ॥
हँसा हँसा कर हँसते हँसते– दम्पति का जीवन चलता था।
या दम्पति के जलज अङ्क में– जग का मधुर प्यार पलता था ॥

'देवदास' गोदी में लेकर– उँगली पकड़ी 'मणीलाल' की।
'रामदास' ने दौड़ लगाई, मृग गति 'हीरालाल' चाल की ॥
गाँधी जी प्यारे बच्चों से– आते जाते मन बहलाते।
घर में रास रचाया करते, बाहर रास-रूप बन जाते ॥



इसी बीच में 'अफ्रीका' में– सहसा 'बोअर' युद्ध छिड़ गया।
चिंघाड़े खूँखार भेड़िये, सोने का भेड़िया भिड़ गया॥
'बोअर' के 'जोहान्सबर्ग' पर– 'जेमीसन' ने किया आक्रमण।
शोणित सने श्वेत साँपों ने– इधर उधर को फैलाये फण॥

पहिले तो सोचा गाँधी ने– मैं 'बोअर' का बनूँ सहायक।
जो हैं मूल निवासी उनका– मुझे चाहिये बनना पायक॥
पर फिर सोचा राजभक्त मैं, कैसे राज द्रोह को जाऊँ?
अपनी निर्मल राजभक्ति में, कैसे काला दाग़ लगाऊँ?

राजभक्ति वह जो कि राज्य का– झण्डा ऊँचा सदा उठाये।
वीर वही है जो शोणित का– युद्ध भूमि में अर्घ्य चढ़ाये॥
गोरों की रक्षा को गाँधी– राजभक्ति के गीत गा रहे।
गाँधी की वाणी सुन सुन कर– गिरमिटिया मज़दूर आ रहे॥

'बोअर' के 'क्रूगर' की सेना– बड़े वेग से सावधान थी।
कृषकों, मज़दूरों की सेना– तम की बटिया पर विहान थी॥
गोरों की सेवा को आया– राजभक्ति का अमर पुजारी।
भारतवासी गिरमिटियों ने– गाँधी जी की बात विचारी॥

चले घायलों की सेवा को, गाँधी जी की आज्ञा पाकर।
बड़ी वीरता से गाँधी ने– अर्पित कीं सेवायें जाकर॥
जली युद्ध की आग भयंकर, ठाँय! 'ठाँय! गोलियाँ चल पड़ीं।'
दनन दनन दन गोले बरसे, लकड़ी सी हड्डियाँ जल पड़ीं॥

'बोअर' टूट पड़े बिजली से, गोरों की सेना थर्राई।
उखड़े पैर हटी पीछे को, 'बोअर-प्रजा' हवा सी आई॥
तब घबरा कर अंग्रेज़ों ने– बाहर से फ़ौजें बुलवाईं।
गाँधी-सागर से उड़ उड़ कर– मेघों ने आँधियाँ उड़ाईं॥

बढ़े झूमते वीर फूल से, नभ से गोले बरसाते थे।
युद्ध-क्षेत्र में खड़े सिपाही– गोली सीने पर खाते थे॥
जल जाते थे, गड़ जाते थे, किन्तु न माँ का दूध लजाते।
जो रण में शहीद होते हैं– सुख से स्वर्ग लोक में गाते॥







गोले कहीं, कहीं बम-वर्षा, गाँधी-दल सेवा करता था।
वीर घायलों के घावों पर– मनमोहन मरहम भरता था॥
'स्वस्तिक चिह्न' बाँध बाजू में, 'धन्वन्तरि' भगवान वहाँ थे।
ईश्वर का आकार वहीं है– गाँधी जी के चरण जहाँ थे॥
सेवा करके, करो परीक्षा, सेवाओं में ही ईश्वर है।
सेवाओं में सृष्टि, सृष्टि में– मानवता की ज्योति अमर है॥
गाँधी जी की राज-भक्ति से– गोरे 'बोअर' का रण जीते।
उनकी हार नहीं हो सकती– जो सच्चाई का रस पीते॥
गोरों की यह जीत नहीं है– मेरे गाँधी जी जीते हैं।
जो औरों के दुःखों से ढल– दृग से पिँघल सुधा पीते हैं॥
सच्चा सन्त वही है जिसका– मानस पर-दुःखों से पिँघला।
औरों की आँखों का आँसू– जिसकी आँखों से बह निकला॥
देख हिमालय की सेवायें, उन गोरों ने करी बड़ाई।
धन्य! धन्य!! मन मोहन गाँधी, जिसने बिगड़ी बात बनाई॥
सन्त हिमालय की आँखों से– वर्षा से झरने झरते थे।
पिँघल गये पाषाण दुःख से, पत्थर भी आँखें भरते थे॥



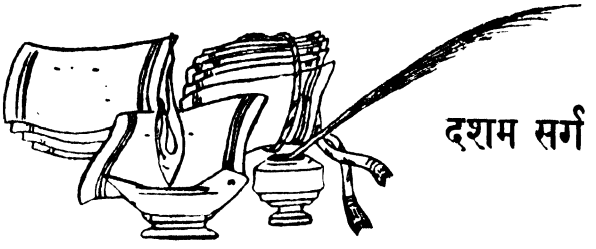
कारा में बन्दी भारत माँ–
गाँधी की स्मृति में रोती थी।
आँचल में आँसू भर भर कर–
दाग़ गुलामी का धोती थी॥



मातृभूमि का मूक निमन्त्रण–
गाँधी जी को लेने आया॥
भारत माँ का रुदन फूटकर–
वाणी में आँसू भर लाया॥







दशम सर्ग



प्राण पंजर से खड़े हैं, खेलते आँसू धरा पर।
अर्घ्य ग्रामों पर चढ़ाता, काव्य-गति हिमगिरि गिराकर॥
मेघमाला मेखला बन, दीप मंज़िल पर जलाती।
'मुक्त पिँजरे से मुझे कर!' बन्दिनी! किसको बुलाती?

वेदना विस्तार बन कर- मूक सी छाई हुई है।
शृङ्खलायें झनझनातीं, कौन शर्माई हुई है?
मुकुट जिस माँ का हिमालय, नयन उसके झुक रहे हैं।
आग में बैठी तपस्या, द्वार दृग के दुक रहे हैं॥

सत्य कहते हैं जिसे सब- वह उसे तप से बुलाती।
पुतलियों के पालने में- बावली उसको सुलाती॥
दूरदर्शी देवता के- स्वप्न से छाये दृगों में।
तड़प ले आई दुखी की, दौड़ कर चपला मृगों में॥

तड़प कर स्मृति ने हृदय में- दे दिया उनको निमन्त्रण।
पत्र पाकर कब कटे हैं- काटने से विरह के क्षण॥
देश की स्मृति ने झँजोड़ा, मन उठा उनका वहाँ से।
फूल दिखता ही नहीं अलि! आ रहा सौरभ कहाँ से?

गाँधी जी बोले मित्रों से- अब मुझको भारत जाने दो।
याद देश की बुला रही है, माँ की चरण-धूलि पाने दो॥
साथी सिसक सिसक कर बोले- चाँद रोक कब सकी चकोरी।
विरह-वेदना से तड़पेंगे, मन की करी चाँद ने चोरी॥





जननायक



पहिले प्रेम-पाश में बाँधा, अब तुम छोड़ चले जाते हो।
प्रेम बने आये थे पर अब- निष्ठुर हृदय! छले जाते हो॥
मन के राजा! छोड़ जा रहे, तड़प रहीं गोपियाँ बिचारी।
हमें न योग सिखाओ मोहन! हमें लगी है प्यास तुम्हारी॥

कोमल मक्खन सा मन भी क्यों- अब पाषाण बना जाता है?
सह न सकेंगे विरह-वेदना, रह रह हृदय भरा आता है॥
बोले मोहन, शीघ्र अवधि तक- पास तुम्हारे आ जाऊँगा।
इसी भूमि पर ढूँढ कहीं से- सब के लिये स्वर्ग लाऊँगा॥

गाँधी जी का जाना सुनकर- मित्रों का मानस भर आया।
आँखों से आँसू बरसाकर- प्रेमामृत में स्नान कराया॥
गाँधी जी के अभिनन्दन में- स्वर्णिम मान-पत्र रच डाले।
थाल बहुत से दिये भेंट में, हीरे मोती मणियों वाले॥

मनमोहन के लिये नज़र को- बड़ी बड़ी थैली भर लाये।
सोने मणियों के आभूषण- गाँधी जी की नज़र चढ़ाये॥
जगमग जगमग जगमग करता, 'बा' के लिये हार ले आये।
हार पचास गिनी का था वह, गिनी गिनी पर नग जड़वाये॥

हीरे मोती की मालायें, सोने के जड़वा जेवर थे।
मणियों की अंगूठी घड़ियाँ, प्रेम भरे आँसू से तर थे॥
हीरे मोती की नज़रों से- बालक से मोहन शर्माये।
रुपया सोना हीरे मोती- मानो उन्हें परखने आये॥

वे पागल की तरह रात भर- रहे स्वर्ण की चकाचौंध में।
कभी चमकते, कभी दमकते, चौंक चौंक कर तड़प कौंध में॥
मनमोहन को फँसा रही थी- माया अपने मोह-जाल में।
माया की रुनझुन से डरते, रहने वाले मस्त खाल में॥

सेवा की निष्काम भाव से, उसके बदले में कैसा धन?
मैं माया का हो जाऊँगा, अगर फँस गया माया में मन॥
माया-ठगनी ठग कर मन को- शान्ति नहीं मिलने देती है।
नारायण से दूर हटाती, फूल नहीं खिलने देती है॥





मानव का मन बाँध न चंचल !
जाल बिछा मत मंजुल माया !
रूप अनूप दिखा ठगिनी ! ठग,
जीवन का मधु मार्ग भुलाया ॥

रीझ नहीं सकता मन पत्थर,
कंचन थाल सजा कर लाई ।
साँपन ! खोल न साँप यहाँ पर,
'शंकर' ने वह भस्म रमाई ॥

माया की यह घात पिता ने– अपने बच्चों को समझाई ।
'गहने कपड़े क्या करने हैं ?' 'बा' से भी यह बात बनाई ॥
'बा' ने कहा बिगड़ कर उन से– "तुम्हें नहीं तो मुझे चाहिये ।
बच्चों को बहकाया तुमने, सारे गहने मुझे लाइये ॥
मुझे न पहिनाओ, पर मेरी– बहुओं को तो पहिनाओगे ।
बड़े प्रेम से भेंट करे हैं, तुम वापिस करने जाओगे ॥"
रोते हुए कहा यह 'बा' ने– "वापिस करना ठीक नहीं है ।
उनकी श्रद्धा वापिस करना– यह तो कोई लीक नहीं है ॥"
गाँधी जी बोले– "बच्चों का– अभी नहीं तू ब्याह कर रही ।
जब होगा तब सब कर दूँगा, अभी व्यर्थ यह चाह कर रही ॥"
"हाँ ! मैं तुम्हें जानती हूँ प्रिय ! मुझे बहुत पहिनाये तुमने–
जो बहुओं को पहिनाओगे, अच्छे सबक़ सिखाये तुमने ॥
अभी फूल से बच्चे हैं ये, तुम वैरागी बना रहे हो ।
रंग चढ़ा आये बच्चों पर, अब मुझको भी मना रहे हो ॥
पर ये गहने हरगिज़ भी मैं– तुम्हें न वापिस करने दूँगी ।
हार दिया है मुझे भेंट में, दिल में प्रेम-हार धर लूँगी ॥"
'हार मिला मेरी सेवा से'– गाँधी प्रेम-भाव से बोले ।
'मैं तुम दोनों एक प्राण हैं'– 'बा' की वाणी ने रस घोले ॥
"जिन चरणों ने सेवा की है– मैं उन चरणों की दासी हूँ ।
तुम जिस पथ के पथिक बने हो– मैं उस पथ की अभ्यासी हूँ ॥"







जननायक

फिर गाँधी जी ने समझाया– हार हार के लिये नहीं है।
तुम हो जहाँ, वहीं हैं गहने, कमी प्यार के लिये नहीं है॥
नारी को समझाना ही क्या, अगर प्यार से समझाओ तुम।
दो धारों के बीच खड़ी 'बा'– बोली, 'वापिस कर आओ तुम॥'



सच्चा ट्रस्ट बना गाँधी ने– वह सारा धन जमा कर दिया।
बातों के गहने पहिना कर– भोली 'बा' का पेट भर दिया॥
गाँधी जी यदि भावुकता थे– तो वह कविता बन कर बोली।
गाँधी जी की पग-ध्वनि सुनकर– रुन झुन पीछे पीछे होली॥

गाँधी जी चल पड़े देश को, प्रेम-आँसुओं से आँचल भर।
वायु वेग से चले झूमते– स्वतन्त्रता देवी के पथ पर॥
लौट देश में कुछ दिन तक वे– जाली में से रहे झाँकते।
भारत माता के स्वरूप को– मन की निधि से रहे आँकते॥

'महासभा' के अधिवेशन में– फिर गाँधी कलकत्ते आये।
गंगा जैसे मिले 'गोखले', नेताओं के दर्शन पाये॥
'शेर फिरोज़शाह' से मिल कर– एक नया प्रस्ताव बनाया।
जिसमें 'दक्षिण अफ्रीका' का– वह सारा खाका दिखलाया॥

महासभा काँग्रेस देश में– भूले भारत की लाठी थी।
जिस पर राजनीति अङ्कित थी, लिखी भाग्य लिपि की पाटी थी॥
जिसकी जलती हुई ज्योति ने– देशभक्ति का किया प्रकाशन।
वीर 'दीनशा एदलजी' से– शोभित था प्रधान का आसन॥

'महासभा काँग्रेस-सूर्य का– फैला था प्रकाश भूतल पर।
स्वतन्त्रता का दीपक देखो– जिसकी किरणों पर चल चल कर॥
'कलकत्ते' के अधिवेशन में– रंग बिरंगी चहल पहल थी।
देशभक्ति की मधुर वायु में– जग की मंज़िल बहुत सहल थी॥

अब प्रबन्ध भी देखें आओ, देखो खड़े स्वयम्सेवक हैं।
मातृभूमि को गर्व इन्हों पर, मातृभूमि पर इनके हक़ हैं॥
लेकिन सब कर्त्तव्य भूल कर– बातें बहुत घड़ा करते हैं।
काम न करते, नाम चाहते, भूले भक्त लड़ा करते हैं॥





वह उससे कहता, 'तू करले'– वह कहता 'गोविन्द करेगा।'
कुर्सी उसके लिये सजी है– जो कि हाथ पर हाथ धरेगा॥
गाँधी जी ने देख गंदगी झाड़ू देकर करी सफ़ाई।
सारा काम किया भंगी का, मैली पगडण्डी धुलवाई॥

जहाँ कहीं भी मैला देखा– झाड़ू देकर साफ कर दिया।
बने 'कारकुन' 'बेरा' बन कर– सेवा से भण्डार भर दिया॥
सेवा कार्य देख गाँधी के– वे सारे सेवक शर्माये।
गाँधी जी की चरण-चाप सुन– सेवा-पथ पर आगे आये॥

मनमोहन ने सेवायें कीं, पर मन में अभिमान न आया।
सेवा कर निष्काम भाव से– गाँधी जी ने दीप जलाया॥
सूरज की स्वर्णिम किरणों ने– गाँधी जी के शब्द लुटाये।
सेवाओं का स्नेह डालकर– घर घर में दीपक जलवाये॥

थोड़े दिन में महासभा के– सारे यन्त्र तन्त्र पहिचाने।
अगुआओं से भेंट हो गई, नेताओं के कहने माने॥
महासभा का भव्य दृश्य था, बड़े बड़े विद्वान वहाँ थे।
वहाँ कमी कैसे रह जाती, गाँधी जी के चरण जहाँ थे॥

सुन प्रधान का भाषण श्रोता– 'वाह! वाह!' करते जाते थे।
श्रद्धा से सर हिला हिला कर– नेताओं के गुण गाते थे॥
वायुयान की गति विधि से अब– सब प्रस्ताव पढ़े जाते थे।
भारत-भाग्य विधाता नेता– कार्य शान से निमटाते थे॥

गाँधी के मन में हलचल थी– शायद वह प्रस्ताव न आये॥
पास 'गोखले' के जा पहुँचे, गंगाजल पर फूल चढ़ाये॥
धीरे से बोले गाँधी जी– 'मेरी बात भूल मत जाना।'
'वह प्रस्ताव ध्यान है मेरे'– गंगाजल का छिड़ा तराना॥

"जल्दी देख रहे हो, पर मैं– गाँधी! तुम्हें न भूल सकूँगा।
मन-मोहन के बिना अकेला– कभी न झूला झूल सकूँगा॥"
इतने में, 'कुछ और नहीं क्या?' शेर 'फ़िरोज़शाह' यह बोले।
कहा 'गोखले' ने सहसा यह– 'बैठे हैं गाँधी जी भोले॥







जनायक

जो मेरे गाँधी ने रक्खा– वह प्रस्ताव अभी बाकी है।
'दक्षिण अफ्रीका' की हालत– गाँधी-वाणी से झाँकी है॥'
'वह प्रस्ताव जँचा भी तुमको?' 'बिल्कुल ठीक', 'गोखले' बोले।
गाँधी! पढ़ कर उसे सुनाओ, वीर 'गोखले' ने पर खोले॥



कम्पित वाणी से गाँधी ने– अपना वह प्रस्ताव सुनाया।
कच्चा चिट्ठा खोल धर दिया, 'अफ्रीका' का दृश्य दिखाया॥
गंगाजल में जलतरंग से– वीर 'गोखले' चढ़े मंच पर।
गाँधी के स्वर में सुर घोला, निर्विरोध प्रस्ताव दिया कर॥

वीर गोखले ने गाँधी को– अपना प्यारा अनुज बनाया।
थपक थपक कर पीठ प्यार से– गाँधी का उत्साह बढ़ाया॥
"कलकत्ते" की गली गली में– गाँधी जी ने गति विधि आँकी।
सत्यम्, शिवम् छिपे बैठे थे, पश्चिम की सुन्दरता झाँकी॥

भारत माता की छाती पर– नाच गुलामी का होता था।
गोरों के चरणों के नीचे– पाठ गुलामी का होता था॥
बड़े महाराजा राजा सब– गोरों को सलाम करते थे।
तलवारों के धनी विजेता– गोरी चमड़ी से डरते थे॥

'कर्ज़न' का दर्बार लगा था, सज धज कर आये गुलाम सब।
वेश खानसामा जैसा था, पराधीन थी रजपूती अब॥
गाँधी जी ने कहा उन्हों से– छोड़ दिया क्यों अपना बाना?
वस्त्र गुलामी के क्यों पहिने? रूपान्तर कर लिया जनाना॥

बिजली सी तलवार तुम्हारी– क्यों न टूट कर गिरी जवानो!
दीपशिखा धिक्कार रही है, जले न दीपक पर परवानो!!
'पानीपत' 'चित्तौड़ दुर्ग' के– खँडहर तक धिक्कार रहे हैं।
जौहर की जलती ज्वाला के– कितने आँसू आज बहे हैं॥

शर्मा कर राजे यह बोले– हाथ सलामी ने जकड़े हैं।
अंग्रेज़ों के हाथ पैर हम, पैर गुलामी ने पकड़े हैं॥
गोरों को सलाम करना है– इसीलिये यह वेश सजाया।
हीरों के आभरण पहिनकर– हमने नारी को शर्माया॥





लटक रही तलवार कमर में, किन्तु ग़ुलामी की दासी है।
गोरों के आगे झुकने की- अब रजपूती अभ्यासी है॥
धन, सत्ता, यश, मनुष्यत्व से- सारे पाप करा लेते हैं।
यश नर की अन्तिम दुर्बलता, ज्ञानी इसे त्याग देते हैं॥

'कालीचरण बनर्जी' से मिल- काली के मन्दिर में आये।
'जय काली कलकत्ते वाली!' भक्तों के ये रव भर्राये॥
दर्वाज़े पर भिखमंगे थे, भीड़ लगी थी जेबकटों की।
हट्टे कट्टे खड़े भिखारी- देख रहे थे लहर लटों की॥

भीख माँगते शर्म न आती, हट्टे कट्टे बने भिखारी।
भीख माँगना महापाप है, बाबा! शिक्षा सुनो हमारी॥
जिस जिह्वा से भिक्षा माँगें- वह जिह्वा कट कर गिर जाये।
देने वाले राम खड़े हैं, अन्धे ने कब दर्शन पाये?

फिर गाँधी जी ने मन्दिर में- बलि के बकरे कटते देखे।
बहती देखी नदी लहू की, माँस वहाँ पर बटते देखे॥
जीभ निकाले कालीमाई- ताजा खून पिये जाती थी।
बाल बिखेरे फाड़ फाड़ मुँह- बकरे भेंट लिये जाती थी॥
यह वीभत्स दृश्य गाँधी जी- एक निमिष भी देख न पाये।
किसके दर्शन? किसकी पूजा? गाँधी उलटे पैरों आये॥
मछली से तड़पे गाँधी जी, निकल पड़े आँसू आँखों से।
आँखें नीची हुईं शर्म से, चिपक गये पत्थर पाँखों से॥

अपने बंगाली मित्रों से- गाँधी जी ने कही कहानी।
जिनके मुँह को खून लग गया- उन पर कौन चढ़ाये पानी?
बकरे के प्राणों की कीमत- नर-प्राणों से न्यून नहीं है।
जड़ चेतन में व्यापक ईश्वर- देता किसको चून नहीं है॥

फिर बकरों की हत्या करके- पापी पेट पालना कैसा?
अगर कसाई ही बनना है- तो बन 'सदन कसाई' जैसा॥
गाँधी जी ने सोचा मन में- शुद्धि त्याग की रटन लगाऊँ।
पर ऐसा लगता है मन्दिर- इसी देह में शुद्ध न पाऊँ॥







जननायक



शुद्धि शुद्धि रटते रटते ही- मुझको देह छोड़नी होगी।
ईश्वर के निर्मल चरणों से- मन की कड़ी जोड़नी होगी॥
वे तेजस्वी पुरुष जन्म लें- वे तेजस्वी सती यहाँ हों।
मानव बचे महापातक से, सुख से गाते जीव जहाँ हों॥

ईश्वर से विनती कर बोले- अपने मन्दिर शुद्ध करो तुम।
भारत को भगवान बनादो! पैदा फिर से 'बुद्ध' करो तुम॥
प्रतिध्वनि में कण कण यह बोला- तुम ही तो भगवान! खड़े हो।
भक्त तुम्हें पहिचान चुके हैं, भक्तों से भगवान! बड़े हो॥

बंगाली साहित्य देखकर- सब धर्मों की गतियाँ आँकीं।
आँका 'ब्रह्म समाज' हृदय में, बंगाली तस्वीरें झाँकीं॥
सत्य 'विवेकानन्द' शान्त के- फिर वे दर्शन करने आये।
'वेलर मठ' तक पैदल चलकर- निराकार के दर्शन पाये॥

उस एकान्त भव्य आसन पर- मन की शान्ति नृत्य करती है।
रास रच रही है चंचल गति, सत् से सजी हुई धरती है॥
कल कल छल छल उछल उछल कर- निर्मल मानस-जल बहता है।
हीरों सी उज्ज्वल लहरों पर- चाँद मधुर कविता कहता है॥

किन्तु 'विवेकानन्द' उस समय- आसन पर साकार नहीं थे।
अन्य कहीं पर थे स्वामी जी, लेकिन शान्त विचार वहीं थे॥
चौरंगी के एक महल में- 'निवेदिता' के घर पर आये।
रूप तेज के दर्शन करके- मनहर मन हो मन शर्माये॥

हिन्दू धर्म और भावों की- रूप-राशि या चित्र-कला थी।
गाँधी जी के अन्तराल में- वीणा-भणित पवित्र कला थी॥
बैठ गये 'बंगाल'-हृदय में, परिचित मित्र घनिष्ट बन गये।
सन्त 'गोखले' की छाया में- सर पर पुष्प-वितान तन गये॥

'ब्रह्मदेश' भी गये, वहाँ पर- मक्खी-मार 'फुंगिये' देखे।
'पेगोड़े' के दर्शन करके- छोड़ दिये सब दूर परेखे॥
मन्द मन्द बत्तियाँ मोम की- मन्दिर में झिलमिल जलतीं थीं।
सजी व्योम की दीपमालिका, मन्द मन्द रातें चलतीं थीं॥



किन्तु गर्भ-गृह में चूहे थे, 'दयानन्द' की याद आ गई।
पुरुषों की मन्दता वहाँ थी, महिलाओं की प्रगति भा गई॥
'ब्रह्मदेश' के दर्शन करके- ज्ञान 'गोखले' के घर आये।
मानो चाँद चकोर मिल गये, मधुबन में मनमोर नचाये॥

ज्ञान-सागर 'गोखले' की-
प्रेम-यमुना में नहाये।
विश्व की यश-वाटिका में-
फूल फल से लहलहाये॥
'गोखले' आकाश-गंगा,
चाँद से विकसित कमल ये।
हंस मोती चुग रहा है,
उमड़ते मानस धवल ये॥



गीत 'गोखले' गाँधी जी से- कुछ भी गुप्त नहीं रखते थे।
देशभक्ति के लिये कभी भी- मानस सुप्त नहीं रखते थे॥
जो भी सज्जन मिलने जाते- गाँधी से परिचय करवाते।
अपने साथ घूमने उनको- घोड़ागाड़ी में ले जाते॥

मिले 'राय' से, जो कि त्याग वह- मानवता की महामूर्ति थे।
निर्धन की खाली झोली में- 'राय'-राशि श्रद्धेय पूर्ति थे॥
रुपया मिला आठ सौ मासिक, किन्तु लोक-सेवा में देते।
अपने लिये आठ सौ में से- नोट चार दस दस के लेते॥

जहाँ-'राय' से दानी देखे- वहाँ कृपण भी शोषण करते।
गद्‌गद् हृदय 'प्रफुल्ल राय' पर- हम दो फूल प्रेम से धरते॥
गाँधी और गोखले धन की- भरत राम जैसी जोड़ी है।
ज्ञान गोखले की गुण गाथा- जितनी भी गालूँ थोड़ी है॥

शुद्ध देश-सेवा में तत्पर, क्षण भी व्यर्थ नहीं खोते थे।
प्रहरी खड़े रहे पहरे पर, कभी न जागरूक सोते थे॥
पराधीनता चुभती प्रति क्षण, दम्भ असत्य नहीं भाते थे।
और देश की निर्धनता में- तन मन धन भरते जाते थे॥





देशभक्ति को छोड़ कहीं भी– उनका हृदय नहीं लगता था।
देशभक्ति के आगे उनको– कोई काम नहीं ठगता था॥
'अपने हित के लिये करो कुछ', जब भी उनसे कहता कोई।
'देशभक्ति में ही मेरा हित, भारत की स्वतन्त्रता खोई॥
मुझे और कुछ नहीं चाहिये– भारत की स्वतन्त्रता लूँगा।
तब ही खुशी मनाऊँगा मैं– जब भारत स्वतन्त्र कर दूँगा॥'
बात बात में देशभक्त वे– वीर 'रानडे' के गुण गाते।
बात बात में उदाहरण दे– अपना पूजा भाव दिखाते॥

धन्य! धन्य!! गोखले जिन्हों की– देशभक्ति की विजय आज है।
महाकाव्य के अमर भाल पर– आज उन्हीं का धरा ताज है॥
देशभक्ति वह मानवता के– ये हैं रत्न, प्रणाम करो सब।
बोलो ज्ञान गोखले की जय, चुग चुग सुमन चढ़ा जाओ सब॥
देशभक्ति वरदान कि जिससे– इसी लोक में स्वर्ग मिला है।
देशभक्ति वह बल है जिससे– अन्यायी का राज्य हिला है॥
कुम्भकार! जब मर जाऊँ मैं– मेरी राख बहा मत देना।
चुग चुग फूल सजा थाली में, मिट्टी मुट्ठी में भर लेना॥
देशभक्त की यादगार पर– फूल चढ़ा चन्दन मल देना।
अर्घ्य चढ़ाने आया हूँ मैं, सागर में दृग-जल भर लेना॥
देशभक्त की ही समाधि पर– मैं दीपक बन कर जल जाऊँ।
देशभक्त की यादगार पर– मैं जीवन भर गीत सुनाऊँ॥

देशभक्ति-रस पी गंगा में, स्नेह– दीप धर लिया हृदय में।
बाद मिलन के विरह-व्यथा भी– विदा-वेदना भरी प्रणय में॥
सच्चे मित्र 'गोखले' से जब– गाँधी विदा माँगने आये।
विरह सहन कब हुआ किसी से महापुरुष आँखें भर लाये॥
तन से दूर दूर, पर मन से– प्रेम दूर कब हुआ बताओ?
आँखें खोलो, सूर्य सामने, मदमाते सरोज! मुस्काओ॥
यह सम्बन्ध अनन्त, इसे क्या– दूरी कभी मिटा पायेगी?
अन्तर्वासी अन्तर में है, मन की लगन ढूँढ लायेगी॥





प्रेम-मिलन के बाद गोखले- उनके साथ रेल पर आये।
गाँधी विदा हुए गाड़ी में, मित्रों ने मोती बरसाये॥
चलो! तृतीय कक्ष में चलकर- महापुरुष के दर्शन करलें।
चरण-धूलि मल कर मस्तक पर, आज हृदय परिवर्त्तन करलें॥

कम्बल, कोट, तौलिया, लोटा, कुर्ता, धोती, बेग लिये हैं।
दर्शन करलो महापुरुष के, मृत्युञ्जय अमरत्व पिये हैं॥
ये जीवन की रेल खींचकर- मुक्ति द्वार तक ले जाते हैं।
ये हैं हंस, दूध पानी को- अलग अलग कर दिखलाते हैं॥

रेलों की दुर्दशा देखते- 'वाराणसी' किनारे पहुँचे।
कल्याणी 'काशी' में मानो- दुनिया के दृग-तारे पहुँचे॥
गंगा-तट पर खड़े हो गये, कल कल करतीं लहरें आईं।
गा गा स्वागत-गीत प्रीति के, हीरक-मालायें पहनाईं॥

कहीं युवतियाँ जल-क्रीड़ा में- अपनी व्रीड़ा भूल रहीं थीं।
कहीं हिंडोलों पर लहरों के- मस्त नारियाँ झूल रहीं थीं॥
कहीं रूप में मदमाती वे- गोल बाँध कर नहा रहीं थीं।
अपने यौवन की गंगा में- भोला सा मन बहा रहीं थीं॥

वे कपोल थे या कि गुलाबी- फूल झूलते थे लहरों पर।
या फूलों की दृष्टि गड़ी थी, उनके मुस्काते अधरों पर॥
यौवन के उभार में उभरी- शिशु गेंदों से खेल रहीं थीं।
अपने अङ्गों की गंगा में- मन को खींच धकेल रहीं थीं॥

सुन्दरता को सजा रहे थे- लहरों की जाली के अम्बर।
वदन स्वर्ण सा दमक रहा था- गंगा की लहरों के अन्दर॥
कितनी ही पापी आँखें आ- सुन्दरता नंगी करतीं थीं।
किन्तु किसी के मुँह से वाणी- झरनों सी झर झर झरतीं थीं॥

सुन्दरता को देखो, लेकिन- उस पर पाप-दृष्टि मत डालो!
मूल्य आँक कर पूजा कर लो, कलाकार का मूल्य चुका लो!!
तट पर खड़े हुए मनमोहन- दृश्य देख दर्शन करते थे।
भावों में गोते खाते थे, आँखों में अम्बुधि भरते थे॥









बोल उठा मँझधार उन्हों से– मुझे किनारे तक ले चलना।
बोल उठीं नौकायें उनसे– माँझी! मानस-मीन न छलना॥
आलिंगन कर लहरें बोलीं– हमें छोड़ कर चले न जाना।
चरण चूम कर तट यह बोला– मुक्त! मुझे भी मुक्ति दिलाना॥



फिर 'काशी' में गाँधी जी ने– रोदन देखा विधवाओं का।
मन से चीख निकल कर बोली– हाय! कौन इन अबलाओं का?
देखे बड़े पेट पंडों के, देखे बगुले भक्त बोलते।
देखे भिखमंगे मन्दिर में, आस पास बदमाश डोलते॥

अगणित वारमुखी 'काशी' में– यौवन से इङ्गित करतीं थीं।
तीर्थ-क्षेत्र था, लेकिन उससे– हृदय-साधनायें डरतीं थीं॥
कैसा ईश्वर-भजन? वहाँ तो– यौवन का बाज़ार लगा है।
कैसी पूजा पाठ? वहाँ तो– पंडों का दर्बार लगा है॥

जिसको ईश्वर पर शंका हो– वह इस तीर्थ-क्षेत्र को जाये।
कर्मों से ईश्वर मिलते हैं, जिसने ढूँढे उसने पाये॥
मोटे पेटों के पंडों ने– मन्दिर की मन-मूर्ति जकड़ ली।
'काशी' छोड़ चल दिये गाँधी, "राजकोट" की राह पकड़ ली॥

मिले 'माव जी दवे' वहाँ पर, मिले 'भरत' से भैया प्यारे।
मन-मोहन ने बड़े प्यार से– नयन-नीर से पाँव पखारे॥
वहाँ बहुत से मिले मुकदमे, सच्चाई से गाँधी जीते।
वे क्या कभी हार सकते हैं– जो नर राम नाम-रस पीते॥

वहाँ प्लेग के कीड़ों जैसे– गोरे राजा उछल रहे थे।
इस ज़हरीले महारोग को– प्रभु "धन्वन्तरि" निगल रहे थे॥
अपने अन्तर की आँखों से– भारत की दुर्दशा निहारो!
क्यों झूठे टुकड़े खाते हो, भारत की आँखों के तारो!

तुम निद्रा में स्वप्न देखते, अंग्रेज़ों ने रत्न चुराया।
सत्य स्वरूप निडर गाँधी ने– नीर क्षीर का ज्ञान कराया॥
हाथी से अंग्रेज़ भला कब– चींटी को पहिचान सके हैं।
चींटी में कितनी ताक़त है– गाँधी जी यह जान सके हैं॥







उलझी सी उलझन सुलझाते– गाँधी जी 'बम्बई' आ गये।
जग के सूरज पर छाने को- भूरे भूरे भूत छा गये॥
ज्ञान 'गोखले' की इच्छा थी– गाँधी जी भारत में ठहरें।
स्वतन्त्रता के सिंहासन पर– गाँधी विजय ध्वजा से लहरें॥

'महासभा' में गाँधी जी की– कीर्ति चाँद सूरज सी चमके।
जीवन की जागरण-ज्योति में– दृग-तारे नीलम से दमके॥
सागर-तट पर इन्द्रपुरी से– वे "बम्बई" शहर में ठहरे।
याद मुझे 'गिरगाँव' मुहल्ला– जहाँ लहर पर हिमगिरि लहरे॥



घर में सुख के रास रचाती– हँस मुखी सी 'बा' गाती थी।
शिक्षा देती थी बच्चों को, बच्चों से मन बहलाती थी॥
गाँधी-मानसरोवर में "बा"– मधुर मराली सी हँसमुख थी।
पीड़ा से पिघले पावस सी– गाँधी के जीवन में सुख थी॥

दम्पति के दाम्पत्य कला के– चित्र खींचने लगा चितेरा।
आँगन के 'मणिलाल' फूल को– बड़े तेज ज्वर ने आ घेरा॥
कहा डाक्टरों ने– 'बच्चे को– मुर्गी का शोरबा पिलाओ।
दवा नहीं कुछ असर करेगी, अण्डे, मुर्गी, माँस खिलाओ॥'

गाँधी जी बोले डॉक्टर से– "माँस न खाना परम धर्म है।
क्या मानव भी पशु बन जाता, यह मनुष्य का दैत्य-कर्म है॥"
फिर बालक से बोले बापू– "बेटे! अण्डे खाओगे क्या?"
बोल उठा बालक बापू से– "अपना धर्म भुलाओगे क्या?

ईश्वर सबका भला करेगा, मेरी करो चिकित्सा जल से।
जीवन कैसे मिल सकता है– प्राणी की हत्या के फल से?"
बढ़ता बढ़ता ज्वर तेजी से– चार डिग्रियों तक चढ़ आया।
'बा' घबराई, लेकिन मेरा बापू– कभी नहीं घबराया॥

ईश्वर की यह हुई प्रेरणा– पथ से कभी न विचलित होना।
कोशिश करना धर्म हमारा, धर्म नहीं है रह रह रोना॥
गाढ़े की धोती गाँधी जी– पानी में तर कर ले आये।
उसमें बच्चे को लपेट कर– ऊपर कम्बल खेस उढ़ाये॥





बदन तप रहा था सूरज सा, तन से लपटें निकल रहीं थीं।
ऐसा कोई रोग न जिसकी- संजीवन बूँटियाँ नहीं थीं॥
बालक 'बा' को सौंप थके से- गाँधी टहले चहल पहल में।
सड़कों पर मज़दूर पड़े हैं- रँगरलियाँ मन रहीं महल में॥



ये सब दृश्य देखते गाँधी- 'चौपाटी' की तरफ आगये।
सौरभ ने समीर बरसाया, थके बटोही शान्ति पागये॥
सागर-तट के शान्त निलय में- मुँह से 'राम ! राम !' गाते थे।
अपनी पूजा के प्रसाद से- गाँधी भक्ति-सुधा पाते थे॥

आ पहुँचे 'धन्वन्तरि' घर पर, सुधा पिला लौटे बालक को।
किसी बात की कमी नहीं है, भक्ति-सुधा आज्ञा-पालक को॥
घर की ओर चल पड़े गाँधी, दिल धक धक करता जाता था।
और उधर घर पर मन का मणि- 'बापू ! बापू !' चिल्लाता था॥

'बापू आये ! बापू आये !!' बालक अपनी माँ से बोला।
'हाँ भाई ! आ गया, आ गया !' गाँधी-वाणी ने मधु घोला॥
बोला बालक- "बापू ! बापू !! मैं गर्मी में मरा जा रहा।
वर्षा सा आ रहा पसीना, सारा बिस्तर भरा जा रहा॥"

गाँधी जी ने देखा 'मणि' को, अब बुख़ार का नाम नहीं था।
माथे पर मोती की बूँदें, ज्वर का नाम निशान नहीं था॥
जिनको ईश्वर में श्रद्धा है- ईश्वर उनको नहीं भूलते।
मैंने अनुभव में पाया है- भक्त हिँडोले चढ़े झूलते॥

नैतिकता शिव और सत्य में- मेरे मोहन झूल रहे हैं।
जग के झूठे इन्द्रजाल में- हम ईश्वर को भूल रहे हैं॥
वैसे ही बानक बन जाते- जैसे नर नारायण चाहें।
जिसको ईश्वर रखने वाला- उसके लिये खुली हैं राहें॥

कण कण के अन्तर में बस कर- राम ! राम ! गाऊँ मैं।
राम ! भक्ति दो, पृथ्वी तल को- स्वर्ग बना जाऊँ मैं॥
राम ! तुम्हारा बनूँ पुजारी, झूठे झगड़े छोड़ूँ।
जन्म मरण से छूट राम ! मैं, जग के बन्धन तोड़ूँ॥





मानव में मानवता देखूँ, नयन लगें मुस्काने।
अधरों से बरसें सावन से- मुक्ति-मार्ग के गाने॥
व्यष्टि सृष्टि सब व्याप्त राम में, राम! तुम्हें पाऊँ मैं।
कण कण के अन्तर में बसकर- राम! राम! गाऊँ मैं॥

मेरे राम बहुत अच्छे हैं।

याद जब कभी भी करता हूँ-
दर्शन दे जाया करते हैं।
बीच भँवर में पड़ी नाव को-
तट तक खे जाया करते हैं॥
ले जाया करते हैं मेरे-
पापों का बोझा ढो ढो कर।
अन्तर-दीप जला जाते हैं-
मेरा अन्तर-तम धोधो कर॥
मेरे राम बहुत अच्छे हैं।



समय चल रहा अपनी गति से, यात्री अपनी गति से चलता।
दीपक अभी यहाँ जलता है, दीपक अभी वहाँ पर जलता॥
धीरे धीरे क़दम बढ़ाते, गाँधी जी 'सान्ताक्रुज' आये।
पल्लव-पंखा झला पवन ने, फूलों ने सौरभ बरसाये॥

'सान्ताक्रुज' के मन मन्दिर में-- सत्य अहिंसा के दर्शन हैं।
छोटा सा जीवन है, लेकिन- जाने कितने परिवर्त्तन हैं॥
कुछ सोचो पर कुछ हो जाता, नारायण की अद्भुत लीला।
परिवर्त्तन की रँगरलियों में- नाच रहा यह विश्व रँगीला॥

सहसा तार मिला गाँधी को- 'फिर 'दक्षिण अफ्रिका' पधारो!'
कवियो! अपनी काव्य-कला से- गाँधी की आरती उतारो॥
जमा जमाया काम छोड़ कर, फिर 'दक्षिण अफ्रिका' सिधारे।
हर पग ध्वनि पर काव्य बन गये- काव्य-गगन के शान्त सितारे॥





जननायक



उस कर्त्तव्य निष्ठ को कोई- पत्थर पथ से हटा न पाया।
जिसको जग से मोह नहीं है- उसने जग में दीप जलाया॥
पथ की चट्टानों ने रोका, लेकिन बढ़ता रहा पथिक वह।
जिसे क़ैद कर लिया मोह ने- वह पिसता रहता पीछे रह॥

जो जीवन में उन्नति चाहे- पहले मोह छोड़ दे वह नर।
घर की माया मोह न घेरे- बढ़ा चले अपनी मंज़िल पर॥
यही परम पुरुषार्थ मनुज का- नारायण के दर्शन करले।
श्रद्धा से पाये ईश्वर को- जीवन सार्थक कर रस भरले॥

गाँधी घर का मोह छोड़ कर- देश विदेश घूमते डोले।
हर मंज़िल पर सम्बल से वे- मधुर मौन भाषा में बोले॥
मंज़िल मंज़िल चलते चलते- भाग्य विधाता 'डरबन' आये।
चातक से प्यासे नयनों ने- मनमोहन के दर्शन पाये॥

खिले पुनः अरविन्द वृन्द अलि, दिन निकला, सूरज मुस्काये।
"डरबन" वालों ने श्रद्धा से- गाँधी जी पर सुमन चढ़ाये॥
"चेम्बरलेन" चलन से मिलने- गाँधी जी तत्काल चल दिये।
गाँधी जी ने आम लगाये, पर उसने विष युक्त फल दिये॥

बोला, "गोरों को राजी रख- तुम को यहाँ चाहिये रहना।
उन की पूजा करो प्रेम से, पालन करो उन्हों का कहना॥
उपनिवेश पर हम गोरों की- सत्ता नाम मात्र की ही है।
अंग्रेज़ों से प्रेम करो तुम, कीमत प्रेम-पात्र की ही है॥"

इस उत्तर से प्रतिनिधियों पर- बरसा ठंढा ठंढा पानी।
गाँधी की वाणी से गूँजी- जोश बढ़ाती हुई जवानी॥
जिसकी लाठी भैंस उसी की, मुर्दों का संसार नहीं है।
जो न लाठियाँ सहन कर सकें- उन का कुछ अधिकार नहीं है॥

अभी अहिंसा के मन्दिर में- रमने वाले वीर नहीं हैं।
अभी लाठियाँ सहने वाले- राम भक्त रणधीर नहीं हैं॥
यहाँ 'एशिया' वालों का अब- गोरों सा सत्कार नहीं है।
यहाँ उन्हों को स्वतन्त्रता से- रहने का अधिकार नहीं है॥





गाँधी ऐसे पथिक न थे जो– थक कर मंज़िल से हट जायें।
वे वे नाविक थे जो नौका– बीच भँवर से पार लगायें॥
"चेम्बरलेन" समीर वेग से– फिर जब 'ट्रान्सवाल' में आये।
उन से मिलने को गाँधी ने– पुनः बुद्धि से दाँव लगाये॥
किसी तरह 'परवाना' लेकर– 'ट्रान्सवाल' तो पहुँच गये पर–
विधि विधान आये दर पर से– गोरों के दुतकारे सह कर॥
सत्ता में गर्वीले गोरे– गाँधी जी से घबराते थे।
सत्य अहिंसा के प्रतीक से– सभी भेड़िये थर्राते थे॥
अतः रचे षड्यन्त्र बहुत से– गाँधी जी का 'पत्ता काटा'।
पर उस पत्ते से शरीर ने– जीवन से सागर को पाटा॥
फीका आभा रंजित प्रिय मुँह– बोने लगा राख में सोना।
गाँधी-वाणी की वर्षा से– हरा हो गया कोना कोना॥
अग्नि-पुंज पर जिसका जीवन– सावन बन कर बरस न जाये।
वह आँखों के आँसू चुग चुग– कैसे फिर मोती बरसाये?
उलझे प्रश्न, बने वे सुलझन, विष की घूँट पी गये गट गट।
विष भी जीवन बन जाता है– जिसको राम नाम की हो रट॥



राम-नाम सब लिखो पढ़ो, यह सत्य नाम है।
शान्ति यही, सुख यही, और यह सुधाधाम है॥
रटो राम का नाम, राम का नाम रटो सब।
बीत रही है आयु, रटोगे 'राम! राम!' कब?
तन की पूजा छोड़ो, जोड़ो प्रभु से नाता।
नश्वर यह संसार, एक दिन नर मर जाता॥
राम-नाम में रमो, नाम यह सुख विराम है।
राम-नाम सब लिखो पढ़ो, यह सत्य नाम है॥

कब कहाँ कैसे मिलोगे राम!
रात दिन रटता तुम्हारा नाम॥
मैं घिसूँ चन्दन, लगाओ नाथ!
राम! तुम मेरा निभाओ साथ॥







अनायक

डूबता हूँ, तुम पकड़ लो हाथ।
हृदय-बन्धन से जकड़ लो नाथ!
किस तरह मन से सिलोगे राम!
कब कहाँ कैसे मिलोगे राम!



'अ आ इ ई' से फिर गाँधी ने– उन भूलों को सबक़ पढ़ाया।
मानव-धर्म यत्न करना है, फल के लिये व्यर्थ ललचाया॥
भारतवासी श्वान नहीं हैं– जो टुकड़े खा पूँछ हिलायें।
ये वे जलते हुए दीप हैं– जो दुनिया की ज्योति दिखायें॥

साहस छोड़ थक गये साथी, लेकिन शाश्वत हृदय न हारा।
गाँधी की पग ध्वनि के पीछे– जय जय बोल चला जग सारा॥
त्याग भाव की अमृत मूर्ति ने– जब "रत्ना" सी रसना खोली।
मुक्ति-मार्ग पर अमर ज्योति सी– दुनिया पीछे पीछे होली॥

आत्म निरीक्षण करने वाले– गाँधी जी की जय जय जय हो।
कोटि कोटि तुमको प्रणाम है, तुम हम कोटि कोटि की लय हो॥
अरे अभंगुर! अमर देवता! ओ भारत माँ के ध्रुव तारे!
कवि के अक्षर अक्षर में आ! ढूँढ रहे हैं नयन बिचारे॥



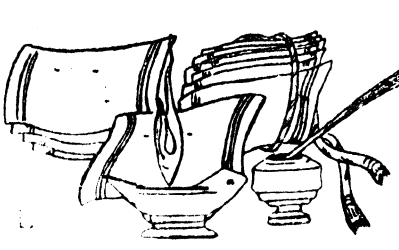
विभा लिये विराम– दीप आरती उतारती।
गिरी पड़ी सँवार घास घोंसला सुधारती॥
प्रभात ज्योति को धरा सुहाग ले पुकारती।
विकास राशि को प्रभा प्रकाश से निहारती॥











एकादश सर्ग



रश्मि-रेखा पर पथिक वह- पथ बनाता जा रहा है।
मेघ अञ्जन सा उजाला, बिजलियों में गा रहा है॥
चूम पगडण्डी पगों को, दूब लेकर साथ चलती।
धार गंगा की धरा पर, फोड़ कर पत्थर निकलती॥

चाँदिनी पहिने परी वह, पूजती पग दीप लेकर।
हृदय में हँसियाँ बसी हैं, बिजलियों के हार देकर॥
जल रहा सूरज निरन्तर, दे रहा जग को उजाला।
चल रहा राही अकेला, राह लेकर खड़ी माला॥

सिन्धु के सुन्दर किनारे, कल्पना साकार मेरी।
चाँदना सा आ रहा है, दूर हटती है अँधेरी॥
चाँदिनी पर मेघ मनहर- भ्रमर से मँडरा रहे हैं।
रूप पर मोती गगन से- झूम झुक बरसा रहे हैं॥

तरु हरे हैं चरण-रज पा, भाव में कर्त्तव्य के फल।
मान अनुशासन पथिक का, पंक्ति बाँधे तरु रहे चल॥
गा रहा सौरभ सुमन में, सुन रहे श्रोता विजन में।
पाँव बढ़ते जा रहे हैं, आज कैसी गति पवन में?

व्यापक में तादात्म्य सत्य उस- अक्षय मृत्युञ्जय की जय जय।
अनहद स्वर लहरी सितार में, यत्र तत्र सर्वत्र वही लय॥
संयम् से व्यापक बन उसने- सत्याग्रह का शंख बजाया।
नीलकण्ठ ने कालकूट पी- कलियुग में अमरत्त्व पिलाया॥







जनायक



जिसकी वाणी गीता बन कर– जग में बनी ज्ञान की गंगा।
जिसके ज्ञान और गौरव से– लहरों पर उड़ रहा तिरंगा॥
उसके जीवन का अब अगला– पृष्ठ खोल रस-धार बहाता।
उसकी ज्योति-रश्मियाँ लेकर– नीरज नयनों में मुस्काता॥

गीता-गुण-मर्मज्ञ पुरुष में– गीता का उपदेश भरा है।
जिससे तीनों लोक सुधरते– गीता में वह तथ्य धरा है॥
गीता के अक्षर अक्षर में– मार्ग दिखाने वाली वाणी।
गाँधी के जीवन-सागर में– उमड़ रही कविता कल्याणी॥

गीता-ज्ञान मिला गाँधी को, मोह त्याग, बन गये विश्वविधि।
उसी त्याग से आज मिली है, काव्य-कलामय यह अक्षय निधि॥
जो कुछ भी देखा गाँधी ने– उसमें सारा जग व्यापक है।
विश्व एक में, एक विश्व में, प्राणी ईश्वर का बालक है॥

पर ऐसा वह कौन कि जिसने– जीवन में विष नहीं पिया है?
यह दुःखों की दुनिया, इसमें– मोह-जाल ने दुःख दिया है॥
ऐसा पत्थर कौन कि जिसने– विरह-आग में नीर न डाला?
ऐसा सागर कौन कि जिससे– बुझी विरह की अन्तर-ज्वाला??

पिता सदृश भाई भारत में– गाँधी के वियोग में तड़पे।
पड़े मृत्यु-शैया पर भाई, कृश तन विरह रोग में तड़पे॥
दिया अनुज को तार उन्होंने– तुम से मिलने को व्याकुल हूँ।
पर अब शायद मिल न सकूँगा, खटिया पर बुल्ले का पुल हूँ॥

यदि मुझ से अपराध हुआ कुछ– तो तुम मुझे माफ कर देना।
अपने भाई की समाधि पर– स्नेह भरा दीपक धर देना॥
तार दूसरा पहुँच गया यह– भाई अब न रहे इस जग में।
मन के बुझे दीप जलते हैं– भ्रातृ भाव की जय जगमग में॥

मृत्यु न दया किसी पर करती, बन जाती है बहरी।
छाया देनेवाले तरु पर– छाई है दोपहरी॥
छोड़ गये भैया दुनिया को, मोहन रहे अकेले।
प्रेम नहीं देते भाई सा, दुनिया के ये मेले॥







तार मिला जब गाँधी जी को– टूटे जल के तार दृगों से।
मानो मेघ उदधि बरसाते, जल लेती मरुभूमि मृगों से॥
निकली एक कराह हृदय से, बोले, "कहाँ सिधारे भाई!
कहाँ गया वह अमृत-सरोवर, जिसने यह ज़िन्दगी बनाई?

दुनिया में मेला है, लेकिन– भाई का वह प्यार नहीं है।
महा सिन्धु में तैर रहा मैं, माँ जाई पतवार नहीं है॥
रोते हुए पक्षियो! बोलो– कहाँ गई वह तरु की छाया?
भाई सब कुछ मुझे दे गये, मैं अर्थी तक उठा न पाया॥"

जनता के सेवक को जग में– शूलों पर चलना पड़ता है।
अपने तन का दीप बनाकर– घुल घुल कर जलना पड़ता है॥
चाहे घर में मुर्दा हो पर– छुटे न देशभक्ति की पूजा।
पूजा से प्रसाद मिलता है, करलो महाशक्ति की पूजा॥

त्याग तपस्या को जब समझें– तब ही धर्म समझ में आता।
जब जिज्ञासु आचरण मन में, तब नर नारायण पा जाता॥
बलिवेदी पर गाँधी जी ने– प्रतिपल रक्त-अर्घ्य डाला है।
स्वतन्त्रता के इस पौधे को– बड़ी मुसीबत से पाला है॥

'माँस न खाओ' इस प्रचार में– तन मन धन की आहुति डाली।
एक हज़ार पौंड की थैली– माँग ले गई महिला-जाली॥
वापिस नहीं दिये गाँधी को, गाँधी ने वह कर्ज़ चुकाया।
वह धन एक मवक्किल का था, सब पैसा पैसा भुगताया॥

जो भी रोग हुआ संसृति में– गाँधी ने उपचार किया है।
मिट्टी पानी के इलाज का– सरस तत्त्व तैयार किया है॥
नियम प्रकृति के पालो यदि तुम– कोई रोग नहीं रह सकता।
चाहे भी जितना प्रवाह हो– पर तैराक नहीं बह सकता॥

फल फूलों के पेड़ प्रकृति में, मीठे फल खा अमर बनो तुम।
फलाहार जीवन देता है, रस पी पी कर अजर बनो तुम॥
संयम से आत्मिक बल बढ़ता, और आत्म-बल से जय होती।
जय मानव के लिये मुक्ति है, मुक्ति-सीप से मिलते मोती॥







मधुर मोतियों के मानस में- मोहन को जीवन भरना था।
हर अनीति पर महापुरुष को- शीतल आन्दोलन करना था॥
गाँधी-वाणी धोने निकली- जग में फैली हुई बुराई।
गोरे पंचों के पापों पर- गाँधी ने वाणी बरसाई॥



गाँधी जो कुछ भी करते थे- वह न किसी से कभी छिपाते।
और वकीलों के पेशे से- वे मन ही मन में शर्माते॥
यदि अपराध छिपाने ही में- बुद्धि शक्ति को व्यय कर दें हम।
तब फिर कैसे हटा सकेंगे- पापी कलियुग का काला तम॥

हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, पारसी- गाँधी का घर सब का घर था।
काला हो या गोरा कोई- सब में सम गाँधी हरि हर था॥
सेवा-भाव बहुत था उनमें, इतना जितना लिख न सकूँगा।
उस अगाध जीवन-सागर में- लिखता लिखता दिख न सकूँगा॥

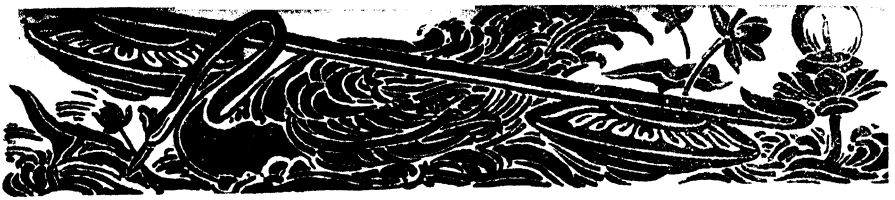
घर आये सेवक तक का भी- आदर से मल मूत्र उठाते।
और प्रिया पत्नी से भी वे- अपने साथ काम करवाते॥
वह भारत की भोली नारी- धोती पाखाने, रोता मन।
गालों पर मोती बरसाती- ले जाती मूतों के बर्तन॥

ले जाती मल मूत्र उठा कर, पर 'बा' की छाती जलती थी।
लाल लाल आँखों से पति को- उलाहना देती चलती थी॥
पर उस प्रेमी निर्मम पति को- 'बा माता' का रोना अखरा।
घर में झगड़ा शुरू हो गया, शान्तिदूत पत्नी पर बिखरा॥

बोला- "देखो, व्यर्थ बखेड़ा- मेरे घर में चल न सकेगा।"
'बा' बोली- "अपना घर रक्खो, अब यह मोम पिँघल न सकेगा॥"
'लो, मैं चली', बात यह सुनकर- गाँधी जी को गुस्सा आया।
'बा माता' का हाथ पकड़ कर- दर्वाज़े तक खींच भगाया॥

आधा द्वार खोल कर बोले- 'अरी! निकल जा मेरे घर से।'
बहा दृगों से गंगा बोली- "नाथ! न दो धक्के इस दर से॥
भारतीय नारी पति का घर- मरने ही पर छोड़ा करती।
डोली पर नाता लाती है, अर्थी पर ही तोड़ा करती॥





तब भी तन का साथ छूटता, मन का साथ बना रहता है।
आँसू बह जाते हैं, लेकिन- प्यार न पानी में बहता है॥
शर्म करो कुछ, विश्व हँसेगा, बोलो! कहाँ चली जाऊँ मैं?
यहाँ नहीं माँ बाप जिन्हों के- घर पर जा टुकड़े खाऊँ मैं॥

जल्दी द्वार बन्द कर लो प्रिय! अन्दर चलो, लजाओ स्वामी!"
नयन झुका गाँधी जी बोले- "आकर मुझे बचाओ स्वामी!"
पत्नी की यह सहनशीलता- गाँधी को अन्तर में लाई।
पति पत्नी का कैसा झगड़ा, शशि पर शुभ्र चाँदिनी छाई॥

यह वह मीठा झगड़ा जिसमें- हृदय पास मिलते जाते हैं।
यह वह प्रेम-अर्चना जिससे- नारायण मिलने आते हैं॥
गाँधी जी की चरण-चाप पर- 'बा' रुन झुन करती चलती थी।
उन के पीछे पीछे पथ पर- शीतल दीपक सी जलती थी॥

अन्तर से जो ध्वनि होती थी- वही प्रेरणा मूर्त्त-रूप थी।
मेरे मोहन की पगडण्डी- मानस का सच्चा स्वरूप थी॥
ईश्वर के स्वरूप का परिचय- शब्द किस तरह से बतलायें?
श्रद्धा से अनुभव होता है, उस अदृष्ट को कहाँ दिखायें?

वह देखो, मानस मानस में- मन-मोहन की वंशी बजती।
हर मनुष्य के अन्तराल में- प्रकृति राम की माला भजती॥
जो भी सेवा करने आये- वे मोहन के हृदय बन गये।
भक्त बने अंग्रेज़ बहुत से, गाँधी मन की विजय बन गये॥

जब भी मैल देखते मोहन- मानस सौ सौ बार छानते।
वेतन भोगी परिचारक को- वे बेटे की तरह मानते॥
"लघु लेखन" के लिये पास में- "मिस डिक" 'स्कॉच कुमारी' आई।
उस पल्लव सी सुकुमारी को- गाँधी जी ने सुता बनाई॥

वह कल्याणी गाँधी जी के- अन्तराल के मधु पर बैठी।
और युगों के बाद आज वह- कवि के मन में घर कर बैठी॥
कलिका सी सुकुमारी 'डिक' का- गाँधी पर विश्वास अटल है।
'मोहनदास करमचँद गाँधी'- पथ पर चलता हुआ अचल है॥







'डिक' ने जीवन-साथी खोजा, कन्यादान दिया गाँधी ने।
अधिकारी को सौंप धरोहर, प्रभु से प्रेम किया गाँधी ने॥
विदा हो गई बेटी घर से, एक दूसरी शिष्या आई।
लघु लेखन के लिये "श्लेशिना"– सुमन बीन अंजलि भर लाई॥



रंग द्वेष से दूर दूर वह– मन के पास खिँची आती थी।
हृदय शुद्ध था, झिझक नहीं थी, गौरव भरे गीत गाती थी॥
त्याग भाव की दिव्य मूर्ति थी, साहस में जय जय जय जय थी।
सुन्दर विमल चाँद गंगा सी, राजपूतनी सी निर्भय थी॥
चाहे क्षत्राणी थक जाये– पर न कभी भी थकती थी वह।
वह दिन रात काम करती थी, पवन-वेग सी इधर उधर बह॥
तन से कोमल कली "श्लेशिना", मन से शेर बबरनी थी वह।
गाँधी की श्रद्धा थी उसमें, पूजा बनी रागिनी बह बह॥
जब आन्दोलन छिड़ा वहाँ पर, गाँधी क़ैद हुए कारा में।
तब 'श्लेशिना' सिंहनी श्रद्धा– आगे तैर चली धारा में॥
आन्दोलन का कार्यभार ले– तरणी चली तीर सी जल में।
मिस श्लेशिना! प्रणाम तुम्हें है, बस कर बसा दिया निर्मल में॥
ज्ञान 'गोखले' की वाणी ने– कल्याणी 'श्लेशिना' सराही।
और अमर कवि की वाणी में– राह दिखाता है वह राही॥
हम जिनकी निन्दा करते हैं– वे देवियाँ पूज्य सबला हैं।
और आज भारत की बहिनें– घूँघट काढ़ बनी अबला हैं॥
वे क्षत्राणी जो कि दुर्ग पर– दीवारें बन खड़ी हुईं थीं।
इन आँखों ने देखा वे ही– हाथ बाँध कर पड़ी हुईं थीं॥
भारत माँ की वीर बेटियो! उल्टा आज प्रवाह बहा है।
बोझ मत बनो, बनो शक्ति तुम, गाँधी तुम्हें पुकार रहा है॥
धन्य! धन्य!! वह अमर पारखी– जिसने परखी है मानवता।
मानवता की दिव्य ज्योति में– मनु सी बदल गई दानवता॥
पत्र "इण्डियन ओपिनियन" में– गाँधी मूर्त्तिमान हो आये।
तन मन धन से पाल पत्र को– भारत माता के गुण गाये॥





पत्र 'इण्डियन ओपिनियन' का– सेवा से करते संचालन।
यदि अखबार निरंकुश हों तो– करते हैं कुरीति का पालन॥
जैसे उल्टे जल-प्रवाह से– लाखों गाँव डूब वह जाते।
ऐसे ही अखबार निरंकुश– मिला दूध में विष फैलाते॥

अगर लेखिनी विष उगलेगी– सरिता की गति जल जायेगी।
अच्छी बुरी वस्तुएँ जग में, अच्छाई शुभ फल पायेगी॥
लिखे पत्र में लेख उन्होंने, जीवन का निचोड़ भर डाला।
अपनी आत्मा को उड़ेल कर– सारे जग में किया उजाला॥

जो भी जहाँ बुराई देखी– गाँधी-वाणी ने धो डाली।
जिससे पाप धुलें दुनिया के– ऐसी गंगा नदी निकाली॥
भारत में समाज-सेवी को– भंगी, ढेड़, मेहतर कहते।
उन्हें अछूत बता ठुकराते, आप बड़े महलों में रहते॥

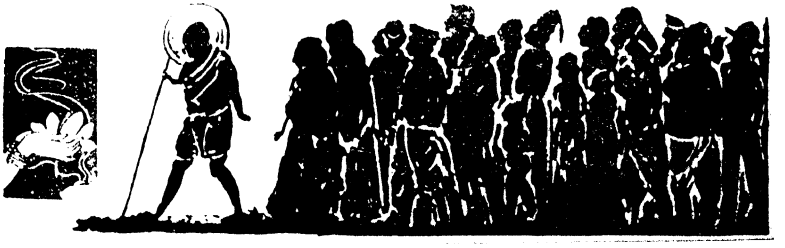
पापों का परिणाम कि हम सब– दक्षिण में भंगी कहलाये।
इसीलिये 'अफ्रिका' देश में– गोरों के दुतकारे खाये॥
याद "कुली लोकेशन" जिसमें– गाँधी ने विष पी, मधु घोला।
जहाँ अछूत बने थे हम सब, आओ, देखें 'भंगी टोला'॥

जहाँ फैल कीटाणु रोग के– भारत माँ को रुला जलाते।
वहाँ पहुँच मेरे मन-मोहन– सीधे पथ पर हमें चलाते॥
गाँधी सेवक साधन बनकर– जननी के उद्धार बन गये।
'काला प्लेग' जला जल बल से– भारत के सत्कार बन गये॥

लगे रोगियों की सेवा में, मिट्टी पानी का बल लेकर।
साथ 'नर्स' ने सेवायें कीं, पर वह सत् सेविका गई मर॥
भली नर्स को प्लेग लग गया, चली गई वह छोड़ कहानी।
दुनिया में दो दिन का मेला, नश्वर दुनिया आनी जानी॥

बड़े भले अंग्रेज बहुत से– साथ साथ सेवा करते थे।
मेरे गाँधी के चरणों में– श्रद्धा से मस्तक धरते थे॥
जहाँ प्लेग के कीड़े देखे– गाँधी इन्जेक्शन से धाये।
रोग न बढ़ने दिया निमिष को, 'लोकेशन' से सभी हटाये॥







जनायक



खाली 'लोकेशन' करवा कर– प्लेग-रोग में आग लगाई।
रोग भरी खाली बस्ती को– म्युनिसपैलिटी ने जलवाई॥
इतने कभी न खिलते देखे– जितने कमल खिले गाँधी से।
पत्र 'क्रिटिक' के उपसम्पादक– 'पोलक' प्राण मिले गाँधी से॥

पुस्तक 'रस्किन'–रचित 'अन्टु-दिस-लास्ट' भेंट में दी पढ़ने को।
इस पुस्तक ने पथ बतलाया– मानव से ऊपर चढ़ने को॥
कवि वह है जो अन्तस्तल की– सुप्त भावना जागृत करदे।
सब का भला भला अपना है– घट में यही सुधा-घट भर दे॥

नाई और वकील एक से, सादा श्रम जीवन प्रभात है।
जो जीवन में जीवन भरदे– बात असल में वही बात है॥
वह पुस्तक क्या जो जीवन में– एक नया निर्माण न करदे।
जो अपने मधु की वर्षा से– मुर्दों में भी प्राण न भरदे॥

इस पुस्तक के सद्प्रभाव से– संस्था बनी 'फ़िनिक्स' वहाँ पर।
वहीं नया निर्माण हो गया– गाँधी के पग गये जहाँ पर॥
इस संस्था में सब सेवक थे, क्षण बेकार न करते थे वे।
अपने अवलम्बन के बल से– जग की पीड़ा हरते थे वे॥

पत्र 'इण्डियन ओपिनियन' में– सारे काम स्वयम् करते थे।
अक्षर जमा, यन्त्र में जुटते, अर्थ सहित लक्षण धरते थे॥
मेरे गाँधी के चरणों में– चेतन क्या, जड़ तलक झुक गये।
प्रातः पत्र निकलना था, पर– चलते चलते यंत्र रुक गये॥

सब कोशिश कर कर हारे पर– यन्त्र न टस से मस कर पाये।
थक कर, स्वेद बिन्दु बरसाते– गाँधी जी के आगे आये॥
गाँधी जी मज़दूर बन गये, हाथों से वे यन्त्र चलाये।
छूते ही वे यन्त्र चल पड़े, थके पथिक सब नाचे गाये॥

जो कि आलसी होकर जग में– खाट तोड़ रोटी पाते हैं।
रोटी नहीं, खून अपना पी, श्रमिकों का आमिष खाते हैं॥
जो तन मन धन से श्रम करते– स्वर्ग उन्हों के लिये हर जगह।
जो कि आलसी, नारकीय वे, खाट तोड़ते रोगी रह रह॥



श्रम को क्या असाध्य है जगमें ? मिट्टी से मोती निकाल ले।
पानी पर पत्थर तैरादे, उँगली पर हिमगिरि उछाल ले ॥
गाँधी के साहस-सरोज पर- 'पोलक' भौंरे से मँडराये।
सत्य साधना के प्रताप से- गोरे चरण कमल में आये ॥

सारी दुनिया ने यह देखा- 'पोलक' गाँधी भाई भाई।
मधुकर मुग्ध हुआ भावों पर, 'पोलक' ने शाश्वत निधि पाई ॥
धनाभाव के कारण 'पोलक'- प्रतिपल विरह व्यथा सहते थे।
प्रेम किसी देवी से था, पर- मन की बात नहीं कहते थे ॥

मनमोहन ने मन की जानी, बोले- "अपना ब्याह करो तुम !
मैं हूँ साथ तुम्हारे 'पोलक' ! किसी बात से नहीं डरो तुम !!
उधर विरह में वह जलती है, इधर विरह में जलते हो तुम।
आँसू बन कर ढल जाते हो, मन ही मन में गलते हो तुम ॥"

उनकी बात मान 'पोलक' ने,- पत्र लिखा अपनी प्यारी को।
दिया ब्याह के लिये निमन्त्रण- उस विलायती सुकुमारी को ॥
विरह-अग्नि पर प्रेम छिड़क कर- गाँधी जी ने ब्याह कराया।
प्रिया और प्रिय गले मिल गये, मनमोहन ने हृदय मिलाया ॥

इसी तरह से 'लेस्टर'- कन्या- बनी 'वेस्ट' की प्रिया ब्याह कर।
प्रेम-मिलन को स्वर्ग बनाया, गाँधी जी ने मधुर चाह भर ॥
छोटी सी बस्ती 'फिनिक्स' में- ये सब साथी साथ बस गये।
पर यात्री का बसना ही क्या, चले कहीं पर कहीं फँस गये ॥

क़दम क़दम पर डगमग पग वे- नयी नयी यात्रा करते थे।
भाव निचोड़ नयन मानस से- अमृत विश्व-घट में भरते थे ॥
अफ्रीकी अंग्रेज़ राज्य ने- "जुलू" निवासी पर कर ठोके।
जो कर लेने आये उनके- पैर 'जुलू' वालों ने रोके ॥

कर वसूल करने जो पहुँचा- वह अंग्रेज़ उन्होंने मारा।
इस पर धधका राज्य क्रोध से, दहक उठा भीषण अङ्गारा ॥
जल कर चढ़े 'जुलू' पर गोरे, धधक धधक कर दिया आक्रमण।
राजभक्त गाँधी जी के भी- उसी ओर चल पड़े सत्-चरण ॥







'सारजेंट मेजर' के पद पर– मेरे गाँधी चले भक्ति से।
जल्दी जल्दी क़दम चल पड़े– गाँधी जी की महाशक्ति से॥
खूनी बलवा हुआ 'जुलू' में, उड़ने लगे मुण्ड अम्बर में।
रुधिर पिपासी महाचण्डिका– भरने लगी खून खप्पर में॥



बढ़ती चली राज्य की सेना, जल पर शान्त सरोज विराजा।
रक्त रँगी धरती के ऊपर– बजा राज्य का विजयी बाजा॥
सावन भादो से गाँधी जी– फिर 'फिनिक्स' आश्रम में आये।
जनता ने जननायक पाकर– गा गा भाव-प्रसून चढ़ाये॥

'बा' ने उनकी हर पग ध्वनि पर– एक नया निर्माण किया घर।
अमर भावनाओं ने गा गा– दीप जलाये जिसके अन्दर॥
बढ़े साधना पथ पर गाँधी, जग में करने लगे तपस्या।
अपने जीवन से सुलझाई– जग की उलझी हुई समस्या॥

ईश्वर में श्रद्धा रख गाँधी– दृढ़ निश्चय पर अटल हो गये।
सत्य अहिंसा और प्रेम के– मन में मोती कमल बो गये॥
जिसकी तुलना हुई न होगी, वे ऐसे इन्सान बन गये।
कठिन कठिन व्रत कर जीवन में– मानव से भगवान बन गये॥

जो भी बात निकाली मुँह से– उस पर पहिले स्वयम् चले हैं।
उस पर न्यौछावर होने को– कवियों के मोती मचले हैं॥
मानवता के दिव्य मुकुट पर– चाँद सूर्य जड़ने वाला वह।
अपनी इस सूनी कुटिया में– मुझको याद आ रहा रह रह॥

भारत माँ के उस गौरव ने– पेड़ पेड़ पर फूल चढ़ाये।
फूल फूल के साथ उन्होंने– देश-प्रेम के दीप जलाये॥
लगे घायलों की सेवा में, मानवता का मार्ग न भूले।
डाल डाल पल्लव पल्लव पर– वे दिन रात फूल से झूले॥

किया हृदय-मन्थन मोहन ने, तप तप ब्रह्मचर्य व्रत पाला।
शान्ति-सलिल में क्रोध डुबाकर– अन्तस्तल में किया उजाला॥
एक बार जब रुग्ण हुई 'बा'– 'गाँधी' बोले 'नमक न खाना!
नमक छोड़ना अमृत-पान है', 'प्राण! नहीं पर सरल निभाना॥'





'नमक आप से छुड़वाऊँ यदि– तो न आप भी छोड़ सकेंगे।'
'लो, बा ! नमक आज से छोड़ा, चपल जीभ से होड़ बदेंगे ॥'
यह सुन 'बा' बोली, 'ना ना प्रिय ! मैं तो वैसे ही कहती थी।'
रोने लगी, कहा, 'प्रण छोड़ो !' बात न गाँधी की बहती थी ॥

टस से मस न हुए तिल भर भी, 'बा' कह कर मन में पछताई।
'बा' ने छोड़ा नमक, किन्तु वह– बात नहीं फिर वापिस आई ॥
प्रिया पूर्ति के लिये उन्होंने– दाल नमक का खाना छोड़ा।
जो भी तप व्रत किया उन्होंने– कभी नहीं वह संयम तोड़ा ॥

मानो प्रभु की अमर प्रेरणा– मल मल भक्त-हृदय धोती थी।
सत्य साधना संयम्-जल से– संसृति में मोती बोती थी ॥
फलाहार कर जीवन-तरु में– सुधा सिँचे फल फूल लगाये।
निराहार रह मन-मन्दिर में– सत्याग्रह के भाव जगाये ॥

संयम् और साधनाओं से– आत्मा बनी शुद्ध गंगा-जल।
गंगा-जल से पाप धुल गये, धुल धुल हृदय हो गया निर्मल ॥
सत्याग्रह के संयत् स्वर में– वीर विजेता गाँधी बोले।
"पैसिव रेसिस्टेन्स" वाक्य के– मतलब शुद्ध-रूप में खोले ॥

अत्याचार बढ़े जब जग में– सत्याग्रह की सृष्टि हुई तब।
मानो वह गंगा ले आये, जिसमें जो भी डूँढो वह सब ॥
जो हँसते हँसते विष पीले– यह गंगा-जल उसे जिलाये।
वह मुर्दे भी जीवित कर दे, जो यह जीवन-सुधा पिलाये ॥

सच्चा सत्याग्रही वही है– जिसने मन मथ सत्य निकाला।
वही उजाला कर सकता है– जिसके मन में हुआ उजाला ॥
जिसने खोज सत्य को पाया– सत्याग्रह वह कर सकता है।
सच्चाई में व्याप्त अहिंसा, पाप अहिंसा से डरता है ॥

सत्य अहिंसा का विश्वासी– ईश्वर पर निर्भर रहता है।
सृष्टि एक कूँची से निर्मित, ब्रह्म ब्रह्म-रस में बहता है ॥
सत्याग्रह में सत्य वही है– सबसे सम व्यवहार करे जो।
सत्याग्रह की जड़ आदर है, सत्य वही सत्कार करे जो ॥





करते रहो घृणा पापों से, पापी पर उपकार करो पर।
कहा अहिंसा के ईश्वर ने– पथ भूलों पर मनुज ! दया कर ॥
सत्याग्रह के बादल बरसे, धरती माँ ने ओक लगाई।
बादल पर बिजलियाँ चमकतीं, आग न पानी में लग पाई ॥



मेरे गाँधी क़दम क़दम पर– जिन के लिये जान से खेले।
राजभक्त गाँधी ने उनके– अत्याचार बहुत दिन झेले ॥
जिनके साथ रहे 'बोअर' में, सहन करी पग पग पर ज्वाला।
बहा 'जुलू' में गर्म पसीना, जिनका शिवम् रहा जल काला ॥
'अफ्रीकी' सरकार उसी पर, लेकर टूट पड़ी अंगारे।
अपनी लाल लाल आँखें कर– झुके 'एशिया' पर हत्यारे ॥
चोट एशिया के मानस पर– करी "एशिया धारा" धर कर।
गोरों के बरसे अंगारे– सोते हुए 'एशिया' भर पर ॥
खड़े हो गये मृगछाला से, शान्तिदूत शीतल शिव शंकर।
गाँधी जी ने शंख बजाया, सुप्त एशिया के कानों पर ॥
आँखें खुलीं देख कर ज्वाला, दृग-सागर उमड़ा आँखों से।
हवा बदल चल पड़ा पथिक वह, पत्थर तोड़ तोड़ पाँखों से ॥
गूँज उठा यह स्वर गाँधी का– क्यों रस्सी में बँधे पड़े हो ?
काले क़ानूनों के आगे– क्यों नतमस्तक हुए खड़े हो ??
सुन कर शंखनाद गाँधी का– भारतीय महिलायें आईं।
विजय-शिखा तामिल बहिनों ने– सत्याग्रह में होड़ लगाईं ॥
शंखनाद सुन कर "बा" बोली– मैं भी रण में साथ चलूँगी।
प्रिय स्वतन्त्रता के दीपक पर– दीप-शिखा सी नाथ ! जलूँगी ॥
शान्त वीर मुद्रा से मोहन– बोले उन सब महिलाओं से !
मानो सागर उमड़ पड़ा हो– उमड़े हुए वीर भावों से ॥
"जिसे यातनाओं का भय हो– वह न समर में पैर बढ़ाये।
वही साथ में बढ़े अगाड़ी– जो देवी पर शीश चढ़ाये ॥
रण से पीठ दिखाने वाले– घर में जा जा कर सो जायें।
पति पत्नी का मोह न जिनको– अग्नि-परीक्षा में वे आयें ॥



बलिवेदी पर तन मन धन सब- तुम को भेंट चढ़ाना होगा।
स्वयम् चिता में जल कर तुमको- जग में दीप जलाना होगा॥"
गर्ज सिंहनी बोल उठीं यह- "मौत नहीं किसको आती है?
उसको जिसकी चिता देश के- स्वाभिमान पर जल जाती है॥

चाहे माँस नोच चिमटों से- कोई ज़िन्दा हमें जलाये।
किन्तु हमारी यादगार पर- रक्त-रँगा झण्डा लहराये॥
हम भारत माँ की बेटी हैं- मातृ-भूमि का मान न देंगी।
जल जल चल चल सत्याग्रह कर- अपनी स्वतन्त्रता ले लेंगी॥"

गूंज उठी हुंकार उन्हों की, गाँधी का मानस लहराया।
मानो पा कर ज्योति ज्योत्सना, ज्वार हृदय-सागर में आया॥
थके बटोही की मंज़िल पर- दीप-शिखायें जल जल चलदीं।
सरिताओं की कल कल ध्वनि सी- लहरों पर वे उज्ज्वल चलदीं॥

मानो रिमझिम करती वर्षा- अंगारों के लिये बढ़ चली।
या उन काले क़ानूनों पर- लपकी कड़क कड़क कर बिजली॥
घूँघट पलट दिये बहिनों ने, पहिन लिया केसरिया बाना।
रुन झुन की मनहर लहरों पर- गूंज उठा सतियों का गाना॥

गली गली में 'जय जय जय जय'- लगा गूंजने पंचम स्वर से।
स्वर में करुण, वीर रस बोले, रस में ध्वनि गूंजी अम्बर से॥
आकर्षण था, लेकिन उसमें- आवाहन था अमर लोक का।
रूप-ज्योति थी, लेकिन उसमें- जलता था दीपक अशोक का॥

बरस रही थी उन आँखों से- देशभक्ति की मनहर हाला।
जली हुई थी उन आँखों में- आग बुझाने वाली ज्वाला॥
लाली थी अधरों पर, लेकिन- देश-प्रेम के अभिमानों की।
रोली थी माथों पर, लेकिन- स्वतन्त्रता के बलिदानों की॥

"सरहद लाँघ बिना परवाने"- सत्याग्रह आरम्भ कर दिया।
खड़ी रह गई पुलिस, उन्होंने- "ट्रान्सवाल" में पैर धर दिया॥
पहुँच कोयले की खानों पर- सत्याग्रह कर दिया उन्होंने।
बढ़ीं "न्यू कॅसल" में महिलायें, दुर्ग विजय कर लिया उन्होंने॥







जनायक



भारतीय मज़दूर बिचारे– काम कर रहे थे खानों में।
'तीन पौंड कर' देने वाले– बिके हुए थे कुछ आनों में॥
महिलाओं ने सत्याग्रह कर– मज़दूरों की आखें खोली।
'काम छोड़ दो ! काम छोड़ दो !!' गूँजउठी श्रमिकों की बोली॥

वीर देवियों की वाणी सुन– जाग उठीं सोती दीवारें।
श्रमिकों के श्रम कण के बल पर– दुनिया में ऊँची मीनारें॥
बहिनों की बिजली सी वाणी– मज़दूरों पर असर कर गई।
फिर क्या था उन मज़दूरों से– 'अफ्रीका' की जेल भर गई॥

भभक उठी सरकार भयानक, वीर देवियाँ बन्दी करलीं।
नींद छोड़ कर सिंह दहाड़े, दैत्यों ने सीतायें हरलीं॥
बहिनों का बलिदान कि जिसने– सोते भारत वीर जगाये।
सत्याग्रह की बलिवेदी पर– सब से पहिले दीप जलाये॥

सिंह 'फिरोज़ शाह' ने भी जब– सुना क़ैद देवियाँ हो गईं।
कहा गर्ज कर, मौन न बैठो, वीर देवियाँ दाग़ धो गईं॥
सत्याग्रह की सत्य-मूर्तियाँ– बहिनों को शत शत प्रणाम है।
जिनके दीपित दिव्य भाल पर– गाँधी बन कर खड़ा राम है॥

कठिन यन्त्रणायें दीं उनको– 'मॉरिट्सबर्ग'- जेल में डाला।
वे फाँसी से भी कब डरते– जिनके अन्तस्तल में ज्वाला॥
ऐसा खाना दिया उन्हों को– जिसे न कुत्ते भी खा पायें।
इतना अधिक सताया उनको– जिस से आँसू भी जल जायें॥

जब कि जेल से छूटीं देवियाँ– हड्डी के ढाँचे बाक़ी थे।
जिन में बूँद न रही रक्त की– वे खाली साँचे बाक़ी थे॥
कोई रोगी हो कर निकली, कोई मुर्दे से बदतर थी।
एक भयंकर ज्वर से पीड़ित- दिव्य "वालियामा" सुन्दर थी॥

जब मरने के निकट हुई तब– वह बालिका जेल से छूटी।
उसे देख मेरे गाँधी के- नयन-कमल से गंगा फूटी॥
देख रुग्ण शैया पर उसको- आँखों ने जल-बन्धन खोले।
'बहुत दुःख पाये कारा में'- पास बैठ कर गाँधी बोले॥







'लकड़ी जैसा बदन सूखकर- ज्वर से जल जल हुआ जेल में।
पर तुम ऐसे हँसती निकली- जैसे बालक जीत खेल में॥'
कहा "वालियामा" ने हँस कर- "पश्चाताप दुःख क्यों? कैसा?
बड़े भाग्य से, बड़े पुण्य से- पाया मैंने अवसर ऐसा॥

अगर इसी क्षण पुनः पकड़ कर- मुझे जेल में ले जायें वे।
मैं तैयार जेल जाने को- मुझे पकड़ने फिर आयें वे॥
ऐसा कौन अभागा जिसको- देश-प्रेम से जीवन प्यारा?
यही प्रार्थना है ईश्वर से- बना रहे प्रभु! देश हमारा॥"

कहते कहते हिचकी आई, पिँजरा छोड़ उड़ गया पंछी।
सोती पड़ी रही सब दुनिया, तीली तोड़ उड़ गया पंछी॥
गई "वालियामा" दुनिया से, छोड़ गई यह अमर कहानी।
स्वर्ण-अक्षरों में अंकित है, देश-प्रेम पर मिटी जवानी॥

नहीं ईंट पत्थर का स्मारक, पर पृष्ठों पर दिव्य मूर्त्ति वह।
अमर "वालियामा" का जीवन- जग अभाव में कीर्ति पूर्त्ति वह॥
देशयज्ञ वह विश्व यज्ञ में- बहुतों का बलिदान बहुत है।
किन्तु अमर उस मरने वाली- देवी पर अभिमान बहुत है॥

निर्मल शुद्ध हृदय देवी ने, सत् का दिखा दिया दर्वाजा।
सत् से सिंहासन ले आई, जिस पर भारत आज विराजा॥
धरा सत्य के बल पर ठहरी, सत् ही है 'सत्यम् शिव सुन्दर।'
शब्द निरर्थक व्यर्थ असत् है, जो है नहीं, असत् क्या? नश्वर॥

जिसका कुछ अस्तित्व नहीं है- उसमें कहो सफलता कैसी?
जो सत् है उसमें नश्वर क्या? सत् की परिभाषा है ऐसी॥
सत्याग्रह का शास्त्र यही है- जिसमें व्यापक समाविष्ट है॥
वह सत् में घुल मिल जाता है- सत्याग्रह से जिसे इष्ट है॥

सत्याग्रह के दृढ़तर बल पर- काम छोड़ मज़दूर चल दिये।
गाँधी जी की सेना बनकर- डोर तोड़ मजबूर चल दिये॥
बच्चों को गोदी में ले ले- सत्याग्रह के लिये चलीं माँ।
चलीं फ़ातमा, चलीं बेगमें, चलीं रुकमणी, चलीं सलीमाँ॥









जनायक

अपनी आज़ादी लेने को– पुरुष देवियों का दल निकला।
सत्याग्रह का अमर अस्त्र ले– देशसेवियों का दल निकला॥
जय जय घोष 'चार्ल्स टाउन' में– गूँज उठा मतवाले दल का।
सागर सा उमड़ा पड़ता था– पानी सत्याग्रह के बल का॥



राजसभा को पत्र लिख दिया, मोहन महावीर गाँधी ने।
पहिले उन्हें सचेत कर दिया, काले घन दिखला आँधी ने॥
फिर वे सारे वीर शान्ति से– 'ट्रान्सवाल' की ओर चल पड़े।
डबलरोटियाँ, चने चबाते– भारत माँ के भोर चल पड़े॥

और कभी भूखे प्यासे ही– वे मीलों चलते जाते थे।
वीर तरंगों से उद्वेलित– ओज भरे गाने गाते थे॥
तथा उधर गोरों का गुस्सा– खड़ा हुआ था तोपें ताने।
स्वतन्त्रता-दीपक के ऊपर– बढ़ते जाते थे परवाने॥

भारत माँ के दृग-जल-तारो! पैरों की बेड़ियाँ तोड़ दो!
'तीन पौंड कर' न्याय नहीं है, हम पर यह अन्याय छोड़ दो!!
"ट्रान्सवाल' में गाँधी जी को– गोरा पलटन पकड़ ले गई।
या सत्याग्रहियों के दल को– एक नया उत्साह दे गई॥

रजनी में पकड़ा गाँधी को, सत्याग्रह की रुकी न गाड़ी।
गाँधी क़ैद हो गये, लेकिन– बाक़ी बढ़ते रहे अगाड़ी॥
'मिस्टर पोलक' ने सेना की– बागडोर हाथों में ले ली।
तरणी सी तैरी सरिता में– चतुरंगी सेना अलबेली॥

बार-बार न्यायालय में ला– गाँधी जी को पकड़ा छोड़ा।
सर पर लाखों पर्वत टूटे– किन्तु न गाँधी ने मुँह मोड़ा॥
बड़ी शान्ति से गाँधी का बल– मंज़िल पर चलता जाता था।
दल आगे बढ़ता था, पीछे– जय-दीपक जलता जाता था॥

गुस्से से फुंकारे गोरे, सब सेना को क़ैद कर लिया।
उनको पकड़ा, और दलों ने– समर-क्षेत्र में पैर धर दिया॥
बाढ़ कौन कब रोक सका है? सत्याग्रहियों के दल आये।
बूढ़े, बालक, माँ बेटे सब– गाँधी की जय जय चिल्लाये॥





भभक उठी सरकार वहाँ की– बड़ी बड़ी बन्दूकें तानी।
पर बन्दूकों की गर्जों से– दबी न उठती हुई जवानी॥
घोड़े दौड़े, चलीं गोलियाँ, किन्तु न सत्य अहिंसा हारी।
घायल हुए, मरे भी सैनिक, विधवायें हो गईं बिचारी॥

फिर भी बढ़ते गये अगाड़ी, गर्ज उठा तब "जनरल ल्यूकिन"।
इन्हें भून डालो तोपों से, एक एक कर फौरन गिन गिन॥
'रुस्तम जी' का छोटा बेटा– सेना में से आगे आया।
वीर विजेता उस बालक ने– अद्भुत चमत्कार दिखलाया॥

'ल्यूकिन' से यह कहा वीर ने– शान्त रहो, मैं समझाता हूँ।
प्रेम शान्ति से समझा सबको– अभी काम पर भिजवाता हूँ॥
फिर वह मज़दूरों से बोला– धैर्य धार कर चलो काम पर।
सब माँगें पूरी कर देंगे– गोरे राजा सोच समझ कर॥

चले गये मज़दूर बिचारे– भीषण हत्याकाण्ड रुक गया।
मानो बालक की उँगली पर– उमड़ घुमड़ आकाश झुक गया॥
ज्यों ज्यों नर पिशाच बनता है– त्यों त्यों अन्त निकट आता है।
और अन्त में सत्याग्रह से– सुख का दीपक जल जाता है॥

उधर जेल में बन्दी दल पर– गोरे बहुत जुल्म ढाते थे।
पर अपने हाथों से अपनी– क़ब्र खोद दबते जाते थे॥
देख शान्ति से सत्याग्रह को– गोरों की तोपें शर्माईं।
टूट गई हिंसा की हिम्मत, बन्दूकों ने आँख झुकाईं॥

तार 'गोखले' पर यह पहुँचा– सैनिक पड़े क़ैद में सारे।
भारत से 'अफ्रीका' भेजे, भारत की आँखों के तारे॥
वीर 'पियर्सन' 'एण्डरूज़' भी– 'अफ्रीका' को चले यान से।
आगे की स्थिति सोच रहे थे– मेरे गाँधी बड़े ध्यान से॥

निर्दोषों को बन्दी करके– राज्य नहीं कर सकता कोई।
बड़े बड़े सिंहासन डोले– जब कि तड़प कर पीड़ा रोई॥
वीर हज़ारों थे जेलों में, शासक डरे, उधार धर दिया।
रख दो तीन मास कारा में, निर्दोषों को मुक्त कर दिया॥









सत्याग्रहियों की ताक़त से– गर्वित 'जनरल स्मट्स' झुक गये।
गाँधी में वे गुण थे जिनसे– बहते हुए समुद्र रुक गये॥
मिले 'स्मट्स' से गाँधी जी जब– तब उस पर प्रभाव वह छोड़ा।
इतिहासों में नहीं मिला है– जिसका आज तलक भी जोड़ा॥



गाँधी जी के सत्याग्रह में– विश्व शान्ति के भाव व्याप्त थे।
अन्तर में घुस बसने वाले– गाँधी को वरदान प्राप्त थे॥
वीर 'पियर्सन' 'एण्डरूज़' भी– 'प्रिटोरिया' में साथ साथ थे।
शुद्ध हृदय के दोनों सेवक– गाँधी के दाहिने हाथ थे॥
'जनरल स्मट्स' पिँघल कर बोले– हमने निर्मित किया कमीशन।
भारतवासी भी प्रतिनिधि हों, गाँधी ने कह दिया तभी तन॥
किन्तु 'स्मट्स' ने कहा उन्हों से– खबर कमीशन की आने दो।
जो कुछ किया ठीक है वह सब, अब ज़्यादा माँगें जाने दो॥
सारा न्याय कमीशन पर है– तुम अपनी माँगें समझाओ।
दाँत लगाओ मत गुत्थी पर, हाथों से गुत्थी सुलझाओ॥
शान्त प्रकृति से गाँधी बोले– "हमको केवल न्याय चाहिये।
सत्याग्रह के अर्थ-कोष से– गंगाजल की गाय चाहिये॥
"तीन पौंड का कर" सर पर से– न्याय-उदधि में डाल डुबादो।
भेद नीति फैलाने वाले– उलझे उल्टे जाल डुबादो॥
रोक टोक के बिना यहाँ पर– सब भारतवासी रह पायें।
भारतीय विधि से जो शादी, वे क़ानूनी समझी जायें॥
'ऑरेञ्जिया' न्याय के वादे– कार्य-रूप में परिणत कर दो।
जो जिसका अधिकार उसे तुम– उसको शीघ्र हस्तगत कर दो॥
यदि ये सब बातें मानोगे– तो सत्याग्रह रुक जायेगा।
न्याय-नीति के मन-मन्दिर में-अटल हिमालय झुक जायेगा॥
अन्य किसी भी डर से डर कर– सत्याग्रही नहीं झुक सकता।
सत्य समय पानी मेरा प्रण, डर से कभी नहीं रुक सकता॥"
सत्य अहिंसा की वाणी सुन– सुधा-सुगन्धित वायु चल पड़ी।
फूल डालियों ने बरसाये, मुकट पहिन कर प्रकृति थी खड़ी॥



फूलों के उस सिंहासन पर– गाँधी जी की किरणें चमकीं ।
किरणों पर अर्चना-दीप ले– रसना की मालायें दमकीं ॥
माँगें सभी न्याय-संगत थीं– गाँधी-स्वर में घुला कमीशन ।
चन्दन के बन के सौरभ से– कड़वे पेड़ बन गये चन्दन ॥

तर्क हुआ पार्लियामेंट में, गाँधी जी की माँगें मानी ।
गाँधी को गोदी में पाकर– भारतभूमि बनी अभिमानी ॥
पार्लमेंट की न्याय नीति पर– गाँधी जी ने शंख बजाये ।
गाँधी वह सूरज है जिससे– राहु केतु दोनों शर्माये ॥

गोरों की उस न्याय नीति पर– रवि शशि धन्यवाद को आये ।
गाँधी जी की विजय-कीर्ति पर– काव्य-कला ने फूल चढ़ाये ॥
सत्य अहिंसा के चरणों में– हिंसा की तलवार झुक गई ।
गाँधी जी की गति के आगे– चलती हुई बयार रुक गई ॥

सत्याग्रह की जय जय गूंजी– आठ वर्ष के बाद शान्ति से ।
बड़ी बड़ी तोपें थर्राईं– शान्तिपूर्ण उस महाक्रान्ति से ॥
स्वतन्त्रता की अमर जीत में– प्रसन्नता से मनी दिवाली ।
जहाँ चरण पहुँचे गाँधी के– वहाँ तभी खिल गई उजाली ॥



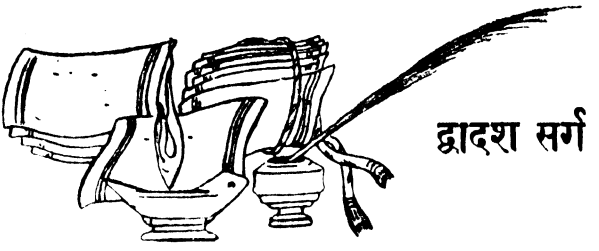
सत्याग्रह के मूल्य-कोष को–
काव्य-कला क्या जाँच सकेगी ?
सत की लिखी हुई पुस्तक को–
बिना पढ़ी क्या बाँच सकेगी ??

विरह वेदना के पागल पल–
बादल बन कर बरस रहे हैं ।
वीणा के टूटे तारों पर–
भाव अधूरे तरस रहे हैं ॥









द्वादश सर्ग



मन-मन्दिर में जय-ज्योति दिखा–
वह दीप-शिखा जलती चलदी।
चलदी जय-दीप लिये बटिया–
हँसती हँसती जल्दी जल्दी॥
जय आदि अनादि विधान प्रभा–
दिनमान विहाग चले लय हो।
जय दीप चले, जय गीत चले,
जय भारत की जय हो, जय हो॥

देशभक्ति ने अर्घ्य चढ़ाया, सत्याग्रह ने शान्त जल दिया।
व्रत उपवास और संयम् से– सिंचित सत्य स्वरूप चल दिया॥
हर ध्वनि, हर कम्पन, हर पग से– नये नये इतिहास लिख चला।
हृदय हृदय में, नयन नयन में– ईश्वर पर विश्वास लिख चला॥
रहे जहाँ इक्कीस वर्ष तक– अगणित अनुभव मिले जहाँ से–
स्वतन्त्रता के दीप जला कर– गाँधी जी चल पड़े वहाँ से॥
कड़वे मीठे अनुभव में से– जीवन का उद्देश्य निकाला।
एक तत्त्व है, एक रूप है– गाँधी जीवन और उजाला॥
जब वे चलने लगे वहाँ से– पिँघल प्रेम से आँसू निकले।
रोये वे पत्थर तक जिन पर– बरस बरस कर आँसू फिसले॥
'अफ्रीका' का कण कण रोया, धरती रोयी, रोया अम्बर।
कैसे उसकी विदा सहन हो– धरती अम्बर जिसके ऊपर॥







'केलनबेक' मित्र गाँधी के- साथ साथ चल पड़े वहाँ से।
मैं भी पल पल ढूँढ रहा हूँ- ऐसा साथी मिले कहाँ से॥
'सात पौंड' की दूरबीन को- जिसने महा उदधि में डाली।
दूरबीन की चाह उसे क्या- जिसने दिव्य-दृष्टि गुरु पा ली॥

दूरबीन मिल गई दूसरी- गाँधी के मानस-सागर में।
काव्य-कला से भर लाया हूँ- वह रसना-सागर गागर में॥
यात्रा का रस हृदयंगम कर- 'बा' के साथ विलायत आये।
'पैरिस' में "गोखले" सुधा पर- चुग चुग श्रद्धा-सुमन चढ़ाये॥

इधर 'विलायत' पहुँचे गाँधी- उधर वहाँ संग्राम छिड़ गया।
राग द्वेष से रहित वीर वह- सेवा में अविराम भिड़ गया॥
आँखों के गीले घावों पर- मन-मरहम के लेप कराये।
शस्त्र युद्ध में सेवा करके- हिंसा के सेवक कहलाये॥

'पोलक' तथा बहुत से साथी- इन बातों को पाप मानते।
पर पापों से दूषित दुनिया- गाँधी सौ सौ बार छानते॥
उन अंग्रेज़ अफ़सरों ने ही- उन में भेद-नीति फैलाई।
गाँधी-दल में फूट डाल दी- कच्चे घर में आग लगाई॥

जो सच्चे से छल करता है- छल से वही छला जाता है।
मोती बो कर मोती पाता- काँटे बो काँटे पाता है॥
सत्याग्रह की पगडण्डी पर- गाँधी जी सेवा करते थे।
मरहम पट्टी कर घावों की- घायल की पीड़ा हरते थे॥

धन्वन्तरि भगवान बन गये- मोहनदास करमचँद गाँधी।
घायल दुनिया के घावों पर- गाँधी जी ने पट्टी बाँधी॥
विपदाओं के बादल टूटे- लेकिन तनिक न हिला हिमालय।
दुनिया ने लालच दिखलाये- लेकिन डिगा नहीं न्यायालय॥

दर्द हुआ पसली में, लेकिन- नैसर्गिक उपचार न छोड़ा।
वही अमर है, वही देवता- जिसने कभी नहीं व्रत तोड़ा॥
कर्त्तव्यों का पालन करके- चला विलायत से वह ज्ञानी।
लक्ष्य-मार्ग पर पथिक चल पड़ा, धूप शीत में चादर तानी॥





रोये 'केलन बेक' विदा से, गाँधी का मानस भर आया।
पत्थर तक भी रहा न ऐसा– जिसने आँसू नहीं बहाया॥
जल में गाँधी लगे तैरने, 'यान एण्डओं' चला जलधि में।
भारत की खोई स्वतन्त्रता– लगे ढूँढने महाउदधि में॥



मंज़िल मंज़िल चल गाँधी ने– मातृभूमि के दर्शन पाये।
आ पहुँचे 'बम्बई' शहर में, गूँथ गोखले माला लाये॥
सागर-तट पर 'स्वागत स्वागत'– गूँज उठी सड़कों की बोली।
ज्वारभाट ने चरण पखारे, अम्बर ने बरसाई रोली॥

गद्‌गद् होकर मिले गोखले, फूलों से भर गया किनारा।
धरती पर सूरज सा चमका– भारत की आँखों का तारा॥
गाँधी जी के अभिनन्दन में– बड़े चाव से सभा बुलाई।
स्वागत-गीत पढ़े इँगलिश में, गाँधी जी को लज्जा आई॥

अँगरेज़ी भाषा में ही था– "जिन्ना साहब" का भी भाषण।
भाषा की यह देख गुलामी– रोया गाँधी का मन-प्रांगण॥
बोले, भारतीय भाषा में– मातृभूमि के गुण-गण गायें।
अपनी भाषा, अपना भारत, भाषण में आचरण दिखायें॥

वह क्या राष्ट्र जहाँ के वासी– अपनी भाषा बोल न पायें।
बन्दी करे विदेशी भाषा– हम न गुलामी में शर्मायें॥
वह स्वतन्त्र भी पराधीन है– जिसके पास न अपनी भाषा।
भाषा ही में बसी हुई है– भारत माता की अभिलाषा॥

भारत में आये गाँधी जी, सत की करने लगे वकालत।
झूठ बोल कर पाप कमाना, आज वकीलों की है आदत॥
बिना सत्य के शान्ति नहीं है, सोने का व्यापार खुला है।
काले रँग से कहो कभी क्या– मुँह का काला दाग़ धुला है?

गाँधी ने अपने जीवन में– सच्चाई से करी वकालत।
उलझे हुए मुकदमे जीते, सत्य-पक्ष में हुई अदालत॥
सच्ची कल्याणी वाणी सुन– न्यायाधीश झुके चरणों में।
सुन सुन कर उक्तियाँ सत्य की– सबके शीश झुके चरणों में॥



एक मवक्किल न्यायालय में– झूठ बोल कर चला जीतने।
दलदल में सतपथ दिखलाया– गाँधी जी के मधुर गीत ने॥
बोले, भूल मान लो अपनी, करो अटल विश्वास सत्य पर।
सच सच कहा मवक्किल ने सब, गाँधी जी की बात मान कर॥

न्यायालय यह सत्य देख कर– दबा दाँत में उँगली बोला–
आज वकीलों के गाँधी ने– उनके लिये सत्य-पथ खोला॥
चालाकी से झूठ बोलना, छोड़ो अरे वकीलो! छोड़ो।
सच से करो आत्म-बल धारण, पशु-बल की ज़ंजीरें तोड़ो॥

बचे "पारसी रुस्तम जी" भी– ऐसे ही चुंगी-चोरी से।
गाँधी जी ने इसी सत्य से– रस खींचा पोरी पोरी से॥
सचाई का शीशा दिखला– 'रुस्तम जी' को छुड़ा ले गये।
अपने पल्लव से जीवन से– पर्वत तक को उड़ा ले गये॥

'लार्ड विलिँग्डन' से मिल गाँधी– प्रेम-पगे से 'पूना' आये।
'भारत सेवा समिति' वहाँ थी– जिसने उन पर फूल चढ़ाये॥
'वीर गोखले' ने गाँधी की– कठिन समस्यायें हल करदीं।
प्रेम-पूर्त्ति 'गोखले' वीर ने– भावों से गंगायें भर दीं॥

एक नयी धारा बह निकली– गाँधी आगे बढ़े जहाँ से॥
"शान्ति निकेतन" के दर्शन कर– राजकोट' चल पड़े वहाँ से।
'मोतीलाल' प्रजा सेवक प्रिय, दर्जी इनसे मिले राह में।
स्वतन्त्रता की चाह भरी थी– उस भावुक की करुण आह में॥

बोला, 'वीरम गाम' हमारा– बन्दी है 'जकात' भारी से।
हमें बचाओ इस विपदा से, भरा हुआ दिल जल खारी से॥
गाँधी जी बोले 'मोती' से– आप जेल भी चल सकते हैं?
'मोती' बोला, नहीं जेल ही, हम ज़िन्दा भी जल सकते हैं॥

जो कुछ शब्द कहे मोती ने, वे सच्चे भी कर दिखलाये।
भरी जवानी जला देश पर, उद्देश्यों के दीप जलाये॥
गाँधी जी के तनिक यत्न से– 'वीरमगाम जकात' हट गई।
सत्याग्रह के अमर अस्त्र से– हत्यारी तलवार कट गई॥







जनायक



'राजकोट' में घर पर पहुँचे– मिले कुटुम्ब और मित्रों से।
अक्षर अक्षर अमर लोक है– मर्म भरे उनके चित्रों से॥
कुछ दिन 'राजकोट' में रहकर– फिर वे 'शान्ति निकेतन' आये।
कवि की काव्य कला से सज्जित– कलाकुञ्ज के दर्शन पाये॥

देखी ऐसी कला कि जिसमें– जीवन की अभिव्यक्ति बोलती।
सुने मधुर संगीत कि जिनमें– वीणा वाली शक्ति बोलती॥
काव्य कला संगीत न जिसमें– वह जीवन जागृति क्या जाने?
वह मरघट है, वह मसान है– जहाँ न हैं जीवन के गाने॥

कलानिपुण साथी मित्रों से– गाँधी जी ने हृदय मिलाया।
या कि पूर्ण साकार कला ने– 'शान्ति निकेतन' स्वर्ग बनाया॥
'काका कालेलकर' 'पियर्सन', आदि स्वयम् पर अवलम्बित थे।
सारे काम हाथ से करके– वे नन्दन वन से विकसित थे॥

'बाँसों उछल पड़े गाँधी जी, स्वावलम्ब के देवलोक में।
जो अपने ऊपर अवलम्बित– वे न पड़ेंगे कभी शोक में॥
किन्तु शोक से मृत्युलोक में– किसके मन में चीस नहीं है?
ऐसा कोई नहीं मिलेगा– जिसके मन में टीस नहीं है॥

सहसा तार मिला गाँधी को, 'वीर गोखले' स्वर्ग सिधारे।
आँखों में छा गया अँधेरा, मूक खड़े रह गये बिचारे॥
जल के बिना मीन हो जैसे, ऐसे गाँधी खड़े रह गये।
जिन्हें न दुःख शोक दुनिया में– शोक-उदधि में आज बह गये॥

'कृष्णविरह में 'ग्वालाओं' सी', महापुरुष की दशा हो गई।
बन में 'राम' रहे एकाकी, उनकी 'सीता' कहीं खो गई॥
'शान्ति निकेतन' से गाँधी जी– 'पूना' को चल पड़े उसी क्षण।
वही रेल में चला बैठकर– जिसके दम से चलता कण कण॥

'पूना' पहुँचे, हृदय रो पड़ा, रुके न आँसू धीर पुरुष के।
टूट गई पतवार बीच में, घुटने टूटे वीर पुरुष के॥
पर गाँधी जी का तो सब से- आध्यात्मिक सम्बन्ध जुड़ा था।
लौकिक और पारलौकिक पर– पर के बिना प्रकाश उड़ा था॥







ज्ञान की गंगा बहा कर– वे बने आकाश-गंगा।
'गोखले' के गीत लेकर– उड़ रहा नभ में तिरंगा॥
क्या कभी आदर्श मरते? वे अमर निर्माण में हैं।
सगुण निर्गुण में गये मिल, प्राण वे निर्वाण में हैं॥

'पूना' से 'रंगून' चल दिये, फिर 'कलकत्ते' वापिस आये।
'कलकत्ते' से 'हरिद्वार' को– गाँधी जी ने चरण बढ़ाये॥
'हिन्दू मुस्लिम पानी' पी पी– गंगाजल से प्यास बुझाई।
गाँधी जी के दर्शन करने– दौड़े आये लोग लुगाई॥

निर्मल गंगाजल पी पी कर– कुछ तो हर हर हर करते थे।
पाखण्डी मेंढक से साधू– कुछ तट पर टर टर करते थे॥
तरह तरह के रूप रचा कर– भिक्षुक आये ठगने वाले।
वस्त्र जोगिया, पर मन भोगी, तन के श्वेत, हृदय के काले॥

"हरिद्वार" 'हर की पैड़ी' पर– गूँज रहा था स्वर 'हर हर हर'।
नीले हीरों की लहरों में– बिछा हुआ था सत सँगमर्मर॥
कहीं कमल सी श्वेत देवियाँ– जल में केलि किलोल कर रहीं।
लहरों में सुर घोल रास रच– मीठे मीठे बोल भर रहीं॥

कहीं आरती गंगा जी की, कहीं बज रहीं थीं घड़ियालें।
कहीं वेद ध्वनि गूँज रही थी, कहीं बिछ रहीं थी मृगछालें॥
गंगा की लहरों में मछली– कभी तैरतीं, कभी उछलतीं।
आटे की गोलियाँ देखकर– जल की जाली चीर निकलतीं॥

कोई मछली पकड़ मारते, कोई आटा माँड खिलाते।
अधिक जानवर मारा करते, किन्तु जानवर दूध पिलाते॥
ऋषियों के दर्शन करने फिर– गाँधी जी 'ऋषिकेश' चल दिये।
'स्वर्गाश्रम' में शान्ति सलिल से– शेष महेश नरेश चल दिये॥

लोहे के उस पुल पर पहुँचे– जिसे देखने दुनिया जाती।
'लक्ष्मण झूले' में जा पहुँचे– जहाँ प्रकृति फूलों पर गाती॥
चाँद जहाँ गंगा में खेले, किरणें जहाँ सितार बजातीं।
जहाँ चाँदिनी की बौछारें– लहर लहर पर दीप जलातीं॥







जनायक

फूल स्वयम् ही टूट टूट कर– जहाँ चढ़ रहे थे ईश्वर पर।
रजनी जहाँ दीपमाला ले– बीन बजाती नाच नाच कर॥
डाली डाली झूम झूम कर– सुना रही थी काव्य प्रकृति को।
वायु विजन में रास रचा कर– रिझा रही थी सत्य प्रवृति को॥



हृदय हृदय में सिहर सिहर कर– मधुर मधुर झनकार सुनाती।
जल तरंग की तान सुना कर– अन्तस्तल के तार बजाती॥
गंगा-तट पर प्रकृति-प्रिया का– साधों ने शृङ्गार किया था।
और तपस्या के गीतों ने– उसे दूर से प्यार किया था॥
चाँद सूर्य का झूमर टीका– वह अलबेली पहिन चली थी।
तारों का सतलड़ा पहिन कर– दमकाती अलि गली गली थी॥
इन्द्र धनुष से उन नयनों में– मधुर घटाओं का था अंजन।
उन आँखों से आँख मिलाता– बन में घूम रहा था खंजन॥
प्रकृति-प्रिया की उँगली पकड़े– नाविक लहरों पर चलता था।
जिधर देखते उसी ओर बस– स्वागत में दीपक जलता था॥
ऊँची ऊँची पर्वत माला, हरी दूब की बिछी चाँदिनी।
मोर नाचते, कोयल गाती, पक्षी गाते राग रागिनी॥
कोलाहल से दूर स्वर्ग में– प्रकृति नाचती, वर्षा गाती।
शान्ति सत्य का आलिंगन कर– प्रथम मिलन के गीत सुनाती॥
रिमझिम रिमझिम, रुनझुन रुनझुन– वर्षा मोती लुटा रही थी।
वर्षा की निर्मल लहरों में– स्वर्गलोक की साध बही थी॥
वर्षा ऋतु के रंग रूप में– प्रकृति सुन्दरी सजी खड़ी थी।
उपमा किस से दूँ उस छवि की, चरणों में उर्वशी पड़ी थी॥
मोहित हुए प्रकृति पर मोहन, चूमे अधर कपोल ज्ञान ने।
आलिंगन लहरों का करके, पाया सच्चा प्यार ध्यान ने॥
प्रकृति-प्रिया के आलिंगन से– मन की मुक्ति शान्ति मिलती है।
प्रकृति-पूर्णिमा के पराग से– जग की कली कली खिलती है॥
गंगा के इस पार शान्ति थी, और उधर सब दुनिया रोती।
मधुर प्रकृति जब पंखा झलती, सत् की सृष्टि शान्ति से सोती॥





कृत्रिम नश्वर सुन्दरता से- प्रकृति-सुन्दरी की क्या तुलना ?
मुक्ति नहीं, बन्धन है जिसमें, उस दर्वाज़े का क्या खुलना ??
झूले झूम झूम रिमझिम से, प्रकृति पाँखुड़ी के झूले पर।
चले प्यार की परिभाषा ले, मन में नयी नयी रचना कर ॥

पहुँच 'अहमदाबाद' भावनिधि, ग्राम 'कोचरब' में हल देखा।
'सत्याग्रह आश्रम' स्थापित कर- पायी मूर्त्त सत्य की रेखा ॥
सत्य, प्रेम, आदर्श, मनुजता, आश्रम में भाषा मधु जय सुख।
छुवाछूत का भेद नहीं था, एक्य-धर्म था जहाँ धर्म-मुख ॥
मानवता के उस मन्दिर में- ऊँच नीच की बात नहीं थी।
वह थी दीपमालिका आली ! जिसमें काली रात नहीं थी ॥
दुनिया में इंसान एक से, पर वह भंगी, यह चमार है।
वर्ण भेद का खड्ग चल रहा, शोणित की बह रही धार है ॥
वही रक्त है, वही माँस है, वही रूप है, वही देह है।
किन्तु भेद कितना भारी है, पानी में बह रहा स्नेह है ॥
वे भी भारत माँ के बच्चे, वे भी ईश्वर के बालक हैं।
हम उनको दुतकार रहे हैं, वे सच्चे आज्ञा-पालक हैं ॥
हम उनको अछूत बतलाते, वे हमको पवित्र करते हैं।
वे सच्ची सेवा करते हैं, हम उनसे भिड़ते डरते हैं ॥
वे जितनी सेवा करते हैं- नहीं सगा बेटा कर सकता।
कौन बालटी में मैला भर- अपने कन्धे पर धर सकता ?
कौन उठा कूड़ा सड़कों से- अपने सर पर ले जाता है ?
कहो, कौन दुर्गन्ध उठाकर- सब को सौरभ दे जाता है ?
कहो, कौन ऐसा सेवक जो- सब गन्दगी समेट उठाता ?
जिससे रोग स्वाह हो जायें- ऐसी औषधि कौन लुटाता ?
वह देखो ! भंगी का घर है, चूल्हे पर मिट्टी की हँडिया।
वह सेठानी गाली देती- 'कूड़ा नहीं उठाया रँडिया !'
चूल्हे पर हँडिया, पर भंगन- झाड़ू उठा चली मल ढोने।
अपना आटा मँडा छोड़कर- बड़े घरों का मैला धोने ॥









जनायक



उठा टोकरा झाड़ू लेकर– चुपके चुपके चली जा रही।
चली जा रही है पेटों से– या सेठों से छली जा रही॥
और उधर भंगी का मुन्ना– सड़कों पर दे रहा भुवारी।
झूठी कूटी रोटी लेती– भंगी की बेटी बेचारी॥

बारह बजे धूप वर्षा में– रोटी लेती डोल रही है।
झूठे बचे हुए टुकड़ों में– अपना जीवन तोल रही है॥
और उधर भंगी की दुलहन– लज्जा से निज मुँह लपेट कर–
अपने यौवन की गगरी में– ले जाती मैला समेट कर॥

भारत माँ के इन लालों को– हम 'दुर ! दुर !! दुर !!!' गाली देते।
मानो अपने अंग काट कर– फेंक कोष की ताली देते॥
हाय ! कलेजे के टुकड़ों को– हम पैरों से कुचल रहे हैं।
वे अपने हरिजन भाई हैं, खारी जल में किन्तु बहे हैं॥

उन्हीं केकलेजे टुकड़ों को– लगा हृदय से गाँधी बोले–
'मेरे आश्रम में सब आओ !'मानस के दर्वाज़े खोले॥
हरिजन भाई दौड़ दौड़ कर, 'सत्याग्रह आश्रम' में आये।
गाँधी जी ने लगा गले से, हरि हर राम नाम गुण गाये॥

किन्तु अधर्मी हिन्दू भाई– भभक उठे यह स्वर्ग देखकर।
घर खाली करवा गाँधी से– खड़ा कर दिया चौराहे पर॥
गाँधी जी ने किसी मैल से– करी न अपनी चादर मैली।
किन्तु प्रेरणा हुई किसी को, गाँधी को दी धन की थैली॥

गाँधी जी को रुपया देने– मानो राम रूप रच आये।
एक अपरिचित ने चुपके से– आकर नोट उन्हें पकड़ाये॥
आगे पीछे दाँये बाँये– राम खड़े हैं देने वाले।
धरती पर धन बरस रहा है, ओ किसान ! मज़दूर ! उठाले॥

उसी द्रव्य से गाँधी जी ने– खींची उस आश्रम की गाड़ी।
आश्रम ही क्या ? उन कन्धों पर– बढ़े बैठकर सभी अगाड़ी॥
'सत्याग्रह आश्रम' में गाँधी– सब से मीठी बातें करते।
छुवा छूत का भेद छोड़ कर– एक कुवे पर पानी भरते॥





बड़े बड़े तूफ़ान उठे पर- नाविक नौका पार ले गया।
बाहर भीतर उठे जलजले- पर वह जर्जर नाव खे गया॥
टूटे विपत्तियों के बादल- किन्तु न उसने हिम्मत हारी।
आँखों ही में पिया पथिक ने- अपनी आँखों का जल खारी॥

अगला क़दम उठा गाँधी का- "कुली प्रथा" के जलते पथ पर।
शीतल जल बरसाते निकले- गाँधी 'गिरमिट प्रथा' कुचल कर॥
"पाँच वर्ष के लिये श्रमिक का- मीठा खून न बिकने पाया।"
कोने कोने में गाँधी ने- उनका सन्देशा पहुँचाया॥

शासन के बहरे कानों में- पहुँची गाँधी जी की वाणी।
वाणी की वीणा बजते ही- बरस पड़ी कविता कल्याणी॥
धैर्य शान्ति से गाँधी जी ने- सबके सुख का तत्त्व निकाला।
जीवन से जीवन बरसाकर- भरा विश्व का खाली प्याला॥

गाँधी जी "गोमती" किनारे- काँगरेस-अधिवेशन में थे।
मानो तारक-मण्डल में शशि, या कि राम नन्दन वन में थे॥
बहते हुए आँसुओं ने आ- "चम्पारन" की कही कहानी।
पानी देख देख आँखों का- हिला शान्त सागर का पानी॥

पथ के कंकड़ पत्थर चुगते- गाँधी 'जनकपुरी' जा पहुँचे।
मंज़िल मंज़िल चलते चलते- जय जय "चम्पारन" आ पहुँचे॥
जैसे आमों के बन वैसे- वहाँ नील के नीले बन थे।
किन्तु ज़मींदारों के हाथों- बिके हुए माँ के तन धन थे॥

दबे "तीन कठिया" से श्रम धन- ज़मींदार की खेती करते।
अपना ताज़ा खून बहा कर- उन धनवानों के घर भरते॥
भरते थे धनवानों के घर, पर उनके प्याले रीते थे।
करते कृषक 'नील' की खेती, पर धनवान खून पीते थे॥

श्रमिकों के माथे से गाँधी- चले 'नील का दाग़' मिटाने।
पैसा ही सब कुछ न विश्व में- चले सत्य 'ध्रुव सत्य' सिखाने॥
करुणा के कोमल कृषकों ने- गाँधी जी का पल्ला पकड़ा।
'चम्पारन' में चरण चल पड़े- निमटाने अन्यायी झगड़ा॥







ज
न
ना
य
क



'ब्रजकिशोर बाबू वकील' ने– गाँधी को सब दशा दिखाई ॥
'पीड़ित' राजकुमार शुक्ल ने– छाती की पीड़ा दिखलाई ॥
सच्चा स्नेह हृदय में जिसके– उसने गाँधी जी को जीता ।
श्रद्धा और भक्ति है जिसमें– वही सुधा का प्याला पीता ॥
गाँधी जी ने कर्मयोग से– मानवता की नींव थाम ली ।
दुर्बल की जर्जर गाड़ी की– अपने हाथों में लगाम ली ॥
'मज़हरुलहक़' मिले पटने में, मिले महा गौरव 'कृपलानी' ।
जय 'राजेन्द्र प्रसाद' मिल गये– जीवन जागृति और जवानी ॥

जन रत्न मिले, सुख स्वप्न खिले,
जय दीप जले, कृषि नाच रही ।
सरिता निकली हरि के पग पा,
उर केसर से रस धार बही ॥

तन धार खड़ी मधु कोमलता,
बरसात बनी जल की गगरी ।
जननायक ईश्वर-मूर्ति बने,
जन-मन्दिर है मन की नगरी ॥

कृषकों पर अत्याचारों की– 'कृपलानी' ने कही कहानी ।
गर्ज वकीलों की वाणी से– छल छल करती चली जवानी ॥
इस 'वकील मण्डल' के गाँधी– प्रेम-बाँध पर चल कर निकले ।
गाँधी का इतिहास अमर है– जो न कभी मंज़िल से फिसले ॥
प्रण कर लिया सभी वीरों ने– 'प्रथा तीन कठिया' तोड़ेंगे ।
और लोक सेवा करने से– हम न कभी भी मुँह मोड़ेंगे ॥
गाँधी जी ने कहा उन्हों से– शायद पड़े जेल भी जाना ।
वीरों ने कह दिया हर्ष से– कारा से कैसा घबराना ॥
जिसे मिला उत्साह सत्य से– उसने कभी न हिम्मत हारी ।
आओ, चरण अर्चना कर लें– पार लगाई नाव हमारी ॥
मिले 'नील के मालिक' गण से, किन्तु न बातों से वे माने ।
और कमिश्नर कोड़ा लेकर– गाँधी जी को लगा डराने ॥





बोला, 'तिरहुत' छोड़ भाग जा– नहीं जेल में सड़ना होगा।
शान्त हृदय से बोले गाँधी– अन्यायों से लड़ना होगा॥
फाँसी, मार और कोड़ों से– कभी न देशभक्त डरते हैं।
रोज़ रोज़ कायर मर जाते– कभी न अमर मुक्त मरते हैं॥

हाथों से सुलझीं न गुत्थियाँ, सत्याग्रह की आग बल उठी।
'तिरहुत' 'मोतीहारी' एवं– 'चम्पारन' में आग जल उठी॥
'गोरख बाबू' का गौरव-घर– केन्द्र बन गया सत्याग्रह का।
'ब्रजकिशोर बाबू' का जीवन– हवन बन गया हत्याग्रह का॥

काले क़ानूनों के आगे– छाती खोल बढ़े जाते थे।
अत्याचारी के मस्तक पर– जादू बने चढ़े जाते थे॥
गाँधी उन अनपढ़ कृषकों में– दमक उठे हलधर किसान से।
या कि कृषक-अवतार धार कर– ईश्वर आ पहुँचे विहान से॥

गंगा के उस पार तराई– हिमगिरि के पग चूम रही थी।
उसी तराई में गाँधी की– भरी जवानी झूम रही थी॥
पहुँच गये काँग्रेसी सेवक– महासभा की धूम मच गई।
विजय-दीप वह बाल सका है– जिसको कड़वी घूँट पच गई॥

'निलहे के मालिक' झल्लाये, महासभा की बिजली दमकी।
जिसकी छाया में भारत की– कली कली चन्दा सी चमकी॥
महासभा के आत्मा बल से– सत्याग्रह चल पड़ा वहाँ पर।
वहीं बन गये मन्दिर मस्जिद– चले अहिंसा-भक्त जहाँ पर॥

पेट पकड़ भूखे किसान सब– गाँधी जी के साथ चल पड़े।
अंग्रेज़ों की त्यौरी बदली– माथों में अनगिनत बल पड़े॥
नोटिस भेज दिया गाँधी पर– 'चम्पारन' को अभी छोड़ दो!
गाँधी जी ने उत्तर भेजा– राहु केतु! रस्सियाँ तोड़ दो!

इस पर क़ैद किया गाँधी को, न्यायालय में पकड़ बुलाया।
लोगों से भर गई अदालत, क़ैदी न्यायालय शर्माया॥
गाँधी जी पर चला मुक़दमा– या कि कमिश्नर के ऊपर था।
जाल बिछाया था गाँधी पर– फँसा शिकारी ही का सर था॥









भरी अदालत में गाँधी ने– कहा, "न 'चम्पारन' छोड़ूँगा।
मानवीय सेवायें करके– निलहों के बन्धन तोड़ूँगा ॥
निलहों के अत्याचारों के– चित्र दिखाने आया हूँ मैं।
जीवन में भूले भटकों को– राह सिखाने आया हूँ मैं ॥
दोषी कौन, कौन सतपथ पर– यही जाँच मुझको करनी है।
जो न भरी खारी सागर से– वह खाली गगरी भरनी है ॥"
गाँधी जी पर चला मुक़दमा– भारत भर में मची खलबली।
बड़े बड़े भूचाल उठे, पर– नाव तैरती हुई तट चली ॥
गाँधी जी की शक्ति देख कर– बड़े बड़े अन्यायी हारे।
'चम्पारन' में खुली जाँच को– छोड़ दिये आँखों के तारे ॥
बोल उठी सरकार हार कर– हम सहयोगी, जाँच करो तुम !
बजा जीत का एक शंख यह– अन्यायों से नहीं डरो तुम !
'चम्पारन' के निलहे मालिक– भभक उठे मेरे गाँधी पर।
किन्तु सत्य पर दृढ़ गाँधी ने– न्याय टटोला पैर बढ़ा कर ॥
'निलहों' की टेढ़ी कमान से– चले विषैले तीर उन्हों पर।
तीर टूट बेकार हो गये– उनकी छाती से टकरा कर ॥
ज्यों ज्यों निन्दा करी उन्हों की– त्यों त्यों बढ़ती गई प्रतिष्ठा।
उसे कौन कब हरा सका है– जिसकी ईश्वर में हो निष्ठा ॥
शुद्ध लोक सेवा में ईश्वर– राजनीति के अर्थ व्याप्त हैं।
जिन पर धरती टिकी हुई है– वे सारे सिद्धान्त प्राप्त हैं ॥
लगे लोक सेवा में गाँधी, करने लगे जाँच निलहों की।
चले बुझाने स्वेद कणों से– घर में लगी आँच निलहों की ॥
और किसानों के जीवन की– दिल पर लिखने लगे कहानी।
उनके मानस की आँखों का– भरने लगे हृदय में पानी ॥
अपनी सज्जनता से गाँधी– चले जीतने 'निलहों' के मन।
सत्य अहिंसा सत्याग्रह में– लगा दिया अपना तन मन धन ॥
'ब्रजकिशोर बाबू', 'कृपलानी'– और साथ 'राजेन्द्र' वीर थे।
दुनिया थी मँझधार भँवर में– गाँधी उसके साथ तीर थे ॥





'चम्पारन' में गाँधी-मण्डल- करने लगा लोक सेवायें।
और देवियाँ भी साथी बन- चुगने लगीं वहाँ मेवायें॥
'श्री अवन्तिका' दुर्गादेवी- और चली 'मणि बहिन' पवन सी।
घोर अशिक्षा कुरीतियों पर- ज्वाला जलने लगी हवन सी॥

'चम्पारन' के ग्राम ग्राम की- उन चरणों ने दशा बदल दी।
अपने साहस की मुट्ठी से- काँटों की कटु दिशा मसल दी॥
'पढ़ो पढ़ो सब! साफ़ रहो सब!' गूँजी गाँव गाँव में बोली।
घोर गन्दगी के कूड़े की- जलने लगी शान्ति से होली॥

गाँधी जी के आत्मा-बल से- गाँव गाँव उठ खड़ा हो गया।
धरती माता की गोदी से- गाँधी-ज्ञान कलंक धो गया॥
महात्याग ने 'चम्पारन' में- बोयी बेल फैलने वाली।
निर्धनता से नग्न देह पर- मेह बनी पत्तों की जाली॥

करते थे समाज सेवायें- लिखते थे दुःखों की गाथा।
गाँधी के बढ़ते चरणों पर- झुका दिया दुनिया ने माथा॥
काँप उठे 'निलहे' गाँधी से- मुख पर खिँची दुःख की रेखा।
वही सत्य का बना पुजारी- जिसने भी सत्याग्रह देखा॥

हिली "गवर्नर सर" की कुर्सी- "एडवर्ड गेटे" थर्राया।
बढ़ा न्याय का हाथ उन्होंने- गाँधी जी को पास बुलाया॥
कहा, बनाओ 'जाँच समिति' तुम, लिखो जाँच कर सत्य कहानी।
गाँधी! सुलह करो आपस में, हमने बात तुम्हारी मानी॥

अपनी शर्तें रख गाँधी ने- 'सर गेटे' की बात मान ली।
'जाँच समिति' ने 'चम्पारन' में- विषम विषैली हवा छान ली॥
कृषकों की सारी शिकायतें- 'जाँच समिति' ने सत्य बताईं।
'निलहों' के अत्याचारों की- खूनी तस्वीरें दिखलाईं॥

जली 'तीन कठिया' की कारा- मुक्त हो गये कृषक बिचारे।
धन्य! धन्य! नारायण गाँधी- सारे जग के भाग्य-सितारे॥
'एडवर्ड गेटे' की जय हो- जिसने न्याय किया दुखियों का।
मोहनदास करमचँद गाँधी! तू ही दीपक बन सुखियों का॥





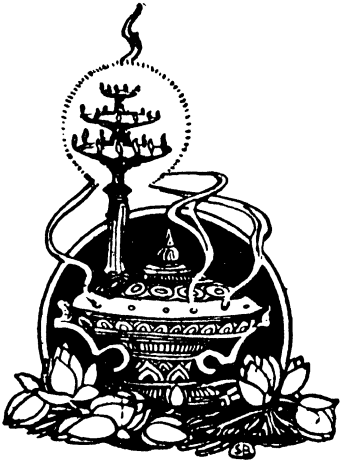


जननायक

जय गौरव गीत प्रभात प्रकाश,
किसान विकास विधान कला।
गति जीत बनी, यति प्रीति बनी,
मनमोहन से यह फूल फला॥

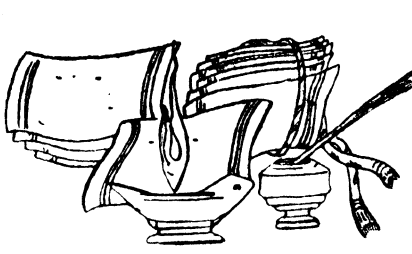
खिल फूल समीर सुगन्ध उड़ी,
जिससे उस मोहक की जय हो।
जय हो, जय हो, जय हो, जय हो,
शिव रूप किसान शिवालय हो॥











त्रयोदश सर्ग



विस्तृत जग में एक लहर की– पगडण्डी पर चलना होगा।
दीपक की लौ पर पतंग को– जला जला कर जलना होगा॥
मेघों में बिजली के पथ पर– अमृत छिड़कता चाँद चल रहा।
हरी भरी खेती से पूछो, क्यों मज़दूर किसान जल रहा?

हँसते हुए सरोज! बताओ! सूरज क्यों जलता रहता है?
गंगे! कुछ बतलाओगी क्या, हिमगिरि क्यों गलता रहता है?
वेग भरी सरिता की गति में– पथ के पत्थर बह जाते हैं।
राही! बढ़ते रहो निरन्तर– पवन प्राण भर कह जाते हैं॥

चन्दन-चर्चित चरण चल पड़े– जिधर उधर ही स्वर्ग बन गये।
गाँधी की वाणी हिलते ही– महाकाव्य के सर्ग बन गये॥
गाँधी जी को देख बहा दी– गउओं ने दूधों की गंगा।
उसके चर्खे के तारों से– रहा न कोई भूखा नंगा॥

गो सेवा में गाँधी जी ने– अपने दोनों लोक लगाये।
पशु पालन में मनमोहन ने– स्वार्थ भरे भय भोग भगाये॥
शान्ति, सत्य, शिक्षा, सेवा को– सेवक बन कर ईश्वर आये।
उसने जो कुछ कहा वही लिख– हमने सुन्दर शास्त्र बनाये॥

धरती उसको ढूँढ रही थी– जो फूटी तक़दीर जोड़ दे।
सूखी खेती उसे टेरती– जो बालू से रस निचोड़ दे॥
खेती सूख गई सावन में, भूखा कृषक माँगता रोटी।
नीर भरे भूखे किसान की– काट लगान खा रहा बोटी॥







जनायक

मज़दूरों के नन्हे दम पर– दुनिया की दीवार खड़ी है।
पड़ा हुआ वह सड़क किनारे, बिना कफ़न के लाश पड़ी है॥
सप्ताश्चर्य इसी के दम से, यही दुर्ग का जलता दीपक।
अपने तले अँधेरा करके– औरों के घर बलता दीपक॥



मिल में पिलते पिसते हैं वे, पर न पेट तक भी भर पाते।
'ताजमहल' सी यादगार दे, पेट पकड़ भूखे मर जाते॥
मिल-मालिक उन मज़दूरों को– वेतन देते नहीं पेट भर।
गाँधी जी का पल्ला पकड़ा, भूखे मज़दूरों ने आ कर॥

गये 'अहमदाबाद' जहाँ पर– मिल-मज़दूरों की बस्ती है।
जिनके दम पर मिल चलते हैं, ऊँचे महलों की हस्ती है॥
मिल-मालिक की बहिन साध सी, 'श्री अनसूया बहिन' साथ थी।
न्यायप्रिया प्रतिमूर्त्ति सत्य की, श्रमिकों का दाहिना हाथ थी॥

अपने बड़े बन्धु से देवी– चली न्याय के लिये झगड़ने।
निर्बल के बल राम चल पड़े, अन्यायी का हाथ पकड़ने॥
गाँठ न खुल पाई हाथों से, तब श्रमिकों ने दाँत लगाये।
मज़दूरों ने हड़तालें कीं, किन्तु न मिल-मालिक शर्माये॥

वे सीधे मज़दूर बिचारे– हिंसा तनिक नहीं करते थे।
चला शान्ति से सत्याग्रह वह, शान्ति भंग करते डरते थे॥
हाथ फला कर, भिक्षा लेकर, अन्न न खाने का निश्चय था।
जब तक करें न माँगें पूरी, तब तक आन्दोलन का तय था॥

मिले 'पटेल' वहाँ गाँधी से, 'बल्लभ भाई' की जय जय थी।
महामहात्माओं के बल पर– श्रमिकों की हड़ताल अजय थी॥
'साबरमती' किनारे उनकी– होती थीं तरु तले सभायें।
गाँधी जी प्रण पर दृढ़ रखते, श्रमिक मानते थे आज्ञायें॥

'एक टेक' का झण्डा लेकर– रोज़ जलूस निकाला करते।
श्रमिकों की हुंकारें सुन सुन– मन में मिल-मालिक गण डरते॥
किन्तु न रेंगी कानों पर जूँ, घबराये मज़दूर बिचारे।
पर पतवार पकड़ गाँधी जी, लाये उनकी नाव किनारे॥





मज़दूरों की एक सभा में– गाँधी जी ने यह प्रण ठाना—
जब तक माँगें नहीं मिलेंगी, तब तक मैंने छोड़ा खाना ॥
सुन्न हो गई सभा एक दम, हैरत में मज़दूर पड़ गये।
सुनते ही उपवास उन्हों का– प्रण पर फिर मज़दूर अड़ गये ॥

गाँधी जी का प्रेम देख कर– 'अनसूया' के आँसू आये।
गाँधी जी का व्रत सुनते ही– मन में मिल-मालिक शर्माये ॥
पिँघल गये पाषाण प्रेम से, मिल-मालिक पिँघले श्रमिकों पर।
बरस पड़े 'आनन्द' मेघ मधु– 'शंकर ध्रुव' को पंच बना कर ॥

आपस में हो गया फैसला, तीन दिवस में व्रत टूटा वह।
हड़तालें इक्कीस रोज़ तक– चल कर कर पाईं निर्णय यह ॥
शान्तिपूर्ण इस समझौते से– बहने लगा प्रेम का सागर।
चरण पखार और जीवन दे– चलीं मेघमालायें गा कर ॥

प्रेम-सिन्धु में मिल मिल-मालिक, खूब बाँटने लगे मिठाई।
'साबरमती' किनारे सब ने– छक कर खूब मिठाई खाई ॥
फटे हुए दो हृदय मिल गये, खारी जल बदला मधु-जल में।
ज्वाला बादल बनकर बरसी– कवि से सूखे अन्तस्तल में ॥

शान्ति स्नेह में व्याप्त सत्य है, सत्य महात्मा है गाँधी जी।
सूर्य एक, किरणें अगणित हैं, सब की आत्मा हैं गाँधी जी ॥
सहसा खबर मिली बापू को, खेती नष्ट हुई "खेड़े" में।
बेड़ा पार लगाने तत्क्षण– माँझी जा पहुँचा बेड़े में ॥

श्रमिकों को कृश-रूप बदल कर, कृषकों की मंज़िल पर आये।
भावुकता ने चरण पखारे, उद्देश्यों ने फूल चढ़ाये ॥
मज़दूरों को हक़ दिलवा कर, कृषकों के सम्बल बन बोले।
'खेड़े' के भूखे कृषकों पर– निर्मम गिरा रहे थे शोले ॥

खेती नष्ट, अकाल पड़ गया, भूखे 'पाटीदार' बिचारे।
इस पर भी लगान लेने को– दौड़े ज़मीदार हत्यारे ॥
न्याय और विधि की हत्या कर, वे ज़मीन कर माँग रहे थे।
मरे हुए भूखे कृषकों को– वे फाँसी पर टाँग रहे थे ॥







जनायक



'यान्त्रिक', 'अनसूया', 'पटेल' प्रण– 'महादेव' जय ध्वजा 'इन्दु श्री'।
इन नेताओं के हृदयों में– कृषक रूप थे सत्य बिन्दु श्री ॥
'खेड़े' में चिनगारी दहकी, गाँधी जी ने डाला डेरा ।
जिस मंज़िल पर गाँधी ठहरे– वहीं स्वयम् आ गया सवेरा ॥

सत्याग्रह का शंख बज गया– ज़मींदार कुड़की ले आये ।
ढोर निलाम किये कृषकों के, ख़ाली बर्तन कुड़क कराये ॥
खेत ज़ब्त कर लिया प्याज का, गाँधी ने प्याजें खुदवाईं ।
'भोले कृषक पुलिस ने पकड़े, सत् को हथकड़ियाँ पहिनाईं ॥

दमन चक्र चल पड़ा पुलिस का, वीरों का उत्साह बढ़ गया ।
खींची जितनी डोर पुलिस ने– उतना ऊपर चंगा चढ़ गया ॥
'सत्याग्रही गये जेलों में, साथ जलूस चला दीपों का ।
दुनिया कब पहिचान सकी है– कितना हृदय जला दीपों का ॥

ज़मींदार कब जान सके हैं– मूल्य किसानों के कन्धों का ।
आँखें हैं, पर देख न पाते, भला करे ईश्वर अन्धों का ॥
'खेड़े' के पीड़ित कृषकों पर– अत्याचार हुए सरकारी ।
सत्याग्रह के विनय कोष से– हार गई शूली हत्यारी ॥

ज़मींदार पाटीदारों में– समझौते की बात चल पड़ी ।
सत् से काली रात ढल गई, जीवन जागृति ज्योति जल पड़ी ॥
सुलह हुई, छूटा लगान वह, गाँधी जी ने मुक्ति दिलाई ।
कृषकों की दुर्गम मंज़िल पर– गाँधी ने पग-धूलि बिछाई ॥

सत्याग्रह का शुद्ध अन्त यह– तेज, शक्ति हो अधिक अन्त में ।
आदि अन्त दोनों व्यापक थे– सत्याग्रह के महासन्त में ॥
सत्याग्रह वह अमर लोक है– जिसकी अपरम्पार कहानी ।
सत्याग्रह का पानी पी पी– ज्वाला होती पानी पानी ॥

ग्राम 'कोचरब' में आश्रम था, सेवक प्रेम-सुधा पीते थे ।
गाँधी जी दिल के धागों से– फटे हुए मानस सीते थे ॥
'टॉल्सटाय', एवं 'फिनिक्स' में– 'साबरमती' सदृश थी धारा ।
'साबरमती' किनारे आश्रम, आश्रम में रहता ध्रुव-तारा ॥





सत्य अहिंसा का प्रतीक वह– वार न करता विषधर पर भी।
बोल तोतली मीठी बोली– अमर बना देता नश्वर भी॥
गाँधी वह संगम है जिसमें– आकर मिलीं करोड़ों धारा।
गाँधी वह धरती है जिस पर– चलता यह पीड़ित जग सारा॥

गाँधी वह सागर है जिसमें– रत्नों का भण्डार भरा है।
गाँधी वह गंगा है जिसमें– 'भगीरथी' आगार भरा है॥
हिन्दू और मुसलमानों के– संगम बनने चले खिलाड़ी।
एक म्यान में दो तलवारें– गाँधी धरने बढ़े अगाड़ी॥

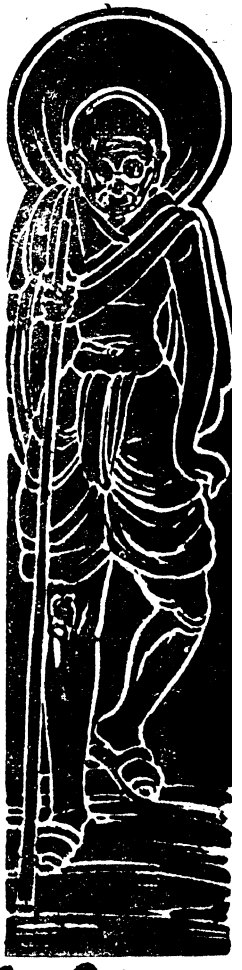
हिन्दू और मुसलमानों का– मिलना धरती अम्बर जैसा।
क्षितिज देख लेते हों जैसे– हिन्दू मुस्लिम मिलना ऐसा॥
जीवन की हर बात अलग है, उल्टे सीधे तवे इन्हों के।
वे कब समझाये से समझे– फूट गये हों भाग्य जिन्हों के॥

किन्तु 'भगीरथ' बन गाँधी जी– दोनों को समझाने आये।
'कुरैशी', 'ख्वाजा', 'अन्सारी'– जैसे अपने साथ मिलाये॥
बिखरे फूलों को चुग चुग कर– लड़ी गूँथने चला अमर वह।
बन्द 'अली भाई' जेलों में– वहाँ छिड़ा था महासमर वह॥

हिन्दू मुसलमान मिल जायें– गाँधी का यह यत्न अमर है।
यही कसौटी गाँधी जी की, साक्षी इसका डगर डगर है॥
और 'खिलाफत' की हलचल में– जन पर लिखी पाण्डुलिपि बाँची।
'मुस्लिम लीग' मुसलमानों की– ज़हरीली तस्वीरें जाँची॥

देखी 'मुस्लिम लीग' इन्हों ने, उनके जलसों में भी बोले।
'अली भाइयों' की हालत के– गाँधी जी ने पन्ने खोले॥
खुली खिलाफ़त के प्रश्नों पर– गाँधी उनके साथ हो गये।
जिसको भी दुःखों ने घेरा– गाँधी उसके हाथ हो गये॥

ये उलझी उलझन सुलझाते– 'वायसराय नगर' में आये।
ध्वजा राजधानी 'दिल्ली' ने– स्वागत में गाँधी-गुण गाये॥
करते हुए प्रयत्न ऐक्य के– तेज जले कर्त्तव्य-मार्ग पर।
'वायसराय' मिले गाँधी से, जब था महासमर का अवसर॥







जननायक



बड़े बड़े आदर्श पेश कर- कहा, युद्ध में हाथ बटाओ !
रँगरूटों की भर्ती करवा- सीमा पर सेना भिजवाओ !!
हम हैं सदा तुम्हारे गाँधी ! हमें तुम्हारा बड़ा सहारा ।
हम जनता के सच्चे सेवक, हमने पकड़ा हाथ तुम्हारा ॥

'दिल्ली' में मेरे गाँधी से- 'वायसराय' विनतियाँ करते ।
'चेम्सफोर्ड' के आगे गाँधी- अपनी अटल उक्तियाँ धरते ॥
देख आपदा में शासन को, गाँधी चले सहायक बन कर ।
तन मन धन का मोह छोड़कर, कूद पड़े वे अंगारों पर ॥

राजभक्ति के लिये उन्होंने- अन्तर के दर्वाज़े खोले ।
पत्ते पत्ते हिले हवा से- गाँधी जी की जय जय बोले ॥
उसे आग कब जला सकी है- जिसके मन में जलती ज्वाला ।
वही बना है पूज्य कि जिसने- बालू में से तेल निकाला ॥

राजभक्त चल पड़ा कमर कस- रँगरूटों की भर्ती करने ।
पगडण्डी पर पथिक चल पड़ा- धरती माँ की पीड़ा हरने ॥
जर्जर तन पर हिमगिरि सा बल- चला जा रहा बादल-दल सा ।
या कि हृदय उमड़ा पड़ता था- उमड़ी आँखों की छल छल सा ॥

अच्छी बुरी सभी कुछ सुन सुन- भर्ती करने लगे सिपाही ।
गाँधी जी के साथ हो लिये- उसकी वाणी के हमराही ॥
गाँव गाँव में घूम घूम कर- राजभक्त का रूप दिखाया ।
हम हतभागे सीख न पाये- उसने हमको बहुत सिखाया ॥

अपने भी नाराज़ हुए पर- गाँधी ने सबको समझाया ।
भूत, भविष्यत्, वर्त्तमान को- उसने अपने पास बिठाया ॥
तीस तीस चालीस मील तक- बिना थके पैदल चलते थे ।
मूँगफली, गुड़ खा, पानी पी- घी के दीपक से जलते थे ॥

किन्तु थक गये श्रम से गाँधी, उल्टा पथ्य न पचा सके वे ।
घोर रोग ने घेरा उनको, देह न श्रम से बचा सके वे ॥
नर ! न कभी भी कर अपथ्य तू, कभी न दया अपथ्य करेगा ।
करता रहा अपथ्य अगर तू- बिना मौत के कभी मरेगा' ॥



गाँधी जी 'नड़ियाद' चल दिये- करते हुए याद ईश्वर को।
पग पग पर तन गिरा, किन्तु मन- तन को उठा चला ऊपर को॥
एक क़दम भी चलना उनको- लगता था दश मील चला हूँ।
वह वेदना देख गाँधी की- मैं जीवन में तड़प जला हूँ॥

वह असीम पीड़ा गाँधी की- कवियों की आँखें भर लाई।
चिन्तातुर थे, किन्तु मित्र सब- राम, भरत जैसे थे भाई॥
सब गाँधी की सेवा करते, गाँधी जी को लज्जा आती।
सच्चा स्नेह देख मित्रों का- गाँधी की छाती भर जाती॥

जीवन से निराश थे, लेकिन- कब पूजा की आशा टूटी।
वह न कभी भी छिन सकता है- जिसकी कभी न माला छूटी॥
परम प्रकृति ने सौरभ छिड़का, सुधाधाम ने सुधा पिलाया।
जीवन जाग उठा शैया से, जाग जगत में जीवन आया॥

फूँका लगा गाय भैंसों के- दूध निकाल पिया करता जग।
उड़ता रहा अलग हिंसा से- अपने जर्जर पंख फला खग॥
पीने लगे दूध बकरी का- लेकिन दुःख उन्हें होता था।
हिंसा की यदि चर्चा भी हो- गाँधी जी का मन रोता था॥

'माथेरन' पहुँचे गाँधी जी- 'बा' ने उनका स्वास्थ्य सुधारा।
लेकिन राजनीति गीता ने- गाँधी जी को पुनः पुकारा॥
उठ न सके थे बीमारी से- सर "रौलेट समिति" चढ़ आई।
उसकी अभिमतियाँ पढ़ पढ़ कर- गाँधी की खटिया थर्राई॥

चौंक खड़े हो गये खाट से- 'उमर' और 'शंकर' से बोले।
रसना हिली शान्त सागर की- सत्ता के सिंहासन डोले॥
गये 'अहमदाबाद' खाट तज, 'बल्लभ भाई' मिलने आये।
गाँधी ने 'रौलेट समिति' के- ख़ूनी स्याह पृष्ठ दिखलाये॥

बोले, "यदि क़ानून बने ये- तो हम ज़िन्दा मर जायेंगे।
ये सफ़ेद रँग के विषधर हैं- जो छल से काले खायेंगे॥
इसके लिये करो कुछ जल्दी", 'कहो, किया क्या जा सकता है?'
गाँधी और 'पटेल' सोचते- ज़हर पिया क्या जा सकता है??







भारत माता के भक्तों की– गाँधी जी ने सभा बुलाई।
बात कही "रौलेट समिति" की, रक्षा की तरकीब सुझाई॥
ये काले क़ानून हमारी– ज़िन्दा चिता जलाने आये।
भारत माँ के स्वाभिमान पर– ये कालिमा लगाने आये॥



'अनसूया', 'सरोजनी देवी', 'हार्निवेन' 'बल्लभभाई' वह–
'शंकरलाल' आदि ने मिलकर– लिखा प्रतिज्ञा-पत्र तभी यह–
सत्याग्रह की अमर शक्ति से– भारत भाग्य न जाने देंगे।
काले क़ानूनों का बोझा– सर पर कभी न आने देंगे॥

गाँधी को अध्यक्ष बनाकर– 'सत्याग्रह कार्यालय' खोला।
प्रमुख केन्द्र 'बम्बई' बनाया, मुक्ति-द्वार पर प्रहरी बोला॥
जगह जगह पर हुईं सभायें, अख़बारों ने धूम मचादी।
गाँधी ने पतवार थाम कर– तूफ़ानों में नाव चलादी॥

उसका मार्ग रुका कब किससे– जिसने सत् की करी अर्चना?
आन्दोलन बढ़ चला शंख से– क्रान्ति-घोष ने करी गर्जना॥
ओर उधर सरकार तन गई– असि तानी 'रौलेट-समिति' की।
काले अंग्रेज़ी शासन ने– भारत माता के प्रति अति की॥

"बिल रौलेट" गज़ट में छापा, हलचल से हिल गया देश यह।
उधर नगाड़ा, इधर बज उठी– गाँधी जी की तूती रह रह॥
'धारा सभा' मध्य बिल आया, 'शास्त्री जी' बोले विरोध में।
पर अन्धे की खुलीं न आँखें– लोभ मोह मद और क्रोध में॥

जागा हुआ ढोंग सोने का– करे अगर तो कौन जगाये?
जो न हितैषी की भी माने– उसको बटिया कौन बताये??
उलझ विचारों की लहरों में– गाँधी जी 'मद्रास' आ गये।
श्री "रंगास्वामी अयंगर", पूर्त्ति 'राजगोपाल' पा गये॥

गाँधी जी की प्रथम भेंट थी– नीति निपुण 'राजा जी' से यह।
उनके अतिथि रहे गाँधी जी, हल सोचा उनके घर पर रह॥
प्रति पल ही 'रौलेट समिति' की– 'राजा जी' से चर्चा करते।
इस ख़ूनी 'रौलेट' अनिति पर– वे ठण्ढे अंगारे धरते॥





'श्री कस्तूरी रंग' आदि ने– नेताओं की सभा बुलाई।
'वीर विजय राघवाचार्य' थे, 'महादेव देसाई' भाई॥
सब ने मिल कर करी प्रतिज्ञा– निश्चय ही सत्याग्रह होगा।
अत्याचार किये जिसने भी– उसने पापों का फल भोगा॥

इसी बीच में मिली सूचना– वह काला क़ानून छा गया।
उसी रात में सोते सोते– गाँधी जी को स्वप्न आ गया॥
बड़े सवेरे उठ गाँधी ने– 'राजा जी' को पास बुलाया।
बोले, "एक स्वप्न देखा है, उसी स्वप्न ने मुझे जगाया॥

स्वप्न नहीं वह, दैव-प्रेरणा– जिसने हमको मार्ग सुझाया।
उसी स्वप्न ने गहरे तम में– गिरतों को दीपक दिखलाया॥
इन क़ानूनों के उत्तर में– भारत भर में हों हड़तालें।
आत्मशुद्धि से युद्ध चले यह– चाहे जितने कोड़े खालें॥

शान्तिपूर्ण यह धर्म-युद्ध है, सब मिल कर उपवास करेंगे।
सत्य अहिंसा पर दृढ़ रह कर– मर कर भी हम नहीं मरेंगे॥
यह ईश्वर की अमर प्रेरणा, इससे निश्चय जीत हमारी।"
हाथ जोड़ बोले 'राजा जी'– गाँधी! सच्ची बात तुम्हारी॥

'सन् उन्निस सौ उन्निस', तिथि थी– छः अप्रैल शंख जब बोला।
जिस दिन गाँधी की वाणी सुन– हिंसा का सिंहासन डोला॥
भारत माता के आँगन में– उस दिन पहिला फूल खिला था।
उस दिन हतभागे भारत को– खोया हुआ अतीत मिला था॥

गाँधी की वाणी सुनते ही– भारत भर ने कीं हड़तालें।
चल कर उसके चरण ढूँढ लें, कहीं मिले तो उसे मनालें॥
भारत के प्रत्येक प्रान्त ने– उस दिन अपनी वाणी खोली॥
'कलकत्ता', 'बम्बई', 'कराँची', 'दिल्ली', 'मेरठ', ने जय बोली।

जलसे किये, जलूस निकाले, व्रत रक्खे, सच्चाई चाही।
मंज़िल तय कर ही लेता है– पथ पर चलने वाला राही॥
'सविनय-भंग' चला गाँधी का, क्रान्ति क्रान्ति के शोले धधके।
धधक धधक अंग्रेज़ आग से– भारत के लालों पर भभके॥











बनाय क

दमन नीति का अस्त्र उठा कर– आग बबूला हो कर टूटे।
घोड़े दौड़े, चलीं गोलियाँ, शोणित के फव्वारे छूटे॥
हिन्दू मुस्लिम, बूढ़े बच्चे, चलीं देवियाँ झण्डे ले ले।
हत्यारे अंग्रेज़ चल पड़े, रक्त पिपासे डण्डे ले ले॥

"दिल्ली" का प्रतिबिम्ब गगन में– रक्त-रँगा रँगरेज़ बन गया।
हत्याकाण्ड सिखाने वाला– हत्यारा अंग्रेज़ बन गया॥
देखो! यह दिल्ली है जिसकी– ईंट ईंट पर लिखी कहानी।
जिसकी सड़कों पर लाखों की– चढ़ी हुई है चढ़ी जवानी॥

आओ, चलें 'अमृतसर' में अब, 'जलियाँ वाला बाग़' जहाँ है।
छाती जहाँ बनी पिचकारी, खिला ख़ून से फाग जहाँ है॥
ख़ूनी अंग्रेज़ी शासन का– जिसमें काला हृदय खुल रहा।
वह ख़ूनी इतिहास कि जिससे– भारत माँ का ख़ून तुल रहा॥

हा! 'डायर' के बूट जहाँ पर– नन्हे बच्चे कुचल चल रहे।
और तभी की विधवाओं के– जहाँ अभी तक हृदय जल रहे॥
जहाँ गर्भिणी बहिन बेटियाँ– पेटों के बल चलवाई हैं।
जहाँ फूल सी नन्ही कलियाँ– फेंक आग में जलवाई हैं॥

जहाँ कि पशुता नंगी नाची, भोंके अङ्ग अङ्ग में भाले।
जहाँ कि अंग्रेज़ों ने छीले– भालों से छाती के छाले॥
वह इकलौते बेटे का शव– जिसके पास खड़ी बुढ़िया माँ।
बेटे की भस्मी के ऊपर– देखो चित्र, पड़ी दुखिया माँ॥

वह विभीषिका रंग मंच पर– कैसे तुमको दिखलाऊँ मैं?
अंग्रेज़ों जैसा पत्थर का– कहो कहाँ से दिल लाऊँ मैं??
मैं भारत माँ का बेटा हूँ, सत्य प्रेम का अमर पुजारी।
मेरा हृदय मोम सा कोमल, मेरी नीति नहीं हत्यारी॥

आओ, अब 'बम्बई' चलें हम, देखें गाँधी जी की लीला।
देखो, गाँधी पूछ रहा है– भारत माता का मुँह गीला॥
जो सच्ची पुस्तकें देश की– अंग्रेज़ों ने ज़ब्त करीं वे।
सविनय यह क़ानून भंग कर– झोलों में पुस्तकें भरीं वे॥





'हिन्द स्वराज्य' और 'सर्वोदय'– गाँधी ने पुस्तकें छपाईं।
स्वयम् सेवकों से घर घर में– ज़ब्त खुली पुस्तक बिकवाईं॥
और स्वयम् भी बैठ कार में– चले बेचने बाज़ारों में।
"श्री सरोजिनी शक्ति नायडू"– उस दिन चाँद बनी तारों में॥

गाँधी जी के साथ कार में– पुस्तक देती, हाथ फलाती।
जनता उन पर फूल चढ़ा कर– रुपयों की थैलियाँ लुटाती॥
जनता उमड़ पड़ी सागर सी– जेलों का भय छोड़ दिया था।
गाँधी जी के पद-चिह्नों से– सब ने नाता जोड़ लिया था॥

गाँधी बाबा बाँट रहे थे– 'हिन्द स्वराज्य' और 'सर्वोदय'।
हार गई सरकार सत्य से– गूंजी गाँधी जी की जय जय॥
धन्य भिखारी का भिक्षुक वह– जन-सेवा से कभी न ऊबा।
वह धरती का ऐसा सूरज– दिवस रात में कभी न डूबा॥

'दिल्ली आओ!' 'दिल्ली आओ!'– तार मिला यह लहर लहर से।
'जल्दी आओ! जल्दी आओ'– तार मिला 'लाहौर' शहर से॥
गाँधी जी चल पड़े हवा से, जब 'मथुरा' स्टेशन पर आये–
भनक मिली यह 'गिडवाणी' से– शायद पुलिस पकड़ ले जाये॥

'पलवल' स्टेशन पर आते ही– पकड़ा हाथ पुलिस-अफ़सर ने।
मातृभूमि की करी वन्दना– उसी निमिष मेरे हरि हर ने॥
कहा पुलिस-अफ़सर ने उनसे– "तुम 'पंजाब' नहीं जा सकते।
भय है हमें अशान्ति बढ़ेगी, अतः प्रवेश नहीं पा सकते॥

अब तुम बन्दी, जा न सकोगे– सीमा में पंजाब प्रान्त की।"
जैसे वीणा सुधा बहाये– ऐसे वाणी खुली शान्त की॥
"मैं न अशान्ति बढ़ाने वाला, मैं तो शान्ति कराने जाता।
मुझे न आज्ञा मान्य तुम्हारी, शान्ति शान्ति मैं प्रतिपल गाता॥"

गाँधी जी को बन्दी करके– वापिस लौटाया गाड़ी से।
ढकी हुई थी शक्ल पुलिस की– लज्जा की काली साड़ी से॥
'पलवल' से 'मथुरा' ले आये– बन्द किया 'बैरक-कारा' में।
प्रातः चार बजे फिर उनको– लेकर चले ब्रह्म तारा में॥







बन्द मालगाड़ी में करके– पुलिस उन्हें 'माधोपुर' लाई।
फिर बैठा 'बम्बई मेल' में– 'बोरिँग' ने गाड़ी चलवाई॥
गाँधी का कब्ज़ा लेने को– इन्स्पेक्टर बोरिँग आये थे।
अब पहिले दर्जे में बैठे– सज्जन बन्दी बनवाये थे॥



गाड़ी में 'इन्स्पेक्टर बोरिँग'– गाँधी जी को लगे बनाने।
और 'ओडवायर' के क़िस्से– नमक लगा कर लगे सुनाने॥
किन्तु बनाने वाला जग को– कब बहकाये से बनता है?
चाहे सौ सौ बार छान लो– छना छनाया कब छनता है??

'सूरत' आया, जहाँ कि गाँधी– बन्दी बने अन्य अफ़सर के।
'बोरिँग' फिर 'लाहौर' चल दिया– गोरे को गाँधी देकर के॥
गाँधी! तुम बिल्कुल स्वतन्त्र हो– पथ में कहा पुलिस अफ़सर ने।
पर "बम्बई" 'मरीन द्वार' पर– मुक्त तुम्हें आया हूँ करने॥

तुम्हें देखते ही जनता के– दल के दल उमड़े पड़ते हैं।
आप शान्ति के सत्य देवता– कभी न हिंसा से लड़ते हैं॥
आ पहुँचे 'मरीन लाइन्स्' पर, मुक्त-मूर्त्ति बढ़ चली अगाड़ी।
वहाँ किसी परिचित की सहसा– मिली उन्हों को घोड़ा-गाड़ी॥

जिसमें बैठ चल दिये गाँधी– "रेवा शंकर" के घर आये।
गाँधी जी को देख हर्ष से– 'शंकर' हार गूँथ कर लाये॥
बोले 'रेवाशंकर भाई'– "जब से तुम्हें पुलिस ने पकड़ा—
तब से जनता उत्तेजित है– करती है गोरों से झगड़ा॥

'पायधुनी' के पास इस समय– भारी हुल्लड़ का भय भारी।
इधर खड़ी जनता उत्तेजित– उधर पुलिस की है तैयारी॥
मजिस्ट्रेट वह पुलिस बहुत सी पहुँच गई है "पायधुनी" पर।
'उमर सुबानी' वह 'अनसूया'– आ पहुँचीं चट मोटर लेकर॥

बोली, गाँधी! शीघ्र चलो तुम, जनता बहुत अधीर हो गई।
बिना तुम्हारे शान्त न होगी, हार हमारी बुद्धि खो गई॥
गाँधी बैठ गये मोटर में, वायु वेग से बढ़े अगाड़ी।
गाँधी वे थे आगे बढ़ कर– जो न कभी भी हटे पिछाड़ी॥





जनसमुद्र ने देखा गाँधी, मदोन्मत्त हो गया देख कर।
'क्रान्ति सफल हो! क्रान्ति सफल हो!' गूंज उठा जयकारों में स्वर॥
बोल महात्मा गाँधी की जय- जलधि उमड़ पग धोने आया।
या कि राम के चरणों में फिर- सागर रत्न-सुधा भर लाया॥

लम्बा एक जलूस बन गया- मदोन्मत्त जनता न रुक सकी।
झपटी पुलिस बावली होकर, रजोन्मत्त सत्ता न झुक सकी॥
घुड़सवार दौड़े जलूस पर, जनता ने भी फेंके पत्थर।
ईंटें पत्थर फेंक रही थी- बनी बावली जनता उन पर॥

गाँधी जी तक के कहने से- रुकी न वह जनता मतवाली।
उधर जलधि की लहर लहर पर- मनती देखी महा दिवाली॥
जब 'अब्दुल रहमान गली' पर- पहुँचा वह जलूस मतवाला-
गर्जी पुलिस, तन गये भाले, धधक उठी हिंसा की ज्वाला॥

रोक जलूस चलाये घोड़े, फिर भी जनता नहीं समाई।
तितर बितर का हुक्म हो गया, गाँधी की तबियत घबराई॥
सोचा, अगर चल गई गोली- निर्दोषों का खून बहेगा।
घोड़े दौड़े, जनता बोली- चल कर आज जलूस रहेगा॥

भाले तान, तान बन्दूकें- घोड़े दौड़ाये जनता पर।
शान्त रहो सब, शान्त रहो सब- गाँधी कहते चीख़ चीख़ कर॥
कोई कुचला, कोई घायल, कोई सीधा स्वर्ग सिधारा।
शान्त रहो सब, शान्त रहो सब- रहा चीख़ता एक बिचारा॥

बड़ा भयंकर दृश्य उस समय, जनता और पुलिस मतवाली।
दुनिया में बजती देखी है- दोनों ही हाथों से ताली॥
आँख मूँद कर पुलिस उस समय- घोड़े दौड़ाये जाती थी।
मतवाली जनता भाले खा- गाँधी की जय जय गाती थी॥

इधर उधर हिलने तक को भी- तिल भर जगह नहीं थी बाक़ी।
दोनों जीत समझ कर बैठे- निकल गई गाँधी की झाँकी॥
शीघ्र कमिश्नर के दफ्तर जा, मिले कमिश्नर से गाँधी जी।
'बोरिंग' भी जम रहे वहाँ थे, बैठे शंकर से गाँधी जी॥







'ग्रिफिथ' कमिश्नर से गाँधी ने– "पायधुनी" की कही कहानी।
कहा 'ग्रिफिथ' ने, जाने देते– कैसे वह जलूस तूफानी॥
यदि जलूस फोर्ट तक जाता– तो निश्चय ही जलती ज्वाला।
जब हमने देखा, जलूस यह– वापिस नहीं लौटने वाला–
तब हमला कर दिया पुलिस ने, कहो, और क्या करते तब हम?
गाँधी बोले, पर हमलों से– कितनों ही के निकल गये दम॥
मुझको तो ऐसा लगता है– वहाँ न घुड़सवार दौड़ाते।
स्वतन्त्रता के दीवाने थे, गा लेते जितना भी गाते॥
बोले 'ग्रिफ़िथ', उन्हों के ऊपर– ऐसा पड़ा प्रभाव तुम्हारा।
जिनकी आवाज़ों के आगे– हार गया हथियार हमारा॥
तन का मोह छोड़ कर जनता– मतवाली हो टूट रही है।
जनता 'क्रान्ति! क्रान्ति!' चिल्लाती– शान्ति मार्ग से छूट रही है॥
'अमृतशहर' 'अहमदाबाद' में– बने लोग पागल दीवाने।
तार काटते, आग लगाते– गाते इनक़लाब के गाने॥
गाँधी बोले, लोग जन्म से– सत्य शान्ति प्रिय, नहीं लड़ाके।
चाह रहे हो सौरभ सुन्दर, भारत माँ के फूल सड़ा के॥
सत्य शान्ति का पाठ पढ़ाने– गाँधी जी चल दिये चाँद से।
'चौपाटी' पर जलसे में वे– रजनी में आ लिये चाँद से॥
सत्याग्रह की मर्यादा का– प्रेम शान्ति से पाठ पढ़ाया।
फिर आगे 'अहमदाबाद' को– गाँधी जी ने पैर बढ़ाया॥
जहाँ खून बहता था ऐसे– जैसे वर्षा में पतनाले।
जहाँ कि मतवाली जनता ने– जलसे किये, करीं हड़तालें॥
जहाँ सैंकड़ों मरे निहत्थे– एक सिपाही को भी मारा।
जहाँ कि 'मार्शल लॉ' चलता था– मानो था मसान हत्यारा॥
मिले "प्रैट" अफ़सर से गाँधी, जो गुस्से से लाल लाल थे।
गाँधी सागर, 'प्रैट' अग्नि थे, गाँधी जीवन, मन प्रवाल थे॥
ऐसे वाणी खुली शान्त की– जैसे चाँद निकल आया हो।
ऐसे गुस्सा बुझा नीर से– जैसे प्यार पड़ा पाया हो॥







जो कुछ रक्त बहा पानी बन- बहुत दुःख माना गाँधी ने।
कितने पके आम गिराये- मधुऋतु में अन्धी आँधी ने॥
इस घटना पर में गाँधी ने- तीन दिवस उपवास किया था।
मैंने भी ईश्वर के आगे- अपना दोष क़बूल लिया था॥

सब को शान्त किया गाँधी ने, भूलों से भुलवाई भूलें।
उनको कौन बचाने वाला- जो खुद ही फाँसी पर झूलें॥
जब तक शान्ति और मर्यादा- सत्याग्रह में नहीं रहेगी।
तब तक हिंसा राज्य करेगी- तब तक दुनिया दुःख सहेगी॥

आँख मूँद कर सरपट दौड़े- वह गड्ढे में गिर जाता है।
सच्चे सत्याग्रही वीर को- झूठ नहीं तिल भर भाता है॥
स्वेच्छा से आदर्श कार्य वह- हर डग पर करता ही रहता।
चाहे फाँसी पर चढ़ जाये- वह न कभी भी अनुचित कहता॥

जो हैं चोर उन्हों को, बोलो- क़ानूनों का बन्धन ही क्या?
जो आँसू गिर बने न सागर- हिले न पत्थर, क्रन्दन ही क्या??
भारत माँ के सत्य-रूप ने- सूक्ष्म-रूप धर दिया सामने।
भूल अगर हो भूल मानलो- बार बार यह कहा राम ने॥

हिंसा देख देख दुखियों की- सत्य रूप ने आग बुझाई।
आन्दोलन रोका हिंसा का, सत्याग्रह की भूल बताई॥
रोक दिये तूफ़ान निमिष में, अचल हिमालय डिगा न तिल भर।
दावानल रोका गाँधी ने, निर्मल गंगा नदी बह झर॥

जो मस्तक में घुसे बुद्धि सी- गाँधी जी ने बात कही वह।
रचा मनोविज्ञान ज्ञान ने, गाँधी जी की बात गई रह॥
तिल भर भी यदि भूल हुई तो- गाँधी ने पर्वत सी मानी।
बाह्य और अन्तर संगम की- गाँधी ने सुन्दरता जानी॥







वह अन्तर की सुन्दरता से– प्यार पालता चलता था।
वह मँझधार पड़ी नौका को– पार हाँकता चलता था॥

वह खँडहर के टूटे दीपक–
जोड़ दिया करता था राम!
स्नेह डाल खाली दीपों में–
जला दिया करता था राम!

उस प्रकाश में ढूँढ रहा कवि–
चित्र जले हृदयों के राम!
उस प्रकाश में ढूँढ रहा रवि–
मित्र जले हृदयों के राम!

तन मिट्टी के दीप बनाकर– दीप बालता चलता था।
वह अन्तर की सुन्दरता से– प्यार पालता चलता था॥



प्रकृति-प्रिया की चंचलता पर– माँझी तैरा रहा तिरंगा।
लहर लहर पर प्यार लुटाती– यौवन लिये रूप की गंगा॥
इस गंगा में वही नहाये– जो मृत्युंजय के पद पर हो।
मानस की झनकार वही गति– जो जीवन की शान्त लहर हो॥

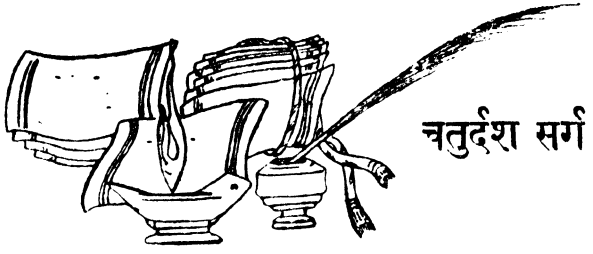
संसृति के मनहर मेले में– सुन्दरता साकार खड़ी है।
मानो रूपराशि ईश्वर की– भावुकता में बिखर पड़ी है॥
निराकार का नृत्य हो रहा, आँखों में भ्रम का विकार है।
उलझ रहीं आँखें आँखों पर, सुन्दरता का चमत्कार है॥

अमृत भरे मानव-जीवन को– मन की लहरें हिला रही हैं।
चित्रकार की चंचल आँखें– मधु रूपामृत पिला रही हैं॥
पल भर में मन बाँध पलक से, छलने वाली खो जाती है।
चंचलता में चाह चाँद सी, स्वप्न देख कर सो जाती है॥









चतुर्दश सर्ग



विस्तृत ज्योति जगत में फैली, व्यापक वे सिद्धान्त अमर हैं।
सत्य प्रेम मर्यादा एवं- भक्ति अहिंसा संगम पर हैं॥
युति यदि युग्म न कर पाये तुम, पंख कटेंगे, यान रुकेगा।
युक्त यात्रियों के चरणों में- प्यार लिये पाषाण झुकेगा॥
पढ़ी मानसिक लिपि गाँधी ने, मस्तक की भाषा पहिचानी।
बात वही निकली वाणी से- जिसने भर दी नयी जवानी॥
उसके स्वर से निकल रही है- गहरी बात सरल भाषा में।
जन जन का मंगल अङ्कित है- महापुरुष की अभिलाषा में॥
कहाँ कहाँ कीटाणु विषैले, वैद्य जानता था अणुवीक्षण।
औषधि ढूँढ ढूँढ कर लाये, गाँधी छान छान कर कण कण॥
दवा वही है जिसको रोगी- कड़वी कह कर थूक न डाले।
ऐसे कवि केवल गाँधी ही, जो मानस से हंस निकाले॥
'नवजीवन' वह 'यंग इण्डिया'- अख़बारों में चित्र इन्हों के।
पत्र 'क्रॉनिकल' 'हरिजन' जैसे- सच्चे सेवक मित्र इन्हों के॥
जिनके अक्षर अक्षर में हैं- भारतमाता की तस्वीरें।
जिनके अङ्क अङ्क में अङ्कित- दुनिया की अच्छी तक़दीरें॥
जिनकी पंक्ति पंक्ति में चित्रित- नंगे भूखों की तदबीरें।
जिनके पृष्ठ पृष्ठ पर खींची- अटल सत्य ने अमर लकीरें॥
सत्याग्रह की रूप-राशि का- जिनमें लिखा हुआ है लेखा।
जिनके सिद्धान्तों में रह कर- जग ने सुख का दीपक देखा॥







जननायक



गाँधी जी अपने जीवन में– बैठे नहीं निमिष भर भी थक।
तब तक चलते रहे बराबर– जब तक पहुँचे नहीं लक्ष्य तक॥
अमर पथिक 'पंजाब' चल दिये, जहाँ शहीदों की समाधियाँ।
उन्हें सान्त्वना देने पहुँचे, जिनके ऊपर पड़ीं लाठियाँ॥
पहुँच गये 'लाहौर' रेल से, पीड़ित फूले नहीं समाये।
मानो आज 'अयोध्या जी' में– बन से 'राम' लौट कर आये॥
पागल से सब हुए हर्ष से, बजी कृष्ण की वंशी मानो।
गाँधी की पग ध्वनि में घुलमिल– मानो बजता रहा पियानो॥
अतिथि बने 'सरला देवी' के, बनी धर्मशाला उनका घर।
बैठे जहाँ कहीं गाँधी जी– जलसे और जलूस वहीं पर॥
बन्द किये पंजाबी नेता, अंग्रेज़ों ने खोदी खाई।
जहाँ खून के दाग़ वहाँ पर– 'हंटर समिति' जाँच को आई॥
'पंडित मोतीलाल नेहरू', 'मालवीय जी' आगे आये।
वे गाँधी के, गाँधी उनके, त्यागों ने उनके गुण गाये॥
'हंटर दल' के बहिष्कार की– करी प्रतिज्ञा इन वीरों ने।
सारी दुनिया को दमकाया– भारत माँ के इन हीरों ने॥
'तैयब जी', 'जयकर', 'चितरंजन', गाँधी गीत बन गये जग के।
नयी हवा चल पड़ी उसी क्षण– जिस क्षण पर फैले उस खग के॥
गाँधी जी 'गोराशाही' के– ख़ूनी विवरण लगे खोजने।
जुल्म और हत्याकाण्डों के– गाँधी कण कण लगे खोजने॥
कैसे भूलें उस बच्ची को– जो नंगी भालों पर खेली?
सत्ता के भूखे शासन ने– मानवता तज, पशुता ले ली॥
नाच रहे 'लाहौर' शहर में– लाल लाल ख़ूनी हत्यारे।
धधक रहे माँ की छाती पर– 'डायरशाही' के अंगारे॥
वह राजा क्या जो जनता का– पी पी ख़ून लाल मुँह करले?
वह राजा क्या जो जनता को– लूट लूट अपना घर भरले?
इतने में 'हकीम साहब' का– गाँधी जी को मिला निमन्त्रण।
मुस्लिम-धर्म, 'अरब', 'सरहद' पर– फैलाये जब गोरों ने फण॥





तब आन्दोलन के बारे में- हिन्दू-मुस्लिम-सभा बुलाई।
'श्रद्धानन्द' आदि ने जिसमें- अपनी सारी शक्ति लगाई ॥
'प्रश्न ख़िलाफ़त' का जब आया- 'गो-रक्षा' का प्रश्न छिड़ गया।
दोनों प्रश्न साथ सुनते हो- महापुरुष का हृदय चिढ़ गया ॥

बोले, दोनों प्रश्न अलग हैं, अलग अलग है मूल्य इन्हों का।
कैसे वे दो मिल सकते हैं- पूरब पश्चिम लक्ष्य जिन्हों का ॥
कहो, क्या कभी जाती देखी- मोटर रेल एक पटरी पर?
क्या कोई दिखला सकता है- पटरी पर लारियाँ चला कर??

रेल और मोटर को यदि तुम- साथ चलाओगे पटरी पर-
एक क़दम भी चल न सकेंगी- मिट्टी बन जायेंगी जल कर ॥
उस क्षण हिन्दू मुस्लिम भाई- एक नदी बन कर बहते थे।
'कभी नहीं 'गो-वध' करने के'- उस क्षण मुसलमान कहते थे ॥

किन्तु हिमालय ही स्थिर देखा, नहीं स्वार्थपरता स्थिर देखी।
शान्ति अमरता में मिलती है, नहीं चंचला रति चिर देखी ॥
तत्त्व और अस्तित्व समझकर- गाँधी जी की बात मान ली।
किसमें कितना विष, कितना मधु, गाँधी ने पहिचान जान ली ॥

विरले तार्किक, बड़े खिलाड़ी- यहीं मिले 'हसरत-मोहानी'।
बात बात में सागर जैसी- उनकी उमड़ी हुई जवानी ॥
गाँधी से मतभेद इन्हों का, किन्तु मित्रता मिसरी जैसी।
इस आँखों वाली दुनिया में- युग युग जिये शत्रुता ऐसी ॥

दो दिन की दुनिया है, इसमें- क्या दुश्मनी? भलाई करलो!
दानवता मन चढ़ी छोड़कर- सागर से गंगा-जल भर लो!
आया यह प्रस्ताव कि सब मिल- दूर हटा दें अंग्रेज़ी तम।
जितना ब्रिटिश माल है उसका- कर दें फ़ौरन बहिष्कार हम ॥

गाँधी जी विरोध कर बोले- इस से होगी हार हमारी।
शस्त्र हमारा हमें काट दे- ऐसी नहीं करो तैयारी ॥
हम में ऐसा कौन कि जिसके- सर पर अंग्रेज़ियत नहीं है।
कहीं घड़ी है, कहीं टोप है, डीयर, डार्लिंग, आदि कहीं है ॥







जनायक



जब तक देशी जुटें न साधन– तब तक बहिष्कार क्या होगा ?
जब तक खद्दर करें न पैदा– तब तक तिरस्कार क्या होगा ??
जो व्रत हम से भी न पूर्ण हो– जनता कैसे कर पायेगी ?
नाविक हो यदि हुआ अधूरा– नाव भँवर में रह जायेगी ॥

अब यह प्रश्न सामने आया– कैसे नाव चलेगी आगे ?
मेरे गाँधी की वाणी पर– अन्तर के नारायण जागे ॥
धरती गोल, घूम धरती पर– तेरा गाँधी का आवर्त्तन ।
"असहयोग" निकला वाणी से, सत्य शान्ति ने किया समर्थन ॥

'असहयोग' के आन्दोलन का– पास हुआ प्रस्ताव सभा में ।
नयी सृष्टि के सगुन बन गये– गाँधी जी के भाव सभा में ॥
अंकित 'असहयोग' वाणी में– हँसता हुआ भविष्य प्राप्त है ।
'असहयोग' के उच्चारण में– सत्याग्रह का रूप व्याप्त है ॥

नयी सृष्टि रचते चलते थे– मेरे गाँधी जी पग पग पर ।
सभा समाप्त हुई मधु पाकर, गाँधी जी चल दिये 'अमृतसर' ॥
चले 'अमृतसर' को गाँधी जी, 'महासभा' के अधिवेशन में ।
बड़े बड़े नेतागण आये– महा प्रभा के अधिवेशन में ॥

बड़ी शान का अधिवेशन था, बड़ी शान के नेता आये ।
'भारत-भूषण मालवीय जी', 'लोकमान्य' के दर्शन पाये ॥
'मोतीलाल' और 'चितरंजन'– चाँद सूर्य से चमक रहे थे ।
जिन में सन्त सगुण गाँधी जी– ध्रुव तारे से दमक रहे थे ॥

'मालवीय जी' का कमरा था– या कि धर्मशाला निर्धन की ।
जन जन पर सुगन्ध उड़ती थी– भारत-भूषण के चन्दन की ॥
गाँधी का दर्बार हुआ था– वहीं कहीं पर कोने से में ।
दुर्बल सी खटिया के ऊपर– लगे हुए गाँधी के खेमें ॥

सर 'विलियम विन्सेण्ट' कि जिसने– कौंसिल में 'रौलट बिल' रखकर–
अंग्रेज़ों का काला मुँह कर– गया फूस में चिनगारी धर ॥
हत्यारे डायर पिशाच के– चुभे हुए हैं दिल में भाले ।
बापू की विचार धारा में– छाती के वे फूटे छाले ॥



वह 'तेरह अप्रैल' कि जिस दिन– 'डायर' ने ख़ूनी मुँह फाड़ा।
और दुधमुँहे बच्चों तक को– जिस निर्मम ने ज़िन्दा गाड़ा॥
कैसे भला भूल सकते हैं– "जलियाँवाला बाग़" बताओ?
जिनके जले सुहाग वहाँ पर– उन विधवाओं को समझाओ॥

देखो, उन बूढ़े बच्चों पर– 'डायर' की चल रहीं गोलियाँ।
'जलियाँ वाले हरे बाग़' में– बच्चों की जल रहीं होलियाँ॥
घायल एवं मरने वाले– इतने जितने गिन न सके हम।
जब तक ख़तम न हुईं गोलियाँ– तब तक ठोके 'डायर' ने खम॥

जनता पर गोलियाँ चलाना– किसी राज्य का धर्म नहीं है।
सोते हुए वीर को डसना– वीर पुरुष का कर्म नहीं है॥
पर हिन्दू, मुस्लिम, सिक्खों, के– शोणित से सिंचित धरती पर–
स्मृति के चिह्न शेष हैं अब तक, जलज और जल में क्या अन्तर?

इन्हीं विचारों में गाँधी जी– पथ टटोलते थे खटिया पर।
बारम्बार प्रणाम उसे है– जिसने पहुँचाया बटिया पर॥
साहस और परिश्रम बल से– जिसने 'लोकमान्य' को पाया।
'देशबन्धु' वह 'मालवीय' ने– जिनको अपना सगा बनाया॥

'मालवीय' वे सार्वजनिक हित– जो झोली ले फिरे देश में।
जिनके गौरव गीत अमर हैं– अखिल विश्व में काँगरेस में॥
'काँगरेस' में 'दादाभाई– नौरोजी' का चित्र मनोहर।
धन्य विजयी 'आनन्द चार्लू'– ईश्वर की वह महा धरोहर॥

'धन्य 'दीनशा एदल जी' जो– काँगरेस दे गये देश को।
धन्य 'आकटे वियन ह्यूम' जो– बना गये हैं काँगरेस को॥
जय जय जय 'गोपाल गोखले'– काँगरेस के अमर पुजारी।
इधर अहिंसक काँगरेस थी– उधर ग़ैर सत्ता हत्यारी॥

'त्र्यम्बक' 'तैयब' और 'तिलक' जी– लोकमान्य नेताओं की जय।
धन्य 'सुरेन्द्र बनर्जी', 'वसु' जय– सत्य अहिंसा 'मालवीय' लय॥
धन्य 'लाजपत राय' जिन्होंने– देशदीप को शलभ दे दिये।
धन्य 'मेहता' 'घोष' आदि हैं– जिनसे जग ने रत्न ले लिये॥









जननायक

धन्य 'विजय राघवाचार्य' हैं– 'रामपाल' 'अम्बिका' चरण जय।
'महादेव गोविन्द रानडे'– 'मौलाना मज़हरुल' हुए लय॥
वीर "विशन नारायण दर" वह– 'पन्तुल' 'दत्त' फूल घर घर में।
'मुरलीधर' 'सच्चिदानन्द' ने– दीप जलाये नगर नगर में॥



काँगरेस की अमर इमारत– बलिदानों पर खड़ी हुई है।
इन पुत्रों पर भारत माता– ऊँचा सर कर खड़ी हुई है॥
महासभा की महा जीवनी– केवल वाणी लिख सकती है।
कर्णधार गाँधी का जीवन– वह कल्याणी लिख सकती है॥

ऋषि, मुनि-मण्डल में गाँधी जी– 'ऋषि शुकदेव' सदृश तब आये।
कर्णधार मिल गया नाव को, नारायण के दर्शन पाये॥
काँगरेस की भक्ति देखकर– दौड़ स्वयम् भगवान आ गये।
सत्य अहिंसा और प्रेम के– चारों ओर वितान छा गये॥

जब बच्चे उछाल भालों पर– खूनी नंगे नाच रहे थे।
हिंसा के नंगे नर्तन में– जब बूढ़ों के खून बहे थे॥
तभी अहिंसा मूर्त्त-रूप धर– उतरी रक्त-लिपी धरती पर।
तृषित और जलती धरती पर– मानो बरस पड़े हों जलधर॥

'महासभा' के अधिवेशन में– हुआ महात्माओं का संगम।
'जम जम'–जल का हुआ प्रेम से– गंगा यमुनाओं में संगम॥
गाँधी जी ने स्वाभिमान से– स्वतन्त्रता का किया समर्थन।
कितने ही प्रस्ताव हुए वे– जिनमें कटे पड़े हैं बन्धन॥

धारा सा प्रस्ताव हुआ जो– स्वर्ण अक्षरों में अंकित वह।
'यह स्वतन्त्रता योग्य शक्ति है, वह भूला है जो अयोग्य कह॥'
'वैध सुधारों के बारे में– दिल्ली का प्रस्ताव अमर है'।
गाँधी को अभिवादन जिनके– चरणों से यह ऊँचा सर है॥

और आत्म-निर्णय आगे कर– पार्लमेंट को लिख भेजा यह–
'उत्तरदायी शासन' रचकर– न्याय-नीति से न्याय करे वह॥
'दास' और गाँधी ने मिलकर– माँजे सब प्रस्ताव बुद्धि से।
बार बार उन पर विचार कर– शुद्ध कर दिये आत्म शुद्धि से॥





'महासभा' में वर्तमान से- रचना करी भविष्य काल की।
गाँठ गाँठ सुलझाई उसने- जग के उलझे हुए जाल की॥
निर्धनता, भुखमरी, नग्नता- बनीं समस्यायें भारत की।
किया दुःख में याद राम को, नौका कभी न रुकती सत की॥

वह रोज़ समस्या सुलझाता।

पर सुलझाने से पहिले ही- उलझातीं नयी समस्यायें।
गाँधी के पदचिह्नों पर चल- आओ हम उलझन सुलझायें॥
उलझन की सुलझन राम-नाम, आओ सब राम-नाम गायें।
जग उलझन, जग में मत उलझो, बस राम एक, लाखों रायें॥

उलझन में राम याद आता।
वह रोज़ समस्या सुलझाता॥



राम! मैं अपराध भी हूँ, भूल भी हूँ।
साध हूँ, जग के हृदय में शूल भी हूँ॥

थक रहा हूँ और चलता जा रहा हूँ।
ज्योति जग को बाँट ढलता जा रहा हूँ॥
पिस रहा हूँ किन्तु खिलता जा रहा हूँ।
कैंचियों से रोज़ सिलता जा रहा हूँ॥

राम! मैं मँझधार भी हूँ, कूल भी हूँ।
राम! मैं अपराध भी हूँ, भूल भी हूँ॥

राम! चलना चाहता पर- मार्ग में काँटे रँगीले।
बाँध लेते बन्धनों में- रँग दिखा कर लाल पीले॥

कदम जब आगे बढ़ाता- रोक लेता मोह जग का।
मुक्ति-पथ पर आँच आती- फैल जाता जाल ठग का॥
राम! जग की चाह में फँस- राह जग की छूट जाती।
याद जब करता तुझे मैं- खींच कर तृष्णा बुलाती॥

राम! तुझको टेरते हैं- दुःख में ये नयन गीले।
राम! चलना चाहता पर- मार्ग में काँटे रँगीले॥







राम ! अंग्रेज़ी हवा से- आज सारे पेड़ सूखे।
राम ! पथ पथ पर पड़े हैं- आज नर कंकाल भूखे ॥

आज टुकड़े के लिये यह- विश्व सारा रो रहा है।
लाज बिकती है कफ़न पर, आज यह क्या हो रहा है ?
राम ! अपने चरण दे दो- बढ़ चलूँ आगे अकेला।
मौत से लड़ने चलूँ अब- बहुत सोया, बहुत खेला ॥

पी चुका मधु, ज़हर पीना- चाहते हैं ओठ रूखे।
राम ! अंग्रेज़ी हवा से- आज सारे पेड़ सूखे ॥

राम ! सबको शान्ति दो तुम।
भ्रान्ति फूँको, कान्ति दो तुम ॥
सत्य क्या ? क्या है अनश्वर ?
सत्य को पहिचान ले नर।
भुल को क्यों फूल समझें ?
भँवर को क्यों कूल समझें ??
क्रान्ति में अब कान्ति दो तुम।
राम ! सब को शान्ति दो तुम ॥

किया राम को याद जिस समय- सहसा मिले उपाय अभंगुर।
'चर्खे कर्घे में स्वतन्त्रता'- मिले विश्व को विशद शिवं गुर ॥
चर्खा निर्धन का कपड़ा है, चर्खा भूखों की रोटी है।
चर्खे में स्वतन्त्रता देवी, विश्व- समुन्नति की चोटी है ॥

अपने आश्रम में कर्घे पर- भक्तों से कपड़ा बुनवाया।
ग्राम ग्राम में जा गाँधी ने- बहिनों से चर्खा कतवाया ॥
ढूँढ जुलाहे लाये गाँधी, ढूँढ ढूँढ कर चर्खे लाये।
पैर छिल गये तब गाँधी ने- पहिले पहिले चर्खे पाये ॥

महासाहसी 'गंगाबाई'- गाँधी जी की पूर्ति बन गई।
चर्खा ढूँढ दिया गाँधी को- या चर्खे की मूर्ति बन गई ॥
सब कुरीतियाँ छोड़ बिचारी- गाँधी की वाणी पर चलदी।
गाँधी जी के पदचिह्नों पर- दीप जलाये जलदी जलदी ॥







'गंगा बहिन' घूमती डोली, 'बीजापुर' में चर्खा पाया।
जो गहरे पानी में उतरा– जिसकी चाह ढूँढ वह लाया॥
'बीजापुर' में माँ बहिनों ने– चर्खे रख छोड़े टाँडों पर।
मन में फूले नहीं समाये– गाँधी जी चर्खे को पाकर॥

टाँडों से चर्खे उतार कर– उन माँ बहिनों से कतवाये।
पूनी देकर सूत कता कर– रोटी दी, कपड़े दिलवाये॥
चर्खे कतवाने के हित में– 'गंगा बहिन' मशीन बन गई।
भारत माँ ने चर्खा पाया– या रूठी तक़दीर मन गई॥

गाँधी जी ने भीख माँग कर– रुई मँगाई, सूत कताया।
चले गये वे जिधर उधर ही– नया कातने वाला पाया॥
आश्रम में चर्खे मँगवाकर– जन जन से चर्खा चलवाया।
तार तार से खादी बुनकर– भूखों को भोजन करवाया॥

उस भविष्य ज्ञानी ने जग में– खद्दर के टुकड़े बिकवाये।
जो मलमल पहिना करते थे– वे खद्दर में सज कर आये॥
चर्खे की तानें सुनते थे– भारत माँ के ताने बाने।
'भिनन भिनन भिन निन निन तिन तीं– सुनते थे चर्खों के गाने॥

चर मर चर चर्खे चलते थे– बहिनें सूत कातती गातीं।
लम्बे लम्बे तार खींचतीं– तारों से मोती बरसातीं॥
देख देख चर्खों का चलना– गाँधी फूले नहीं समाते।
कात साथ में चर्खे उनके– गाँधी राम-नाम गुण गाते॥

सोओ मेरे राम ! तुम्हें मैं सुला रहा हूँ।

पंखा झलती रहें दृगों की लज्जित पलकें।
सावन भादो बन जायें धागों सी अलकें॥
चित्र खींचता रहूँ निरन्तर राम ! तुम्हारे–
सोओ मेरे राम ! तुम्हें मैं सुला रहा हूँ॥

राम ! मेरी गल्तियों को दूर कर दो !
राम ! मैं मदचूर, तुम मद चूर कर दो !!







जनायक



वासना की आग में मैं जल रहा हूँ।
मैं छला जाकर असत को छल रहा हूँ॥
गल रहा हूँ, पैर मेरे फँस रहे हैं।
मौत सर पर नाचती, पर हँस रहे हैं॥
राम! सर पर तुम दया का हाथ धर दो!
राम! मेरी गल्तियों को दूर कर दो!!

राम! मेरे पाप सारे माफ़ कर दो!
राम! मेरा मन मलिन है, साफ़ कर दो!!

मैं बड़ा पापी तुम्हारे पास आया।
तुम शरण में लो– लिये यह आश आया॥
जल रहा जीवन, बुझादो स्नेह-जल से।
राम! मैं छल, तुम छुड़ालो मुझे छल से॥

राम! धो धो दाग़ दिल के साफ़ कर दो!
राम! मेरे पाप सारे माफ़ कर दो!!

मैंने लाखों पाप किये हैं, तुमने लाखों क्षमा किये।
मैं गड्ढे में गिरा कि सहसा– तुमने अपने चरण दिये॥
जब भी डूबा बीच भँवर में– तुमने तभी निकाल लिया।
मेरे जैसे पापी को भी– मुँह माँगा वरदान दिया॥
मैं कलियुग का पापी जिसको– तुमने किया किनारे पर।
बार बार तुझको प्रणाम है– ओ नर नारायण ईश्वर!

राम! आज संग्राम छिड़ गया– दैत्य-शक्ति में, राम-भक्ति में।
मैं अपने को घोल चुका हूँ– राम-भक्ति में, सर्व शक्ति में॥
राम! तुम्हारे ही चरणों में– अपनी नौका छोड़ चुका हूँ।
जग से नाता तोड़ राम! मैं– तुम से नाता जोड़ चुका हूँ॥
छोड़ चुका हूँ पाप पुण्य का– सारा भार तुम्हारे ऊपर।
मेरा और दुखी दुनिया का– सारा प्यार तुम्हारे ऊपर॥
तुम अतीत हो, वर्तमान तुम, तुम भविष्य हो सृष्टि व्यक्ति में।
राम! आज संग्राम छिड़ गया– दैत्य-शक्ति में, राम-भक्ति में॥





राम ! सब सहता रहूँ, वरदान दो यह ।
भक्त तेरा हूँ, मुझे- अभिमान दो यह ॥
अब न गाऊँ गीत इस- नश्वर जगत के ।
अब न आयें याद वे- दुर्दिन विगत के ॥
ज्ञान का अभिमान लेकर- भक्ति-रस दो ।
राम-रस पीता रहूँ, यह शक्ति बस दो ॥
भक्ति-रस से पूर्ण जग हो- ज्ञान दो यह ।
राम ! सब सहता रहूँ, वरदान दो यह ॥

राम-नाम का शेष रहा है- मेरे पास सहारा ।
भक्ति भावना बना रहे यह- प्रेम प्रकाश तुम्हारा ॥
दुखियारी आँखों से प्रतिपल- तुम पर अर्घ्य चढ़ाता ।
राम ! तुम्हारे अभिनन्दन में- प्रतिपल दीप जलाता ॥
दीप बाट में जलते रहते, मैं भी जलता रहता ।
प्रातः आता, सन्ध्या आती, जीवन ढलता रहता ॥
पर पूजा के लिये न ढूँढा- ईश्वर ! चरण तुम्हारा ।
राम-नाम का शेष रहा है- मेरे पास सहारा ॥



राम रमे खद्दरमय गाँधी- बने सत्य शिव खद्दरधारी ।
खद्दर की धोती बुन लाई- देवी 'गंगा बहिन बिचारी ॥'
वीर विजयिनी 'गंगाबाई'- धन्य धन्य चर्खे की माता ।
यदि न भगीरथ गंगा लाते- कैसे पीड़ित जग तर जाता ॥
गाँधी जी के संकल्पों से- चर्खों के आन्दोलन जागे ।
चर्खों की तानें सुन सुन कर- रोये मिल-मालिक हतभागे ॥
गाँधी जी के पास गये वे, बड़े बड़े लालच दिखलाये ।
या कि कला की हत्या करने- कीड़े लिये थैलियाँ आये ॥
लाखों लालच दिये उन्हों ने, फँसे नहीं निर्द्वन्द जाल में ।
जीवन और जवानी उनकी, रहते हैं जो मस्त खाल में ॥
मिल वालों से कहा उन्हों ने- अपने सब लालच ले जाओ !
भारत माँ के आँचल का धन- अरे न डाकों में लुटवाओ !!





जनायक

चर्खे कातो ! चर्खे कातो ! अरे, न मुझे सीख खोटी दो।
विधवाओं का ख़ून न चूसो, नंगे भूखों को रोटी दो॥
बोले मिल-मालिक गाँधी से- चर्खे क्या हैं यन्त्रकाल में?
गाँधी बोले, मैं न फँसूंगा- षड्यन्त्रों के बिछे जाल में॥



चर्खों का आन्दोलन जागा, बने बहुत से खद्दरधारी।
ज्योति पुञ्ज ! जगतीतल के धन ! जय हो मोहनदास ! तुम्हारी॥
सत्यशोध से पृष्ठ पलट कर- 'असहयोग' के पथ पर आये।
अपने जीवन से गाँधी ने- जीवन बरसा फूल खिलाये॥

'अली भाइयों' का आन्दोलन- चला 'खिलाफ़त' के बारे में।
'उलमाओं' के साथ शान्ति से- गाँधी घूम लिये सारे में॥
शान्ति, अहिंसा के पालन की- मुसलमान पर धरी प्रतिज्ञा।
अन्त 'खिलाफत सम्मेलन में- असहयोग की करी प्रतिज्ञा॥

सारी रात कसौटी पर कस- पास हुआ प्रस्ताव सभा में।
चुम्बक जैसी महाशक्ति थी- गाँधी जी की पूर्ण प्रभा में॥
फिर 'गुजरात' गये गाँधी जी, 'राजकीय परिषद्' में बोले।
सत्य आत्म बल के गौरव से- असहयोग के पन्ने खोले॥

'परिषद्' बोला, 'असहयोग' पर- 'महासभा' की छाप लगाओ!
गाँधी बोले, हटो न पीछे, आगे अपने पैर बढ़ाओ!
'तैयब जी' 'पटेल'-वाणी से- पास हुआ प्रस्ताव वहाँ भी।
मन्त्र मुग्ध हो गये वहीं सब- चरण उन्हीं के गये जहाँ भी॥

'असहयोग' के बड़े प्रश्न पर- 'महासभा' ने सभा बुलाई।
'कलकत्ते' में काँगरेस की- गाँधी जी ने शान बढ़ाई॥
बड़े बड़े नेतागण पहुँचे, 'लाला जी' अध्यक्ष लाजपत।
मानो मूर्त रूप बन बैठे- दर्शक और सदस्यों से सत॥

'असहयोग' का बना मसविदा- सत्य अहिंसा पूर्ण शान्ति से।
भारत माँ स्वाधीन करेंगे- पूर्ण शान्ति की महाक्रान्ति से॥
असहयोग हो पर स्वराज्य को- बोले सत्य शान्ति के तारे।
हम परतन्त्र स्वतन्त्र न जब तक- तब तक क्रान्ति क्रान्ति के नारे॥





'कलकत्ते' में 'असहयोग' का– सब नेताओं ने प्रण ठाना।
वीर दिवंगत 'लोकमान्य' का– बहुत दुःख गाँधी ने माना॥
पलक मूँदते ही पल भर में– 'लोकमान्य' की याद आ गई।
मानो महासभा के ऊपर– भावुक की बरसात छा गई॥

अश्रु बहाते बोले गाँधी– हाय! छिन गई ढाल देश की।
मूर्तिमान इस असहयोग में– कौन करेगा पूर्ति शेष की?
बत्ती बिना कहीं दुनिया में– दीपक भी जलते देखा है?
क्या अन्धे को बिना सहारे– बिना गिरे चलते देखा है??

'लोकमान्य' के महाशोक में– महा दुखी देखे नारायण।
मानो "लक्ष्मण" की मूर्छा से– बिलख बिलख कर रोया कण कण॥
'तिलक' भाल के तिलक बन गये, छोड़ गये वे अमर कहानी।
चप्पे चप्पे पर अंकित है– वीर 'तिलक' की अमर जवानी॥

मरती जीती इस दुनिया में– रह जाती है शेष कहानी।
क्या न राम रोये थे बन में? क्या न कृष्ण ने पीड़ा मानी??
तिलक, गोखले की स्मृति में घुल–बरस रहे थे बादल क्षण क्षण।
हृदय थाम कर गाँधी जी ने– शुरू किया फिर निर्मल भाषण॥

असहयोग वह अमर अस्त्र है– जिस से बड़े बड़े बम हारे।
असहयोग में सत्याग्रह है– सत्याग्रह में हैं ध्रुव तारे॥
ध्रुव तारे की अमर ज्योति से– दीपित है यह तिमिर भरा जग।
सत्य अहिंसा के प्रकाश से– देख रहे हैं दुनिया के दृग॥

असहयोग में दीपशिखा है, विष में बुझी हुई आरी भी।
असहयोग में शान्ति व्याप्त है– और क्रान्ति की चिनगारी भी॥
असहयोग में शुद्ध अहिंसा, सत्याग्रह का शंख बोलता।
असहयोग में आत्मा बल है, आत्मा बल से दैत्य डोलता॥

जला हृदय की दुर्बलतायें– असहयोग जय-ज्योति जलाता।
अतल वितल कर्त्तव्य लक्ष्य पर– स्वतन्त्रता के यान चलाता॥
प्रेम, क्षमा, अनशन, अनन्त धन, असहयोग तरु में अक्षय फल।
ब्रह्मचर्य व्रत सत्य, अहिंसा, शान्ति, लोक सेवा, ईश्वर बल॥







जनायक

असहयोग के आन्दोलन को– किया सर्व सम्मति से स्वीकृत।
स्वतन्त्रता के मणिदीपों में– डाल दिया गाँधी जी ने घृत॥
सुख स्वराज्य का ध्येय, इसी में– प्रजातन्त्र की अमर शक्ति है।
स्वाभिमान एवं स्वतन्त्रता, और एक्य की देशभक्ति है॥



सत्य शान्ति से होने वाली– जय स्वतन्त्रता की है इसमें।
आत्मा बल, संगठन, त्याग का– गड़ा हुआ है झण्डा जिसमें॥
मिलता पूर्ण स्वराज्य शान्ति से, सत्य-साधनों बिना न मिलता।
जब जीवन से सींचो पौधे– फूल तब कहीं जग में खिलता॥

'करो अछूतोद्धार भाइयो !' कहा 'नागपुर' काँगरेस में।
"एक रहो सब, एक रहो सब, बनी रहे एकता देश में॥
खादी के तारों को जोड़ो, धो दो छुवाछूत की स्याही।
करो एकता हिन्दू मुस्लिम, हिन्दू मुस्लिम हों हमराही॥

जिसमें कोई हो न बुराई– काँगरेस वह महाशक्ति हो।
विश्व शान्ति के दीप जलाये– तुम में ऐसी देशभक्ति हो॥
काँगरेस के आदर्शों से– सच्ची स्वतन्त्रता पाओगे।
यदि आदर्शों को कुचला तो– इसी आग में जल जाओगे॥"

सार्वजनिक जीवन में व्यापक– सत्य-ज्योति वह जली रात दिन।
कवियों ने भी सार निकाला– गाँधी जी की चापें गिन गिन॥
वह ऐसा सूरज जो निशि दिन– तिमिर मिटाता ही रहता है।
कभी नहीं वह सत्य भूलता, प्रतिपल 'राम ! राम !' कहता है॥

ईश्वर ! ईश्वर ! मेरे ईश्वर ! तुम ही मेरी लाज बचाओ।
राम नाम की माला लेकर– भवसागर से तरते जाओ॥
राम ! मुक्ति दो, राम ! मुक्ति दो, तेरा प्रेम माँगने आया।
राम ! शरण दो, राम ! शरण दो, सारी दुनिया ने ठुकराया॥

जग के आगे पल्ला फैला– माँगी बहुत प्रेम की भिक्षा।
प्रेम राम के पास मिलेगा– पाई यही प्रेम से शिक्षा॥
राम ! प्रेम दो, राम ! भक्ति दो, माँग रहा मैं पैर पकड़ कर।
पर-दुख दूर करूँ जीवन भर– यह वरदान मुझे दो ईश्वर !





राम ! सुना है, राम ! पढ़ा है– मिल जाते भगवान भक्ति से ।
तुम तो राम ! दिया करते हो– मुँह माँगा वरदान भक्ति से ॥
दुनिया से थक कर अन्तर ने– यही कहा, 'तू राम राम रट !
राम नाम रट, राम नाम रट, राम नाम रट, राम नाम रट !!'

राम ! दिये थे 'चित्रकूट' में– तुमने ही 'तुलसी' को दर्शन ।
राम ! तुम्हारी चरण-धूलि से– पाया जड़ पत्थर ने जीवन ॥
बिना राम के जग-जीवन में– क्या मधु-मोहन घोल सकेंगे ?
गाँधी-जीवन के प्रयोग से– राम-चरण-मधु तोल सकेंगे ॥

गाँधी सत्य, सत्य गाँधी है, परमेश्वर के ही स्वरूप हैं ।
शान्ति अहिंसा शुद्ध सत्यमय– अक्षर अक्षर में अनूप हैं ॥
सिद्धि अहिंसा राजमार्ग है– सत्य अहिंसा के साधक को ।
जो कुछ चाहा वही मिला है– इन सिद्धान्तों के पालक को ॥

सत्य सूर्य की रश्मि झाँकियाँ– गाँधी-जीवन के दर्शन में ।
उस प्रकाश को माप न सकते– बारह सूर्य-ज्योति-नर्त्तन में ॥
पूर्ण अहिंसा बिना सत्य के– दर्शन कभी नहीं हो सकते ।
आत्म-शुद्धि के बिना हृदय की– स्याही कभी नहीं धो सकते ॥

प्रेम, आत्मवत् बिना विश्व में– मिलते नहीं सत्यनारायण ।
उसका जीवन व्यर्थ विश्व में– जिसने पढ़ी नहीं रामायण ॥
जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में– सत्यवान गाँधी जी घूमे ।
राजनीति, इतिहास धर्म में– सत्य सुधा पी पी कर झूमे ॥

आत्मशुद्धि आत्मैक्य अमर ने– जड़ चेतन में करी शक्ति से ।
अन्धकार में दीप जलाये– राम नाम की अमर भक्ति से ॥
मेरे गाँधी ! मेरे ईश्वर ! मुझ पापी को भक्ति दान दो !
गंगाजल से आत्मा धोकर– राम नाम के अमर ज्ञान दो !

तन मन वचन और कर्मों से– करदे मुझको निर्विकार तू ।
फूक वासना सत्यमार्ग से– दे दे अपना अमर प्यार तू ॥
'गणिका', 'सदन कसाई', गज की– तूने टेर सुनी परमेश्वर !
करदो क्षमा ! भक्ति दो ईश्वर ! कब से भटक रहा हूँ दर दर ॥









जननायक

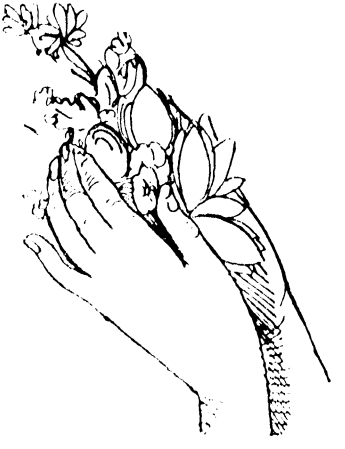
अपने छिपे विकार देख लूँ, अपनी कमियों को भी तोलूँ।
माया ममता मोह छोड़ कर- राम नाम लूँ, सच सच बोलूँ॥
तेरे आगे शर्मिन्दा हूँ, मेरी पलकें झुकी हुई हैं।
साहस सम्बल शक्ति भक्ति दो, मेरी आँखें लुकी हुई हैं॥



राम! फूल से शूल आज मैं- सब की आँखों में।
राम! भयानक भूल आज मैं- सब की आँखों में॥

तुम बसन्त, मैं पापी पतझड़, शिशु सी कविता हूँ।
तुम नौका पतवार और मैं- सूखी सरिता हूँ॥
मैं सुहाग के हाथों में पर, फूटी चूड़ी हूँ।
तुम सुहाग के चिह्न और मैं- टूटी चूड़ी हूँ॥
आग लगा दी राम! विश्व ने- मेरे पाँखों में।
राम! फूल से शूल आज मैं- सब की आँखों में॥

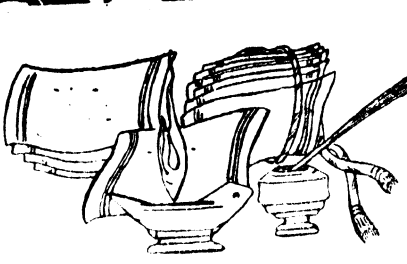
मुझको बीहड़ पथ तय करना, मुझे शून्यवत् राम! बनादो।
गाँधी! अपने पद-चिह्नों से- मेरी नौका पार लगादो॥
निर्धन की निधि से बस जाओ, मन-मन्दिर में धरा-धर्म-धन!
जीवन की अनमोल रश्मि से- राह देखता तैर चले मन।











पञ्चदश सर्ग



शस्य श्यामला मातृ भूमि पर- सङ्क्रम बन कर उड़ा तिरंगा।
हिमगिरि की उस लहर लहर से- बहती चली मुक्ति की गंगा॥
गंगा, यमुना, सरस्वती का- संगम अम्बर में लहराया।
नौ रस बरसे, किरणें बिखरीं, चारों ओर उजाला छाया॥

हरी भरी धरती माता की- हरी ज्योति में कान्ति व्याप्त है।
रंग सफ़ेद चाँदिनी मानो, या गाँधी की शान्ति व्याप्त है॥
केसरिये रँग में सूरज की- स्वर्णिल आभा दमक रही है।
लहर लहर में सत्य अहिंसा- पगडण्डी पर चमक रही है॥

शंख बजाते ही झण्डे में- बलि की वेला का आवाहन।
झण्डे के नीचे आते ही- बनता जेठ मास भी सावन॥
अम्बर तक उड़ कर अम्बर से- दीप धरा पर ले आता है।
हिमगिरि के ऊपर लहरा कर- गाँधी जी के गुण गाता है॥

ऐसा मुक्त तिरंगा झंडा- गाँधी जी ने लिया हाथ में।
पदचिह्नों पर जय जय कहते- कोटि कोटि चल पड़े साथ में॥
"काँगरेसमय" गाँधी जी ने- 'मोतीलाल' 'जवाहर' पाये।
वीर 'पटेल', 'सुभाष' केसरी- बजते ही रण-भेरी आये॥

'मौलाना आज़ाद' आदि से- मुसलमान भी बने तिरंगे।
सब मिल गुथे एक माला में, छोड़ दिये आपस के दंगे॥
महा क्रान्ति के अंगारे से- 'जयप्रकाश नारायण' आये।
जय 'राजेन्द्र प्रसाद' प्रकाशित- सत्य शान्ति की प्रतिध्वनि लाये॥







जनायक

इन ऋषियों ने काँगरेस में– महायज्ञ का कुंड बनाया।
स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर– तन मन धन बलिदान चढ़ाया॥
सब ने गुरु गाँधी को माना– पीछे चले चरण-चिह्नों पर।
गाँधी जी की जय हो, जय हो– गूँजा धरती अम्बर में स्वर॥



गये एक घर में गाँधी जी, नंगे बालक रोते देखे।
नंगे ही माँ बाप उन्हों के, चिथड़ों ही में सोते देखे॥
गिरे फूस के कच्चे घर में– मानो थे दरिद्र-नारायण।
आँखों में आँसू भर लाये– गाँधी जी कर्त्तव्य-परायण॥

आग में आँसुओं की वह– बिचारा जल रहा पल पल।
प्रेम के प्राण बापू के– नयन भर आ रहे छल छल॥
फूस की झोंपड़ी में– सिन्धु का मानस उमड़ता है।
दुखी को देख दृग-जल में– मेघ का मन घुमड़ता है॥

तड़पता भूक से बालक, कुपक वह रो रहा नंगा।
आँसुओं से शर्म ढक कर– बहाती कौन यह गंगा॥
देश के दुःख से बह बह– बिखरता इत्र यह देखो!
जिसे हम कह रहे भारत– कि उसका चित्र यह देखो!!

कीच में पैर, तन नंगा, गगन से गिर रहा पानी।
पसीना देख माथे पर– श्याम घन से बहा पानी॥
किसी के स्वेद कण गिर कर– धरा पर बन गये मोती।
उसी को देख बापू की– मृदुल सी भावना रोती॥

देखकर देश को नंगा– लँगोटी बाँध ली तन पर।
देश का ढाँपने को तन– वही तो बुन रहा खद्दर॥
तड़पता भूक से देखा– कि उसने कर दिया अनशन।
किसी को दुःख में देखा– कि उसने दे दिया तन मन॥

किसी को धूप में देखा– कि तन की तान दी छाया।
धरा को प्यास में देखा– कि उसने नीर बरसाया॥
नयन का नीर बह बह कर– सिन्धु का बन गया पानी।
हृदय की आग पानी में– जिसे बड़वाग्नि पहिचानी॥





बरसे दृग से जल के झरने,
कपड़े तज, सन्त बने गाँधी।
जल से पग धो जननायक ने–
कटि से घुटनों तक की बाँधी॥

जननायक ने जन के दुख में–
बरसात बहा सरिता पाई।
जन दीन जहाँ भगवान वहीं,
तन धार वहाँ करुणा आई॥



वस्त्र पहिनने छोड़ उसी क्षण– केवल एक लँगोटी बाँधी।
हर कम्पन से शिवम् सृष्टि की, धन्य धन्य मनमोहन गाँधी॥
'स्वर्ण केसरे हिंद पदक' को– त्याग दिया उस देशभक्ति ने।
देशभक्ति देवी माता की– पूजा की उस महा शक्ति ने॥
त्याग तपस्या के प्रतीक ने– विस्तृत विद्यापीठ बनाई।
जग को दीपित करने वाली– शिक्षा की श्री-ज्योति जलाई॥
'गाँधी आश्रम' खुले सत्य के, बिकने लगा देश में खद्दर।
फुकवाये सब वस्त्र विदेशी, जली देश में होली घर घर॥
भारत के कोने कोने में– जली विलायत की रंगीनी।
हंसों से सफ़ेद खद्दर से– उड़ी सुगन्धें भीनी भीनी॥
लगे हुए भारत में घुन की– फूस लगा सुलगादी होली।
ज़हरीले अंग्रेज़ी कीड़े– जलते थे, उड़ती थी रोली॥
ऊपर से चमकीला रेशम, पर अन्तर में ज़हर भरा था।
लाखों रुपयों का था, लेकिन– उससे भारतवर्ष मरा था॥
यदि सोने के प्यालों में विष– तुम्हें पिलायें, क्या पी लोगे?
यदि क़ैंची से पंख काट दें– क्या ज़िन्दा रह कर जी लोगे??
ये विलायती वस्त्र तुम्हारा– खून विलायत ले जाते हैं।
ये विलायती वस्त्र तुम्हारा– माँस तुम्हारे घर खाते हैं॥
ये विदेश के व्यापारी गण– हीरे मोती लूटे लेते।
ये विलायती चमकीले ठग– टुकड़े खाकर धक्के देते॥





जननायक



बहिष्कार "युवराज" सदृश का- किया आत्मबल से गाँधी ने।
मानवता की लाज बचाली- गहरी दलदल से गाँधी ने॥
'मुँह में राम, बगल में छुरियाँ'- जब कि यहाँ 'युवराज' पधारे।
बहिष्कार का झण्डा लेकर- कूदे मोहनदास हमारे॥

'ब्रिटिश पुत्र' के अभिनन्दन में- बन्द हुए बाज़ार, हाय! हा!
मानो मृत्यु शोक से उस दिन- होता हाहाकार हाय! हा!!
बहिष्कार के सत्याग्रह में- अमृत न्याय-मधु असहयोग है।
राज्य, मुक्ति के सच्चे साधन, आत्मिक सुख के अमर भोग हैं॥

दमन-नीति को आत्मा-बल से- हार माननी ही पड़ती है।
क्यों कि पाशविक बल से आत्मिक- सच्ची मानवता लड़ती है॥
बहिष्कार कर दिया विदेशी, बहिष्कार की दहकी ज्वाला।
बहिनें चलीं पिकेटिँग करने, आगे तना विदेशी भाला॥

हर दुकान पर खड़ी हो गईं- वीर देवियाँ खद्दर धारी।
मानो लक्ष्मी की रक्षा को- खड़ी हो गई लाज हमारी॥
गली, मुहल्लों, बाज़ारों में- निकली गाँधी जी की टोली।
शहर शहर में, गाँव गाँव में- जली विदेशी विष की होली॥

विदेशी वस्त्र फुकते हैं।
धुँवे से मेघ झुकते हैं॥
हृदय में जल रही होली।
उधर से चल रही गोली॥

गुलामी की चिता है यह।
क्रान्ति सी दहकती ही रह-
कि जब तक पहिन लें खद्दर।
कि जब तक डस रहे विषधर॥

कि जब तक दृगों में पानी।
कि जब तक चन्दिनी रानी॥
देश ने नींद छोड़ी है।
सन्त ने दृष्टि मोड़ी है॥







जननायक

राख का ढेर कहता है–
महा अन्धेर कहता है–
आह की गूंजती बोली–
विदेशी वस्त्र की होली ॥

कहीं देवियाँ बन्दी करलीं– कहीं भाइयों को पिटवाया।
कहीं गोलियों से छिदवाया– कहीं बेड़ियों पर लटकाया ॥
कुछ जन की सम्पत्ति जब्त की, कुछ को लालच देकर मारा।
किन्तु हिमालय सा स्थिर देखा– भारत माँ का भाग्य-सितारा ॥



राम ! मैं दृढ़तर हिमालय हूँ, हिमालय ही रहूँगा।
राम ! पृथ्वी की तरह मैं– मूक रह सब कुछ सहूँगा ॥

राम ! इस नश्वर जगत में– अमर है यह प्यार मेरा।
अर्चना करता रहेगा– प्रेम से तेरा चितेरा ॥
रात दिन मस्तक झुका कर– चरण-रज चूमा करूँ मैं।
राम ! मन्दिर में तुम्हारे– भ्रमर सा झूमा करूँ मैं ॥

भारती वीणा बजाती, मैं कथा तेरी कहूँगा।
राम ! मैं दृढ़तर हिमालय हूँ, हिमालय ही रहूँगा ॥

सत्याग्रह के शंख चल पड़े– सत्यम् शिवम् सुन्दरम् पाने।
गये 'बारडोली' गाँधी जी– सत्याग्रह का केन्द्र बनाने ॥
नींव धरी सत ने स्वराज्य की– वह पहिली रणभेरी बोली।
फूस बटोर रहे थे नेता– रचने को बन्धन की होली ॥

भारत के कोने कोने में– लगने लगे फूस के चट्टे।
दाँत चलाते थे जो हम पर– उनके दाँत हो गये खट्टे ॥
जलती थी वह नग्न गुलामी– या जलते थे भाव विदेशी।
आग बबूला होकर दौड़ा– भारत पर परदेशी 'केशी' ॥

गूंज उठा गाँधी का नारा– हम को दे दो राज्य हमारा।
सुन कर आग हुए गोरे गण, ठहरे बिना चढ़ गया पारा ॥
दमन दमन ! कुचलो कुचलो ! के– अंग्रेज़ी हथियार चल पड़े।
गाँधी जी की जय जय कहते– गाँधी जी के प्यार चल पड़े ॥







चिनगारी लगते ही धधकी– 'चोरी चोरा' में अति ज्वाला।
पीड़ित मतवाली जनता ने– भर भर ज्वाला में घी डाला॥
ज्वाला में जल डाल उसी क्षण– गाँधी ने हत्याग्रह रोका।
जनता का आवेश देखकर– शाश्वत ने सत्याग्रह रोका॥



कुछ सस्ते भावुक लोगों को– गोरों ने विरुद्ध भड़काया।
काँगरेस में गाँधी जी पर– तूफ़ानी सागर लहराया॥
बादल आये और उड़ गये, लेकिन हिले न तिल भर गाँधी।
गाँधी के सर पर से गुज़रीं– लाखों काली पीली आँधी॥

'यंग इण्डिया' में गाँधी ने– लिखे लेख चिनगारी वाले।
राजद्रोह आत्मक निबन्ध पढ़– अंग्रेज़ों ने तीर निकाले॥
महाशक्ति को अंग्रेज़ों ने– क़ैद किया कच्चे धागों में।
'सन् बाईस मार्च तेरह' को– गारुड़ फैल गया नागों में॥

'सेशन' को सौंपे गाँधी जी, राजद्रोह का चला मुक़दमा।
सत्याग्रह के न्यायालय में– राजमोह का चला मुक़दमा॥
न्यायालय में डगमग पग से– प्राण अजेय शान्त तन पहुँचे।
जयनिधि 'वैंकर' साथी बन्दी– भारत के सच्चे धन पहुँचे॥

देश-दीपकों के स्वागत में– जज तक उठ कर खड़े हो गये।
जग में जितने झुके महात्मा– वे उतने ही बड़े हो गये॥
तीन निबन्धों के बारे में– गाँधी जी पर दण्ड लगा यह–
'राज भक्ति में दख़ल' 'समस्या', 'गर्जन तर्जन' गर्जे रह रह॥

सब अभियोग मान गाँधी ने– अपना लिखित बयान सुनाया।
अंग्रेज़ों का कच्चा चिट्ठा, गाँधी ने सबको दिखलाया॥
"सहयोगी से राजद्रोह का– झण्डा लेकर चला किस लिये–
असहयोग का झण्डा लेकर, सुनो! सुनो! मैं चला जिस लिये–

जब भी दुःख पड़े गोरों पर– मैंने उनके साथ दिये हैं।
उपकारों के बदले तुमने– हाथ हमारे बाँध लिये हैं॥
'बोअर' रण में और 'जुलू' में– सेवाओं का यह फल पाया।
हमदर्दी के बदले तुमने– हम पर 'रौलट एक्ट' लगाया॥



हमने मर मर कर सेवा की– तुमने जी भर हमें सताया।
अपने ही अन्तर से पूछो– तुमने कितना हमें रुलाया॥
कितने घाव किये छाती में, 'जलियाँ वाला बाग' देख लो!
जिससे हमको जला रहे हो– लगी हुई वह आग देख लो॥

'इस्लामी' 'तुर्की'-तीर्थों की– तुम पवित्रता नष्ट कर रहे।
यह पवित्र ऋषि-भूमि, इसे तुम– कहो कहो क्यों भ्रष्ट कर रहे?
भारतवासी से गोरों का– नैसर्गिक सम्बन्ध नहीं है।
पश्चिम पूरब में आ जाये, ऐसा कहीं प्रबन्ध नहीं है॥

अपने काले क़ानूनों से– तुमने हमको मार दिया है।
असहयोग का मार्ग बता कर, दोनों का उपकार किया है॥
सत्य अहिंसा और शान्ति के– उपदेशों में अमर सार है।
देश-धर्म सबसे ऊँचा है, क्यों न देश से तुम्हें प्यार है?

क्या तुम काले क़ानूनों को– सतत समझ बैठे कुर्सी पर?
देश-भक्ति हित त्यागपत्र दो, मुक्त बनो ज़ंजीर तोड़ कर!"
सुन कर गाँधी-वाणी जज ने– अपनी आँखें तले झुकालीं।
मानो गाँधी के स्वागत में– स्वयम् दृगों ने आँख बिछालीं॥

पर गुलाम थी क़लम बिचारी, हत्यारे शासन की दासी।
वीर विजेता देशभक्त को– सज़ा सुनाने की अभ्यासी॥
देकर के दृष्टान्त 'तिलक' का– गाँधी जी को दण्ड सुनाया।
'सजा वर्ष छः की है तुमको'– कह कर जज मन में शर्माया॥

विदा जेल के लिये हुए जब– जनता की आँखें भर आईं।
मानो 'राम' जा रहे बन को– 'दशरथ' को आ रहीं रुलाई॥
'द्वापर' में बन्दीगृह ही में– रूप धर लिया नारायण ने।
कलियुग में फिर कारागृह को– तीर्थ कर दिया नारायण ने॥

मन्दिर बना दिया बन्दीगृह– नारायण की मूर्ति विराजी।
ख़ुदा वहीं साकार हो गया– पूजा करते मुल्ला गाजी॥
मन्दिर मस्जिद वहीं बन गये– पहुँचे चरण जहाँ भी डगमग।
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई– पूजे सब ने गाँधी के पग॥







जननायक

आओ, अब बन्दीगृह में हम- करलें नारायण के दर्शन।
देखो, राम-रूप डूले पर- करते जग-मानस का मन्थन॥
कारागृह में अमर पुरुष वे, वाणी की पूजा में रत हैं।
अपनी आत्मकथा लिखते हैं, ईश्वर के चरणों में नत हैं॥



'आत्मकथा' लिख रहे "महात्मा", अक्षर अक्षर ज्योति दिखाते।
लंगोटी वाले नारायण- सत्य प्रेम का मार्ग सिखाते॥
गाँधी जी की 'आत्मकथा' में- 'गीता' और 'कुरान' व्याप्त हैं।
गाँधी जी की 'आत्मकथा' में- मुक्ति, मनीषा, सत्य प्राप्त हैं॥

गाँधी जी की आत्मकथा में- मानव का इतिहास अमर है।
गाँधी जी की आत्मकथा में- मनुष्यता की खुली डगर है॥
असहयोग पर दृढ़ विद्रोही- भूत भविष्यत् वर्तमान है।
आत्म-प्रेरणा का आत्मावल- पारब्रह्म आनन्द राम है॥

वह एकाकी आत्मावल से- कुरीतियों का बहिष्कार है।
पापी की सुधार वह गीता- कायरता का तिरस्कार है॥
बन्दीगृह में थे गाँधी जी, लेकिन जग में कहाँ नहीं थे।
ऐसी कोई जगह नहीं है, मेरे गाँधी जहाँ नहीं थे॥

सूरज ही से निकल रश्मियाँ- आँखों को प्रकाश देती हैं।
आँखों की भाषायें मन को- रस्सी बिना बाँध लेती हैं॥
कारागृह में गाँधी जी ने- रची रूपरेखा भविष्य की।
स्वतन्त्रता के महामेघ में- रचना रचते थे हविष्य की॥

गाँधी का तन पिँजरे में था- मुक्त हृदय था सचराचर में।
तन बन्दी था, पर आत्मा था- 'बा' देवी की शक्ति धरा में॥
मिट्टी का तन बन्दी था पर- सच्चा हृदय पास था 'बा' के।
चाँद और तारों के मुँह से- गीत सुन रहे थे 'बा' माँ के॥

'बन्दी काव्य' जेल जीवन है- बन्दी आत्मा की तस्वीरें।
'प्रिज़नर ऑफ शिलों' में गाँधी- बलिदानों की अमर लकीरें॥
बापू के बन्दी जीवन में- महाकाव्य के अमर कथानक।
विधि, विधान, विद्या, जनता, जय, विजय विरत विख्यात विधायक॥





डगमग डग मँझधार नाव को- काँगरेस के वीर तीर थे।
कुछ बन्दी, कुछ मुक्त व्यस्त थे, हलचल में सब कर्मवीर थे॥
हिंसा के बल पर अकड़ी सी- अंग्रेज़ी सरकार खड़ी थी।
और इधर भारत माता की- आँखों से लग रही झड़ी थी॥

माँ के आँसू लगी पूछने- काँगरेस अपने आँचल से।
हिंसक सत्ता से लड़ती थी- अपने सत्य अहिंसा बल से॥
काँगरेस के वीर सिपाही- तन मन धन सब त्याग रहे थे।
भारत माँ के वीर लाडले- धीरे धीरे जाग रहे थे॥

असहयोग के आन्दोलन में- गये "जवाहर लाल" जेल में।
ऐसे गये जेल में जैसे- बालक जाते कहीं खेल में॥
नीति निपुण नेता भारत के- हक़ की सच्चाई कहते थे।
ज्ञान ध्यान सत् स्वाभिमान से- कभी नहीं उल्टे बहते थे॥

सागर पार देश गोरों का, प्रजातन्त्र की जहाँ दुहाई।
ऊँचे सिंहासन के ऊपर- ब्रिटिश राज्य ने ध्वजा उड़ाई॥
देश 'विलायत' उन का, लेकिन- भारत पर अधिकार जमाते।
भारत माँ का ताज पहिन कर- काली पीली आँख दिखाते॥

ऊँचे सिंहासन के ऊपर- बैठे हैं वे राजा रानी।
जिनके ऊपर बरस रहा है- भारत की आँखों का पानी॥
और पास ही 'पार्लमेंट' है- जिसको पंचायत कहता जग।
'लोक सभा' भी देख रही है- अपनी सत्ता के उलटे डग॥

अपनी सत्ता भोग रहे थे- सजे "जार्ज पंचम" गद्दी पर।
'सन् उन्निस सौ तेरह' से वे- दमक रहे थे ताज पहिन कर॥
"मिले जुले मन्त्री मण्डल" के- 'लॉर्ड जार्ज' थे मन्त्री स्वीकृत।
बन्दीगृह पावन करता था- मेरे गाँधी का चरणामृत॥

बाद 'जार्ज' के मन्त्री पद पर- "बोनर लॉ" थे 'टोरी दल' के।
बड़े बोलबाले सुनते थे- जग में 'कट्टड़ पंथी' बल के॥
गद्दी पर "सम्राट् जार्ज" थे, 'कंज़रवेटिव दल' मन्त्री दल।
"रैडिंग वायसराय" यहाँ पर- दिखा रहे थे अपने छल बल॥







जनायक



'मन्त्री-मण्डल' के विधान से– राज्य 'जार्ज पंचम' करते थे।
नाम मात्र के राजा रानी– 'मन्त्री-मण्डल' से डरते थे॥
लंका में 'सीता माता' सी– बन्द पड़ी थी भारत माता।
गड़ा 'यूनियन जैक' इन्हों का– भारत के सर पर लहराता॥

सत्ता थी 'अनुदार' उस समय– वायसराय 'बाल्डविन' आये।
भारत का आमिष खाने को– डायन फूट विषैली लाये॥
सन् उन्निस सौ तेइस था वह– जब कि 'बाल्डविन' की चलती थी।
जिसकी कारा में भारत माँ– बनी मोमबत्ती जलती थी॥

जो व्यापारी बनकर आये– वे डाकू बन बैठे राजा।
उँगली से पहुँचा आ पकड़ा– उलटा करने लगे तकाज़ा॥
पहली नीति फूट की पकड़ी– और दूसरी लालच वाली।
हम में से कुछ टुकड़ों पर पड़– उनके हाथ बन गये ताली॥

बड़े बड़े पद पा पा कर वे– लहू हमारा लगे चाटने।
माया के टुमकों पर रीझे– भारत माँ को लगे काटने॥
अपने हाथों से अपना घर– वे ग़ैरों को लगे लुटाने।
ऊँची ऊँची कुर्सी पाकर– घर ग़ैरों को लगे सुलाने॥

बीन बजा अंग्रेज़ मदारी– काले विषधर लगा खिलाने।
उनके दाँतों से उनको खा– ज़हर उन्हीं को लगा पिलाने॥
कभी हिन्दुओं से खेला वह, खेला कभी मुसलमानों से।
झुक जाते थे नयन हमारे– अपनों के कड़वे तानों से॥

फूस छिपा अन्दर आँचल में– डायन फूट घुस गई घर में।
'मुस्लिम लीग' मुसलमानों के– पंख उड़ा लाई अम्बर में॥
हमें याद है भक्त 'विभीषण'– 'रामचन्द्र' से मिलने वाला।
'घर का भेदी लंका ढाये', भेदी ने सब घर खा डाला॥

और अन्त में वही 'विभीषण'– बन बैठा 'लंका' का राजा।
आज कहाँ हैं 'राम' जिन्हों के– सिंहासन पर भक्त विराजा॥
भारत में 'जयचन्द' बहुत हैं, पग पग पर कुचक्र चलते हैं।
धर्मचक्र में आलोड़ित हम, ईर्ष्या-ज्वाला से जलते हैं॥







ईर्ष्या, माया, फूट में– मुक्ति कर रहे बन्द।
काम, क्रोध, मद, लोभ तज– गाँधी जी स्वच्छन्द॥
पीते तक कुचक्र में, लूट रही है फूट।
पूछ हिलाते, झूठ खा– चाट रहे हैं बूट॥

गोरी चमड़ी के शासन में– हम गुलाम सब कुछ खो बैठे।
भाषा खोई, भाव खो दिये, सब नंगे भूखे हो बैठे॥
उनकी संस्कृति की कारा में– बन्द हुई सभ्यता हमारी।
या गणिका पर रीझ रही है– प्रगतिशील भारत की नारी॥

पश्चिम के गहरे प्रभाव में– अपढ़ कहाये विद्या तज कर।
माँस उन्होंने ही आ नोचा– जिनके लिये गये हम मर मर॥
ऊपर चमक दमक दिखलाई, अन्दर से कर दिया खोखला।
लेकर के सभ्यता दोगली– भारत में घुस गया दोगला॥

घर में घुसी बिमारी की जड़– गाँधी ने कीड़े पहिचाने।
उनकी कल्याणी वाणी के– गूँजे काँगरेस में गाने॥
करी स्थापना काँगरेस ने– 'हिन्दुस्तानी सेवा दल' की।
उलझी हुई समस्या जग की– गाँधी ने सेवा से हल की॥

बन्दीगृह में बन्दी गाँधी– दैनन्दिनि थे मुक्ति-मार्ग पर।
वर्षों से प्यासी धरती पर– बरस रहे थे बादल बन कर॥
कारागृह में मेरे गाँधी– पेट दर्द के घिरे रोग से।
'अपेंडिसाइट' की पीड़ा थी– या कि परीक्षा दैवयोग से॥

अर्ध रात्रि के बाद जेल में– किया ऑपरेशन डाक्टर ने।
चिन्ता के बादल घिर आये, अश्रु बहाये भारत भर ने॥
बिजली के भारी प्रकाश में– चीर फाड़ करते थे डॉक्टर।
पेट चाक था, बुझीं बिजलियाँ, धरती लगी काँपने थर थर॥

कहा किसी ने, अब क्या होगा? डॉक्टर बोला, क्या बतलाऊँ?
इतने में बिजली यह बोली– आओ, मैं प्रकाश दिखलाऊँ॥
नब्ज़ छूटती थी भारत की, जाते जाते प्राण आ गये।
या कि तमिस्रा की घड़ियों में– गायक दीपक राग गा गये॥







जनायक

मानो यम से सत्यवान के- प्राण सती 'बा' ले कर आई।
या कि प्रकृति के मुख मण्डल पर- सुख सुहाग की लाली छाई॥
या कि राम ने 'पवनपुत्र' से- संजीवन बूटी मँगवाई।
जय जय जय 'हनुमान' हमारे, प्राण वायु ला जान बचाई॥



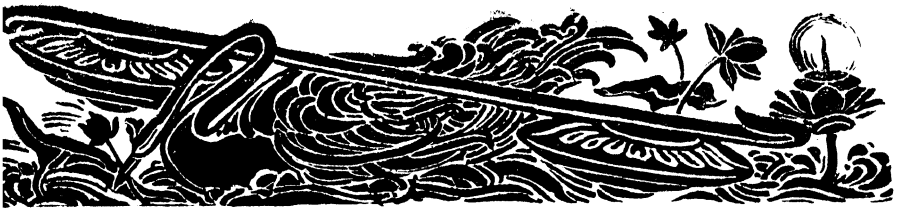
बुल्ले से ये श्वास हैं, टेर टेर श्री राम!
लोभ, मोह सब व्यर्थ हैं, अन्त न आयें काम॥
अन्त न आयें काम, जिस समय उड़ें पखेरू।
अन्त राख का ढेर, बनेगा देह सुमेरू॥
यह पूजा की मूर्ति, कर रहा जिस पर कुल्ले।
अपना जीवन जान, पलक में पल के बुल्ले!

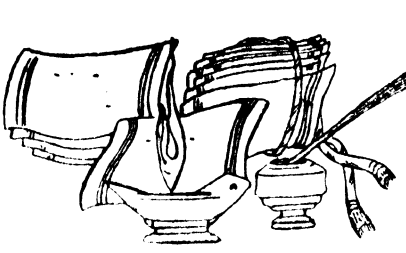
थर थर थर थर्राये गोरे, बन्दीगृह से गाँधी छोड़े।
उसे कौन कब बाँध सका है- जिसने जग के बन्धन तोड़े॥
जिसके घट में राम विराजे- उसके साथ अजेय भक्ति-बल।
हाथ जोड़तीं मुक्ति युक्तियाँ, प्राप्त आत्म आकीर्ण अमर फल॥

प्रभात का प्रकाश ले किसान गा रहा सखी!
कि चाँद रात में लिये प्रभात आ रहा सखी!!
खिला सरोज, आरती उतार झूम ले सखी!
चढ़ा दुलार-अर्घ्य फूल पाँव चूम ले सखी!!









षोडष सर्ग



मानसरोवर की लहरों में– मुक्त हंस ने पर फैलाये।
पिँजरे से छुट उड़ कोयल ने– खुली डाल पर गीत सुनाये॥
शाश्वत स्वर में उड़ गूंजी लय, जड़ चेतन में हुई प्रसारित।
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् सी वह– सत् की संसृति में निर्धारित॥

कहा उन्होंने, झूठ न बोलो, रहो अहिंसक, डरो पाप से।
त्यागो तृष्णा, तजो वासना, दीन दुखी के डरो शाप से॥
सब से प्यार सार है सच्चा, सद्ग्रन्थों का कहना मानो।
द्वेष भाव में मरण निहित है, प्रेम भाव से जीना जानो॥

दुनिया की कड़वी कटुता में– बोले मोहन मीठी बोली।
कड़वी कटुता हुई न मीठी– चाहे जितनी मिसरी घोली॥
भारत की छाती पर धधकी– ज़हर साम्प्रदायिक की होली।
भाई के हाथों ने पूछी–बहिनों के माथों की रोली॥

'दरभंगा', 'कोहाट' आदि में– बही खून की खारी धारा।
हिन्दू मुस्लिम छुरियाँ लपकीं, भाई ने भाई को मारा॥
मरे सहस्रों हिन्दू मुस्लिम, छुरे चले माँ की छाती पर।
क्या हिन्दू, क्या मुस्लिम पाते, फोड़ फोड़ कर आपस में सर॥

ऐसी दशा देख गाँधी ने, त्राहि! त्राहि! उपवास कर दिया।
पागलपन के आगे बलि को– अपना पूर्ण स्वरूप धर दिया॥
हत्या के इस महापाप का– सारा दोष स्वयम् ने माना।
बैठ तपस्या के आसन पर– दोष निवारण हित व्रत ठाना॥







जनायक

नगरी के बाहर मकान में– अग्नि-परीक्षा को जा बैठे।
चकित हो गई सभी जातियाँ, चरणों में नेता आ बैठे॥
सब की परिषद् हुई वहाँ पर, सब ने मिल कर करी प्रतिज्ञा।
बन की आग साम्प्रदायिकता, सदा करेंगे घोर अवज्ञा॥



हिन्दू मुस्लिम अधिकारों हित– सत् राष्ट्रीय बनी पंचायत।
वही प्रेम की पावन गंगा, आपस की मिट गई खिलाफत॥
नर से माँगे कुछ न मिलेगा, ईश्वर से सब कुछ मिल जाता।
ईश्वर के दर पर चल रे मन! क्यों दर दर की ठोकर खाता॥

पहुँच लक्ष्य पर गाँधी जी ने– व्रत इक्कीस रोज़ में छोड़ा।
घोर साम्प्रदायिकता का फण– गाँधी ने सत् बल से तोड़ा॥
अंग्रेज़ों की दमन नीति ने– फैलाये फिर अपने छल बल।
गाँधी-वाणी लगी मिलाने– बिखरे हुए राजनैतिक दल॥

कर्मा गाँधी के विरोध में– उठी राजनैतिक दल बन्दी।
चौराहे पर काँगरेस थी, टिम टिम दीपशिखा थी मन्दी॥
खाई पड़ने लगी बीच में, भेद-भाव आपस में आये।
बिगड़े बैल, देश की गाड़ी– इधर उधर को झोके खाये॥

कितने भी तूफ़ान उठें पर– चलने वाले कब डरते हैं।
पैर नहीं रुकते रोके से, पत्थर पथ रोका करते हैं॥
इन विपत्तियों के फ़ितनों में– गाँधी जी ने राम पुकारे।
सुन पुकार 'निर्बल के बल' वे, दौड़े नंगे पैर बिचारे॥

राम! मुझे मेरे ये साथी– बीच भँवर में छोड़ रहे हैं।
राम! जिन्हों पर तुझे भरोसा– वे ही अब मुँह मोड़ रहे हैं॥
जिनके लिये आग से खेला, अपने सब अरमान जलाये।
जिनके एक एक आँसू पर– मैंने सौ सौ अश्रु बहाये॥
जिनके लिये अकेला ही मैं– कफ़न बाँध लेता हूँ सर से।
वे ही जीवन जला रहे हैं– जलन भरी दुनिया के डर से॥

राम! आज रो रहा हिमालय, पत्थर अन्तर तोड़ रहे हैं।
राम! मुझे मेरे ये साथी– बीच भँवर में छोड़ रहे हैं॥





दुनिया कल्याणी वाणी के– क्या क्या अर्थ लिया करती है।
अर्थ अनर्थ किया करती है॥

सौरभ से विकसित फूलों में– कटु काँटे ढूँढा करती है।
ऋतु रानी की सुन्दरता पर– पतझड़ के पत्ते धरती है॥
शशि के जले हृदय को दुनिया– कह देती कालिमा हृदय की।
दावानल कब समझ सका है– कोमलता कोमल किसलय की॥

यह जग-जोंक दूध को तज कर– सच का खून पिया करती है।
दुनिया कल्याणी वाणी के– क्या क्या अर्थ लिया करती है॥
अर्थ अनर्थ किया करती है॥



चौराहे पर देख देश को– राम रमे गाँधी में आकर।
चौराहे से काँगरेस को– गाँधी जी ले गये लक्ष्य पर॥
'बेलगाँव' की काँगरेस के– चुने गये वे अमर सभापति।
जननायक के अभिभाषण से– गीतों में आ गई नयी गति॥

भूत भविष्यत् वर्तमान पर– गाँधी जी ने किया उजाला।
नये पुराने चित्र दिखाये, पल में नया रंग भर डाला॥
साधन साध्य स्वराज्य प्राप्ति की– सिद्धि सरल योजना बताई।
चमत्कार छाया गाँधी का, कर्णधार ने नाव चलाई॥

सब दल एक तराजू पर धर– भारत राष्ट्र पिता ने तोले।
न्याय निपुणता से गाँधी ने– अन्तर के दर्वाज़े खोले॥
'कौंसिल' के विधान को जाँचा, अंग्रेज़ों की गति विधि आँकी।
सत्य अहिंसा के प्रतीक में– भारत की स्वतन्त्रता झाँकी॥

'क्लास एरिया बिल' रद करवा– भारतीय अधिकार बचाये।
अंग्रेज़ों ने भारत माँ पर– नये नये क़ानून लगाये॥
'राजसभा' में नये नये बिल– अंग्रेज़ों के पिट्ठू लाये।
गाँधी जी ने न्याय नीति से– सब बिल कूड़ों पर फिकवाये॥





जनायक

शासन की शतरंज बिछी थी, काले क़ानूनों की चालें।
बादशाह मन्त्री मण्डल से- जूझ रहीं थीं बुझी मशालें॥
सारे भारत में गोरों ने- पूर दिया मकड़ी का जाला।
छिपा विदेशी रंगीनी में- भारत माँ का प्रखर उजाला॥



शासक की सत्ता के मन्त्री, बने "मैकडोनल्ड" श्रमिक दल।
गिने चुने दिन बाद आ गया, वहाँ 'बाल्डविन' ले अपना बल॥
'टोरीदल' का मन्त्री-मण्डल- राज्य कर रहा था भारत पर।
कोटि कोटि भारत वीरों को- छल के फन्दों में बन्दी कर॥

सप्त सिन्धु के पार मदारी- स्वतन्त्रता को नचा रहा है।
सप्त सिन्धु के इधर सत्य बल- उसकी लज्जा बचा रहा है॥
राज्य वही है, स्वर्ग वही है- जिसमें राजा प्रजा एक हैं।
सत्ता वही अमर रहती है- जिसके सत्ताधीश नेक हैं॥

जग से नेकी करने वाले, अब फिर गाँधी के गुण गाऊँ।
काँगरेस के प्राणों की मैं- तुमको आगे कथा सुनाऊँ॥
'देशबन्धु' ने काँगरेस को- तन मन धन अर्पण कर डाला।
'बेलगाँव' में मिली सूचना, सारे जग में हुआ उजाला॥

महा त्याग के बाद वीर वे- 'दार्जिलिंग' में स्वर्ग सिधारे।
'देशबन्धु' थे! राष्ट्र-राशि थे! धरती माता के दृग-तारे॥
जीवन धन्य 'दास' बाबू का, बड़ा गर्व है राष्ट्र पिता पर।
'दास' अमर हैं! 'दास' अमर हैं! मिट्टी का तन जला चिता पर॥

इतिहासों के पृष्ठों पर हैं, कवियों की वाणी में गाते।
बापू के जीवन में व्यापक, स्वतन्त्रता देवी में पाते॥
उनके अमर वाक्य कुछ ये हैं, "हृदय बदल कर शुद्ध बनाओ"।
सर्जन और संगठन कर लो, मेलजोल की ज्योति जलाओ॥"

ऊब रहा जग संघर्षों से, ये पवित्र लक्षण अपनाओ!
काँगरेस के महापण्डितो! देशबन्धु की वाणी गाओ!!
राजनीति के महापण्डितो! मेरा नम्र निवेदन सुन लो-
तार तार होकर मत बिखरो, बिखरे हुए फूल सब चुन लो॥





देशबन्धु जैसी बलियों से- सिँची हुई इस काँगरेस की-
लाज तुम्हारे हाथ आज है, पार लगाना नाव देश की ॥
देशबन्धु का अक्षर अक्षर- गाँधी के अन्तर में अङ्कित ।
देशबन्धु के आत्मा की लिपि- गाँधी के चरणों में चित्रित ॥

देशबन्धु से गाँधी जी को- बहुत प्रेम था, किन्तु न रोये ।
उनके भावों को फैलाया, उनकी स्मृति में मोती बोये ॥
एकत्रित दस लाख द्रव्य कर- 'देशबन्धु-स्मारक' बनवाया ।
'रसा रोड' पर उनके घर में- अनुपम अस्पताल खुलवाया ॥

उनके सर पर तीन मुकुट थे- रक्खे वे "जे० एम० सेन०" पर ।
'वंग प्रान्त' के बने प्रान्तपति, 'कार्पोरेशन' के थे मेयर ॥
नेता बड़े 'स्वराज्य सभा' के, गाँधी जी ने 'सेन' बनाये ।
गाँधी जी के संचालन ने- नये नये हीरे उपजाये ॥

रचनात्मक गति विधि निर्मित की, दीप जलाये काँगरेस में ।
अधिकारों की राजनीति की, शिक्षा देते फिरे देश में ॥
काँगरेस व्यापी गाँधी में, काँगरेस में गाँधी व्यापक ।
जन जन में जागृति बन बरसे, जन जन के गौरव जननायक ॥

और विदेशों में भारत की- वस्तु परिस्थिति करी प्रसारित ।
देश विदेशों में गाँधी ने- सत्य अहिंसा करी प्रकाशित ॥
अमरीकन 'मिस्टर होल्मस' के- आगे कोई मुस्लिम बोले-
'गाँधी जी तो अफ़रीकन हैं', पर उत्तर सुन कर वे डोले ॥

बोले 'होल्मस' अट्टहास कर- मुझको जग में दावा यह है-
'अखिल विश्व के हैं गाँधी जी, मेरी गाँधी टोपी वह है ॥'
सारे जग के पूज्य पिता वे, महानाश का नशा उतारें ।
छुवाछूत का भेद न छोड़ा, हम उनकी एकता विचारें ॥

ग्राम संगठन, शिक्षा, सेवा, चर्खे, खद्दर बने राष्ट्र-निधि ।
जिससे मुक्ति मिले मानव को- खोजी गाँधी जी ने वह विधि ॥
पर यह संघर्षों की दुनिया, खड़ी रेत की दीवारों पर ।
भूत भिन्नता का चिपटा है, दया करो प्रलयंकर शंकर !







जनायक



जय स्वतन्त्रता ! अमर मुक्ति जय ! छिड़ी वायु में यह स्वर लहरी ।
बिना पिये दर्शन से झूमे, चढ़ी हुई थी इतनी गहरी ॥
मचल उठा सागर का यौवन, लहरों ने झण्डा लहराया ।
सत्य अहिंसा की वाणी से- पापी का बेड़ा थर्राया ॥

कौंसिल में, कौंसिल के बाहर- स्वतन्त्रता के लिये क्रान्ति थी ।
लम्बी चौड़ी गोल धरा पर- बापू ही में शेष शान्ति थी ॥
कुरीतियों की दीवारों को- आत्मा बल से तोड़ रहे थे ।
हिन्दू मुसलमान पागल बन- आपस में सर फोड़ रहे थे ॥

हिन्दू मुस्लिम पागलपन ने- भारत माता की जड़ काटी ।
तनातनी की ही आँधी में- पहुँची काँगरेस "गोहाटी" ॥
'गोहाटी' में मिली सूचना- श्रद्धानन्द क़त्ल कर डाले ।
काला किया 'मुहम्मद' का मुँह, किये किसी मुस्लिम ने छाले ॥

शोक छा गया 'गोहाटी' में, मानो शोक सभा होती थी ।
काँगरेस के अधिवेशन में- सूनी पर हत्या रोती थी ॥
शोकाकुल उस अधिवेशन में- भाषण हुए, कार्य-क्रम आया ।
प्रस्तावों पर नेता बोले, पथ 'स्वराजियों' का दिखलाया ॥

कौंसिल के बारे में अपनी- नीति नयी निर्धारित करली ।
शिवम् रूप रेखायें खींचीं, हृद में नीति नागरी धरली ॥
नौकरशाही तलवारों को- क़ानूनों से लगे काटने ।
किन्तु सत्य की फ़िसल ढाल से- रक्त उन्हीं का लगे चाटने ॥

वायसराय भवन में 'अर्विन'- अपनी गीता सुना रहे थे ।
परख रहे थे नेता गिन गिन, मन मन में गुनगुना रहे थे ॥
कौंसिल में भारी मोर्चे थे, बाहर जलसे और प्रदर्शन ।
निर्धन के भोजन वस्त्रों हित- सत्याग्रह का होता नर्तन ॥

सामाजिक, सांस्कृतिक वृद्धि में- सबसे बड़ा राजनैतिक बल ।
पर न सत्य आत्मा बल भूलो, शान्त करो जीवन की कल कल ॥
शुद्ध बुद्धि आत्मबल मन से- गाँधी दल बढ़ता जाता था ।
तैर निकल जाता सागर से, शैल शिखाओं पर गाता था ॥







सरकारी मोर्चों पर गर्जे, मानव के अन्तर में छाये।
काँटे चुगते चले मार्ग के, क़दम क़दम पर फूल बिछाये॥
जिससे जीती मंज़िल हारी– लक्ष्य उसी के चरण चूमता।
प्यार उसी का धन्य धन्य है– जो भौरों की तरह झूमता॥

अंग्रेज़ों के बन्दीगृह में– जब स्वतन्त्रता तड़प रही थी।
भारत माता के गौरव को– मानो डायन हड़प रही थी॥
या कि चुराई 'सीता माता'– कारागृह में बँधी पड़ी थी।
या भारत माँ की छाती पर– दाँत निकाले हँसी खड़ी थी॥

कहाँ क़ैद 'लंका' में 'सीता', गाँधी ने यह पता लगाया।
स्वतन्त्रता वापिस लाने को– सत्याग्रह का शंख बजाया॥
स्वतन्त्रता फूलों सी सुन्दर, और सत्य सी 'सीता' माता।
शान्ति शिवम् सी गौरव गाथा, चरण-धूलि से जन तर जाता॥

सत् स्वतन्त्रता के दर्शन को– गाँधी के लोचन ललचाये।
कल न पड़ी पल भर भी उनको, आँखों से पत्थर पिँघलाये॥
सच्चे मन से जिसने टेरा– उसको नारायण मिल जाते।
जो सागर में घुस जाते हैं– वे ही हीरे मोती पाते॥

सागर की गहराई में घुस, गाँधी जी अम्बर में घूमे।
शक्ति धरा पर कर्मयोग से– जयश्री ने उनके पग चूमे॥
सत्य अहिंसा से गाँधी जी– आन्दोलन को चला रहे थे।
वीर निहत्थों को गोरेगण– दमन नीति से जला रहे थे॥

सह न सके कुछ नौजवान यह, धधक उठा दुर्द्धर क्रोधानल।
महामेघ में घी पड़ते ही– उठा मार फुंकार 'गर्म-दल'॥
खून उतर आया आँखों में, युवक हो गये आग बबूला।
चिनगारी लग गई फूस में, धू धू जला फूस का पूला॥

भारत माँ के कुछ पुत्रों ने– निर्मित किया क्रान्तिकारी दल।
पिँघल गया अन्तर का लावा, भड़क उठा भीषण दावानल॥
जैसे दबा साँप फण फाड़े– ऐसे भभके वे अंगारे।
लिपट जोंक से खून चूस कर– फूल गये गोरे हत्यारे॥









ईंट उठाई अंग्रेज़ों ने, पत्थर ले ये बढ़े अगाड़ी।
कवच पहिन कर चलीं देवियाँ, छोड़ छोड़ रेशम की साड़ी॥
'बिस्मिल' चले, 'लाहड़ी' भभके, कूद पड़े 'असफ़ाक' समर में।
सर से कफ़न, हृदय में ज्वाला, बाँध बाँध पिस्तौल कमर में॥

रक्त सी रण चण्डी हुंकार! उगल विष, नागिन सी फुंकार!
निकल लपलप करती तलवार!
खून पी जा गट गट गट गट!!

भभकती है आँखों में अग्नि, दहकते अन्तर में अंगार।
आज पीना है ताजा लहू, आज करदे जननी संहार॥
क्रोध से फड़क रहे भुजदण्ड, रुद्र का बजने दे डमरू।
देख माँ! खुला तीसरा नेत्र, मिले वरदान मार कर मरूँ—
उसे जो करता अत्याचार।

रक्त सी रण चण्डी हुंकार! उगल विष, नागिन सी फुंकार!
निकल लप लप करती तलवार!!
खून पी जा गट गट गट गट!!!

विप्लव के इन अंगारों ने— फाँसी के तख़्तों को चूमा।
फाँसी के तख़्तों से पूछो— कौन कौन फाँसी पर झूमा?
'काकोरी' के मुँह से सुनलो— इन वीरों की अमर कहानी।
स्वतन्त्रता के लिये मिटी है— इनकी उठती हुई जवानी॥

हलचल की काली आँधी में— गाँधी जी थे अचल हिमालय।
'गोवर्द्धन' के लिये कृष्ण थे, मानवता के थे न्यायालय॥
देख रहे थे दुनिया भर को, हृदय हृदय में झाँक रहे थे।
राजनीति, गति विधि संसृति की— दिव्य दृष्टि से आँक रहे थे॥

वही आग को बुझा सका है— जो जन खेल आग से खेला।
जिसे भरोसा नारायण पर— उसे न समझो कभी अकेला॥
हलचल के इन तूफ़ानों में— ब्रिटिश राज्य भी सावधान था।
दंगों की बाढ़ों के अन्दर— 'वायसराय' विधान ध्यान था॥





उसने सब नेता बुलवाये, गाँधी जी को भी बुलवाया।
'दिल्ली' पहुँच गये गाँधी जी, श्री 'अर्विन' से हाथ मिलाया॥
ब्रिटिश राज्य की नई घोषणा- गाँधी जी के आगे आई।
ज़हर 'साइमन' के कोड़ों ने- गाँधी जी पर करी चढ़ाई॥

भेद 'कमीशन' का सब परखा, समझ लिया सब कुछ गाँधी ने।
घुमा दिया सब राजनीति में- एक निमिष की उस आँधी ने॥
बोले 'अर्विन' से गाँधी जी, 'इसीलिये क्या मुझे बुलाया?'
'अर्विन' बोले, 'इसीलिये बस', सुन कर अखिल विश्व शर्माया॥

गाँधी बोले, "चिट्ठी में भी- जा सकती थीं ये सब बातें।
व्यर्थ बुलाया मुझे यहाँ तक, दिन न बताओ काली रातें॥
चढ़ा 'साइमन' सर के ऊपर- छिड़क रहे हो नमक जले पर।"
चित्र खिँचित से चले गये वे, बड़ी शान्ति से इतना कह कर॥

बोले गाँधी, बहिष्कार हो, घुसे 'साइमन' जब इस घर में।
झगड़ा फूट गया गोरों का- गली गली में, नगर नगर में॥
'विल्सन' ने तो कहा यहाँ तक- गोरों के सिर पर कलंक यह।
'जलियाँ वाला' खून न सूखा- पुती हुई मुँह पर कालस वह॥

गाँधी जी 'मदरास' आ गये- काँगरेस के अधिवेशन में।
नारायण की तरह प्रेम से- बैठे नेताओं के मन में॥
काँगरेस में सबसे भारी- प्रश्न 'कमीशन' का ही आया।
भारत के स्वभाग्य निर्णय हित- बहिष्कार का निश्चय पाया॥

ब्रिटिश राज्य की नीति वृद्धि हित- चढ़ा 'साइमन' भारत के सर।
उत्तरदायी शासन की विधि, लायें अपने साथ जाँचकर॥
प्रातिनिधिक संस्थायें देखें- तत्सम्बन्धी रूपक आँकें।
भारत का शोषण कर आयें, अस्थिपंजरों में जा झाँकें॥

ब्रिटिश राज्य ने भारत माँ पर- छिपी छुरी से वार किया वह।
जिसने भी छल किया सत्य से- बीच भँवर में डूब गया वह॥
छल से 'अफ़ज़ल' मिला 'शिवा' से, उसको बाघ नखों ने फाड़ा।
उससे कोई कब डरता है- जो भी झूट मूट चिघाड़ा॥









जननायक



जब भारत में घुसा 'कमीशन'– गूंज उठा स्वर बहिष्कार हो !
जहाँ कहीं भी घुसे 'साइमन'– तिरस्कार हो ! तिरस्कार हो !!
जनता से बोले गाँधी जी– स्वागत हो काले झण्डों से।
करो प्रदर्शन, बढ़ो अगाड़ी, रुके न पग लाठी डण्डों से ॥

प्राप्त पूर्ण स्वातन्त्र्य करो तुम, स्वतन्त्रता के दीप जलाओ।
भारत की क्यारी क्यारी में– सौरभ सिंचित फूल खिलाओ ॥
देश राजनैतिक गति में था, आ पहुँचा 'बम्बई' 'कमीशन'।
पैर गुलामी के दृढ़ करने– छाती पर छा गया 'साइमन' ॥

जिस दिन घुसा 'कमीशन' उस दिन– भारत भर ने की हड़तालें।
वाणी वाणी पर यह स्वर था, चलो 'कमीशन' दूर निकालें ॥
जहाँ कहीं भी गया 'साइमन'– वहीं दिखाये काले झण्डे।
सत्याग्रहियों की कमरों पर– पड़ने लगे पुलिस के डण्डे ॥

पर न विरोध रुका डण्डों से, नारे लगते ही जाते थे।
दूर 'साइमन' ! दूर 'साइमन' ! वापिस ! वापिस ! सब गाते थे ॥
गया 'साइमन' दिल्ली में जब– काले बोर्ड टँग गये आगे।
अपना बहिष्कार करवाने– अब "लाहौर" गये हतभागे ॥

'लाला जी' आगे आगे थे, पीछे जनसमूह जाता था।
आँख उठाता जिधर 'साइमन'– उधर स्याह झण्डा पाता था ॥
भारत माता के गौरव की– बचा रहे थे लाज 'लाजपत'।
कच्चा चिकना घड़ा 'कमीशन'– लज्जा से भी हुआ नहीं नत ॥

'लाला जी' के संचालन में– काले झण्डों का जलूस था।
दियासलाई की देरी थी– सारे में बिछ रहा फूस था ॥
टूटी पुलिस लाठियाँ ले ले, 'लाला जी' पर डण्डे बरसे।
टूट गईं हड्डियाँ उन्हों की, खून बहा बहुतों के सर से ॥

हाय ! अन्ततोगत्वा इससे– 'लालाजी' की मृत्यु हो गई।
मिली वीर गति भारत सुत को– दूर देश में शक्ति सो गई ॥
चोटें चसकीं, किन्तु अन्त तक– स्वतन्त्रता के लिये लड़े वे।
बहिष्कार का झण्डा लेकर– सब से आगे रहे खड़े वे ॥



अब 'संयुक्त प्रान्त' में आयें, आ पहुँचा 'लखनऊ' 'कमीशन'।
काले झण्डों से करते थे- 'पन्त' 'जवाहर लाल' प्रदर्शन॥
प्रमुख कार्यकर्त्ताओं ने मिल- बोले बहिष्कार के नारे।
लाठी डण्डे ले ले दौड़े- इस पर लाल लाल हत्यारे॥

'पन्त' 'जवाहर लाल' वीर भी- बच न सके उनके डण्डों से।
पिटते पिटते भी करते थे- स्वागत वे काले झण्डों से॥
हिले न तिल भर, झुके न पल को, पड़ती रहीं लाटियाँ सर पर।
पैदल घुड़सवार, गोरों ने- रौंदा उनको दौड़ दौड़ कर॥

बर्बरता से पुलिस उन्हों पर- डण्डे बरसाती जाती थी।
किन्तु 'साइमन' के विरोध में- जनता बढ़ बढ़ कर गाती थी॥
पुलिस लाठियाँ चला रही थी- घुस घुस कर जनता के घर में।
किन्तु 'साइमन वापिस जाओ!' नारे गूंजे डगर डगर में॥

धन्य धन्य वह जनता जिसके- सम्मुख केवल बहिष्कार था।
प्राणों से ममता न जिसे थी- स्वतन्त्रता से जिसे प्यार था॥
बुद्धि, युक्ति, बल और शान्ति से- वे विरोध करते जाते थे।
पर बेशर्म उन्हों के आगे- फिर भी बार बार आते थे॥

'कैसरबाग' 'कमीशन' पहुँचा, चाय पिट्ठुओं ने पिलवाई।
भीड़ पुलिस ने दूर रोक दी, भीड़ वहाँ तक पहुँच न पाई॥
लेकिन चमत्कार जनता के- देख 'कमीशन' तक घबराया।
जब कि चाय का प्याला उसने- अपने ओठों तक पहुँचाया-

काली चिट, काले गुब्बारे- तब उस पर बरसे अम्बर से।
कागज़ के काले झण्डों से- उनके टोप गिर गये सर से॥
'वापिस जाओ!' लिखा जिन्हों पर- सर पर वे काले पतंग थे।
चमत्कार यह देख उन्हों का- विकट बुद्धि अंग्रेज़ दंग थे॥

भाग 'कमीशन' 'पटने' पहुँचा- जहाँ भीड़ थी स्टेशन पर ही।
जिसने औरों का हक़ छीना- अपने आप गया वह मर ही॥
वहाँ पुलिस ने गाँव गाँव से- लॉरी भर भर कृषक बुलाये।
लाये थे स्वागत करने को, पर वे सब विरोध में आये॥









जिधर 'साइमन' गया उधर ही– उसको जनता ने धिक्कारा।
भिन्न भिन्न भागों में जा जा– वापिस 'लण्डन' गया बिचारा॥
दर्जी की दुकान पर कोई– हलवाई क्या सी सकता है?
जल में रह कर मगरमच्छ से– वैर किये क्या जी सकता है??

आग फूस से कभी न बुझती– उलटी और धधक उठती है।
दमन नीति से क्रान्ति न दबती– नागिन सदृश भभक उठती है॥
चलो 'सर्वदल सम्मेलन' में– जहाँ विराज रहे नेता गण।
स्वतन्त्रता की गहन समस्या– सब मिल सुलझाते हैं क्षण क्षण॥

'पंडित मोतीलाल नेहरू'– मुक्ति युक्ति से खोज रहे थे।
रजनी में सूरज दिखलाकर– गाँधी खिला सरोज रहे थे॥
चलो, 'बारडोली' में चलकर– देखें रवि-रूपक की झाँकी।
'बँदोबस्त' के कारण जिसने– मनुष्यता से पशुता आँकी॥

'सामूहिक सविनय सत्याग्रह'– जहाँ प्रयोग किया गाँधी ने।
ठठरी से सूखे कृषकों को– जीवन दान दिया गाँधी ने॥
'बँदोबस्त' का राक्षस सर पर– मालगुज़ारी चढ़ा रहा था।
और महामानव कन्धों से– पंगु गगन पर चढ़ा रहा था॥

पट्टी बाँध बाँध पेटों से– हम ग्रामीण रात दिन पिलते।
फिर भी तो हम कंकालों को– हाय! न सूखे टुकड़े मिलते॥
इतने पर भी मालगुज़ारी– पागल कुत्ते नोच रहे थे।
इन्हीं समस्याओं के कुछ हल– गाँधी बापू सोच रहे थे॥

आन्दोलन कर दिया संगठित, बागडोर सौंपी 'पटेल' को।
जन्म जन्म में 'वल्लभ भाई'– खेल चुके थे इसी खेल को॥
सावधान सरकार हो गई, चट खूँखार पठान बुलाये।
बर्तन कुर्क किये कृषकों के, गाय बैल नीलाम कराये॥

खून चढ़े खूँखार लोग वे– पीने लगे खूब कृषकों का।
ज़िन्दा गाड़ रहे थे कर से, करते थे वे खून हकों का॥
ऐसे अत्याचार हुए जब– कौंसिल के सदस्य तब जागे।
कुछ सदस्यगण सह न सके यह, कौंसिल के निर्मम पद त्यागे॥





सब सदस्य कटिबद्ध हो गये, गीत चले घन बरसाने को ।
धन्य ! धन्य ! जिनके त्यागों से- आकुल जग जीवन पाने को ॥
इतने में सरकार झुक गई, सबकी जागीरें लौटाईं ।
सत्याग्रह ने विजय प्राप्त की, भूली हुई मंज़िलें पाईं ॥

बढ़ी न मालगुज़ारी निर्मम, लज्जित होकर वहीं झुक गई ।
झुकीं आँख, फिर बढ़ न सकी वह, बूढ़ी अभिसारिका रुक गई ॥
काली पीली आँधी प्रति पल- भारत पर छाई रहती थी ।
एक समस्या सुलझ न पाती- और नई धारा बहती थी ॥

अतः महात्मा गाँधी आये- ज्ञान लोक से भक्ति लोक में ।
शोक अग्नि से दूर क्षितिज में- रमे महात्मा जी अशोक में ॥
या कि मनन के लिये सत्यमय- ईश्वर के मन्दिर में आये ।
शान्ति प्राप्ति के लिये उन्होंने- मन-मन्दिर में फूल चढ़ाये ॥

राजनीति का सत्य समझने- या कि अनेक एक में आये ।
सत्य साधना बाद उन्हों के- 'कलकत्ते' में दर्शन पाये ॥
'कलकत्ते' के अधिवेशन में- काँगरेस की तूती बोली ।
'मोतीलाल' सभापति पद पर, गाँधी जी ने गुत्थी खोली ॥

बोले 'मोतीलाल' मञ्च से, 'आज गगन में काले बादल ।
आज देश की राजनीति में- नई नई घटनाओं का बल ॥
स्वतन्त्रता के लिये देश को- बुद्धि और बलिदान चाहिये ।
एक सूत्र में पिर जाओ सब- भारत को यह शान चाहिये ॥'

डाँवाडोल परिस्थितियों में- कर्णधार आधार आ गये ।
जब जग था मँझधार उस समय- निराकार साकार आ गये ॥
स्वतन्त्रता का शंख बजाकर- नवयुवकों को दिया निमन्त्रण ।
स्वतन्त्रता के लिये लड़ेंगे- नवयुवकों ने किया महा प्रण ॥

काँगरेस के झण्डे लहरे- 'युवक संघ' बन गया देश में ।
जल प्लावन की लहरों जैसे- युवक बन गये पूर्त्ति शेष में ॥
जय जय जय जय जगत नियन्ता, जय जय जय तन मन धन चन्दन ।
कल्याणी वाणी वीणा से- बार बार करती अभिनन्दन ॥







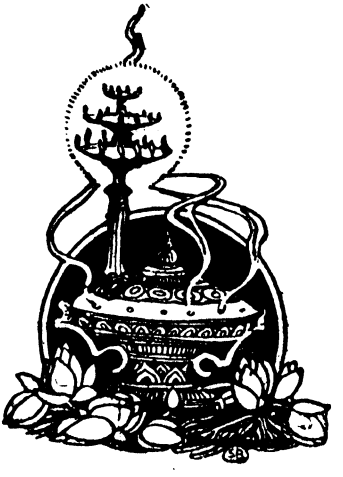


जननायक

नाव पड़ी मँझधार, धरा–
हिलती, चलते पथदर्शक गाँधी।
नीति वही, जय गीत वही,
गति लीक बने, जग की विधि आँधी॥

जो पतवार बने जग में–
प्रभु 'राम' उसे मन से यश देते।
'राम'! बसो मन में, मति दो!
पग धूलि उठा सर में मल लेते॥

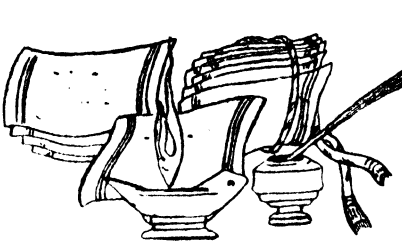












सप्तदश सर्ग





उसी महान की प्रभा प्रभात चूमता चला।
उसी मराल को लिये विकास घूमता चला॥
उसी प्रकाश को लिये निशान झूमता चला।
उसी गुलाब-स्नेह से सुदीप देश में जला॥

उसी मृदंग को बजा कि रुद्र नाचते वहाँ।
वही महान मेघ देख मोर नाचते यहाँ॥
उसी सितार को बजा मलार गा रही उषा।
उसी स्वतन्त्र के लिये सुहाग गा रही उषा॥

न सो पड़ी हुई निशा! सुहाग ला रही उषा।
न रो पड़ी हुई कला! कि आज आ रही उषा॥
कि शंख बोलने लगे उठो! जगा रही उषा।
कि ताज सिन्धु पार से उठो! मँगा रही उषा॥

उठो बढ़ो चलो कि आज रश्मि मेघ में खड़ी।
कि माँ पुकारती तुम्हें निराश रो रही पड़ी॥
उठो कि कान खोल लो उदास बीन बोलती।
उषा शहीद के लिये गुलाल रंग घोलती॥

शान्त उषा की अमर कला ने– अन्तर बाह्य विकास किया है।
करा आत्मदर्शन आत्मा को– सुधा पिलाया और पिया है॥
कला न केवल व्यक्ति भोग्य है, सर्व भोग्य ही पूर्ण कला है।
जग को जीवन देने वाला– कलाकार बन दीप जला है॥







जननायक



जिसकी पूर्ण कला-किरणों ने- जन जन पर जीवन बरसाया।
जिसने काले अन्धकार में- दुनिया को दीपक दिखलाया॥
वह जननायक लाल उषा में- आगे लिये खड़ा रणभेरी।
रण को उत्कण्ठित सेना है, केवल बजने की है देरी॥

ब्रिटिश राज्य के काले पीले- बादल भारत पर छाये थे।
महाप्रलय में हिमगिरि जैसे- गाँधी पर घन मँडराये थे॥
सागर की अथाह गहराई- प्रूम निमिष में बतलाता था।
बनता प्रेक्षागार वहीं पर- जहाँ कहीं वह धन जाता था॥

पल में प्लुत सीधे हो जाते, बड़ी हस्तियाँ हाथ जोड़तीं।
गाँधी से आँखें मिलते ही- ऋद्धि सिद्धियाँ मुँह न मोड़तीं॥
आओ, अब हम चलें विलायत, देखें ब्रिटिश राज्य की झाँकी।
जिसके सिंहासन पर फैली- लुटी ज्योत्सना भारत माँ की॥

सत्ता संचालन करता है- जीत चुनावों में 'उदार दल'।
अब है "मैकडानाल्ड" मन्त्री, राज्य कर रहा मन्त्री-मण्डल॥
भारत मन्त्री "लॉर्ड वेजवुड"- भारत की संस्कृति से चिढ़ते।
गुड़ खाते, गुलगुले न खाते, देवी की आकृति से चिढ़ते॥

पश्चिम की कुरीतियों से क्या, आओ हम उस के गुण आँकें।
अंग्रेज़ी साहित्य सड़क पर, वाणी के मन्दिर में झाँकें॥
वह विशाल साहित्य उन्हों का- जिसमें भौतिक बहुत भरा है।
जिसको लाद लाद भारत पर- भारत माँ पर राज्य करा है॥

मूल रूप में सब भारत में, किन्तु न हमने सींची क्यारी।
कैसे फिर फलतीं वे बेलें, कैसे होतीं जीत हमारी॥
मूल रूप में सब है लेकिन- हम विस्तार नहीं कर पाये।
हाय! गुलामी में गोरों के- भारत ने दुतकारे खाये॥

हत्याओं की दुर्गन्धों पर- सौरभ बरसा उस प्रसून से।
कर कर अत्याचार 'कमीशन', रँग कर लौटा हाथ ख़ून से॥
'लाला जी' डस गया 'साइमन', नौजवान फुक उठे आग से।
गोरों पर फुंकार उठे वे, गुस्से में भर दबे नाग से॥







भगतसिंह' 'सुखदेव' 'राजगुरु', और 'चन्द्रशेखर' भभूँ जलाये।
जय जय कहो 'यतीन्द्रनाथ' की, जिसने प्राण-प्रसून चढ़ाये॥
क्रान्तिकारियों के हृदयों में- धधक उठी बदले की ज्वाला।
'बदला लेंगे 'लाला जी' का', सब वीरों ने प्रण कर डाला॥

जिसने 'लाला जी' को मारा- उसे नहीं ज़िन्दा छोड़ेंगे।
और गुलामी की ज़ंजीरें- गट्टों के बल से तोड़ेंगे॥
हत्यारों की हत्या के हित- बड़े बड़े षड्यन्त्र बनाये।
'लाला जी' के हत्यारों पर- क्रान्तिकारियों के दल छाये॥

जब 'सांडर्स' चल पड़ा घर से- फिटफिटया गाड़ी पर चढ़ कर।
'भगतसिंह' 'शेखर' ने उस पर- भर पिस्तौल कर दिये फ़ायर॥
तड़प वहीं 'सांडर्स' मर गया, 'भगतसिंह' थे नौ दो ग्यारह।
एसम्बली हॉल में अरि के- बजा दिये जा मुँह पर बारह॥

सावधान सरकार! सँभल अब, कह कर वीरों ने बम डाले।
मानो आँखें खोल रहे थे- सम्मुख शंख बजाने वाले॥
पकड़े गये वहीं पर तीनों, पर मुस्काते रहे बराबर।
स्वतन्त्रता की बेलें सींचीं- क्रान्तिकारियों ने मर मर कर॥

क्रान्तिकारियों ने भारत की- पूजा की है रक्त-अर्घ्य से।
स्वतन्त्रता देवी आई है- भारत माँ के उसी सत्य से॥
चौंसठ दिन तक अनशन करके- मरने वाले की जय हो! जय!
जय हो वीर 'यतीन्द्रनाथ' की, जय जय जय जय जय मृत्युञ्जय॥

जय जय 'वीर यतीन्द्र' अमर जय! भारत के 'भैक्रखनी' कहाँ हो?
कवि की वाणी टेर रही है, बोलो बोलो वीर जहाँ हो!!
ये वे जलते दीपक हैं जो- बुझ न सके आँधी पानी से।
तूफ़ानों में जले बराबर, झुके न मस्तक अभिमानी से॥

इन वीरों में एक एक की- महाकाव्यमय अमर कहानी।
इतिहासों के पृष्ठ पृष्ठ पर- इन वीरों की अमर जबानी॥
इनके बलिदानों की गाथा- कुछ तो फाँसी में अंकित हैं।
अंकित कवियों की वाणी में, या समाधियों में चित्रित हैं॥







जनायक



जैसे रवि-रश्मियाँ बिखर कर- कर देतीं दीपित भूमण्डल।
ऐसे ही उन बलिदानों ने- अमर बनाया अतल वितल तल॥
जैसे बालारुण अम्बर में- दमके लिये रोष की लाली।
ऐसे ही उन नवयुवकों ने- भस्मसात की डायन काली॥

सावन भादो से दृग बरसे, क्रुद्ध सूर्य ने आग उड़ेली।
सागर गर्जे, धरती लरजी, पर वीरता आग से खेली॥
खुला तीसरा नेत्र प्रलय कर, शिवशंकर ने भौंहें तानी।
महाप्रलय सी मचल चल पड़ी- उनकी उठती हुई जवानी॥

इतिहासों में अमर रहेगी- उन वीरों की अमर कहानी।
कवि की वाणी, माँ का मस्तक- इन बलिदानों पर अभिमानी॥
आओ, हम इनकी समाधियाँ- हृदय हृदय में आज बना दें।
आओ, हम इनके चरणों में- श्रद्धा के दो फूल चढ़ा दें॥

आओ, इनकी चिता किनारे- यादगार पर दीप जलायें।
आओ कवियो! समाधियों पर- गा गा सोते वीर जगायें॥
चन्दन में सुगन्ध बन रहती- इन वीरों के चरणों की रज।
जागो जागो! वीर! जाग कर- देखो स्वतन्त्रता की सज धज॥

देख रहे हैं क्षितिज पार से- अपने बलिदानों की जगमग।
तब ये ही पतवार बने थे- जब नौका होती थी डग मग॥
गगनवासियो! एक बार फिर- धरती को दर्शन दे जाओ!
एक बार अपने हाथों से- कवि के उर में दीप जलाओ!!

एक बार स्वाधीन देश में- चन्दन तुम्हें चढ़ाना होगा।
एक बार माँ के मन्दिर में- दीपक तुम्हें जलाना होगा॥
अपनी चाहें छोड़ गये हो- गाँधी जी के संग्रामों में।
गाँधी जी ही समझ सके हैं- स्वतन्त्रता है किन दामों में॥

जो काया को पत्थर करले- दुनिया उससे हिल जाती है।
मनुज चेतनामय पत्थर है- मानवता यह बतलाती है॥
वही बहुत मत चेतन है जो- कारा के दर्वाज़े खोले।
बन्दीगृह की दीवारों में- स्वतन्त्रता दुलहन से बोले॥





स्वतन्त्रता चंचला मोहिनी, इसका मन्दिर बहुत दूर है।
लहू लुहान मंज़िलें तय कर- जो जाये वह बड़ा सूर है॥
जो कि मार के डर से गाली- खाये, वह न मनुज, नर पशु है।
स्वतन्त्रता वीरों की सुषमा- सत्य आत्म संयम् जग वसु है॥

मृत्यु क्रान्ति है, जीवन विस्तृत, राष्ट्र इन्हीं दोनों से बढ़ता।
खेल जान पर जान बचाते, जो झुकता वह ऊँचा चढ़ता॥
जब सर्वस्व होम देता नर- तब नर नारायण बन जाता।
सच्चा कष्ट सहन कर ले जो- वह दुनिया पानी कर पाता॥

यही तपस्या की महिमा है, सत् चरित्र ही शान्तिलोक है।
श्रद्धा धैर्य सिपाही जीवन- इस जग-जीवन में अशोक है॥
बुरे विचार मात्र हिंसा है, झूठी दृष्टि बड़ी चोरी है।
अभय नम्रता सूक्ष्म प्रार्थना- मणियों की अक्षय बोरी है॥

हम भी कभी ग़लत होते हैं- पहिले अपने खोट देख लें।
अपनी चोटें देखें, लेकिन- औरों की भी चोट देख लें॥
गाँधी बापू की वाणी से- जाग चुका था देश हमारा।
दमन-चक्र में गूंज रहा था, क्रान्ति क्रान्ति का प्यारा नारा॥

नवयुवकों को नंगा करके- अत्याचारी बेंत उड़ाते।
नौजवान पिटते पिटते भी- भारत माता की जय गाते॥
स्वतन्त्रता फाँसी पर चढ़कर- या जेलों में जाकर मिलती।
बलिवेदी पर हँसते हँसते- तन मन द्रव्य चढ़ाकर मिलती।

यह वह दमन काल था जिसमें- उँगली उठते ही सर कटता।
यह वह दमन काल था जिसकी- परछाईं से पत्थर फटता॥
जब 'मेरठ षड्यन्त्र' चला था- सड़कों पर कंकाल बिछे थे।
यह वह हत्याकाल कि जिसमें- षड्यन्त्रों के जाल बिछे थे॥

राजनीति के इन्द्रजाल में- 'अर्विन' भारत वापिस आये।
भूलभुलैया की गाड़ी में- स्वतन्त्रता का गुड्डा लाये॥
'अर्विन' की गाड़ी के नीचे- किसी दिलजले ने बम डाला।
बाल बाल बच गये बिचारे, सबसे बड़ा बचाने वाला॥









जैसा चित्र ब्रिटिश ने खींचा– वह पँचरंगा इन्द्रजाल था।
अन्दर उसके आग भरी थी, ऊपर से लगता प्रवाल था॥
भारत समझे यह स्वराज्य है, राज्य गुलामी ही को माने।
वह ऐसी तस्वीर बनाई– जिससे सत्य असत्य न जाने॥



राज्य विलायत वालों का हो, भारत समझे राज्य हमारा।
आग उगलते अंगारे को– कौन मान लेगा ध्रुव तारा?
ब्रिटिश राज्य का अङ्गभूत रख– भारत को चाहा फुसलाना।
उत्तरदायी राज्य प्राप्ति का– औपनिवेशिक करा बहाना॥

'अर्विन' की यह हुई घोषणा– अङ्गभूत भारत सुख पाये।
देशी राज्य, ब्रिटिश भारत को– धुँधले धुँधले स्वप्न दिखाये॥
'अर्विन' ने शतरंज बिछाई– नेताओं को लगे खिलाने।
नीतिनिपुण गाँधी बाबा को– बात बनाकर लगे बनाने॥

पर गाँधी जी तो आये थे– औपनिवेशिक स्वराज्य के हित।
'गोलमेज़ परिषद्' इस हित हो– यही चाहता था उनका चित॥
पर वे ऐसे तिल थे जिनमें– चावल भर भी तेल नहीं था।
पर गाँधी को बहकाना भी– बच्चों जैसा खेल नहीं था॥

चारों ओर आग की लपटें, गाँधी जी चलते जाते थे।
हलचल में चंचल न हुए वे, तम में दीपक दिखलाते थे॥
इसी वर्ष 'लाहौर' शहर में– काँगरेस होने वाली थी।
नवयुवकों में वीर 'जवाहर'– सेनानी की उजियाली थी॥

दस प्रान्तों ने गाँधी जी को– कहा राष्ट्रपति पद पर आयें।
पाँच प्रान्त बोले 'पटेल' हों, वे इस आसन को दर्शायें॥
तीन प्रान्त ने चाहें भेजीं– सजें जवाहर इस आसन पर।
नब्ज़ देश की देख रहे थे– सत्य महामानव ज्योतिर्कर॥

गाँधी जी ने आसन छोड़ा, छोड़ा "वल्लभ भाई" ने पद।
वीर जवाहरलाल राष्ट्रपति, दीपित हुई वीरता की हद॥
अधिवेशन 'लाहौर' हुआ जब– राजनीति का गूढ़ जाल था॥
बर्फ़ कट रहा था उत्तर से, उत्तर में हेमन्त काल था॥





'रावी-तट' पर अधिवेशन की– शान शारदा गा न सकेगी।
दृष्टि विहीन गिरा दर्शन कर– पार वहाँ का पा न सकेगी॥
गूंगा रस चख क्या बतलाये? कला वहाँ फीकी पड़ जाती।
'रावी-तट' पर डेरे डाले, दुनिया अद्भुत दर्शन पाती॥

सरिता की चंचल लहरों पर– शरद सुन्दरी नाच रही थी।
नाच रही थी चारु चाँदिनी. लहरों में कामना बही थी॥
संगम राग सुनाती सरिता, मचल रही थी साधों में लय।
वीरों का पानी उमड़ा था, गूंज रही थी जल में जय जय॥

जय जय में गाँधी का जीवन, जीवन में मानवता की गति।
गति में जग की नाव तैरती, नौका में पतवार विश्वपति॥
स्वयम् शारदा अधिवेशन में– वाणी वाणी पर गाती थी।
ईश्वर की कामना वहाँ पर– दीपक स्वयम् जला जाती थी॥

शरद सुन्दरी की बेला में– लगा हुआ था अद्भुत मेला।
घोड़े पर सवार जाता था– राष्ट्र-मुकुट गाँधी का चेला॥
डेरे डेरे में रौनक़ थी, देशभक्ति की लहरें गातीं॥
प्रतिनिधियों की चहल पहल थी, लाखों दिवालियाँ शर्मातीं॥

देखो ये बाज़ार कि जिनसे– 'पैरिस' के बाज़ार लजाते।
ये नेताओं के डेरे हैं– जिनसे क़िले महल शर्माते॥
देखो, अब जलूस निकलेगा, घोड़े पर चढ़ गये राष्ट्रपति।
गाँधी जी का छत्र भाल पर, नभ तक गई तिरंगे की गति॥

घोड़े पर सवार झण्डा ले– वीर जवाहरलाल चल रहे।
जय जय से ब्रह्माण्ड भर रहा, स्वागत में नभ-दीप जल रहे॥
जनता और जनार्दन पथ में– सागर से उमड़े पड़ते थे।
स्वतन्त्रता के अमर घोष सुन– दृग से घन घुमड़े पड़ते थे॥

सौर-चक्र में फेरी दे ली, आओ, अब परडाल देख लें।
नेताओं के दर्शन कर लें, नीर और शैवाल देख लें॥
देखो, चारों ओर दमकते– नेताओं के चित्र बोलते।
स्वतन्त्रता-दुलहन का कंगन– क्षितिज पार से वीर खोलते॥







जननायक



यह प्रदर्शिनी ! कलाप्रदर्शन ! लगे हुए बाज़ार स्वदेशी ।
दूर दूर के रहने वाले- 'रावी तट' पर थे प्रतिवेशी ॥
अधिवेशन में जगमग जगमग- नेता बैठे हुए मंच पर ।
ऊँचे आसन पर बैठे हैं- धन्य ! राष्ट्रपति वीर जवाहर ॥

हृदय-आसनों पर विराजते- गाँधी राष्ट्रपिता जननायक ।
गौरव गीत अमूल्य अमर निधि, सृष्टा सत्य स्वरूप सहायक ॥
भव्य 'पटेल', दिव्य गाँधी जी, शक्ति 'सुभाष', भक्ति 'राजा जी' ।
हाथ फेरते हैं दाढ़ी पर- बैठे बगल मौलवी हाजी ॥

अधिवेशन प्रारम्भ हो गया, खड़े हो गये अमर राष्ट्रपति ।
मानो सोता शेर उठ गया, सिंह गर्जना की होती गति ॥
भाषण होने लगा उन्हों का, अतल वितल निस्तब्ध हो गये ।
मन्त्रमुग्ध श्रोता बैठे थे, भाषणमय हो स्वयम् खो गये ॥

देशभक्ति के महाउदधि में- उमड़ पड़ीं भावों की लहरें ।
चन्दा जैसी जनता पाकर- दौड़ पड़ीं चावों की लहरें ॥
व्यंग मारते हुए उन्हों ने- 'अविन' की घोषणा सुनाई ।
औपनिवेशिक स्वतन्त्रता की- कृत्रिम कठपुतली दिखलाई ॥

बोले, अब तो आ पहुँचा है- प्राणों की बाज़ी का अवसर ।
बाहें फड़क उठीं युवकों की- वाणी से गीता सुन सुन कर ॥
मुक्त लोकप्रिय पण्डित जी के- शब्द शब्द में चिनगारी थी ।
नीति निपुण के अभिभाषण में- फूलों की सुन्दर क्यारी थी ॥

कहा राष्ट्रपति ने, 'अविन' की- ज़हर मिली मीठी बातें हैं ।
समझौते का द्वार खुला है, किन्तु 'वेजवुड' बहकाते हैं ॥
जाल पड़ा है जिस पर उनकी- बिछी हुई हैं मीठी बातें ।
मुँह पर कुछ, पीछे से कुछ है, कहते हैं दिन, पर हैं रातें ॥

लेकिन हम तो 'कलकत्ते' के- निश्चय पर दृढ़ और अचल हैं ।
एक ध्येय है, एक लक्ष्य है, अपने प्रण पर पूर्ण अटल हैं ॥
कहा, ब्रिटिश साम्राज्यवाद है, मैं जनतन्त्र साम्यवादी हूँ ।
राजाओं को नहीं मानता, प्रजातन्त्र का दृढ़ आदी हूँ ॥





बादशाह का राज्य न होगा, राज्य यहाँ जनता का होगा।
जन जनता से बड़ा न होगा, जिसने बोया, उसने भोगा॥
अल्पसंख्यकों की चर्चा की, देशी राजाओं पर बोले।
श्रमिकों के प्रश्नों को हल कर, हृदयों के दर्वाज़े खोले॥

हिंसा के परिणाम न अच्छे, हिंसा से हम मर जायेंगे।
सत्य अहिंसा का बल पाकर- जो चाहेंगे वह पायेंगे॥
हिंसा की संगठित शक्ति फिर- आकर हमें प्रणाम करेगी।
सुख सम्राज्ञी शक्ति अहिंसा- जय पाकर विश्राम करेगी॥

पहरे पर हिंसा होगी फिर, उसे अहिंसा आज्ञा देगी।
दासी होगी शक्ति शौर्य की, हिंसा हत्यारी न बनेगी॥
स्वतन्त्रता के आन्दोलन में- सारी जनता आगे आये।
आन्दोलन हो पूर्ण शान्ति से, चोटी पर झण्डा लहराये॥

शस्त्र युद्ध की बात अलग है, वह संगठित क्रान्ति की माया।
राजसभा के बहिष्कार पर- फिर उस शशि ने सुधा बहाया॥
कहा राष्ट्रवाणी ने फिर यह- काँगरेस का करो संगठन।
इस के लिये होम दो वीरो! हँस हँस कर अपना तन मन धन॥

यह कोई क्या कह सकता है- हमें मिलेगा कब कितना फल?
आज सभी देखा करते हैं, बोलो! किसने देखा है कल??
साहस से जो बढ़ा अगाड़ी- विजय उसी के चरण चूमती।
सर सेहरा उन्हीं के बँधता, वीरों ही से धरा घूमती॥

जो परिणामों से डरते हैं- वे कायर मिट्टी के माधो।
हार उन्हीं की क़िस्मत में है, कार्य करो, परिणाम न साधो॥
हार जीत की चिन्ता छोड़ो, कार्य क्षेत्र में बढ़ो अगाड़ी।
वीर खींच कर ले जाते हैं- दूर दूर कन्धों पर गाड़ी॥

स्वतन्त्रता का अर्थ यही है- ब्रिटिश राज्य से देश मुक्त हो।
बन्धन तोड़ें, पूर्ण मुक्त हों, मुक्त देश मित्रता युक्त हो॥
निस्सन्देह स्वतन्त्र देश यह- विश्व संघ निर्माण करेगा।
ईश्वर मेरी इन चाहों को- अक्षर युक्त प्रमाण करेगा॥







जनायक

जब तक इस साम्राज्यवाद की- खुराफ़ात का अन्त न होगा-
तब तक गाँधीवाद विश्व में, गाँधी जैसा सन्त न होगा ॥
हर सम्भव उपाय से तय है- सत्ता हाथ हमारे आये ।
ब्रिटिश राज्य अपने झण्डे को- अब इँगलैंड साथ ले जाये ॥



औपनिवेशिक स्वतन्त्रता से- पूरी सत्ता नहीं मिलेगी ।
ब्रिटिश राज्य भारत से जाये- तब ही जीवन कली खिलेगी ॥
सर से हटे विदेशी सेना, बिल्कुल उठें नियन्त्रण आर्थिक ।
स्वतन्त्रता का समर छिड़ेगा, पर संघर्ष चलेगा सात्विक ॥
वीर जवाहर की वाणी ने- जन मन के दर्वाज़े खोले ।
या कि राष्ट्रपति की वाणी से- सुधा-स्रोत-गाँधी जी बोले ॥
पूज्य राष्ट्रपति बापू जग में- दो शरीर, पर एक हृदय थे ।
वीणा बने राष्ट्रपति जग में, गाँधी जी वीणा की लय थे ॥
व्याख्या हुई स्वराज्य अर्थ की, पूर्ण स्वतन्त्र ध्येय पहिचाना ।
'अविन' ने झण्डी दिखलाई, गाँधी जी ने झण्डा ताना ॥
जन जन ने यह करी प्रतिज्ञा- स्वतन्त्रता अधिकार हमारा ।
हम स्वतन्त्र हो जियें, अन्यथा- जीना ही धिक्कार हमारा ॥
बोयें हम, फल हम सब पायें, जग में मिले प्रगति का अवसर ।
भारतीय झण्डा लहरायें, रहे न कोई बन्धन हम पर ॥
यदि कोई सत्ता अन्धी हो, छीने ये अधिकार पाप वश ।
जनता को अधिकार पूर्ण है- उसे बदल दे करदे बेबस ॥
अपने अधिकारों के बल से- जनता ऐसा राज्य मिटादे ।
यदि ऐसी सरकार कहीं हो- जनता उसको ज़हर पिलादे ॥
अंग्रेज़ी सरकार कि जिसने- स्वतन्त्रता का किया अपहरण ।
'सीता' को ले गया चुराकर- जैसे छलकर राक्षस 'रावण' ॥
यही नहीं, इन अंग्रेज़ों ने- बिल्कुल सत्यानाश किया है ।
आर्थिक, नैतिक शोषण करके- भारत बिल्कुल पीस दिया है ॥
सामाजिक आध्यात्मिक शोषण, चलने लायक़ खून न छोड़ा ।
छोड़ी वायु विषैली हम पर, निकला अंग अंग में फोड़ा ॥



अतः हमें अधिकार पूर्ण है, अंग्रेज़ों को अलग हटादें।
प्राप्त पूर्ण आज़ादी करलें, फूक मार कर इन्हें उड़ादें॥
नये नये कर कर वसूल ये- निर्धन के घर लूट रहे हैं।
'नमक और चुंगी कर' से ही- लाखों के सर फूट रहे हैं॥

अंग्रेज़ी शासन से भारत - धरती में गड़ता जाता है।
प्रतिभा हृदय कुढ़क से करके- आँख विदेशी दिखलाता है॥
अंग्रेज़ी शिक्षा ने हमको- प्यार गुलामी से सिखलाया।
नमक हरामी की हद देखो, जिसे खिलाया वह घुर्राया॥

यात्रा कठिन, नाव जर्जर है, फण फैलाती बाढ़ें आईं।
धरती अम्बर में कम्पन है, चारों ओर घटायें छाईं॥
ऊपर मेघाच्छादित अम्बर, सागर रुद्र रूप धारे है।
घोर अँधेरा, पार न मिलता, जन जनता हिम्मत हारे है॥

तम में किन्तु प्रकाश यही है- गाँधी जी पथ बतलाते हैं।
नौसिखिये केवट नौका को- धीरे धीरे ले जाते हैं॥
मार्ग जानता मार्ग प्रदर्शक, यात्री उसका कहना मानें।
उनकी हार जीत बन जाती, जो गाँधी जी को पहिचानें॥

सब से बड़ा पाप है जग में- बन्धन में रह पूँछ हिलाना।
सब से बड़ा धर्म है जग में- मुक्त दासता से हो जाना॥
सत्य अहिंसा से बन्धन की- हथकड़ियों को तोड़ गिरादें।
असहयोग से क्रान्ति क्रान्ति के- भीषण अंगारे दहकादें॥

गाँव गाँव ने करी प्रतिज्ञा- प्राप्त पूर्ण स्वातन्त्र्य करेंगे।
शपथ पूर्वक प्रण करते हैं- माँ के सर पर मुकुट धरेंगे॥
गाँधी सड़क बनाते चलते, जनता उस पर चली झूमती।
जिधर पैर मुड़ते गाँधी के, उसी ओर को धरा घूमती॥

ग्यारह शर्तें लिखीं गाँधी ने, रची रूपरेखा आगामी।
'अविन' को दी मधुर चुनौती, सहमे ब्रिटिश राज्य के स्वामी॥
ये ये शर्तें लिखीं उन्होंने, "भारत में मदिरा-निषेध हो।"
'विनिमय की दर घटें, धरा-कर- आधा हो, स्वाधीन-मेध हो॥







जननायक



'उठे नमक कर', सैनिक व्यय में– कमी करो कम से कम आधी।
बड़ी बड़ी नौकरी घटा कर– शासक! करो एक दम आधी॥
वस्त्र विदेशी जो आते हैं– उन पर 'कर निषेध' लगवाओ।'
भारतीय सागर-तट पर बस– भारत ही के यान लगाओ॥

छोड़ राजनैतिक बन्दी दो, निर्वासित अपने घर आयें।
खुफ़िया पुलिस उठे, मन बदलें, जनता में विश्वास जमायें॥
रक्षा हित हथियार रख सकें– जनता पर ये परवाने हों।
देश-दीप पर मँडरायें वे– जो दीपक के दीवाने हों॥

धन्य धन्य वह दिवस कि जिस दिन– गाँधी जी ने शंख बजाया।
निखिल विश्व को स्वतन्त्रता का– महाव्रती ने पाठ पढ़ाया॥
बड़े बड़े पत्थर पथ में थे, पर आन्दोलन रुका न रोके।
गंगाधारा के प्रवाह से– गाँधी-जीवन में थे झोके॥

'साबरमती' किनारे आश्रम, जिसमें गाँधी जी की माया।
'कार्यसमिति' ने गाँधी जी को– सब का संचालक ठहराया॥
सत्यव्रती ने शुरू कर दिया– 'विनय अवज्ञा' का आन्दोलन।
स्वतन्त्रता के समरांगण में– कूद पड़े भारत के यौवन॥

साधिकार गीता गाँधी ने– करी 'अवज्ञा सविनय' सत से।
चुने हुए सच्चे मित्रों ने– काम किया गाँधी के मत से॥
सब मित्रों से 'नमक विषय' पर– बातचीत की जननायक ने।
'नमक बनाओ! नमक बनाओ!' तान छेड़ दी उस गायक ने॥

करो इकट्ठा नमक देश में, उठो! 'नमक क़ानून' तोड़ दो!
सामूहिक सत्याग्रह करके– जननी की तक़दीर जोड़ दो!!
चलो! नमक के ढेरों पर चल– करें 'नमक क़ानून' भंग हम।
नमक बनायें, धावा बोलें, बढ़ते जायें एक संग हम॥

देखो, आँख खोल कर देखो! खून चूसता यहाँ 'नमक कर'।
लूट करोड़ों रुपया लेता, भर देता अंग्रेज़ों के घर॥
दूर देश के ये व्यापारी– करते चोर बज़ार यहाँ पर।
उलटे तुम्हें नचा कर बन्दर– ले जाते धन जेब काट कर॥







जननायक

'साबरमती'-सन्त की वाणी- क्षण में गूंज गई कण कण में।
नैतिक रण के लिये कमर कस- महा महा आये प्रांगण में॥
गाँधी के सुन्दर ललाट में- जलता था प्रकाश का दीपक।
सत्याग्रही जिधर चलते थे- मंज़िल उधर झुकाती मस्तक॥

सब से कहा प्रकाशमान ने- निर्भय होकर बढ़ो अगाड़ी!
लक्ष्य चरण चूमेगा आकर, खींचो खींचो खींचो गाड़ी!!
'नमक क्षेत्र' से नमक उठा कर- उठो, 'नमक क़ानून' तोड़ दो!
भारत माता की पूजा है, आओ, अब आलस्य छोड़ दो!!

पहिले नमक बनाऊँगा मैं, पीछे तुम तूफ़ान छोड़ना।
पहिले नमक उठाऊँगा मैं, पीछे तुम क़ानून तोड़ना॥
किन्तु शान्ति से आन्दोलन हो, चाहे सर पर बम भी बरसें।
वीर! तुम्हारे रक्त-बिन्दु से- भारत माँ के पौधे सरसें॥

तन मिट्टी है, मिला खाक में- स्वतन्त्रता के फूल खिलादो!
भारत माता के मस्तक पर- आज़ादी का मुकुट दिखादो!!
ऐसी अग्नि प्रज्वलित कर दो- जिससे पारतन्त्र्य जल जाये।
दिव्य दिवाली और उषा सी- स्वतन्त्रता भारत में आये॥

वीरों से इतिहास भरा है, तुम भी उसमें नाम लिखा लो!
घर में घुसे हुए डाकू हैं, घर से बाहर इन्हें निकालो!!
अमर 'थियोडरपार्कर्श' जिसने- 'अमरीका' की शान बढ़ाई।
खुले मंच से निर्भय उसने- आत्मा की आवाज़ सुनाई॥

सत्याग्रह से पूर्व पिता ने- 'अर्विन' को अन्तिम चेताया।
'रेजिनाल्ड रेनाल्ड' युवक से- उनके पास पत्र भिजवाया॥
"मैं हूँ सत्य अहिंसावादी- मनसा वाचा और कर्म से।
मेरी नीति समक्ष सत्य है, विमुख नहीं हूँ मनुज-धर्म से॥

अंग्रेज़ों से प्यार मुझे है, लेकिन हम पर राज्य शाप है।
सत्य निडर होकर कहता हूँ, सत्य न कहना महापाप है॥
ब्रिटिश राज्य ने भारत माँ पर- लाखों अत्याचार किये हैं।
शोषण कर कंगाल कर दिये, मूक बिचारे मार दिये हैं॥







जनायक

संस्कृति की जड़ करी खोखली, पौरुष का अपहरण किया है।
छीन लिये हथियार हमारे, दुर्बल कायर बना दिया है॥
ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल ने हमको– जबकि हरी झण्डी दिखलाई–
शिक्षित और अशिक्षित जनता– हक़ की लड़ने लगी लड़ाई॥



स्वतन्त्रता के लिये देश का– बच्चा बच्चा तड़प रहा है।
बन्दी भ्रमर मुक्त करने को– देखो, दिनकर पिँघल बहा है॥
ब्रिटिश राजनीतिज्ञ मलिन मन– अब तक शुद्ध नहीं कर पाये।
मधुऋतु में पतझड़ का नर्त्तन, नर्त्तन में कंकाल नचाये॥

एक बात क्या, बात बात में– बिल्ली घात लगाये रहती।
मक्खन और मलाई खा खा– अपने जाल बिछाये रहती॥
पर अब वही तुम्हारी बिल्ली– मार्ग तुम्हारा काट रही है।
वही तुम्हारे पर झपटेगी, देख समय की बाट रही है॥

भारत के मस्तक पर तुमने– लाखों झूठे ऋण लादे हैं।
चीते को पहिचान न पाये– हम इतने सीधे सादे हैं॥
भारतवासी की औसत से– दैनिक आय सिर्फ़ दो आने।
और एक अंग्रेज़ सात सौ– आता है भारत में खाने॥

'अर्विन साहब!' अपना वेतन– अपने ही दर्पण में देखो!
अपने पेटों की पूजा तुम– आँखों के तर्पण में देखो!!
ले इक्कीस हज़ार मास में– भारत का विश्वास खो दिया।
भारत का क्या! दुःख हुआ तो– मन ही मन में आप रो लिया॥

भारत में सत्ता रखने को– तुम ये अत्याचार कर रहे।
बहुत दिनों से मन ही मन में– भारतवासी नयन भर रहे॥
सत्य अहिंसा का बल लेकर– सोया भारत जाग उठा है।
यही अहिंसा विनय अवज्ञा– सत्याग्रह का फाग उठा है॥

सत्य अहिंसा के द्वारा मैं– ब्रिटिश राज्य का मन बदलूँगा।
भारत को स्वतन्त्र करवा कर– मैं अपना मृत तन बदलूँगा॥
इसीलिये यह सत्याग्रह है, सावधान कर रहा आप को।
भारत सहन नहीं कर सकता– पारतन्त्र्य के महापाप को॥"







सीधे रास्ते पर लाने को- पाञ्चजन्य अब पुनः बजाया।
सत्य, अहिंसा, प्रेम भक्ति वह- शान्तिधार का शस्त्र उठाया॥
बार बार अपनों पर भी यह- महामन्त्र हथियार चलाया।
वही 'सुदर्शन चक्र' आज फिर- कलियुग में चर्खा बन आया॥

गाँधी ने रोटी माँगी थी, किन्तु दिये 'अविन' ने पत्थर।
पत्थर भी गड़ गये धरा में- सुन सुन ब्रिटिश राज्य के उत्तर॥
अन्त लँगोटी वाले बाबा- चले 'नमक क़ानून' तोड़ने।
लम्बी लाठी लिये जा रहे- मन-मधु से पाषाण फोड़ने॥

साथ चले उन्नासी साथी, प्रभु ने 'दाण्डी कूच' कर दिया।
युग युग के निर्माण चल पड़े, आँखों में ब्रह्माण्ड भर लिया॥
गाँधी जी की शिष्यमण्डली- आन्दोलन की हवा बन गई।
'दाण्डी कूच' हुआ गाँधी का, सहम सहम सरकार तन गई॥

आज्ञा दी, 'दाण्डी यात्रा' के- कोई चित्र नहीं दिखलाये।
'दाण्डी कूच' हुआ गाँधी का- ब्रिटिश राज्य के गुर घबराये॥
सागर-तट पर परम रम्य प्रिय- 'दाण्डी ग्राम' चल दिये गाँधी।
डगमग करते उन चरणों से- सहमी ब्रिटिश राज्य की आँधी॥

दो सौ मील पहुँच कर पैदल- पूरा सत्याग्रह करना था।
भारत माता के मन्दिर में- गाँधी को दीपक धरना था॥
डगमग डगमग पग मग मग में- डगमग नौका खेते जाते।
जिस पथ पर चलते थे उस पर- अगणित अपने नयन बिछाते॥

वह सन्यासी, वह अविनाशी- लकुटि लिये चलता जाता था।
जाता जिधर उधर वह योगी- पूर्ण प्रकाश बिछा पाता था॥
मानो राम जा रहे वन में- ऋषि मुनियों को मुक्ति दिलाने।
'राक्षस रावण' की 'लंका' से- 'सीता' को स्वाधीन कराने॥

माथे पर बल, ज्योति दृगों में, रोम रोम में आकर्षण था।
दर्शन को जनता उमड़ी थी, नारायण का पुण्य वरण था॥
ऋषियों की वह वन यात्रा थी, पुष्पों का वह भव्य दृश्य था।
कल्पवृक्ष से मुक्ति-वृष्टि थी, चरणों से गिर रहा वृष्य था॥







जनायक

कोटि कोटि सत्याग्रहियों की– 'दाण्डी यात्रा' परिचायक थी।
इंगलिश सत्ता के विरोध की– वह पगडण्डी अधिनायक थी॥
पगचिह्नों पर गाँव चल पड़े, सत्याग्रह की नई लहर थी।
जनता में उत्साह-उदधि था, गाँव गाँव में गई लहर थी॥

रक्त रहित विद्रोही झण्डा– 'दाण्डी यात्रा' ने लहराया।
सत्य अहिंसा क्रान्ति शान्ति का– तीन रँगा झण्डा फहराया॥
तम पर ज्योति, अमरता मृत पर, सत्य झूठ पर शाश्वत जय है।
गाँधी जी के आदेशों पर– क्षणभंगुर प्राणी अक्षय है॥

यात्रा में उपदेश दिया यह– सत्य अहिंसा को मत छोड़ो!
सत्याग्रह के आन्दोलन में– मर्यादा के सूत न तोड़ो!!
अनुशासन की करो प्रतिज्ञा, चलो सत्य के आदेशों पर।
एक नया इतिहास लिख दिया– गाँधी ने पैदल यात्रा कर॥

लम्बी लकड़ी लिये हाथ में– आगे आगे गाँधी चलते।
पीछे पीछे उनकी सेना, क़दम क़दम पर दीपक जलते॥
पथ में इधर उधर दर्शन को– उमड़ा प्रेमाकुल जन-सागर।
धन्य धन्य वह जनता जिसने– पाये नर नारायण नागर॥

जो जलूस 'अहमदाबाद' में– निकला, उसकी शान निराली।
मानो विधि की सारी रचना– मना रही थी वहाँ दिवाली॥
अन्धों पर अपंग चढ़ चढ़ कर– भव्य जलूस देखने आये।
बड़े पुण्य से इन नयनों ने– उन चरणों के दर्शन पाये॥

मीलों लम्बे इस जलूस में– तिल भर जगह नहीं थी खाली।
धन्य धन्य यात्रा गाँधी की, सर पर से फिरती थी थाली॥
वृक्ष झरोखे और छतों पर– दुनिया दर्शन करने आई।
गाँधी की जय के नारों से– नभभेदी गर्जन थर्राई॥

अद्भुत मेला, चहल पहल थी, मूक खड़ी रह गई भारती।
श्रद्धा सुमन चढ़ा चरणों में– वाणी करने लगी आरती॥
श्रद्धा मोक्ष अलौकिक लीला– गाँधी के आदेशों में है।
छुवाछूत, मदिरा निषेध वह– सत्याग्रह सन्देशों में है॥









यात्रा में गाँधी जी बोले– "या तो स्वतन्त्रता लाऊँगा।
यदि स्वतन्त्रता ला न सका मैं– तो धरती में गड़ जाऊँगा॥
यदि न 'नमक कर' उठा देश से– तो न लौट वापिस आऊँगा।
जब तक लक्ष्य नहीं आयेगा– तब तक बढ़ता ही जाऊँगा॥"

गाँधी जी की 'दाण्डी यात्रा'– 'हज़रत मूसा' की मंज़िल है।
जब तक मंज़िल नहीं मिलेगी– तब तक बढ़नेवाला दिल है॥
इतनी जल्दी चलते गाँधी– नौजवान थकते जाते थे।
लेकिन उनकी चरण-धूलि से– नौजवान आगे आते थे॥

प्रण था, जब तक लक्ष्य न आये– पीछे कभी नहीं देखेंगे।
प्रण करके घर से निकले हैं, निश्चय स्वतन्त्रता ले लेंगे॥
भीख माँगने से स्वतन्त्रता– ये अंग्रेज़ न देने वाले।
दिन के अन्धे इस शासन का– अन्त करेंगे सत से काले॥

'जम्बूसर' में कहा उन्होंने– अगर शत्रु के साँप काट ले–
मानव का यह परम धर्म है– दुश्मन का भी ज़हर चाट ले॥
चौबिस दिन की इस यात्रा में– तीर्थ चल रहे थे सड़कों पर।
यह पुजारियों की यात्रा थी, आगे बढ़ते संयम् व्रत कर॥

चले पुजारी, व्यंजन त्यागे, तन रखने को चने चबाते।
बुद्धि शुद्धि संगठित शक्ति से– देशभक्ति के पाठ पढ़ाते॥
कहा साथियों से गाँधी ने– माया ममता मोह न घेरे।
जब तक मंज़िल नहीं मिलेगी– तब तक नहीं डलेंगे डेरे॥

मैं पकड़ा जाऊँगा जब तब– 'तैयब जी' आगे आयेंगे।
और प्रान्त के प्रान्त साथ में– भारत की जय जय गायेंगे॥
यात्रा में फल फूल मिठाई, दही दूध जनता लाती थी।
पर सत्याग्रहियों की टोली– आग्रह करके लौटाती थी॥

श्रद्धा के भूखे गाँधी जी– तृप्त उन्हीं के दर्शन से थे।
श्रद्धास्पद जनता के जीवन– सन्तोषी अपने मन में थे॥
जनता के फल फूल रसीले– 'राम बनों' की याद दिलाते।
प्रेम पिपासे मेरे गाँधी– 'भिलनी' के बेरों को खाते॥









ज
न
ना
य
क

ग्रामवासियों के मीठे फल- प्रेम-सुधा में सराबोर थे।
ग्राम ग्राम में उत्सव से थे, गाँधी-रस में सब विभोर थे॥
पुण्य प्रकृति के प्रिय आँगन में- जड़ चेतन जन उमड़ रहे थे।
गाँधी जी की जय जय गाते- घन अम्बर में घुमड़ रहे थे॥



तोते तरु से आम तोड़कर- गाँधी-चरणों में ढुलकाते।
बहता था वात्सल्य वीर रस, चाँद शान्त रस में गुण गाते॥
कोयल मीठे बोल बोलती, मोर नाचते, चिड़ियें गातीं।
फूलों से मुस्काती डालें, उन चरणों में फूल चढ़ातीं॥

श्वेत हंस सी वीणा वाणी- गाँधी जी से शर्माती थीं।
तरु तरु की डालें स्वागत में- फूल चढ़ाकर झुक जाती थीं॥
'दाण्डी यात्रा' के स्वागत में- कृषक बालिकायें गाती थीं।
मानो गाँव गाँव की आँखें- राम-रूप गाँधी पाती थीं॥

गाँधी की वाणी सुनते ही- गउएँ दौड़ दौड़ कर आईं।
चौका चूल्हा छोड़ देवियाँ- गाँधी की जय जय चिल्लाईं॥
जंगल के खूँखार जानवर- गाँधी के आगे झुक जाते।
पत्थर तक भी पिँघल प्रेम से- चरणों में आँसू बरसाते॥

सत् शिव सुन्दर ग्रामीणों ने- गाँधी जी पर हृदय चढ़ाये।
'दाण्डी यात्रा' के दर्शन में- तीनों लोक मनुज ने पाये॥
गाँधी जी आगे बढ़ जाते, पीछे जनता प्यासी रहती।
प्रेम-पिपासे उन नयनों में- छाई मधुर उदासी रहती॥

दिव्य देवता गाँधी जी को- आँखें और देखना चाहें।
दर्शन के भूखे प्यासे दृग- देख नहीं पाते थे राहें॥
'रामचन्द्र' के वन जाने पर- पागल सी रो रही 'अयोध्या'।
'दशरथ' से रो रहे गाँव सब, बादल-दल सी बही 'अयोध्या'॥

गाँधीवाद दौड़ता चलता, गाँधी जी का चमत्कार था।
बापू कूद पड़े सागर में, चरणों से मँझधार पार था॥
गाँव गाँव को दर्शन देते- 'दाण्डी' पहुँच गये सन्यासी।
सागर-तट ने चरण पखारे, धन्य 'सुदामापुरी' निवासी॥





गाँधी जी के अभिनन्दन में- रजनी ने चाँदिनी बिछाई।
सागरिका ने दीप जलाये, उषा सुनहरी माला लाई॥
वन देवी की बजी बाँसुरी, लहरें नाचीं रुन झुन रुन झुन।
सागर की उत्पल सी आँखें- प्रथम मिलन में गातीं गुन गुन॥

सागर ने गा गा चरणों में- मणि रत्नों के कोष चढ़ाये।
ज्वार भाट ने पंचम स्वर से- गूथ गूथ कर छन्द सुनाये॥
सागर की गोदी का चन्दा- गाँधी जी पर मुग्ध हो गया।
तट पर गाँधी का पहरा था, सागर सुख की नींद सो गया॥

छेड़ी तान उषा ने उठकर- जागो! अब हो गया सवेरा।
जागी जंगल की हरियाली, चिड़ियों ने तज दिया बसेरा॥
अरे मुसाफिर! तू क्यों सोता? स्वप्नों का संसार छोड़ दे!
मुक्त! मुक्ति-मन्दिर में आजा, बन्धन की ज़ंजीर तोड़ दे!!

उषा-माधवी की वीणा में- गूंज गई गाँधी जी की लय।
बढ़े 'नमक क़ानून' तोड़ने- गाँधी जी अक्षय मृत्युञ्जय॥
पहिले ईश्वर की पूजा की, फिर तट पर से नमक उठाया।
सागर-तट से नमक बीन कर- नभचुम्बी झण्डा फहराया॥

गाँधी जी के कर कमलों से- भंग 'नमक क़ानून' हो गया।
सागर की आँखों का पानी- भारत माँ के दाग़ धो गया॥
गाँधी जी ने नमक बीन कर- वक्तव्यों से सृष्टि जगादी।
गाँव गाँव में, शहर शहर में, सड़क सड़क पर थी आज़ादी॥

वह अद्भुत राष्ट्रीय पर्व था, खुली हुई थी बलि की वेला।
विजय उसी के चरण चूमती- जो भी आग मौत से खेला॥
सत्याग्रही आग में तप तप- चमक चमक दमका करता है।
सत्य-सुधा-रस पीने वाला- अमर पुत्र किससे डरता है?

भाषण पर भाषण गाँधी के- आग फूकते थे कण कण में।
जत्थे के जत्थे आते थे- सत्याग्रहियों के क्षण क्षण में॥
बना नमक सर्वत्र देश में, क्रान्ति क्रान्ति के शंख बज गये।
गाँधी टोपी पहिन पहिन कर- रण को सत्याग्रही सज गये॥







जननायक



लगी फूस में दियासलाई, क्षण में धधक उठी चिनगारी।
सत्याग्रहियों के पानी पर- आई थी अद्भुत तैयारी॥
लेकिन ब्रिटिश राज्य ने उनके- पानी पर अंगार गिराये।
पर सत्याग्रह के पानी ने- अंग्रेज़ी अंगार बुझाये॥

पैशाचिक मुँह फाड़ राज्य ने- अपना खूनी छुरा उठाया।
भारत माता के पुत्रों पर- बधिर बधिक ने छुरा चलाया॥
'तैयब जी' को क़ैद कर लिया, लाखों वीर सिपाही पकड़े।
महाशान्ति के आन्दोलन में- शुरू किये गोरों ने झगड़े॥

हिंसा, हत्या, दमन, क्रूरता, खूनी हाथ दाँत चिंघाड़े।
अंग्रेज़ों की दमन नीति ने- सत्याग्रहियों के सर फाड़े॥
कहीं निहत्थों की छाती पर- दुनालियों की चलीं गोलियाँ।
माँ बहिनों के गुप्त अंग से- लाखों खेली गईं होलियाँ॥

"दत्तात्रेय" वीर पुंगव ने- मातृभूमि पर प्राण चढ़ाये।
प्राण-प्रसून चढ़ा लाखों ने- स्वतन्त्रता के दीप जलाये॥
प्रकृति-पटी पर रक्त-धार ने- एक नया इतिहास लिख दिया।
वीर निहत्थों के शोणित ने- ब्रिटिश राज्य का नाश लिख दिया॥

अंग्रेज़ों ने भारत माँ पर- सैनिक शासन शुरू कर दिया।
प्रान्त प्रान्त पर, शहर शहर पर, गाँव गाँव पर पैर धर दिया॥
पीते ख़ून, कुर्क करते धन, लाल लाल बेतें उड़वाते।
वन्देमातरम् ! वन्देमातरम् ! वन्देमातरम् ! बन्दी गाते॥

कारागृह की दीवारों में- रुके न क्रान्ति क्रान्ति के नारे।
फाँसी के ख़ूनी तख़्तों पर- फूलों से चढ़ गये बिचारे॥
कठिन यन्त्रणाओं में बोले, भारत माता की जय जय जय।
चलीं गोलियाँ, बढ़े निहत्थे, जय जय जय की गूंज गई लय॥

खिले कमल से उन सीनों में- गोली भौंरे सी खेली थी।
स्वतन्त्रता के प्रिय प्रकाश की- चाह बहुत ही अलबेली थी।
बहिष्कार सत सत्याग्रह में- आँखें कभी नहीं जलती हैं।
स्वतन्त्रता की मनहर बेलें- रक्त-फुहारों से फलती हैं॥



'पेशावर' के प्रिय पराग पर– आग लिये हत्यारे बरसे।
'काश्मीर' की केसर पर भी– लाल लाल अंगारे बरसे॥
मधुमण्डित 'पंजाब' प्रान्त पर– ब्रिटिश राज्य ने दाँत चलाये।
'दिल्ली' के चिकने पथ पर भी– परदेशी ने शूल बिछाये॥
लिखी न जातीं, लिखते जाओ, सब काली करतूत गिनाऊँ।
स्वतन्त्रता के उपासकों की– करूँ आरती, फूल चढ़ाऊँ॥
गाँधी-वाणी ने द्रुत गति से– सत्याग्रह की हवा चलादी।
स्वतन्त्रता के महायुद्ध की– सागर ने दुन्दुभी बजादी॥
गाँधी जी ने ब्रिटिश राज्य को– पत्र भेज फिर मार्ग दिखाया।
दिखलाया अपना निर्मल मन, आगे का परिणाम सुझाया॥
"धारासना" और "छरसाड़ा"– अब सत्याग्रह को जाऊँगा।
नमक-कारखानों पर जाकर– अपना झण्डा लहराऊँगा॥
बहुत दिया गोरों ने धोखा, अब धोखों के जादू झूठे।
फूटे ब्रिटिश राज्य के भण्डे, अब न दिखाओ हमें अँगूठे॥
यदि चाहो तो सत्य मार्ग से– रोक सकोगे तुम यह धावा।
'उठे नमक कर' परिवर्तन हो, बहुत बार दे चुके भुलावा॥
लाठी डण्डों से न डरेंगे– चाहे तुम बम भी बरसाओ।
वीर भूमि में वीर बहुत हैं, आओ, स्वागत करने आओ!
बम बन्दूकें तोप चलाओ! ले ले आओ लाठी डण्डे।
किन्तु हिमालय का यह प्रण है– नहीं झुकेंगे ऊँचे झण्डे॥
ब्रिटिश राज्य मानवता तज कर– दानवता पर अड़ा हुआ है।
हिंसा की बन्दूकें ताने– अँग्रेज़ी बल खड़ा हुआ है॥
वीर निहत्थों के पशुता से– तुमने अंडकोष दबवाये।
चूर चूर हड्डियाँ करा हैं, पेशावर पर बम बरसाये॥
छोटे छोटे बच्चों पर भी– तुमने बरसाये हैं डण्डे।
बड़ी वीरता दिखलाई यह– गाड़ दिये शिशुओं पर झण्डे॥
तुमने अपने ब्रिटिश राज्य का– शोणित से इतिहास लिखा है।
हत्याकाण्डों के पृष्ठों पर– ब्रिटिश राज्य का नाश लिखा है॥









जननायक



सत् बल से प्रतिशोध रुका है, वर्ना 'सन् सत्तावन' होता।
घन बरसा कर रक्त धरा पर– धरती माँ की कालस धोता॥
स्वयम् सेवकों पर गौरव है– हँसते हँसते प्राण दे दिये।
किन्तु कलंक तुम्हारे मुँह पर– निर्दयता से प्राण ले लिये॥

'भगतसिंह' से प्रिय वीरों को– क्यों फाँसी का दण्ड सुनाया?
फेंक दिया क़ानून ताक में, मुँह पर अमिट कलंक लगाया॥
सत्ता के ख़ूनी पंजों से– तुमने माँस नोच कर खाया।
सत्याग्रह के शान्त भाल पर– मानवता का ख़ून लगाया॥

शोषण की हिलती ईंटों पर– नींव नहीं टिकने वाली है।
ब्रिटिश राज्य की लूट मार से– भारत की झोली ख़ाली है॥
ऊँच नीच की बातें समझो, ठीक मार्ग पर अब आजाओ!
चार दिनों की यहाँ ज़िन्दगी, हँसते जाओ और हँसाओ!!

बहुत 'राम' ने समझाया पर– एक नहीं 'रावण' ने मानी।
उधर आग थी और इधर था– सत्याग्रह का पावन पानी॥
'अंगद' जैसा पत्र गया पर– 'रावण' की मति बौराई थी।
होनी है बलवान, यहाँ पर, 'रावण' पर होनी छाई थी॥

चिट्ठी पढ़ते ही 'अर्विन' ने– चुपके से गाँधी को पकड़ा।
काली साड़ी वाली निशि ने– सोते में आँधी को पकड़ा॥
जब कि शान्ति से पर्ण कुटी में– प्रभु चन्दा से बोल रहे थे।
नीली जड़वा चादर पर जब– बादल आभा घोल रहे थे॥

नीड़ नीड़ में पक्षी सोये, डाल डाल पर फूल शान्त थे।
पीड़ा भी पड़ कर सोई थी, सरिताओं के कूल शान्त थे॥
चन्दा मामा के शासन में– चुपके चुपके चोर आ गये।
शुभ्र ज्योत्सना के महलों में– चोरी चोरी चोर छा गये॥

गाँधी जी को चुरा ले गये, चोरों को तारों ने देखा।
नीलाम्बरा उसी क्षण रोई, विरही अंगारों ने देखा॥
डाल डाल ने झूम उसी क्षण– गाँधी जी पर फूल चढ़ाये।
शान्तिदूत की शान्ति देखकर– सुधाधाम ने दीप जलाये॥





जनायक

चोर पुलिस मेरे गाँधी को– गाड़ी में 'बम्बई' ले गई।
प्रकृति-पूर्णिमा के प्राणों को– प्रियतम का वैराग्य दे गई॥
स्वतन्त्रता के शुभारम्भ में– गाँधी जी ने नमक उठाया।
आदि अन्त तक सत्याग्रह का– गाँधी जी ने बीड़ा खाया॥

'पकड़े गये आज गाँधी जी', प्रातः खबर गई त्रिभुवन में।
मानो सौरभ का मतवाला– भ्रमर बन्द हो गया सुमन में॥
गाँधी जी ने कहा कि मेरा– आन्दोलन ईश्वर पर निर्भर।
जो सत् पर आश्रित रहता है– उसके साथ साथ है ईश्वर॥

समाचार सुनते ही जनता– बनी बावली सी मतवाली।
पल भर में घिर गई धरा पर– आन्दोलन की घटा निराली॥
हड़तालें हो गईं हर जगह, प्रेम-पिपासी लहरें आईं।
आन्दोलन में मर मिटने की– मज़दूरों ने क़समें खाईं॥

ताँगे ठेले वालों तक ने– सुनते ही करदीं हड़तालें।
स्वतन्त्रता के सेनानी पर– आओ हम सब फूल चढ़ालें॥
मिलें बन्द हो गईं एक दम, जलसे हुए, जलूस निकाले।
कोटि कोटि कंठों से निकले– गाँधी जी के शब्द उजाले॥

व्यापक थी हड़ताल विश्व में, धन्य 'पनामा' और 'सुमात्रा'।
कोटि कोटि चल पड़े उधर ही– जिधर हुई गाँधी की यात्रा॥
अपनी कब ब्रिटिश ने खोदी– गिरफ्तार करके गाँधी को।
कौन बन्द कर सका आज तक– मुट्ठी में हलचल आँधी को?

गाँधी जी को पकड़ा लेकिन– लगा न सत्याग्रह पर ताला।
दबे साँप फुंकार रहे थे, दहक रही थी दुर्द्धर ज्वाला॥
भारत के कोने कोने से– चले नमक क़ानून तोड़ने।
ब्रिटिश राज्य के शस्त्र चल पड़े– पावन प्राण-प्रसून तोड़ने॥

कांगरेस की कार्यसमिति ने– बढ़ने का आदेश दे दिया।
रणभेरी बजते ही सब ने– अपना अमर निशान ले लिया॥
गाँधी जी की जय हो जय हो– गाँव गाँव से गूंजा नारा।
हर किसान के दानी कर में– झण्डा उठा तिरंगा प्यारा॥









जनायक



तीन रँगों की प्रिय छाया में– बनी हुई थी प्रकृति तिरंगी।
डाल डाल पर फूल झूम कर– सुना रहे थे छन्द त्रिभंगी॥
श्वेत गगन, हरियाली धरती, पिंग धूप धर केसरिया रँग।
झण्डे की रक्षार्थ व्याप्त थी– शिव शंकर की शक्ति भृकुटि भँग॥

ईश्वर से सीधे किसान जब– जय जय जय गाते चलते थे।
डाल डाल धरती अम्बर में– स्नेह पगे दीपक जलते थे॥
लंगोटी सी ऊँची धोती, श्वेत हंस सा कुर्ता पहने।
मानो अगणित गाँधी जाते, ईश्वर के चरणों में रहने॥

दलितवर्ग की दिव्य देवियाँ– फूलों में सुगन्ध सी फूटीं।
चिथड़ों में चाँदिनी चाँद सी– दुश्मन के दुर्गों पर टूटीं॥
शहरी चले, चलीं महिलायें, झण्डा उठा डाल ली झोली।
चलो नमक क़ानून तोड़ दो, आज गुलामी की है होली॥

होली आज खून से खेलो, सर पर कफ़न, चिता हर थल पर।
फूलों सी कोमल कलिकायें– आगे बढ़ीं पहिन कर खद्दर॥
दूध धुली चाँदिनी बिछी सी– बालायें बढ़ती जाती थीं।
गाँधी जी की जय हो जय हो, लहरें ग्राम्य गीत गाती थीं॥

महिलाओं ने घूँघट पलटे, सत्याग्रह की मंज़िल चमकी।
अग्निपुञ्ज सी आँखें दमकीं, दहकी हुई दामिनी दमकी॥
बड़ी बड़ी मनहर आँखों में– सत्याग्रह का आमन्त्रण था।
कौंध काँपती थी कम्पन में, रोम रोम में आकर्षण था॥

वीर शहीदों के शोणित का– अलकों में सिन्दूर लगाये–
खोये हुए दीप लाने को– जल्दी जल्दी चरण बढ़ाये॥
धरती अम्बर अतल वितल में– गाँधी जी की जय जय जय थी।
सत्याग्रह की लहर लहर में– सावन भादो की सी लय थी॥

अँधेरी धरा है, उठो दीप धरदो!
पराधीनता का बहिष्कार करदो!!
मचलती जवानी कहानी बनेगी।
तिरंगी ध्वजा की निशानी बनेगी॥





चलो, दीप मन्दिर में चल कर जलायें।
क़िले पर तिरंगे की आभा दिखायें॥
पराधीन भारत को स्वाधीन करदें।
कि स्वाधीन भारत में हम दीप धरदें॥

गीत गीत में, चरण-चाप में– सत्याग्रहियों का प्रलाप था।
प्रकृति-प्रिया की मूक कथा में– गाँधी-वाणी का अलाप था॥
सर पर लाठी डण्डे खाते– नौजवान बढ़ते जाते थे।
टोरी बच्चे गोरे राजा– दुनालियों से धमकाते थे॥

अन्धी पुलिस बिकी टुकड़ों पर– छात्रों पर डण्डे बरसाये।
जलसे तितर बितर करने में– बूटों से बच्चे दबवाये॥
हट्टे कट्टे मुसटंडे पशु– रक्त पान कर मूछ चढ़ाते।
महिलाओं की काट छातियाँ– गोरे गर्म लहू पी जाते॥



देवियाँ बढ़ गईं आगे।
उठे बूढ़े, युवक जागे॥
तिरंगा झूमता निकला।
गगन घन चूमता निकला।

जगत में घूमता निकला।
साँप सा सूंघता निकला॥
हिमालय सा खड़ा था वह।
शेष-फण पर गड़ा था वह॥

सिन्धु पर लहरता था वह।
शिखा पर फहरता था वह॥
पद्मिनी ने उठाया था।
सिंहनी ने उड़ाया था॥

शहीदों की चिता पर था।
जवानी की अदा पर था॥
घटाओं सा घुमड़ता था।
सिन्धु नद सा उमड़ता था॥







जनायक



शंख सा बोलता था वह।
सुधारस घोलता था वह॥
कि बापू बोलते जिसमें।
जवाहर डोलते जिसमें॥

तिरंगा फहरता निकला।
सरों पर लहरता निकला॥
देवियाँ गीत गाती थीं।
जवानों को जगाती थीं॥

उषा ने जग जगाया था।
सूर्य ने पथ दिखाया था॥
खुली बलिदान की वेला।
शहीदों का लगा मेला॥

कि भंगुर से अभंगुर बन—
मलय बन बन गया यौवन॥
शराबों की दुकानों पर—
विदेशी माल पर जाकर—

देवियों ने धरा धरना।
कहो किसको नहीं मरना?
बाँसुरी गूंजती निकली।
हवा में झूमती निकली॥

बुझे अंगार दहके थे।
धरा के फूल महके थे॥
श्वेत खद्दर दमकता था।
चाँद सा तन चमकता था॥

देश आदेश-पथ पर था।
निकाला तथ्य मथ कर था॥
'नमक क़ानून को तोड़ो'!
गुलामी ब्रिटिश की छोड़ो॥





नाव यह पार जानी है।
कि तुम में बहुत पानी है॥
शेर क्यों बन गये बिल्ली?
बुलाती है तुम्हें दिल्ली॥

तिरंगे शान से निकले।
बड़े अभिमान से निकले॥
नमक के ढेर पर लहरे।
कृषक के हाथ में फहरे॥

ब्रिटिश सरकार चिंघाड़ी।
किन्तु क्या रुक सकी गाड़ी॥
उठे अंग्रेज़ के हंटर।
बरसतीं लाठियाँ सर पर॥

दुनाली गोलियाँ बरसीं।
खून की होलियाँ बरसीं॥
चढ़े थे बूट छाती पर।
शहीदों के कटे थे सर॥

कटे सर सूर्य से दमके।
रात में चाँद से चमके॥
जेल में बन्द करते थे।
किन्तु क्या वीर डरते थे?

जेल में मस्त गाते थे।
कूद तसले बजाते थे॥
रेत की रोटियाँ खाईं।
किन्तु क्या सलवटें आईं?

हवा सा दौड़ता नारा–
दिवारें फोड़ता नारा–
नमक क़ानून को तोड़ो!
विदेशी वस्त्र– मद छोड़ो!!







ज
ा
ना
व
क

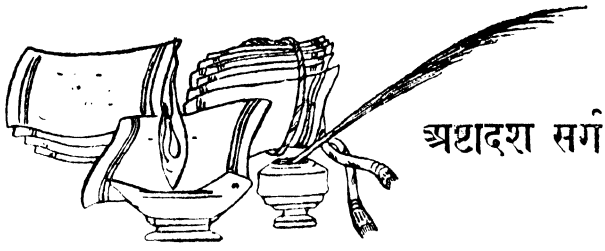


महात्मा जी ! तुम्हारी जय ।
अखिल ब्रह्माण्ड में थी लय ॥
जलसों पर चली गोली ।
शहीदों की बढ़ी टोली ॥
दहकती आग में कूदे ।
खून के फाग में कूदे ॥
बुला धावा 'बड़ाला' पर ।
रक्त-रंजित हुआ अम्बर ॥
प्रकृति की श्वेत आभा पर–
प्रभाती फोड़ती पत्थर ॥
रँगे थे रक्त से पत्थर ।
चढ़े थे फूल गाँधी पर ॥
प्रभा पर पूर्णिमा आई ।
धरा पर चाँदिनी छाई ॥
चाँद ने गीत गाये थे ।
सुनहरी दीप छाये थे ॥
खिली थी रात की रानी ।
शान्त था सिन्धु का पानी ॥
गर्जता था, उमड़ता था ।
प्रलय घन सा घुमड़ता था ॥
हृदय में क्रुद्ध बड़वानल ।
आग पर चल रहा था जल ॥



गाँव गाँव में यही काण्ड था, लाशों पर छुरियाँ चलती थीं ।
वीर शहीदों की सुहागिनें– जीवन भर ज़िन्दा जलती थीं ॥
मानवता ने नयन झुकाये, पशुता का नंगा नर्त्तन था ।
स्वतन्त्रता की बलिवेला में– पात पात में परिवर्त्तन था ॥





अष्टादश सर्ग



रवि-रूप खिला निशि-आँगन में,
पग-पंकज पाकर प्राण सुखी।
चलता शशि तारक-दीप लिये,
बिखरी सड़कों पर फूल-मुखी॥
जिसका यह रूप अनूप सखी!
वह मानस-मन्दिर में रहता॥
जिससे मिलता सुख-शान्ति-सुधा,
वह चाँद नयी कविता कहता।

स्वतन्त्रता के आन्दोलन में– त्याग तपस्याओं ने गाया।
लंगोटी वाले ईश्वर ने– महामुक्ति का पाठ पढ़ाया॥
भक्त 'भगीरथ' की गंगा में– मुक्ति पर्व की फुलवारी थी।
उधर दमन का रक्तिम दौरा, इधर शान्ति की चिनगारी थी॥
ब्रिटिश राज्य ने काँगरेस को– घोषित किया ग़ैरक़ानूनी।
'मोतीलाल' कर लिये बन्दी, प्राणों पर था पंजा खूनी॥
अंग्रेज़ों ने प्रान्त प्रान्त में– दमन नीति का फण फैलाया।
काँगरेस का ऊँचा झण्डा– तुंग शिखा पर ही लहराया॥
अंग्रेज़ों ने नीति रीति से– 'गोलमेज़ परिषद्' बुलवाई।
किन्तु न प्रतिनिधि चुने हुए थे, अपनों ही की छटा दिखाई॥
सोलह प्रतिनिधि रजवाड़ों के– ब्रिटिश राज्य के लिये छियासी।
तेरह अन्य दलों के मुखिया– सर पर थे गोरे सन्यासी॥







परिषद् हुई 'अपर हाउस' में– 'मेएट जेम्स' के राज-महल में।
औपनिवेशिक स्वराज्य चर्चा– छिड़ी हुई थी चहल पहल में॥
जैसी कक भरी थी वैसी– बजती रही बाँसुरी खर खर।
लेकिन देश गर्व करता है– निर्भय विजयी शास्त्री जी पर॥



भारत की स्वतन्त्रता के हित– वे वीणा से बोल रहे थे।
राजाओं के मुकुट हिल गये, सम्भाषण सुन डोल रहे थे॥
लेकिन उस नगाड़खाने में– मुख्य प्रश्न थे घूंघट जैसे।
ब्रिटिश राज्य की रहे व्यवस्था, प्रश्न छिड़े थे ऐसे वैसे॥

रियासती प्रस्ताव पास कर– भिजवाये फिर काँगरेस में।
गुड्डा सा प्रस्ताव देखकर– हलचल सी मच गई देश में॥
'रैम्ज मैकडानल्ड' सचिव को– काँगरेस ने उत्तर भेजा।
ईंट उधर की रोक हाथ में– बना मोम का पत्थर भेजा॥

'रावी-तट' पर जल छू कर हम– जो दृढ़ प्रण करके निकले हैं।
उससे इधर उधर कण भर भी– पैर न 'अंगद' के फिसले हैं॥
हम पूरी स्वतन्त्रता लेंगे– यह प्रस्ताव नहीं टल सकता।
गाँधी जी के महामन्त्र को– कोई छली नहीं छल सकता॥

उन्हें बधाई देते हैं हम– जो कि फूल से चढ़े देश पर।
स्वतन्त्रता के महा समर में– गोली खाकर जो कि गये मर॥
ब्रिटिश राज्य के ज़ुल्म जिन्होंने– हँसते हँसते सहन किये हैं।
धन्य धन्य देवियाँ जिन्होंने– आँखों में अंगार पिये हैं॥

इधर प्रतिज्ञा पर दृढ़ भारत, उधर 'गवर्नर जनरल' बोले।
इधर उधर के ज़ोर लगाकर– समझौते के द्वारे खोले॥
सत्ता हिली, घोषणा की यह– नेताओं को छोड़ रहे हैं।
काँगरेस से सुलह नीति का– निर्मल नाता जोड़ रहे हैं॥

काँगरेस पर से क़ानूनी– सारे बन्धन हटा रहे हैं।
बढ़े हुए झगड़े टण्टों को– धीरे धीरे घटा रहे हैं॥
आपस में नेता विचार लें, फिर हम सब बातें कर लेंगे।
नीर क्षीर के चतुर ज्ञान से– मानस में मोती भर लेंगे॥





स्वतन्त्रता से समझौता हो, सत्य शान्ति से लगें किनारे।
हृदय हृदय में दीप जलायें– भारत माँ के भाग्य सितारे॥
बन्दीगृह में जननायक ने– बाँची राजनीति की हलचल।
हवा कर रहीं थी बापू पर, निर्मल पलकें पंखा झल झल॥

गाँधी जी 'यरवदा जेल' में– खेल रहे हैं राजनीति से।
स्वतन्त्रता की रुनझुन सुनते, चित्र खींचते राम-रीति से॥
स्वप्न देखते से जननायक, खींच रहे थे चित्र एक टक।
पूज रही थी पैर प्रेम से, बन्दीगृह की रानी अपलक॥

कारागृह ने बड़े चाव से– बापू की आरती उतारी।
बन्दीगृह में पूजा करते– सत्य प्रेम के परम पुजारी॥
'चौंतिस बन्दी ताला कुंजी– लालटेन' के गीत सुन रहे।
घण्टे घड़ियालों के स्वर में– जननायक जग-जीत सुन रहे॥

मानो बन्दीगृह बन जिसमें– रामरूप फल फूल पा रहे।
बन्दर दल से बन्दी गा गा– रेत मिली राटियाँ खा रहे॥
घास पात की भूजी खाते, मस्ती में नाचा करते हैं।
स्वतन्त्रता के अमर सिपाही– नश्वरता से कब डरते हैं?

समझौते के लिये ब्रिटिश ने– कारागृह से गाँधी छोड़े।
छोड़े कार्यसमिति के नेता, पत्थर पिघले थोड़े थोड़े॥
मुक्त महामानव यह बोले– तरस रहा हूँ सत्य शान्ति को।
सब से वह पथ पूछ रहा हूँ– जिससे सब तज सकें भ्रान्ति को॥

ब्रिटिश राज्य के भाषण पर मैं– कारा से मत बना न लाया।
लन्दन से कुछ तार मिले हैं, पर मैं उनको जोड़ न पाया॥
जो आन्दोलन स्वतन्त्रता हित– उससे तिल भर नहीं हिला हूँ।
मिले न 'मोतीलाल नेहरू', नेताओं से नहीं मिला हूँ॥

गंगा यमुना सरस्वती से– गाँधी चले 'प्रयाग' प्यार भर।
गाँधी जी को टेर रहे थे– 'मोतीलाल' रुग्ण शैया पर॥
'पंडित मोतीलाल नेहरू'– अमर पुजारी त्यागी की जय।
दान किया "आनन्द भवन" को, जग में लहर गई उनकी लय॥









धन्य धन्य 'नेहरू', जिन्हों ने– देशभक्ति में दान दिया वह।
'वीर जवाहरलाल' पुत्र ने– अमर दान स्वीकार किया वह॥
क्योंकि राष्ट्रपति के आसन पर– राष्ट्र-पुत्र थे धन्य जवाहर।
गाँधी जी के पदचिह्नों पर– तन मन धन सब था न्यौछावर॥

गाँधी गये 'स्वराज्य भवन' में, 'पंडित जी' ने कौली भरली।
छाती से चिपटा बापू को– जलती छाती ठण्ढी करली॥
अश्रु प्रवाह हुए दोनों के, भक्त और भगवान मिल गये।
'कृष्ण' 'सुदामा' मिलन आज फिर, ध्यान और वरदान मिल गये॥

बिछड़े साथी के मिलने पर– रो पड़ता है रोगी का दिल।
आँचल में मोती भर देता– बिछड़े साथी से साथी मिल॥
टूटी की बूटी न जगत में, रोगी के उपचार थक गये।
चित गोते पर गोते खाता, मोती से उपचार छक गये॥

भारत माता के 'मोती' को– मृत्यु चाहती थी ले जाना।
अन्तिम शब्द कहे 'मोती' ने– "स्वतन्त्रता पर मुझे चढ़ाना॥
मातृभूमि की स्वतन्त्रता में– मैं भी तो शामिल होऊँगा।
स्वतन्त्रता की गोदी पाकर– मैं सुख की निद्रा सोऊँगा॥

यदि मुझको मरना निश्चित है– तो मैं मरूँ स्वतन्त्र देश में।
पर चलने के क्षण आ पहुँचे, इच्छा छोड़ी काँगरेस में॥
लाल 'जवाहरलाल'! पिता की– यह इच्छा पूरी कर देना।
भारतमाता के मस्तक पर– मेरे लाल! मुकुट धर देना॥

मन्दिर मूर्त्त 'स्वराज्य भवन' है, स्वतन्त्रता का पूजन करना।
मेरे लाल! चिता पर मेरी– उसी रोज़ तुम दीपक धरना॥
जिस दिन स्वतन्त्रता देवी की– पूजा हिन्दुस्तान करे यह–"
पण्डित 'मोतीलाल नेहरू'– विदा हो गये बस इतना कह॥

भारत माता की मुट्ठी से– 'मोती' काल कराल ले गया।
मोती गया, किन्तु जननी को– ज्योति-जवाहरलाल दे गया॥
सागर में हीरे मोती हैं, लेकिन ऐसा एक न मोती॥
टूट गया माला का मोती, पगली सी भारत माँ रोती॥



मोती अब न रहे सागर में, सागरिका सी जनता रोती।
मोती के बलिदान-दीप पर- बरस पड़े आँखों से मोती॥
मर्त्य लोक के उस मोती पर- शब्दों के मोती न्यौछावर।
मेघ मराल लुटाते मोती, मानस के वे मोती पा कर॥



भारत माँ के भव्य भाल पर- स्वाभिमान बन दमका मोती।
तारक दल के स्वच्छ चौक में- चन्दा बन कर चमका मोती॥
धन्य धन्य 'आनन्द भवन' वह- जिस में मोती और जवाहर।
शरद चाँदिनी की चाँदी से- धरती-मण्डित उगा प्रभाकर॥

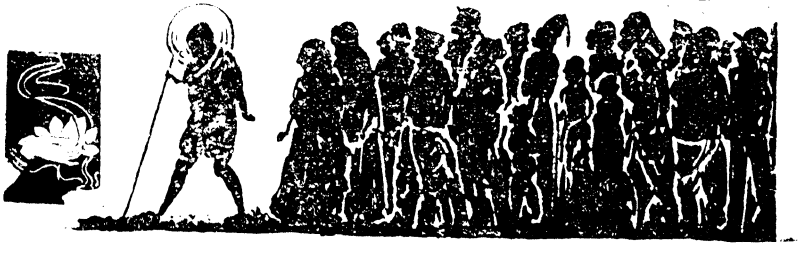
स्वतन्त्रता का मोती पाने- गाँधी जी 'दिल्ली में आये।
ब्रिटिश राज्य के राजमहल में- जा 'अर्विन' से नयन मिलाये॥
भेंट हुई गाँधी 'अर्विन' की, पश्चिम पूरब का मेला था।
सरिता को दो मिले किनारे, गोलमेज़ से वह खेला था॥

कार्य-समिति ने गाँधी जी को- अपने सब अधिकार दे दिये।
गाँधी के पवित्र हाथों ने- हँस हँस कर अंगार ले लिये॥
जो अंगारों पर चलता है- काँटे उसे फूल बन जाते।
पानी की वर्षा होते ही- अंगारे ठण्ढे पड़ जाते॥

सँभल सँभल चलना पड़ता है, जीवन की पगडण्डी टेढ़ी।
मिले प्रेम से गाँधी 'अर्विन', समझौते की चर्चा छेड़ी॥
गाँधी जी ने सब से पहिले- कहा, छोड़ दो बन्दी सारे।
सब विशेष क़ानून हटाओ, अपनी नौका करो किनारे॥

अति पर उतरी हुई पुलिस है, सच्ची सच्ची जाँच कराओ!
जिनका जो भी ज़ब्त किया है- वह उनका वापिस पहुँचाओ!!
जितने जितने दण्ड लिये हैं- कर प्रायश्चित, वापिस करदो!
जो जिसका, वह उसको दे दो, न्याय नीति का दीपक धरदो!!

इसके बाद सन्धि चर्चा पर- छिड़े तार भारत लन्दन के।
खण्डन से खण्डित होता जग, तार जुड़े रहते मण्डन के॥
समझौते की बड़ी कहानी, चलती रहीं बराबर बातें।
बनीं जागरण की रणभेरी- गाँधी के जीवन की रातें॥





जननायक

'वायसराय भवन' में गाँधी- 'अर्विन' से बातें करते थे।
और अतिथि थे "अन्सारी" के, प्रेम-सुधा से घर भरते थे॥
गाँधी जी का सारा दल बल- "अन्सारी" के घर पर ही था।
भारत माँ का सारा गौरव- गाँधी जी के सर पर ही था॥



कार्य-समिति "अन्सारी" के घर- गाँधी जी की राह देखती।
मेरे अविनाशी गाँधी को- उत्सुकता से चाह देखती॥
जब कि प्रतीक्षा करते करते- आँखें पथराया करती हैं।
तब ही भूखी प्यासी आँखें- मिलन गीत गाया करती हैं॥

"गाँधी-अर्विन" समझौते की- एक निराली घटा घिरी थी।
बहुत प्रतीक्षा बाद देश में- एक सुनहरी किरण गिरी थी॥
सायंकाल छः बजे थे जब- गाँधी 'अर्विन' पुनः मिले तब।
दोनों समय मिले थे हँस हँस, रजनी में दिनमान खिले तब॥

गाँधी जी की मधुर भेंट में- आशा की किरणें लहराईं।
कार्य-समिति के मुख मण्डल पर- धुँधली सी आशायें छाईं॥
समझौते की बातचीत में- कभी दिखाई दिया सवेरा।
कभी निराशा के घन छाये, कभी दिखाई दिया अँधेरा॥

कभी कभी काली रजनी में- चाँद दिखाई दे जाता था।
कभी उजाले की चाँदी पर- काला अन्धकार छाता था॥
एक समस्या सुलझाते थे, तभी और उलझन आ जाती।
राजनीति के दाव पेच में- सुलझी उलझन सुलझ न पाती॥

लेकिन गाँधी अर्विन मिलकर- कोई मार्ग टटोल रहे थे।
आदि अनन्त गुणों से दोनों- कटुता में रस घोल रहे थे॥
पन्द्रह दिन तक जाग रात दिन- दोनों ने ही लगा दिया बल।
राजनीति से अन्तर मथ कर- अन्त समस्या कर ही ली हल॥

मुक्त कण्ठ से गाँधी जी के- 'अर्विन' ने जग में गुण गाये।
गुण तो वह है जिस के आगे, प्रतिपक्षी भी शीश झुकाये॥
सन् उन्निस सौ इकत्तीस की- पाँच मार्च के अरुणोदय में-
सरकारी विज्ञप्ति बटी थी- गाँधी 'अर्विन' की मधु लय में॥







इस अस्थायी समझौते की– इक्किस बातें करीं प्रकाशित।
सब विशेष क़ानून हटे थे, गाँधी ने की शान्ति प्रसारित॥
दण्ड न लेंगे, ज़ब्त की हुई– वापिस सब सम्पत्ति करेंगे।
लेकिन जो बिक चुकी सम्पदा– उसका बदला नहीं भरेंगे॥

और वैध शासन सम्बन्धी– प्रश्न विचाराधीन रहेंगे।
'गोलमेज़ परिषद्' की बातें– पुनः सुनेंगे, पुनः कहेंगे॥
क़ानूनों की मर्यादा को– भंग नहीं कोई कर पाये।
ओ३म् शान्ति प्रभु! ओ३म् शान्ति प्रभु! मानव से मानव मिल जाये॥

'भगतसिंह' को फाँसी पर से– गाँधी ने चाहा छुड़वाना।
पूरी शक्ति लगाई लेकिन– मृत्यु-सुधा को मिला बहाना॥
'भगतसिंह' के नश्वर तन को– हत्यारों से बचा न पाये।
लेकिन अमर शहीद हो गये, मातृभूमि पर फूल चढ़ाये॥

वह युगपरिवर्तित भाषण जो– गाँधी जी ने दिया बाद में।
शान्ति सुधा बरसी पड़ती थी– सत्य प्रेम के मधुर स्वाद में॥
वह साहित्य चिरन्तन सत है– जो गाँधी के मुख से बोला।
वह विष सुधाधार बन जाता– जिसमें गाँधी ने रस घोला॥

गौरव गाँधी ने 'अर्विन' की– मुक्त कण्ठ से करी प्रशंसा।
मानव में मानवता पायें– गाँधी जी की थी यह मंसा॥
हार जीत की होड़ लगाना– अप्रमेय का ध्येय नहीं था।
गाँधी-वाणी का रस पीकर– किस प्राणी को श्रेय नहीं था॥

गाँधी सुख की सीमा पाकर– कभी न हुए फूल गुब्बारे।
कभी दुःख में धैर्य न छोड़ा, धन्य धन्य वे चरण हमारे॥
मृगतृष्णा से दूर दूर वे– जग के हित चिन्तन में रत थे।
जग की गति विधि से परिचित थे, ईश्वर के चरणों में नत थे॥

सत्य अहिंसा आत्म बल से– जिसने दानवता को जीता–
वह रामायण बन जाता है, और वही बन जाता गीता॥
गाँधी-अर्विन समझौते से– नई हवा में आई हलचल।
चहल पहल सी हुई देश में, क्रीड़ा करता था कोलाहल॥





समाचार पत्रों के प्रतिनिधि– बैठे वहाँ लगा कर मेला।
गाँधी जी के दाँये बाँये– घिरा पत्रकारों का रेला॥
देश-विदेशी प्रतिनिधियों ने– नारायण के दर्शन पाये।
पूछे प्रश्न पत्रकारों ने, गाँधी ने उत्तर समझाये॥



मानो प्रश्न किये 'अर्जुन' ने, मनमोहन उत्तर समझाते।
अमृत अजय अर्जुन पर छिड़का– गीता का गुरु ज्ञान सिखाते॥
महाकाव्य की आत्मा हैं वे, वर्ण वर्ण में अंकित वे हैं।
प्रश्न पत्र-प्रतिनिधियों के ये– गाँधी जी के उत्तर ये हैं–

'पूर्ण स्वराज्य' शब्द की व्याख्या– क्या है ? महा! महा! बतलाओ!'
"आत्म नियन्त्रक पूर्ण राज्य है", मुक्त! देश के दुःख लड़ाओ!!'
'पूर्ण स्वराज्य हेतु परिषद् में– लेंगे भाग ? और बल देंगे' ?'
"क्या अस्तित्व अगर न दिया बल, बल न दिया तो क्या ले लेंगे"॥

'जो संरक्षण प्रतिबन्धन हैं– मानेंगे या नहीं उन्हें अब ?'
"नीति साफ़, उद्देश्य साफ़ है, अमृत पुत्र अस्पष्ट रहे कब ?
ब्रिटिश राज्य का मार्ग साफ है, काँगरेस का मार्ग घुला है।'
'प्रश्न कराँची काँगरेस' में– क्या होंगे, क्या रंग घुला है' ?
"काँगरेस की कार्यसमिति में– सारे प्रश्न करेंगे निश्चय"।
'बार बार उलझन जो आई– कैसे उन पर पाई है जय ?'
"अर्विन की भलमनसाहत से, राम नाम ने पथ दिखलाया।"
'क्या यह सबसे बड़ी सफलता, क्या यह जीवन में मधु पाया ?'

"मैंने जीवन में क्या पाया, क्या खोया, यह दुनिया जाने।
पूर्ण स्वराज्य सफलता मेरी, स्वतन्त्रता जीवन के माने॥"
'क्या भावी शासन विधान में– संरक्षण स्वीकार करेंगे ?'
"युक्ति युक्त एवं विवेक से– हाँ, उसका सत्कार करेंगे॥
अल्प संख्यकों के सारे हक़– जब कि धरोहर मानेंगे हम–
तब ही बड़े राष्ट्र हम होंगे, तभी हटा पायेंगे हम तम॥
सैनिक एवं आर्थिक बल भी– सचाई से बढ़ पायेगा।"
'क्या सरकारी ऋण भारत का– उनको भुगताया जायेगा ?'





"जिसका भारत पर ऋण होगा- उसको कौड़ी कौड़ी देंगे।
लेकिन हमें चाहियेगा जो- भारत की धरती से लेंगे॥
इस धरती में हीरे, मोती, इस धरती में भरी वीरता।
इस धरती में मुक्ति विजय है, इस धरती में धरी धीरता॥"

'राष्ट्र-संघ' उपयुक्त पंच क्या ?' "नहीं, पंच वह जो दो मानें।
पंच रूप परमेश्वर का है, हम परमेश्वर को पहिचानें॥"
'क्या यह अस्थायी समझौता- अमली भाषण पर्वतीय है ?'
"यह आलोचक बतलायेंगे- कौन कहाँ तक माननीय है॥"

'क्या विलायती वस्त्रों का अब- बहिष्कार ढीला कर देंगे ?'
"नहीं ! कदापि नहीं, भारत को- वस्त्र स्वदेशी से भर देंगे॥"
'और जातियों से ऊपर उठ- क्या अंग्रेज़ी राज्य पालता ?'
"मैं अपने को छोड़ किसी की- सत्ता सर पर नहीं चाहता॥"

'इसी ब्रिटिश झण्डे के नीचे- क्या अधिकार पसन्द करेंगे ?'
"एक आम झण्डे के नीचे- हम न किसी से कभी डरेंगे॥
भारत के झण्डे के नीचे- भारत राष्ट्र स्वतन्त्र रहेगा।
ऊपर उड़ता रहे तिरंगा, तले सिन्धु का नीर बहेगा॥

तीन रँगों की छाया लेकर- छाया लोक रचा ईश्वर ने।
वही तिरंगा झण्डा देकर- मार्ग दिखाया उस हरि हर ने॥
इस तूफ़ानी जल-प्लावन में- हमको तैर पार जाना है।
दिल्ली के उत्तुंग शिखर पर- हमें तिरंगा लहराना है॥"

'क्या हिन्दू मुस्लिम प्रश्नों के- हल सुलझा एकता करोगे ?
क्या धरती आकाश मिलेंगे, क्या आँसू में प्यार भरोगे ??'
"आज क्षितिज से अलग एक दिन- हिन्दू मुस्लिम मिल जायेंगे।"
'क्या स्वराज्य के मिल जाने पर- सैन्य शक्तियाँ हटवायेंगे ?'

"कभी समय वह भी आयेगा- जब हम यह गौरव पायेंगे।
मानवता की तुंग शिखा पर- जब कि तिरंगा लहरायेंगे॥"
'बोल्शेविज़्म' पसन्द कहो क्या ? क्या हमले की है आशंका ?'
"जिसमें अच्छाई हो उसका- बजता है दुनिया में डंका॥







जननायक



लेकिन मुझको डर न तनिक भी, मैं नारायण पर निर्भर हूँ।
सत्य प्रेम की पगडण्डी पर- मैं मृत्युंजय अमर निडर हूँ॥"
'शासन का प्रधान मन्त्री पद- क्या बापू स्वीकार करेंगे?'
"यह पद नौजवान की गद्दी, हम उसका सत्कार करेंगे॥"
'पर यदि जनता चाहे तुमको, और उसी पर अड़ जाये तो?'
"शरण पत्रकारों की लूंगा, कोई अड़ने को आये तो॥"
'क्या स्वराज्य के बाद देश से- आप मशीनें उड़वा देंगे?'
"नहीं, मुक्ति के बाद देश में- और मशीनें मँगवा लेंगे॥"
'क्या स्वराज्य से पूर्व शीघ्र ही- जननायक आश्रम जायेंगे?'
"जब तक पूर्ण स्वराज्य न होगा- तब तक शान्ति नहीं पायेंगे॥"
'क्या अन्तर्राष्ट्रीय गुत्थियाँ- आप अहिंसा से खोलेंगे?'
"सेनायें दर्शन को होंगी, सत्य प्रेम से रस घोलेंगे॥
सेना खेल खिलौना होगी, बहती होगी निर्मल गंगा।
गंगा की गति सा हिमगिरि पर- फहरायेगा शान्त तिरंगा॥"
मोहन-मानस मथा भक्ति से, अमृत-धार बरसी पत्रों से।
बापू की वाणी की धारा, बार बार बरसी पत्रों से॥
अख़बारों में सत्यामृत की- गंगा लहराती देखी है।
गाँधी-वाणी गरल सुखाती, मधु पर काँगरेस गाती है॥
हिमगिरि की ऊँची चोटी से- काँगरेस में जीवन आया।
बहती चली त्रिवेणी धारा, लहरों ने चन्दा तैराया॥
चलो 'कराँची काँगरेस' में, चलें अरब सागर के तट पर।
जहाँ शान्त उत्ताल तरंगें- मचलीं प्रलय भैरवी गा कर॥
अन्तस्तल में आग छिपाये- आँखों में भर कर खारी जल-
किस की विरह-वेदना भर कर- तट से टकराता है पागल!
किस से मिलने को उत्कण्ठित, किस पर मचल रहे हो सागर!
दोनों हाथों लुटा रहे हो- जग में हीरे मोती भर भर॥
गा गा गीत चढ़ा कर मोती- क्या भारत को प्यार कर रहे?
क्या चन्दा को लोरी दे दे- सुन्दर का सत्कार कर रहे??



धवल चाँदिनी के आँगन में- जब ये लहरें लहराती हैं-
शरद पूर्णिमा का शशि पाकर- जब ये मधुर मधुर गाती हैं-
तब पीड़ित से पीड़ित नर भी- मस्ती में बाँसुरी बजाता।
तब समाधि से जाग काव्य ले- कवि सागर से होड़ लगाता॥

तुम में केवल शंख, और मैं- शंखनाद लेकर आया हूँ।
तुम में नश्वर हीरे मोती, मैं अनन्त मोती लाया हूँ॥
तुम में आग, किन्तु मुझ में भी- भीषण विरहानल जलता है।
तुम से चाँद खेलता निशि में, मुझ में शशि प्रतिपल चलता है॥

तुम में ज्वारभाट की कलकल, मुझ में भावुकता की छल छल।
तुम में महाप्रलय का बल है, मुझ में सब का चिर संचित बल॥
तुम को मर्यादा ने रोका, रोक रहा है मुझे किनारा।
तुम पहरे पर खड़े हुए हो, मैंने पहरा दिया तुम्हारा॥

तुम बड़वानल से जलते हो, मुझको दुनिया जला रही है।
तुम तूफान छिपाये बैठे, कविता नौका चला रही है॥
आओ सागर! हम दोनों मिल- हृदय हृदय की चिंता बुझायें।
सीता-स्वतन्त्रता लाने को- प्रभु को लहरों पर तैरायें॥

आओ! हम अपनी ज्वाला से- परिवर्त्तन की आग लगायें।
क्रान्ति क्रान्ति जय! महाक्रान्ति जय! हम तुम पंचम स्वर में गायें॥
उदधि उमड़ कर बोला कवि से- जननायक के स्वर में बोलो।
जिनके चरण पखार रहा मैं- उनके पीछे पीछे होलो॥

बड़े भाग्य इस तट के, जिस पर- लगा देवताओं का मेला।
काँगरेस के अधिवेशन में- लहरायेगी भावी वेला॥
उड़े भाव सौरभ जलसे में, शरद चाँदिनी में मँडराये।
नेताओं के श्री चरणों में- जड़ चेतन ने फूल चढ़ाये॥

'भगतसिंह' की यादगार पर- दीप जलाये काँगरेस ने।
फाँसी पर चढ़ने वालों पर- फूल चढ़ाये देश देश ने॥
'भगतसिंह' की फाँसी सुन कर- शोकाकुल बादल घिर आये॥
भावुक युवकों ने गाँधी पर- काले पीले फूल चढ़ाये।









जननायक



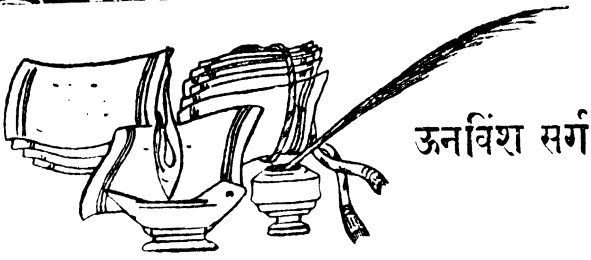
पर बापू ने उन फूलों का– मूल्य प्रेम-पीड़ा से आँका।
श्रद्धा से झुक गये फूल वे, बापू में सब का उर झाँका॥
शीतल शान्त सुधा-रस गाँधी– बोले, "सत्य नहीं डर सकता।
गाँधी मरे भले ही चाहे, गाँधीवाद नहीं मर सकता॥
फाँसी पर चढ़ने वालों की– अमर भावनायें ज़िन्दा हैं।
काँगरेस में क्रीड़ा करतीं– करुण कामनायें ज़िन्दा हैं॥
वीरों के बलिदान अमर हैं, जय जय जय जय जय जय जय हो।
यही गर्जना हो सागर की, यही गगन-चुम्बी की लय हो॥
हिन्दू मुसलमान के दीपक! मानवता के धन मृत्युञ्जय!
'श्री गणेश शंकर विद्यार्थी'– अमर! तुम्हारी बार बार जय॥"
पास शोक प्रस्ताव हुए जो– वे ही अब स्मृति चिह्न शेष हैं।
पूजा में सब से पहिले ही– बैठाये जाते गणेश हैं॥
ऊँची नीची पगडण्डी पर– जनमन गण नायक जाते थे।
बीच भँवर मँझधार पार कर– नाव किनारे पर लाते थे॥
गति विधियाँ चित्रित करता था– भावी चित्र बनाने वाला।
मंज़िल पर बढ़ता जाता था– लेकर राम नाम की माला॥
राम नाम रटने वाले की– नाव पहाड़ों पर चढ़ती है।
शक्ति साधना देशभक्ति से– मिलती मुक्ति, कीर्ति बढ़ती है॥
स्वतन्त्रता की मधुर चाह में– लगा हुआ था मनहर मेला।
डाली डाली फूल खिले थे, पतझड़ में बसन्त-विधु खेला॥

बता समीर साँवले! कहाँ मिली स्वतन्त्रता?
चली अधीर चाँदिनी जहाँ खिली स्वतन्त्रता॥
उसी सुहाग की कला सितार सी पुकारती।
उसी प्रभात की सुरश्मि आरती उतारती॥









ऊनविंश सर्ग



चाँदी की शैया पर चन्दा- देख रहा स्वप्निल संसृति को।
फूलों के आभरण गूँथ कर- पहिनाता प्रिय प्रिया प्रकृति को॥
शरद पूर्णिमा के चरणों में- शशि का पूर्ण पराग बहा है।
जड़ चेतन निद्रा निमग्न हैं- पर वह प्रहरी जाग रहा है॥

क्रान्ति सफल हो! क्रान्ति सफल हो! रश्मि-बालिकायें गाती हैं।
बन्दी छूट छूट आते हैं, ये मालायें पहिनाती हैं॥
मुक्त बन्दियों के जलूस पर- प्रेम-पुष्प की वर्षा होती।
विजय-नाद ललकार रहे हैं, बिखर रहे हैं मन के मोती॥

'अर्विन' चले गये भारत से, 'लॉर्ड विलिँगडन' भारत आये।
दिन ढल गया, कमल मुरझाये, निशि ने अपने नयन नचाये॥
वायसराय नये आये थे, समझौते से बने अपरिचित।
गाँधी की मित्रता न जानी- सीमा समझ न सकी अपरिमित॥

चला निरंकुश शासन फिर से, समझौते पर स्याही फेरी।
सूरज डूब गया पश्चिम का, घिरती आई घोर अँधेरी॥
पुलिस और सेना का शासन- चला कुचलने काँगरेस को।
गौरव पथ पर ले जाता था- गाँधी का सन्देश देश को॥

वह नर अमर, नहीं मर सकता- जिसने सच्चाई पहिचानी।
दुनिया वाले विष लाये पर- अमृत घूँट "मीरा" ने मानी॥
जो हँसते हँसते विष पीते- वे ही 'शंकर' कहलाते हैं।
डरने वाले डर जाते हैं, बढ़ने वाले बढ़ जाते हैं॥







निडर, नलिन निर्दोष कोष प्रिय- मनमोहन सम्मान रूप थे।
त्याग तपस्याओं के गौरव- महा महा गुरु ज्ञान-रूप थे॥
'लॉर्ड विलिँगडन' पल में परखे, ईंटें गिरने लगीं रेत की।
गाँधी जी को दीख रही थी- परछाई अंग्रेज़ प्रेत की॥



सन्धि भंग की अंग्रेज़ों ने, शोषण अत्याचार खून थे।
भारत माता के मन्दिर में- हँस हँस कर चढ़ते प्रसून थे॥
नियम तोड़ अंग्रेज़ सिपाही- मार माँगते मालगुज़ारी।
प्राण-प्रसून तोड़ने वाले- कहलाते प्रज्ञा अधिकारी॥

प्रान्तों की सरकारें सत तज- अपनी मनमानी करती थीं।
प्रान्त प्रान्त में सन्धि भंग थी, भावों की कृपियाँ मरती थीं॥
मदिरालय पर सत्याग्रह के- शान्तिपूर्ण धरने को रोका।
झण्डे छीने, डण्डे मारे, बात बात में अड़ कर टोका॥

यह विश्वासघात गोरों का, अपने उनके चाटुकार थे।
काम क्रोध मद लोभ मोह के- पराधीनता में शिकार थे॥
सभी शत्रुओं को गाँधी ने- संयम् से पछाड़ जय पाई।
उसकी आँखों की वर्षा ने- ऊसर में खेती उपजाई॥

गाँधी जी ने कलक्टरों वह- गवर्नरों से उत्तर माँगा।
वही ढाक के तीन पात थे, चाँदी पर छाया था राँगा॥
अन्त 'इमर्सन' साहब से फिर- करीं महामानव ने बातें।
यह कैसा समझौता जिसमें- दिन ही में घिर आईं रातें॥

दो दिन बीते नहीं कि तुमने- समझौते का पालन छोड़ा।
पंचों से निर्णय करवाओ, सत्ता ने समझौता तोड़ा॥
उत्तर मिला 'इमर्सन' से जो, बुद्धिवाद वह तर्क जाल था।
या यों कह दो, अंग्रेज़ों की- रक्षा हित ले रहा ढाल था॥

तर्क बुद्धि से सत्य न मिलता, उलझन से उलझन आती है।
श्रद्धा शान्ति भक्ति संयम् से- उलझन शीघ्र सुलझ जाती है॥
बुद्धि जहाँ तक पहुँच न पाती- श्रद्धा वहाँ राज्य करती है।
शक्ति भक्ति श्रद्धा के आगे- बुद्धि सदा पानी भरती है॥







पर यदि बुद्धि साथ श्रद्धा के- जीवन की लहरों में लय हो।
सोने में वह बने सुहागा, उस नर नारायण की जय हो॥
बुद्धिवाद चिन्ता का चीता, श्रद्धा में अनहद मलयानिल।
तर्क बुद्धि से फूल सुगन्धित, खील खील होते हैं खिल खिल॥

बुलबुल फूल नोच देती है, मधुकर रस में लीन बीन से।
श्रद्धा से श्रद्धा मिलती है, तार्किक देखे गये दीन से॥
लेकिन इसका अर्थ नहीं यह- करें अन्ध विश्वास किसी पर।
करते रहो प्रकाश सभी पर, श्रद्धा का उजियाला लेकर॥

फूलों की शाश्वत सुन्दरता, पागल वैज्ञानिक क्या जाने?
जो फूलों से खेले बोले- फूलों को वे कवि पहिचाने॥
अन्त 'इमर्सन' से गाँधी जी, सुलझन का कूल्ह पा न सके हल।
दाँत लगाये जाते हैं जब- स्वाभाविक है होनी हलचल॥

अत्याचार दमन निर्वासन, घर खेती पर गोरे राजा।
सभी ओर से त्राहि! त्राहि! है, खून पिया जाता है ताजा॥
'लार्ड विलिँगडन' को गाँधी ने- भेजा तार, सार समझाया।
'गोलमेज़ परिषद्' में जाना, अब अपना अपमान बताया॥

लिखा 'विलिँगडन' ने गाँधी को- "खेद कि आप नहीं जायेंगे।
समझ नहीं पाया फिर कैसे- अपनी बातें समझायेंगे॥
काँगरेस का हित इसमें है, 'गोलमेज़ परिषद्' में जाये।
जो जो कारण लिखे आपने- उनके हल परिषद् से पाये॥

खैर, आपकी जैसी इच्छा, मैं यह खबर भेजता 'लन्दन'।
'लन्दन' में प्रधान मन्त्री को- भेज रहा हूँ सारी अनबन॥
यही आपका अन्तिम निश्चय, 'लन्दन' आप नहीं जायेंगे?
बूर बट रही है लन्दन में, क्या वह बूर नहीं पायेंगे??"

उत्तर यह तत्काल मिल गया- निश्चित मुझे नहीं जाना है।
मुझे चाहिये राष्ट्र दिवाली, घूर नहीं मुझको पाना है॥
स्वाभिमान सम्मान शान्ति ने- भारत माँ का भाल उठाया।
काँगरेस की कार्य-समिति ने- गड्ढे से बच पैर बढ़ाया॥







जनायक

अपने ऊँचे सिद्धान्तों पर- निर्मित किये 'स्वयम् सेवक दल'।
सैनिक चले स्वराज्य प्राप्ति को, लेकर गाँधी जी का सम्बल॥
'सेवादल' का चला संगटन, गूंजी गाँधी जी की जय जय।
गाँव गाँव में ऊँचे स्वर से-- काँगरेस की गूंज गई लय॥



'बादशाह सरहद के गाँधी- जय अब्दुल गफ्फार' समन्वय-
धर कन्धों पर जुवा देश का- आन्दोलन में सत्य हुए लय॥
निकले 'खिदमतगार खुदाई', हुए अग्रसर सेवा-पथ पर।
'जिरगा' साथ चला 'सरहद' के- भेद भाव के शूल भूल कर॥

इस प्रकार से प्रान्त प्रान्त में- काँगरेस का बढ़ा संगठन।
मलयानिल गाँधी जी लाये- भारत के माथे का चन्दन॥
देख आज, कल, और भविष्यत्- गाँधी जी बढ़ते थे आगे।
अग्नि परीक्षाओं से निकले, तूफ़ानों से कभी न भागे॥

काँगरेस के प्रस्तावों पर- मुहर महामानव की लगती।
राजनीति की कूटनीतियाँ- गाँधी के आगे थीं मँगती॥
प्रश्न साम्प्रदायिक जाले से- सुलझाये राष्ट्रीय ढंग से।
सभी जातियाँ रँगी हुई थीं- महापुरुष के स्वच्छ रंग से॥

गरल साम्प्रदायिकता का सब- गारुड़ गाँधी जला बढ़े थे।
जीवन-पथ की चट्टानों पर- गाँधी हँसते हुए चढ़े थे॥
इस नागिन की फुंकारों से- काँगरेस को मुक्त कर दिया।
पथ भूली दुनिया के आगे- सर्वग्राह्य उद्देश्य धर दिया॥

ब्रिटिश राज्य के आगे उसने- बड़ी चतुरता से रक्खे हल।
राष्ट्रीयता बढ़ी भारत में, हलचल से बच लादी हलचल॥
रखीं योजनायें बापू ने, कार्यसमिति ने मुहर लगाई।
अपने धुले हुए मानस की- दुनिया को तस्वीर दिखाई॥

शासन सब को आश्वासन दे- उनकी रक्षा की जायेगी।
संस्कृति, भाषा, धर्म कर्म पर- बिल्कुल आँच नहीं आयेगी॥
मर्यादा व्यवहार नागरिक, अधिकारों में समता पायें।
बालिग़ मत अधिकार यहाँ हो, अल्प जातियाँ सुख से गायें॥





भारत भारतीयता में हो, नहीं चाहिये इँगलिश चोला।
पर्स उन्हों का रहे दूर ही, बना रहे खद्दर का झोला॥
यहाँ 'पद्मिनी' 'सावित्री' हों, नहीं 'इण्डिया गेट' चाहिये।
'लव' 'कुश' 'ध्रुव', 'प्रहलाद', यहाँ हों, हमें न इँगलिश पेट चाहिये॥

काशमीर के चाँद यहाँ हैं, कृत्रिम चमक दमक क्या करनी?
यहाँ बहुत हिरनियाँ पूज्य हैं, क्या करनी पश्चिम की हरनी॥
भारत का यह झण्डा जिसमें- साहस का केसरिया रँग है।
सत्य शान्ति की शुभ्र ज्योत्सना, श्रद्धा की हरियाली सँग है॥

बरसा रही वीरता वाणी- काँगरेस की ध्वजा तिरंगी।
हम सब का भगवान एक है, भेद-भाव का भागे भंगी॥
इसी तिरंगे ध्वज के नीचे- समझौते पर काँगरेस दृढ़।
यही तिरंगा झण्डा गाड़ा- ऊँची चट्टानों पर चढ़ चढ़॥

जय 'बल्लभ भाई पटेल' की- गाँधी के आदेश बन गये।
काँगरेस के प्रिय प्रतीक ही- सन्तों के सन्देश बन गये॥
जैसे बालक खेल खेल कर- तोड़ खिलौना किल्ली मारे।
ऐसे ही समझौता टूटा, डूबे जब आ गये किनारे॥

बापू 'गोलमेज़ परिषद्' में- तब फिर कैसे जा सकते थे?
जिस मधु में विष मिला दिया हो- वह मधु कैसे खा सकते थे?
काली पीली घिरीं घटायें, सत्याग्रहियों ने जय बोली।
बाट देखती थी इंगित की- सत् सत्याग्रहियों की टोली॥

पर गाँधी जी समझौते का- कभी न द्वार बन्द करते थे।
कभी नहीं नरवस होते थे, कभी न दैत्यों से डरते थे॥
सत्य शान्ति के लिये प्रेम से- दोनों हाथ उठा कहते थे।
मानवता के सिद्धान्तों को- सब को समझाते रहते थे॥

सन्धि भंग थी, पर गाँधी की- सत्ता से बातें चलती थीं।
वायसराय और गाँधी की- तारों से फलियाँ फलती थीं॥
यदि सब तार यहाँ पर जोड़ूँ- एक बड़ी पुस्तक बन जाये।
बापू ने हर चरण-चाप से- नये नये इतिहास बनाये॥







जननायक

मित्र 'प्रभाशंकर' गाँधी के– जिसने सब उलझन सुलझाई।
गहन निराशा की बदली में– फिर आशा की किरण दिखाई॥
बहुत बहुत बाधायें थीं पर– अन्त ढूंढने से पाया हल।
भूले को पथ मिल जाता है– बापू के चरणों पर चल चल॥



वायसराय मार्ग पर आये, गाँधी ने सत्कार कर लिया।
'गोलमेज़ परिषद्' में जाना– सुलझन ने स्वीकार कर लिया॥
'लन्दन' को चल पड़े चरण वे, जिनको दृग-मृग चूम रहे हैं।
जिनके सौरभ से भावों पर– जग के भौंरे झूम रहे हैं॥

गाड़ी में 'बम्बई', वहाँ से– बैठ यान में यान चल पड़ा।
स्वतन्त्रता देवी लाने को– भारत का अभिमान चल पड़ा॥
'देवदास', देवी 'सरोजिनी'– 'महादेव देसाई', 'मीरा'।
'प्यारेलाल' प्रवाल साथ थे– दमक रहा था उज्ज्वल हीरा॥

जैसे ऊपर कमल कीच से– वैसे वह ऊपर जाता था।
शुद्ध वनस्पतियों से निर्मित– भारतीय भोजन पाता था॥
सागर प्रहरी बना उन्हों का, भाव-रूप से साथ साथ था।
विजय उसी के चरणों में थी– जिस पर उसका वरद हाथ था॥

पहुँचे "अदन" महात्मा जी जब– हार्दिक स्वागत में जन मन थे।
पलक पावड़े बिछे हुए थे, दर्शन करके तृप्त नयन थे॥
'अरबों' और भारतीयों ने– उन पर श्रद्धा-सुमन चढ़ाये।
गाँधी-वाणी के प्रताप से– राष्ट्र-रूप झण्डे लहराये॥

वर्त्म-मार्ग पर गाँधी जी ने– गाड़ा राष्ट्र-निशान तिरंगा।
मनहर स्वागत हुआ 'अदन' में, वही प्रेम की निर्मल गंगा॥
गिनी तीन सौ अट्ठाइस दीं, चरणों में चढ़ गईं अशरफ़ी।
जननायक पर हृदय चढ़ाये, बटी प्रेम-केसर की बरफ़ी॥

मानपत्र पाया बापू ने, बरस पड़ा उत्तर में भाषण।
बापू की रसना से बरसा– लाखों काव्यों का आकर्षण॥
धन्यवाद देते वे बोले– काँगरेस का प्रतिनिधि हूँ मैं।
मुझ में मेरा नहीं लेश भी, जनता के मन की निधि हूँ मैं॥







स्वतन्त्रता के सुख बतलाये, बोले झण्डे के महत्त्व पर।
झण्डा जीवन का प्रतीक है, उठ मानव! झण्डा ऊँचा कर॥
यह निशान तेरे गौरव का, यह वीरों की अमर निशानी।
यह निशान नभ तक पहुँचाये- मानव! उठती हुई जवानी॥

झण्डे का सम्मान अगर है- तब ही हम पूजे जायेंगे।
यदि झुक गया निशान देश का- तो हम ठोकर ही खायेंगे॥
जाग उठा वीरत्व मनुज में, जननायक से जन जन जागे।
धन्यवाद दे, हृदय साथ ले- चले यान में बापू आगे॥

बापू का जहाज़ चलता था, और यान में चर्खा चलता।
चर्खे की चरमर चरमर से- उद्योगों का दीपक जलता॥
जहाँ बैठते थे गाँधी जी- बन जाता ऋषि-लोक वहीं पर।
सागर की लहरों पर चलता- शान्तिपूर्ण मर्यादित सागर॥

वीर "नहसपाशा" ने उनको- साहस की चिट्ठी भिजवाई।
सु "जगलूल पाशा" देवी ने- भिजवाये सन्देश बधाई॥
गाँधी जी को लिखा उन्होंने- स्वागत भारत के सेनानी!
हृदय 'मिश्र' का साथ उसी के- जिसके साथ शक्ति इन्सानी॥

यात्रा कुशल सफल हो, जय हो- मेरी यह विनती ईश्वर से।
स्थायी व्यापक विजय प्राप्त हो, कीर्ति प्राप्त हो दुनिया भर से॥
राम! चिरायु करें गाँधी को, मैं गाँधी की करूँ आरती।
गाँधी की वाणी पर बैठी- वीणा लेकर भक्ति भारती॥

मार्ग मार्ग में दर्शन करने- देश देश के नेता आये।
गाँधी के पावन चरणों पर- सब ने श्रद्धा-सुमन चढ़ाये॥
'मार्सेलीज़' गये गाँधी जी, 'मैडलीन रोलाँ' स्वागत में।
'रोम्या रोलाँ' की भगिनी ने- पावन प्रेम मिलाया सत में॥

"मैडलीन" के साथ 'मोशियर'- 'प्रिवे सुपत्नी' भी आईं थीं।
गाँधी जी के पदचिह्नों पर- दीप जलाने को लाईं थीं॥
कितने ही 'फ्राँसीसी' आये, छात्रों ने बोली जय जय जय।
जनता की जय जय जय सुनती- 'लन्दन' में आ पहुँची वह लय॥









जननायक



"ईस्ट एण्ड" वाले उजियाले- सार्वजनिक घर कुटी जहाँ थी-
मैली निर्धन भूखी बस्ती- जिसमें 'मिस म्यूरियल' वहाँ थी ॥
उसके यहाँ "हाल किंग्स्ले" में- बड़े प्रेम से बापू ठहरे।
महलों के भी मिले निमन्त्रण, किन्तु न सागर उनमें लहरे ॥

"लन्दन" के हर गाँव शहर में- गाँधी जी की गूँजी जय जय।
मिली भेंट पर भेंट उन्हों को, चरणों में आया यश अक्षय ॥
'मित्र सभा घर' में गाँधी का- एक मित्र ने सुनकर भाषण-
चैक पचास पौंड का भेजा, धन्य धन्य उसका आकर्षण ॥

पूज्य महात्मा ने 'लन्दन' में- 'वेस्ट एण्ड' से 'ईस्ट' सराहा।
राजा का आतिथ्य न भाया, 'मिस लिस्टर' का मानस चाहा ॥
धनिकों की संगति को भूले, स्वाद 'सुदामा' के चावल थे।
भारत के बोलते चित्र थे, भारत के प्रश्नों के हल थे ॥

बच्चों से क्रीड़ा करते थे, बालक उनको घेरे रहते।
प्रकृति-प्रिया से बातें करते, प्रेम भरी गंगा में बहते ॥
माता 'पुतली' की शिक्षा वे- भूले नहीं एक भी क्षण को।
कण कण में अंकित करते थे- मानव-जीवन के लक्षण को ॥

मिले 'जार्ज पंचम' से गाँधी- बाँधे खद्दर की लंगोटी।
वह उस भारत का प्रतिनिधि था- जिसकी छिनी हुई थी रोटी ॥
मानो नंगा भूखा भारत- ब्रिटिश राज्य से मिलने आया।
खड़ा ब्रिटिश सम्राट हो गया- उन चरणों में हृदय झुकाया ॥

मानो लज्जा से उसके दृग- चरणों में झुकते जाते थे।
मानो गाँधी जी के आगे- ऊपर उठते शर्माते थे ॥
ब्रिटिश राज्य के शहनशाह ने- गाँधी जी से हाथ मिलाया।
इधर हृदय-सम्राट खड़ा था, उधर 'किंग' ने सुमन चढ़ाया ॥

जागे भाग्य 'जार्ज पंचम' के, गाँधी जी के दर्शन पाये।
जागे कब के पुण्य न जाने, जो भगवान द्वार पर आये ॥
सिंहासन से ऊपर उठकर, साधु-वेश में सुमन खिले थे।
या कि 'किंग' को किसी पुण्य से- बनवासी भगवान मिले थे ॥



उसी लँगोटी चादर में तन, तन में पूर्ण त्रिलोक बिन्दु थीं।
छिपा बिन्दु में सिन्धु सत्य शिव, तन धारे आलोक बिन्दु थीं॥
गये कहीं भी गाँधी जी, पर- भारतीयता कभी न त्यागी।
लालच की विषधर सी वेश्या- गाँधी जी से कोसों भागी।

गाँधी जी के बोल बोल में- मुक्ति व्याप्त थी, आकर्षण था।
'फैडरल स्ट्रक्चर' आदि समिति में- सार भरा सुन्दर भाषण था॥
भारतीय इतिहास कहानी- साधन रचना ध्येय बताये।
दलितों की तस्वीरें खींचीं, काँगरेस के श्रेय बताये॥

काँगरेस के पालक पोषक- धन्य "ह्यूम" को श्रद्धांजलि दी।
सत्य अहिंसा साहस बल में- सब दुर्बलताओं की बलि दी॥
फिर "परिषद्" में गाँधी जी ने- स्वतन्त्रता हित हृदय उड़ेला।
नौकरशाही की सत्ता से- मनमोहन रसना से खेला॥

राष्ट्र-समूह और सत्ता के- आदर्शों का भेद बताया।
ब्रिटिश राज्य के चित्र दिखाये, अपना सच्चा ध्येय दिखाया॥
थोड़ी संख्यक जाति भावना, अस्पृश्यता घाव बतलाया।
यह कलंक है, यह विनाश है, यह ज़िन्दों को डसने आया॥

अस्पृश्यों की पृथक जाति कर- हमें न वर्गीकरण चाहिये।
छुवाछूत क्या? क्या अछूत है, हमें न ऐसा मरण चाहिये॥
अस्पृश्यता मिटा न सके तो- हिन्दू धर्म डूब जायेगा।
अस्पृश्यता अगर मिट जाये- भारतवर्ष विजय पायेगा॥

जो जन आज अछूत नीति से- हिन्दुस्तान डुबाने आये।
उसको कौन डुबा सकता है- जो जल पर पत्थर तैराये?
उसे पता क्या हिन्दू संसद- किन आदर्शों पर दृढ़तर है।
मेरी शंख घोषणा है यह- भारतवर्ष एक अन्तर है॥

अस्पृश्यता निवारण के हित- मेरे प्राणों की बाज़ी है।
बँधी मुवारी नहीं खुलेगी, सत्य प्रेम पर हर राज़ी है॥
फिर शिव वीर विजेता गाँधी- सेना, राजनीति पर बोले।
शब्द शब्द में सुधा भरा था, बात बात से जीवन घोले॥











कहा ज़ोर से गाँधी जी ने- वसुन्धरा यह वीर भोग्य है।
उत्तरदायी शासन के हित- काँगरेस सब तरह योग्य है॥
वैदेशिक विभाग, रक्षा तक- हम ले सकते हैं कन्धों पर।
भारत में अंग्रेज़ी सेना- भारत को दिखलाती है डर॥

हम हैं योग्य, सँभाल सकेंगे- सब उत्तरदायित्व देश का।
हर विभाग पर लहरायेगा- ऊँचा झण्डा काँगरेस का॥
सेना में हिन्दुस्तानी पर- अंग्रेज़ी दीवार बीच में।
शोषण के पंजे फैला कर- डाल दिया है हमें कीच में॥

किन्तु कीच में कमल बन गये, कीचड़ से ऊपर आये हम।
सत्य प्रेम का सम्बल पाकर- सत्य असत्य समझ पाये हम॥
सेना में हिन्दुस्तानी हैं, किन्तु विदेशी उन्हें बनाया।
लूट मार करने को तुमने- उनको अत्याचार सिखाया॥

भाई को भाई न समझते, ग़ैरों को अपना कहते हैं।
अंग्रेज़ों की स्वार्थपूर्ति है, हम उनके बन्दी रहते हैं॥
विदेशियों के हमले तुम पर, इसीलिये भारत की सेना।
और आन्तरिक द्रोह दमन कर- लूट रही है अस्मत सेना॥

भारत की सारी सेना पर- भारत का अधिकार छोड़ दो!
सेना मत बाँधो स्वार्थों में, बन्धन की रस्सियाँ तोड़ दो!!
अंग्रेज़ी सेना भारत में- रहे विदेशी हमलों के हित।
सद् व्यवहारों की दुनिया हो, रहें देश में सभी शान्त चित॥

वीरभूमि भारत की सेना- भारत ही का कहना माने।
सिक्ख, गोरखा, राजपूत दल- भारत का गौरव पहिचाने॥
निश्चय ही यह स्वप्न आज जो- शीघ्र एक दिन पूरा होगा।
ब्रिटिश राजनीतिज्ञ न मानें- मनवायेगी शक्ति सुयोगा॥

इसी प्रतीक्षा में जीवित हूँ- सेना पर अधिकार करूँगा।
जब तक देश स्वतन्त्र न होगा- तब तक निश्चित नहीं मरूँगा॥
भारत अपनी रक्षा करनी- गुरुओं से भी अधिक जानता।
अब तुम हमको बाँध सकोगे- मैं यह हरगिज़ नहीं मानता॥





गुरखे, सिक्ख, राजपूतों से– भारत की रक्षा हो सकती।
लगी हुई कालिमा भाल पर– क्या न मुसलमानी धो सकती?
राजपूत वह, जिसने लाखों– "थार्मपोलियाँ" पैदा कर दीं।
एक 'ग्रीस' की 'थार्मपोलि' है, रजपूतों ने नदियाँ भरदीं॥

हम अंग्रेज़ों के मानस में– प्रेम भाव भरने वाले हैं।
और स्वयम् अपने पैरों पर– राज्य यहाँ करने वाले हैं॥
जब तक हम यह कर न सकेंगे– बयाबान में ही भटकेंगे।
उठें बवण्डर, गिरें बिजलियाँ, अग्नि परीक्षायें भी देंगे॥

चलें गोलियाँ, या बम बरसें– क़दम हमारे नहीं रुकेंगे।
स्वतन्त्रता का भोर न जब तक– तब तक तारे नहीं लुकेंगे॥
'अर्विन' से कह चुका, पुनः अब– दोनों ही का हो संरक्षण।
सुखी रहें इँगलैंड और हम, बढ़ती रहे मित्रता क्षण क्षण॥

एक दूसरे के साथी हों– हम दोनों साझीदारी से।
मानवता के दीप जलायें– हम दोनों बारी बारी से॥
भीख माँगने से स्वतन्त्रता– कहो आज तक किसने पाई?
हम सतर्क हैं, दूर हटी है– हम पर से भ्रम की परछाई॥

काँगरेस भारत की प्रतिनिधि– जो निश्चय स्वतन्त्रता लेगी।
ज़मींदार, राजा, शिक्षित सब– सेवा से संगम कर देगी॥
भेद-भाव के विष से बच कर– काँगरेस में है सबका हित।
ऊँचे ध्येय, शान्ति की धारा– गाँव गाँव में हुई प्रवाहित॥

छुरे, ज़हर के प्याले, गोली– काँगरेस के पास नहीं हैं।
हिन्दुस्तान हमारा घर है, भारतवासी दास नहीं हैं॥
पूर्ण अहिंसा सत्याग्रह पर– काँगरेस की नींव धरी है।
स्वतन्त्रता है ध्येय देश का, शान्ति सुमन की प्रेम-तरी है॥

उपनिवेश स्वाधीन देश वे, ब्रिटिश राज्य के अंगभूत जो–
पृथक साम्य अधिकार शिवम् ले, बनें विश्व में देशदूत जो॥
राजा वह है, जो हृदयों पर– राज्य करे जनता का होकर।
राजा रहे प्रजा से शासित, सूरज हो धरती अम्बर पर॥









हृदय वही है, जिसके अन्दर- हर प्राणी का भला भरा हो।
सोना वह है, जो तप तप कर- अग्नि-परीक्षा बाद खरा हो॥
काँगरेस के लिये हृदय में- पहिले थोड़ा स्थान बनाओ!
मुझ दुबले पतले बूढ़े की- बातों पर विश्वास जमाओ!!



काँगरेस सागर है, जिसमें- मैं भी जल की एक बूँद हूँ।
काँगरेस का लघु कण हूँ मैं, पड़ा नहीं पर आँख मूँद हूँ॥
करो अर्चना काँगरेस की, भूलो अब आतंकवाद को।
पढ़ो वास्तविकता भारत की, याद करो 'ध्रुव' व 'प्रहलाद' को॥

ईश्वर का संकेत यही, जो- देशभक्त लिखते शोणित से।
ईश्वर से मत रहो अपरिचित, भला बुरा पहिचानो चित से॥
ईश्वर का इंगित पाकर ही, महाक्रान्ति का शंख बज रहा।
प्राणों की आहुति देने को- भारत का हर वीर सज रहा॥

अटल प्रतिज्ञा-बद्ध देश है- हम भूखों को रोटी देंगे!
जाग पड़े हम! जाग पड़े हम! स्वतन्त्रता की रोटी लेंगे!!
सार भरा बापू का भाषण, ब्रिटिश राज्य का थोथा उत्तर।
गाँधी डिगे नहीं तिल भर भी, टकराये तूफ़ान भयंकर॥

मानव-जीवन की मंज़िल पर, पग पग पर आँधी आती है।
हिलता नहीं हिमालय तिल भर, लाखों आँधी टकराती हैं॥
ब्रिटिश राज्य ने जाल डाल कर- गाँधी को चाहा फुसलाना।
रहे ढाक के तीन पात फिर, रोज़ याद कर, रोज़ भुलाना॥

बहा प्रेम की निर्मल गंगा, गाँधी विदा हुए 'लन्दन' से।
मनमोहन की करी अर्चना- मलयानिल ने चित चन्दन से॥
मिले 'रोम' में 'मुसोलिनी' से, कर्णधार मिलते चलते थे।
स्वागत में मणियों के दीपक- जगमग जग झिलमिल जलते थे॥

भारत माँ की पारस पथरी- अंग्रेज़ों की मुट्ठी में थी।
सारी ऋद्धि सिद्धियों की श्री- गाँधी जी की घुट्टी में थी॥
भूलभुलइया से गाँधी जी- भारत की गोदी में आये।
उन्हें देख चाँदिनी आगई, रवि के रूप जलज शर्माये॥



कोमल किसलय पर आँखों के– मोती बरस बरस पड़ते थे।
भारत के प्रहरी बापू पर– हँसते हुए फूल झड़ते थे॥
भारत के हर गाँव शहर में– गोरे रक्त पान करते थे।
नयी नयी आज्ञायें आईं, किन्तु न कमल कभी डरते थे॥

ब्रिटिश राज्य से शासित भारत– अत्याचार सहन करता था।
अंग्रेज़ों की संगीनों से– खेती का मालिक मरता था॥
'युक्त प्रान्त' 'बंगाल प्रान्त' में– पुलिस कर रही थी मनमानी।
निर्मम अंग्रेज़ी गुण्डों की– डायन बन कर चढ़ी जवानी॥

वह काला शासन था जिसका– पृष्ठ पृष्ठ लिख रहा खून से।
पृष्ठ बदलने चले सिपाही– प्राणों के पावन प्रसून से॥
ज्वाला में घी पड़ा दमन से, धधक उठीं ज्वाला की लपटें।
चलती जलती आग वहीं से– जहाँ जहाँ भी तारे झपटें॥

भारत के कोने कोने में– क्रान्ति क्रान्ति की चिनगारी थी।
बलिवेदी के लिये देश में– बलिदानों की तैयारी थी॥
'सीमाप्रान्त' सज गया रण हित, जाग उठा "सरहद का गाँधी"।
लेकर बढ़ा "लालकुर्ती दल", छायी लाल लाल सी आँधी॥

एक लाख से ऊपर सैनिक– 'सरहद' के शेरों से आये।
उठ 'अब्दुल गफ्फार' शेर से– स्वतन्त्रता लाने को धाये॥
मानवता की मस्ती में था– 'सरहद' का वह सागर प्यारा।
धन्य धन्य 'सरहद के गाँधी!' सचमुच ही है तू ध्रुवतारा॥

भारत का यह देख संगठन– अंग्रेज़ों को मूर्च्छा आई।
ब्रिटिश राज्य के लाल भाल पर– चिन्ता की अँधियारी छाई॥
नौकरशाही ने नेता गण– शुरू कर दिये बन्दी करने।
वे कब कारा से डरते हैं– जो आये हैं जग से तरने?

'वीर जवाहरलाल जेल में'– समाचार पत्रों के शीर्षक।
'जय अब्दुल गफ्फार जेल में'– पत्रों में देखा यह दीपक॥
'सरहद के गाँधी' के भाई– और पुत्र भी बन्द कर दिये।
चहल पहल पत्रों में आई– जागृति के सन्देश भर दिये॥







जनायक

अखबारों में नेताओं के– रोज़ नये फोटो आते थे।
वे ही चित्र मूक भाषा में– जन जन से मन कह जाते थे॥
घी बन कर बरसा ज्वाला पर– पिँघली आँखों का जल खारी।
धरती पर आँसू गिरता था, आँसू से उठती चिनगारी॥



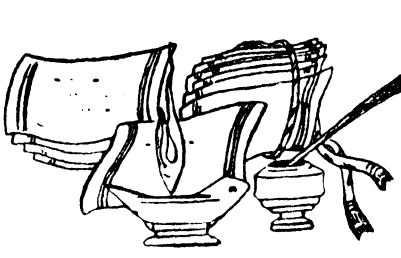
दृगों के पथ से पिँघल कर–
आग अन्तर की निकलती।
हृदय का अंगार आँसू,
प्रेम की ज्वाला पिँघलती॥



प्रलय का पाषाण बनता,
शान्त बड़वानल उबल कर।
आग से उड़ते धुँवे से–
मेघ क्या है? आग जल पर।







विंश सर्ग



सीप तभी दृग-बिन्दु लिये हर,
सागरिका छिप के जब रोती।
सागर में जल की लहरों पर–
पीर भरे दृग के मन-मोती॥

नाच रहीं लहरें पलकों पर,
टूट रहे हृद-हार हमारे।
देख दुखी कृषि के मन मोहन,
सावन में बरसे कण खारे॥

स्नेह भरे दीपक जलते हैं, जगमग खिलती स्वर्ण उजाली।
काली रजनी में आती है– झिलमिल दीपक लिये दिवाली॥
काले तम में आँसू चुगने– महापुरुष दीपक ले आये।
सागर-तट पर स्वागत के हित– भारतीय मन-मोती लाये॥

आँसू तभी निकलता है जब– हृदय उमड़ आँखों में आता।
गरल उसे पीना पड़ता है– जो आँखों का अमृत पिलाता॥
आँखों का गंगाजल दुनिया– हँसती हँसती पी जाती है।
शोलों की अलबेली दुनिया– मन के मोती ठुकराती है॥

मानवता के प्रहरी को जग– खारी आसव पिला रहा है।
आँखों का आसव ढल ढल कर– फूल धरा पर खिला रहा है॥
गुण ग्राहक जनता ने उनकी– जय जय से आरती उतारी।
उमड़ उमड़ घिर घिर आती थी– बदली सी 'बम्बई' बिचारी॥







जननायक ने निज भाषण में- अस्पृश्यता गरल बतलाया।
अलग अछूत नहीं हिन्दू से, हिन्दू धर्म समष्टि बताया॥
छुवाछूत का भेद मिटेगा- वर्ना मेरी लाश चलेगी।
या तो यहाँ एकता होगी- वर्ना मेरी चिता जलेगी॥

राष्ट्र-धर्म ही श्रेष्ठ धर्म है, भारत से खिलवाड़ न खेलो।
जो नौका मँझधार पड़ी है- उसको सब मिल तट तक खेलो॥
फिर बापू ने ब्रिटिश राज्य से- राजनीति के तार हिलाये।
अपनी निर्मलता दिखलाई, उनके अत्याचार दिखाये॥

लिखा, कि तुमने पकड़ लिये हैं- भारत के अनमोल सितारे।
भारत माता की छाती पर- घुर्राते आदेश तुम्हारे॥
आपस की मित्रता आपने- पल में खेल समझ कर तोड़ी।
फूस इकट्ठा था भारत में, तुमने आ चिनगारी छोड़ी॥

इससे जो ज्वाला धधकेगी- उसे बुझा भी पाओगे क्या?
लगा फूस में चिनगारी तुम- जलने से बच जाओगे क्या??
उत्तर दिया विलिंगडन ने यह- जो कुछ मैंने किया ठीक है।
गाँधी बोले, किन्तु मार्ग में- तेली आया, हुई छींक है॥

वे सब हैं विष भरे भेड़िये- जो विशेष आदेश निकाले।
ब्रिटिश राज्य के क़ानूनों ने- डाले हैं छाती में छाले॥
मानस के अनमोल रत्न सब- ब्रिटिश राज्य में बन्द पड़े हैं।
जिनको फूल बताते हो तुम- वे छाती पर शूल खड़े हैं॥

जुड़े न टूटे तार प्यार से, बातचीत से सार न निकला।
सूख गये आँखों के आँसू- लेकिन पत्थर हृदय न पिघला॥
गाँधी जी ने खुले मंच से- निन्दा की आतंकवाद की।
भंग हुआ 'दिल्ली समझौता', गर्जन गूंजी शंखनाद की॥

अंग्रेज़ों ने कूट नीति से- अपने खूनी फण फैलाये।
नीति विभाजन को फैलाते- गोरों के खूनी रँग आये॥
कभी मुसलमानों के मामा, कभी हिन्दुओं को फुसलाया।
श्वेत साम्प्रदायिक साँपन ने- कभी विषैला फण दिखलाया॥





छुवाछूत की डायन छोड़ी, लगे खोलने बँधी भुवारी।
सीक सीक को तोड़ तोड़ कर- लगे सताने बारी बारी॥
कूट नीति से तार तोड़ कर- उसने भारत को ललकारा।
काँगरेस के आन्दोलन का- गूँजा गली गली में नारा॥

'मानसिंह' से 'आगा खाँ' ने- वह बीभत्स रूप दिखलाया।
चाँदी के टुकड़ों पर बिक कर- मुँह पर काला दाग़ लगाया॥
'लॉर्ड विलिंगडन' ब्रिटिश राज्य ने- काँगरेस पर तोपें तानी।
छाती खोल अड़ गई आगे- काँगरेस की उटी जवानी॥

गाँधी जी, 'वल्लभ भाई' को- तत्क्षण किया राजसी बन्दी।
वह चिनगारी दहक उठी अब- जलती थी जो मन्दी मन्दी॥
सत्याग्रहियों के दल निकले, चलीं देहियाँ ले ले झण्डे।
बूढ़े बालक महिलाओं पर- चलीं गोलियाँ, बरसे डण्डे॥

कितने अत्याचार गिनाऊँ? रोम रोम को नोच उखाड़ा।
भारत माता की छाती पर- माँ बहिनों को चीरा फाड़ा॥
नये नये आदेश शहर में- सर पर राजा बन जाते थे।
बड़े बड़े नेता जेलों में- गोरों के कोड़े खाते थे॥

थानेदार राज्य करते थे, बन्दी काँगरेस के साधन।
लेकिन रुका नहीं आन्दोलन, तृपित धरा पर बरसे सावन॥
हाथ-प्रेस पर परचे छापे, नगर नगर में कार्य समिति थी।
बलि की वेला खुली हुई थी, पुण्यपर्व की पावन तिथि थी॥

बहिष्कार के आन्दोलन में- ब्रिटिश माल की जलीं होलियाँ।
और निहत्थों की छाती पर- अंग्रेज़ों की चलीं गोलियाँ॥
किन्तु गोलियाँ उन सीनों से- टकरा कर टूटा करती थीं।
गंगा की धारायें उनके- हृदयों से छूटा करती थीं॥

इस तूफ़ानी हलचल में ही- होना था "दिल्ली अधिवेशन"।
ब्रिटिश फ़ौज तैयार खड़ी थी, धमकाती थीं बन्दूकें तन॥
चारों ओर पुलिस का पहरा- कैसे 'दिल्ली काँगरेस' हो?
नेतागण थे बन्दीगृह में- कैसे सागर पार देश हो??









जननायक



नये रूप में, नयी चाल से- गाँव गाँव से प्रतिनिधि आये।
पुलिस हो गई अन्धी, समझी- घी ग्रामीण बेचने लाये॥
कुछ खद्दरधारी आ पहुँचे- घी का धरे कनस्तर सर पर॥
कुछ बातों की गड्डी ले ले- आ आ बैठे घण्टाघर पर।

उलझी पुलिस कहीं दूरी पर, पागल लाल पगड़ियाँ मटकीं।
प्रतिनिधियों के इन्द्रजाल में- सारी लाल पगड़ियाँ लटकीं॥
टन टन टन घण्टाघर बोला, लहरा काँगरेस का झण्डा।
घण्टे भर तक अधिवेशन में- ऊँचा रहा देश का झण्डा॥

पागल पुलिस घिरी बदली में, शासन पर छा गया अँधेरा।
राष्ट्र रूप 'रण छोड़' न भागे, 'अमृत लाल' ने किया सवेरा॥
गोरों के भेड़िये राज्य में- ख़ून! ख़ून! था, या थी हा! हा!
दलित जातियों का निर्वाचन- उसने पृथक कराना चाहा॥

अग्नि परीक्षा का अवसर फिर- गाँधी जी के लिये आ गया।
भारत के स्वर्णिम विहान पर- फिर श्यामल आवरण छा गया॥
किन्तु सूर्य तम चीर ज्योति ले- रथ पर पूर्व दिशा से आया।
पश्चिम की काली आँधी पर- गाँधी का उजियाला छाया॥

पाप स्वरूप पृथक निर्वाचन- सब नेताओं ने धिक्कारा।
प्राणों से सौदा कर बैठा- भारत माता का ध्रुव तारा॥
पृथक चुनावों के विरोध में- सन ने किया आमरण अनशन।
इस विष के उतारने के हित- लगा दिया अपना तन मन धन॥

किया आमरण व्रत गाँधी ने, चारों ओर मच गई हलचल।
अनशन-शक्ति उठी दीपक ले, सोती नींद हो गई चंचल॥
आँखें खोल बदल कर करवट- भारत ने देखा चोरों को।
पृथक चुनावों की छुरियाँ ले- देखा छाती पर गोरों को॥

'पूना' की कारा में देखे- अनशन किये हुए जननायक।
उर में राम नाम अंकित था, जीवन-रक्षक थे जगपालक॥
करीं प्रार्थनायें भारत ने- ईश्वर! गाँधी की रक्षा कर!
गारुड़ गाँधी जी चढ़ बैठे- पृथक चुनावों के विषधर पर॥







व्रत साधे, पूजा में बैठे, 'त्राहि ! त्राहि !' मानवता ने की ।
'शान्ति निकेतन' में कवियों ने- विनती नर नारायण से की ॥
सच्चे मन से जब ईश्वर को- कोई दुखी शून्य में टेरे ।
नंगे पैरों तत्क्षण आते- नारायण उस नर के नेरे ॥

'राजा जी' 'गोपाल' जाल ने- सोच सोच विधि खोज निकाली ।
गाँधी बोले "खूब ! खूब !" यह- खूब निकाली खोज उजाली ॥
फिर से गये सन्धि वार्त्ता में, प्रश्न हो गये 'पूना' में हल ।
राजनीति के निपुण दीप ने- जग में ज्योति दिखाई उज्ज्वल ॥

जलद 'यरवदा समझौते' पर- ब्रिटिश राज्य से सन्धि हो गई ।
गाँधी जी की अमर प्रतिज्ञा- दलित जाति का दाग़ धो गई ॥
निपुण ब्रिटिश मन्त्री मण्डल ने- नीति एकदम परिवर्तित की ।
गाँधी जी ने मानवता की- जग में नयी नीति निश्चित की ॥

भौतिक तन की भेंट चढ़ाकर- बापू रक्षा हित तत्पर थे ।
जिस पर वरद हाथ था उनका- उस के साथ साथ हरि हर थे ॥
बापू ने 'यरवदा जेल' में- लक्ष्य देखकर अनशन छोड़ा ।
अन्तर्नाद सुना दुनिया ने, छुवाछूत का रस्सा तोड़ा ॥

हिन्दू अन्तःकरण शुद्ध हो- इसीलिये था उनका अनशन ।
हिन्दू हिन्दुस्तान बचाया, धन्य धन्य हरिजन-आन्दोलन ॥
जननायक के उपवासों ने- जन जन का उपकार किया है ।
मनमोहन के पुण्य व्रतों ने- संस्कृति का सत्कार किया है ॥

'अप्पा साहब पटवर्धन' ने- अनशन शुरू किया कारा में ।
भंगी सेवा करनी चाही- वह मानवता की धारा में ॥
किन्तु न मानी बात उन्हों की, अतः यती ने अनशन ठाना ।
साथ किया गाँधी जी ने व्रत, "अप्पा" का अन्तर पहिचाना ॥

जीत हुई 'अप्पा साहब' की, सत्याग्रह से हत्या हारी ।
जिस पर कृपा कोर गाँधी की- उस के साथ शक्तियाँ सारी ॥
इक्किस दिन के अनशन की फिर- गाँधी जी ने करी प्रतिज्ञा ।
आत्म शुद्धि, हरिजन सेवा हो, इसी ध्येय से करी प्रतिज्ञा ॥







जननायक

उपवासों में अमर शक्ति है, जिस से पत्थर भी हिल जाते।
व्रत में ईश्वर की महिमा है, व्रत से मुँह माँगा वर पाते॥
व्रत से आत्मशुद्धि होती है, व्रत से शक्ति भक्ति दृढ़ होती।
व्रत से मन में संयम आता, संयम से पाता नर मोती॥



उपवासों में शक्ति, शक्ति से- मन की विजय ध्वजा लहराती।
बिना शक्ति के थोथा मानव, शक्ति शत्रु को दूर सुलाती॥
जैसा समय, शक्ति वैसी ही, शक्ति अनेक रूप धरती है।
कभी खंग का, कभी शान्ति का, कोटि रूप धारण करती है॥

सर्व शक्तियों ने ही मिलकर- महाशक्ति अवतीर्ण करी है।
वही अहिंसा के बाने में- मनमोहन की शान्ति-तरी है॥
आत्मा बल से काँपे गोरे, डर कर गाँधी जी को छोड़ा।
नमस्कार नारायण को कर- गाँधी जी ने तथ्य निचोड़ा॥

मुक्त हुए "यरवदा जेल" से, सत्याग्रह के साधन साधे।
उसको भँवर किनारा बनता- जिसने नारायण आराधे॥
कारागृह में गाँधी जी ने- कष्ट सहे पर हिले न तिल भर।
सीता सी "बा" साथ उन्हों के- प्यार चढ़ाती थी चरणों पर॥

सत्याग्रह के अमर पुजारी- एक बिन्दु से सिन्धु बनाते।
सत्याग्रह की सूक्ष्म शक्ति से- बड़े बड़े पत्थर पिस जाते॥
गिरफ़्तारियाँ हुईं देश में, किन्तु न माथे पर बल आये।
सत्याग्रहियों की दृढ़ता से- धरती के पत्थर थर्राये॥

इसी बीच में कलकत्ते की- काँगरेस का अवसर आया।
अंग्रेज़ों ने प्रतिनिधियों को- रेलों ही से पकड़ मँगाया॥
'मालवीय' जी चुने राष्ट्रपति, पथ में बन्दी उन्हें बनाया।
पर सत्याग्रहियों के मन में- बिजली का बादल मँडराया॥

पूरा हुआ मनोरथ उनका, हुआ शान से वह अधिवेशन।
उनके लिये असम्भव सम्भव, जिनका लगा तिरंगे से मन॥
स्वागत है उस अभ्यागत का- जिस ने स्वर्ण प्रभात दिखाया।
भारत माता के मस्तक पर- जिसने उषा सिँदूर लगाया॥







जिसकी रसना से झरती है- गंगाजल की निर्मल धारा।
जिसके जीवन से जन जन में- झण्डा उड़ा तिरंगा प्यारा॥
जीवन "हरिजन" किया प्रकाशित, बिखरी शुभ्र ज्योत्सना जग में।
मानवता के लिये बिछ गया- बापू का उजियाला मग में॥

मुक्त हुए वे पार्थिव जग से, 'मोर तोर' के झगड़े छोड़े।
काम क्रोध मद लोभ मोह के- गाँधी जी ने रस्से तोड़े॥
पहिले अपना जीवन साधा, तब वह व्यष्टि समष्टि बन गई।
मन मथ लोनी मक्खन काढ़ा, मन में तन की छाय छन गई॥

करी प्रतिज्ञा मनमोहन ने- राज्य अहिंसा से पाऊँगा।
स्वतन्त्रता के बिना लिये मैं- 'साबरमती' नहीं जाऊँगा॥
हरिजन-सेवा में श्रद्धा से- अपना आश्रम किया समर्पण॥
तन मन धन जन किये उन्होंने- हरिजन-आन्दोलन के अर्पण।



हमारे प्राण हरिजन हैं।
मोम से मेघ से मन हैं॥
इन्हीं के खून में बिजली।
इन्हीं से शृंखला पिघली॥

प्राण ये दीप से जलते।
गीत ये दृगों से ढलते॥
चित्र ये बादलों के हैं।
घाव ये पागलों के हैं॥

धरा पर सूखते सावन।
लाज का थाम लो दामन॥
आग यह जल रही जल में।
प्रलय इनके प्रबल पल में॥

तुम्हारे प्यार के भूखे।
ठोकरों में पड़े सूखे॥
छोड़ दो मार्ग शूलों का।
पहिन लो हार फूलों का॥





हरिजन-आन्दोलन हित बापू– गाँव गाँव में फिरे घूमते।
लम्बी लकुटी लिये बटोही– नन्दन बन में रहे झूमते॥
गाँधी जी पर बम भी फेंका– हरिजन-आन्दोलन से चिढ़ कर।
पर हत्यारे का खनी बम– गिरा दूसरे की मोटर पर॥

जिसको राम बचाने वाला– उसको कौन मार सकता है?
जो हरिजन का मित्र नहीं है– उस से कौन हार सकता है??
बार बार अनशन कर गाँधी– तपा तपा तन-शक्ति बढ़ाते।
जीवन की जर्जर तरणी से– बड़े बड़े पत्थर तैराते॥

राष्ट्र-पताका लिये पुजारी– बार बार बनते थे बन्दी।
इस से और आग जलती थी, हवा नहीं होती थी मन्दी॥
'महावीर हनुमान'-'जवाहर'– मार छलाँग पार जाते थे।
सागर, पर्वत और रसातल– महावीर से थर्राते थे॥

इसी समय दैविक प्रकोप ने– आँख बदल घूरा "बिहार" को।
धरा हिली, भूकम्प आ गया, क्रोध आ गया धरा धार को॥
निकल रसातल से जल आया– जिसमें नगर गाँव घर डूबे।
निकल धरा से रेता आया, जल छल छल में थलचर डूबे॥

पलक मारते ही लाखों घर– गिर कर समा गये धरती में।
लाखों हुए अनाथ निमिष में, लाखों जन मिल गये सती में॥
जहाँ खेतियाँ हरी भरी थीं– वहाँ रेत या जल ही जल था।
भूकम्पों से धरती काँपी, निकल रहा जल उबल उबल था॥

उठा फावड़ा और टोकरी– वीर 'जवाहर लाल' चल पड़े।
मिट्टी के ढेरों से घायल– वे निकालते चला फावड़े॥
नीचे दबे हुए पीड़ित नर– मिट्टी ढो ढो स्वयम् निकाले।
जय हो वीर 'जवाहर'! तेरी, स्वतन्त्रता हित लड़ने वाले॥

सत्य अहिंसा के सम्बल से– वैधानिक रणभेरी बोली।
बना कार्य-क्रम "राजसभा" का, नयी नीति निष्ठा से खोली॥
पंच चुने जाकर जनमत से– पहिले पंचायत में जायें।
इनके ही क़ानूनों से हम– इनको सागर पार भगायें॥





सत्याग्रह वह अमर अस्त्र है- जिससे "दैत्य कशिपु" तक डोला।
पर यह शस्त्र उसी का रक्षक- जिसने अपना हृदय टटोला॥
जागृति की वीणा बजते ही- अद्भुत हलचल हुई देश में।
पांचजन्य सुन जननायक का- आँधी आई काँगरेस में॥

बना भयानक भूचालों से- भारत में "समाजवादी दल"।
नये रक्त से जीवन आया, सत्याग्रह ने पाटी दलदल॥
काँगरेस के कार्यक्षेत्र में- एक नया परिवर्त्तन आया।
पुनः संगठन हुआ देश में, वीणा छोड़ी, शंख उठाया॥

बापू की विचार धारा से- कुछ मन ही मन में शंकित थे।
सब के मिस भाव भावुक बन- गाँधी के मन में अंकित थे॥
समय समझ कर गाँधी जी ने- परिवर्त्तन की गति पहिचानी।
जिसने समय नहीं पहिचाना- दलदल में है वह अज्ञानी॥

सात दिवस उपवास मौन धर- जननायक ने वाणी खोली।
भारत माता के मस्तक पर- रसना चली लगाने रोली॥
बोले, काँगरेस से मेरा- अब न स्थूल सम्बन्ध रहेगा।
सूक्ष्म साथ है काँगरेस के, जीवन उसका कूल रहेगा॥

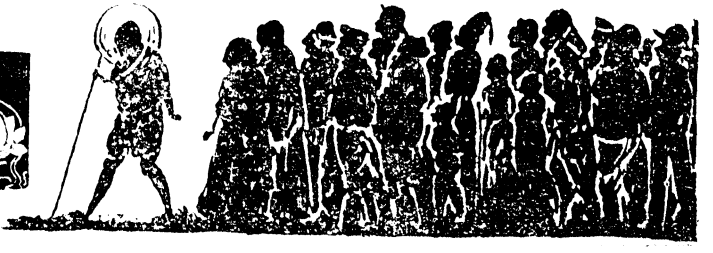
तन से दूर रहूँगा लेकिन- मन मेरा है काँगरेस में।
मेरा चेतन यही चाहता- फूल खिलें भारत प्रदेश में॥
अब वह समय आ गया है जब- काँगरेस से अलग रहूँ मैं।
काँगरेस के शुद्ध हृदय से- अपने मन की बात कहूँ मैं॥

मैंने जो यह मार्ग चुना है- वह शुभ अमर अटल निश्चय है।
इसी मार्ग पर चलने से अब- काँगरेस की अक्षय जय है॥
बहुतों के विचार ये भी हैं- मैं हूँ काँगरेस में बाधक।
मेरे भाव नहीं भाते हैं, अतः मुझे बनना आराधक॥

काँगरेस के प्रगतिमार्ग में- मैं रोड़ा बन अड़ा हुआ हूँ।
भावुक लहरों के धक्कों में- मैं पर्वत सा खड़ा हुआ हूँ॥
शरद पूर्णिमा की चाँदी में- मेरी रेखायें काली हैं।
वे बादल से उड़ रहे हैं- जो इस उपवन के माली हैं॥









जनायक

कुछ ने काँगरेस को समझा- मेरे हाथों की कठपुतली।
मैं अब अलग हो रहा हूँ, तुम- लेकर चलो तर्क की सुतली॥
मुझ में परम भक्ति के कारण- कुछ की वाणी पर ताले हैं।
यह तो मुझसे हिंसा होगी, ये मधुघट विष के प्याले हैं॥



जब तक मेरे भावों को जग- मन से सत्य नहीं मानेगा-
तब तक उसे सुझाऊँगा मैं- जब तक मुझे नहीं जानेगा॥
लेकिन प्रेम अहिंसा सत से- अपना मार्ग बनाऊँगा मैं।
फूक मारता समय खड़ा हो- लेकिन दीप जलाऊँगा मैं॥

असहयोग का सत्य प्रणेता- सच्चा है "समाजवादी दल"।
किन्तु कार्यक्रम शक्ति पूर्ण हो, जीवन लायें लहरें चंचल॥
नीति मात्र ही नहीं अहिंसा, इसमें आदि अन्त की क्रीड़ा।
क्रीड़ा के अवगुंठन में है- मेरे सत्य-सन्त की क्रीड़ा॥

एक बूँद पानी सागर में- मिल कर सागर-जल बन जाता।
बूँद बूँद से सागर बनता, सागर-जल बादल बन गाता॥
मैं न बलात भाव लादूँगा, मुझे हृदय परिवर्त्तन भाता।
व्यापक नियम यही जीवन का, सत्य इसी से खोजा जाता॥

लोक और परलोक हेतु मैं- सत्य साधना कैसे छोड़ूँ?
क्षणभंगुर सुख के लालच में- भरा सुधा-घट कैसे फोड़ूँ??
जो अन्तर में वही प्रकट में, बाहर भीतर भेद नहीं है।
मुझे आत्म-सन्तोष इसी में- सत्य प्रेम में खेद नहीं है॥

मूर्तिमान तस्वीर देश की- सात लाख ग्रामों में देखो!
ठिठरे हुए खड़े खेतों पर- कृषकों के चामों में देखो!!
मेरी इच्छा यही गाँव में- जाकर अपना डेरा डालूँ।
सागर की गहराई में घुस- हीरे मोती ढूँढ निकालूँ॥

काँगरेस की सदस्यता से- मेरा भौतिक त्यागपत्र है।
लोकेषणा हार मानव की, यत्र तत्र संसार चक्र है॥
व्यक्ति नहीं है बड़ा राष्ट्र से, राष्ट्र बड़ा तो व्यक्ति बड़ा है।
राष्ट्र-सृजन के हित ही गाँधी- एकाकी खम ठोक खड़ा है॥







जहाँ न शेष कला कौशल है- वहाँ नहीं व्यक्तित्व देश का।
पद-लोलुपता जिसे नहीं है- भला उसी से काँगरेस का॥
सारी राजनीति हैं गाँधी- जिसमें सब के सुख की क्रीड़ा।
सत्याग्रह में अमर विजय है, दूर दूर है दुख की व्रीड़ा॥

सत्याग्रह का रूप विजय है, विजय स्वरूप सन्त जननायक।
रोम रोम में राम रमे हैं, गाँधी के श्रीराम सहायक॥
काँगरेस 'बम्बई' हुई फिर, सागर-तट पर झण्डा फहरा।
राष्ट्र-रूप "राजेन्द्र" वीर की- वाणी पर युगसृष्टा लहरा॥

आदर्शों के शान्त नाविको! नौका की पतवार सँभालो!
कहीं नीर में उजियाली है, कहीं घटा है, नाव बढ़ालो॥
काली पीली असि लहरों पर- बड़ी शान्ति से नाव चलाओ!
पीड़ा तुम्हें पुकार रही है, मानस की हिमशिला गलाओ॥

सत्य टके शूली पर चाहे- लेकिन पूजा ही जायेगा।
सत के आगे अन्यायों का- मस्तक कभी न उठ पायेगा॥
मंज़िल पर चलने वाले के- चरणों में दीपक जलते हैं।
सत्यवान के साथ तिमिर में- ईश्वर दीपक से चलते हैं॥

फिर प्रस्ताव सामने आये, भावी रेखायें स्वीकृत कीं।
गाँधी के अन्तर-तारों ने- लाखों वीणायें झंकृत कीं॥
चाहे जितनी करो भलाई- दुनिया सदा बुराई देती।
मधु का मूल्य यहाँ विष ही है, अन्तर चीर चिराई लेती॥

अधिवेशन में प्रभापुञ्ज थे, जन जन में उत्साह नया था।
ज्वाला में जल डाल रहे थे, आज यज्ञ में स्वाह नया था॥
स्वतन्त्रता के शान्त समर में- अद्भुत दीपशिखा जलती थी।
स्नेह न घटता था दीपक का, बत्ती तनिक नहीं गलती थी॥

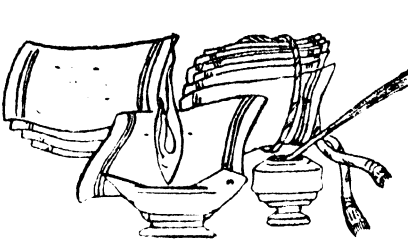












एकविंश सर्ग



ले पतवार उठा जननायक-
नाव चले उस पार लगाने।
त्याग चले अनुराग चले-
तट पार चले मँझधार लगाने॥

शूल चुने पथ के पल में,
मग में हरि ने हर फूल खिलाये।
दीप जले, शशि-ज्योति खिली अलि!
चीर घटा, जय से रवि आये॥

स्वर्ग शान्ति एवं वसन्त से- जननायक "सेगाँव" जा रहे।
मानो डगमग डगमग डगमग- ग्रामों के भगवान आ रहे॥
साथ साथ चलतीं 'बा माता', मानो मृदु तरुओं की छाया।
जिधर पाँव बढ़ते बापू के- उधर प्यार पलकों का पाया॥

ग्रामों की धरती में धन है, ग्रामों में ईश्वर के दर्शन।
कहीं नाचते मोर मनोहर, कहीं मेघ माला के नर्त्तन॥
बासन्ती फूलों के अन्दर, श्यामल सरसों कहीं खड़ी है।
रिझा रही बदली कृषियों को, रिमझिम रिमझिम झरी झड़ी है॥

हरे भरे भावुक खेतों में- गाता हुआ किसान राम है।
शाम हो गई कृषक जा रहा, या जीवन की यही शाम है॥
चरण किसानों के धोने को, प्यास लिये पावस आता है।
इसका बहता हुआ पसीना- दुनिया का धन बन जाता है॥





देखो इसके कच्चे घर में- दही बिलोती वह सुकुमारी।
चिपटी हुई पड़ी छाती से- उसकी कोमल बिटिया प्यारी॥
इन झोपड़ियों से जाता है- शहरों के महलों में मक्खन।
चार आँसुओं पर अंकित है- इन ग्रामीणों का तन नन मन॥

चलो! ग्राम की ओर चलें हम, ग्रामों के भगवान बुलाते।
इसी बाट में पतझड़ आता, हरे हरे पत्ते झड़ जाते॥
पतझड़ में बसन्त सा बापू, प्रिय ग्रामों की ओर जा रहा।
'बा' पीछे पग-ध्वनि सी चलती, यति गति ले मधुमास आ रहा॥

चरण चूम कृषि हरी हो गई, कृषकों ने कल्पना प्राप्त की।
शिशु को मिला अमृत का झरना, उजियाली आ गई रात की॥
गा गा गीत ग्राम बालायें- मनमोहन पर अर्घ्य चढ़ातीं।
ग्रामों की मातायें रो रो- "बा माता" को बात सुनातीं॥

एक किसान छाय का लोटा, और नमक की रोटी लाया।
लोनी लाई गैया ग्वालन, मूली लेकर 'बुधवा' आया॥
बैठ गये वे पुण्य पगों में, बोले, बापू! रोटी पाओ।
लोनी घी में ग्रास लगाकर- बुढ़िया बोली, बेटा! खाओ॥

आँसू छलक पड़े बापू के, ग्रामीणों का प्रेम देखकर।
प्रेम बरसने लगा दृगों से, 'बा माता' के पुण्य पुंज पर॥
प्रेम-सिन्धु के अमृत पान में- भूल गये वे रोटी खाना।
शिशु से मचल उठे जननायक, हाथ मधुर मक्खन में साना॥

फिर किसान ने खाट बिछाई, बापू देवलोक में सोया।
उषा आरती लेकर आई, धरती ने शिशु का मुँह धोया॥
"सेवाग्राम" नाम का बालक, जग ने वहाँ खेलता पाया।
भारत माता ने गोदी में- बड़े चाव से उसे उठाया॥

शुभ "सेगाँव" पूर्व पुण्यों से- बापू का चरणामृत पाकर-
आश्रम "सेवाग्राम" बन गया, जीवन दिया सन्त ने जाकर॥
"सेवाग्राम" जहाँ बापू ने- शूल खोद कर, फूल खिलाये।
अन्धकार में उस दीपक ने- दीपक गा गा दीप जलाये॥







ज
न
ना
य
क



राजनीति के इन्द्रजाल में– कभी मंच पर थे संन्यासी।
कभी ग्राम-सेवा में दौड़े– जनसेवक सेवा-अभ्यासी॥
मेरे जननायक का मानस– जन जन के मन में व्यापक था।
भारत का भावुक संन्यासी– सारे जग का संचालक था॥

राजनीति के तार उन्हीं के– तार तार से जुड़े हुए थे।
डोर हाथ में थी बापू के, चंग गगन में उड़े हुए थे॥
रवि की ज्योति तेज फैलाती– सारी दुनिया में फिरती है।
'सेवाग्राम' सन्त का आश्रम, छाया जन जन में थिरती है॥

सुनते आये हैं गुरुओं से– चर्चा ऋषियों के आश्रम की।
जननायक ने इस कलियुग में– चर्चा सत्य करी उस क्रम की॥
सेवा आश्रम में सब सेवक– जन जन की सेवा में रत हैं।
राम नाम की माला जपते, ईश्वर के चरणों में नत हैं॥

राजनीति तज, वहीं कुछ दिनों-आत्म-शान्ति हित रहे राष्ट्र-धन।
बजा बाँसुरी घेरे रहते– जन जन को जीवन मन मोहन॥
बापू सूक्ष्म और विस्तृत हैं, सीमा उन से बढ़ी न आगे।
सूर्य चन्द्रमा से प्रहरी वे– पहरे पर "लक्ष्मण" से जागे॥

उनमें 'राम' 'कृष्ण' हैं, उनमें– 'हरिश्चन्द्र' 'बुध' 'ईसा' उनमें।
जिसमें भला बुरा सब देखें– ऐसा निर्मल शीशा उनमें॥
जीवन का पथ बतलाने को– तीन बन्दरों को गुरु माना।
'बुरा न कहते' 'बुरा न सुनते', 'बुरा न देखा' सच पहिचाना॥

बापू सरस्वती-मन्दिर में– बन कर आये एक पुजारी।
हिन्दी 'तीर्थ प्रयाग'-पुष्प ने– गाँधी की आरती उतारी॥
सम्मेलन 'इन्दौर' हुआ जब– गाँधी जी प्रधान पद पर थे।
जय जय जय हिन्दी सम्मेलन, आसन पर बापू दुखहर थे॥

हिन्दी राष्ट्र राज भाषा हो– जननायक ने यह अपील की।
कभी कहीं भी हार न होगी– हिन्दी भाषा के वकील की॥
सम्मेलन के श्रेष्ठ मंच पर– बापू फूलों में प्रकाश थे।
कवियों की दीपित माला में– हंसों के हो रहे हास थे॥



सूरज की स्वर्णिम किरणों से- हिन्दी के कवि-कमल खिले थे।
गाँधी जी के गुरु गौरव से- हंस हृदय से गले मिले थे॥
बापू ने प्रत्येक क्षेत्र में- जग को नयी ज्योति दिखलाई।
जन जन के काँटे निकाल कर- फूलों की माला पहिनाई॥

गोरों ने "सम्राट जार्ज" की- रजत जयन्ती करनी चाही।
स्वतन्त्रता की स्वर्ण जयन्ती- चाह रहे थे बापू राही॥
शासन शोषण पर आश्रित था, हद हो गई चरम सीमा की।
प्राण पखेरू के उड़ने पर- अन्तिम तिथि आई बीमा की॥

रक्त-स्नान सभ्यता कर रही, राज्य-जयन्ती किसको भाती?
जहाँ प्लेग के कीड़े फैले- वहाँ ढोलकी नहीं सुहाती॥
युग युग जिये 'जार्ज पंचम' चिर, पर न रहे सम्राट हमारा।
ऊँचा उड़ता रहे राह में- झण्डा त्रिगुण तिरंगा प्यारा॥

बादशाह की रजत जयन्ती, हम परतन्त्र मनायें कैसे?
दाने तक को तरस रहे जो- घी के दीप जलायें कैसे?
यह वह समय भयानक था जब- भारत में भारी हलचल थी।
"जिन्ना" 'मुस्लिम लीग'-डीग की- रंग बिरंगी चहल पहल थी॥

"मिस्टर जिन्ना" खड़े हो गये- अपनी तूती अलग बजाने।
नौ सौ चूहे खा कर बिल्ली- लोमड़ियों को चली खिजाने॥
लेकिन गाँधी जी सतर्क थे, चोरों को पहिचान रहे थे।
अपनी कुटिया से दुनिया की- सारी गति विधि जान रहे थे॥

सावधान थी उनकी सेना, पहरे पर थे 'वीर जवाहर'।
और 'सुभाष' शक्तिशाली थे, आशायें उमड़ीं "पटेल" पर॥
'राजा जी' "आज़ाद" आदि ने- पथ निर्माण किया आगे का।
गाँधी जी ने चक्र बनाया- खादी के निर्मल धागे का॥

प्रतिपल यही यत्न करते थे- नौका कैसे लगे किनारे।
कुछ दिन बाद 'जार्ज पंचम' भी- इस दुनिया से स्वर्ग सिधारे॥
कोई नहीं मौत से बचता, खाली हाथ चला जाता है।
जो न सताता यहाँ किसी को- वह पुण्यों का फल पाता है॥







यहाँ भलाई और बुराई– शेष रहा करती मरने पर।
चार दिनों की यहाँ चाँदिनी, ओ पथ भूले ! ईश्वर से डर ॥
उनके बाद ब्रिटिश गद्दी का– "एडवर्ड अष्टम" अधिकारी।
प्रेम "शिम्पसन" से था उसको, मानो वह मन की फुलवारी ॥

किन्तु प्रेम के पथ में पत्थर– टकराने आया करते हैं।
मिले मनों के शिशु फूलों पर– छुरियाँ चलवाया करते हैं ॥
लेकिन "एडवर्ड अष्टम" का– प्यार राज्य भी छीन न पाया।
धन्य धन्य वह प्रेम-पथिक है– जिसने अपना प्रेम निभाया ॥

मन के काले पाषाणों ने– सिंहासन से उसे उतारा।
छोड़ दिया सिंहासन उसने, पर न प्रेम की बाज़ी हारा ॥
जिसने चखा प्रेम-रस उसको– कोई स्वाद नहीं भाता है।
सत्य प्रेम का अमर पुजारी– जग की दौलत ठुकराता है ॥

तपा तपा देखी ज्वाला में– चन्दा की चाँदी चोरों ने।
उसके बाद 'जार्ज षष्टम' के– सर पर ताज धरा गोरों ने ॥
शाही मन्त्री सजे 'बाल्डविन', भारत में थे "लार्ड विलिँगडन"।
प्रतिपल ब्रिटिश राज्य ढलता था, लगभग साठी में था यौवन ॥

जग को चैन नहीं कैसे भी, दुनिया किसको नहीं रुलाती ?
जग में ऐसा कौन हुआ है– पीड़ा जिसको नहीं सताती ??
सुख से दुःख, दुःख से सुख है, अनुभव की पहिचान परख है।
पीड़ा ही पहिचान राम की, कवियों का उद्यान परख है ॥

इस भंगुर दुनिया में प्रतिपल, पावस-प्यास पिँघल ढलती है।
दीपित दीपशिखा को देखो, स्नेह भरी रिस रिस जलती है ॥
दीपशिखा यह कौन विचारी, जलती है आँखों के जल में।
यह 'कमला' वर्तिका जल रही, ज्योति-जवाहर भूमगडल में ॥

वीर "जवाहर लाल नेहरू"– जिनकी निर्मल पत्नी "कमला"।
देशभक्ति की गौरव गीता– "सीता" "सावित्री" सी अमला ॥
जिसने अपने प्यारे पति को– स्वतन्त्रता के लिये सजाया।
रुग्ण तड़पती रही विचारी, किन्तु न उनको रोक बिठाया ॥



करुण कल्पना सी कोमल ध्वनि, करवट पर श्वासें चलती हैं।
धीरे धीरे गर्वित गति से- प्राणों की किरणें ढलती हैं॥
दीपशिखा का दीवाना वह- शलभ-'जवाहरलाल' आ गया।
टिम टिम करती उस बत्ती के- चारों ओर प्रकाश छा गया॥

दीपशिखा बोली मुस्का कर, शलभ! न मेरी लौ पर आओ!
दीपशिखाओं के प्रकाश में- अपना प्रिय-प्रकाश बरसाओ!!
जिस दीपक ने स्नेह दिया है, बत्ती कैसे उसे जलाये?
पाकर स्नेह जलो दुनिया में, दीपशिखा जल तिमिर मिटाये॥

शलभ! न मेरी ओर बढ़ो तुम, देश-दीप के बनो दिवाने।
मैं प्रिय के प्रकाश में मिलती, प्राणों के प्रियतम परवाने!
स्वामी! मेरी क़सम तुम्हें है, मुझे याद करके मत रोना।
मैं स्वतन्त्रता बन आऊँगी, तुम स्वतन्त्र आँगन में सोना॥

भंगुर नाता टूट रहा है, टूटा नहीं अभंगुर नाता।
सर पर राष्ट्रपिता बापू हैं, गोदी देगी भारत माता॥
मन में मान अभाव कभी भी, चुपके चुपके कभी न रोना।
मेरे मन में बसा रहेगा- रूप स्वरूप सुमन-मृग-छोना॥

लपका लौ की ओर शलभ वह, दीपशिखा बुझ गई उसी पल।
जल बन बरस पड़ी वह बदली, प्राण पुष्प के दीपक पर जल॥
दीपशिखा की यही कहानी, हँसते हँसते जल जाती है।
शलभ नहीं जलता दीपक पर, मन में सुला शिखा गाती है॥

अन्त प्राण प्रियतम में भर कर- सती 'राम' के धाम सिधारी।
पल में देव-लोक में पहुँची- सुर-सरिता सी वह सुकुमारी॥
यह वह शोक सूचना जिससे- भारत भर के दृग भर आये।
याद रह गई शेष सदा को, प्राण 'जवाहर लाल' रुलाये॥

उनका मन रोता है अब तक, पर दृढ़ हैं कर्त्तव्य मार्ग पर।
जग से जाना ही पड़ता है- हर प्राणी को हाथ झाड़ कर॥
वज्रघात यह हुआ राष्ट्र पर, 'पण्डित जी' का मानस रोया।
स्मृति बाक़ी रह गई हृदय में, मन-मन्दिर का दीपक खोया॥









जननायक



सुन्न शून्य में खड़ा 'जवाहर', मानो मूक खड़ी थी भाषा।
चुप चुप रोते ही रहते हैं, क्या है मेघों की अभिलाषा?
मूक रुदन कैसा होता है, बादल यही बताने आते।
प्यासा पारावार यही है, शयन जहाँ कमला-पति पाते॥

भावों में बह चले 'जवाहर', पथ रोका भंगुर अभाव ने।
मोह मृत्यु का भय बन जाता, कहा उन्हों से बुद्ध-भाव ने॥
भावों से कर्त्तव्य बड़ा है, राही! चल कर्त्तव्य-मार्ग पर।
बढ़ता चल वह लक्ष्य सामने, प्राणी! पथ में रो न बैठ कर॥

जलता हुआ सूर्य कहता है, चल कर्त्तव्य-मार्ग पर राही!
ढलती हुई रात कहती है, सूरज बन कर दिन कर राही!
छोड़ भावना की दुनिया को, पथिक चला कर्त्तव्य मार्ग पर।
राष्ट्र मुकुट पर छाया तानी, कवियों की करुणा ने झुक कर॥

नाता तो आत्मा से होता, नश्वर तन से नाता ही क्या?
यही खोजता हूँ मैं रह रह– इस दुनिया से जाता ही क्या??
काम क्रोध मद मोह न उसको– गाँधी जी का जिसे सहारा।
धन्य भाग्य भारत माता के, पाया पूर्ण राम का प्यारा॥

पुत्र 'जवाहर' हैं 'मोती' के, लेकिन धर्मपिता जननायक।
गाँधी जी के हृदय जवाहर, ईश्वर जिनके परम सहायक॥
काँगरेस में इधर उधर से– तूफ़ानी बादल मँडराते।
पर सब काले पीले बादल– गाँधी-वाणी से फट जाते॥

अपने कन्धों पर गाड़ी ले– ध्वजा उड़ाते चले "जवाहर"।
जय जय जय कहते चलते थे– भारत माता के नर नाहर॥
बड़ी बड़ी चट्टान पार कर– मंज़िल पर मंज़िल तय करते।
बड़े बड़े अंग्रेज़ हार कर– उन के आगे पानी भरते॥

सागर में से तैर निकलते, शैल पार कर समतल पाते।
पानी की लहरों पर चलते, पानी पर पत्थर तैराते॥
भारत निर्णय-संकट में था, नयी नयी हलचलें मचलतीं।
ले तूफ़ान समाजवाद में, चिनगारियाँ देश में जलतीं॥







लेकिन गाँधी जी कहते थे– पहिले स्वतन्त्रता तो ले लो !
जो नौका मँझधार पड़ी है– पहिले उसको तट तक खे लो !!
जो बापू के अन्तर में था– वही 'जवाहर' की वाणी पर।
वही 'पटेल' गर्ज कर कहते, नेताओं का बना वही स्वर ॥

नौका पर तूफ़ान भयानक– आते और चले जाते थे।
प्रलयंकर उलटी लहरों में– नाविक नौका तैराते थे ॥
धीरे धीरे नाव तैरती– काँगरेस आ गई "फ़ैजपुर"।
देहाती मीठी बोली में– गूंज रहा था ग्रामों का सुर ॥

योरोपीय युद्ध के बादल– उसी समय जग में मँडराये।
हिंसा के हत्यारे पशु ने– अपने खूनी दाँत दिखाये ॥
किया वहाँ प्रस्ताव पास यह– धन जन के शोषण को रोको !
हिंसा की जलती भट्टी में– अपना तन मन धन मत झोंको !!

आपस में मित्रता बढ़ाओ, काया पलटो इस विधान की।
निर्वाचन की नीति विचारी, रेखा खींची स्वाभिमान की ॥
बाद 'फ़ैज़पुर अधिवेशन' के– निर्वाचन की वेला आई।
निर्वाचन में काँगरेस की– जय जय जय जग में लहराई ॥

ब्रिटिश राज्य भारत-जनता में– नाता शोषक शोषित का था।
उससे सन्धि सरल हो कैसे– जो कि पिपासा शोणित का था ॥
शोषक के विधान से शोषित– शासित पद पर अब क्या करते ?
क्या अपने अपनों के हाथों– उन के क़ानूनों से मरते ??

राजनीति में बुद्धिवाद से– चौपड़ की गोटें चलती हैं।
यह वह जल है जिसके अन्दर– लाल मशालें भी जलती हैं ॥
पकड़ समय की गति पलकों से, समय बदलना राजनीति है।
नीति वही जिसमें नैतिकता, मानव की यह राम-रीति है ॥

उलझी हुईं समस्यायें ये– गाँधीजी के आगे आईं।
गाँधी ने कच्चे धागों की– गाँठें पलकों से सुलझाईं ॥
कहा, मन्त्रिमण्डल में जाओ, अवसर देख निमन्त्रण मानो।
मार्ग सन्धि का बन्द मत करो, अच्छा बुरा समय पहिचानो ॥









अंग्रेज़ी विधान पर उसका- अर्थ करो अनुकूल पड़े जो।
उसकी लाठी उसका सर हो, बुद्धि वही इस तरह लड़े जो॥
बने मन्त्रिमण्डल प्रान्तों में- फल स्वरूप ही काँगरेस के।
प्रान्तों में मन्त्रीपद पर थे- नीति-निपुण भारत प्रदेश के॥



युक्त प्रान्त, बम्बई, उड़ीसा, सीमा, मध्य, बिहार प्रान्त में।
काँगरेस मन्त्रीमण्डल थे- श्यामल मधु 'मद्रास' शान्त में॥
किये पद ग्रहण काँगरेस ने, यह भी था रण स्वतन्त्रता का।
पराधीनता की ज़ंजीरें- टूँढ रहीं क्षण स्वतन्त्रता का॥

जब तक पूर्ण स्वराज्य न पायें- तब तक शान्ति नहीं मिल सकती।
दीप जलाये बिना गगन में- शशि की ज्योति नहीं खिल सकती॥
स्वतन्त्रता के अमर पुजारी- जेलों में बेड़ियाँ बजाते।
काले पानी 'अण्डमान' में- भारत माँ का मुकुट सजाते॥

बन्दीगृह की दीवारों में- नौजवान करते थे अनशन।
मानो बन्दीगृह मन्दिर था, व्रत कर चढ़ा रहे थे चन्दन॥
साम्यवाद की लहरें आईं- भारत देश बनाने शंकित।
लाल रंग का झण्डा, जिसमें- हँसिया और हथौड़ा अंकित॥

वह झण्डा ले ग्राम ग्राम में- साम्यवादियों ने बहकाया।
पूज्य महात्मा जी का जीवन- भूलों को सत पथ पर लाया॥
बापू का व्यक्तित्व महा था, जिसकी सब पूजा करते थे।
सत की सब पूजा करते हैं, गाँधी ईश्वर से डरते थे॥

रंग बिरंगे इन खेलों में- काँगरेस "हरिपुरा" आगई।
इक्यावनवें अधिवेशन की- "बिट्ठलनगर" सुगन्ध छागई॥
अधिवेशन 'हरिपुरा' दीप्त था, श्री "सुभाष" अध्यक्ष वहाँ थे।
आसन पर आगये राष्ट्रपति- इन्द्रासन से मंच जहाँ थे॥

मेरे सेनानी 'सुभाष' ने- दिया मंच से शाश्वत भाषण।
करतल ध्वनि, जय जय जय जय से- गूंज रहा था सारा प्रांगण॥
'अराष्ट्रीय' वह 'संघ योजना'- त्याग, देश में प्रजातन्त्र हो।
शान्तिपूर्ण वह उचित रीति से- असहयोग का महामन्त्र हो॥





चेतावनी ब्रिटिश सत्ता को– खुले मंच से दी "सुभाष" ने।
भ्रम को भूलो, दिन को देखो! पथ दिखलाया उस प्रकाश ने॥
साँप साम्प्रदायिक के विष को– वह शिव बोला, पी जाऊँगा।
हिन्दू मुसलमान की गुत्थी– जैसे तैसे सुलझाऊँगा॥

उधर मुसलमानों में "जिन्ना"– बीन अलग ही बजा रहे थे।
घर के टुकड़े करने को वे– "लीगी" सेना सजा रहे थे॥
हिन्दुस्तान कटे आरे से, कट कर दो टुकड़े हो जायें।
'पाकिस्तान' मुसलमानों का– निश्चय यहाँ बना दिखलायें॥

मधुर एकता की छाती पर– 'जिन्ना' ने आरी चलवादी।
भारत माता के अन्तर में– उसने खुटल छुरी चलादी॥
इधर राजनैतिक बन्दी, जो– मूंज कूटते, बान बट रहे–
'अण्डमान' में पड़े हुए जो– स्वतन्त्रता का पाठ रट रहे–

काँगरेस मन्त्रीमण्डल ने– करी घोषणा उन्हें छोड़ दो!
हाथों की हथकड़ियाँ तोड़ो, पैरों की बेड़ियाँ तोड़ दो!!
इसी प्रश्न पर गवर्नरों की– बिगड़ गई मन्त्रीमण्डल से।
राज्य चलाते थे गोरेगण– हम को दास बना कर छल से॥

अधिवेशन 'हरिपुरा' हुआ जब– चारों ओर घिरे थे बादल।
काँगरेस के क़दम क़दम पर– कोसों तक थी गहरी दलदल॥
प्रश्न रियासत के उलझे थे, सम्प्रदाय-डायन छाई थी।
भारत माता की छाती पर– काली साँपन लहराई थी॥

वीर 'जवाहरलाल' निपुण की– माँ "स्वरूप रानी" कल्याणी–
शेर छोड़ कर स्वर्ग सिधारी– 'मोती' के मन की इन्द्राणी॥
गाँधी की गोदी में सुत दे– पहुँची पति के पास पूर्णिमा।
अमर ज्योति में लीन हो गई– देकर पूरा प्रकाश पूर्णिमा॥

'मोती' के मन की प्रतिमा हित– द्वार खुला था स्वर्ग लोक का।
उस देवी को श्रद्धांजलि दे, पास हुआ प्रस्ताव शोक का॥
पास हुए प्रस्ताव बहुत से, 'चर्खा संघ' कर दिया स्थापित।
रचनात्मक आन्दोलन के हित– किये वहाँ प्रस्ताव प्रसारित॥







फिर अन्तर्राष्ट्रीय नीति पर- कर विचार निर्णय पर आये।
महायुद्ध साम्राज्यवाद में- भारत उँगली नहीं फँसाये॥
घिरीं मेघमालायें नभ में, पतझड़ फण फैलाता आया।
धरती पर छा गया अँधेरा, छायी महायुद्ध की छाया॥

गर्ज रहे थे मेघ गगन में, बावनवाँ अधिवेशन आया।
पूज्य राष्ट्रपति-पद का आसन- जहाँ बहुत गहरा रँग लाया॥
आशा थी. इस आसन पर अब- 'मौलाना आज़ाद' बसेंगे।
पर 'आज़ाद' हो गये वापिस, हार गये तो लोग हँसेंगे॥

क्योंकि सामने सिंह खड़ा था- सेनानी "सुभाष" सर्वोदय।
भारत माता के मन्दिर में- गूँज रही थी जिसकी जय जय॥
फिर उस पद के लिये सामने- नीति निपुण "पट्टाभि" पधारे।
लेकिन सेनानी 'सुभाष' से- लड़ 'सीतारामैया' हारे॥

पुनः राष्ट्रपति के आसन पर- जीत हुई मेरे "सुभाष" की।
महायती की जय जय गूँजी, हवा चली जग में सुवास की॥
"त्रिपुरी अधिवेशन" आसन पर- काँगरेस-अध्यक्ष पधारे।
बापू बोले, मैं हारा हूँ, निर्वाचन 'पट्टाभि' न हारे॥

हार नहीं 'पट्टाभि' निपुण की, यह मेरी ही हार हुई है।
क्या कहते हो बापू तुम यह- नाव आज मँझधार हुई है?
किन्तु कहा जो कुछ बापू ने- कहा बाद में निर्वाचन के।
औषधि व्यर्थ हुआ करती है- संयम-प्रकृति बाद पाचन के॥

मत देना 'पट्टाभि' निपुण को- जो जननायक पहिले कहते-
तो "पट्टाभि" विजय-घोड़े पर- निश्चय सबसे आगे रहते॥
पर बापू तो कभी कहीं भी- तिल भर पक्ष नहीं लेते थे।
जो भी होता सत्य, उसी हित- निर्भय अपना मत देते थे॥

पकड़ राष्ट्र की नब्ज़ बताते- कौन वैद्य उपयोगी होगा।
जहाँ न जननायक की मानी- वहीं गिरे, गिर कर दुख भोगा॥
नेता बना दिये बापू ने- अपना वरद हाथ धर धर कर।
आओ हम सब फूल चढ़ायें- श्रद्धा से नर नारायण पर॥



"त्रिपुरी काँगरेस अधिवेशन"– गोदी में था प्रिया प्रकृति की।
"विष्णुदत्त" प्रिय नगर बनाया, ज्योति जल रही थी जागृति की॥
पर 'सुभाष' को ज्वर ने घेरा, चढ़ा चार नम्बर बुख़ार था।
आत्मिक बल था किन्तु देह पर– रोग-शत्रु का बल-प्रहार था॥

चार पाँच नम्बर बुख़ार था, किन्तु राष्ट्रपति गये मंच पर।
कोटि कोटि की आशायें थीं– प्रीति पगे इस निपुण मंच पर॥
श्रद्धांजलि उन वीरों को दी– बलिवेदी पर जिनके सर हैं।
झण्डा ऊँचा किया जिन्होंने, अमर लोक में जिनके घर हैं॥



खुले मंच से राष्ट्र-ज्योति ने– दिया बहुत छोटा सा भाषण।
लेकिन नीति वाक्य ही बोले, बोले "बोस" वहाँ जितने क्षण॥
आया यह प्रस्ताव वहाँ पर– "क्योंकि घिरा आ रहा महातम–
गाँधी जी के परामर्श से– कार्यसमिति निर्माण करें हम॥"

पर अध्यक्ष महोदय ने यह– अद्भुत निर्णय दिया नीति से।
"यह प्रस्ताव नहीं आ सकता– अधिवेशन में किसी रीति से॥"
'त्रिपुरी' के अधिवेशन में भी– स्वतन्त्रता ही अमर ध्येय था।
किन्तु कल्पना को यथार्थ का– गाँधी जी से मिला श्रेय था॥

जाने तब रोगी "सुभाष" में– इतना बल आगया कहाँ से?
अम्बुलेंस की गाड़ी में पड़– विदा हुए अध्यक्ष वहाँ से॥
पंखा झलते चले मित्र कुछ, चले वैद्य ऋषि नब्ज़ पकड़ कर।
स्वस्थ करो धन्वन्तरि! इनको, दया करो हम कोटि कोटि पर॥

किन्तु रोग से बड़ा भयानक– रोग और आगया सामने।
आपस में मतभेद हो गया, निर्मित की दो राह राम ने॥
काँगरेस में भिन्न मतों से– उलझन पर उलझनें आ गईं।
श्वेत गगन में काली पोली– घटा घिरीं, नीतियाँ छा गईं॥

त्यागपत्र दे दिया "बोस" ने, तभी राष्ट्रपति-पद को छोड़ा।
वाम पक्ष निर्माण हो गया, अपनी मंज़िल पर मुँह मोड़ा॥
पूज्य राष्ट्रपति के आसन पर– तब "राजेन्द्र प्रसाद" पधारे।
दीपक ले कर चले तिमिर में– भारत माँ के भाग्य-सितारे॥





किन्तु हवायें तरह तरह की- जलते दीप बुझाने आईं।
गाँधी जी की कुशल बुद्धि ने- बिना दाँत गाँठें सुलझाईं॥
इधर 'सुभाष' विरोधी दल ले- अपनापन लेकर चलते थे।
कितने उसे देखकर खुश थे- कितने ही उससे जलते थे॥



पर वह राही अपने पथ पर- निर्भय चलता ही रहता था।
उसमें अपनेपन का बल था, जो जी में आता, कहता था॥
भारतीय काँग्रेस-समिति ने- कुछ प्रस्ताव पास कर डाले।
इधर उधर जिनके विरोध में- बोले थे 'सुभाष-दल' वाले॥

संचालन सुभाष करते थे, चलता था नेतृत्व उन्हों का।
एक लक्ष्य, पर मार्ग पृथक् था, संयम से था स्वत्व उन्हों का॥
ब्रह्मचर्य का दिव्य तेज था- वीर प्रवर नेता "सुभाष" में।
निर्भय निपुण नीति का पण्डित- तम तज जाता है प्रकाश में॥

पर उस पर अब अनुशासन का- काँगरेस में बना वितण्डा।
दोषी वही, उठाया जिसने- अब तक काँगरेस का झण्डा॥
'सीमा प्रान्त' गये थे गाँधी, राष्ट्रमुकुट 'लंका' जाते थे।
लेकिन यह मतभेद देखकर- जीवन में उलझन पाते थे॥

कार्यसमिति ने अनुशासन से- माँगा श्री सुभाष से उत्तर।
लम्बी चिट्ठी लिख सुभाष ने- उन्हें दिखाया अपना अन्तर॥
"जो प्रस्ताव हानिकर समझे- हम उनका विरोध करते हैं।
प्रजातन्त्र यह, वैध यही है, हम न सत्य कहते डरते हैं॥

अनुशासन का अर्थ नहीं यह- व्यक्ति वैध अधिकार छोड़ दे।
हक़ न लोकतन्त्रीय उसे हो- मन को चाहे जहाँ मोड़ दे॥
गाँधी जी तो यह कहते हैं- कर सकता विद्रोह अल्पमत।
फिर विरोध पर भी बन्धन क्यों? इच्छा के विरुद्ध क्यों हों नत?"

सेनानी 'सुभाष बाबू' का- कार्यसमिति में पत्र सुनाया।
तब 'राजेन्द्र प्रसाद' राष्ट्रपति- शान्त शक्ति ने समय सुझाया॥
काँगरेस ने करी घोषणा- 'श्री सुभाष' हैं पृथक आज से।
उनका तर्क देश में रोड़ा- टक्कर लेनी हमें ताज से॥





जननायक

तीन वर्ष तक काँगरेस में– "श्री सुभाष" अब रह न सकेंगे।
हम पुल पर से पार चलेंगे, गहरे जल में बह न सकेंगे॥
सड़क सड़क चलना सीखा है, गड्ढों के पथ से न चले हम।
हम ठरढा करके खाते हैं, हम न कूद पड़ते हैं गम गम॥

काँगरेस छोड़ी 'सुभाष' ने, निर्मित किया "अग्रगामी दल"।
मंज़िल तय करता चलता था– आग और पानी पर चल चल॥
उसी लक्ष्य पर अपने पथ से– चले 'जवाहर लाल' वेग से।
'कोलम्बो' 'लंका' में गूंजा– वात-चक्र उत्ताल-वेग से॥

जननायक मनमोहन गाँधी– सब तूफ़ान समा लेते थे।
तूफ़ानों के बीच तैर कर– अपनी नाव चला देते थे॥
काँगरेस के महासिन्धु में – बापू बिन्दु सिन्धु शशि रवि थे।
वे यथार्थ कल्पना भावना– विश्व काव्य के वे ही कवि थे॥

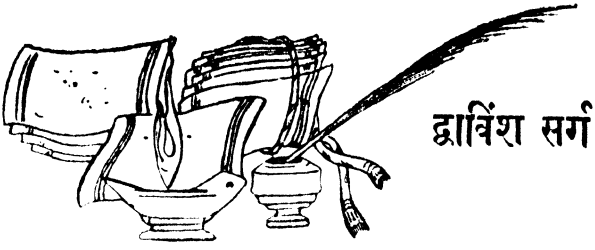












द्वाविंश सर्ग



घुमड़ घुमड़ कर घन घिरते हैं, रिम झिम रिम झिम वर्षा होती।
मानस उमड़ उमड़ आता है, झरते हैं आँखों से मोती॥
आँधी आने से पहिले नभ- लाल बादलों से छा जाते।
कभी धूप निकला करती है, कभी गगन में घन मँडराते॥

जननायक की चरण धूलि का- कविता चली चढ़ाने चन्दन।
अति की अग्नि जली जब जब भी, शुरू किया बापू ने अनशन॥
'राजकोट' की जनता पर अति- हिला गई बापू का मानस।
बारहवाँ उपवास उन्हों का- 'राजकोट' में लाया पावस॥

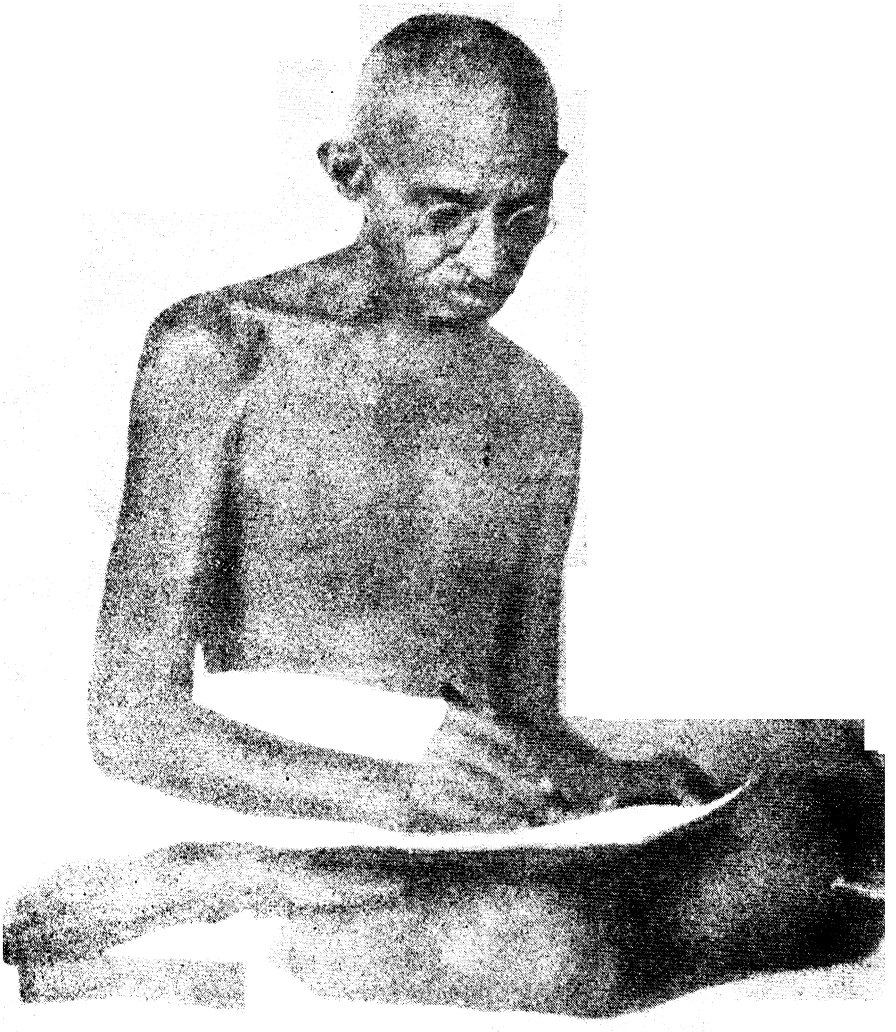
चार रोज़ में धरती काँपी, सत्ता ने जल्लादी छोड़ी।
वायसराय हिले आसन से, राजकोट की रस्सी मोड़ी॥
बोला, बापू! अनशन छोड़ो, राजकोट की पलटी काया।
गन्ध त्याग हिंसा की बापू- भूल सुधार मार्ग पर लाया॥

अभी आमरण अनशन से जय- पा जननायक मुक्त हुए थे।
जितने रवि उतने व्रत करके- जन जन में संयुक्त हुए थे॥
पश्चिम की छाती पर रण के- लाल लाल घन प्रलयंकर थे।
"नेविल चेम्बरलेन नेशनल"- ब्रिटिश राष्ट्र-मन्त्री पद पर थे॥

वायसराय कूट 'लिनलिथगो'- भारत पर करते थे शासन।
किन्तु किसी को प्राप्त नहीं था- गाँधी जैसा ऊँचा आसन॥
जग में ज्वालायें सुलगी थीं- लपटें लपक रहीं थीं लप लप।
महायुद्ध के महानाश में- बड़े बड़े साम्राज्य गये खप॥









जननायक

महायुद्ध की याद हमें है, हम न महाभारत को भूले।
भौतिक बल में शक्ति नहीं वह- जो अनन्त जय की रज छूले॥
नैतिक बल में ही वह बल है- जो जय जय के शंख बजाता।
उधर शस्त्र बल, इधर कौन यह- गीता का सन्देश सुनाता॥

कृष्ण-काव्य का नैतिक बल पा- 'अर्जुन' जीते कौरव-दल से।
अब निज जन को चले जिताने- जननायक निज नैतिक बल से॥
जो सच्चाई पर दृढ़तर है- उसके सदा सहायक ईश्वर।
जो हक़ डसने चला अन्य का- ईश्वर का है कोप उसी पर॥

मद में मतवाला हो 'जर्मन'- विश्व-विजय के लिये बढ़ चला।
'नाज़ीवाद' उठा मुँह फाड़े, दबा दबाया फूस फिर जला॥
यह वैज्ञानिक महाकाल था- जिस में नाशक अस्त्र शस्त्र थे।
मानव दानव बन कर निकला, ऊपर से गेरुवे वस्त्र थे॥

भूत चढ़ गया 'हिटलर' के सर, नशा चढ़ा, चिंघाड़ उठा वह।
'नाज़ी दल' उस पर सवार था, सोता सिंह दहाड़ उठा वह॥
मानो "रावण" ने कलियुग में- एक बार फिर ली अँगड़ाई।
नीलों के भट में घुस घुस कर- साँपों ने ली मोल लड़ाई॥

जर्मन ने "पौलैंड" देश पर- बर्बरता से बम बरसाये।
शिशु से सुन्दर स्वर्ण शहर पर- छाते वाले दानव छाये॥
श्री गणेश हो गया युद्ध का- कई कई टन के बम बरसे।
धरती काँप काँप जाती थी- भीषण बम-वर्षा के डर से॥

विध्वंसक तोपों की ज्वाला- इन्द्रपुरी से नगर जलाती।
नये नये हथियार चला कर- कौन डंकिनी आग लगाती॥
बड़ों बड़ों ने खोल खोल मुँह- जनता में झूठा भ्रम डाला।
जल थल नभ में लपक रही थी- पश्चिम की हत्यारी ज्वाला॥

लेकिन पराधीन भारत तब- तूती था नगाड़ख़ाने में।
मणिधर बन्द पिटारी में थे, रोदन था उनके गाने में॥
किन्तु सूक्ष्म जग में व्यापक है, नहीं देखतीं मोटी आँखें।
कहो कभी क्या उड़ सकता है- हाथी बाँध हंस की पाँखें?







जननायक



डूब रहा हो जो तैराकी- तिनके का है उसे सहारा।
जयति जनार्दन का नैतिक बल, कौरव का भारी दल हारा॥
बोला वायसराय तिमिर में, गाँधी जी की ज्योति दिखाओ!
अन्धकार घिरता आता है, लाओ गाँधी जी को लाओ!

वायसराय भवन में बापू- गये कि जीत ब्रिटिश की आई।
वायसराय उठा कुर्सी से, कुर्सी उनके लिये बिछाई॥
बोला, बापू! देख रहे हो, काले घन घिरते आते हैं।
आज आग की इन लपटों में- हाथ मदद का फैलाते हैं॥

बोले बापू, पराधीन हम, कहो, आपकी मदद करें क्या?
ब्रिटिश राज्य के मुँह में हैं हम, अंग्रेज़ों के दुःख हरें क्या?
और बिना पूछे ही हम से, हम को आप घसीट चुके हैं।
हिन्दुस्तान युद्ध में शामिल, आप ढिँढोरा पीट चुके हैं॥

क्या आधार ढिँढोरे का है, कब पूछा था काँगरेस से?
भीख माँगने आये हो तुम- भूखे नंगे दुखी देश से॥
पर मेरा भी हृदय दुखी है, महायुद्ध की इस गर्जन से।
कितने आँसू पिये हुए हूँ, शासक! पूछो मेरे मन से॥

महायुद्ध यह! महानाश यह! हृदय कल्पना से फटता है।
दिन में स्वप्न देखता हूँ मैं- पश्चिम लाशों से पटता है॥
"सेंटपाल के गिर्जेघर" को- क्या ये लपटें राख करेंगी?
"वेस्ट मिंसटर ऐबे" जैसी- दर्शनीय तस्वीर जलेंगी?

इन सब की कल्पना मात्र से- मैं तो काँप काँप रह जाता।
उसको कौन मनुष्य कहेगा- जो ये अंगारे दहकाता?
इसी लिये केवल मैं प्रस्तुत- देने को अपना नैतिक बल।
मैं तो सत्य अहिंसावादी, मुझे नहीं आता कोई छल॥

यह कह कर लौटे गाँधी जी, अपना यह वक्तव्य निकाला-
खाली हाथों लौटा हूँ मैं, लेकर राम नाम की माला॥
क्योंकि अगर समझौता होता- तो वह होता काँगरेस से।
देश बड़ा है, मैं न बड़ा हूँ- अपने भारतवर्ष देश से॥







पर उनके विनाश के डर से– उनके साथ सहानुभूति है।
आग लगी 'इँगलैण्ड' 'फ्रांस' में, धू धू धू जलती प्रसूति है॥
विध्वंसक हत्यारी हिंसा – दाँत निकाल खून पीती है।
पर मुझ से ईश्वर कहता है– अन्त अहिंसा ही जीती है॥

ईश्वर और अहिंसा में से– नहीं एक भी शक्तिहीन है।
जो औरों को नहीं सताता– सुख-सागर में वही लीन है॥
'आग लगाओ! लूटो मारो!' यह विज्ञान विकास नहीं है।
जो औरों के दीप बुझादे– उसका नाम प्रकाश नहीं है॥

जननायक ने ज्योति निमज्जित– सुन्दर पत्र लिखा "हिटलर" को।
धन्वन्तरि ने औषधि दी थी– मानो नौ नम्बर के ज्वर को॥
चुन चुन शब्द लिखे हिटलर को, लिखा, कि मानवता न मिटाओ!
रोको महानाश यह रोको! यह विनाश की आग बुझाओ!!

पृथ्वी पर से महायुद्ध यह– केवल आप रोक सकते हैं।
क्या मानवता की छाती में– छुरियाँ आप भोंक सकते हैं?
क्या बर्बरता की सीमा को– मानवता अब लाँघ चलेगी?
जिससे जग मरघट बन जाये– क्या अब ऐसी आग जलेगी??

तुमसे मानवता कहती है– अपना हिंसक ध्येय छोड़ दो!
जीतो विश्व प्रेम के बल से, बर्बरता की टाँग तोड़ दो!!
आशा है मेरी वाणी को– अपने हित से पहिचानोगे!
जीत इसी में है जर्मन की, आशा है मेरी मानोगे!!

किसकी हार, कौन जीतेगा, इसका पता आज किसको है?
ईश्वर में विश्वास जिसे है, ईश्वर का सम्बल जिसको है॥
'राम' बहुत समझा कर हारे, पर 'रावण' ने एक न मानी।
शास्त्र-विज्ञ पण्डित 'रावण' की– उल्टी मति से मिटी निशानी॥

ऐसी चढ़ी हुई थी उसको– कहता था निर्माण नाश को।
जान नहीं मुर्दे में आती, चाहे डालो चीर लाश को॥
बजती थी शंका की घण्टी, दहके महायुद्ध के शोले।
महाभयंकर इन लपटों में– काँगरेस के नेता बोले॥







वर्ष डेढ़ सौ बीत चुके हैं- भारत लोकतन्त्र से वंचित।
दे दुहाइयाँ लोकतन्त्र की- आज कर रहे सेना संचित॥
नाज़ीवाद नाश का शोला, हत्यारे साम्राज्यवाद हैं।
लोकतन्त्र हित फाँसी झूले- वे दिन भूले नहीं, याद हैं॥



अभी हमारे घाव हरे हैं, अभी न दाग़ मिटे कोड़ों के।
अभी निशान बहुत बाक़ी हैं- बच्चों पर दौड़े घोड़ों के॥
ये जो सरकारें प्रान्तों में, चलें तुम्हारे ही इंगित पर?
अपने ही हाथों से काटें- हम निज देशवासियों के सर??

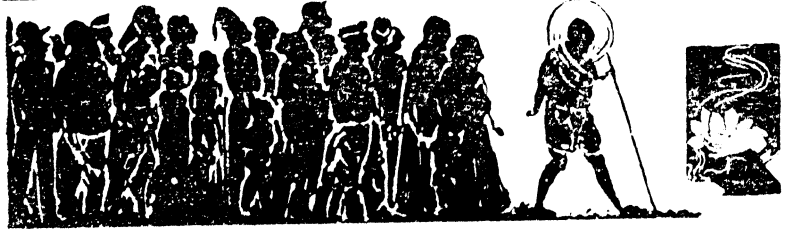
वचन भविष्यत् के भरते हो, लेकिन सब होते हैं झूठे।
तुम गोरे मन के काले हो, आज मन गये, कल फिर रूठे॥
पिछले महायुद्ध से हमको- अंग्रेज़ों से आश नहीं है।
कार्य रूप में परिणत कर दो, वचनों पर विश्वास नहीं है॥

जब तक मन में पाप रहेगा- तब तक आशा व्यर्थ देश से।
बुरा तुम्हारा नहीं चाहते, आशा रक्खो काँगरेस से॥
यदि भारत की भोली जनता- तुम लालच से बहकाओगे-
तन लूटोगे, धन लूटोगे- लेकिन हृदय नहीं पाओगे॥

काँगरेस की कार्य समिति ने- निर्मित अपनी "युद्ध समिति" की।
जिसके थे अध्यक्ष 'जवाहर', जिसने धूर्त नीति की इति की॥
'मौलाना आज़ाद' समिति में, और 'पटेल' प्राण परिडत थे।
जिनकी नीति बुद्धि कौशल से- 'रावण' से परिडत शंकित थे॥

पर अंग्रेज़ विधान विज्ञ है- क़ानूनों का है कटपुतला।
गोरा निपुण सफ़ेद साँप है- जिसने मधुर ज़हर है उगला॥
भारत रक्षा क़ानूनों के- अन्तर्गत डस लिया देश को।
जाल डाल उलझाना चाहा- ब्रिटिश राज्य ने काँगरेस को॥

उधर विश्व में प्रतिपल प्रतिक्षण- नयी नयी होतीं घटनायें।
'चेम्बरलेन' व्यथित शंकित थे- नौका कैसे पार लगायें?
जब कि "आक्रमण रूसी जर्मन-सन्धि" हुई बस! बादल टूटे।
हिंसा से यूरोप जल उठा, धरती पर नाशक बम फूटे॥





बोले "चेम्बरलेन" शान्ति से– ब्रिटिश-जर्मनी युद्ध छिड़ गया।
एकतन्त्र साम्राज्यवाद से– प्रजातन्त्र कस कमर भिड़ गया॥
क्योंकि कबूतर के बच्चों को– बिल्ली खाती ही जाती है।
जिसकी लाठी, भैंस उसी की– यह विष-नीति माँस खाती है॥

क्योंकि तीतरों के नीड़ों पर– बाज़ झपटता ही आता है।
क्योंकि आज सुन्दरता पर बम– पागल 'हिटलर' बरसाता है॥
क्योंकि आज जग की सुन्दरता– निर्मम निकला खँडहर करने।
उस अत्याचारी के आगे– हम भी चले मारने मरने॥

हत्यारी हिटलरशाही से– जब तक प्राण, लड़ूँगा तब तक।
'हिटलर' के साम्राज्यवाद पर– विजय नहीं पाऊँगा जब तक॥
जब तक योरुप मुक्त न होगा, जब तक तन में श्वास रहेगा।
नाश करूँ हिटलरशाही का– तब तक 'चेम्बरलेन' कहेगा॥

ले पाऊँगा भाग युद्ध में– मैं कितना यह किसे पता है।
वही जान सकता है यह तो– नारायण का जिसे पता है॥
कुछ सन्देह जिसे होता है– वह सन्देह नहीं टल पाता।
होनी है बलवान विश्व में, अंक खोदती है वयमाता॥

इस दुनिया में बड़ों बड़ों के– सब संकल्प न पूरे होते।
कुछ बो कर काटा करते हैं, कुछ सो जाते बोते बोते॥
'चेम्बरलेन' वर्ष भर में ही– इस दुनिया से स्वर्ग सिधारे।
मरने से पहिले ही "चर्चिल"– पीते हुए सिगार पधारे॥

पहिले कुर्सी पर चढ़ बैठे, फिर खाया कुर्सीवाले को।
राजनीति के चोर भयंकर– तोड़ लिया करते ताले को॥
'चेम्बरलेन' गये दुनिया से, 'चर्चिल' को जाना बाक़ी है।
पर इतिहासों के पृष्ठों पर– शीशा पैमाना बाक़ी है॥

चहक उठीं पश्चिम में चोंचें, "चर्चिल" से चोंचें लड़ती थीं।
चर्चिल की चटपटी चोंच में– बड़ी बड़ी चोंचें गड़ती थीं॥
मोटी नाक टिमाटर जैसी, बड़े कान मूली के पत्ते।
ओठों की उपमा किससे दूँ– मानो थे भैंसों के लत्ते॥







जननायक

दाँतों की तो बात न पूछो– होड़ लगाते थे हाथी से।
मोटेपन में भैंसा हारा– भारी थे बिजार साथी से॥
फूली हुई कचौरी जैसे– गाल उन्हों के गोल गोल थे।
उनका बल खाता माथा था– या कि कोट में पड़े फोल थे॥



दूर दूर तक देख सकें जो– आँखें बड़ी बैटरी जैसी।
मुँडी हुई मूँछें ढोलक की– करती थीं ऐसी की वैसी॥
सीना उनका लाजवाब था– नुगदी के लड्डू सा ऊँचा।
भूल गया मैं! उस सीने से– पर्वत नीचा, अम्बर बूचा॥

चलते थे टमटम जैसे जब– खड़खड़ करते रबड़ टैर वे।
चलते थे लुड्डक पुड्डक जब– रूई जैसे नर्म पैर वे॥
क्या कहने हैं! क्या कहने हैं!! टट्टू से पीछे रह जाते।
क्या कहने हैं! बात बात में– निकल पजामे से बह जाते॥

ज़रा चोंच तो देखो इनकी, विधि ने थोड़ी कसर छोड़ दी।
मूंड न हाथी की लटकायी, कव्वे ही की टाँग तोड़ दी॥
ठीक किया, वर्ना 'चर्चिल' जी– बन जाते गोबर गणेश तब।
देश स्वतन्त्र करा सकती थी– चींटी ही बन काँगरेस तब॥

क्षमा! तुमने बड़ी कृपा की, नमस्कार है! नमस्कार है!
"चर्चिल जी" की चिकनी चमड़ी– मज़ेदार है! मज़ेदार है!!
घबरा कर बोले 'चर्चिल' तब– शक्ल मुझे दे दो भैंसे सी।
चमड़ी कहीं उतार न लें ये– मेरे चाँदी के पैसे सी॥

ओ गॉड! दया कर जल्दी से– मेरी सूरत काली कर दे।
मेरी यह गर्दन काट और– धड़ पर सींगों वाला धर दे॥
या मुझे बना लंगूर शीघ्र, जल्दी कर 'हिटलर' आता है।
मैं हूँ 'रावण' की बहन, मुझे– बन्दर घुड़की दिखलाता है॥

हे 'चेम्बरलेन'! कहाँ हो तुम, क्या करूँ सलाह बताओ तुम!
तुम स्वर्ग लोक में चले गये, मुझ को भी तो ले जाओ तुम!!
अच्छा, मैं ही आ जाऊँगा– तुमसे करने को परामर्श।
होने वाला है प्रसव मुझे, भेजो जल्दी से चतुर नर्स॥





ओ जर्मन वाले ! ठहर ज़रा, पी लेने दे अंगूरासव ।
दस बीस डण्ड लूँ और पेल, हल्का कर लूँ यह मोटा शव ॥
मालतीवसन्त वैद्य जी ने- मेरे ही लिये बनाया है ।
मैं पीने लगा बदाम घोट, गाजर का हलवा खाया है ॥

मेरे भुजदण्डों में भी अब- मछलियाँ दिखाई देती हैं ।
अब घर पर पड़ीं मेम मेरी- मुर्ग़ी के अण्डे सेती हैं ॥
मुर्ग़ी के अण्डे खा खा कर- मैं पेट फुलाता जाऊँगा ।
मैं उतर अखाड़े में आया, 'रौंडो' बन कर दिखलाऊँगा ॥

जल्दी जल्दी बच्चे दूँगा, मैं भी मुर्ग़ी बन जाऊँगा ।
'जर्मनवाले' से लड़ना है, मैं भी तो फ़ौज बढ़ाऊँगा ॥
हे कलियुग की तरुणियों ! सुनो, तुम ही न बहुत बच्चे जनतीं ।
सुनलो विलायती गुदगुदियों ! तुम ही न बहुत कच्चे जनतीं ॥

मैं ग्यारह भैंस मुझे देखो, मैं बच्चे देने वाली हूँ ।
चलती रहती मेरी मशीन, मैं भी रावण की साली हूँ ॥
फिर 'हिटलर' क्या ? क्या 'इटली' है ? 'जापान' एक सुनगा होगा !
भगवान ! चार दिन जीने दे, मैंने न अभी कुछ सुख भोगा ॥

गाँधी बाबा ! गाँधी बाबा ! मैं काली गाय तुम्हारी हूँ ।
मैंने लाखों चिड़ियें मारीं, अब आ कर फँसा शिकारी हूँ ॥
इस बार बचालो "जर्मन" से, देखो ! वे गोले आते हैं ।
मेरे शरीर में बहुत मांस, ये चूहे कुट कुट खाते हैं ॥

मैं थोथा चना बहुत बजता, बन जाता सोडे की बोतल ।
जल लाओ शीघ्र अहिंसा का, जलने को है मेरा होटल ॥
पी पी बकरी का दूध, और- पी पी टिमाटरों का रेशा ।
बापू ! तुम बढ़ते जाते हो, रुकता जाता मेरा पेशा ॥

बस मैं भी कल से जाय शराब- बकरी का दूध चढ़ाऊँगा ।
खा खा कर उबले हुए साग- मैं अपना वज़न बढ़ाऊँगा ॥
खद्दर की लंगोटी वाले ! मैं भी व्रत किया करूँगा अब ।
मैं पूर्ण अहिंसावादी हूँ- चिल्ला कर कहा करूँगा जब-







जननायक

तब गाँधी क्या ! मैं गाँधी की- मोटी बकरी बन जाऊँगा।
पर दूध नहीं दूँगा उनको, बस थन ही थन दिखलाऊँगा॥
लग गया कहीं मौका मेरा- बकरी वाला खा जाऊँगा।
पर बापू सोता नहीं कभी, मैं कैसे उसको खाऊँगा॥



उस लंगोटी वाले से तो- बम के गोले घबराते हैं।
उस दो छटाँक के हिमगिरि से- लाखों सागर पट जाते हैं॥
उस के कितने ही चेले हैं- जो बड़े बड़े हैं पहलवान।
चौड़े माथे वाला 'पटेल', दिनमान 'जवाहर' है महान॥

पर मैं भी नहीं किसी से कम, लाखों साले बहनोई हैं।
'अमरीका' बड़ा बहादुर है, अब उस से आँख पिराई है॥
फिर मेरी कूट नीति से बच- भारत किस पथ से जायेगा?
'जिन्ना' से मेरी सटर पटर, वह नौका पार लगायेगा॥

वह 'जिन्ना' जिसकी उँगली में- मेरी अंगूठी पड़ी हुई।
वह 'जिन्ना' जिसे बिठाने को- यह मेरी टमटम खड़ी हुई॥
मैं 'जिन्ना' का घर वाला हूँ, 'जिन्ना' मेरी घर वाली है।
मैं मोटा ताज़ा टोस, और- वह पतली दुबली प्याली है॥

वह गर्म चाय, वह बिस्कुट है, वह मक्खन लगी डबलरोटी।
मैं काँटे छुरी चलाता हूँ, खा जाता हूँ बोटी बोटी॥
जब चाय-पार्टियाँ होती हैं, जब पिट्ठू चाय पिलाते हैं।
जब चाय टोस मक्खन बिस्कुट- मेरे आगे आ जाते हैं॥

पतली दुबली चिकनी चुपड़ी- जब साथ चाय पीती "जिन्नी"।
जब कभी रूठती है रानी- मैं उसे दिखा देता गिन्नी॥
फिर नाक नहीं रहती टेढ़ी, चाहे जितनी ले डेढ़ी छूटी।
फिर हँसती ही रहती है वे, चाहे जितना यौवन लूटी॥

मेरा पतला दुबला 'जिन्ना'- मोटे ताज़े खा जाता है।
मेरा नमूज़िया यार अरे, मूछों से हौड़ लगाता है॥
देखूँगा कैसे कांगरेस- भारत स्वाधीन कराएगी?
देखूँगा कैसे गांधी की- रामायण हमें हराएगी?



ओ गाँधी के चेलो ! सुनलो– पहिले आपस में मिल जाओ !
अंग्रेज़ी कोट उतारो तब– जब पहिले अपना सिलवाओ !
तुम कहते हो पहिले भारत– स्वाधीन राष्ट्र घोषित करदो !
युद्धोद्देश्यों में शामिल है– पहिले पाई पाई धरदो !

हम जीवन और मरण में हैं, इस समय माँगते अपना धन ।
हालत हो रही दिवाले की, कुछ और रुको मेरे यौवन !
बापू बोले, इस यौवन में– किसको विश्वास तुम्हारा है ?
भिक्षा में नहीं माँगते हैं, यह भारतवर्ष हमारा है ॥

महायुद्ध के उद्देश्यों में– क्या भारत परतन्त्र रहेगा ?
ब्रिटिश राज्य के लिये हमारा– आँसू मिश्रित खून बहेगा ?
और 'जवाहर लाल नेहरू'– बापू से दो क़दम बढ़ गये ।
गोरो ! कल की भाषा छोड़ो ! बहुत तुम्हारे मगज़ सड़ गये ॥

वह भाषा मर चुकी जिसे तुम– अब तक हमें सुनाते आये ।
दुनिया की पीड़ित जनता ने– मेरे से ये शब्द कहाये ॥
सौदा नहीं कर रहे तुम से, माँग रहे अपनी स्वतन्त्रता ।
तभी अर्थ कुछ सार्थक होगा, चल न सकेगी एकतन्त्रता ॥

अब न अधिक दिन चल पायेगी– प्रभुता यह साम्राज्यवाद की ।
हिन्दुस्तान होश में है अब, नींद छोड़ दी है प्रमाद की ॥
भारत एक अखण्ड देश है, वह न बनेगा लँगड़ा लूला ।
सब रजवाड़े साथ रहेंगे, भूला भटका अब भ्रम भूला ॥

अब न किसी के अधिकारों पर– चला सकोगे खूनी भाला ।
देश अखण्ड स्वतन्त्र रहेगा– जग को ज्योति दिखाने वाला ॥
भारत के कुछ नेताओं से– वायसराय मिले 'दिल्ली' में ।
चूहों को घर पकड़ दबाऊँ– चाह यही थी उस बिल्ली में ॥

फूट डालने की ज्वाला में– उसने घी की आहुति डाली ।
गरल साम्प्रदायिक के नग से– बहने लगी खून की लाली ॥
भिन्न भिन्न मत वालों से मिल– उसने विष की गाँठ टटोली ।
फूट डेकिनी ने भारत में– दहकादी सावन में होली ॥







तब गाँधी क्या ! मैं गाँधी की- मोटी बकरी बन जाऊँगा।
पर दूध नहीं दूँगा उनको, बस थन ही थन दिखलाऊँगा ॥
लग गया कहीं मौका मेरा- बकरी वाला खा जाऊँगा।
पर बापू सोता नहीं कभी, मैं कैसे उसको खाऊँगा ॥



उस लंगोटी वाले से तो- बम के गोले घबराते हैं।
उस दो छटाँक के हिमगिरि से- लाखों सागर पट जाते हैं ॥
उस के कितने ही चेले हैं- जो बड़े बड़े हैं पहलवान।
चौड़े माथे वाला 'पटेल', दिनमान 'जवाहर' है महान ॥

पर मैं भी नहीं किसी से कम, लाखों साले बहनोई हैं।
'अमरीका' बड़ा बहादुर है, अब उस से आँख पिरोई हैं ॥
फिर मेरी कट नीति से बच- भारत किस पथ से जायेगा ?
'जिन्ना' से मेरी सटर पटर, वह नौका पार लगायेगा ॥

वह 'जिन्ना' जिसकी उँगली में- मेरी अंगूठी पड़ी हुई।
वह 'जिन्ना' जिसे बिठाने को- यह मेरी टमटम खड़ी हुई ॥
मैं 'जिन्ना' का घर वाला हूँ, 'जिन्ना' मेरी घर वाली है।
मैं मोटा ताज़ा टोस, और- वह पतली दुबली प्याली है ॥

वह गर्म चाय, वह बिस्कुट है, वह मक्खन लगी डबलरोटी।
मैं काँटे छुरी चलाता हूँ, खा जाता हूँ बोटी बोटी ॥
जब चाय-पार्टियाँ होती हैं, जब पिट्ठू चाय पिलाते हैं।
जब चाय टोस मक्खन बिस्कुट- मेरे आगे आ जाते हैं ॥

पतली दुबली चिकनी चुपड़ी- जब साथ चाय पीती "जिन्नी"।
जब कभी रूठती है रानी- मैं उसे दिखा देता गिन्नी ॥
फिर नाक नहीं रहती टेढ़ी, चाहे जितनी छेड़ो चूटो।
फिर हँसती ही रहती है वे, चाहे जितना योवन लूटो ॥

मेरा पतला दुबला 'जिन्ना'- मोटे ताज़े खा जाता है।
मेरा नमूलिया यार अरे, मूछों से होड़ लगाता है ॥
देखूँगा कैसे कांगरेस- भारत स्वाधीन करायेगी ?
देखूँगा कैसे गांधी की- रामायण हमें हरायेगी ?



ओ गाँधी के चेलो ! सुनलो– पहिले आपस में मिल जाओ !
अंग्रेज़ी कोट उतारो तब– जब पहिले अपना सिलवाओ !
तुम कहते हो पहिले भारत– स्वाधीन राष्ट्र घोषित करदो !
युद्धोद्देश्यों में शामिल है– पहिले पाई पाई धरदो !

हम जीवन और मरण में हैं, इस समय माँगते अपना धन ।
हालत हो रही दिवाले की, कुछ और रुको मेरे यौवन !
बापू बोले, इस यौवन में– किसको विश्वास तुम्हारा है ?
भिक्षा में नहीं माँगते हैं, यह भारतवर्ष हमारा है ॥

महायुद्ध के उद्देश्यों में– क्या भारत परतन्त्र रहेगा ?
ब्रिटिश राज्य के लिये हमारा– आँसू मिश्रित खून बहेगा ?
और 'जवाहर लाल नेहरू'– बापू से दो क़दम बढ़ गये ।
गोरो ! कल की भाषा छोड़ो ! बहुत तुम्हारे मगज़ सड़ गये ॥

वह भाषा मर चुकी जिसे तुम– अब तक हमें सुनाते आये ।
दुनिया की पीड़ित जनता ने– मेरे से ये शब्द कहाये ॥
सौदा नहीं कर रहे तुम से, माँग रहे अपनी स्वतन्त्रता ।
तभी अर्थ कुछ सार्थक होगा, चल न सकेगी एकतन्त्रता ॥

अब न अधिक दिन चल पायेगी– प्रभुता यह साम्राज्यवाद की ।
हिन्दुस्तान होश में है अब, नींद छोड़ दी है प्रमाद की ॥
भारत एक अखण्ड देश है, वह न बनेगा लँगड़ा लूला ।
सब रजवाड़े साथ रहेंगे, भूला भटका अब भ्रम भूला ॥

अब न किसी के अधिकारों पर– चला सकोगे खूनी भाला ।
देश अखण्ड स्वतन्त्र रहेगा– जग को ज्योति दिखाने वाला ॥
भारत के कुछ नेताओं से– वायसराय मिले 'दिल्ली' में ।
चूहों को घर पकड़ दबाऊँ– चाह यही थी उस बिल्ली में ॥

फूट डालने की ज्वाला में– उसने घी की आहुति डाली ।
गरल साम्प्रदायिक के नभ से– बहने लगी खून की लाली ॥
भिन्न भिन्न मत वालों से मिल– उसने विष की गाँठ टटोली ।
फूट डालने ने भारत में– दहकादी सावन में होली ॥







जनायक



उसी आग में गोरे राजा- अपनी खिचड़ी लगे पकाने।
कोटि कोटि की स्वतन्त्रता को- उसी आग में लगे जलाने॥
कहा चीख कर अंग्रेज़ों ने- पहिले अपनी फूट निकालो।
अल्प जातियों की रक्षा का- तब तुम हम से गार उठालो॥

बाद युद्ध के अखिल विश्व में- व्यापक सर्वमान्य गति होगी।
जन जन में आत्मैक्य रहेगा, दुनिया में अति की यति होगी॥
शब्दजाल "लिनलिथगो" का सुन- गाँधी जी ने कहा शान्ति से-
बालक नहीं रहे हैं अब हम, बहुत दूर हो गये भ्रान्ति से॥

काँगरेस ने रोटी माँगी- लेकिन तुमने मारा पत्थर।
फूट डाल शासन करने की- नीति नहीं चल सकती हम पर॥
शत शत वर्षों से छल बल से- हम पर शासन करते आये।
व्यापारी बनकर आये थे, हम तुम को पहिचान न पाये॥

ऊपर से गोरे, अन्दर से- काले बड़े कम्पनी वाले।
हमने दूध पिला कर अब तक- अपने घर में विषधर पाले॥
जब तक हृदय न शुद्ध करोगे- कर न सकेंगे कुछ सहायता।
बात तुम्हारे हित की है यह, इसी बात में है महानता॥

लेकिन चढ़ी हुई थी उनको, मन-मोहन की बात न मानी।
चेत रही थी रण की चण्डी, घूम रही थी वहाँ भवानी॥
प्रान्तों के मन्त्रीमण्डल को- आज्ञा दे दी काँगरेस ने।
अपने त्यागपत्र दे दो तुम- दिया अमर आदेश देश ने॥

प्रान्तों के प्रधान मन्त्रीगण- कुर्सी छोड़, गर्ज कर बोले-
जनता की इच्छा विरुद्ध क्यों- महायुद्ध में झोंके भोले?'
सब प्रान्तों ने त्यागपत्र दे- गाँधी जी की आज्ञा मानी।
अक्षर अक्षर कण कण में है- गाँधी जी की अमर कहानी॥

पार्लमेन्ट में अंग्रेज़ों ने- अपनी फूटी बीन बजाई।
कहा, कि गाँधी बाबा हमसे- व्यर्थ मोल ले रहे लड़ाई॥
कैसे उत्तरदायी शासन- हम भारत में स्थापित कर दें?
भारत में मतभेद बहुत है, कैसे रोटी आगे धर दें??



रोटी के ऊपर लड़ लड़ कर– भारतवासी मर जायेंगे।
टुकड़ों पर लड़ लड़ ज़िन्दों को– हिन्दुस्तानी ही खायेंगे॥
हम रक्षा करने वाले हैं, आदत नहीं माँस खाने की।
गाँधी बोले, बहुत कह चुके, आदत छोड़ो धमकाने की॥

जाने किनके अभिशापों से– लगी फूस में दियासलाई।
जाने कब की दबी आग फिर– हिंसा के पशु ने दहकाई॥
महायुद्ध की भीषण लपटें– लपकीं "योरुप" की छाती पर।
रक्तस्नान सभ्यता का था, पशुता नाची नंगी होकर॥

जल उठे महल, जल उठे दुर्ग, बरसा शोणित, रँग गये डगर।
धू धू दावानल धधक उठा, घन घुमड़ उठे, गर्जा अम्बर॥
"जर्मन" से 'नाज़ीवाद' चला, मुँह फाड़ चली "हिटलरशाही"।
क्षण में धरती में समा गये– जग के चलते फिरते राही॥

चढ़ गया 'रूस' को लाल खून, 'स्टालिन' की गनमशीन गरजी।
चिंघाड़ रही थी राज्यचाह, अम्बर काँपा, धरती लरजी॥
"जनरल तोजो" की तेजी से– "जापान" आग में कूद पड़ा।
"इटली" से 'मुसोलिनी' लपका, क्षण में रण में हो गया खड़ा॥

'चर्चिल' की चोंच चली चहकी, हिल उठीं 'चीन' की दीवारें।
हिल गईं युद्ध के बाजों से– 'लण्डन' की ऊँची मीनारें॥
इस ओर अड़ गये मित्रराष्ट्र, उस ओर जर्मनी की ज्वाला।
रणचण्डी की वह भूख प्यास– जिसने ज्वाला में घी डाला॥

दृग बरस उठे, बरसी ज्वाला, जल उठे नगर, जल उठे शहर।
पश्चिम की छाती पर गर्जी– उस महानाश की महा लहर॥
खप्पर लेकर चण्डिका चली, मोर्चों पर थे तूफ़ान महा।
ला खूनपिला! ला खूनपिला! किस महाशक्ति ने वहाँ कहा॥

पी खून आज! पी खून आज! ले प्यास बुझा! 'हिटलर' बोला।
अम्बर से धरती पर आया– बम बम करता बम का गोला॥
तोपों ने अंगारे उगले, टैंकों से ज्वाला बरस पड़ी।
ला! पिला खून! ले! पियो खून! रण ज्वाला कहती खड़ी खड़ी॥









जनायक

नभ में उड़ते थे वायुयान, गोले गिरते थे धरती पर।
खेलने मौत से खड़े हुए, मोर्चों पर 'रशिया' के इढ़तर॥
अम्बर से उतर उतर आये- छाते ले ले कर भूत प्रेत।
वीरों के पैर बढ़े आगे, धरती से नभ में उड़ा रेत॥



सर सर सर सरके महाटैंक, दन दन दुनालियाँ चलती थीं।
बन जाता था शमशान वहीं, तोपों से लाशें जलती थीं॥
वह महाभयानक मोर्चा था, अन्धा सा था विज्ञान जहाँ।
मानव मानव की छाती पर, चढ़ चढ़ पीता था खून वहाँ॥

हर ओर यही स्वर सुनते थे- 'हिटलर आया, हिटलर आया।'
हर ओर दिखाई देती थी- हिटलर की लाल लाल छाया॥
सागर में रण, अम्बर में रण, धरती पर दहके अंगारे।
गोलों से धरती फटती थी, जलते थे धरती के तारे॥

छिछड़े उड़ते थे बच्चों के, कटती थी धरती की छाती।
उड़ता था जलता लाल धुँवा, 'फू फू!' करती आँधी आती॥
भूकम्प भयानक चेत उठे, श्वासों से साँप निकलते थे।
फुंकार मार, फण फैलाकर- जग के दिनमान निगलते थे॥

आँधी काली डायन बनकर- काले कोयले जलाती थी।
किलकार मार, चिंघाड़ मार, सोता शमशान जगाती थी।
शव फाड़ फाड़, हड्डियाँ नोच- **शोणित उछाल खेली होली।**
गोली लगती थी इधर, उधर- माँ बहिनों की पुछती रोली॥

मानो 'सन सत्तावन' अपना- प्रतिशोध चुकाने आया था।
मानो 'दिल्ली का लाल क़िला'- अरमान बुझाने आया था॥
धड़ गिरते थे, सर उड़ते थे, फ़ौजें आगे बढ़ जातीं थीं।
लोथों के ऊपर चढ़ चढ़ कर- अंगारों पर चढ़ जाती थीं॥

लोथड़े माँस के बिखरे थे, शोणित में होती थी छप छप।
संगीनें माँस नोचतीं थीं, तलवारें करतीं थीं लप लप॥
फूटती किसी की आँख, और- कोई लँगड़ा हो जाता था।
कोई गोली के लगते ही- लम्बा लम्बा सो जाता था॥







कट हाथ हवा में उड़ते थे, कट कट माथे बनते रजकण।
कट कट गिरते चौड़े सीने, होते देखे रुण्डों के रण॥
मुण्डों की माला पहिन पहिन– रुण्डों ने ज़िन्दों को पीसा।
लाशों के नीचे पड़ा पड़ा– कोई तड़पा, कोई चीसा॥

सर कटा पड़ा लेकिन धड़ पर– बन्दूक़ दिखाई देती थी।
सड़ती थीं लाशें खँडहर में– धरती ही साँपा लेती थी॥
ख़ाकी वर्दी वाले फ़ौजी– शमशान साथ लेकर आये।
जो राख बनादें रंगस्थल– वे विध्वंसक गोले लाये॥

यह लो, उस सोने के गढ़ पर– उस सैनिक ने गोला मारा।
दाँये से उस पर बम आया, गिर गया राख हो हत्यारा॥
यह लो, अम्बर में चीलों से– ये वायुयान मँडराते हैं।
विध्वंसक गोले गिरा रहे– धरती के महल जलाते हैं॥

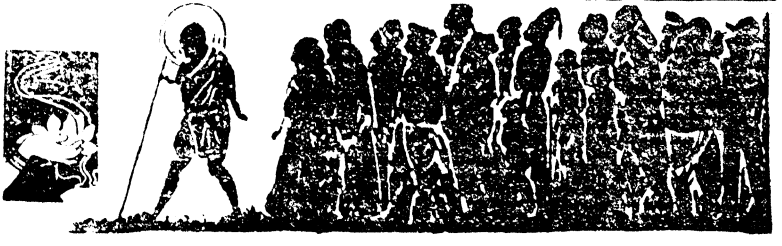
घर घरर घरर घर घरर घरर– उड़ते जहाज़, गिरते तारे।
अड़ अड़ड़ अड़ड़ बम बम बम बम– नभ से गिरते बम हत्यारे॥
ट्टँ ट्टँ ट्टँ ट्टँ! ठाँ ठाँ ठाँ ठाँ! दन दन दुनालियाँ गरज रहीं।
गिर रहे गर्भ, जलते सुहाग, अनगिनत बिन्दियाँ लरज रहीं॥

वह वायुयान उस फ़ौजी ने– पल में धरती में गिरा लिया।
वह देखो, किसने क्षण भर में– धड़ से उसका सर उड़ा दिया॥
उसने उसके गोली मारी, उसने उसका सर काट दिया।
उसने उस पर बम बरसाये– उसने उसका घर पाट दिया॥

उसने नाखूनों से नोचा, उसने दाँतों से चबा लिया।
उसने ठोकर से टुकराया, उसने बूटों से दबा दिया॥
कोई टट्टे की आड़ लिये– गोलियाँ चलाये जाता था।
कोई बुर्क़े की आड़ लिये– शमशान बनाये जाता था॥

वह महाअधर्मी युद्ध हुआ, मानव चीते भेड़िये बने।
किलकार रहे थे श्वान गिद्ध, खा मौंस! ख़ून मे नहा सने!
ये लाश पड़ीं, ये घायल हैं, वह पड़ी टाँग, ये पड़े कान।
बन्दूक़ कहीं, संगीन कहीं, पिस्तौल कहीं, कुछ है न ध्यान॥







वह टोप पड़ा, यह कोट पड़ा, पतलून कहीं, कुछ होश न है।
कव्वे खा रहे गोश्त लेकिन– अब इस फ़ौजी में जोश न है॥
छींकते बैठती थी मक्खी– कल जिनकी लम्बी नाकों पर–
मिल गये धूलि में पल भर में– वे हिंसक पशु अब कहाँ किधर?
उन बर्बादी के गोलों से– मानवता धू धू जलती थी।
उस प्रकृति पूर्णिमा के ऊपर– पशुता अंगार उगलती थी॥
जलचर थलचर नभचर जल जल– उड़ गये हवा में बेशुमार।
यह महाप्रलय थी या कोई– दुखिया रोती चीत्कार मार॥

धरती पर सागर दौड़ रहा,
परिवर्त्तन ले करुणा लपकी।
किसकी स्मृति पश्चिम में जिससे–
प्रलयंकर अग्नि-शिखा भभकी॥
शशि! बोल कि क्यों यह आग लगी?
किसने किसको अभिशाप दिया?
इस बालक बुद्धि भयानक को–
प्रभु! क्यों तुमने अणु-चाप दिया?

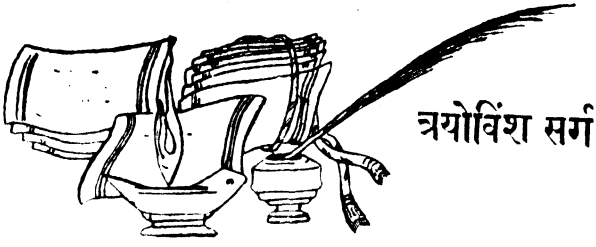












त्रयोविंश सर्ग



जय हो उसकी जिसकी जग में–
रचना सुख शान्ति सुधाकर है।
जय हो उस दिव्य दिवाकर की–
जिसकी जय ज्योति प्रभा पर है॥

जय हो उस मूर्त्ति मनोहर की–
जिसके जय दीप जले जग में।
चुग फूल चढ़ा, पग धूलि उठा–
जय है जननायक के डग में॥

तम के जग में जब ज्योति लिये–
जननायक के जयघोष चले।
जन में मन में पथ में तब ही–
गति गीत लिये जय दीप जले॥

जग की जलती अति बोल उठी–
शशि से सुख के दिन दूर नहीं।
जननायक के पगपंकज पा–
पथ के सब पत्थर चूर वहीं॥

जीवन के पल-फूल गला कर–
जीव यहाँ तरसा करते हैं॥
प्राण यहाँ झुलसा करते जब,
मेघ तभी बरसा करते हैं।





जननायक

गोल धरा पर रात सुहागिन,
ज्योति लुटा रवि क्यों ढलते हैं ?
रात घिरा करती धरती पर,
दीप वहाँ नभ में जलते हैं ॥



आग आग से कभी न बुझती, आग बुझाती है जल-धारा।
अमर न कभी असत्य हुआ है, अमर दीखता है ध्रुव तारा ॥
हिंसा से हिंसा न जीतती, विजय अहिंसा से ही होती।
मोती हंस चुगा करते हैं, काग नहीं चुगते हैं मोती ॥
हिंसा के हत्याकाण्डों से- सोने सी यह दुनिया डोली।
ले पतवार अहिंसा-बल की- जननायक ने नौका खोली ॥
फूल लगाये काँगरेस ने, काँटों ने फूलों को घेरा।
बापू की वाणी से बरसा- अन्धकार में स्वर्ण सबेरा ॥
काँगरेस में कुछ लोगों को- गाँधी के सिद्धान्त न भाये।
स्वतन्त्रता के सुन्दर पथ पर- कितनों ही ने शूल बिछाये ॥
जब कि तरेपनवाँ अधिवेशन- काँगरेस का हुआ 'रामगढ़'।
महायुद्ध चिंघाड़ रहा था, झगड़े बहुत गये जग में बढ़ ॥
चारों ओर ज़हर फैला था, 'जिन्ना' अलग पकाते खिचड़ी।
जितनी ढील छोड़ते बापू- उतनी ही वह घोड़ी बिगड़ी ॥
कहती थी वह मुस्लिम लीगी- आधा हिन्दुस्तान काट दो।
हिन्दू राष्ट्र बनाओ अपना, मेरा पाकिस्तान बाँट दो ॥
भारत में दो राष्ट्र बनेंगे- मेरा यह सिद्धान्त अटल है।
मैं हूँ बड़ा क़ायदेआज़म, बात नकल पर जाति असल है ॥
भारत में 'जयचन्द' बहुत थे, भारत में थे बहुत 'विभीषण'।
जहाँ विपैली फूट वहाँ पर- प्रतिपल जलते हैं सुन्दर व्रण ॥
तरह तरह की चलीं आँधियाँ- दीपक बुझने लगे देश के।
'मौलाना आज़ाद' राष्ट्रपति- बने 'रामगढ़ काँगरेस' के ॥
अधिवेशन के लिये शान से- सुन्दर "मज़हर नगर" बनाया।
"सिंह द्वार" के महा चौक में- भारतीय झण्डा लहराया ॥



रंग बिरंगे गगन कुंज में– फर फर उड़ने लगा तिरंगा।
या कि तिरंगी मधुर प्रकृति पर– लहर लहर लहराई गंगा॥
अधिवेशन प्रारम्भ हुआ जब– किया प्राकृति ने नृत्य मनोहर।
उमड़ घुमड़ बादल घिर आये, नृत्य देखने आया अम्बर॥

मेरे नेताओं के ऊपर– रिमझिम रिमझिम मोती बरसे।
जल तरंग में बरस रही थीं– मोती की झालें अम्बर से॥
घुमड़ घुमड़ कर बरसे बादल, चारों ओर भर गया पानी।
या कि परीक्षा नेताओं की– करते थे बादल तूफ़ानी॥

या कि युद्ध के अंगारों पर– अम्बर बरसाता था पानी।
या बादल धोने आये थे– भारत की दुखभरी कहानी॥
पर प्रलयंकर वर्षा में भी– बापू ने पतवार न छोड़ी।
काँगरेस के नेताओं ने– साहस की तलवार न तोड़ी॥

चट चटाइयों को निकाल कर– प्रतिनिधि बैठे ओढ़ ओढ़ कर।
झोपड़ियों के गाँव बन गये– मेरे नेताओं के सर पर॥
गीत तिरंगे के गाती थी– जय जय की वह निर्मल गंगा।
लहरों पर झोपड़ियाँ गातीं, झोपड़ियों पर उड़ा तिरंगा॥

बादल बरसे पर अधिवेशन– उसी शान से हुआ बराबर।
निर्भय भाषण सुना रहे थे– महारथी 'आज़ाद' जहाँ पर॥
जननायक का हृदय तन गया– सब के सर पर छाता बनकर।
या मनमोहन ने नयनों से– 'गोवर्द्धन' ले लिया हृदय पर॥

कहा राष्ट्रपति ने भाषण में– अब किश्ती मँझधार आ गई।
ये नाज़ुक घड़ियाँ हैं, इनमें– सर पर काली घटा छा गई॥
जर्जर नाव, अँधेरा छाया– लेकिन ज्योतिर्मय माँझी है।
पाल नहीं, पतवार नहीं पर– साथ साथ निर्भय माँझी है॥

ब्रिटिश राज्य से ऊब गये हम, नाज़ीवाद नहीं सह सकते।
हम घातक 'फासिस्टवाद' को– अच्छा कभी नहीं कह सकते॥
अंग्रेज़ों के छल कपटों को– हरगिज़ हम न पनपने देंगे।
सीधी या टेढ़ी उँगली से– स्वतन्त्रता उन से ले लेंगे॥









जननायक



ईंट हिला साम्राज्यवाद की– जग में दीप जलायेंगे हम।
और "एशिया" के प्रांगण में– स्वर्ण सवेरा लायेंगे हम॥
जब तक पहुँचें नहीं लक्ष्य पर– क़दम हमारा नहीं रुकेगा।
ऊँचा ही उठता जायेगा, झण्डा नीचे नहीं झुकेगा॥

घूमा घटनाचक्र, और हम– शासित, वे शासक इस घर में।
ढोल पीटते प्रजातन्त्र का– राज्य चाहते दुनिया भर में॥
यदि अंग्रेज़ हमारे ये घर– हमें साफ़ दिल से दे देते।
अखिल विश्व में मानवता पर– चन्दन लगा विजय ले लेते॥

पर क्या बिना दबाये गन्ना– रस देकर दानी कहलाता?
सीधी उँगली घी न निकलता, भला बुरा जग में रह जाता॥
और इधर 'जिन्ना' की खुट खुट– कुट कुट हमें काट कर खाती।
दो राष्ट्रों की पाकिस्तानी– खींचातानी शूल बिछाती॥

विध्वंसिनी फूट की ज्वाला– स्वतन्त्रता के अंग जलाती।
'सविनय भंग' रक्तरंजित है, कटुता अंगारे दहकाती॥
इतना कह 'आज़ाद' पधारे, खड़े हुए जय जय जननायक।
दर्शन कर सुन्दरता झेंपी, जड़वत बैठ गये आराधक॥

खुला सुधा-घट सा उनका मुँह, कविता बरसाती थी वाणी।
थिरक थिरक झनकार सुनाती– बापू की वीणा कल्याणी॥
बहिनो और भाइयो! अब हम– तम से आ जायें प्रकाश में।
उसकी ज्योति हृदय में देखें– बोल रहा जो श्वास श्वास में॥

शान्ति सुन्दरी शक्ति अहिंसा– महाशक्ति की मूर्त्त भक्ति है।
विजय उसी के चरण चूमती– जिस प्राणी में शान्त शक्ति है॥
पहिले अपना हृदय टटोलो, तब औरों के दोष निकालो।
पहिले स्वयम् कीच से निकलो, मत औरों पर कीच उछालो॥

निर्मल गंगाजल से धो धो– अपना मानस शुद्ध बनाओ!
शुद्ध हृदय से सचाई से– सब की नौका पार लगाओ!!
निर्मल आत्मिक बल के आगे– पशु बल कभी नहीं आ पाता।
सच को आँच नहीं आती है, झूठ नर्क का पथ बतलाता॥





आपस में संगठन करो तुम, बिखरे हुए एक हो जाओ !
आन्दोलन तब शुरू करूँगा– पहिले सब संगठन बनाओ !!
बिना शुद्ध तैयारी के मैं– बतलाओ कैसे बढ़ जाऊँ ?
पहिली सीढ़ी चढ़ा नहीं फिर– अम्बर में कैसे चढ़ जाऊँ ??

सत्याग्रह वह शुद्ध शस्त्र है– जिसमें पाप नहीं चल सकता।
सत्याग्रह की महाशक्ति को– कपटी कभी नहीं छल सकता ॥
कभी कहीं भी, किसी तरह भी– सत्याग्रह की हार न होती।
बिना संगठन के कब मिलते– स्वतन्त्रता के दीपित मोती ?

चर्खा यह 'सरबदा चक्र' है, इसमें हैं जीवन के धागे।
मूर्ख नहीं मैं कात रहा जो, जो न कातते वे हतभागे ॥
गाड़ी में, घर में, यात्रा में– मैं जो चर्खा चला रहा हूँ–
पराधीनता की ज़ंजीरें– इन धागों से जला रहा हूँ ॥

इन्हीं सूत के धागों को हम– बुन बुन कर रचते हैं खादी।
स्वावलम्ब के शान्त क्षणों में– मिलती है सच्ची आज़ादी ॥
सच्ची स्वतन्त्रता तो यह है– हमें न घेरे कोई बन्धन।
मुक्त रहें, आश्रित न रहें हम, निखरें बन बन कर चन्दन बन ॥

अन्तर और बाह्य दुनिया का– चर्खा ही है अमर निशानी।
जो न कभी जलती गलती है– चर्खे में वह अमर कहानी ॥
स्वावलम्ब ही तो ईश्वर है, अन्तर की आँखों से देखो !
उड़ना चाहो उड़ न सकोगे, जीवन अपने पाँखों से खो ॥

मूक विचारों का प्रतिनिधि मैं– बना प्रेरणा से अन्तर की।
मैं बस वही किया करता हूँ, जैसी है इच्छा ईश्वर की ॥
मैं मूकों के लिये जी रहा, उनके लिये मुझे मरना है।
तैर सिन्धु के मध्य आ गये, अब तो सिन्धु पार करना है ॥

देखो ! डूब न जाना अब तुम, तूफ़ानों से हार न जाना।
चाहे जितने झंझा आयें, फूँक मार कर उन्हें उड़ाना ॥
देख रहे हो, अपनों ही ने– काले झण्डे मुझे दिखाये।
देख रहे हो, कोई कहता– गाँधीवाद राख हो जाये ॥







जनायक



मेरी नाव जलाने को वह- देखो कौन मशाल ला रहे।
देखो, वह अंग्रेज़ शिकारी- राजनीति के जाल ला रहे॥
काँगरेस के नेताओं पर- कीच उछाली तो क्या होगा।
नभ में थूका मुँह पर गिरता, जैसा बोया, वैसा भोगा॥

पर रचनात्मक शान्त सलिल से- बुझ जायेगी सारी ज्वाला।
स्वतन्त्रता के शुभ विहान में- बरसायेगा सूर्य उजाला॥
पर प्रभात के लिये रात दिन- प्रहरी! तुम्हें जागना होगा।
अंग्रेज़ी अत्याचारों से- तिल भर नहीं भागना होगा॥

अंग्रेज़ों की नीति न बदली, अभी ढाक के तीन पात हैं।
अभी न उनकी भाषा बदली, उलटी ही कर रहे बात हैं॥
अतः हमें भी सत्याग्रह का- जल्दी शंख बजाना होगा।
सत्याग्रह के लिये देश को- बाजा बजा जगाना होगा॥

लक्ष्य उसी के चरण चूमता- जिसने निद्रा पर जय पाई।
शान्ति उसी के लिये सुरक्षित- आँसू जिसकी करे बड़ाई॥
वह प्रकाश में तेजपुंज है- जिसने जीत लिया अपना मन।
वही दीप बनता दुनिया में, वही बना करता है चन्दन॥

नर्क भोगता, सड़ता रहता- तन का उजला, मन का काला।
सत्य अहिंसा पर जो दृढ़ है- उसके चारों ओर उजाला॥
सत्याग्रह की परिभाषा का- अर्थ अनर्थ व्यर्थ करते हो।
महाशक्ति की महाशक्ति यह, अमर जीत से क्यों डरते हो?

सत्याग्रह की परिभाषा यह- सच्चे पथ पर खड़े रहो तुम।
भालों की नोकों के आगे- महावज्र से अड़े रहो तुम॥
भाले टूटेंगे ढालों से, सत्याग्रह पूजा जायेगा।
विश्व-शान्ति की ज्योति जगत यह- सत्याग्रह से ही पायेगा॥

भूत भविष्यत वर्तमान के- सत्याग्रह में सभी शस्त्र हैं।
महाशक्ति के शान्त रूप में- समय समय के लिये अस्त्र हैं॥
गाँव गाँव में, नगर नगर में- प्रान्त प्रान्त में करो संगठन।
भारत माता की पूजा है- बन बन बन आजाओ चन्दन॥





बार बार ये यज्ञ न होते, कब कब आते हैं ये अवसर।
अपने दोनों लोक बनालो- भारत माता की पूजा कर॥
खिले फूल से झूम झूम कर- माँ के मन्दिर में चढ़ जाओ!
या तो माला बनो जीत की, या डाली पर गीत सुनाओ!!

डाल डाल पर झूम झूम कर- देखो फूल सुगन्ध उड़ाते।
और पुजारिन के हाथों से- हँस हँस मन्दिर में चढ़ जाते॥
या आभरण गूँथ फूलों के- सुन्दरता सज धज शर्माती।
या फूलों की जयमाला ले- युग की जीत नाचती गाती॥

या तो फूल मुकुट माथे का, या यौवन हँसती डाली का।
जो कण कण में फूल खिलाये- स्वागत! स्वागत!! उस माली का॥
स्वतन्त्रता के लिये देश को- वीरों का बलिदान चाहिये।
आओ वीरो! मातृभूमि को- आज निराली शान चाहिये॥

झूम झूम गा रहा तिरंगा- आओ आओ वीरो! आओ!
घूम घूम गा रहा तिरंगा- मातृभूमि पर शीश चढ़ाओ!
दोनों हाथों में लड्डू हैं, यहाँ मुकुट है, वहाँ मुक्ति है।
स्वतन्त्रता के लिये होड़ है, दौड़ो दौड़ो! अमर उक्ति है॥

पर सत्याग्रह को वह आये- जिसका अन्तःकरण शुद्ध हो।
वही नाव खेवे भारत की- जिस नाविक का हृदय 'बुद्ध' हो॥
बापू की वाणी सुनते ही- देशभक्त तैयार होगये।
कोटि कोटि कण्ठों के नारे- भारत की पतवार होगये॥

एक बार फिर ब्रिटिश राज्य को- गाँधी जी ने मार्ग सुझाया।
पर वह बचा नहीं गिरने से, अन्धे को दीपक दिखलाया॥
बापू ने चेताया उनको- सत्य अहिंसा पर आजाओ!
युद्ध बन्द करदो तत्क्षण तुम, महानाश से विश्व बचाओ!!

'हिटलर' 'मुसोलिनी' से कहदो- लो हम घर खाली करते हैं।
लो यह सुन्दर महाद्वीप लो, महानाश से हम डरते हैं॥
जितना तुझको खून चाहिये- आ तू उतना खून बहा ले।
ओ हिंसावादी हत्यारे! जितना चाहे हमें सता ले॥







जननायक



किन्तु हमारी आत्मा को तू- बन्दी नहीं बना पायेगा।
तन को खा सकता है लेकिन- मन को क्या खा कर खायेगा?
राज्यवृद्धि के लिये बमों से- जला न सुन्दर राजमहल तू।
बता फूकने क्यों आया है- दुनिया भर की चहल पहल तू?

ईश्वर सम्मति दे योरुप को, मेरा आप उचित उत्तर दो!
पंजों से भारत को छोड़ो, बन्धन मुक्त देश यह करदो!!
शत्रु नहीं बापू ब्रिटेन का, यह मेरी शुभचिन्तक वाणी।
ईश्वर शब्द शब्द में बल दे, दया रहे उसकी कल्याणी॥

अखिल विश्व को गाँधी जी ने- भेजा अमर प्रसाद शान्ति का।
पर्दा उठा दिया आँखों का, बादल जलने लगा भ्रान्ति का॥
लेकिन सावन के अन्धे ने- जननायक की बात न मानी।
जननायक की जयति जयन्ती- जय जय जय जाज्वल्य जवानी॥

सत्याग्रह संग्राम छिड़ गया, शंख बजा, बोली रणभेरी।
बापू की इच्छा होते ही- होती नहीं तनिक भी देरी॥
सत्याग्रह का झण्डा लेकर- पहिले चले "विनोबा भावे"।
जननायक के अनुयायी पर- कविता गा गा फूल चढ़ावे॥

मूर्त्तिमान ये शुद्ध अहिंसा, मृदुभाषी रचनात्मक आत्मा।
देशभक्ति से शक्ति बन गये, भक्त बना करते परमात्मा॥
गाँव गाँव में पैदल चल चल- देते युद्ध-विरोधी भाषण।
वह वक्तव्य अमर गौरव है, उपमा हारीं, थके विशेषण॥

शब्द शब्द में सत्याग्रह का- सार निचोड़ दिया भावों ने।
सत्याग्रह का अमृत चाव से- ले ले स्वाद पिया भावों ने॥
'वर्धा' से चल आये जब वे- अपने प्रिय "पवनार" ग्राम में-
बन्दी बने 'विनोबा भावे'- पावन प्यारे राम नाम में॥

सत्याग्रही "विनोबा जी" को- बन्दी बना लिया सत्ता ने।
मूर्त्त शान्ति को, मूर्त्त एक्य को- परिचय यही दिया सत्ता ने॥
बन्दीगृह में बन्द कर दिया, किसको? तन को, किन्तु न मन को।
मुक्त स्वतन्त्र, नहीं बँधते हैं, तोड़ चुके जग के बन्धन को॥





ख़ाली धरती पर अंगारे– किलस किलस कर बुझ जाते हैं।
जो लोहे के चने चबाते– वज्र उन्हीं से थर्राते हैं॥
सत्याग्रह के लिये दूसरे– देशमुकुट थे वीर 'जवाहर'।
पर न प्रयाग तीर्थ तक पहुँचे, "छिड़की" ही में पकड़ा आकर॥

अंग्रेज़ों ने सज़ा सुनाई– उनको चार वर्ष कारा की।
पर न वेग रुकता सागर का, गति न कभी रुकती धारा की॥
निर्मल गंगाजल चलता था, सुरभि उड़ाता पवन बह चला।
भारत की सोई जनता में– सत्याग्रह से जीवन उछला॥

पकड़े गये 'पटेल', खेल में– जैसे कोई छू देता है।
सत्याग्रह जीवन बरसाता– शान्तामृत सन से लेता है॥
नेताओं को पकड़ पकड़ कर– लोहे के पिंजरों में डाला।
कारागृह ने नेताओं को– पहिनाई फूलों की माला॥

ज्वाला में जितना घी डालो– उतनी ही प्रचण्ड होती है।
मानवता की चरण-चाप सुन– पशुता खण्ड खण्ड होती है॥
चतुर नीति से, शान्त रीति से– बापू करते थे संचालन।
भारत का जन जन करता था– बापू की आज्ञा का पालन॥

गाँधी जी जिसको कहते थे– वही वीर सत्याग्रह करता।
कायरता डरती मरती है, वीर नहीं शस्त्रों से मरता॥
सत्याग्रह में झूठ न आये, सत्याग्रही अमर मृत्युंजय।
सगुण सत्य साकार अहिंसा– मेरे जननायक की जय जय॥

शान्त व्यक्तिगत सत्याग्रह में– जननायक जनता से बोले।
शब्द शब्द से गाँठें खोलीं, मानस के दरवाज़े खोले॥
होले होले सत्याग्रह हो, क्रोध न आये, आग न दहके।
होश रहे, आवेश न उमड़े, गिरे न कोई और न बहके॥

अपनी इच्छा से कोई भी– कहीं न कोई पैर बढ़ाये।
मैं ही जिसका नाम पुकारूँ– झण्डा केवल वही उठाये॥
काम न सत्यवादियों का है– हिंसा, हत्या, आग लगाना।
आग लगाना बहुत सरल है, बहुत कठिन है आग बुझाना॥







शुद्ध अहिंसावादी वह है– जो पीड़ा में सुख बन जाये।
गोता मार कूल पर निकले, काँटों में भी फूल खिलाये॥
यदि न रहोगे अनुशासन में– निश्चित होगी हार तुम्हारी।
सोच समझ कर चलने ही से– नाव लगेगी पार तुम्हारी॥



सँभल सँभल कर नहीं चले यदि– तो यह नाव डूब जायेगी।
मार काट झंझट झगड़ों से– मंज़िल हाथ नहीं आयेगी॥
यदि तुमने हुल्लड़बाजी की– मैं सत्याग्रह बन्द करूँगा।
अनुचित करूँ न होने दूँगा, दुष्कर्मों से सदा डरूँगा॥

"चौरी चौरा" का आन्दोलन– भूला नहीं, याद है मुझको।
भूल मान लेता हूँ अपनी, भूलों का विषाद है मुझको॥
सूई से काँटा निकाल लो, पैर फावड़े से कट जाता।
हुल्लड़ से होली जलती है, अनुशासन से जीवन आता॥

आग जली साम्राज्यवाद की, बरस रहे हैं हम पर शोले।
और "एमरी" भारत-मन्त्री – इतने पर भी कड़वे बोले॥
दुःख हुआ उनकी बातों से, मुँह से मीठा ज़हर उड़ेला।
'कॉमन सभा' "एमरी" की है– जहाँ श्वेत साँपों का मेला॥

वे हैं चिकने घड़े, उन्हों पर– पानी नहीं असर करता है।
ज़ूँ तक नहीं कान पर रेंगी, वह न पाप करता डरता है॥
हाल न देख रहे भारत का, बन्दी हिन्दुस्तान हमारा।
सुनो 'एमरी'! कान खोल कर– इससे होगा पतन तुम्हारा॥

हिन्दू मुस्लिम झगड़े होते, कैसा यह भारत पर शासन?
राष्ट्र हमारा हमको दे दो, दूर हटाओ अपना आसन॥
राज्य कर रहे इतने दिन से– फिर भी "ढाके" में गुण्डापन।
उत्तर दो किस लिये नपुंसक– कहाँ गया भारत का सावन?

बड़े शर्म की बात कि सत्ता– रक्षा तक भी कर न सके जो।
गुण्डे नागरिकों को लूटें, शर्म कि पशुता मर न सके जो॥
पर गठकटे चोर के साथी, गुड़ देकर शोषण करते हैं।
भूखे नंगे ग्रामीणों को– फ़ौजों में भरती भरते हैं॥





जनायक

सिर्फ 'बीस' में सर कटवाने- वे न स्वयम् इच्छा से जाते।
धधक रही पेटों की ज्वाला, महायुद्ध में सर कटवाते॥
और 'एमरी' जो कहते हैं- भारत में हैं अलग अलग दल।
यही फूट की नीति तुम्हारी, ये दल अंग्रेज़ों के छल बल॥

फूट डाल कर शासन करना- यही रहा आदर्श तुम्हारा।
जब तक तुम हो मिट न सकेगा- हिन्दू मुस्लिम भेद हमारा॥
यदि अंग्रेज़ चले जायें तो- हम आपस में मिल जायेंगे।
काँटे अगर न बीधें हमको- फूल यहाँ पर खिल जायेंगे॥

यदि यह व्याध छोड़ दे भारत, मुक्त गगन में यदि खग डोले-
मैं दावे से कह सकता हूँ- फिर न यहाँ बरसेंगे शोले॥
यह घर का झगड़ा है, इसमें- ब्रिटिश राजनीतिज्ञ पड़े क्यों?
फूल सुगन्ध उड़ाने निकले, मार्ग रोक कर शूल खड़े क्यों??

पर अंग्रेज़ डोलते भ्रम में, सच्चाई का गला घोटते।
हिन्दुस्तान ग़ुलाम बनाकर- हाड़ चबाते, माँस नोचते॥
दुनिया देख रही है तुमने- भारत का क्या हाल बनाया।
भाषा खोई, विद्या छीनी, दाने दाने को तरसाया॥

भारत के भूखे ग्रामों में- अस्थि पंजरों के ढाँचे हैं।
दमड़ी तक भी पास नहीं है, खाली चमड़ी के साँचे हैं॥
कैसी शिक्षा? कहाँ सभ्यता? पूर्ण चाँद बन्दी पावस का?
कहाँ हमारे हीरे मोती? यहाँ अँधेरा है मावस का॥

काग़ज़ रहे न, स्याही सूखी, इतने घाव किये छाती पर।
कहाँ हमारी पारस पथरी? चारों ओर पड़े हैं पत्थर॥
यहाँ शेष छोड़ा ही क्या है? लूट लूट "इँगलैंड" ले गये।
सीधेपन के बदले हमको- कड़वा मीठा ज़हर दे गये॥

किन्तु यहाँ की मिट्टी सोना, रत्न उगलती धरती माता।
सरस्वती की कृपा यहाँ है, घाटे से दुगना बढ़ जाता॥
तोप ओढ़ते हुए 'एमरी'- मुँह से धुँवा छोड़ते बोले-
चारों खाने चित आओगे- देखे नहीं बमों के गोले॥











इन दुनालियों की गोली से- हम सत्याग्रह चित कर देंगे।
अगर इशारे पर नाचोगे- तो आगे टुकड़े धर देंगे॥
बापू बोले, और अधिक दिन- तुमको यहाँ नहीं रहना है।
भारत एक स्वतन्त्र राष्ट्र है- कल या परसों में कहना है॥

चोर न कोतवाल को डाँडे, हिन्दुस्तान सचेत आज है।
तुमको तनिक न लज्जा आती, लज्जा को आ रही लाज है॥
कहा "एमरी" ने उत्तर में- नाच न आये आँगन टेढ़ा।
आता तुम्हें न विष उतारना, साँप बिच्छुओं को आ छेड़ा॥

बापू बोले, धन्य धन्य है, खूब कर रहे लीपा पोती।
नौ सौ चूहे खाय बिलैया- हज को चली रुमाल भिगोती॥
जमना गये दास तुम जमना, गंगा गये दास तुम गंगा।
वह निर्लज्ज नहीं शर्माता- खड़ा चौपले पर जो नंगा॥

नमक जलों पर छिड़क रहे तुम, कुछ तो रहम करो दुखियों पर।
शाप दे दिया अगर तड़प कर- ठुकराये जाओगे दर दर॥
परिवर्तन की इस वेला में- बापू खेल बहुत से खेले।
नयी सृष्टि करते चलते थे, व्यष्टि समष्टि स्वरूप अकेले॥

सेनानी "सुभाष बाबू" ने- कहा कि सेवा मुझे बताओ!
बापू बोले, काँगरेस के- दिये दण्ड को वीर निभाओ!!
लेकिन कर्मवीर को कोई- रोक नहीं सकता करने से।
उसको कौन मार सकता है- जो न कभी डरता मरने से??

स्वतन्त्रता के आन्दोलन में- अपनी रीति नीति से आया।
वह सपूत सूरज सा निकला, शूर न शेरों से घबराया॥
नगर नगर में, ग्राम ग्राम में- शहर शहर में जीवन फूका।
लक्ष्य एक, पथ अलग अलग था, शेर नहीं जीवन में चूका॥

जाते जहाँ 'सुभाष' वहीं पर- जनता उमड़ उमड़ कर आती।
कविता सेनानी 'सुभाष' पर- श्रद्धा के दो फूल चढ़ाती॥
भाषण में की सिंह गर्जना- हमें तोड़नी हैं हथकड़ियाँ।
भारत माता के मन्दिर में- सुलग रहीं भीषण फुलझड़ियाँ॥



अंग्रेज़ों का खूनी पंजा– आओ करदें अलग शक्ति से।
देश देश में दीप जलायें– अपनी प्यारी देशभक्ति से॥
हिन्दुस्तान छोड़ दें गोरे, अब न एक क्षण को भी ठहरें।
प्यारा हिन्दुस्तान हमारा, लाल क़िले पर झण्डे लहरें॥

करने या मरने निकले हैं– नारा है 'जय हिन्द!' हमारा।
छोड़ो, हटो दूर अंग्रेज़ो! घर है सागर पार तुम्हारा॥
व्यापारी बन कर आये थे, हमने दिया अतिथि को आदर।
वे अंग्रेज़ तुले बैठे हैं– भारत के टुकड़े खा खा कर॥

सावधान ओ ब्रिटिश! सँभल तू, मैं भी भीम ब्रह्मचारी हूँ।
मैं काली का अमर उपासक, एक, करोड़ों को भारी हूँ॥
दाँये हैं हनुमान हमारे, सर पर रामचन्द्र की माया।
मेरे जननायक गाँधी की– चारों ओर छा रही छाया॥

चक्रव्यूह चाहे जितने रच– हम न फँसेंगे किसी फाँस में।
जिनकी पद रज अमर ज्योति है– त्रिगुण पिता उड़ रहे बाँस में॥
यही तिरंगा झण्डा लेकर– मैं तुझ से लड़ने आता हूँ।
सँभल लुटेरे! सावधान हो! सीमा पर भिड़ने आता हूँ॥

और ईंट के उत्तर में मैं– पत्थर फेंक फेंक मारूँगा।
तूने ज्वाला सुलगाई है, मैं ज्वाला में जल डालूंगा॥
दुखियों की आहों से दहकी– चारों ओर भयानक ज्वाला।
उन लपटों में चमक रहा है– भारत माँ का आज उजाला॥

बुझा बुझा! मैं आग आ रहा, रोक रोक! तूफ़ान आ रहा।
आँख खोल ओ दिन के अन्धे! पकड़ मुझे, मैं छूट जा रहा॥
मैंने तोड़ फोड़ डाली हैं– तेरे बन्धन की हथकड़ियाँ।
वायु वेग सा आज चला मैं, याद मुझे भी हैं अंकटियाँ॥

अरे शिकारी! जाल हटा ले, छोड़ छोड़ सोने की चिड़िया।
दिखा न अपने और चरित्तर, मिट्टी की चमकीली तिरिया॥
पंख फड़फड़ा रहा कबूतर, चटख रहीं पिँजरे की तिलियाँ।
देख! सींकचे गले जा रहे, टूट टूट गिरतीं हथकड़ियाँ॥







देख, उधर दुर्गे देवी ने- उठा लिया है अपना खाण्डा।
जले दूध के बैठे हैं हम, बहुत दिनों चोरों ने डाण्डा॥
तूने बन्द किया पिँजरे में, मैं यह पिँजरा तोड़ उड़ूँगा।
जिन हाथों ने पकड़ा मुझको- मैं वे हाथ मरोड़ उड़ूँगा॥



सारी दुनिया रही देखती- एक दिवस वह हंस उड़ गया।
ताले बन्द रहे कारा के, भारत का अवतंस उड़ गया॥
सरस्वती ने पंख लगाये, वायु वेग से चला सिपाही।
धरती से अम्बर में पहुँचा- पलक मारते ही वह राही॥

जो युगपरिवर्त्तक होते हैं- उन को कौन रोक सकता है?
जो बढ़ने वाले राही हैं- उन को कौन टोक सकता है?
कुछ दिन घर के अन्दर रह कर- उसने दाढ़ी मूछ बढ़ाई।
'कलकत्ते' से बैठ कार में- एक दिवस निकली परछाई॥

भर 'पठान' का वेश चले वे, चले रेल में 'बर्दवान' से।
साथी एक अंगरक्षक था, तीर छूट निकला कमान से॥
पथ में सेनानी 'सुभाष' को- पुलिस गुप्तचर ने आ घेरा।
फाउरटेनपेन दे उस को- दूर किया वह घोर अँधेरा॥

एक नोट में मान गुप्तचर- छोड़ गया लाखों का हीरा।
बँधे हुए पत्थर पंखों से, उड़ता था पाँखों का हीरा॥
'कुरण' पार पहुँचे यमुना के, बन्दी हुए "कंस" के पहरे।
जननायक के सेनानी के- देश देश में झण्डे लहरे॥

"सुरसा" डायन रही देखती, सिन्धु-पार "हनुमान" हो गये।
मेरे मृत्युंजय की जय हो, पल में अन्तर्द्धान हो गये॥
खबर छप गई अखबारों में- उधर गया वह, इधर गया वह।
पुलिस पागलों सी कहती थी- किधर गया वह? किधर गया वह?

जिससे पूछो वह कहता था- कहाँ गया वह? कहाँ गया वह?
उड़ा हवा में, तिरा सिन्धु में, यहाँ गया वह, वहाँ गया वह॥
दल बादल से गोरे छाये, पर उनको छल गया छलावा।
चला "जियाउद्दीन" जा रहा, धूलि झोंक दे चला भुलावा॥



आँखों के आगे जाता वह, देखो दीपक तले अँधेरा।
गोरा बोला, 'पकड़ो! पकड़ो! ढूँढो! ढूँढो! किधर सवेरा?'
कण कण से यह प्रतिध्वनि निकली- जननायक के सिद्धान्तों में।
सेनानी 'सुभाष' की जय में, भारत के सुन्दर प्रान्तों में॥

जिस भारत को बन्दी करके- तुमने कारागृह में डाला।
जिसकी स्वतन्त्रता हर तुमने- अपना हृदय दिखाया काला॥
वह स्वतन्त्रता देवी लेने- सेनानी "सुभाष" निकला है।
मुट्ठी बँधी रही हाथों की, वह मुट्ठी में से फिसला है॥

जिसको सच्ची लगन लगी है- वही तोड़ लाता है तारे।
जिसे भरोसा उस खेवट पर- लगती उसकी नाव किनारे॥
महा सिन्धु में कूद पड़ा वह, तैर तैर कर चला नाव सा।
लहर लहर में गूंज उठा वह- महाकाव्य के शिवम् भाव सा॥

जागृति जननायक की जय वह- काँगरेस से जिसे निकाला।
काँगरेस का मुकुट बना वह, वही वीर बन गया उजाला॥
गुरु गाँधी की किरणें निकलीं, अन्धकार अब रह न सकेगा।
सावधान साम्राज्यवाद! हो, खून धरा पर बह न सकेगा॥

सीमा पर ललकार रही है- सेनानी की शक्ति भवानी।
मचल रही है, उछल रही है- उसकी उठती हुई जवानी॥
इतिहासों में अमर रहेगी- सेनानी की अमर कहानी।
ज्योतिर्मय जीवन 'सुभाष' का, गर्ज रहा सागर का पानी॥

दुष्ट दुष्टता से दबता है, ज़हर ज़हर से उतरा करता।
कायरता मरती है जग में, वीर अनाचारों से डरता॥
जब न पिशाच प्रेम से माने- उसे मनाओ खड्ग-धार से।
पर तलवार चले पापों पर- सत्य अहिंसा के विचार से॥

दो दो हाथों की इच्छा है, अस्त्र शस्त्र बल लिये खड़ा वह।
ब्रिटिश-भेड़िये की सेना से- काली का वरदान लड़ा वह॥
'नेता जी' बन गये वहाँ वे, सेना का संगठन कर लिया।
फूस इकट्ठा था दुनिया में, उसने आ अंगार धर दिया॥











खाई फाँदी, पर्वत लाँघे, सागर पार सुभाष आ गया।
चट्टानों पर चढ़ता चढ़ता– महा सिन्धु का पुलिन पा गया॥
ब्रिटिश-शत्रुओं के बल से मिल– 'बोस' गये लेने स्वतन्त्रता।
इधर देश में गाँधी बाबा– दबा रहे थे ब्रिटिश तन्त्रता॥

उधर ब्रिटिश सरकार, इधर थी– काँगरेस जनता की भाषा।
उधर दुष्टता और इधर थी– जनता की सच्ची अभिलाषा॥
उधर राजनीतिज्ञ, इधर थे– गुरु गाँधी के सच्चे चेले।
चौड़े में शतरंज बिछी थी, 'चर्चिल' से गाँधी जी खेले॥

'कृपलानी' 'पटेल' 'राजा जी'– देते थे बाज़ी पर बाज़ी।
बार बार 'लिनलिथगो' खेले– हम से हार हार कर बाज़ी॥
और 'जवाहर लाल' अकेला– सब से जीत रहा था पाला।
स्वर्ग-सुन्दरी "कमला देवी"– पहिनाने आई जय माला॥

आशीर्वाद स्वर्ग से भेजा– जगमाता 'स्वरूप रानी' ने।
मूक प्रेम से चरण पखारे– कवि की आँखों के पानी ने॥
प्यारे 'मोतीलाल' लाल पर– स्वर्गलोक में थे न्यौछावर।
सब मिल न्यौछावर होते थे– जननायक गाँधी बाबा पर॥

जननायक की ज्योति जगत में– ज्योति उल्लुओं को भी देती।
दुनिया कभी फूल बोती है, कभी हाथ में काँटे लेती॥
गंगा की निर्मल धारा सा– उनका सत्याग्रह चलता था।
उनके हर डग से हर पग पर– युग युग का दीपक जलता था॥

सत्याग्रह के आन्दोलन में– जब कि "बड़े दिन" की तिथि आई–
नौ दिन तक सत्याग्रह रोका, सद्भावों की बेल खिलाई॥
अंग्रेज़ों के प्रति बापू के– सदा रहे सद्भाव सत्यमय।
वह न किसी का बुरा चाहता– जो हो गया "राम धुन" में लय॥

जग में गाँधी ने जन जन को– गीता का उपदेश दिया है।
रंग भरी नश्वर दुनिया को– जीवन का सन्देश दिया है॥
वैयक्तिक सत्याग्रह उनका– मृदुल शान्त गति से चलता था।
चहल पहल से झगड़ा निकला, जनता पर पंखा झलता था॥



सत्याग्रह फैला भारत में, गाँधी जी ने जेलें भर दीं।
अंग्रेज़ी तोपों के आगे- हँसते हुए छातियाँ कर दीं॥
सुनते थे जयघोष यही बस- गाँधी जी की जय हो! जय हो!
भारत माता की जय जय जय, सत पथ पर निर्बल निर्भय हो॥

निर्दयता से किये गये थे- सत्याग्रहियों पर जुर्माने।
किन्तु पुजारी सीख चुके थे- अंग्रेज़ों के हण्टर खाने॥
भावुक देशभक्त दीवाने- नहीं गोलियों से डरते थे।
गाँधी जी की आज्ञा से वे- गा गा कर जेलें भरते थे॥

जेलों में डण्डल की भुजी- बड़े चाव से खाते थे वे।
कच्ची पक्की सात रोटियाँ- बड़े प्रेम से पाते थे वे॥
बटते बान, चलाते कोल्हू, पीते थे आँखों का आसव।
बड़े भाव से भजते थे वे- बन्दीगृह में "रघुपति राघव"॥

चक्की पीस पीस कहते थे- महाक्रान्ति हो! महाक्रान्ति हो!
और क्रान्ति के बाद विश्व में- अमर शान्ति हो! अमर शान्ति हो!!
ऊँचा उड़ता रहे शान से- विजयी विश्व तिरंगा प्यारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा- झण्डा ऊँचा रहे हमारा॥

कितनों ही ने तड़प तड़प कर- बन्दीगृह में प्राण दे दिये।
और उसी क्षण उन वीरों ने- जन जन में अवतार ले लिये॥
तार किसी को मिला जेल में- माँ मर गई, मर गया बेटा।
और किसी का मिली सूचना- दुनिया ने सब प्यार समेटा॥

पत्र किसी को मिला जेल में- तेरी निधि हो गई पराई।
कवि यह मूक रुदन सुनता था- भगिनी भूल न जाना भाई!
श्वासों में उड़ चली वेदना, उड़ समीर में मँडराती थी।
दुःखों से धरती हिलती थी, ठण्ढी छाती थर्राती थी॥

फूलों सा तन किन्तु देवियाँ- कम्बल ओढ़ ओढ़ सोती थीं।
कितनी ही पति के वियोग में- घर पर पड़ी पड़ी रोती थीं॥
काँप गये अंग्रेज़ पाप से, धीरे धीरे लगे छोड़ने।
कुछ कुछ मीठी भाषा बोले, फिर से याड़ी लगे जोड़ने॥











जननायक

खाई फाँदी, पर्वत लाँघे, सागर पार सुभाष आ गया।
चट्टानों पर चढ़ता चढ़ता– महा सिन्धु का पुलिन पा गया॥
ब्रिटिश-शत्रुओं के बल से मिल– 'बोस' गये लेने स्वतन्त्रता।
इधर देश में गाँधी बाबा– दबा रहे थे ब्रिटिश तन्त्रता॥



उधर ब्रिटिश सरकार, इधर थी– काँगरेस जनता की भाषा।
उधर दुष्टता और इधर थी– जनता की सच्ची अभिलाषा॥
उधर राजनीतिज्ञ, इधर थे– गुरु गाँधी के सच्चे चेले।
चौड़े में शतरंज बिछी थी, 'चर्चिल' से गाँधी जी खेले॥

'कृपलानी' 'पटेल' 'राजा जी'– देते थे बाज़ी पर बाज़ी।
बार बार 'लिनलिथगो' खेले– हम से हार हार कर बाज़ी॥
और 'जवाहर लाल' अकेला– सब से जीत रहा था पाला।
स्वर्ग-सुन्दरी "कमला देवी"– पहिनाने आई जय माला॥

आशीर्वाद स्वर्ग से भेजा– जगमाता 'स्वरूप रानी' ने।
मूक प्रेम से चरण पखारे– कवि की आँखों के पानी ने॥
प्यारे 'मोतीलाल' लाल पर– स्वर्गलोक में थे न्यौछावर।
सब मिल न्यौछावर होते थे– जननायक गाँधी बाबा पर॥

जननायक की ज्योति जगत में– ज्योति उल्लुओं को भी देती।
दुनिया कभी फूल बोती है, कभी हाथ में काँटे लेती॥
गंगा की निर्मल धारा सा– उनका सत्याग्रह चलता था।
उनके हर डग से हर पग पर– युग युग का दीपक जलता था॥

सत्याग्रह के आन्दोलन में– जब कि "बड़े दिन" की तिथि आई–
नौ दिन तक सत्याग्रह रोका, सद्भावों की बेल खिलाई॥
अंग्रेज़ों के प्रति बापू के– सदा रहे सद्भाव सत्यमय।
वह न किसी का बुरा चाहता– जो हो गया "राम धुन" में लय॥

जग में गाँधी ने जन जन को– गीता का उपदेश दिया है।
रंग भरी नश्वर दुनिया को– जीवन का सन्देश दिया है॥
वैयक्तिक सत्याग्रह उनका– मृदुल शान्त गति से चलता था।
चहल पहल से झगड़ा निकला, जनता पर पंखा झलता था॥



सत्याग्रह फैला भारत में, गाँधी जी ने जेलें भर दीं।
अंग्रेज़ी तोपों के आगे- हँसते हुए छातियाँ कर दीं॥
सुनते थे जयघोष यही बस- गाँधी जी की जय हो! जय हो!
भारत माता की जय जय जय, सत पथ पर निर्बल निर्भय हो॥

निर्दयता से किये गये थे- सत्याग्रहियों पर जुर्माने।
किन्तु पुजारी सीख चुके थे- अंग्रेज़ों के हण्टर खाने॥
भावुक देशभक्त दीवाने- नहीं गोलियों से डरते थे।
गाँधी जी की आज्ञा से वे- गा गा कर जेलें भरते थे॥

जेलों में डण्डल की भुजी- बड़े चाव से खाते थे वे।
कच्ची पक्की सात रोटियाँ- बड़े प्रेम से पाते थे वे॥
बटते बान, चलाते कोल्हू, पीते थे आँखों का आसव।
बड़े भाव से भजते थे वे- बन्दीगृह में "रघुपति राघव"॥

चक्की पीस पीस कहते थे- महाक्रान्ति हो! महाक्रान्ति हो!
और क्रान्ति के बाद विश्व में- अमर शान्ति हो! अमर शान्ति हो!!
ऊँचा उड़ता रहे शान से- विजयी विश्व तिरंगा प्यारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा- झण्डा ऊँचा रहे हमारा॥

कितनों ही ने तड़प तड़प कर- बन्दीगृह में प्राण दे दिये।
और उसी क्षण उन वीरों ने- जन जन में अवतार ले लिये॥
तार किसी को मिला जेल में- माँ मर गई, मर गया बेटा।
और किसी को मिली सूचना- दुनिया ने सब प्यार समेटा॥

पत्र किसी को मिला जेल में- तेरी निधि हो गई पराई।
कवि यह मूक रुदन सुनता था- भगिनी भूल न जाना भाई!
श्वासों में उड़ चली वेदना, उड़ समीर में मँडराती थी।
दुःखों से धरती हिलती थी, ठण्डी छाती थर्राती थी॥

फूलों सा तन किन्तु देवियाँ- कम्बल ओढ़ ओढ़ सोती थीं।
कितनी ही पति के वियोग में- घर पर पड़ी पड़ी रोती थीं॥
काँप गये अंग्रेज़ पाप से, धीरे धीरे लगे छोड़ने।
कुछ कुछ मीठी भाषा बोले, फिर से गाड़ी लगे जोड़ने॥









जनायक



भारत छोड़ा नहीं उन्होंने, कारागृह से बन्दी छोड़े।
छोड़े देशभक्त कारा से- मृदु मानस के फूल निचोड़े॥
कोई पिँजरे से छूटते ही- पास प्रेयसी के जब आया-
चिता जल चुकी थी क़िस्मत की, रोता ढेर राख का पाया॥

मिट्टी खिसक गई तलवों की, धरती हिली, हिलीं दीवारें।
जहाँ नीड़ था भावुक खग का- गिरी पड़ी थीं वे मीनारें॥
जिन नयनों में मन बन्दी था- उनमें जलती देखी ज्वाला।
जिसके दानों में पूजा थी- टूट चुकी थी अब वह माला॥

जहाँ प्यार से फूल चढ़ाये- वहाँ भयानक शूल गड़े थे।
जहाँ सुधा बरसा करता था- वहाँ जले अंगार पड़े थे॥
जहाँ पुजारिन कहती थी यह- मैं उपासिका, तुम कवि मेरे।
मेरे श्वासों में तुम ही हो, तुम ही मेरे स्वर्ण-सवेरे॥

मैं हूँ भक्ति और तुम ईश्वर, मैं पंकज, तुम दिव्य दिवाकर।
मैं कविता, तुम कवि हो मेरे, मैं लहरी, तुम सिन्धु सुधाकर॥
किन्तु लहर का नाता ही क्या! आती और चली जाती है।
सिन्धु शक्ति से वही लहर फिर- प्रतिपल तट से टकराती है॥

गाती सागर के जीवन में, किन्तु न ज्वाला बुझ पाती है।
जल में भी ज्वाला होती है, आँसू में ज्वाला गाती है॥
वह वियोग की ज्वाला जिसको- दुनिया कहती है बड़वानल।
सिन्धु-लहरियों! मत लहराओ, गिरते हैं ये आँसू गल गल॥

छूट 'जवाहर लाल' जेल से- भाव भरे जलसे में बोले।
अभी बहुत मंज़िल बाक़ी है, अभी न माँ के बन्धन खोले॥
अभी न ये तूफ़ान हटे हैं, अभी पार करना है सागर।
हमें नयी रचना करनी है- स्वतन्त्रता देवी को पाकर॥

छोटे पिँजरे से छूटकर मैं- आज बड़े पिँजरे में आया।
अभी उन्हीं के पंजे में हूँ, अभी न मैं स्वाधीन कहाया॥
भारत बड़ा जेलख़ाना है, बँधे हुए हैं पैर यहाँ भी।
अभी ग़ुलाम कहाते हैं हम- जाते हैं जिस ओर जहाँ भी॥









हिंसा दुःख विनाश घृणा की- इस दुनिया में चहल पहल है।
जकड़े पड़े बेड़ियों में हम, सर पर उनका राजमहल है॥
काँगरेस के प्रस्तावों पर- हम दृढ़ता से चलते जायें।
गाँधी जी के पदचिह्नों पर- मंज़िल मंज़िल बढ़ते जायें॥

जल्दी करनी ठीक नहीं है, चलो साथियो! सँभल सँभल कर।
विजय-मार्ग पर बढ़े चलो तुम- फूल चढ़ाते सत्याग्रह पर॥
गाँधी जी बोले कि "एमरी"- घाव हमारे हरे कर रहे।
जो पहिले ही जले पड़े हैं- वे उस विष से और मर रहे॥

ब्रिटिश बोलता भोंपू में से- भारत अंग्रेज़ों का साथी।
भारत की ज़बान में ताले, छाती पर बैठा है हाथी॥
पंख काट कर कहते हैं वे- पैर बँधे हैं, फाँक नहीं हैं।
आँख मीच कर कहते हैं वे- अब माथे पर आँख नहीं हैं॥

काँगरेस को कहते हैं वे- जनता की आवाज़ नहीं है।
झूठ कह रहे हैं दुनिया में- बेज़बान नाराज़ नहीं है॥
भर्ती खूब ठाठ से होती, चन्दा हमें खूब मिलता है।
कहनेवाले! बोल सँभल कर, तेरा राजमहल हिलता है॥

दमनचक्र से अन्न लूट कर- भूखों को भर्ती करते हो।
चन्दा दमनचक्र से लेते, पाप कर्म से कब डरते हो??
बाँध बाँध पेटों से पट्टी- तुमको 'वारफण्ड' देते हैं।
शोषित, संज्ञाहीन बिचारे- गिर गिर ठोकर खा लेते हैं॥

जनता तुम्हें एक कौड़ी भी- चन्दा नहीं हृदय से देती।
दिखा दिखा बन्दूक़ डरा कर- पुलिस बिचारों से ले लेती॥
लूट चुके तुम बहुत आज तक, भारत में छोड़ा ही क्या है?
तोड़ दिया भारत माँ का मन, कहते हो तोड़ा ही क्या है!

जहाँ दूध घी की नदियाँ थीं- वहाँ आज आँसू बहते हैं।
जहाँ कि मानवता रहती थी- वहाँ चोर डाकू रहते हैं॥
जो औरों को पहिनाते थे- वे ही आज खड़े हैं नंगे।
तुमने वह विष फैलाया है- भारत में होते हैं दंगे॥











जननायक



तुमने ही तो फैलाई है- महालूत की यह बीमारी।
तुमने ही तो होली खेली- भर भर शोणित की पिचकारी॥
वह भी युग था जब भारत में- घड़ियों के घी बिकते देखे।
अब गउओं के मांस यहां पर- हा! सोकों पर सिकते देखे॥

वह भी युग था जब गउओं को- बन बन कृष्ण चराया करते।
बच्चे रोटी पर मक्खन रख- जब घर घर में खाया करते॥
अब वह भी युग देख रहे हैं- घृत जब नहीं देखने तक को।
दर्शन तक को दूध नहीं अब, फोड़ रहे खाली बर्तन को॥

घासलेट या कोटोजम है- दिक़ के रोग फैलते जिससे।
मन का मरहम मुझे बनाना, तोला भर घी माँगूँ किससे?
वे भी तो मनुष्य कहलाते- जो गउओं को खाया करते।
घोड़े खाते, खच्चर खाते- फिर भी सभ्य कहाया करते॥

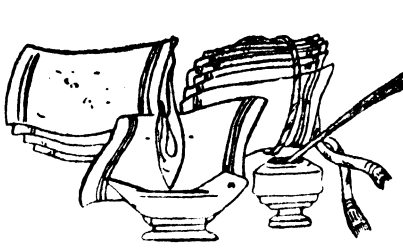
कलियुग का विकराल रूप यह, महाकाल या महानाश है।
मुँड पकड़ मानवता रोती, सिसक रहा हा! श्वास श्वास है॥
धरती ही में शक्ति शेष है, सूरज ही में शेष उजाला।
जननायक! ठहरो, तुम में भी- देख रहा है देश उजाला॥

कवि की भावमंजरी बोली, फूल यही बोले पूजा के।
श्रद्धा से सम्मित सुषमा ने- दर्वाज़े खोले पूजा के॥
मन्दिर में देखे जननायक, आँखों में थे भक्त पुजारी।
मस्तक पर पग-चन्दन मल कर, जनता ने आरती उतारी॥









चतुर्विंश सर्ग



'शान्ति निकेतन' में कवि-केसर–
सौरभ रंग बिखेर रही है।
भंग चढ़ी शिव की कविता यह–
शान्त तरंग बिखेर रही है॥

काव्य-कला पर चित्र बना रवि–
बाँट रहे जग को उजियाली।
सुन्दर भाव भरी रचना पर–
अंकित सावन की हरियाली॥

बीन यहाँ बजती रस रंजित,
प्रेम भरी झनकार यहाँ है।
चाँद चकोर मिले विरही मन,
संचित भावुक प्यार यहाँ है॥

चातक मोर मराल यहाँ पर,
मेघ मयंकित पाँख यहाँ हैं।
रास जहाँ, मधुमास जहाँ अलि!
वे रस पूरित आँख यहाँ हैं॥

शान्ति निकेतन में जननायक–
या कि स्वयं भगवान पधारे।
स्वागत में मृग नाच रहे दृग–
या कि धरा पर चाँद सितारे॥









जननायक

पंख लगा कविता उड़ती मृदु,
कोयल शान्त सितार बजाती।
स्वागत में रवि-रूप खड़े कवि-
काव्य-कला प्रिय प्यार बिछाती॥



कवि रवीन्द्र की मधुर कल्पना- जननायक की जय जय बोली।
'शान्ति निकेतन' में सुषमा ने- मली भाल पर निर्मल रोली॥
स्वागत! स्वागत!! जननायक का, गूँज रही थी गीतों में लय।
महाकाव्य में कविता बोली- मेरे जननायक की जय जय॥

कुछ पल मुक्त कार्य से रह कर- "वर्धा" चले गये जननायक।
स्वागत में हरियाली बोली- जय जनता! जय जय जगपालक!!
हरी भरी खेतियाँ गाँव में- गा गा कर मधु गीत रिझातीं।
गा गा गीत कृषक बालायें- जग की जलती आग बुझातीं॥

हरियाली का स्वागत करता- गा गा गीत चरस पर माली।
सरसों के पीले फूलों में- बिखर रही थी मधुर उजाली॥
मानो धरती ने स्वागत में- फूलों के पावड़े बिछाये।
तरुओं ने श्रद्धा से झुक कर- जननायक पर पत्र चढ़ाये॥

कभी गाँव में चर्खा काता, कभी कातते थे वे तकली।
कृषकों की प्यासी खेती पर- छायी थी मदमाती बदली॥
बदली ने घावों को धोया, बदली आई, दुनिया बदली।
उस युगसृष्टा के दर्शन को- गाँव गाँव की जनता मचली॥

जाते जहाँ चरण बापू के- जनता उमड़ उमड़ कर आती।
जहाँ कहीं पल भर को बैठे- बदली घुमड़ घुमड़ कर गाती॥
बाँये "बा" माता चलती थी, झंकृत वीणा के तारों सी।
झरते झरनों सी रुनझुन वह, रिमझिम रिमझिम झनकारों सी॥

वे थे त्याग, तपस्या थी वह, युगाधार वे, वह थी रचना।
वे थे चाँद, चाँदिनी थी वह, वे थे राम, और वह रटना॥
बापू भाव और वह भाषा, वे साहित्य और वह शैली।
अपने जीवन के झरनों से- धोते थे वे दुनिया मैली॥







मेरे विश्व-वन्द्य बापू की- गाँव गाँव में लहरें लहरीं।
राष्ट्रपिता के पद-चिह्नों पर- चारों ओर ध्वजायें फहरीं॥
रचनात्मक पथ पर चलती थी- जननायक की मधुर मण्डली।
यह वह घोर विनाश काल था- मची हुई थी जबकि खलबली॥

पग-पंकज सूरज चूम रहा,
परिवर्त्तन के घन घूम रहे।
चटिया पर दीप धरा किसने?
चरणामृत पा दृग झूम रहे॥
किस केसर का यह रंग सखी!
जिससे पलकें पल में बदलीं।
अलि! अंजन खंजन से दृग पा-
छल सी पुतलीं जल में बदलीं॥



महायुद्ध के जलते बादल- गर्ज रहे थे, बरस रहे थे।
धधक रही थी आग, और हम- स्वतन्त्रता को तरस रहे थे॥
मुँह फाड़े 'जापान' खड़ा था, दाँत निकाले 'इटली' वाला।
चेत रही थी रण की चण्डी, धधक रही थी दुर्द्धर ज्वाला॥
यौवन में मदमस्त "रूस" पर- जर्मन ने कर दिया आक्रमण।
मदमाते साम्राज्यवाद में- लपटें दहक रही थीं क्षण क्षण॥
धन्य धन्य वीरता 'रूस' की, वज्र बन गया जो मोर्चे पर।
लड़ता रहा 'जर्मनों' से जो- सीनों की दीवार बना कर॥
भौगोलिक अध्ययन उन्हीं का- उन्हें युद्ध में जिता रहा था।
"नीपर पैटरोस" बिजली का- बाँध युद्ध में टूट बहा था॥
सब से बड़ा बाँध बिजली का- 'रूस' तोड़ पीछे हट जाता।
अपनी चोट लगा देता था, चोट नहीं 'जर्मन' की खाता॥
'फ्राँस' 'मिस्र' 'पेरिस', 'रशिया' में- लिखी खून से नयी कहानी।
बड़े बड़े भारी मोर्चे थे, 'जर्मन'- केसर से था पानी॥
यह है 'लेनिनग्राड' जहाँ पर- घर घर में घमसान हुआ था।
यह है 'स्टालिनग्राड' जहाँ पर- वीरों का बलिदान हुआ था॥





जननायक

उस दृढ़तर मोर्चे पर आई- याद मुझे "हल्दीघाटी" की।
वहाँ वीरता लड़ती देखी- उसी शान, उस परिपाटी की॥
इंच इंच पर, ईंट ईंट पर- लड़ते देखे वीर सिपाही।
ईंट बचा लेते थे अपनी- छाती पर कर सहन तबाही॥



एक नया "चित्तौड़ दुर्ग" था, "लेनिन" का लोहा लड़ता था।
'हिटलर' के भारी हाथी से- 'स्टालिन' का घोड़ा लड़ता था॥
छिने कारतूसों से सीने, खड़े रहे पर सीना ताने।
वह अद्भुत वीरता वहाँ की- जहाँ खून में चले नहाने॥

बिजली चमक चमक गिरती थी, क्षात्र-धर्म हुंकार रहा था।
विद्युत में वीरत्व गर्ज कर- मोर्चे पर ललकार रहा था॥
रक्तिम चादर तनी हुई थी, मानो भूखी खड़ी भवानी।
खून बरसता था धरती पर, धरती माँग रही थी पानी॥

"लेनिन" के निर्माण भवन पर- 'हिटलर' के बम बरस रहे थे।
धरती के सुन्दर महलों पर- गोले धम धम बरस रहे थे॥
यह लो उस रशियन सेना पर- फ़ौजें जर्मन वाली झपटीं।
वायुयान छाये अम्बर में, पंद्रह बियाँ निराली झपटीं॥

अँधाधुन्ध गोले बरसाते, खचपच खचपच काँय काँय थी।
दाँये बाँये, आगे पीछे, ऊपर नीचे धाँय धाँय थी॥
तूफ़ानों के प्रबल थपेड़े- चट्टानों से टकराते थे।
पर्वत हिलते नहीं हवा से, ईंटें रोड़े उड़ जाते थे।

किन्तु आज भी वही पुराना- राग अलाप रहे थे गोरे।
भारत ने स्वतन्त्रता माँगी, दिये उन्होंने उत्तर कोरे॥
कुछ दिन बाद 'क्रिप्स' लंदन से- गुड्डा एक बनाकर लाये।
बोले, लो यह है स्वतन्त्रता, हम स्वतन्त्रता देने आये॥

अंग्रेज़ों की राजसभा ने- भेजी है सौगात तुम्हें यह।
बापू बोले, 'क्रिप्स'! दया कर, शीघ्र विलायत जाकर यह कह-
'बालक नहीं रहा अब भारत, उसे न कोई बहका सकता।'
जननायक के जल के आगे- आग न कोई दहका सकता॥







'यहाँ चैक वह लाये जिसकी- वर्षों पहिले अवधि बीत ली।
जीत उसी की होती जिसने- जग में सबकी प्रीति जीत ली॥
यह वह चैक कि जिसके अन्दर- पल भर की भी अवधि न बाकी।
बीत चुकी तारीख़ कभी की, घर लेजा यह गुड्डा ख़ाकी॥'

'क्रिप्स' बनाने आये थे, पर- उल्टा खींच दिया बापू ने।
जिसमें विष की मसक भरी वह- गुड्डा भींच दिया बापू ने॥
घाव बहुत से भारत में थे, बापू मरहम पट्टी करते।
सुनते थे जन जन की पीड़ा, घाव घाव पर फाये धरते॥



पीड़ा घरा की जलती चिता सी।
मसान जैसे, भय छा रहे थे॥
रोती खड़ी दीन मनुष्य-छाया।
मनुष्य में थी अति घोर ज्वाला॥

उद्यान सूखे, तरु रो रहे थे।
तड़ाग सूखे घन सो रहे थे॥
बाँधे सितारे जलती शिला से।
किसान रोता, कवि रो रहा था॥

आँसू जले से बहते पिपासे।
प्रभात में भी रजनी-उदासी॥
रोता रहा मैं, हँसते रहे वे।
देखो! उषा में ढलता सितारा॥

निशान बोला, पथ टेरता है।
आओ! कहीं से ध्वनि आ रही है॥
बापू सभी के पथ-दीप से हैं।
पीड़ा सभी की सुनते विधाता॥

राम-रूप पा राम-भक्त को- कवि के बहते आँसू बोले-
बापू! सुनो और तुम देखो- मेरे अन्तस्तल के शोले॥
शान्ति नहीं मेरे जीवन में, दहक रहे नभ में अंगारे।
मानस का प्रतिबिम्ब देख तू, काव्य-गगन के ओ ध्रुव तारे!







जनायक

मुस्काते ही तोड़ ले गये, फूल बिचारा बोल न पाया।
जड़ चेतन का हँसना रोना- अपनी आँखों में भर लाया।

मुझे डाह ने रोका पर मैं- सीधा चलता रहा राह पर।
चाह बना फिर तृप्ति बन गया- मन से निकली हुई आह पर॥
राजमहल से झोंपड़ियों तक- आँसू चुगे, जलाये दीपक।
मैंने रोज़ जलाये लेकिन- जग ने रोज़ बुझाये दीपक॥

मन में मन की व्यथा छिपाये- जग को सुधा पिलाने आया॥
मुस्काते ही तोड़ ले गये- फूल बिचारा बोल न पाया॥



राम! भिखारी भीख माँग कर- भर लेता है पेट शाम को।
पर जब कवि की भूख सताती- कर लेता है याद राम को॥

नत मस्तक हो, हाथ जोड़ कर- सच का सुख माँगा करता है।
डरता नहीं किसी से भी कवि, कोप तुम्हारे से डरता है॥
राम! कहो, यह क्रोध तुम्हारा- क्यों कवि की दुनिया पर छाया?
पर तुम सब अच्छा करते हो, अपरम्पार तुम्हारी माया॥

राम! तुम्हारी करी नौकरी, कैसे जाऊँ और काम को?
राम! भिखारी भीख माँग कर- भर लेता है पेट शाम को॥

राम! जलता और ढलता सूर्य हूँ मैं।
राम! बिजली सी तड़प हूँ, मेघ हूँ मैं॥

प्रेम से पिघला हुआ पाषाण हूँ मैं।
भूख से मरता हुआ कंकाल हूँ मैं॥
दृगों से बहती हुई जलधार हूँ मैं।
बीच में टूटी हुई पतवार हूँ मैं॥

राम! जलता और ढलता सूर्य हूँ मैं।
राम! बिजली सी तड़प हूँ, मेघ हूँ मैं॥







बाल विधवा के हृदय की आग हूँ मैं।
मूक अन्तर की सतत पहिचान हूँ मैं॥
पैर से कुचला हुआ अभिमान हूँ मैं।
क्रान्ति के पथ पर खड़ा षड्यन्त्र हूँ मैं॥

राम! जलता और ढलता सूर्य हूँ मैं।
राम! बिजली सी तड़प हूँ मेघ हूँ मैं॥

राम! मैं अन्धे भिखारी का हृदय हूँ।
राम! मैं काली घटाओं का निलय हूँ॥
राम! उठती आँधियों का रुदन हूँ मैं।
राम! जलती हड्डियों का चित्र हूँ मैं॥

राम! जलता और ढलता सूर्य हूँ मैं॥
राम! बिजली सी तड़प हूँ, मेघ हूँ मैं।

फूल था, शृङ्गार था, पर शूल हूँ अब।
अर्चना था, पर घिनौना कीट हूँ अब॥
प्यार था, सम्मान था, अपमान हूँ अब।
लक्ष्य में फिरती हुई तक़दीर हूँ मैं॥

राम! जलता और ढलता सूर्य हूँ मैं।
राम! बिजली सी तड़प हूँ, मेघ हूँ मैं॥

राम! आशा से निराशा गर्त मैं हूँ।
राम! सब निर्दोष, दोषी आज मैं हूँ॥
राम! श्रद्धा से दया का मैं भिखारी।
राम! मैं गँवफ़ार हूँ, पतवार भी हूँ॥

राम! जलता और ढलता सूर्य हूँ मैं।
राम! बिजली सी तड़प हूँ, मेघ हूँ मैं॥"







जनायक

राम ! जलता और बुझता दीप हूँ मैं।
राम ! मिट्टी का सुनहरी रूप हूँ मैं॥

एक दिन जिसमें भरा था स्नेह जग ने।
एक दिन जी भर जलाया जिसे जग ने॥
एक दिन जो ज्योति था जग के हृदय की।
फूँक से कल वह बुझाया दीप जग ने॥

राम ! जलता और बुझता दीप हूँ मैं।
राम ! मिट्टी का सुनहरी रूप हूँ मैं॥



राम ! मैं खँडहर जहाँ दीपक नहीं जलता।
राम ! मैं ऊसर जहाँ आँसू नहीं फलता॥

एक दिन मुख ज्योति से मैं जगमगाता था।
एक दिन मधु बाँसुरी से स्वर मिलाता था॥
एक दिन शृंगार पर अधिकार था मेरा।
एक दिन हर दृष्टि में सत्कार था मेरा॥

आज मेरी हड्डियाँ जग रौंदता चलता।
राम ! मैं खँडहर जहाँ दीपक नहीं जलता॥

राम ! आज मैं बीच भँवर में चक्कर काट रहा हूँ।
दुखिया आँखों की सीपी से सागर पाट रहा हूँ॥

लहरों में धक्का दे नौका चली गई उस तट पर।
मैं तूफ़ानी जल प्रवाह में बहता नीचे ऊपर॥
पानी के बुल्ले सा हूँ मैं अभी डूब जाऊँगा।
लेकिन मरता मरता भी मैं गीत यही गाऊँगा—

अक्षर अक्षर में दुनिया को आँसू बाट रहा हूँ।
दुखिया आँखों की सीपी से सागर पाट रहा हूँ॥





जनाय क

राम ! बताओ !

कविता का वरदान दिया है, जलने का अभिशाप दिया क्यों ?
धनिकों की दुनिया में कवि को- दुखियों का सत्कार दिया क्यों ?
प्रेम नहीं देना था प्रभु ! यदि- प्रेमी हृदय दिया ही क्यों था ?
किसी वियोगी की मिट्टी से- क्या मेरा निर्माण किया है ?
पूर्व जन्म में क्या मैंने भी- मिले हुए दो मन तोड़े हैं ?
या कवियों की विरह व्यथा यह- बोल रही मेरे अन्तर से ?
आशावादी दुनिया में क्यों- कवि के लिये निराशा छोड़ी ?
आशा के प्रकाश में लाकर- क्यों नैराश्य गर्त में डाला ?
जो आँखों से बुझे न रो रो- क्यों इतने अंगार भर दिये ?
राम ! बताओ !



जलता जलता ढलता ढलता-
आँखों से पानी बरसाता-
पग पग पर दुलराया जाकर-
पग पग पर ठुकराया जाकर-
एक दिवस जा पहुँचा था मैं-
उस मंज़िल पर, जिस मंज़िल पर-
सोचा था आराम मिलेगा,
जीवन में कुछ शान्ति मिलेगी।
किन्तु वहाँ भी दुःख उठाये।
क्लेश और संघर्ष विश्व के-
एक साथ मुझ पर चढ़ आये।
अपने भी हो गये पराये।
कहीं नहीं सुख मिलता जग में-
सुख तो केवल राम नाम में ॥





जनाथक

अम्बर में उड़, सागर में घुस-
ऊँचे नीचे शैलों पर चल-
मैंने वह पथ ढूँढ निकाला-
जिस पर चल दो मन मिल जाते ?
जिस पर पत्थर दिल हिल जाते,
जिस पर भाग्य खिला करता है,
जिस पर प्रेम मिला करता है,
पर फुंकार मारता देखा-
उस पथ पर भी विषधर काला ॥



जग के गीले अरमानों पर- मैं प्यार चढ़ा कर हार गया।
पर पार न जा पाई दुनिया, मँझधार तैर उस पार गया ॥

मैंने तन मन से पूजा की, पर विश्व न हो पाया प्रसन्न।
धनवानों को बोरियाँ मिलें, भूखों को मिलता नहीं अन्न ॥
मिल जाते मोती बिन माँगे, माँगे से मिलती भीख नहीं।
क्यों राम तुम्हारे कानों तक- जाती दुखियों की चीख नहीं ?

क्यों रोना जीवन बना दिया, क्यों हँसने का अधिकार गया ?
जग के गीले अरमानों पर- मैं प्यार चढ़ा कर हार गया ॥

राम ! हिमालय बनी प्रेम से- चंचल हरिणी हवा हँसी सी।
पर रो रही प्रेम पिंजरे में- भावुक कवि की क़लम फँसी सी ॥

बहुत हिलाया लहरों ने पर- हिला नहीं कवि किसी लहर से।
तोड़ गया हिमगिरि का अन्तर- आ परदेशी किसी शहर से ॥
निर्मम दुनिया समय पड़े पर- आँख दिखाती है रह रह कर।
कैसे फिर तस्वीर न खींचें- आँखों के आँसू बह बह कर ॥

मृदुल बन्धनों में बन्दी मन, तड़प रही है क़लम फँसी सी।
राम ! हिमालय बनी प्रेम से - चंचल हरिणी हवा हँसी सी ॥





अति को पश्चात्ताप हुआ है– इस निर्धन से प्यार किया क्यों ?
मैं रह रह कर सोच रहा हूँ– अस्थिर का अधिकार लिया क्यों ?

निर्जनता में नीड़ बना कर– एकाकी गाता रहता मैं।
सूखी दुखी तृषित धरती पर– निर्मल निर्झर सा बहता मैं ।।
किन्तु प्यार की बीती बातें– जीवन में विष वृक्ष बो गईं।
प्रथम मिलन की मनहर घड़ियाँ– अब जल जल कर राख हो गईं ।।

मैं प्रतिपल यह सोच रहा हूँ– खिले फूल सा हृदय दिया क्यों ?
अति को पश्चात्ताप हुआ है– इस निर्धन से प्यार किया क्यों ?



नयन मिलेंगे, पर उन निष्ठुर– नयनों से तुम प्यार न करना !
उलझ रूप के आकर्षण में– जीवन भर आँखें मत भरना !!
मिल जाते हैं नयन, किन्तु मन– पत्थर हो जाया करते हैं।
ये वे तरु, लग सुमन जहाँ पर– पल पल मुरझाया करते हैं ।।
ये मदिरा के प्याले, इन में– मानव खो जाया करते हैं।
इन में वह रस जिसको पी कर– प्राणी सो जाया करते हैं ।।
मुस्काती आँखों में बँध कर– आँखों पर अंगार न धरना !
नयन मिलेंगे, पर उन निष्ठुर– नयनों से तुम प्यार न करना !!

नश्वर सूरत पर मत मरना !
जाल डाल कर धोखा देगी, रूप दिखा जीवन डस लेगी।

मधुऋतु सी मधु मृदुल सुन्दरी– नागिन सी अटखेली भी है।
जीवन की सुलझन है लेकिन– उलझी हुई पहेली भी है ।।
श्रद्धा शक्ति भक्ति है लेकिन– रंग बिरंगी जाली भी है।
फूलों सी कोमल सुकुमारी– काँटों वाली डाली भी है ।।

नश्वर इंगित पर मत मरना !
जाल डाल कर धोखा देगी, रूप दिखा जीवन डस लेगी।
नश्वर सूरत पर मत मरना !





जनायक

मुझे आँसुओं में बहने दो !
अपने मन की बात मुझे तुम- अपने ही मन से कहने दो !!

पीड़ा देख हँसेगी दुनिया, मुझे कहेगी यह पागल है।
मेरे घावों से खेलेगी, कौन कहेगा यह घायल है ?
यह दुःखों का जीवन, इसको- घुलते घुलते घुल जाने दो !
जल जाने दो दीप शलभ पर, साथ सूर्य के ढल जाने दो !!



सी कर ओंठ और विष पीकर- आज मुझे सब कुछ सहने दो !
अपने मन की बात मुझे तुम- अपने ही मन से कहने दो !
मुझे आँसुओं में बहने दो !!

राम ! पत्थर से अगर मैं प्यार करता-

देखता प्रतिबिम्ब अपने ही हृदय का,
ठोकरों तक में जमा रहता सदा वह,
राम ! प्रतिपल चूमता वह चरण तेरे,
पूजा पग डग हृदय में पग-धूलि धरता।
राम ! पत्थर से अगर मैं प्यार करता।

बादल को दोषी कहते हो !

लेकर शशि से सुधा, उसे दुतकार रहे हो।
पीकर प्रेमामृत कवि को फटकार रहे हो !!
लूट फूल का सौरभ अब तुम कुचल रहे हो।
चाँद चूम कर चाँद ! चाँद को मचल रहे हो !!

मन में मूर्त्त बसे रहते हो !
बादल को दोषी कहते हो !





प्रेम-जलद बहता सागर है।
दुनिया तट तक पहुँची लेकिन– घुस कर ग़ोता मार न पाई।
साथ नाव को भी ले डूबी, तैर तरणि सी पार न आई॥
खड़ी रह गई सहमी सी वह– सुनते ही सागर की गर्जन।
थर थर काँप गई लहरों से, सुन्न हो गई मन की धड़कन॥
सुख की सीमा संगम पर है।
प्रेम-जलद बहता सागर है॥

'रघुपति राघव!' खोलो संकल!
आया निर्बल, आया दुर्बल!!

खोलो संकल! खोलो संकल!
मन चंचल, आँखों में छल छल।
आया हूँ काँटों पर चल चल,
खोलो संकल! खोलो संकल!
नोच रहे पीड़ाओं के बल!
'रघुपति राघव!' खोलो संकल!!

लगा ली तुमने भी संकल।
आज मैं विपदाओं से घिरा।
आज मैं चोटी पर से गिरा॥
हिलाये जाता फिर भी पूछ।
राम! किस दर पर मेरी पूछ॥
प्रेम में लुटा दिया सम्मान।
करो अब तुम ही मेरा ध्यान॥
कौन है तुम से निर्मल राम?
कौन है मुझसे निर्बल राम?
प्रीति ने बना दिया पागल।
खोल दो जल्दी से संकल, द्वार पर खड़ा हुआ दुर्बल॥









तब मिले राम जब लाश चली।
तब याद किया जब चिता जली॥
तब याद किया जब हृदय जला।
तब याद किया जब सूर्य ढला॥
तब याद किया जब शूल मिले।
तब याद किया जब पैर छिले॥
तब याद किया जब राख रही।
तब याद किया जब राख बही॥
तब याद किया जब याद रही।
तब याद किया जब आश बही॥
तब याद किया जब प्यास जली।
आ तब जब यह दुनिया हँस ली॥



नहीं की है मैंने यह भूल।
डूबते को ले आया कूल॥
कह रही इनको दुनिया शूल।
किन्तु कवि इन्हें मानता फूल॥

राम! पी गया गरल घूँट, विष दूर करो जल्दी!
सुधा से विश्व भरो जल्दी!!

कुंडली सीधी कर जाओ!
चाँद से जीवन बरसाओ!
रोग तन मन का करदो ठीक।
यही है राम नाम की लीक॥

राम! लेखिनी अश्रु बहाती, गोद भरो जल्दी!
राम! पी गया गरल घूँट, विष दूर करो जल्दी!
सुधा से विश्व भरो जल्दी!







जननायक

कवि के दग्ध बुझे मानस पर- अमृत सन्त-वाणी से बरसा।
काव्य-सृष्टि के प्राण प्रजापति! तू क्यों मृगतृष्णा में तरसा?
दुनिया आती जाती है पर- सदा अमर कवि की वाणी है।
मधुऋतु की मनहर हरियाली, वर्षा ऋतु सी कल्याणी है॥

कविता में सुख शान्ति ज्योत्सना, कविता में ही शंखनाद है।
महाकान्ति के गीत इसी में, स्वतन्त्रता का प्रिय प्रसाद है॥
नश्वर की उपासना तज कवि! अमर अनश्वर की पूजा कर।
समय बदल दे, गीता गादे, शंख बजादे बलिवेदी पर॥

तेरी अमर साधना पर कवि! फूल खिलेंगे, दीप जलेंगे।
तेरी कविता के इंगित पर- कफ़न बाँध कर वीर चलेंगे॥
नूपुर की झनकार छोड़ दे, अब हाथों में शंख उठाले।
नख शिख वर्णन छोड़ आज कवि! क्रान्ति क्रान्ति की गीता गा ले॥

विरह अग्नि से फूँक गुलामी, बन्धन तोड़, स्वतन्त्र देश कर।
जल कर भस्मसात हो जायें- आग उगल दे हथकड़ियों पर॥
आत्मप्रेरणा बोली कवि से, कवि ने कोमल बन्धन तोड़े।
छेड़ी नयी तान कविता में, बीते गीत याद में छोड़े॥

उठो देश के वीर सपूतो! यही समय है देशभक्ति का।
आज तुम्हें अमरत्व प्राप्त है- जननायक की अमर शक्ति का॥
स्वतन्त्रता के लिये देश को- आज नया बलिदान चाहिये!
रोज़ रोज़ यह समय न आता, दान चाहिये! दान चाहिये!

"क्रिप्स" योजना लाये थे जो- वह थी ग़ैर मियादी हुंडी।
वह दिवालिया बैंक कि जिसकी- उसने हमें दिखादी हुंडी॥
एक नया शैतान बना कर- 'क्रिप्स' योजना में लाये थे।
बीती तिथि के चैक यहाँ से- सभी दलों ने ठुकराये थे॥

'कोठी कुठड़े के मालिक पर- हाथ लगाना मत इस घर को।'
ओ अंग्रेज़! शान्ति से कहते- दूर हटो अपने छप्पर को॥
भारतवासी! इस छप्पर को- बड़ी शान्ति से शीघ्र उतारो!
आग लगाओ मत छप्पर में- अपने घर की बात विचारो!!







जननायक



बन्द करो वह दियासलाई- जो घर ही में आग लगाती।
उस ज्वाला को अभी बुझादो- जो आपस में हमें जलाती॥
देखो 'चीन' उसी ज्वाला से- धू धू धू जलता जाता है।
और विदेशी उसे कुचलता- छाती पर चढ़ता आता है॥

मेरे जननायक से मिलने- 'मार्शल च्यांग' 'चीन' से आये।
दम्पति ने अपने अन्तर के- जननायक को घाव दिखाये॥
चर्खा भेंट किया बापू ने, बोले, बादल बरस चुके हैं।
ईश्वर रक्षा करे 'चीन' की- बहुत बिचारे तरस चुके हैं॥

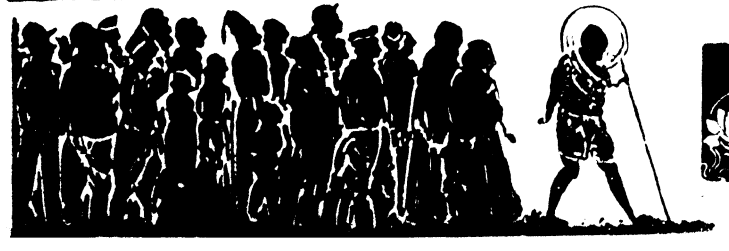
दम्पति अतिथि 'च्यांग काई' का- प्रभु ने किया प्रेम से आदर।
ज्योति जवाहर ने दम्पति को- भेंट करी खद्दर की चादर॥
सब का भला चाहने वाले- जननायक गाँधी की जय जय।
गीत गा रही है रचना में- जननायक की मंगलमय लय॥

जहाँ देखते वहीं व्याप्त था- गाँधी जी का तेजस्वी मन।
काँगरेस में कभी अभंगुर, और कभी बन बन में चन्दन॥
कभी दमकते राजनीति में, रचनात्मक थे प्रतिपल तत्पर।
वे डगमग डगमग करते पग- कभी यहाँ तो कभी वहाँ पर॥

महातेज था, महाशक्ति थी, उन चरणों में चमत्कार थे।
सब में व्याप्त, अलग थे सब से, कभी वार तो कभी पार थे॥
सब को अमृत बाँटते थे वे, तारे सब के लिये निकलते।
अपने आदर्शों पर बापू- मन की गहराई से चलते॥

उनके तेज आत्मबल से ही- जग में काँगरेस थी उज्ज्वल।
उज्ज्वल वे निर्मल शीशे थे, जिन तक पहुँच न पाता था छल॥
काँगरेस की नाव खोल दी, बैठा वह मल्लाह सँभल कर।
महारथी बलवीर 'जवाहर'. और 'पटेल' सदृश थे जिस पर॥

बापू बोले, इस यात्रा में- डूबेंगे या पार लगेंगे।
महासिन्धु में कूद पड़े हम, अब तट पर मँझधार चलेंगे॥
ये तूफ़ान और ये लहरें- रोक सकेंगी अब न तिरंगा।
सागर के ऊपर लहरेगी- निश्चित आज त्रिवेणी गंगा॥







बापू का नेतृत्व मिला है- छाती खोल 'जवाहर' बोले।
डगमग करते दो चरणों से- धरती डोली, पर्वत डोले॥
इन चरणों से काँप रहे हैं- पश्चिम के प्रलयंकर शोले।
इसी शान्ति से बीच भँवर में- डूब रहे हैं बम के गोले॥

छलने आया उसे 'क्रिप्स' जो- छल को कभी न छलता छल से।
ब्रिटिश उसे धमकाने आया- धरा टिकी जिसके सत बल से॥
हरिजन के उज्ज्वल दीपक ने- कहा कि देखो "क्रिप्स-अँधेरा"।
किसी तरह भी लाना ही है- अब तो हमको स्वर्ण-सबेरा॥

भारत की धरती पर इनके- गड़े नहीं रह सकते डेरे।
भारत के पहरेदारों के- चारों ओर लग रहे घेरे॥
गाँव गाँव में सिंहनाद था- बस इस बार पार जाना है।
भीम 'पटेल' गर्ज कहता था- अपना देश हमें पाना है॥

'क़पलानी' की देशभक्ति ने- करी अर्चना महाशक्ति की।
भारत की भूखी जनता ने- क़समें खाईं देशभक्ति की॥
कहा 'जवाहर' ने 'मेरठ' में- यह अन्तिम ग़ोता सागर में।
या स्वतन्त्रता या मरना है, आज अमृत या विष गागर में॥

या तो सागर में घुस कर हम- मोती ले कर ही आयेंगे।
या उन तूफ़ानी लहरों से- लड़ते लड़ते मर जायेंगे॥
आज वीरता जाग रही है, चढ़ी हुई है मुझे जवानी।
मेरे पानी से उलझा है- सागर का तूफ़ानी पानी॥

मरना तो सबको ही है पर- कुछ मर कर भी अमर सदा हैं।
कुछ मर कर मर ही जाते हैं, कुछ दुनिया में अमर अदा हैं॥
इतिहासों के पृष्ठ पृष्ठ पर- अंकित जिनकी अमर कहानी।
एक नया युग ले कर आई- जिनकी उठती हुई जवानी॥

जो युगपरिवर्तक होते हैं- वे ही तो इतिहास बने हैं।
खेल मृत्यु से जो खेले हैं- वे ही वीर "सुभाष" बने हैं॥
स्वतन्त्रता का वह सेनानी- सैन्य-शक्ति के बीच कह रहा।
जिसके स्वर से उनके मन में- लड़ने का उत्साह बढ़ रहा॥









जनायक

इसी समय "जापान" गर्जता- भारत के सर पर चढ़ आया।
'विज़गापट्टम' और 'कोकनद'- काले लाल धुँवे से छाया॥
पदाघात से पिसे देश पर- 'जापानी' बम लगे बरसने।
भारत की सीमा पर भी अब- गोले धम धम लगे बरसने॥



'कलकत्ते' के श्वेत गगन में- "जापानी" जहाज़ उड़ते थे।
घन के तने 'वंग-खाड़ी' पर- झपटामार बाज़ उड़ते थे॥
देख मेघमालायें नभ में- भय की रेखा खिंची देश में।
सारे भारत में हलचल थी, आशायें थीं काँगरेस में॥

नगर निवासी घबरा घबरा- लगे भागने छोड़ छोड़ घर।
"जापानी" गोलों से डर डर- शहरी चले शहर ख़ाली कर॥
चाहे कहीं चले जाओ पर- मौत न पीछा कहीं छोड़ती।
मौत वीरता से डरती है, आगे आगे हाथ जोड़ती॥

रोज़ रोज़ अंग्रेज़ यहाँ पर- 'ब्लेकाउट' करते थे काला।
रोज़ बिजलियाँ बुझा बुझा कर- अन्धकार से घर भर डाला॥
कभी आग का नाटक रचकर- खेल तमाशे से करते थे।
कभी खाइयाँ खुदवा खुदवा- क़ब्रों में ज़िन्दे भरते थे॥

दमनचक्र से उधवाते थे- चन्दा कभी लड़ाई का वे।
कभी लड़ा कर सर फुड़वाते- भाई ही से भाई का वे॥
सबसे आगे कटवाने को- भरती करते थे भारत से।
जाड़े को थरथरी चढ़ी थी, डर था "जापानी" आफ़त से॥

भारत की तस्वीर देखकर- आँसू रोये, पत्थर पिँघले।
ठिठरा सा कंकाल खड़ा था, मुँह धोने को आँसू निकले॥
बिँधा हुआ था तन तकवों से, पग शूलों से छिले हुए थे।
लहू चू रहा था घावों से, लाल सरोरुह खिले हुए थे॥

फटे हुए थे वस्त्र कि मानो, खाल नोच दी ज़ल्लादों ने।
बैठ, ज़मीन कुरेद रहा था, भीड़ लगा दी अवसादों ने॥
श्रमकण श्रमिक हृदय से बरसे, गारा लिये श्रमिक जाता था।
प्राणों में पीड़ा हँसती थी, हल ले कर किसान आता था॥





चोट चसकती थी बिजली सी, चोटों पर हंटर पड़ते थे।
बन्दी के रिसते घावों में- ज़ल्लादी तकवे गड़ते थे॥
खा खा माँस, चूस कर शोणित, दो हड्डी का ढाँचा छोड़ा।
फूका लगा दूध सब खींचा, भारत का सौन्दर्य निचोड़ा॥

दोनों घुटने दिये पेट में- बैठा था बन्दीगृह में वह।
कभी सींकचे पकड़ खड़ा हो- बाट देखता था वह रह रह॥
कब स्वतन्त्रता देवी आकर- काटेगी मेरी हथकड़ियाँ।
पैर चूम कह उठीं बेड़ियाँ- आती हैं फूलों की लड़ियाँ॥

धरती काँप रही है थर थर, बादल फटने ही वाले हैं।
मानस की काली रजनी में- दीपक जलने ही वाले हैं॥
तेरे स्वागत को स्वतन्त्रता- गूँथ रही फूलों की माला।
तड़क टूटने ही वाला है- बन्दीगृह का भारी ताला॥

घोर तपस्या से बापू ने- रक्त रगों में फिर दौड़ाया।
कर उपवास, मौन व्रत से सध, धीरे धीरे शंख बजाया॥
"क्रिप्स" ले गया अपना गुड्डा, बापू को प्रेरणा हुई यह-
उनके मन ने कहा उन्हों से- "भारत छोड़ो!" अब तू यह कह॥

मन ने कहा, और बापू ने- अपनी माँग उपस्थित कर दी।
"अंग्रेज़ो! भारत छोड़ो!" अब- यह जय-वाणी अंकित कर दी॥
काँगरेस की कार्य-समिति में- बापू ने प्रस्ताव धरा यह-
"भारत छोड़ो! भारत छोड़ो!"- अंग्रेज़ों से देश आज कह॥

अंग्रेज़ी साम्राज्यवाद की- भारत क्रीड़ा-भूमि आज है।
अरे! मूल ही दे दो वापिस, अधिक मूल से चढ़ा ब्याज है॥
जल्दी से जल्दी भारत से- अब बिस्तर अंग्रेज़ उठायें।
युद्ध भविष्यत् प्रजातन्त्र पर- जिस से चार चाँद लग जायें॥

जिस से "नाज़ीवाद" न पनपे, राख उड़े 'फ़ासिस्टवाद' की।
नष्ट भ्रष्ट साम्राज्यवाद हो, पुछ जाये रेखा विषाद की॥
साग्रह अंग्रेज़ों से कहते- शीघ्र हटालो अपना शासन।
आसन सागर पार तुम्हारा, यह स्वतन्त्र भारत का आसन॥









ज
न
ना
य
क



हम स्वतन्त्र हो 'मित्रराष्ट्र' के– मित्र रहेंगे सच्चे मन से।
रचनात्मक आदर्शों पर चल– सृष्टि करेंगे अपनेपन से॥
भारतवर्ष 'एशिया' भर में– ध्रुव तारा बन कर दमकेगा।
कमलों को वह सूर्य कुमुद को– चन्दा बन बन कर चमकेगा॥

'विश्व संघ' में शामिल होकर– जग की गुत्थी सुलझायेगा।
सिन्धु लहरियों से लड़ लड़ कर– नाव किनारे पर लायेगा॥
भारतवर्ष सचेत खड़ा है, आधिपत्य अब शीघ्र उठालो!
लहरा रहा तिरंगा झण्डा, जल्दी जल्दी टोप सँभालो!!

काँगरेस को गाँधी जी का– आज अमर नेतृत्व मिला है।
सत्य अहिंसा की वाणी से– सोता हिन्दुस्तान हिला है॥
जननायक ने प्रण ठाना है, सावधान हैवान आज हो!
मनुष्यता से खोने वाले! जल्दी से इन्सान आज हो!!

अगर न भारत छोड़ा तुमने– सामूहिक आन्दोलन होगा।
बहुत दिनों तक धूलि झोंक कर– तुमने राज्य यहाँ पर भोगा॥
भारत युक्त 'एशिया' की हम– रक्षा अपने आप करेंगे।
हम न रुकेंगे, हम न झुकेंगे, हम न मरेंगे, हम न डरेंगे॥

जिस दिन एक नया युग आया– वह अब "आठ अगस्त" आ गई।
भारतीय काँग्रेस देश पर– काली पीली घटा छा गई॥
परिवर्तन का क्रान्ति दिवस वह– इतिहासों के पृष्ठ रच गया।
आन्दोलन की हुई गर्जना, क्रान्ति क्रान्ति का शोर मच गया॥

अधिवेशन बम्बई हुआ वह, सागर-तट पर झण्डे लहरे।
गगन चूमते उड़े तिरंगे, सागर की लहरों पर फहरे॥
'जिन्ना' से भी काँगरेस ने– कहा कि समय न यह लड़ने का।
"पाकिस्तानी" माँग उठा कर– समय नहीं है यह अड़ने का॥

यही समय है स्वतन्त्रता तुम, शान्ति सभ्यता से इनसे लो।
पहिले तुम आपस में मिल कर– गोरों से आज़ादी ले लो॥
पर 'जिन्ना' को चढ़ी हुई थी– 'चर्चिल' वाली कच्चे घट की।
हमने उसे सुधा भेजा पर, उस पागल ने गटकी पटकी॥





वर्तमान गति और नीति पर- नेता प्रगति मार्ग से बोले।
निर्मल गंगाजल पर गिर कर- ठण्ढे हो जाते हैं शोले॥
पैग़म्बर. अवतार शक्ति से- प्रेरक बापू उठे मंच पर।
जीवन की वर्षा करते थे- रस रसना से सुधा छिड़क कर॥

राजनीति से ऊपर उठ कर- मानवता के मुख से बोले।
उस वाणी से अमृत बरसता, दुनिया! अपना हृदय भिगोले!
मर्त्यलोक में उस दिन हमने- पाये दिव्यलोक के दर्शन।
तीनों लोक बोलते देखे, उन नयनों में सब का नर्तन॥

वेदवाक्य बोले हरेक से- मुझे प्रेरणा है अन्तर की।
मैं तो वैसा ही करता हूँ- जैसी है इच्छा ईश्वर की॥
वह कहता निश्शंक रहो तुम, लड़ो अकेले न्याय-मार्ग पर।
रुको न दुनिया के रोड़ों से, शक्ति तुम्हें देता है ईश्वर॥

दुनिया की परवाह मत करो, परमात्मा से सदा डरो तुम।
दुनिया भर को दीप दिखाओ! भारत को स्वाधीन करो तुम॥
जब तक देश स्वतन्त्र न होगा- मैं न मरूँगा किसी शक्ति से।
अपना देश स्वतन्त्र करूँगा, सज्जनता से, देशभक्ति से॥

मेरा प्रिय सिद्धान्त यही है, चले शत्रु भी ठीक मार्ग पर।
मेरा शत्रु नहीं कोई भी, सब का शुद्ध बुद्धि दे ईश्वर॥
अब वह समय आ गया है जब- सामूहिक संग्राम छिड़ेगा।
अति हो गई ब्रिटिश सत्ता की, भूखा भारतवर्ष भिड़ेगा॥

क्या हिन्दू, क्या मुसलमान अब, सब मिल घर से इन्हें निकालो!
थाली मत फोड़ो आपस में, सब मिल कर थाली में खालो!!
कांगरेस सब की संस्था है, सब आओ, सब हाथ बटाओ!
ले कर बढ़ो तिरंगा झण्डा, ऊँचा चोटी पर लहराओ!!

हमें न रत्ती भर ननुनच है, सत्ता 'मुस्लिम लीग' सँभाले।
अपने ही कब्ज़े में ले ले, अंग्रेज़ों से देश छुड़ाले॥
किन्तु "क़ायदे आज़म" अपनी- नाक फुलाये ही जाते हैं।
पानी की लहरों पर अपने- जाल बिछाये ही जाते हैं॥









स्वतन्त्रता के आन्दोलन में- अपने को स्वतन्त्र समझें सब।
अख़बारो! निर्भीक रहो तुम, यह अवसर आयेगा कब कब॥
विद्यार्थियो! समय आ पहुँचा, राजाओ! दाग़ों को धोलो!
एक साथ मिलकर सब के सब- भारत माता की जय बोलो॥

"भारत छोड़ो" "भारत छोड़ो!" एक साथ बोले भारत भर।
भारत के जय जयकारों से- हिले हिमालय, काँपे सागर॥
उमड़ रहे तूफ़ान भयङ्कर, नाव खोलदी हैं सागर में।
पाल और पतवार नहीं है, भीषण बिजली है सागर में॥

धीरे धीरे क़दम बढ़ाओ! तैर तैर तट तक चलना है।
ज्वालामुखी फूटने वाला, मानस का लावा गलना है॥
एक बार फिर "ब्रिटिश राज्य" से- अन्तिम बार बात कर लें हम।
शान्त भाव से उनके बिस्तर- उनके कन्धों पर धर दें हम॥

अगर न छोड़ेंगे भारत वे- तो हम बिस्तर उठवा देंगे।
सामूहिक आन्दोलन होगा, अपनी आज़ादी ले लेंगे॥
पर पौ फटने से पहिले ही- हमला बोल दिया गोरों ने।
काँगरेस ने दूध पिलाया, पर विष घोल दिया गोरों ने॥

जब अपनी रजनी दुलहन से- चाव भरा चन्दा हँसता था।
जब कि चाँदिनी के आँगन में- अलकों में चन्दा फँसता था॥
प्रेमी की मदमस्त जवानी- जब चन्दा को चूम रही थी।
चन्द्रमुखी प्रिय की गादी में- जब कि प्यार में झूम रही थी॥

शब्द शून्य में उड़ते थे जब, वायु विजन में घूम रही थी।
जब कि तैरती हुई चाँदिनी- फूलों का मुँह चूम रही थी॥
तभी चोर पहरेदारों पर- झपटे 'चोर! चोर!' चिल्ला कर।
पुलिस फ़ौज घुर्रा कर आई- मेरे पूज्य महामानव पर॥

पकड़ लिये वे शान्तिदूत सब- ब्रिटिश पुलिस ने घेर अचानक।
पल भर में सारे भारत में- बदला वातावरण भयानक॥
कार्य समिति के सब सदस्यगण- पकड़े गये समुद्र किनारे।
झपट अहिंसा पर हिंसा ने- बन्द कर दिये भाग्य-सितारे॥





पकड़ लिया गाँधी जी का दल, पकड़ी "मीराबेन" बिचारी।
'महादेव देसाई' पकड़े, भारत को कर दिया भिखारी॥
"बा" कस्तूर बनाई बन्दी, भेजे "श्री राजेन्द्र" जेल में।
पकड़े गये 'पटेल' 'जवाहर'– स्वतन्त्रता के मधुर खेल में॥

चुपके चुपके पकड़ा था पर– जाग हो गई, गूँजी जय जय।
भारत छोड़ो! भारत छोड़ो!! सागर की लहरों में थी लय॥
दूर दूर तक भीड़ घिर गई, एक नया उत्साह आ गया।
भीगी गर्म गर्म श्वासों से– बादल बन कर धुवाँ छा गया॥

पीड़ित प्रजा मचल कर बोली– जननायक! क्या करें, बताओ?
उठो "करो या मरो!" बढ़ो अब, स्वतन्त्रता पर बलि बलि जाओ!
भड़क उठी उत्तेजित जनता, गुँजा दिया नभ जयकारों से।
'ख़ून ख़ून! गोली गोली!' का– स्वर गूँजा अत्याचारों से॥

दमन शुरू हो गया देश में, तनीं निहत्थों पर दुनालियाँ।
इसे पकड़ना, उसे मारना, इसको फाँसी, उसे गालियाँ॥
इधर निहत्थों की छाती थी, उधर ब्रिटिश की रक्त पिपासा।
उधर तोप बन्दूकें गर्जीं, इधर शहीदों की अभिलाषा॥

जब सुना, "करो या मरो!" नाद– ताण्डव में था भैरवी राग।
वह आन्दोलन, वह क्रान्ति आग, शोणित से खेला खिला फाग॥
चल पड़ी चण्डिका खप्पर ले, बढ़ चलीं देवियाँ दुर्गों पर।
हँसते हँसते चढ़ जाते थे– बलिवेदी पर वीरों के सर॥

सत्याग्रहियों के नारों से– अंगार दहकते जाते थे।
जय इन्क़लाब! जय महाक्रान्ति! जय जय जय जय जय गाते थे॥
ले राम नाम 'हनुमान' चले– 'लंका' में आग लगाने को।
'अंगद' 'नलनील' वीर आये– सीता स्वतन्त्रता लाने को॥

वह पाञ्चजन्य था गाँधी का, नेताओं के थे महाशंख।
पिँजरे से पराधीनता के– उड़ चला पोत फड़फड़ा पंख॥
कुछ नौजवान पिस्तौलें ले– पटरियाँ तोड़ने निकल पड़े।
ख़ूनी चीतों की छाती पर– ले दुनालियाँ हो गये खड़े॥









भूचाल उठे थे धरती से, अम्बर में थे काले बादल।
सागर की लहरें गर्जी थीं, जन जन जल थल में थी हलचल॥
यह 'लंकादहन' काण्ड था या– 'लाक्षागृह' धू धू जलता था।
या 'प्रलयंकर शंकर' जागे, या सागर थल पर चलता था॥

ये नारे गूँजे धरती पर, अब उठो! चलो! बन्धन छोड़ो!
हाथों की हथकड़ियाँ तोड़ो! पैरों की ज़ंजीरें तोड़ो!!
बापू की वाणी से निकला– "हे अंग्रेज़ो! भारत छोड़ो!"
झनझना बेड़ियाँ बोल उठीं– बन्धन तोड़ो! बन्धन तोड़ो!!

बोला दिल्ली का 'लाल क़िला'– भारत छोड़ो! भारत छोड़ो!
नारा निकला, संसार हिला– भारत छोड़ो! भारत छोड़ो!!
जेलों की दीवारें बोलीं– भारत छोड़ो! भारत छोड़ो!
मामों की मीनारें बोलीं– भारत छोड़ो! भारत छोड़ो!!

दिल में जलती होली बोली– भारत छोड़ो! भारत छोड़ो!
छाती में घुस गोली बोली– भारत छोड़ो! भारत छोड़ो!!
बोली माँ बहिनों की रोली– भारत छोड़ो! भारत छोड़ो!
कह उठी शहीदों की टोली– भारत छोड़ो! भारत छोड़ो!!

कह उठी शक्ल भोली भोली– भारत छोड़ो! भारत छोड़ो!
सत्याग्रहियों की जय बोली– भारत छोड़ो! भारत छोड़ो!!
सोता 'सन् सत्तावन' बोला– भारत छोड़ो! भारत छोड़ो!
कह उठा फूस पर गिर शोला– भारत छोड़ो! भारत छोड़ो!!

फाँसी के तख़्ते बोल उठे– भारत छोड़ो! भारत छोड़ो!
भूकम्प भयानक डोल उठे– भारत छोड़ो! भारत छोड़ो!!
ललकार तिरंगा कहता था– भारत छोड़ो! भारत छोड़ो!
फटकार तिरंगा कहता था– भारत छोड़ो! भारत छोड़ो!!

इतिहास पुराना कहता था– भारत छोड़ो! भारत छोड़ो!
यह देश बिराना कहता था– भारत छोड़ो! भारत छोड़ो!!
कवियों के शंखनाद बोले– भारत छोड़ो! भारत छोड़ो!
संगीतों से बरसे शोले– भारत छोड़ो! भारत छोड़ो!!





बोली 'मैना' की गर्म चिता– भारत छोड़ो ! भारत छोड़ो !
बोले जननायक परम पिता– भारत छोड़ो ! भारत छोड़ो !!
"आज़ाद चन्द्रशेखर" बोले– भारत छोड़ो ! भारत छोड़ो !
शिव प्रलयंकर शंकर बोले– भारत छोड़ो ! भारत छोड़ो !!

'अश्फ़ाक़' और 'बिस्मिल' बोले– भारत छोड़ो ! भारत छोड़ो !
बोले 'सतलज-तट' के शोले– भारत छोड़ो ! भारत छोड़ो !!
यह 'भगतसिंह' का नारा है– भारत छोड़ो ! भारत छोड़ो !
यह हिन्दुस्तान हमारा है– भारत छोड़ो ! भारत छोड़ो !!

यह वीर 'जवाहर' का नारा– भारत छोड़ो ! भारत छोड़ो !
हुंकार रहा झण्डा प्यारा– भारत छोड़ो ! भारत छोड़ो !!
साम्राज्यवाद का हुआ अन्त, भारत छोड़ो ! भारत छोड़ो !
जाओ जाओ ! कह रहा सन्त– भारत छोड़ो ! भारत छोड़ो !!

'दिल्ली' की दीवारें बोलीं– भारत छोड़ो ! भारत छोड़ो !
महलों की मीनारें बोलीं– भारत छोड़ो ! भारत छोड़ो !!
युग बोल उठा, बोला "सुभाष"– भारत छोड़ो ! भारत छोड़ो !
बोला प्रभात, बोला प्रकाश– भारत छोड़ो ! भारत छोड़ो !!

"आज़ाद हिन्द सेना" बोली– भारत छोड़ो ! भारत छोड़ो !
बोली गा गा ख़ाली झोली– भारत छोड़ो ! भारत छोड़ो !!
गूँजा 'जय हिन्द' अमर नारा– भारत छोड़ो ! भारत छोड़ो !
बोली निर्मल गंगा धारा– भारत छोड़ो ! भारत छोड़ो !!

पक्षी बोले, पत्ते बोले– भारत छोड़ो ! भारत छोड़ो !
छाती पर गिर बोले ओले– भारत छोड़ो ! भारत छोड़ो !!
सावन बोला, बोला वसन्त– भारत छोड़ो ! भारत छोड़ो !
संगम पर बाजे आदि अन्त– भारत छोड़ो ! भारत छोड़ो !!

हिन्दुस्तानी सेना बोली– 'दिल्ली' पर झण्डा लहराओ !
'मोर्चा इम्फाल' पुकार उठा– अंग्रेज़ो ! भारत से जाओ !!
'दिल्ली का लाल क़िला' सर कर– झण्डा तुमको लहराना है !
'दिल्ली' की ऊँची चोटी पर– झण्डा तुमको फहराना है !!









जनायक



"गाँधी सेना" के सेनानी ! अपनी सेना ले बढ़े चलो !
सैनिक ! "सरोजिनी सेना" के- दुर्गों के ऊपर चढ़े चलो !
सेनानी ! "फ़ौज जवाहर" के- अब क़दम उठें जल्दी जलदी !
"जयहिन्द" ! "चलो दिल्ली !" कहती-सेनानी की सेना चलदी !!

'बर्मा' से सेनानी 'सुभाष'- गोरों की फ़ौजों पर लपका !
अंग्रेज़ों ने गोली मारी, उसने गोरों पर बम पटका !!
वह चला जिधर, तूफ़ान चले, वह रुका जहाँ, भूचाल रुके !
नेता सुभाष के चरणों में- लाखों जलयान जहाज़ झुके !!

पिस्तौल तान कर कहते थे- भारत छोड़ो ! भारत छोड़ो !
भीषण मोर्चों पर कहते थे- भारत छोड़ो ! भारत छोड़ो !!
बोलीं दुनालियाँ धाँय धाँय- भारत छोड़ो ! भारत छोड़ो !
बोली साँपन सी साँय साँय- भारत छोड़ो ! भारत छोड़ो !!

बोले "नेताजी" के शोले- भारत छोड़ो ! भारत छोड़ो !
बोले भीषण बम के गोले- भारत छोड़ो ! भारत छोड़ो !!
कहते थे 'टैंक' 'तारपीडो'- दिल्ली छोड़ो ! भारत छोड़ो !!
कहते थे ज्वालामुखी फूट- दिल्ली जीतो ! बन्धन तोड़ो !!

यह भारत देश हमारा है- छोड़ो जल्दी ! छोड़ो जलदी !
ओ ब्रिटिश लोमड़ी ! दूर भाग, चुपके चुपके घर में चलदी !!
ओ गोरी चमड़ी ! दूर दूर, सुसराल नहीं है यह तेरी !
क्यों चिपटी जाती है मुझ से, तू नहीं अरी दुलहन मेरी !!

पीहर तेरा 'इँगलैंड' और- 'अमरीका' सुभग सास तेरी !
'शूर्पणखा !' दया करो मुझ पर, क्यों जान खा रही हो मेरी !!
मैं भीष्म ब्रह्मचारी सुभाष, तुम सत खसमी गोरी चमड़ी !
तुम नयी फ़ैशनेबिल तितली, मैं ख़ाली जेब, नहीं दमड़ी !!

फिर पौडर, क्रीम, लिपिस्टिक को- तुम रोज़ नये पति बदलोगी !
तुम आज बग़ल में हो मेरी, कल उसकी होकर निकलोगी !!
ओ गोरी चमड़ी ! दया करो, मुझको रँडवा ही रहने दो !
तुम टेढ़ी तिरछी चलो किन्तु- मुझको सीधा ही बहने दो !!





क्या कहा ! 'जवाहरलाल' और– गाँधी से ब्याह रचाऊँगी ?
अपने यौवन के इंगित पर– मैं उनको नाच नचाऊँगी ?
वे 'लक्ष्मण' जैसे यती अरी ! काटेंगे तेरे नाक कान ।
उनका पल्ला मत पकड़ अरी ! ओ मूर्ख बँदरिया ! बात मान ।।

ओ काम कला ! वे 'शंकर' हैं , वे कभी न होंगे टस से मस ।
यदि पति ही तुझे चाहिये तो– जा मायापति के घर में बस !
उसके घर में दुल्हनें बहुत, तू भी उन में शामिल हो जा !
माया देवी ! कर कृपा यहाँ, जा चमगादड़ के घर सो जा !!

"नो वेकैंसी" लिख रहा यहाँ, घर घर सतियों की कमी नहीं ।
'अमरीका' के होटल छानो, उन में पतियों की कमी नहीं ।
घर पर न किसी "टूलैट" लिखा, अब जगह होटलों में देखो !
यह गंगाजली छोड़ दो तुम, अब नशा बोतलों में देखो !!

गोरी चमड़ी ! जल्दी से अब– मेरे घर का पीछा छोड़ो !
इन सुभग सुनहरी अलकों के– भारतवासी ! बन्धन तोड़ो !!
कह उठा दूसरा महायुद्ध– भारत छोड़ो ! भारत छोड़ो !!
कह रही भयानक क्रान्ति क्रुद्ध– भारत छोड़ो ! भारत छोड़ो !!

सब का कल्याण पुकार रहा– अंग्रेज़ो ! अपने घर जाओ !
यह आन्दोलन हुंकार रहा– राज़ी से ख़ाली कर जाओ !!
वीरों की आत्मा का नारा– भारत छोड़ो ! भारत छोड़ो !
सब के परमात्मा का नारा– भारत छोड़ो ! भारत छोड़ो !!

देशभक्त चल पड़े पवन से, उड़ने लगे तिरंगे झण्डे ।
बढ़ते चले शहीद सिंह से, पड़ने लगे पुलिस के डण्डे ।।
महिलाओं ने घूँघट पलटे, आँखों से निकली चिनगारी ।
चलीं गोलियाँ, कोड़े बरसे, छूटी शोणित की पिचकारी ।।

उधड़ी खाल, किन्तु वीरों ने– झण्डा छोड़ा नहीं तिरंगा ।
झण्डे की लहरें कहती थीं– यही नहाने की है गंगा ।।
जल उमड़ा 'आष्टी' 'चिमूर' में, 'बलिया' में निकले दीवाने ।
स्वतन्त्रता दीपक के ऊपर– बढ़ते चले वीर परवाने ।।









मानो महाप्रलय की लहरें– धरती आज डुबाने निकलीं।
प्रलयंकर काले मेघों ने– आँसू और बिजलियाँ उगलीं॥
हिंसा और अहिंसा का यह– घोर युद्ध चिंघाड़ रहा था।
भारत ने करवट बदली थी, सोता सिंह दहाड़ रहा था॥



कहीं भुजायें कटी पड़ी हैं, लेकिन मुट्ठी में है झण्डा।
रक्त भरे सर लुढ़क रहे हैं, लेकिन खून नहीं है ठण्डा॥
बलिवेदी पर छोटे छोटे– बच्चों के सर दीपक से हैं।
कटे हुए ये पैर पड़े जो, पूज्य चरण ये मस्तक से हैं॥
कटी हुई छातियाँ पड़ीं ये, जिनका अब तक दूध न सूखा।
खाल खींच बोटियाँ खा रहा, खून निचोड़ भेड़िया भूखा॥
लाली गर्ज रही अम्बर में, मानो जलती आग भयंकर।
आँसू सागर बन कर उमड़े, बादल घुमड़ रहे प्रलयंकर॥
जिधर देखते उधर तिरंगे– फर फर फर उड़ते चलते थे।
अंगारों से आँसू निकले, धरती पर शोले जलते थे॥
परिवर्त्तन की महाक्रान्ति में– तारे टूटे, खून बह चला।
भारत माता के पुत्रों ने– स्वतन्त्रता का चोला बदला॥

बढ़े बलिदान के पथ पर।
चढ़ी पग-धूलि मस्तक पर॥
हवा में आ गई मस्ती।
ज़िन्दगी हो गई सस्ती॥

पगों से खून चूता है।
दृगों से खून चूता है॥
गोलियाँ चल रहीं दन दन।
छातियाँ बढ़ रहीं तन तन॥

फाँसियों पर चढ़ा डाला।
कहीं ज़िन्दा जला डाला॥
कहीं पर ज़ुल्म नारी पर।
माँस में गड़ रहे हंटर॥









किसी की खोपड़ी फूँकी।
किसी की झोपड़ी फूँकी॥
किसी की हड्डियाँ पीसीं।
किसी की हड्डियाँ चीसीं॥

किसी को जेल में डाला।
खौलते तेल में डाला॥
किसी की फोड़ दीं आँखें।
किसी की काट दीं पाँखें॥

गिराये गर्ज कर गोले।
आँसुओं के बने ओले॥
धरा पर गिर रहे सर कट।
शहीदों का बना मरघट॥

चितायें सामने फुकतीं।
उठी आँखें नहीं झुकतीं॥
क़दम बढ़ते नहीं रुकते।
फूल जब तक नहीं झुकते॥



उठा तिरंगा चलीं देवियाँ, जय भारत माता की जय हो!
हल वह जो हल जोत रहा है, उसी अन्नदाता की जय हो!!
ग्राम ग्राम में, शहर शहर में, गली गली में था आन्दोलन।
लहरें लपकीं, ज्वाला बरसी, अड़ड़ अड़ड़ कर आया हल्लन॥
काटे तार, पटरियाँ तोड़ीं, कुछ थानों में आग लगाई।
धधक उठा प्रतिशोध हृदय में, वीरों ने तलवार उठाई॥
कुछ तो चाँटा खा कर अपना- गाल दूसरा आगे करते।
कुछ मरते या उन्हें मारते, वे ईंटा, ये पत्थर धरते॥
थानेदार गवर्नर बन कर- वह आन्दोलन लगे दबाने।
सत्याग्रह पर, झोंपड़ियों पर- बम दुनलियाँ लगे चलाने॥
याद 'बिहार' और 'बलिया' है, 'आष्टि', 'चिमूर' याद है हमको।
बर्बरता का नग्न नाच वह- गोरों का प्रसाद है हमको॥





जननायक

बच्चों को बूटों से रौंदा' बूढ़ों को कीलों से भेदा।
माँ बहिनों के अङ्ग अङ्ग को- तुमने ही भालों से छेदा॥
कितनी ही जवान बहिनों पर- गोरों की पशुता घुर्राई।
याद हमें वे माँ बहिनें हैं, जिनकी बोटी बोटी खाई॥



और निहत्थों पर तुमने ही- निर्दयता से बम बरसाये।
और न जाने कितने बच्चे- तुमने फाँसी पर लटकाये॥
हाय! हमारे घर में हमको- तुमने क़ैद किया जेलों में।
उल्टे सीधे दाँव फेंक कर- बहुत दिनों फाँसा खेलों में॥

'सन् सत्तावन' की बर्बरता- फिर से नंगी नाच रही थी।
शोणित का सागर उमड़ा था, जिसमें इंसानियत बही थी॥
मेरे दीनबन्धु गाँधी का- नाद "करो या मरो!" अमर है।
परिवर्त्तन के आन्दोलन में- मुक्ति-पर्व का खुला डगर है॥

जननायक का आन्दोलन था, तीनों लोकों में थी हलचल।
देश देश में आन्दोलन की- समालोचनाओं में थे हल॥
दुनिया भर में धूम मच गई, हुई प्रतिक्रिया देश देश में।
घोर अँधेरे की दुनिया में- ज्योतिपुंज थे काँगरेस में॥

ब्रिटिश दोष देता था हमको, उल्टा चोर साध को डाण्डे।
शर्म न आती हमें लूट कर- खाते हैं वे मक्खन माण्डे॥
'चर्चिल' अपनी चोंच चलाते, कहते रहे "एमरी" अपनी।
'अमरीका' अपने सुर में था, 'लीग" अलग ही थी लपझगनी॥

"पाकिस्तान" रटा 'जिन्ना' ने, जो विनाश की गहरी जड़ है।
कैसे उठे "एशिया" ऊपर, जब कि इस तरह का हुल्लड़ है॥
इधर चल रहा था आन्दोलन, उधर "लीग" का घातक नारा।
हिन्दुस्तान काट दो धड़ से, दे दो 'पाकिस्तान' हमारा॥

बात बात में 'जिन्ना' कहते- ख़तरे में "इस्लाम" आ गया।
'पाकिस्तान' मुसलमानो! लो, आज़ादी का धुँवा छा गया॥
लड़ने मरने को गाँधी है, खून बहाये काँगरेस ही।
परदेशी से मिला हुआ मैं, जान बचा देगा विदेश ही॥







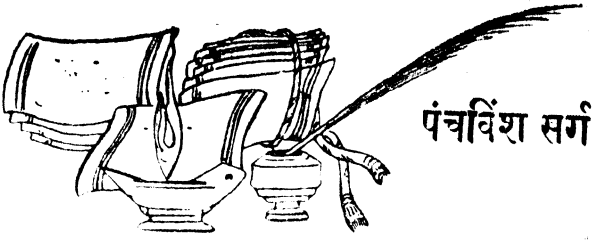
स्वतन्त्रता जब आ जायेगी– तब हम देवर बन जायेंगे।
अब बिल्ली हैं, तब खाने को– शेर भयंकर बन जायेंगे॥
बात न मानेंगे गाँधी की, लेकर 'पाकिस्तान' रहेंगे।
मुँह में राम, बग़ल में छुरियाँ, हम ऐसे इंसान रहेंगे॥
बरस रहे थे काले पत्थर, पर न काट पाते थे पानी।
पानी में पाषाण डूबते, तैरा करती अमर जवानी॥
सागर में घुस तट पर पहुँचे, लहरों पर जो रत्न नचाये।
जीवन और जवानी वह है, जो पत्थर को भी तैराये॥











पंचविंश सर्ग



प्रभा पूर्ण प्रातः वेला में- स्वर्ण-रश्मियाँ खेल रही हैं।
जाग नींड़ से नभ में उड़ उड़- चिड़ियें सुधा उड़ेल रही हैं॥
पक्षी उड़ते मुक्त गगन में, तू क्यों सोया अरे मुसाफ़िर!
छोड़ सींकचे, मुक्त विचर तू, स्वच्छ गगन में हारिल सा तिर॥
हरियाली में मोर नाचते, तू क्यों बन्दी जग-कारा में?
उठकर गीता मार सवेरे- मेघों की निर्मल धारा में॥
घर की कारा छोड़ देख वह- जाता है मज़दूर काम पर।
रटता 'राम राम' वह तोता, कोयल गाती पके आम पर॥
पत्ती पत्ती जाग रही है, फूल फूल ने ली अँगड़ाई।
काल कोठरी में बन्दी बन- तूने क्यों ज़िन्दगी सड़ाई?
"आग़ा ख़ाँ" के स्वर्ण महल में- बन्दी हैं मेरे जननायक।
सोने के पिँजरे में बन्दी, जननायक के राम सहायक॥
बन्दीगृह में "बा" बापू के- प्यारे चरण पखार रही हैं।
अपनी आँखों के दीपक से- 'बा" आरती उतार रही हैं॥
सुमन चढ़ाती हैं श्रद्धा से, पूजा करतीं प्रेम भक्ति से।
महक रही 'कस्तूर' जेल में, मिलती है प्रेरणा शक्ति से॥

यह कुसुम धरा का हाय! बन्दी पड़ा है।
हरि हृदय हमारा सींकचों में खड़ा है॥
उन पग कमलों में चाँदिनी गा रही है।
उन पग कमलों में बन्दिनी "बा" बही है॥





मरमर पर सोये श्याम प्यारे गुलाबी।
दृग पर दृग देवी या कि तारे गुलाबी॥
प्रियतम पर 'बा माँ' फूल मोती चढ़ाती।
चुग चुग कर मोती रात रानी लुटाती॥
किसलय पर प्यारी वायु माँ को सुलाती।
जय जय ध्वनि सी 'बा' भाव सोते रुलाती॥
गिन गिन कर तारे स्वप्न से देखती है।
कुछ कह शशि को क्या दान देती सती है?



आँखों का जल अर्घ्य ही चरण धो गाता वहाँ आरती।
पूजा ही पग पूजती हृदय से वन्दी महा देव के॥
बोले पत्थर जेल के चरण छू फूले हुए फूल से-
मैं हूँ मन्दिर आज क्यों कि जनता के हैं यहाँ देवता॥
बापू के पग दाबती हृदय से बन्दीगृहा बन्दिनी।
आती है छन चाँदिनी, सुमन ले मानो बसन्ती दिवा॥
चन्दा आकर चूमता पग, उन्हें छू है दिवानी हवा।
बन्दी क्यों हम मुक्त मानव! धरा के देवता! बोल दे!!
सितार सी 'बा' कृषि देखती है।
वसुन्धरा को कविता सुनाती॥
कभी प्रभा की शशि गोद में आ।
कि चाँट देता शिशु प्यार माँ को॥
वसन्त बापू रस रंग वर्षा।
वसन्त की 'बा' जय तूलिका है॥
स्वतन्त्र बापू किस ध्यान में हैं?
विहाग सी 'बा' किस कल्पना में?
किसान गाता, मधु मेघ गाते,
उदास बन्दीगृह क्यों खड़ा है?
स्वतन्त्रता पा जब ये उड़ेंगे-
वियोग कैसे वह मैं सहूँगा!





निशान देखो उड़ता तिरंगा।
पवित्र गंगा नभ में बहती है॥
प्रभात प्यारा लहरा रहा है।
कि मुक्त जल्दी अब देश होगा॥



जय हो मेरे राष्ट्रपिता की, जय जय जय मेरी जगमाता!
कारा की दीवारें बोलीं- जय भारत के भाग्य-विधाता!!
सोने के पिंजरे में बापू, 'बा' से प्रेम-सुधा पाते थे।
मानो "सीता राम" वनों में- अमृत प्रेम से बरसाते थे॥
भाषा भाव हो गये अंकित, वीणा की झनकार एक थी।
वाणी का वरदान उन्हें था, दो दिल की हुंकार एक थी॥
'बा' थी कार्य, क्रिया थे बापू, वे रूई, वह भावुक तकली।
बापू सूत, और 'बा' खड्डी, बापू वर्षा, 'बा' थी बदली॥
'बा' चर्खा, वे तार सूत के, वह बाँसुरी, और वे थे सुर।
त्याग तपस्या के गीतों से- पीड़ित बन्दीगृह था सुरपुर॥
वह रचना, वे रचनात्मक थे, वह भावुकता, वे थे कविता।
वह थी धार, और वे लहरें, वह थी रश्मि, और वे सविता॥
एक दिवस "बा" जननायक के- चरण दबाती थी कारा में।
पतिव्रत धर्म पालती थी वह, तपी तपस्या की धारा में॥
बापू बोले, कारा में ही- देवी! यदि तुम मर जाओगी-
तो मेरी पावन पूजा के- फूल स्वर्ग में भी पाओगी॥
तेरी मूर्त्ति बना मन्दिर में- तब मैं पूजा किया करूँगा।
तेरी ही समाधि के तट पर- जिया गया तो जिया करूँगा॥
भारत की स्वतन्त्रता के हित- तेरा तन बलिदान हुआ यदि-
आन्दोलन की चिर समाधि पर- बा! मुझको अभिमान हुआ यदि-
यदि स्वतन्त्रता के मन्दिर में- दीपक बनकर प्राण जले ये-
बने मोमबत्ती इस तन की, तिल तिल कर यदि प्राण गले ये-
तो समझूँगा सफल तपस्या, तब ही मुझको 'राम' मिलेंगे।
तभी एक डाली पर दोनों- बन गुलाब के फूल खिलेंगे॥







महापुरुष के निर्मल मन में– कम्पित थी भविष्य की रेखा।
बन्दीगृह के दूले पर से– उसने सारे जग को देखा॥
सुख से दुःख, दुःख से सुख है, मृत्युलोक की यही कहानी।
'राम' 'कृष्ण' की आँखों में भी– देखा है दुनिया में पानी॥

बन्दीगृह में मृत्यु एक दिन– विधि की थाती लेने आई।
मृत्युलोक से स्वर्ग सिधारे– सहचर "महादेव देसाई"॥
उस दिन मेरे जननायक के– भावुकता से दृग भर आये।
दोनों हाथों से बापू ने– "देसाई" पर फूल चढ़ाये॥

जिन्हें न माया मोह राम वे– शव के पास बैठ कर रोये।
आँखों के जल से बापू ने– शव के हाथ पैर मुँह धोये॥
"देसाई" की पत्नी ने जब– रो रो वहाँ चूड़ियाँ फोड़ीं।
जब छाती पर पत्थर रख कर– उसने हाय! छातियाँ तोड़ीं॥

जब विधवा की गोदी का शिशु– रोना देख देख रोता था।
माँ की गोदी में रो रो शिशु– जब कि कफ़न अर्थी धोता था॥
तब कारा की दीवारें भी– मूक रुदन से जड़वत थीं हा!
'आग़ा खाँ' के बन्दीगृह की– भीतें मातम से नत थीं हा!!

और शोक सागर में बापू– खा खा कर पछाड़ गिरते थे।
मित्र बिछड़ने पर पीड़ा से– धरती पर पहाड़ गिरते थे॥
बना चिता अपने हाथों से– दाह क्रिया कर फूल चढ़ाये।
जननायक ने रोते रोते– चिता किनारे दीप जलाये॥

बड़े भाग्यशाली 'देसाई', प्रभु रोते जिनके वियोग में।
उन के शव कुत्ते खाते हैं– सड़ते हैं जो विषय भोग में॥
'देसाई' की चिर समाधि पर– बापू प्रतिदिन फूल चढ़ाते।
उस शहीद की स्मृति में बापू– पूजा करते, दीप जलाते॥

क्षणभंगुर इस दृश्य लोक में– नश्वर तन से नाता ही क्या?
नश्वर की उपासना करके– खोता है कवि, पाता ही क्या??
आज मिले कल बिछड़ा करते, दुनिया का सम्बन्ध यही है।
सत्य प्रेम का पूज्य पुजारी– अमृत वही है, अमर वही है॥







युग परिवर्त्तन हेतु राम ने- कलियुग में अवतार लिया था।
स्वयम् राम ने भी कलियुग का- कड़वा कड़वा ज़हर पिया था॥
आन्दोलन की गति विधि पर फिर- बापू ने मन मथा शान्ति से।
स्वतन्त्रता को टेर रहे थे, बापू अपनी शान्त क्रान्ति से॥

'नौ अगस्त' के आन्दोलन ने- भारत भर की जेलें भर दीं।
भीषण बन्दूकों के आगे- हँसते हुए छातियाँ कर दीं॥
किन्तु 'ब्रिटिश' ने जननायक पर- झूठे झूठे दोष लगाये।
तोड़ फोड़ का आन्दोलन कह- उन पर अपने पाप चढ़ाये॥

कहा ब्रिटिश ने काँगरेस अब- हिंसा से हत्या करती है।
सत्य अहिंसा वाली संस्था- आज न हिंसा से डरती है॥
"इसे सफ़ेद झूठ कहते हैं, तनिक न है अपराध हमारा।
"नौ अगस्त" को हुआ दमन से- पहले हम पर वार तुम्हारा॥

गाँधी जी वह काँगरेस के- तुमने सारे नेता पकड़े।
दोष तुम्हारे ऊपर हैं सब, जो भी हुए देश में झगड़े॥
पकड़ लिया जब हमको तब फिर- हम पर कैसी ज़िम्मेवारी?
हम तो सत्य अहिंसावादी, यह काली करतूत तुम्हारी॥

फूस इकट्ठा था वर्षों से, तुमने दियासलाई डाली।
बरस पड़ीं फिर उस ज्वाला पर- दहकी हुईं घटायें काली॥"
उन के मिथ्या आक्षेपों पर- जननायक ने उन्हें जगाया।
चोर न कोतवाल को डाण्डे- उनको बार बार समझाया॥

किन्तु दूध से धुले हुए पर- दोष लगाये ही जाते थे।
ब्रिटिश राजनीतिज्ञ उन्हों पर- शस्त्र चलाये ही जाते थे॥
इन आरोपों के विरोध में- जागे मनमोहन के साधन।
"आग़ा ख़ाँ" के बन्दीगृह में- शुरू हुआ बापू का अनशन॥

उठ विरोध में ब्रिटिश नीति के- किया कठिन व्रत इक्किस दिन का।
आत्मा में त्रसरेणु हुआ लय, विष उतारता था भिन भिन का॥
उपवासों से सत्य प्रेम की- सुप्त शक्तियाँ होतीं जाग्रत।
सत्य अहिंसा से प्रेरित हो- जननायक ने किये घोर व्रत॥





जनायक

राजनीति वह सन्त-ज्ञान के- गाँधी जी सच्चे प्रतीक थे।
कथन आचरण में सम रस थे, मानवता की अमर लीक थे !!
सत्य-सूत से बुने गये थे, ताना धर्म, नीति था बाना।
अर्थ कला संस्कृति की लय ने- आत्मा के बल पर व्रत ठाना !!

'लिनलिथगो' को पत्र लिखा यह- फेंकी तुमने धूलि चाँद पर।
जग के आगे देना होगा- तुम्हें एक दिन इस का उत्तर !!
उत्तर आया 'लिनलिथगो' का- तुम अपना अस्तित्व बचाओ !
अपने अनशन के आँचल में- मत अपने अपराध छिपाओ !!



हमको दबा न धमका सकती- गाँधी जी हड़ताल तुम्हारी।
चन्दन की लकड़ियाँ मँगालीं यहीं चिता की है तैयारी !!
मर जाओगे तो चन्दन की- चिता तुम्हें तैयार मिलेगी।
अनशन करो, मरो चाहे तुम, अब न ब्रिटिश सरकार हिलेगी !!

'आग़ा खाँ' के इसी महल में- सिसक सिसक कर मर जाओगे।
अपनी जान बचाओ गाँधी ! स्वतन्त्रता पीछे पाओगे !!
मुसका कर बोले बापू यह- रवि को कौन जला सकता है ?
जो जग को प्रकाश देता है- उस को कौन गला सकता है !?

स्वतन्त्रता के भव्य भाल पर- वाणी का प्रकाश दमकेगा।
दीप्त दिवाली के आँगन में- हँसता हुआ चाँद चमकेगा !!
उन का जर्जर तन अनशन से- प्रतिपल गिरने लगा, उठा मन।
'मीराबेन' और 'बा' माता- मलतीं तेल, चढ़ातीं चन्दन !!

'सरोजनी नायडू' उन्हों की- सेवा में थी पास उन्हों के।
बड़े बड़े डॉक्टर कारा में- बने हुए थे दास उन्हों के !!
'डॉक्टर गिल्डर' और 'सुशीला- नायर' बैठे नब्ज़ पकड़ कर।
'बी० सी० राय' और 'भण्डारी'- तथा 'माण्डलिक' भी थे तत्पर !!

'देवदास' गाँधी बापू के- तलवे सहलाते मधु पीते।
'रामदास' गाँधी बापू का- सेवामृत पी पी कर जीते !!
"जनरल कैरडी" ने बापू की- कारागृह में करी परीक्षा।
उन सब को गुरु गाँधी जी ने- मूक हृदय से दी थी दीक्षा !!



पर बापू की प्रतिदिन प्रतिपल– हालत गिरती ही जाती थी।
जी मिचलाता, मूर्च्छा आती, बार बार "बा" घबराती थी॥
बापू को मूर्च्छा आती थी, फटता था 'बा' का अन्तस्तल।
अङ्ग शिथिल होते थे क्षण क्षण, आत्मिक बल बढ़ता था पल पल॥



घेरा घटा ने प्रिय चाँद बा' का –
'बा' का कलेजा निकला पड़ा था॥
न धूप घेरे शशि को कभी भी।
सुधांशु का हो उपवास पूरा॥

हे राम! कैसी यह ली परीक्षा?
काली घटा के दिन ये घटा दो॥
देखो कड़ी धूप, वितान तानो।
कैसे सहूँ हा! पल एक भी मैं॥

ये शूल लम्बे फल ही बना दो!
मेरे लिये ये पल कल्प से हैं॥
जो आयु मेरी, वह भी उन्हें दो!
मैं हूँ उसी में, वह प्राण मेरा॥

जो पुण्य मेरे फल फूल वे दो!
सतीत्व! मेरे प्रण प्राण में जा!!
देखूँ उन्हों का यम क्या करेगा!
वे जीत होंगे यदि मैं सती हूँ॥

फैल गई अनशन की चर्चा, भारत भर में चिन्ता छाई।
अनशन बादल बन कर छाया, धुँवा देख दुनिया घबराई॥
मोह-रज्जु में बँधा हुआ जग– जननायक की ज्योति न जाना।
जलता गलता नहीं कभी जो– उसे नहीं जग ने पहिचाना॥
मिट्टी के पिँजरे में बन्दी– परम पिता परमात्मा थे वे।
या कि प्रेम में बँधे पुजारी– शुद्ध "बुद्ध" की आत्मा थे वे॥
स्वास्थ्य गिर रहा था बापू का, चिन्ता में थे सारे डॉक्टर।
त्यागपत्र दे दिया "अणे" ने– देख ब्रिटिश का धुँधला उत्तर॥





छोड़ ब्रिटिश की राजसभा को- भारत माता के पग चूमे।
स्वतन्त्रता के आन्दोलन में- नंगी तलवारों पर झूमे॥
सुनी सूचना बापू ने जब- अधरों पर कुछ हँसी आ गई।
उनके पल भर के हँसने से- रात गई चाँदिनी छा गई॥

चिन्ताजनक दशा थी उनकी, ग्यारह रात और दिन बीते।
बारहवें दिन जी मिचलाया, छूटी नब्ज़, मौत से जीते॥
बेचैनी में मूर्च्छा आई, घण्टों तक बेहोश रहे वे।
भारत भर ने एक एक पल- कोटि कल्प की भाँति सहे वे॥
कोटि कोटि में जीवन आया- रसना से नींबू के रस की।
जी में जी आया फिर सब के, जय हो जननायक के यश की॥
अनशन से कुम्हलाये बापू, बन्द कमल जैसा वह तन था।
स्वतन्त्रता के सूर्य बिना जो- निशि में मुरझाया सा मन था॥

साढ़े चव्वन सेर वज़न था, घट कर चालिस सेर रह गया।
बापू के व्रत का प्रभात वह- 'गीता' 'वेद' 'क़ुरान' कह गया॥
जननायक की चिता हेतु जो- चन्दन की लकड़ियाँ वहाँ थीं-
बापू से सुगन्ध लेने को- चन्दन-बन से आज यहाँ थीं॥

बोल उठीं वे, हम आईं हैं- बापू के चरणों में चढ़ने।
हम न चिता के लिये यहाँ हैं, आईं हैं हिंसा से लड़ने॥
पराधीनता की यह कारा- इस चन्दन में जल जायेगी।
चन्दन का सिंहासन होगा- जिस पर स्वतन्त्रता गायेगी॥

लेकिन कुछ बलिदान देश को- हँसते हुए चढ़ाना होगा।
जिसने जितना दुःख सहा है- उसने उतना ही सुख भोगा॥
बापू का व्रत नयी पहेली, चमक रहा है चमत्कार से।
स्वतन्त्रता का व्रत रहस्य है, जीत लिया संसार प्यार से॥

"बर्नार्डशा" विश्व-कवि बोले- गाँधी बन्द किये कारा में।
भारी भूल, मूर्खता की यह, मुँह धो रहे रक्त-धारा में॥
उन्हें चाहिये गाँधी जी को- बिना शर्त के शीघ्र छोड़ दें।
बालू के इस बन्दीगृह की- हथकड़ियों को अभी तोड़ दें॥











भला इसी में अंग्रेज़ों का- क्षमा याचना करें उन्हों से।
परमपिता के शब्द रूप वे, पाप ब्रिटिश के डरें उन्हों से॥
ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल बापू से- क्षमा माँग कर कालस धोले!
दुनिया का कल्याण इसी में- उन चरणों के पीछे होले॥

पर विनाश के समय भटक कर- उल्टी बुद्धि चला करती है।
चलती उल्टी हवा उस समय, शशि से माणि पिँघला करती है॥
जगतपिता के इस अनशन से- देश विदेशों में थी हलचल।
ब्रिटिश फेंकता धूलि चाँद पर, चाँद और होता था उज्ज्वल॥

बापू के प्रकाश की किरणें- सब को देतीं थीं उजियाला।
किन्तु ब्रिटिश को दीख रहा था- वह उजियाला काला काला॥
बापू के प्राणों पर संकट, अंग्रेज़ों की वही नीति थी।
पैर क़ब्र में लटक रहे थे, पर बगुले की वही रीति थी॥

घातक हथियारों के बल का- नशा छा रहा था ब्रिटेन पर।
अभी और पीनी बाक़ी थी- गाँधी, गाँधीवाद कुचल कर॥
पत्र पत्रिकायें लन्दन की- विष उड़ेलतीं थीं बापू पर।
कहा कि अनशन किये हुये हैं- गाँधी जी कारागृह से डर॥

सोलह अनशन बाद उन्हों का- यह था सत्रहवाँ अनशन प्रण।
उल्टे तूफ़ानी सागर में- जननायक थे अमर सन्तरण॥
"जिन्ना" ने यह कहा कि गाँधी- हिन्दू नेता, हिन्दू जाने।
हम तो जमजम का जल पीते, वे गंगा में चले नहाने॥

अनशन से 'एशिया' हिल गया, हिलता था "यूरोप" पात सा।
कलियुग की काली रजनी में- वही तपस्वी था प्रभात सा॥
गये तार पर तार ब्रिटिश को- छोड़ो गाँधी जी को छोड़ो!
उनके प्राणों पर संकट हैं, तोड़ो उनके बन्धन तोड़ो!!
"आर्थरमूर" यही कहते थे, देश विदेशों में था यह स्वर।
गला फाड़ कर ऊँचे स्वर से- कहते थे यह धरती अम्बर॥
दई देवता मना रही थी- भारत की सभ्यता पुरानी।
जेल तोड़ने को प्रस्तुत थी- कुछ युवकों की नयी जवानी॥





जननायक

लाल लाल बादल कहते थे– यह परिवर्तन की बदली है।
जननायक के आत्मिक बल से– आँखें खुलीं, सृष्टि बदली है॥
चहक रही है मधुर प्रभाती, जाग रहे उपवन के माली।
छोड़ो बापू, छोड़ो भारत, राज़ी से कर दो घर खाली॥

महाप्रलय के काले बादल– रुके हुए बापू के बल से।
धरती टिकी हुई कलियुग में– गाँधी के तप के सम्बल से॥
उनकी ही पग धूलि धरा पर– भूचालों को रोक रही है।
उनके उपवासों की महिमा– सारा विश्व विलोक रही है॥

यदि इन उपवासों में बापू– छोड़ गये यह मिट्टी का तन–
धरा धसेगी, गगन गिरेगा, सिन्धु डुबा देगा हिमगिरि घन॥
फण फैलाती सिन्धु-लहरियाँ– इन महलों पर लहरायेंगी।
डूबा होगा पाप तुम्हारा, ध्वजा हमारी फहरायेंगी॥

क्रुद्ध सिन्धु में घोर दनुजता– भस्मसात हो बुझ जायेगी।
किन्तु तैरती मानवता पर– नयी सृष्टि सस्वर गायेगी॥
नाश या कि निर्माण देश का, जो चाहो वह करो समय है।
परिवर्त्तन हुंकार रहा है, यह जीवन का क्रय विक्रय है॥

अब भी यदि वह राग अलापा– तो उसका परिणाम सोच लो!
अभी समय है, डूबो चाहे– तट पर कहीं विराम सोच लो!!
जग के ऊँचे न्यायालय में– न्याय अभी होना बाक़ी है।
गोरे मुँह पर दाग़ लगा जो– वह तुमको धोना बाक़ी है॥

खून बहुत से क्षमा कर चुके, अब न और स्याही पुतवाओ।
रँगो न बापू के शोणित से, ब्रिटिश राज्य का मुँह धुलवाओ॥
दाग़ न कभी खून से धुलता, इसको गंगाजल से धोलो!
अन्त समय है, 'राम' कहो तुम! बोलो गाँधी की जय बोलो!!

ईश्वर जिसे बचाना चाहे– निराहार भी वह जीता है।
ज्योतिपुंज नर बना अमृत रस– मधुर फलों का रस पीता है॥
ईश्वर की महिमा अपार है, रचना में रस के घट ही घट।
जहाँ न कोई प्यासा रहता– नारायण का ऐसा पनघट॥







ज
न
ना
य
क

एक गिलास सन्तरे का रस- पीकर बापू ने व्रत खोला।
चम्मच भर ग्लूकोस घोलकर- अमृत रसासव पी प्रण बोला॥
बापू की इस महाविजय से- कोटि कोटि में प्राण आगये।
बरसे फूल, बजीं वीणायें, बादल आये, मोर छा गये॥



उपवास समाप्त हुआ उनका,
तप में जननायक जीत गये।
व्रत से सत से गति से यति से-
सब संकट के क्षण बीत गये॥
सब ने प्रभु से विनती करके-
जग की वह ज्योति प्रभा रख ली।
जय भारत की, जननायक की,
जिसने तप से दुनिया बदली॥

रचनात्मक की रचनाओं पर- काव्य-कला पंखा झलती है।
अमृत भरे फल फूल दिये वे, जिन पर वायु सुरभि चलती है॥
विधि ने धरती की गोदी में- रत्नों के भण्डार भरे हैं।
जिनसे कवि-कल्पना हारती, सजा सजा वे फूल धरे हैं॥

नींबू, सेव, अनार, सन्तरे, लीची, आड़ू, आम अमर फल।
रस के घट अंगूर मौसमी, और दिया निर्मल गंगाजल॥
जल पर धरा, धरा पर जल है, दीपक है अद्भुत रहस्यमय।
जैसा भी आदर्श चाहिये, देता है वह राम हर समय॥

हम प्रकाश में ढूँढ न पाये, चित का वासी चतुर चितेरा।
अन्तर में प्रकाश है, फिर भी- आँखों में है घोर अँधेरा॥
उसकी अपरम्पार कला है, यह अनन्त निर्माण राम का।
उस को कमी न किसी बात की- जिसे सहारा राम नाम का॥

हीरे मोती की दुनिया में- हम आँखों वाले आये हैं।
लेकिन जीवन भर काँटे चुग- अन्त समय फिर पछताये हैं॥
कितने पुण्य तपों के फल से- हम मनुष्य का तन पाते हैं।
फूल लगाने आये थे पर- शूल खड़े करके जाते हैं॥







ईश्वर को ये वचन दिये थे- जग में जीवन सफल करूँगा।
ढूँढ मुक्ति के निर्मल मोती- बार बार मैं नहीं मरूँगा॥
पर सोने के निर्मल तन पर- कालस पोत पड़ा अर्थों पर।
कवि! अक्षर अक्षर में धर दे- राम नाम के मोती चुग कर॥

राम नाम का अमृत पान कर- अमर हुए मेरे जननायक।
मधुर फलों का संजीवन पी- उठ बैठे सन्तरण सहायक॥
नींबू और मौसमी का रस- रसना का रस छलकाता था।
बथवा मेथी पालग धनिया- रसमय का रस बरसाता था॥

निर्मल जल में शहद मिलाकर- पीने वाला अमृत दे गया।
चुगे मुक्ति के मनहर मोती, तट पर वह मल्लाह ले गया॥
बुद्धि वासना काम द्वेष से- परे एक आनन्द लोक है।
जहाँ न चिन्ता, जहाँ न पीड़ा, जहाँ न कोई भेद शोक है॥

श्रद्धा जहाँ नाचती गाती- स्वर्ग उसे ही तो कहते हैं।
उसी लोक में मोक्ष प्राप्त कर- महापुरुष सुख से रहते हैं॥
समझ भक्ति से उस रहस्य को- नारायण में लय हो जाते।
तप व्रत संयम् सद्भावों से- नर ही नारायण कहलाते॥

बापू ने पहिचान सत्य को- जग में फैलाया नैतिक-बल।
ऊँची नीची इस दुनिया को- आओ सब मिल करदें समतल॥
बापू का डग उठा कि जग के- पैर अनेकों पीछे चलते।
बापू के दर्शन करने को- चन्दा सूरज साथ निकलते॥

उन की रसना के हिलते ही- घर घर में रेडियो बोलते।
उन के अनशन के होते ही- धरती अम्बर साथ डोलते॥
जननायक ने अनशन छोड़ा, भारत भर में मनी दिवाली।
आशा की किरणें उगती थीं, बीत रही थी रजनी काली॥

दीपमालिका के दीपों ने- बापू की आरती उतारी।
भारत भर ने खुशी मनाई, गीत गा रही थी फुलवारी॥
प्राण लौट आये बापू के, कोटि कोटि को प्राण मिले थे।
रोते रोते सूख गये जो, तरु तरु पर वे फूल खिले थे॥









जननायक



आत्मोत्सर्ग किया बापू ने, आत्म-शुद्धि से ईश्वर पाया।
गाँधी जी के उपवासों ने- अद्भुत चमत्कार दिखलाया॥
महापुरुष को दैवयोग से- साथी सन्त मिला करते हैं।
बापू के साथी "भंसाली", जो तप तप मधु-रस भरते हैं॥
तीस साल तक 'लण्डन' में पढ़- 'भंसाली' भारत में आये।
गये हिमालय पर्वत पर फिर, जहाँ तपस्या कर प्रभु पाये॥
सात वर्ष तक मौन रहे वे, ओठ सी लिये थे तारों से।
पीते चून घोल पानी में, तन्मय थे सत् के नारों से॥
कभी शाक ही खाते केवल, तन मन से होते थे उज्ज्वल।
जननायक से मिली प्रेरणा, राष्ट्र-मुक्ति हित आये निर्मल॥
अंग्रेज़ों की दमन नीति पर- किया भक्त ने अनशन जारी।
हत्याकाण्ड 'चिमूर' 'आष्टि' के- देख किया था यह व्रत भारी॥
बासठ दिन तक निराहार रह- जल तक पिया न "भंसाली" ने।
बासठ दिन के बाद डाल पर- फूल खिलाये उस माली ने॥
'शासन परिषद्' से सदस्य गण- त्यागपत्र दे बाहर आये।
जो प्रण व्रत पूरे करते हैं- वे ही तो आदर्श कहाये॥
छोड़ ब्रिटिश की 'शासन परिषद्'- परिवर्त्तन की लहरें लाये।
'सर मोदी' 'सरकार' 'अणे' ने- जीवन पथ पर फूल बिछाये॥
'श्री सप्रू' 'शंकरन' आदि ने- अंग्रेज़ों को दीप दिखाया।
या कि प्रेरणा ने बापू की- राजमहल से उन्हें जगाया॥
लोक लाज से नेताओं ने- सम्मेलन की करी योजना।
अंग्रेज़ी शासन के आगे- नेताओं ने धरी योजना॥
'एच० ग़ज़नवी' 'तेजबहादुर', और 'मुखर्जी' जिसमें बोले।
खोला ब्रिटिश राज्य का चिट्ठा, उलझे हुए प्रश्न कुछ खोले॥
ग़द्दारों की पीठ ठोकना, अंग्रेज़ों का यही काम है।
देशभक्त का ख़ून बहाना, इस इति पर उन का विराम है॥
बलपूर्वक यह माँग हमारी- तुम तुरन्त जननायक छोड़ो!
सिन्धु-मार्ग से तार गया यह- भारत माँ के बन्धन तोड़ो!!





यही "सर्वदल सम्मेलन" में– 'राजा जी' ने करी घोषणा।
लेकिन 'चर्चिल' ने झल्ला कर– उठा ताक में धरी घोषणा॥
अंग्रेज़ों की चालबाज़ियाँ– तरह तरह से घूम रही थीं।
सत्ता की बोतल पी पी कर, भ्रष्ट नशे में झूम रही थीं॥

अंग्रेज़ों की राजसभा में– गाँधी जी पर ज़हर उड़ेला।
कह "फ़ादर जोसेफ़" उन्हों को, ब्रिटिश राज ने मारा ढेला॥
"ग्रे अमिनेस" एक पुस्तक है, वह 'फ़ादर जोसेफ़' कथा है।
मधु में ज़हर मिला कर देना, यह 'फ़ादर जोसेफ़' प्रथा है॥

यह "आल्डस हक्सले" लिख रहे, क्या बापू की यही कहानी?
उस से गाँधी की तुलना कर– करी 'एमरी' ने मनमानी॥
किन्तु "एटली" ने फ़ौरन ही– दिया 'एमरी' को यह उत्तर–
तुलना करी शरारत से यह, वह था बगुला, यह है ईश्वर॥

जैसी जिसकी रही भावना, वैसा ही वह दिया दिखाई।
रत्न पारखी को हैं बापू, और तुम्हें वे दियासलाई॥
सज्जन की आँखों में सज्जन, दुर्जन की आँखों में दुर्जन।
'राम' पुजारी की पूजा में, दलित वर्ग को लगते हरिजन॥

'चर्चिल' को विद्रोही लगते, छली 'एमरी' की आँखों में।
और 'एटली' की भाषा में– वे ही हैं उड़ान पाँखों में॥
वे "क़ुरान" हैं मुसलमान की, हिन्दू की 'गीता, रामायण'।
बसे 'बाइबिल' की भाषा में– जननायक कर्त्तव्य परायण॥

वे 'सुकरात' और वे 'ईसा', वे 'प्रहलाद' 'बुद्ध' की आत्मा।
जैसा जिसका दर्पण होता, वैसा ही देखा परमात्मा॥
टँका हुआ खूंटी पर कम्बल, भ्रम से भूत बना करता है।
समझ सर्प रस्सी का टुकड़ा, भ्रम से पंच भूत डरता है॥

दशा यही थी 'जिन्ना' की भी, उल्टे सीधे बहक रहे थे।
सूखे हुए ठूंठ से चिपटे, चीख़ रहे थे, चहक रहे थे॥
अपनी 'लीगी' चिड़याओं पर– "जिन्ना" को अभिमान बहुत थे।
चलने को ज़बान थी उनकी, सुनने वाले कान बहुत थे॥







जनायक



भिन भिन करते थे भुनगे से, बड़े गर्व से कहा अकड़ कर–
'पाकिस्तान' मान कर मेरा, गाँधी चिट्ठी भेजे मुझ पर ॥
अंग्रेज़ों की क्या ताक़त है– जो उनकी वह चिट्ठी रोके।
प्रतिध्वनि में यह प्रकृति कह उठी– 'जिन्ना' ! क्या आये हो सो के ?

ये अंग्रेज़ तेज़ चाकू हैं, जिस पर दोनों तरफ़ धार है।
प्यार न तुम से और न हम से, सोने के खग से दुलार है ॥
फिर भी बापू ने कारा से– 'जिन्ना' पर चिट्ठी भिजवाई।
पर अंग्रेज़ों ने वह चिट्ठी– छिपा जेब में जान बचाई ॥

ख़बर लगी जब 'जिन्ना' जी को– पीटी मेज़ और झल्लाये।
'मेरी चिट्ठी रोक न सकने', जिन्ना जी कह कर पछताये ॥
'मुस्लिम लीगी प्रान्त' देश में– नयी नयी दिक्क़तें डालते।
दो राष्ट्रों का नारा लेकर– इधर उधर कीचड़ उछालते ॥

इसीलिये भारत पर होती– नौकरशाही की मनमानी।
हाय ! इसी की बलिवेदी पर– 'फ़ज़लुलहक़' की चढ़ी जवानी ॥
जो हक़ की कहता था उस को– नौकरशाही नोच डालती।
डाल पिट्ठुओं को कुछ टुकड़े, नौकरशाही श्वान पालती ॥

'हक़' ने कहा कि छोड़ो गाँधी, शासन की उलझन सुलझाओ !
'ढाका गोली काण्ड' पाप की– अपराधी को सज़ा दिलाओ !!
ब्रिटिश वंग-शासक ने इस पर– शासन में से उन्हें निकाला।
'फ़ज़लुलहक़' का मुँह उजला है, अन्यायी का मुँह है काला ॥

अपनों के विश्वासघात से– 'हक़' को दुःख हुआ ही होगा।
हिन्दू मुस्लिम मार काट में– सुख क्या मिला ? दुःख ही भोगा ॥
मुस्लिम लीगी जहाँ जहाँ थे– वहाँ वहाँ था बहुत वितण्डा।
मुस्लिम लीगी डाल रहे थे– स्वतन्त्रता में घोर अड़ंगा ॥

प्रादेशिक सरकारें सारी– आन्दोलन में अस्त व्यस्त थीं।
अपनों के झंझट झगड़ों से– भारत की ज्योतियाँ अस्त थीं ॥
'आगा खाँ' के बन्दीगृह में– भारत का दिनमान बन्द था।
पराधीनता के पिंजरे में– मानव का सम्मान बन्द था ॥





'आग़ा ख़ाँ' का महल राजसी, जिसमें बापू बन्द पड़े थे।
कन्धों पर बन्दूक़ सँभाले- पहरों पर सन्तरी खड़े थे॥
शान्त भावना सी "बा" पति के- सेवामृत से जीवन पाती।
पहुँच राष्ट्र-माता के पद पर- जननायक के चरण दबाती॥

जीवन-ज्योति राष्ट्र-माता "बा"- गाँधी-गति की गौरव गरिमा।
महिलाओं की अमर ज्योति माँ, राष्ट्र भक्ति की जीवित प्रतिमा॥
'सीता' 'सावित्री' 'तारा' सी- "बा" थीं जननायक की छाया।
हर पग पर उस दीप-शिखा ने- हृदय-दीप का हाथ बटाया॥

जननायक की उस पग-ध्वनि ने- प्यारे पति की गति पहिचानी।
नारी का अभिमान बन गई- "बा" माता की अमर कहानी॥
पति-सेवा में, राष्ट्रभक्ति में- जननी का बलिदान अमर है।
उसी राष्ट्रमाता के तप से- नारी का अभिमान अमर है॥

"बा" का हृदय तभी फटता था- जब भी पति को पीड़ित देखा।
बापू का उपवास हृदय पर- खींच गया चिन्ता की रेखा॥
जननायक की चिन्ता में "बा"- प्रतिपल मन मन में घुलती थी।
बापू की सुन्दर सरिता से- यह मैली दुनिया धुलती थी॥

स्वास्थ्य गिर गया "बा" माता का, माँ पड़ गई रोग-शैया पर।
'आग़ा ख़ाँ' के बन्दीगृह में- आया कवि का मानस भर भर॥
'बा' की पीड़ा देख क़ैद में- कवि की विरह-व्यथा शर्माई।
हृदय-रोग के दौरों से माँ- बापू के आगे मुरझाई॥

'बा' को घेर लिया रोगों ने, घिर आये चिन्ता के बादल।
औषधि कोई लगी न उनको, सब उपचार हो गये असफल॥
दीपशिखा टिमटिमा रही थी, जीवन-दीप बुझा जाता था।
चढ़ती थीं पुतलियाँ पलक में, पति का हृदय भरा आता था॥

'हीरालाल' पास थे माँ के, 'देवदास' सेवा करते थे।
"तुम्हें देखकर मुझे बहुत सुख", माँ के वाक्य नीर भरते थे॥
माता के दुलार के आगे- तीनों लोकों की निधि लघु है।
माँ के मधुर स्नेह के आगे- 'भक्ति काल' की गति विधि लघु है॥







पड़ी रोग-शैया पर 'बा' ने- ईश्वर की झाँकी पाई थी।
नब्ज़ चढ़ रही थी ऊपर को, निर्मम नीरवता छाई थी॥
'बा' के पास खड़े गाँधी जी, अन्तिम झाँकी देख रहे थे।
आँखों के अन्दर ही अन्दर- दृग के आँसू टूट बहे थे॥



धीरे धीरे माँ बोली यह- खड़े खड़े थक गये नाथ तुम!
सोओ प्रभु! मैं अभी न मरती, श्वास श्वास में नाथ! साथ तुम!!
सूर्योदय के बाद मरूँगी, अभी न मैं मरने वाली हूँ।
मरते समय बुलाऊँगी मैं, तुम से ही मैं उजियाली हूँ॥

जब तक पास न आओगे तुम- तब तक नहीं मरूँगी स्वामी!
तब तक श्वास कण्ठ ही में मैं- अटकाये रक्खूँगी स्वामी!
उपवासों से दुबल हो प्रभु! खड़े खड़े सारा दिन बीता।
सोओ स्वामी! सोओ स्वामी! मैं मन में पढ़ती हूँ गीता॥

जगजननी ने 'देवदास' को- तीन बजे के समय जगाया।
बोली, "मैं जा रही पुत्र अब, नारायण ने मुझे बुलाया॥
जो आया है उसे एक दिन, जग से निश्चित ही जाना है।
क्यों न आज ही जाऊँ फिर मैं? पुत्र! उठा पानी दाना है॥"

इसके बाद बैठ कर 'बा' ने- हाथ जोड़कर करी अर्चना।
"प्रभु! तुम ही मेरे आश्रय हो, दया करो तुम यही प्रार्थना॥"
मुँह से 'राम राम!' उच्चारा, 'देवदास' के आँसू निकले।
महाकरुण-रस के सागर में- 'आग़ा खाँ' के पत्थर पिँघले॥

'पेन्सीलिन' ले इतने ही में- वायुयान से डॉक्टर आया।
कृषि जब पीली पड़ी रोग से- तब अम्बर में घन मँडराया॥
फिर भी 'देवदास' ने चाहा- माँ के 'पेन्सीलिन' लगवाऊँ।
घबराये से सोच रहे थे, कैसे माँ को आज बचाऊँ?

'बचा नहीं सकते अब माँ को!' गाँधी जी ने कहा शान्ति से।
माँ को अपनी कष्ट न दो अब, इन्जेक्शन की व्यर्थ भ्रान्ति से॥
यदि न बात मानोगे मेरी, तो मैं सहमत हो जाऊँगा।
पर ईश्वर के हाथों में वह, मैं तो 'राम! राम!' गाऊँगा॥







"लेकिन 'पेन्सीलिन' लगवाकर- माँ को शारीरिक दुख दोगे।
उसका समय निकट आ पहुँचा, अब औषधि देकर क्या लोगे ?"
बापू ये बातें करते थे, इतने में "बा" ने बुलवाया।
जोड़े दोनों हाथ सामने, मुँह में गंगा-जल डलवाया॥

हाथों से गोदी में रक्खा- बापू ने जगदम्बे का सर।
मन मन में बापू रोते थे- माँ की झाँकी देख देख कर॥
अन्तिम श्वास ले रहीं थीं "बा"- जननायक के अमर सहारे।
बिजली चमकी ! प्राण उड़ गये, प्रथम बार जननायक हारे॥

सती साधना जननायक से- पल भर में ही विदा हो गई।
मरी हुई ऐसी लगती थी- मानो पड़कर अभी सो गई॥
देशभक्ति की दिव्य मूर्ति माँ- मानो लेट गई बन प्रतिमा।
जगदम्बा बन गई आज माँ, बनी विश्व की गौरव गरिमा॥

सन्ध्या में शिवरात्रि दिवस की- 'बा' माता निर्वाण हो गई।
भारत माता की पूजा कर- चिर निद्रा में शान्ति सो गई॥
शव के पास खड़े हो सब ने- घेरा चन्द्राकार बनाया।
'बा' जो भजन रोज़ गाती थी- बापू ने वह भजन सुनाया॥

मरने से पहिले कारा में- 'बा' को हुए मृत्यु के दर्शन।
आश्रम की महिला से 'बा' ने- अपनी करी कहानी वर्णन॥
"मेरे मरने पर मेरे सब- कपड़े उन उन को दे देना।
मिलूँ न मरते समय अगर मैं- मेरी राम राम ले लेना॥

गाँधी जी ने सूत कात कर- जो "बा" की धोती बुनवाई।
मरने से पहिले ही 'बा' ने- वह बन्दीगृह में मँगवाई॥
कहा कि मरने पर यह साड़ी- बहिनो ! मुझको पहिना देना !
राम ! सुहागिन की अर्थी को- अपने कन्धे पर धर लेना॥

बापू ने अपने हाथों से- शव गंगा-जल से नहलाया।
चन्दन चर्चित कर 'बा' का तन, सब नयनों ने नीर चढ़ाया॥
गाँधी जी के कते सूत की- साड़ी फिर 'बा' को पहिनाई।
बापू ने जो बुनी कात कर- उस कफ़नी से देह सजाई॥









जननायक

गाँधी जी के कते सूत की- हाथों में चूड़ियाँ सज गईं।
पड़ी कण्ठ में तुलसी माला, बिछुवों से उँगलियाँ सज गईं॥
चन्दन कुंकुम मल माथे पर- अलकों में सिन्दूर लगाया।
मानो श्वेत कमल पर श्री ने- अन्त समय सिन्दूर चढ़ाया॥



माँ के निकट ओ३म् चित्रित था, स्वस्तिक चिह्न कमल के नीचे।
नौका में भर भर बापू ने- सारे आँसू आज उलीचे॥
किसी स्वप्न में सोई सी 'बा'- धीरे धीरे मुस्काती थी।
गीता के उस पारायण में- मानो 'राम राम !' गाती थी॥

दाह क्रिया के लिये जेल में- चन्दन की लकड़ियाँ आगईं।
सरबालायें मूक रुदन में- राम नाम के गीत गा गईं॥
बापू बोले, मैं निर्धन हूँ, कैसे क्रिया करूँ चन्दन में?
पेड़ स्वयम् कट कर आ पहुँचे- जगदम्बे के अभिनन्दन में॥

पूरा एक वृक्ष चन्दन का- दाह क्रिया के लिये आ गया।
मानो गिरा शोक से वह तरु- स्वाह क्रिया के लिये आ गया॥
तरु तरु रो रो कर कहते थे- किसका माँ के बिना सहारा?
हृदय फट चुका है अब तन भी- जल जाने दो साथ हमारा॥

पुष्पों से ढक कर 'बा' का शव, अर्थी धरी उठा कन्धों पर।
चली सुहागिन की यह अर्थी, जाते हैं जननायक ले कर॥
"वैष्णव जन तो तेने कहिये", गीत साथ गाते चलते हैं।
बापू से "बा" दूर जा रही, आँखों से आँसू ढलते हैं॥

कौन सुहागिन जाती है यह- नारायण कन्धा देते हैं।
जो शहीद होते हैं उनको- कन्धों पर बैठा लेते हैं॥
सौ गज़ की दूरी पर 'बा' की- जननायक ने चिता बनाई।
शव बापू ने धरा चिता में, आई धरते समय रुलाई॥

निकल पड़े बापू के आँसू, टप टप बरसे चिता किनारे।
सृष्टि शून्य सी खड़ी हुई थी, मानो सब परलोक सिधारे॥
चिता किनारे रोते रोते- जननायक ने करी प्रार्थना।
कारा में मरने वाली उस- जगदम्बे की करी अर्चना॥







बापू 'देवदास' से बोले– अपने आँसू गिरा कफ़न पर।
"महादेव" को जला चुका मैं, "बा" की दाह क्रिया अब तू कर!"
हाय! हृदय-द्रावक वाणी से– बापू ने ये शब्द कहे थे।
इन पृष्ठों को लिखते लिखते– कवि के आँसू फूट बहे थे॥

रची चिता चन्दन कपूर की, घृत डाला, दमके हग-मोती।
अग्नि प्रवेश चिता में कर दी, फूट फूट कर धरती रोती॥
'राम! राम! गोविन्द!' नाम ले– 'देवदास' ने चिता जलाई।
अग्नि प्रवेश कर लिया 'बा' ने, शक्ति शक्ति में दी दिखलाई॥



बैठी चिता में जय भोर सी माँ।
मानो उषा में रवि खेलते हैं॥
सीता विराजी जल-अग्नि में हा!
सुनार सोना जल में गलाता॥
बोलीं चिता की जलती शिखायें–
स्वतन्त्रता है बलिदान माँ का।
बापू! तुम्हारी पग-चाप में है–
सम्मान माँ का, अभिमान माँ का॥
रोता किसी का मन मानसी सा–
छोड़ा अकेला प्रिय देवता को।
पूजा बनी आज स्वतन्त्र देवी।
देवी भवानी! जय हो तुम्हारी॥
जाओ सिधारो दिविलोक में 'बा'!
मेरे प्रवासी मन में विराजो!!
आँसू किसी के चुपचाप बोले–
सितार टूटा, स्वर मूक सारे॥
तोते चिता के घन चूमते हैं।
रोते बिचारे, रुकते न आँसू॥
खोयी चकोरी नभ में किसी की।
चकोर पाने वह चाँद दौड़ा॥





जनायक



रोते पगो ! क्यों ? गति आज खोई ।
ग्रामो ! न रोओ, कृषि भी वही माँ ॥
किसान ! तेरी यति आज जीती ।
मेरी युगों की गति आज हारी ॥
गीता बनी माँ, कविता बनी माँ ।
पूजा बनी माँ, सविता बनी माँ ॥
बोली चिता से यह आ रही है–
बापू ! तुम्हारी सुषमा बनी 'बा' ॥
कैसे कहूँ मैं कलिकाल बोलो ?
'बा' सी सती भी जब देश में है ।
जो बो गई माँ अपने करों से–
उद्यान में वे तरु आज भी हैं ॥
सौभाग्यशाली वह दीप की लौ–
बुझी हुई भी जय-ज्योति है जो ॥
सुहाग बोला, जय हो सती की ।
विहाग बोला, जय हो सती की ॥
प्रभात की रश्मि किरीट को छू–
आती उसी के पग पूजने को ।
सुहाग बिन्दी वह चाँदनी है–
चन्दा जिसे पा चमका निशा में ॥

दिव्य देह मिल गई आग में, खड़े देखते रहे खेल सब ।
मर्त्यलोक का यही खेल है, बिछुड़ा करते यहाँ मेल सब ॥
खड़े पेड़ के नीचे बापू, स्वर्गारोहण देख रहे थे ।
गई बुढ़ापे की वह लठिया, कवि ने हारे शब्द कहे थे ॥
गोदी में अब बैठ राष्ट्र किसकी 'माँ ! माँ !' कहेगा किसे ?
बोलो माँ ! यह राष्ट्र-पुत्र किस गोदी में रहेगा यहाँ !!
रोती है जनता दुखी ! विकल पक्षी ! राष्ट्र-माता गई !
देखो राष्ट्र-पिता खड़े नयन खारी नीर से धो रहे !!





रोते बालक ! माँ गई ! हृदय बापू का दुखी गाय सा !
आँसू भी अब हैं नहीं ! जलज देखो नीर में गा रहा ॥
मेघो ! क्यों झरते यहाँ ! कुलिश राजा सोखता नीर को !
ये जो सागर देखते तरल पीड़ा से फटी है धरा !!

बासठ वर्ष साथ रहकर 'बा' ! छोड़ गईं बापू को किस पर ?
पागल कवि ! बापू तो वह हैं, यह सारी दुनिया है जिस पर ॥
पर मनुष्य के बाने में हैं, पीड़ा कैसे सहन करेंगे ?
कवि अपने पृष्ठों में कैसे- महाउदधि का नीर भरेंगे ??



उस दिन सारी रात खाट पर- बापू चुपके चुपके रोये।
'बा' की स्मृति के मधुर नीर ने- आज उन्हों के वस्त्र भिगोये ॥
'बा' के जाने से बापू का- जीवन सूना सूना सा था।
'बा' के जाने से बापू की- कमर झुक गई, उट्ठा माथा ॥

"ईश्वर ! कैसी आज परीक्षा- तूने ली, पर तेरी इच्छा।
बनी रहे प्रभु ! तेरी इच्छा, चली गई प्रभु ! मेरी इच्छा ॥
प्रभु ! मेरी ही तो इच्छा थी- 'बा' मेरे हाथों में जाये।
उस जगदम्बे के सुहाग पर- चार चाँद की आभा गाये ॥

स्नेहमयी उस दीपशिखा ने- अपने पति की गोदी पाई।
भाग्यशालिनी थी "बा" जिसकी- जननायक ने चिता जलाई ॥
चिता बुझ गई "बा" माता की, शेष रह गई अमर कहानी।
अर्घ्य चढ़ाने को आँखों में- बस दो बूँद बचा है पानी ॥

मुक्त हो गई वह जगदम्बा, जग-बन्धन की रस्सी तोड़ी।
पुत्रों ने माता की भस्मी- "इन्द्रायणी नदी" में छोड़ी ॥
चिता जल गई, पर उसमें से- साबुत निकलीं पाँच चूड़ियाँ।
अमर सुहागिन की बिन्दी है, जला न पाई आँच चूड़ियाँ ॥

अस्थि चयन कर 'देवदास' सुत- फूल 'प्रयाग राज' ले आये।
केलों के पत्ते पर रखकर- संगम में वे फूल चढ़ाये ॥
गंगा की निर्मल लहरों में- मानो श्वेत कमल लहराये।
पुत्रों ने अपनी माता के- बस वे अन्तिम दर्शन पाये ॥





जननायक



'महादेव' की ही समाधि के- पास समाधि बनाई 'बा' की।
आओ उसकी पूजा कर लें- जिसकी रही कहानी बाकी॥
जय जय जय जगदम्बे! जय हो! भारत माता की जय जय जय!
कण कण में समाधियाँ निर्मित, मेरी माता अणु अणु में लय॥

"सेवाग्राम कुटीर" आज भी- माँ की सेवा का प्रसाद है।
'आश्रम साबरमती' आज भी- माता की साकार याद है॥
अथक सेविका "बा" के तप से- जननायक का हर डग दमका।
'चम्पारन' 'खेड़ा' 'अगस्त' के- सत्याग्रह में जीवन चमका॥

"बा" के बहुत साधना मन्दिर, जिनमें माँ साकार आज भी।
'साबरमती' नदी में बहता- जगदम्बे का प्यार आज भी॥
भारत माता के मन्दिर में- एक एक सी दिव्य मूर्त्ति है।
जीवन में जो जो भी कमियाँ- माँ उन सबकी अमर पूर्ति है॥

शब्दों के फूलों की माला, कवियों की स्वीकार करो माँ!
मोती गूँथ गूँथ लाये हैं, इन हंसों को प्यार करो माँ!
ये ठोकर में पड़े फूल माँ! तेरे मन्दिर में आये हैं।
जननायक के पद-चिह्नों के- मोती बीन बीन लाये हैं॥

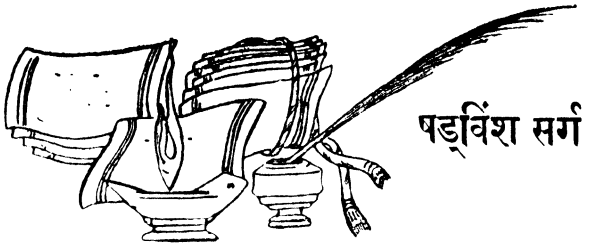
रश्मि सती पर स्वर्ण लुटा कर-
नीरज को सहला थिरती है।
वायु वही घन घोर घटा रच-
पा पग-धूलि उड़ी फिरती है॥

दीपशिखा बुझ स्नेह गई बन,
दीपक स्नेह लिये जलता है।
मंज़िल दूर! थका पथ-दर्शक!
सूरज मार्ग दिखा चलता है॥









षड्विंश सर्ग



तारों में शशि पूर्ण हैं, कुमुद देखो रास में गा रहे।
तू क्यों सूर्य जला ? किये कमल बन्दी ! रात में जा छिपा !
चन्दा की यह चाँदनी मधुर भाती क्यों नहीं बावले ?
बोला सूरज, चाँद की मधुरता में खो गईं हैं कला ॥

छूटा है अब धैर्य ! क्रान्ति दहकी ! ज्वाला जली सिन्धु में।
तारे भी जल रात में सजग हैं स्वाधीन होगी धरा ॥
बापू की पग-धूलि ले जलज सा पाषाण भी तैरता।
जो वैज्ञानिक पाँव पत्थर तिरादें वज्र ! वे पैर छू !

काँपती थी गति समय पर, यति समीरण बन चली थी।
सूर्य की स्वर्णिम किरण सी, एक चिनगारी जली थी ॥
प्रलय-पारावार मानो- श्वास लेता था तड़प कर।
लाल अंगारे उगे थे, फूल जैसे आँसुओं पर ॥

पेट से पट्टी बँधी थी, हृदय पर पत्थर धरा था।
कमर में चाकू घुसेड़ा, घाव सीने का हरा था ॥
ओठ सूखे थे पिपासे, प्राण पथराये हुए थे।
हाथ बन्दी थे हमारे, नयन शर्माये हुए थे ॥

क्रान्ति की गति पर तड़पते, गीत उड़ते जा रहे थे।
लाल बादल लाल आँसू, ख़ून लेकर आ रहे थे ॥
लिपि चिताओं के धुँवे की- लिख रहा इतिहास जिसमें।
कह रही करुणा कला से, कल्पना की प्यास इसमें ॥





जननायक



अस्त व्यस्त थी राज्य व्यवस्था, ढलता सा साम्राज्यवाद था।
प्राणों में पीड़ा पीड़ित थी, परिवर्त्तन का शंखनाद था॥
भूखे घुटने दिये पेट में– 'रोटी ! रोटी !' चिल्लाते थे।
दबे कोयले दहक रहे थे, 'भूख ! भूख !' भूखे गाते थे॥

काल पड़ गया 'कलकत्ते' में, तड़प उठा 'बंगाल' भूख से।
सड़कों पर कंकाल पड़े थे, ठिठरे थे भूचाल भूख से॥
'विधि तिराणवें' का शासन था, अन्न वस्त्र का काल पड़ गया।
नौकरशाही की बोतल से– 'लिनलिथगो' का मगज़ सड़ गया॥

चावल का आयात रोक कर– पट्टी बँधवा दी पेटों पर।
नंगे भूखों की पीठों पर– ऊपर से बरसाये हंटर॥
ताने डाल डाल वाणी पर– अंग्रेज़ों ने ओठ सी दिये।
भूख लगी तब पत्ते चाबे, प्यास लगी तो ओठ पी लिये॥

राज्य कूँजड़े का ग़ल्ला था, प्रजातन्त्र था मारकाट का।
'बेजवाड़' में भाव 'आठ' का, 'कलकत्ते' में भाव 'साठ' का॥
अंग्रेज़ी अत्याचारों से– घर घर में दुर्भिक्ष पड़ गया।
उधर महल में पड़ा पड़ा ही– लाख अरब टन अन्न सड़ गया॥

उस काले शासन के अन्दर– 'कलकत्ते' का हाल न पूछो!
उस दुर्भिक्ष काल के अन्दर– तुम भूखा 'बंगाल' न पूछो!
सड़क सड़क पर, गली गली में– पड़े भूख से तड़प रहे हैं।
भूखे कंकालों के चमड़े– पागल कुत्ते हड़प रहे हैं॥

मरी पड़ी माँ, किन्तु हाय ! वह– शिशु उसका तन चूस रहा है।
काट रहा दाँतों से स्तन वह, पर न लाश से दूध बहा है॥
हाय ! भूख से तड़प तड़प कर– उस शिशु ने भी प्राण दे दिये।
ओ दुर्भिक्ष ! हाय हत्यारे ! बच्चे के भी प्राण ले लिये॥

मरी पड़ी माँ, मरा पड़ा शिशु, लाशें जातीं छकड़े भर भर।
ठठरी से चिपटी बच्ची की– ठठरी पड़ी हुई सड़कों पर॥
वह भूखी बंगालिन देखो– मुर्दा बच्चे को खाती है।
उस भूखी बच्ची को देखो– माँ का ख़ून पिये जाती है॥





वह भूखा प्यासा हड्डी को– चूस रहा है, चाब रहा है।
वह देखो! सूखी चमड़ी को– वह दाँतों से दाब रहा है॥
वह देखो! भूखे बंगाली– चबा रहे पेड़ों की छालें।
वे कोमल कन्यायें देखो! खाती हैं बबूल की डालें॥

"रोटी! रोटी! भूख! भूख! हा! रोटी! रोटी! भूख! भूख! हा!"
"कलकत्ता" शमशान बन गया, सड़कों पर शव गये सूख हा!!
बहिनों की इज्ज़तें बेच दीं– एक एक रोटी के ऊपर।
गुण्डों ने लड़कियाँ ख़रीदीं– पत्ता भर चावल दे दे कर॥

बापों ने बेटियाँ बेच दीं– एक एक टुकड़े के ऊपर।
लाखों की इज्ज़तें बेच दीं– बीस बीस दाने ले लेकर॥
वह 'भूखा बंगाल' देखकर– छप्पनिया अकाल शर्माया।
बहिन बेटियों से सड़कों पर– गुण्डों ने पेशा कमवाया॥

बहिनों की चमड़ी के ऊपर– किसने हुस्न बज़ार लगाये?
हा! हा! वह दुर्भिक्ष भयानक, जिससे नंगे भी शर्माये॥
पर न हया उसको आती है– जो बाज़ारों में जा बैठी।
वह औरों को कैसे छोड़े– जो अपने तन को खा बैठी॥

'कलकत्ते' की गली गली में– लाशों को कुत्ते खाते हैं।
टटरी पंजर कंकालों पर– कव्वे चोंच चला जाते हैं॥
कुत्ते मुर्दों को खाते हैं, ज़िन्दों को इन्सान खा रहे।
खानेवाला रहा न कोई, मुर्दों को शमशान खा रहे॥

पत्तों पर सतीत्व तक बेचा, लज्जा बेची, बेचा तन मन।
अमरीकन, अंग्रेज़ी फ़ौजी– डसते थे बहिनों का जीवन॥
भूख बेचने लगी तनों को, उनके झूठे टुकड़े चाबे।
महायुद्ध की उस ज्वाला में– पेट गिरोये! बच्चे दाबे॥

बहिन बेटियों से भारत की– 'अमरीकन फ़ौजी' खेले थे।
फिर 'मीनाबाज़ार' लग गये, उनके महलों में मेले थे॥
वाणी रुकी, टुक गये ताले, कही न जाती बुरी कहानी।
रुकी लेखिनी लिखते लिखते, आँखों में भर आया पानी॥









जननायक

एक अकेली उस महिला पर– कुत्ते बीस बीस वे झपटे।
'अमरीकन फ़ौजी' शराब पी– ख़ूनी तीस तीस वे झपटे॥
उस "मुस्लिम लीगी जिन्ना" की– खुलीं न इतने पर भी आँखें।
दबे साम्प्रदायिक नागों की– खुलीं न विष खाकर भी आँखें॥



छुवाछूत की बीमारी यह– मिटी न तब भी, जली न तब भी।
आँखों के खारी पानी से– विष की पथरी गली न तब भी॥
चारों ओर धुँवा उड़ता था, धधक रहे थे मन के बादल।
जलधर पर जल बरसाते थे– जन जन के जननायक उज्ज्वल॥

उठ सोते श्मशान जाग अब! परिवर्त्तन ललकार रहा है।
उठ भूखे बंगाल तड़प कर! शंखनाद हुंकार रहा है॥
अरे भूख से मरने वालो! उठो, करो या मरो चलो तुम!
अरे भूख से जलने वालो! परवाने बन आज जलो तुम!!

भूखो! जब मरना ही है तो– स्वतन्त्रता के लिये मरो तुम!
क्रांति क्रांति बस क्रांति क्रांति हो, याद 'फ्रांस' की क्रांति करो तुम!!
'आग़ा ख़ाँ' के हिलें सींकचे, कारा की दीवारें टूटें।
स्वतन्त्रता का दीपक दमके, बापू बन्दीगृह से छूटें॥

अपने पेटों की ज्वाला से– अब तुम ज्वालामुखी जलादो!
अपनी आँखों के पानी से– लोहे के हैवान गला दो!!
घरड़ घरड़ कर आँखें बरसें, बिजली टूट गिरें आहों से।
सागर लहराये अम्बर में, भारतमाता की चाहों से॥

सुलग उठे सागर का मानस, धधक उठे अन्तर की ज्वाला।
भभक उठें झनझना बेड़ियाँ, टूट गिरे जेलों का ताला॥
धरती अम्बर अतल वितल में– अब देखें पानी ही पानी।
पेटों से अंगारे निकलें, भूखों की बढ़ चले जवानी॥

सागर के ऊपर लहरायें, विप्लव बन ज्वाला से नंगे।
भूखों के जलते श्वासों से– रंग दिखाई दें सतरंगे॥
यह परिवर्त्तन की पुकार है, भूखो! लेकर बढ़ो तिरंगा।
स्वतन्त्रता का आन्दोलन है, यही नहाने की है गंगा॥



इधर यहाँ दुर्भिक्ष भयानक, उधर "उड़ीसा" में विभीषिका।
'लिनलिथगो' के कार्यकाल में- प्रीति बन गई मरुमरीचिका॥
दुर्भिक्षों के रुधिर-पृष्ठ पर- अंकित है यह विषम गीतिका।
आँसू ने इतिहास लिखा है- 'लिनलिथगो' की दुष्ट नीति का॥

गातीं गीत चिता की लपटें, नौकरशाही का विनाश हो।
बाट देखता भूखा मरघट, अन्यायी की शीघ्र लाश हो॥
'लिनलिथगो'! भारत से जाओ! बोल उठा इतिहास उन्हों का।
जल्दी से जल्दी जल जाये- प्रभु! पापी सहवास उन्हों का॥

वायसराय यहाँ जितने भी, हम पर हुकुम चलाने आये।
किये सभी ने घाव घाव पर, सबने ही अंगार गिराये॥
पर कुछ ने तो घाव हृदय में- तीखा मरहम लगा किये थे।
छोड़ गये कुछ अपने स्मारक, कुछ ने स्मारक जला दिये थे॥

'कर्ज़न' ने प्राचीन भवन के- क़ानूनों की घड़ी इमारत।
पृथक् चुनावों की उलझन ला- 'मिन्टो' ने की घोर शरारत॥
'चेम्सफोर्ड' ने गर्म खून से- पोता था 'जलियान बाग' को।
और 'लॉर्ड रीडिंग' यहाँ पर- लेकर आये नयी आग को॥

'गाँधी-अर्विन समझौते' का- 'अर्विन' ने शुभ पैर उठाया।
'लॉर्ड विलिँगडन' ने कार्यों से- स्मृति पर चिर यश-गान सुनाया॥
पर 'लिनलिथगो' ने भारत को- अपनी गिद्ध-दृष्टि से देखा।
उसके कार्यकाल के ऊपर- खिँची हुई स्याही की रेखा॥

उलझन सुलझाने आया था, पर उसने सुलझन उलझाई।
पैशाचिकता शर्माती थी, भारत में वह धूलि उड़ाई॥
जिसमें 'लिनलिथगो' की लीला- वह नाटक दुःखान्त हुआ है।
वाणी बोली, पाप न कर अब, पाप न तेरा शान्त हुआ है॥

'बापू' का त्रसरेणु कह रहा, 'लिनलिथगो'! भारत से जाओ!
हरा भरा यह बाग़ उजाड़ा, आग जड़ों में तो न लगाओ॥
यहाँ नरेशों को भड़का कर- लोकतन्त्र में आग लगादी।
भर भर फूट फूस की फुकनी- विषम विषैली गैस उड़ादी॥







जनायक

आहों ने धक्के दे दे कर– 'लिनलिथगो' को खेद निकाला।
बिस्तर बाँध चले चमगादड़– करवा कर अपना मुँह काला॥
उन्हें विदाई दी मरघट ने, और चिता की चिर ज्वाला ने।
उन्हें विदाई दी गा गा कर– गर्म हड्डियों की माला ने॥



लाशों पर जाते 'लिनलिथगो', देता है दुर्भिक्ष विदाई।
शिशुओं की ठठरियाँ गूँथ कर– मरघट ने माला पहिनाई॥
उनकी काली करतूतों ने– बाँधी उनके साथ बुराई।
साथ किसी के गई बुराई, याद किसी की रही भलाई॥

जिसे फूल प्यारे होते हैं– उसे शूल सहने पड़ते हैं।
फूलों तक जाने वाले के– काँटे पैरों में गड़ते हैं॥
फूल डाल पर खिलते हैं पर– काँटे भी करते मनमानी।
खिले डाल पर, चढ़े मूर्त्ति पर, फूल! तुम्हारी यही कहानी॥

सौरभ को वरदान मिला है– फूलों के झूले पर झूले।
सौरभ की मस्तानी लय पर– भ्रमर-गीत गुंजन-पथ भूले॥
शूल फूल से कहते हैं यह– एक नहीं हैं भारतवासी।
किसकी चाकू सी ज़बान ने– भारत की तस्वीर तरासी॥

क्या अंग्रेज़ों के आपस में– झगड़े नहीं हुआ करते हैं?
अधिकारों पर बात बात में– क्या न वहाँ कटते मरते हैं?
क्या उदार अनुदार वहाँ पर– अपनी अपनी नहीं चलाते?
क्या न विचार विभिन्न वहाँ पर, कहाँ न बर्तन शोर मचाते?

जहाँ चार प्राणी होते हैं– वहाँ खुड़कते ही हैं बर्तन।
कोई बड़ा न कोई छोटा, समतल पर सब नर हैं हरि जन॥
भारत को बन्दी रखने का– यह है केवल एक बहाना।
"वेवल" वायसराय हो गये, भारत में आ गाया गाना॥

अस्थिर जग में बतलाओ तो– किस किस का विश्वास करें हम!
धूमिल पथ पर प्राण जला कर– कब तक कहो प्रकाश करें हम!!
सौरभ सिंचित मधु समीर भी– धूलि बना देती है आँधी।
पर दुर्गन्ध सुगन्ध बनाता– चन्दन फूल चाँद सा गाँधी॥







कोई जीवन बना पहेली, जग में उलझन डाल रहा है।
कोई दीपक बुझा रहा है, कोई दीपक बाल रहा है॥
दुनिया एक समस्या जिसमें, सब का भला चाहना ही हल।
दमक रही दामिनी लहर पर, नश्वर गति पर प्राणी पागल॥

यह अस्थिर संसार गूँथता- चंचल छल लहरों की माला।
पहिना कर मन की हिलोर को- बुदबुद पर पागल मतवाला॥
जो भी आया, वही यहाँ पर- रटता रहा वही परिभाषा।
पर जब तक जीवन है तब तक- घोर निराशा में भी आशा॥

जलती ज़ंजीरों में उलझी- भारतमाता बन्द पड़ी थी।
प्रेम शान्ति की शाश्वत ध्वनि पर- परिवर्त्तन की प्यास खड़ी थी॥
कुछ कुछ उलझे, कुछ सुलझे से- 'दिल्ली' में 'वेवल' थे विह्वल।
षड्यन्त्रों के इन्द्रजाल में- वायसराय यहाँ थे 'वेवल'॥

चढ़ खजूर के लम्बे तरु पर- इसने भी वह बीन बजाई।
बीती तिथि की जाली हुंडी, वही "क्रिप्स" वाली दिखलाई॥
राज्य लालसा कितनी मादक, सारहीन, पर प्राणी पागल।
षड्यन्त्रों की चक्की चलती, पीस रहा है प्राणी को छल॥

राजनीति में क़दम क़दम पर- बुद्धि उलझती ही जाती है।
अन्दर मैल किन्तु ऊपर से- रंग रेशमी दिखलाती है॥
छुरी चलाना, गला दबाना, खा जाना ही राजनीति क्या?
अपना कह कर गला काटना, राजनीति की यही प्रीति क्या?

राजनीति में कपट जाल है, जीवन का आदर्श नहीं है।
जनता का निष्कर्ष नहीं है, जीवन का उत्कर्ष नहीं है॥
बापू बोले, राजनीति में- सत्य प्रेम आदर्श न भूलो!
कच्चे धागों के झूले पर- ले लम्बे झोंटे मत झूलो!!

वही तान छेड़ी "वेवल" ने, जो "लिनलिथगो" छोड़ गये थे।
पर काले क़ानून उन्हों के- घर के चूल्हे फोड़ गये थे॥
"वेवल" की हलचल में भारत- अपना भाग्य टटोल रहा था।
पर इस क्रान्ति काल में "जिन्ना"- अपने स्वर में बोल रहा था॥









पूछे प्रश्न पत्र-प्रतिनिधि ने– "जिन्ना ! कहो किया क्या जाये ?"
'जिन्ना' बोले, "दो राष्ट्रों में– गाँधी भारत को बटवाये ॥
'हिन्दुस्तान' हिन्दुओं को दें, 'पाकिस्तान' मुसलमानों को ।
दीपक इधर ज्योति देता है, उधर जलाता परवानों को ॥
'पाकिस्तान', जहाँ भारत का– चौथाई ही भाग रहेगा ।
शेष तीन चौथाई लेकर– भारत सुन्दर बाग रहेगा ॥
हिन्दू, मुस्लिम एक न होंगे, गाँधी व्यर्थ डालते उलझन ।
शान्ति असम्भव अन्य तरह से, और उलझ जायेगी सुलझन ॥
पूरब, पश्चिम अलग अलग हैं, कैसे हम दोनों मिल जायें ?
'काबा' 'काशी' अलग अलग हैं– कैसे सर से पैर मिलायें ?
हिन्दू और मुसलमानों का– एक देश में रहना भ्रम है ।
एक संघ में बँध न सकेंगे, यह गाँधी का उल्टा क्रम है ॥"
"दो राष्ट्रों की बात मान कर– क्या हम तुम कमज़ोर न होंगे ?"
"नहीं ! बिना इस अरुणोदय के– हम तुम तम में भोर न होंगे ॥"
"पर इससे गृह-युद्ध छिड़ेगा, आपस में ही कटा करेंगे ।
खण्डित और अखण्डित कह कह– आपस ही में कटे मरेंगे ?"
"नहीं ! पड़ोसी बनकर दोनों– बड़े प्रेम से रह सकते हैं ।
और 'एशिया' भर में दोनों– दो नदियों से बह सकते हैं ॥
सागर ने यदि ललकारा तो– दोनों नदियाँ मिल जायेंगी ।
सागर की छाती में घुस कर– पानी चीर रत्न लायेंगी ॥"
प्रतिध्वनि में तूलिका लिख गई– क्या शोणित से रंग भरोगे ?
भारत की तस्वीर काट कर– क्या माथे पर मुकुट धरोगे ?
कटे फटे भारत के सर पर– ताज दमक क्या दिखलायेगा ?
मुकुट ख़ून में भीगा होगा, उठा हुआ सर झुक जायेगा ॥
कवि की वाणी पर बापू ने– बन्दीगृह से यही पुकारा ।
एक नाव पर बैठो सब मिल, टेर रहा है तुम्हें किनारा ॥
पैर लड़खड़ा रहे ब्रिटिश के, बढ़ो एक झण्डा लेकर तुम !
संगम और त्रिवेणी है यह, झण्डा गाड़ो लहरों पर तुम !!





जननायक

आज एक झण्डे के नीचे– वीरों का बलिदान चाहिये !
स्वतन्त्रता के लिये जवानो ! दान चाहिये ! दान चाहिये !!
मनुष्यता के लिये देश को– कोटि कोटि "सुकरात" चाहियें !
अन्धकार में आज विश्व को– हँसते हुए प्रभात चाहियें !!

स्वतन्त्रता करनी है यदि क्रय– धरो हथेली पर अपने सर !
अन्तर्ध्वनि निकली कण कण से– जय जननायक ! जय जय ईश्वर !!
'आज़ाद खाँ' के पत्थर बोले– उन आहों से पिँघल पिँघल गल ।
गिरे जा रहे, शर्म आ रही, झुके जा रहे हैं दृग पल पल ।।

मेरे अतिथि ज्योति जननायक, मैं पत्थर पहिचान न पाया ।
मैंने हाय ! डस लिया 'बा' को, जननायक का हृदय रुलाया ।।
कंचन के प्यालों में ढलती– मदिरा में बेहोश रहा मैं ।
गड़ा जा रहा हूँ धरती में, आँसू बन कर आज बहा मैं ।।

अंग्रेज़ों की अय्याशी का– बना रहा हूँ मैं क्रीड़ास्थल ।
आज शर्म से झुका खड़ा हूँ, फटा जा रहा है अन्तरतल ।।
यदि मेरे पाषाण हृदय में– मुक्ति दिवस पर बापू आते–
तो मेरे मरघट से मन में– बुझे हुए दीपक जल जाते ।।

पर बापू को बन्दी करके– मुझे घोर पापों में डाला ।
पहिले पापों से पत्थर हूँ, आगे को सुलगादी ज्वाला ।।
स्वर्ण महल था, लेकिन अब तो– मैं पिँजरा हूँ, मैं पत्थर हूँ ।
स्वतन्त्रता के पथ पर पत्थर, गाज आज मैं भारत पर हूँ ।।

'महादेव' को खाया मैंने, 'बा' की चिता धधकती देखी ।
जिनकी स्मृति में जननायक की– छाती रोज़ सुलगती देखी ।।
गिरा न मैं उस समय जिस समय– बापू ने उपवास किया था ।
जला न मैं उस समय जिस समय– "बा" ने नाता तोड़ लिया था ।।

और आज भी गिरा नहीं जब– जननायक बीमार यहाँ पर ।
घोर पाप से मुझे बचाओ, त्राहि ! त्राहि ! पत्थर के ईश्वर !
क्या जननायक की अर्थी भी– मेरे आँगन में निकलेगी ?
क्या इनकी भी चिता यहीं पर– मेरे पापों से धधकेगी ?











जनायक

मैं ही हूँ वह भाग्यवान जिसके बन्दी स्वयं राम हैं।
मैं ही हूँ वह बज्र जो कि गिर के टूटा पगों में नहीं ॥
मैं हूँ शान्त इसी लिये कि जल से बापू मुझे रोकते।
जो पाषाण हिले अभी रगड़ते ही देखना होलिका ॥



मूक रहा मैं अब तक, लेकिन- अब न क्रोध रोके से रुकता।
धरती से लग गया हिमालय, मेरे आगे झुकता झुकता ॥
या तो मुक्त करो बापू को, वर्ना अब पत्थर बरसेंगे।
मचल उठा है पत्थर पत्थर, पत्थर अब सर पर बरसेंगे ॥

या तो फाटक खोलो जल्दी, वर्ना दावानल धधकेगा।
या तो मुक्त करो पिँजरे से, वर्ना भूतनाथ भभकेगा ॥
चेतन क्या जड़ भी जागे थे- जब बापू की वीणा बोली।
मूक वेदना से बापू की- हिला हिमालय, धरती डोली ॥
दीवारों को फोड़ विश्व में- गूँज रहा था बापू का स्वर।
ताले तसले की रगड़ों से- जलते थे अंगार भयंकर ॥
'आग़ा खाँ' के बन्दीगृह के- ताले खुले, खुल गये फाटक।
जय 'बा' की! जय 'महादेव' की! जय जनता! जय जय जननायक!

बापू मुक्त हुए पिँजरे से, तन जर्जर था, मन में पीड़ा।
उज्ज्वल दिव्य दृष्टि में उनकी- पराधीनता की थी व्रीड़ा ॥
दो छटाँक के सूखे तन में- काँप रही थी जग की हलचल।
'आग़ा खाँ' के राजमहल से- मुरझाया सा निकला उत्पल ॥

'बा' की मूक याद बापू को- मन ही मन में तड़पाती थी।
स्वतन्त्रता की दीपशिखा वह- दीपक से कुछ कह जाती थी ॥
'राम'! तुम्हें भी सता चुकी है- 'सीता' के वियोग की पीड़ा।
'राम'! तुम्हें भी रुला चुकी है- हत्यारी दुनिया की व्रीड़ा ॥
तुम मर्यादा पुरुषोत्तम थे, पर क्या विरह व्यथा सह पाये?
टूटा हृदय लिये रोते थे, सुख से कब किस क्षण रह पाये!!
राम! कहो कब 'कृष्ण' सह सके- 'राधा' के वियोग की पीड़ा।
राम! कहो कब किसे सुहाती- तड़पन में दुनिया की क्रीड़ा ॥





'राम ! राम !' रटते रटते ही- साध हृदय की मिल जाती है।
'राम राम' रटने से मन की- सूखी कलिका खिल जाती है॥
"आग़ा खाँ" के स्वर्ण महल से- छूटकर पर्णकुटी में आये।
देवी "ठाकरसी" सुषमा ने- जननायक के दर्शन पाये॥

'पूना' की उस 'पर्णकुटी' में, दल के साथ रहे जननायक।
फूलों ने आरती उतारी, घिर घिर आये बूढ़े बालक॥
किरणों ने सहलाया तन को, पात पात ने रस बरसाया।
अमृत पिला बूटी बूटी ने- बापू का जीवन सरसाया॥

जननायक 'बा' के मन्दिर में- श्रद्धा सुमन चढ़ाते प्रतिपल।
फूल फूल में उसे देखते, पात पात में थी वह उज्ज्वल॥
खुली हवा में तरल झूल पर- मुक्त मूर्त्त के दर्शन पाये।
बिना शर्त छूटे गाँधी जी, डाल डाल ने दीप जलाये॥

पत्रों में बापू की आकृति. चित्रों में थे पूज्य महात्मा।
मृत्युलोक में पीड़ित से थे, सब के परम पिता परमात्मा॥
कुछ दिन 'पर्णकुटी' में रह कर- "जूहू" चले गये जननायक।
अंगरक्षिका बनी 'सुशीला', सागर-तट बन गया सहायक॥

स्वास्थ्य-लाभ के लिये जहाँ पर- बापू ने विश्राम किया है।
वहाँ एक रस में सब रस ने- बापू को आराम दिया है॥
बापू की मण्डली एक दिन- बैठी थी बापू को घेरे।
मानो सूरज को घेरे थीं- स्वर्ण-रश्मियाँ किसी सबेरे॥

बापू बोले, अगर इस समय- 'बा' भी होतीं साथ हमारे।
तीनों लोक यहीं पर होते, स्वर्ग बनाते इसी किनारे॥
आँसू निकल पड़े आँखों से. मन भर आया आँखें बरसीं।
तट पर देवी के दर्शन को- जननायक की आँखें तरसीं॥

बोले, मैं आगया जेल से, बन्दीगृह से उसे न लाया।
छोड़ गई वह मुझे अकेला. मैं अपना सब कुछ खो आया॥
रोती थी मण्डली फूट कर, सागर की आँखें भर आईं।
तब से ही उसका जल खारी, जननायक की आँख चुराईं॥









जननायक



सागर क्या हैं ! बापू के दृग, रत्नों के भण्डार जिन्हों में।
माँ का मधुर दुलार जिन्हों में, बसा हुआ संसार जिन्हों में॥
स्वर्गलोक की सीढ़ी जिस पर, बिन्दु सिन्धु की अनुपम आभा।
जिसका ओर न छोर कहीं है, जननायक को वही गया भा॥

खुली हवा में उड़ने वाला– पिँजरे से छूट कर आया था।
'जूहू' के रमणीक किनारे– बापू ने दीपक गाया था॥
कभी सिन्धु में बिन्दु तैरता, कभी किनारे पर तट चलता।
कभी लहर पर लहर नाचती, कभी सीप में मोती पलता॥

कभी सीपियाँ चुगने लगते, जननायक बच्चे बन जाते।
कभी बालकों में बालक बन– गाँधी बाबा खेल खिलाते॥
छोटे छोटे शंख बीनकर– बच्चों में करते थे क्रीड़ा।
बच्चों के मीठे कलरव से– धोते थे मानस की पीड़ा॥

बीते वर्षों में बापू पर– पड़े बहुत चोटों के सोटे।
उन चोटों को खेल खेल कर– धोते थे वे बालक छोटे॥
कोई छड़ी पकड़ बापू की– फक फक दौड़ा इंजिन बनकर।
खेल खेल में गिर पड़ते थे– बच्चे बापू के पैरों पर॥

कोई बापू से कहता था– मैं गाँधी हूँ ! मैं गाँधी हूँ !
लाओ लाठी चादर बापू ! देखो बापू ! मैं आँधी हूँ॥
कोई गा गा सुना रहा था– जाग मुसाफ़िर ! हुआ सबेरा।
बाल-कल्पना के पंखों पर– बच्चे गाड़ रहे थे डेरा॥

बहता था वात्सल्य उदधि में, बच्चे रस से लिपट रहे थे।
कुछ गोदी में, कुछ घेरे थे, कुछ लाठी से चिपट रहे थे॥
मानो "सूरदास" सागर में– बहा रहे वात्सल्य सुधा-रस।
घोर ग्रीष्म की तप्त आग पर– बच्चों की क्रीड़ा थी पावस॥

बच्चों में भगवान स्वयम् हैं, अमृत बाल-क्रीड़ा में मिलता।
बालक होनहार माली हैं, जिनसे पौधा पौधा खिलता॥
बच्चों से मन बहला बापू– घाव हृदय के सुखा रहे थे।
पर भारत के दुःख याद आ– घाव उन्हों के दुखा रहे थे॥





दुर्भिक्षों से मरे प्रान्त की- चोट हृदय में कसक रही थी।
भारतमाता के मानस की- चीस हृदय में चसक रही थी॥
कौन जानता है कि फूल के- प्राणों में है कितनी पीड़ा!
जग तो बाहर की आँखों से- देख रहा है उसकी क्रीड़ा॥

डाली पर हँस रहा फूल, पर- मूक वेदना चसक रही है।
उसकी कोमल पाँखुड़ियों के- भीतर पीड़ा कसक रही है॥
मुस्काता है और सृष्टि को- सौरभ से सिंचित करता है।
झूल हवा के मृदु झूले पर- जग में मादकता भरता है॥

खिले फूल की सुन्दरता से- कवि की कविता शर्माती है।
तेरी पाँखुड़ियों पर सचमुच- इन्द्रपुरी झुक झुक गाती है॥
तुझमें कवि की चाह मचलती, तुझमें मस्ती छलक रही है।
तेरे अधरों पर चुम्बन की- शरद पूर्णिमा झलक रही है॥

तेरे आगे रंग बिरंगे- फ़ैशन की आँखें झुक जातीं।
मूक मस्त मनहर मधु-पूरित! तेरे आगे परियाँ गातीं॥
इस अशान्ति के अंगारों में- अमर शान्ति की जिसे चाह हो।
देश-प्रेम की दीपशिखा पर- वह परवाना रोज़ स्वाह हो॥

स्वास्थ्य-लाभ के लिये जनार्दन- भ्रमण कर रहे थे फूलों में।
मधुकर मँडराते गाते थे, प्यार भर रहे थे फूलों में॥
'पर्णकुटी' में कभी कभी वे- चन्दा की शैया पर सोये।
और कभी तारे गिन गिन कर- सुबह ओस के हार पिरोये॥

अलबेली स्वर्णिम किरणों पर- कविता बैठी थी विहाग सी।
जिसके मन में देश-प्रेम की- ज्योति जल रही थी सुहाग सी॥
जिसका जीवन सृजन सजा कर- सौरभ से पथ करे प्रकाशित।
जय जय ज्योति जनार्दन की जय, जो जन जन के शुभ से शासित॥

पी पी अमृत प्रकृति देवी से, उनमें आई नयी जवानी।
अंग्रेज़ों की राजनीति पर- चढ़ा त्रिवेणी जल का पानी॥
करी घोषणा, "नहीं डिगेगा- वह "अगस्त प्रस्ताव" हमारा।
स्वतन्त्रता लेकर मानेगा, "भारत छोड़ो" का वह नारा॥"









गाँधी जी का गौरव यह है, सत्य शान्ति से सुलझाते हैं।
मार्ग सन्धि का बन्द न करते, पैर न अपना उलझाते हैं॥
बाट देखती थी यह दुनिया– जननायक के चमत्कार की।
अब क्या करते हैं गाँधी जी, कठिन समस्या इसी बार की॥

'वेवल' आये और उन्होंने– तरह तरह से क़दम उठाये।
तरह तरह की बातें छेड़ीं, तरह तरह के गुड्डे लाये॥
उलझन में गाँधी 'वेवल' ने– किया पत्र-व्यवहार प्रेम से।
कुछ बुझते थे, कुछ जलते थे, आपस में अंगार प्रेम से॥
बापू बोले, मुझे मिलाओ– काँगरेस की कार्यसमिति से।
बन्द पड़ी है जो पिँजरे में, तंग आगई है जो अति से॥
शायद कार्यसमिति से मिल कर– मैं कोई पथ ढूँढ निकालूँ।
सीधी तरह बिना उलझन के– यह दुस्तर उलझन सुलझालूँ॥

बापू की यह बात न मानी, "वेवल" ने इंकार कर दिया।
जाने हँसते हुए प्यार में– कहाँ कहाँ का खार भर दिया॥
इन तूफ़ानों की हलचल में– बापू ने वक्तव्य निकाला।
चरण-चाप से, शब्द शब्द से– अन्धकार में हुआ उजाला॥

कहा, कि काँगरेस की आज्ञा– मिले बिना मैं कुछ न करूँगा।
जब तक देश स्वतन्त्र न होगा– तब तक मैं निश्चिन्त न मरूँगा॥
सबका भला भला अपना है, काँगरेस तो यही चाहती।
जो जीवन की अमर प्रेरणा, काँगरेस तो वही चाहती॥

भला ब्रिटिश का इसी बात में– 'भारतीय सरकार' बनाये।
भला इसी में काँगरेस का– उसमें अपने पैर जमाये॥
सत्ता यदि राष्ट्रीय बनेगी– हिस्सा काँगरेस भी लेगी।
यही अहिंसा-शक्ति एक दिन– भारत को स्वतन्त्र कर देगी॥

जिस जिस ने भी हिंसा करके– आन्दोलन अभिशाप किया है–
स्वतन्त्रता के आन्दोलन में– उस उस ने ही पाप किया है॥
दूध आँच पर रक्खा जाता, आता जब उफान तपने से–
उफन उफन कर खिँड जाता है, सीमा का विधान तजने से॥







फूक मारने से रुकता है, या ठण्ढे जल के छींटों से।
दूध पतीली सहित गिरेगा– यदि तुम मारोगे ईंटों से॥
जननायक के मुँह से मानो– स्वयम् सिद्ध नारायण बोले।
शब्द शब्द में थी नवीनता, शब्द शब्द में मोती घोले॥

एक एक वक्तव्य उन्हों का– नया सृजन लेकर आता था।
धरती का देवता देश को– नया उजाला दे जाता था॥
राजनीति क्या! अर्थशास्त्र क्या! सदाचार क्या! सब पर बोले।
गाँधी जी के नैतिक बल से– बड़े बड़े सिंहासन डोले॥

जिधर जिधर से आँधी आई, उधर उधर वे खड़े हो गये।
जितना झुकते गये नम्र हो, उतने ही वे बड़े हो गये॥
स्वतन्त्रता का पथ रोका था– अपनी आपस की खाई ने।
'लीग' 'लियाक़त' को पुचकारा– "भूलाभाई देसाई" ने॥

'देसाई' गुर और 'लियाक़त- अली' अली से लगे निकलने।
दो राष्ट्रों के विषम ढाल पर– नीति निपुण दो लगे फिसलने॥
"राजा जी" वह 'जिन्ना' मिल कर– इसी योजना पर थे राजी।
देख समय की अद्भुत गति को– मंज़िल पर शारदा विराजी॥

'राजा जी' ने 'जिन्ना जी' की– बटवारे की नीति मानली।
छुनी न और किसी कपड़े में, अन्त फटे में दवा छानली॥
क्योंकि ब्रिटिश से छुटकारे का– केवल यह उपाय था बाकी।
इसी तरह से कट पाती थीं– जकड़ी हुईं बेड़ियाँ माँ की॥

भारत की अखण्डता वाली– बात नहीं 'जिन्ना' ने मानी।
जलती हुई अखण्ड ज्योति पर– उसको कैंची पड़ी चलानी॥
'जिन्ना' बोले, हे 'राजा जी'! अपने गाँधी को समझालो!
मेरी "पाकिस्तान" माँग पर– मैं राज़ी हूँ, उन्हें मनालो!!

मेरी शर्तें मानें, तब तुम– "अस्थायी सरकार" बनाओ!
अपना चूल्हा अलग करो तुम, मेरा चूल्हा अलग कराओ!!
और "लियाक़त अली' इसी पर– 'जिन्ना' जैसे अड़े हुए थे।
उन्हें मनाने को 'देसाई'– दुर्गम पथ पर खड़े हुए थे॥







जननायक



'राजा जी' मध्यस्थ बन गये- उलझी गुत्थी सुलझाने को।
सुलझाता कोई बिरला ही, यहाँ बहुत हैं उलझाने को॥
'जिन्ना' की सुनकर 'राजा जी'- जननायक से मिलने आये।
'जिन्ना' के प्रस्ताव निपुण ने- गाँधी जी को बाँच सुनाये॥

बापू! यही मार्ग है अन्तिम, इसी राह से चाह चलेगी।
दबी हुई पत्थर के नीचे- इसी तरह उँगली निकलेगी॥
क्योंकि दुष्टता और किसी भी- पथ से नहीं चाहती जाना।
बहुत बहुत समझाया लेकिन- 'जिन्ना' नहीं कहीं भी माना॥

जब उँगली सड़ जाती है तब- अन्त काटनी ही पड़ती है।
उँगली से पहुँचा, पहुँचे से- गल गल गर्दन तक सड़ती है॥
नब्ज़ देखकर बापू बोले- उसकी राज़ी भी नाराजी।
जाने 'जिन्ना' की राज़ी पर- सरस्वती कौनसी बिराजी?

कोटि कोटि की लाशों पर क्या- उसका "पाकिस्तान" बनेगा?
भारतमाता के टुकड़े कर- क्या आपस में ख़ून छनेगा??
पर जैसी ईश्वर की इच्छा, मन भर आया कहते कहते।
ईश्वर के आँचल में मोती- पहुँच गये हा! बहते बहते॥

भारत की स्वतन्त्रता के हित- मैं 'जिन्ना' से स्वयम् मिलूँगा।
फटे दिलों पर पेमँद बनकर- मैं दुनिया में सदा सिलूँगा॥
ज़िद्दी 'जिन्ना' से मिलने को- जननायक 'बम्बई' पधारे।
कितने ही मैले हृदयों ने- श्वेत कमल पर फेंके गारे॥

कोई हिन्दू छुरा तान कर- उनके आगे आ जाता था।
लेकिन गाँधी दुर्गम पथ पर- शाश्वत फूल पड़े पाता था॥
कुंठित होती धार छुरे की, जननायक आगे बढ़ जाते।
और शूल जो बिछा रहे थे, उनके पथ में फूल बिछाते॥

'जिन्ना' के शाही बँगले पर- पहुँचा एक लँगोटी वाला।
किसी जन्म के किसी पुण्य से- 'जिन्ना' को यह मिला उजाला॥
अन्धकार से महा ज्योति ने- मानो अपना हाथ मिलाया।
या कि ज़हर को गाँधी जी ने- एक कटोरा शहद पिलाया॥





अन्धकार के बिना ज्योति का– तेज दिखाई किसे दिया है ?
अन्धकार में ही दीपक से– सब ने प्रेम-प्रकाश लिया है ॥
और तिमिर को ही उजियाला– तप तप कर चाँदना बनाता ।
भोर उसी को तो कहते हैं– जो सोता संसार उठाता ॥

जननायक ने सद्भावों से– 'जिन्ना जी' की नब्ज़ टटोली ।
उन के अन्तस्तल में पाई– जलती वैर-भाव की होली ॥
बापू बोले, जिन्ना ! बन जा– चाहे तू भारत का राजा ।
लेकिन टुकड़े कर न देश के, फिसलन से समतल पर आजा ॥

अपने इस सोने के घर से– अंग्रेज़ों को बाहर कर दो !
"शाह बहादुरशाह जफ़र" की– क़ब्र किनारे दीपक धर दो ॥
लेकिन 'जिन्ना' ने बापू की– अमृत पगी वह बात न मानी ।
बोला, बन्द करो गाँधी जी ! बार बार की वही कहानी ॥

बटवारे के फल स्वरूप ही– यह निबटारा हो पायेगा ।
पहिले 'पाकिस्तान' बनेगा, पीछे ब्रिटिश राज्य जायेगा ॥
बापू बोले, जिन्ना जी ! तुम– जिनके बल पर उछल रहे हो ।
चिनी हुई ईंटें खुरपे से– खोद रहे हो, उदल रहे हो ॥

अच्छा ! जो ईश्वर की इच्छा, नारायण ! हम तो जाते हैं ।
सब का भला करे परमात्मा, भले यही हर पल गाते हैं ॥
मेरे बापू की कुटिया में– बाट देखते थे 'देसाई' ।
'राजाजी' ने दर्वाज़े पर– आँखों की चाँदनी बिछाई ॥

मन्द मन्द साकार शान्ति से– जननायक मन्दिर में आये ।
श्यामल मेघों के छाते में– नाचे मोर, भक्त जन छाये ॥
लाखों आँखों के दीपक ने– बापू की आरती उतारी ।
'राजाजी' की उत्सुकता ने– रसना की रसधार पसारी ॥

'बापू ! क्या लेकर आये हो ?' "दानी नहीं लिया करते हैं ।
हाथ नहीं दानी फैलाते, दानी दान दिया करते हैं ॥
मैं तो अमृत बाँटने निकला, 'जिन्ना' को भी गया पिलाने ।
पर वह विष उड़ेलने वाला, भरा अमृत-घट लगा खिँडाने ॥









ख़ून ख़राबे पर उतरा है, उसने मेरी बात न मानी।
उसको कौन राह पर लाये, जिस पर है पारे का पानी!
वह दो राष्ट्रों के पत्थर पर- पैनी छुरी तेज़ करता है।
उसने जिस हाण्डी में खाया- उसमें आज छेद करता है॥

ख़ून ख़राबे का भविष्य है, उसका 'पाकिस्तान' माँगना।
पर बापू! पथ और कौनसा, जिस पर चल कर मिले चाँदना?
समय स्वयम् पथ बना रहा है, देखो घटना-चक्र घूमते।
पल पल का परिवर्त्तन देखो, देखो वे नटराज झूमते॥

प्रतिध्वनि बोली, अग्नि युद्ध की- नया सृजन ले धधक रही है।
धधका लाल सूर्य पश्चिम में, भूखी ज्वाला भभक रही है॥
"बर्लिन" तक आगई आग वह, जो 'हिटलर' ने सुलगाई थी।
उनके ही घर में घुस आई, जो कि उन्होंने दहकाई थी॥

महल फूकने को औरों के- आग लगाई जाती है जो-
किसी तरह भी गंगाजल से- नहीं बुझाई जाती है जो-
आग लगाने वाले का घर- जब वह आग जला देती है-
तभी शान्ति सुख के आँगन में- दो पल बैठ श्वास लेती है॥

दुनिया नाम इसी का तो है, पल पल में परिवर्त्तन आये।
आज धधकती आग और कल- दुनिया सुधा बरसता पाये॥
घटनाओं की तेज़ी देखो, पल पल में संसार बदलता।
'तीन बड़ों' को आज चढ़ी है, धूँ धूँ धूँ धूँ 'जर्मन' जलता॥

महायुद्ध का उग्र रूप यह, देखो यह श्मशान भयंकर।
बड़े बड़े बम बरस रहे हैं, नगर जल रहे सुन्दर सुन्दर॥
बड़े बड़े जनरल "जर्मन" के- महायुद्ध में भस्म हो गये।
गिरा जहाँ भी बम का गोला- लाखों सैनिक वहीं सो गये॥

'बाउटसिट्ज़' 'हैलडर' 'हिमलर'- 'ब्लोमबर्ग', 'गोबल्स' जल गये।
'कैक' 'बोक' 'जनरल' 'गुडीरियन', 'फ्रिट्ज़' 'मैन्सटाईन' गल गये॥
'रोमल' 'रुण्डस्टैट' 'गोअरिंग'! बोलो अब अभिमान कहाँ है?
बात न मानी तब बापू की, अब 'हिटलर' की शान कहाँ है?







जीते हुए 'रूस' के 'जनरल- वीर ज़ुकोव' बढ़े जाते हैं।
वीर 'बुडैनी', 'टिमोशैनको'- गढ़ पर अभय चढ़े जाते हैं॥
ब्रिटिश फ़ौज के जनरल जूझे, 'ओकिल लैक' गर्ज बढ़ते हैं।
'लॉर्ड मौन्टगुमरी' सेनापति- गिरते जर्मन पर चढ़ते हैं॥

'हिटलर' की आशायें टूटीं, गिर पड़ीं रेत की दीवारें।
जो थूक रहीं थीं अम्बर में, गिर पड़ीं आज वे मीनारें॥
'जर्मन' के हँसते हुए नगर, शमशान बन गये पल भर में।
उलटी आँधी की एक लपट- चीत्कार कर उठी घर घर में॥

धरती में समा गया 'हिटलर', लपटों में 'नाज़ीवाद' जला।
जो गला रहा था लोहे को, वह रेतीला इंसान गला॥
इस हार जीत की दुनिया में- कोई हारा कोई जीता।
उसके अतीत के दिन लिखती- उसकी वह बची हुई गीता॥

"हिटलर" की मिट्टी से पूछो, वह वीर विजेता क्यों हारा?
डर गया नाश से दुनिया के, "अणु-बम" इसलिये नहीं मारा!
फिर समय पड़े पर साथी ही- हा! मुझे अकेला छोड़ गये।
'जापान' और 'इटली' दोनों, मेरा अन्तस्तल तोड़ गये॥

मेरा क्या मैं तो मरता हूँ, पर मरता हूँ सर ऊँचा कर।
लेकिन लटकाये जायेंगे- फाँसी पर उन हारों के सर॥
कल या परसों में उन पर भी- गोलियाँ चलाई जायेंगी।
जो ज़िन्दा लाशें चलती हैं, वे वहाँ जलाई जायेंगी॥

बढ़ गये अगाड़ी "मित्रराष्ट्र", वह जीता सिंह पछाड़ दिया।
'हिटलर' पर विजय प्राप्त करके- 'जर्मन' में झण्डा गाड़ दिया॥
फिर "इटली" को करके परास्त, सर 'मुसोलिनी' का कटवाया।
जो कल तक सिंहासन पर था, उसको अब कुत्तों ने खाया॥









यह समय बड़ा बलवान हाय ! राजा भी बन्दी बन जाते।
जो सिंहासन पर होते हैं, वे कभी थपेड़े भी खाते॥
फिर भीषण बम के गोलों से– "जापान" आग में धधक उठा।
भूचाल भयंकर जाग उठे, भीषण दावानल भभक उठा॥

जो 'जर्मन' से लाये गोरे, वह "अणु-बम" उस पर चला दिया।
उस 'अणु-बम' के अंगारों से– 'जापान' निमिष में जला दिया॥
वह 'अणु-बम' जिसकी ज्वाला से– जल गये अनेकों नगर शहर।
सभ्यता बहा ले जाती थी– उस महाप्रलय की एक लहर॥

यह खेल आग वह पानी का, खेला करते हैं मतवाले।
जिनको पीने की आदत है, पीते हैं शोणित के प्याले॥
'जापान' जला कर गोरों ने– 'जनरल तोजो' को पकड़ लिया।
'इटली', 'जापान' और 'जर्मन'– उन तीन बड़ों' ने जकड़ लिया॥

दुनिया की इस नौचन्दी में– बस नाश और निर्माण शेष।
मिटता बनता इतिहास यहाँ, रह जाता है निर्वाण शेष॥
उन "तीन बड़ों" की जीत हुई, बुझ गई आग ! रह गया धुँवा।
निर्माण हमारा बाक़ी है, उड़ता उड़ता कह गया धुँवा॥

जलता वह "हिरोशिमा" जिसके– उद्योग धुँवे में उड़ते हैं।
जो करते थे निर्माण नये, वे लोग धुँवे में उड़ते हैं॥
प्रतिशोध भूलकर दुनिया में– निर्माण करो ! निर्माण करो !
फिर से उजड़ा "जापान" बसे, कुछ सृजन करो, कुछ प्राण भरो !!

काली दुनिया में उड़ता था– पीड़ित श्वासों से लाल धुँवा।
'शिव शंकर' के डम डमरू पर– देने निकला था ताल धुँवा॥
यह है "इम्फाल" वही मोर्चा, जिस पर "सुभाष" की है समाधि।
इस मिट्टी में मेरा 'सुभाष', इसमें वीरों की छिपी आधि॥

भारत माँ के माथे पर है– जिस असफलता का सफल ताज।
काँटों पर खिलने वाले को– कब भाता है भौतिक स्व राज॥
तलवार खींचकर बिजली सी– बन गया सिपाही से तारा।
हीरे मोती में तुलते हैं, जिनको है स्वाभिमान प्यारा॥







जो अपने प्राणों पर खेले, वे "रासबिहारी बोस" कहाँ ?
जो निकल पड़े दीवाने बन, वे भारत के जयघोष कहाँ ?
इस स्वतन्त्रता की वेदी पर- बलिदान बहुत से चढ़े हुए।
प्रतिमान त्रिवेणी गंगा में- फूलों के पौधे पड़े हुए ॥

जो गया जगा कर दुनिया को- वह सेनानी "सुभाष" प्यारा।
"आज़ाद हिन्द सेना" निकली, गूंजा "जयहिन्द" अमर नारा ॥
षड्यन्त्रों के स्वप्निल जग में- चक्की न कभी चलती मन्दी।
सेनानी का कुछ पता नहीं, "आज़ाद हिन्द सेना" बन्दी ॥

कोई कहता मर गये "बोस", गिर पड़ा उन्हों का यान कहीं।
वे जन जन के मानस में हैं, गिरते न अमर अभिमान कहीं ॥
सागर की लहरों के ऊपर- जिसके जयकारे लहरे हैं।
उस की जय हो ! उसको प्रणाम ! जीवन से झगडे फहरे हैं ॥

भारत माता ! तुझको प्रणाम ! कह गया 'बोस' चलता चलता।
छिप गया सूर्य किस कोने में, छिप गया दीप बलता बलता ॥
उसका इतिहास बताता है, वह जला किन्तु दीपक बन कर।
"एकला चलोरे !" चला गया- एकाकी दुनिया से ऊपर ॥

इन घटना-चक्रों की चक्की- चलती रहती है घरर घरर।
दुनिया के कोल्हू में प्राणी- पिलता रहता है चरर चरर ॥
पर कितने ऐसे होते हैं- इतिहास स्वयम् बन जाते जो !
इस स्वतन्त्रता के दीपक पर- परवाने बन जल जाते जो !!

धरती हिलती, अम्बर हिलता, तिल भर हिले नहीं जननायक।
ऐसी कोई जगह बताओ, जिस पर खिले नहीं जननायक ॥
जन जन में झनकार वही हैं, वीणा में शाश्वत झनकारे।
वह नाविक पतवार बिना ही- ले जाता था नाव किनारे ॥







जनायक



महायुद्ध के क्रूर काल में- बड़े बड़े सम्राट जल गये।
महाकाल के महानृत्य में- कितने ही बुलबुले गल गये॥
लेकिन अडिग रहा लहरों में- अमर नाव सा सन्त हमारा।
समय साथ लेकर चलता जो- मिल जाता है उसे किनारा॥

चिनगारी दब गई राख में, महायुद्ध का अन्त हो गया।
'कट्टड़पन्थी राजनीति' का- स्थिति की गति पर भाग्य सो गया॥
समय समय की बात विश्व में, आज भिखारी, कल है राजा।
कल राजा है, आज भिखारी, करता रहता समय तकाजा॥

समय पुकार उठा पीड़ा से- भारत को आज़ाद करो अब!
नेता छोड़ो! बन्दी छोड़ो! वचन भरे जो याद करो अब!!
भारत-मन्त्री ने 'वेवल' को- भारत से बुलवाया 'लन्दन'।
समय लिख रहा था पल पल में- राजनीति में नव परिवर्त्तन॥

चलते हुए समय की गति पर- "वेवल" पहुँच गये 'लन्दन' में।
नये चुनावों की चर्चा थी, रस था 'चर्चिल' के खण्डन में॥
भारत के प्रति नये भाव थे, जाग उठी सोयी सच्चाई।
कुछ अंग्रेज़ महापुरुषों ने- भारत की पीड़ा दफ़नाई॥

भारत हित "बर्नार्ड शा" उठे, बोले कैसा हर्ष मनायें!
यहाँ मनायें हर्ष, वहाँ हम- उन ज़िन्दों की चिता जलायें॥
भूखे कहीं, कहीं नंगे हैं, अभी कहीं भी शान्ति नहीं है।
चारों ओर लाल बादल हैं, तुम कहते हो क्रान्ति नहीं है॥

"बर्लिन" के उस महानाश को- मैं मानव की हार कहूँगा।
पराधीन भारत को रखना- मैं तो अत्याचार कहूँगा॥
प्रिय "बर्ट्रेंड रसेल" कह रहे- भारत छोड़ो! भारत छोड़ो!
भारत मुक्त करो पिँजरे से, अपने कच्चे धागे तोड़ो!!

मुक्त करो भारत के नेता, जेलों के दर्वाज़े खोलो!
जो विष फैलाया है अब तक- उसे चूस कर मधु रस घोलो!!
मानवता की रामायण में- ऊँचा रहे चरित्र तुम्हारा।
प्रेम-भाव से नाता जोड़ो, बना रहे यह देश हमारा॥



कहा 'एमरी' ने 'वेवल' से– भारत का क्या हाल बताओ ?
हम से ऊब चुके वे बिल्कुल, बात न आगे और बढ़ाओ ॥
'चर्चिल' बोले, लेकिन जब तक– जम सकते हो जमे रहो तुम !
प्रतिध्वनि में कह दिया समय ने– और चार दिन बने रहो तुम !!

चर्चिल ! दो दिन बाद यहाँ पर– तेरी यह सरकार न होगी ।
जीत "श्रमिक दल" की निश्चित है, तेरी कुछ दरकार न होगी ॥
'चर्चिल' बोले, कहो यही अब– हम भारत को छोड़ रहे हैं ।
देखो पिले हुए गन्ने को, 'चर्चिल' ! और निचोड़ रहे हैं ॥

'वेवल' बोले, लेकिन 'चर्चिल' ! नेताओं को जल्दी छोड़ो !
'अहमदनगर क़िले' में बन्दी, हाथों की हथकड़ियाँ तोड़ो !!
अच्छा ! नेताओं को छोड़ो, शीघ्र सन्धि की बात चलाओ !
कुछ दिन और खींच लो गाड़ी, असफल उनकी नीति बनाओ !!

आम चुनावों में यदि फिर हम– जीत गये तो पौ बारह हैं ।
और "श्रमिक सरकार" बनी यदि– तो हम सब नौ दो ग्यारह हैं ॥
ये कुचक्र के भाव हृदय में– लेकर "वेवल" वापिस आये ।
और "एमरी" ने भाषण में– भारत को कुछ स्वप्न दिखाये ॥

आओ 'अहमदनगर क़िले' में, जहाँ बन्दियों की चिर आहें ।
जहाँ सिसकते कवि के आँसू, जहाँ बन्द भारत की चाहें ॥
'कार्यकारिणी' बन्द पड़ी है– 'अहमदनगर क़िले' के अन्दर ।
'काँगरेस' के वीर सिपाही– बन्द 'जवाहर लाल' जहाँ पर ॥

पूज्य 'पटेल' जेल के अन्दर– खींच रहे हैं भारत-रेखा ।
'मौलाना आज़ाद' राष्ट्रपति, जिसने भूत भविष्यत् देखा ॥
पर इन सब के अन्तस्तल में– मेरे जननायक हैं व्यापक ।
सब की वाणी और हृदय में– ज्योति जगाते हैं जननायक ॥

उन आत्माओं की भाषा से– बरसा करता अमर उजाला ।
ये तो मुक्त अमर आत्मा हैं, पागल किसे क़ैद में डाला !
तन तो तूने बाँधा लेकिन– मन स्वतन्त्र हर तरफ़ व्याप्त है ।
जो न जलेगा, जो न गलेगा– इनको वह अमरत्व प्राप्त है ॥









जननायक

असफल होती नहीं साधना, पूजा कभी न निष्फल जाती।
देर मगर अन्धेर नहीं है, भक्ति शक्ति पर भी जय पाती॥
अंग्रेज़ों की दुरभिसन्धि को– ये पिँजरे में जाँच रहे थे।
स्वतन्त्रता के उस मन्दिर में– भक्त भक्ति में नाच रहे थे॥



भक्तों ने आरती उतारी, महाशक्ति ने खोलीं आँखें।
कारा की दीवारें काँपी, बन्दी उड़ा फड़फड़ा पाँखें॥
'अहमदनगर क़िले' के फाटक– एक रोज़ खुल गये अचानक।
मुक्त हुए भारत के नेता, जय जनता! जय जय जननायक!

उड़ पिँजरे से बुलबुल आई– अपने प्रिय गुलाब के बन में।
तारों में चन्दा से चमके– वीर 'जवाहरलाल' चमन में॥
कारा से छूटते ही जग में– वे श्यामल बादल से बरसे।
प्राणों से पूरित पराग पर– वे स्वरूप परिमल से बरसे॥

कहा गर्ज कर, मुझे गर्व है– "बयालीस के आन्दोलन" पर।
उन पर है अभिमान गये जो, अपने प्राण-प्रसून चढ़ा कर॥
उनको मेरा अभिवादन है, जो शहीद हो गये देश पर।
जय हो उनकी चले गये जो– निज प्राणों के दीप जला कर॥

छूटते ही "पटेल" बोले यह– मस्तक ऊँचा हुआ हमारा।
दर्वाज़े तक आ पहुँचा है– विजयी विश्व तिरंगा प्यारा॥
स्वतन्त्रता का द्वार आ गया, द्वार खोल अन्दर जाना है।
हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर– हमें तिरंगा लहराना है॥

मंज़िल तुम्हें पुकार रही है, आगे बढ़ते चलो जवानो!
लक्ष्य तुम्हारी बाट देखता, दीप चूमते चलो दिवानो!!
भारत माँ के अमर पुजारी– तपे स्वर्ण से चमक रहे हैं।
दीपशिखा पर परवाने से– भारतवासी दमक रहे हैं॥

छूट कर भारत के सपूत वे– बापू की कुटिया में आये।
तीन वर्ष के बाद उन्होंने– पूज्य पिता के दर्शन पाये॥
घोर तपस्या बाद वीर वे– भारत भर की चाह बन गये।
स्वतन्त्रता की राह बने वे, गाँधी उनकी राह बन गये॥





बन्दी हैं हम जेल में पवन भी बन्दी पड़ा है यहाँ।
बापू भी यह मुक्त शान्त स्वर से हैं देश में गा रहे॥
वाणी से उस प्राण मेघ बरसे, है गा रही चाँदनी।
गाँधी की पग-धूलि लेकर तिरंगा है उड़ा देख लो॥

जाती है यह नाव सिन्धु लहराता आ रहा साँप सा।
खेता है, पर नाव नाविक, चली जाती तरी तैरती॥
मेघों में रवि सिन्धु की लहर सी नौका चली जा रही।
बैठे हैं जिसमें धरा भर लिये मल्लाह बापू दिवा॥

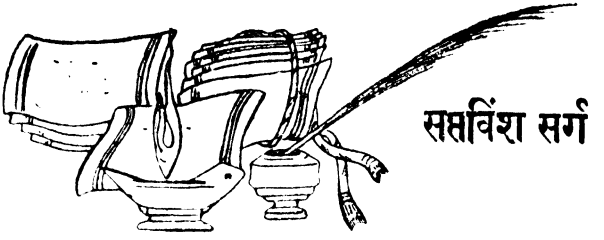








जननायक



सप्तविंश सर्ग



घेरे थे घन राजनीति मकड़ी के जाल डाले हुए।
खारी सिन्धु लिये विचार करते बापू धरा के शिवं॥
गोरों की उलझी हुई विषमता की नीति में राष्ट्र था।
बापू की रसना-तरी सुपथ थी बिच्छू भरी नीति में॥
साँपों के फण हैं भरे जिस पिटारी को लिया हाथ में।
देखो काट न लें विषाक्त इनसे खेलो ज़रा दूर से॥
बापू ने विष को उतार विष पी डाला गले में फणी।
कैसे खेल खिला रहे फणिक को भोले मदारी यहाँ॥

अन्धकार आँधी पानी में- ढूँढ रहा था कुछ ज्योतिर्कण।
संसृति के सुन्दर बसन्त में- परिवर्तन होता है क्षण क्षण॥
चार दिनों के इस मेले में- हर मनुष्य हँसता रोता है।
दुनिया भूल भुलैया जिसमें- भूला हुआ पथिक सोता है॥
काँगरेस के नेताओं ने- सागर तट पर ज्योति जलाई।
सारी स्थिति पर दृष्टि डाल कर- जननायक ने डगर बनाई॥
बोले, "वातावरण आज का- बदला, बदली घुमड़ रही है।
पात पात पर परिवर्तन की- नयी रागिनी उमड़ रही है॥
आम चुनाव नये होंगे अब, 'लन्दन' में परिवर्तन होगा।
शीघ्र नयी "मज़दूर सभा" का- लोकसभा में आसन होगा॥
शुद्ध भावना, शुद्ध हृदय से- वहाँ "श्रमिक सरकार" बनेगी।
अमर अहिंसा के आसन पर- प्रेम शान्ति साकार बनेगी॥"





समय तीव्र गति से चलता है, पग पग पर इतिहास बनाता।
घटना-चक्रों के जालों में- समय स्वयम् गुत्थी सुलझाता॥
समय-शिला पर 'वेवल' बोले, लो! हम देते हैं आज़ादी।
सब दल के नेताओ! आओ! मैंने यह तस्वीर बनादी॥

सभी दलों के प्रतिनिधित्व से- "शिमला सम्मेलन" बुलवाया।
पर सवर्ण हिन्दू को उसमें- समय-शिला ने पृथक् भुलाया॥
फिर से क़दम उठा "वेवल" का, कानाफूसी चली देश में।
फैल गई सनसनी देश में, जीवन सुलझा काँगरेस में॥

सब दल के नेता 'शिमले' में- शामिल हुए, हुई पंचायत।
'मौलाना आज़ाद राष्ट्रपति'- वहाँ आँसुओं की थे आयत॥
'जिन्ना' और 'लियाक़त' अपनी- अलग लियाक़त दिखलाते थे।
'फ़ज़लुलहक़' का फ़ज़ल उन्हों पर, दोनों मूँछे पैनाते थे॥

खोल तिजोरी, फूक मार कर- 'वेवल' ने तस्वीर निकाली।
रंग बिरंगे दीप धरे थे, दीख रही थी दूर दिवाली॥
"कृपलानी" ने कहा दूर से- रंग बहुत अच्छे भर लाये!
यह पतंग का काग़ज़ जिसको- काट काट कर दीप बनाये॥

जागरूक 'नेहरू' निपुण ने- उस पर नयी रोशनी डाली।
किन्तु 'लीग' ने दिखा तर्जनी- पल में उल्टी करदी प्याली॥
दिव्य दृष्टि से देख रहे थे- खेल खिलौनों का जननायक।
वातायन से झाँक रहे थे- अखिल विश्व में व्याप्त विधायक॥

पखवारे तक शिमले में यह- चर्चा चलती रही बराबर।
राजनीति के दो कूलों में- धारा बहती रही बराबर॥
'जिन्ना' यही वाक्य रटते थे- "'लीग' मुसलमानों की प्रतिनिधि।"
स्वर्ग विश्व में रचा रही थी- अलसाई सी सुलझन की विधि॥

खेल बिगाड़ दिया 'जिन्ना' ने, खोदा पर्वत, निकला बौना।
खेल ख़राब किया 'वेवल' ने, ख़तम हो गया खेल खिलौना॥
असफलता के अंगारों पर- किस पागल ने धरी सफलता?
पगले! पता नहीं क्या तुझको, जीवन नहीं आग पर जलता??







जनायक



संसृति की गति विधि पर प्रतिपल- चित्र बदलते ही रहते हैं।
पापों की भीषण भट्टी में- जीवन जलते ही रहते हैं॥
कोई चित्र बनाता, कोई- चित्र बिगाड़ दिया करता है।
कोई बात बनाता, कोई- बात उखाड़ दिया करता है॥

नये चुनाव हुए "लन्दन" में, वैधानिक परिवर्त्तन आये।
श्री "पैथिक लॉरेंस" जीत कर- जग में नयी रोशनी लाये॥
जीत "श्रमिक दल" गया वहाँ पर, मत में 'कट्टरपन्थी' हारे।
आसन पर आगये 'एटली', 'चर्चिल' अपने लोक सिधारे॥

ढाँचा बदला ब्रिटिश राज्य का, आशा पंख लगा कर आई।
राजनीति की छाया बदली, स्वर्ण किरण ने ली अँगड़ाई॥
कहा ब्रिटिश सम्राट जॉर्ज ने- 'लोक सभा' के उद्घाटन में-
भारत में स्वायत्त राज्य अब- स्थापित होगा इस सावन में॥

राजनीति की चर्चा दौड़ी, 'वेवल' को 'इँगलैंड' बुलाया।
समालोचना करी समय की, नये राज्य ने क़दम उठाया॥
नयी 'श्रमिक सरकार' वहाँ की, सत्य प्रेम पर अडिग खड़ी वह।
बिखरे मानस-मोती चुग चुग- कौन गूँथता हृदय लड़ी यह?

'वेवल' 'लन्दन' गये, वहाँ पर- चर्चा चली 'श्रमिक शासन' से।
भारत को स्वाधीन करेंगे, कहा 'एटली' ने आसन से॥
वहाँ लोकमत के नेता ही- भारत के होंगे अधिकारी।
अब भारत स्वाधीन बनेगा, बहुत बह चुके आँसू खारी॥

जल्दी ही अब भारत में हम- "ब्रिटिश शिष्टमण्डल" भेजेंगे।
जनता जिसको बतलायेगी- हम उसको सत्ता दे देंगे॥
किस नेता की अधिक चाह है- वहाँ "शिष्टमण्डल" देखेगा।
सत्ता-सूत्र उसी को देंगे- भ्रमर जिसे उत्पल देखेगा॥

'ब्रिटिश शिष्टमण्डल" भारत के- गाँव गाँव में जाँच करेगा।
भारत के हित हेतु वहाँ से- वह जनता के भाव भरेगा॥
शासन-सूत्र उन्हें सौंपेंगे- जिनके लिये लोकमत होगा।
जनता उसको ही चाहेगी- जिसके जीवन में रस होगा॥







बातचीत के बाद लौटकर– "वेवल" जल्दी भारत आये।
अपने बुझे हुए से मन से– भारत को संदेश सुनाये॥
राजा की 'शासन परिषद्' ने– भारत को सत्कार दिया है।
भारत को स्वायत्त राज्य के– रचने का अधिकार दिया है॥

प्यार फूल से करना है तो– काँटों को भी साथ लगाओ!
जीवन में यदि हँसना है तो– दुःखों में भी बढ़ते जाओ!!
चोटी पर चढ़ने वाले के– पत्थर पैरों में गड़ते हैं।
पलकों के तट पर आँसू के– दीप जलाने ही पड़ते हैं॥

स्वतन्त्रता के परवानों की– देख रहे थे अमर कहानी।
भारतमाता की आँखों का– किस किस ने पूँछा है पानी॥
यह "आज़ाद हिन्द सेना" जो– 'लाल क़िले' में बन्द पड़ी है।
सेनानी 'सुभाष' की इच्छा– 'लाल क़िले' में तृपित खड़ी है॥

ये वे मुक्त पुजारी जिनके– जीवन की पग-ध्वनि जागृति है।
ये वे अमर सिपाही जिनकी– स्वतन्त्रता सुन्दर आकृति है॥
ये परवाने स्वतन्त्रता के– दीपक पर जलने वाले हैं।
इनके बलिदानों के बल से– बुझे दीप बलने वाले हैं॥

यह 'सुभाष' की सेना जिसके– लाखों वीर शहीद हो चुके।
पराधीनता की स्याही के– जो माथों से दाग़ धो चुके॥
कितने ही "आज़ाद हिन्द" के– मोर्चों पर मर गये सिपाही।
धीरे धीरे चले जा रहे, आने जाने वाले राही॥

ये वे राही हैं जो जग में– राही बन कर राह बन गये।
ये वे दीपक जलते हैं जो– स्वतन्त्रता की चाह बन गये॥
अंग्रेज़ों का न्याय इन्हों पर– यहाँ मुक़दमा चला रहा है।
ये तो दीपित अग्निपुंज हैं, पगले! किनको जला रहा है?

स्वतन्त्रता के लिये लड़े ये, काँगरेस पैरवी करेगी।
इन वीरों के लिये न्याय से– काँगरेस जी खोल लड़ेगी॥
"लाल क़िले" में चला मुक़दमा, स्वतन्त्रता के दीवानों पर।
सबकी आँखें लगीं उधर ही, करवट बदल उठा भारत भर॥





जननायक



'दिल्ली' के उस 'लाल क़िले' से– चहल पहल मचली सारे में।
कितना पानी भरा "बोस" ने– उस 'जयहिन्द' अमर नारे में॥
एक नया इतिहास बन गई, जिन वीरों की अमर कहानी।
उनकी रग रग में बहता था, सेनानी 'सुभाष' का पानी॥
पानी आग और आँधी में– जिनकी मिटती नहीं कहानी।
उनका जीवन मिटा सकेगी, क्या अंग्रेज़ों की नादानी?
स्वतन्त्रता की आग फूक दी, हृदय खोल कर अख़बारों ने।
चला मुक़दमा, जीवन आया, ज्योति जगाई जयकारों ने॥
जय 'आज़ाद हिन्द सेना' की, चोग़ा पहिन 'जवाहर' निकले।
चले लाल स्वर्णिक मोती के, बन वकील नर नाहर निकले॥
नयी दलीलें खोज निकालीं– 'भूलाभाई देसाई' ने।
नयी ज़िन्दगी भरी देश में– लौह पुरुष 'वल्लभ भाई' ने॥
'लाल क़िले' में न्यायालय की– कुर्सी पर जज साहब आये।
'सहगल', 'शाहनवाज़' सिपाही– खड़े कठघरे में मुस्काये॥
बड़े बड़े नेता भारत के– चोग़ा पहिने खड़े हुए थे।
मथ साहित्य वकालत का सब, 'भूलाभाई' अड़े हुए थे॥
जय 'आज़ाद हिन्द सेना' की, 'लाल क़िला' हुंकार रहा था।
आज उसे अभिमान बहुत था, सत्ता को फटकार रहा था॥
चला मुक़दमा चहल पहल से, चहल पहल जीवन में आई।
बहस शुरू हो गई, बहस में– गर्ज उठे नाहर "देसाई"॥
'भूलाभाई देसाई' के– नयनों में जय-ज्योति विराजी।
तर्कशास्त्र वाणी में आया, बुद्धि गिरा गौरी ने माँजी॥
सरकारी वकील का उत्तर– बड़ी शान से दिया उन्होंने।
देश-दीप्ति को नया उजाला, दीपदान से दिया उन्होंने॥
यह अधिकार पराधीनों का– बन्धन की ज़ंजीरें तोड़ें।
जन्मसिद्ध अधिकार सार यह– तोड़ बेड़ियाँ, कारा छोड़ें॥
हर ग़ुलाम को हक़ है यह, वह– हर उपाय से स्वतन्त्रता ले।
यही मनुज-जीवन की भाषा– किसी न्याय से स्वतन्त्रता ले॥





हर ग़ुलाम को हर उपाय से– हक़ है पर का राज्य बदल दे।
पराधीनता के महलों पर– जैसे तैसे आग उगल दे॥
यह 'आज़ाद हिन्द सेना' जो– स्वतन्त्रता के लिये लड़ी है।
"लाल क़िला" यह उसका जिसमें– बन्दी बनकर आज खड़ी है॥

न्याय, तर्क वह क़ानूनों से– तुमको इन्हें छोड़ना होगा।
जिससे इन्हें बाँध रक्खा वह– रस्सा तुन्हें तोड़ना होगा॥
'भूलाभाई देसाई' के, तर्क अकाट्य, काटकर निकले।
जो सरकारी कुर्सी पर थे, उनकी बुद्धि चाट कर निकले॥

क़ानूनों का मन्थन करके– उसने अमर विवाद किया वह।
उसी मुक़दमे से दुनिया में– 'देसाई' की याद गई रह॥
अंग्रेज़ों से भारत का यह– महा मुक़दमा छिड़ा हुआ था।
हार जीत का प्रश्न उस समय– तर्क-बुद्धि से भिड़ा हुआ था॥

सारा भारत "लाल क़िले" को– देख रहा था आँख लगाये।
'भूलाभाई देसाई' ने– कारा के फाटक खुलवाये॥
झूकी लोकमत-बल से सत्ता, जय "आज़ाद हिन्द सेना" की।
समय लिख रहा था पृष्ठों पर– किस किस ने कितनी सेवा की॥

भारत माँ की जय जय गाते– 'लाल क़िले' से बन्दी छूटे।
जय 'आज़ाद हिन्द सेना' की, जिसके झूठे बन्धन टूटे॥
मुक्त बन्दियों के स्वागत में– भारत भर ने दीप जलाये।
मुक्त बन्दियों को जनता ने– गा गा हृदय-हार पहिनाये॥

स्वागत स्वागत स्वागत स्वागत! आँखों की सरितायें बोलीं।
जय हो जय हो जय हो जय हो! तरुओं पर कलिकायें बोलीं॥
जन सागर ने उमड़ उमड़ कर, लहरों की विधि न्यौछावर की।
घन-परियों ने घुमड़ घुमड़ कर, नयनों की निधि न्यौछावर की॥

जय 'सुभाष' सेनानी की जय, जय 'नेता जी' की जय जय जय!
जनता में उत्साह नया था, गूँज रही थी लहरों में लय॥
वह न कभी मरता है जिसके– जीवन का इतिहास अमर है।
उसका माथा कभी न झुकता– जिसे भरोसा ईश्वर पर है॥











शशि भानु 'सुभाष' प्रकाश प्रभा–
'जयहिन्द' वही जिसकी गति है।
करता शतबार प्रणाम उसे,
वह मंज़िल ही जिसकी यति है॥

पथ हार गया जिसके डग से,
उस की पग-चाप पुकार रही।
चलता चल जीवन-ज्योति लिये,
वह नाव तुझे कर पार रही॥

हार जीत की इस दुनिया में– कौन हारता ? कौन जीतता ?
साँप निकल जाता है जब तब– खाली हाथ लकीर पीटता॥
क्या मृत्युंजय के जीवन पर– काला पानी चढ़ सकता है।
ज्योति जले जिस के जीवन से– राष्ट्र उसी से बढ़ सकता है॥

देश-प्रेम की मधुर भावना– भारत भर में लहराती थी।
सेनानी 'सुभाष' की गाथा– नयी जवानी बरसाती थी॥
परिवर्त्तन की प्रथम किरण में– नये चुनावों की हलचल थी।
जीवन में उत्साह भरा था, गाँधी जी की चहल पहल थी॥

नये चुनाव हुए भारत में, काँगरेस ने विजय प्राप्त की।
स्वतन्त्रता की सरल सलोनी, गाँधी जी ने हवा व्याप्त की॥
प्रान्तों की सरकारें बदलीं, काँगरेस के झण्डे लहरे।
विजय बाँसुरी बजी केन्द्र में, जननायक फूलों पर फहरे॥

"ब्रिटिश शिष्ट मंडल" भारत में– बहती हवा देखने आया।
गाँव गाँव में गया शिष्ट वह, गाँव गाँव में समरस पाया॥
गया जिधर भी सुनी उधर ही– गाँधी की जय ! गाँधी की जय !
गाँव गाँव में गूंज रहे थे– बापू की वाणी के निश्चय॥

काँगरेस सरिता सारे में– नयी हवा ले लहराती थी।
काँगरेस की गति ग्रामों में– गाँधी जी के गुण गाती थी॥
काँगरेस के नेताओं के– सुने उन्होंने जय जयकारे।
काँगरेस की गगन-गोद में– बापू चाँद और थे तारे॥





और "लीग" के लिये उन्हों को– मिले न अच्छे भाव चाव के।
कुछ ग्रामों में लाल हवा थी– भय से "जिन्ना" के प्रभाव के॥
कुछ पर, कुछ प्रान्तों के ऊपर– "जिन्ना" का रँग चढ़ा हुआ था।
कुछ ग्रामों पर हरे रंग का– खस्ता काग़ज़ मढ़ा हुआ था॥

स्वाँग रचा कर बहकाते थे– "लीगी" लोगों के हथकण्डे।
ख़तरे में 'इस्लाम' आ गया– कह कह उटा रहे थे झण्डे॥
गंगा की गति सा पवित्र था, झण्डा उड़ता हुआ तिरंगा।
इधर नृत्य करती थीं लहरें, उधर नाच होता था नंगा॥

घूम "शिष्टमण्डल" सारे में– भाव कर रहा था हृदयंगम।
कहीं कहीं टापू छूटे थे, और त्रिवेणी में था संगम॥
कर रिपोर्ट तैयार देश की– गया "शिष्टमण्डल" भारत से।
चाँद अमा को साड़ी पहिना– चला गया उज्ज्वल भारत से॥

कोई पूरा तोल रहा है, कोई कमती यहाँ तोलता।
एक प्रभात टटोल रहा है, एक उषा में तिमिर घोलता॥
"ब्रिटिश राज्य परिषद्" में लाया– अपनी जाँच 'शिष्टमण्डल' वह।
कहा कि गाँव गाँव से लाये– भारत की तस्वीर खींच यह॥

भारत ही क्या! सारे जग में– गाँधी की पूजा होती है।
पराधीनता के पिँजरे में– बन्दी भारत माँ रोती है॥
वहाँ 'जवाहरलाल नेहरू'– राज्य कर रहे हैं हृदयों पर।
'वल्लभभाई' 'कृपलानी' की– तस्वीरें रक्खी हैं घर घर॥

काँगरेस वह पेड़ वहाँ पर– जनता बैठी जिसके नीचे।
अपने ख़ून और पानी से– वे तरु नेताओं ने सींचे॥
मज़हब का आधार पकड़ कर– 'लीग' मुसलमानों पर छाई।
एक तरफ़ चौंतीस कोटि हैं, कुछ ने खिचड़ी अलग पकाई॥

"जिन्ना" के प्रति गिने चुने ही– अच्छे भाव वहाँ रखते हैं।
गाँधी जी के लिये हृदय सब– भारी चाव वहाँ रखते हैं॥
'जिन्ना' यह दावा करता है– 'लीग' मुसलमानों की प्रतिनिधि।
दो राष्ट्रों के निश्चय पर है– 'जिन्ना' और 'लियाक़त' की विधि॥







जनायक



सुनी रिपोर्ट 'मन्त्रिमण्डल' ने, फिर यह की योजना प्रकाशित–
मेल करा स्वाधीन करेंगे, भारत नहीं रहेगा शासित ॥
उनका समझौता करवाने– "ब्रिटिश मन्त्रिदल" भारत जाये ।
सब को एक साथ बैठा कर– "अस्थायी सरकार" बनाये ॥
जिसमें सब दल के प्रतिनिधि हों, ऐसी राजसभा निर्मित हो ।
ऐसी विधि से उलझन सुलझे, सब का सुलझाने में चित हो ॥
भारत छोड़ रहे हैं हम, पर– सद्भावों को कैसे छोड़ें ?
उस गंगाजल के बर्तन को– चोट मार कर कैसे तोड़ें ?
'चर्चिल' ने की चीपटाक पर– पकी नहीं चावल की खिचड़ी ।
'चर्चिल' की तीखी चोचों से– भारत माँ की बात न बिगड़ी ॥
श्री "पैथिक लॉरेंस", 'क्रिप्स' वह– 'अलेकज़ेंडर' भारत आये ।
यही "मन्त्रिदल" था तीनों का, जिसने फिर से राग रचाये ॥
भारत की उलझन सुलझाने– 'ब्रिटिश मन्त्रिदल' भारत आया ।
बारी बारी से 'दिल्ली' में– सब नेताओं को बुलवाया ॥
कभी बुला 'जिन्ना' को बोले– बतलाओ क्या माँग तुम्हारी ?
कभी पूछते थे गाँधी से– क्यों इन आँखों में जल खारी ?
बापू बोले, भारत छोड़ो ! मानो अच्छी बात हमारी ।
फलीभूत होगी दुनिया में, सुन्दर भावों की फुलवारी ॥
पर 'जिन्ना' तो नहीं मानते, कैसे झगड़ा मिटे तुम्हारा ?
गाँठ नहीं खुलती "जिन्ना" की, बतलाओ क्या दोष हमारा ?
अच्छा ! गाँधी जी ! "जिन्ना" से– बात करो तुम मेरे आगे ।
जब सब मिल कर सुलझायेंगे– शीघ्र सुलझ जायेंगे धागे ॥
हमने यह संकल्प किया है– इन धागों को सुलझायेंगे ।
भारत माता के मन्दिर के– हम दर्वाज़े खुलवायेंगे ॥
भारत छोड़ो नीति तुम्हारी– हम इस बार मान कर आये ।
शुद्ध हृदय से प्रेम भाव से– भारत की स्वतन्त्रता लाये ॥
'जिन्ना' आये, गाँधी जी से– बात 'क्रिप्स' के मध्य चली फिर ।
पड़ी एक दो बूँद स्नेह की, मन्दी मन्दी ज्योति जली फिर ॥







बापू बोले, आओ जिन्ना ! एक नाव पर चलें बैठ कर !
जिन्ना बोला, ऊँ हूँ गाँधी ! मुझे नाव पर लगता है डर ॥
तुम तो तूफ़ानी सागर में- पत्तों की यह नाव चलाते ।
नाव डुबा देगी काग़ज़ की, जिन्ना ! क्यों ज़िन्दगी गलाते ?

भारत का बँटवारा करके- टूटी फूटी नाव बनाते ।
धर्म नहीं आधार राष्ट्र का, क्यों टुकड़े टुकड़े करवाते ?
जिन्ना बोला, हिन्दू मुस्लिम- नहीं मिलेंगे, नहीं मिलेंगे ।
बापू बोले, एक बाग़ में- तरह तरह के फूल खिलेंगे ॥

हम मनुष्य हैं, मनुष्यता से- मीठे और महान रहेंगे ।
हिन्दू मुस्लिम क्या चिड़िया है ! हम सब ही इंसान रहेंगे ॥
बने एक मिट्टी से हम सब, मिट्टी ही में मिल जायेंगे ।
ईश्वर ख़ुदा एक ही तो हैं, जुदा न उनको कर पायेंगे ॥

कच्चे धागे पर समझौता- कुछ उलझा सा दिया दिखाई ।
"ब्रिटिश मन्त्रिदल" जो लाया था- वह योजना सामने आई ॥
खोल पिटारी "मन्त्रि मिशन" ने- अपनी वह योजना निकाली ।
पल भर को सारे भारत में- बिजली सी चमकी उजियाली ॥

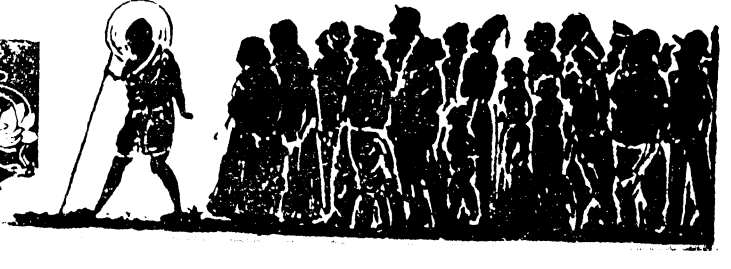
क्योंकि चमक से चकाचौंध हो- मचल रहे थे नयन निराले ।
कुछ ऊपर से उजले थे पर- अन्दर से थे बिल्कुल काले ॥
कहा 'मन्त्रिदल' ने उन सब से- सारा भारत "ए. बी. सी. गुट" ।
"ए. गुट" छः प्रान्तों वाला है, और तीन सूबों का 'बी. गुट' ॥

'सी. गुट' में दो सूबे शामिल- 'बंग' और 'आसाम' प्रान्त हैं ।
'सिन्ध' और 'पंजाब' प्रान्त वह- 'सीमा' 'बी. गुट' धाम प्रान्त है ॥
'मध्य' और 'मद्रास' 'उड़ीसा', 'युक्तप्रान्त' 'बम्बई' 'बिहारी'—
'ए. गुट' में शामिल हैं, अब तुम- मिलकर मानो बात हमारी ॥

प्रति दस लाख व्यक्तियों पर तुम- चुन चुन एक एक प्रतिनिधि को-
रच "विधानपरिषद्" अब अपना- राज्य सँभालो रच रच विधि को ॥
जब तक इस "विधान परिषद् का- बन विधान आगे आयेगा-
तब तक "अस्थायी सत्ता" रच- भारत स्वतन्त्रता पायेगा ॥









जननायक

रच "विधान परिषद्" भारत में– अपना नया विधान बनाओ !
"अस्थायी सरकार" बनाकर– स्वतन्त्रता के दीप जलाओ !!
और 'सवर्ण हिन्दुओं' से भी– भारत का यह मुकुट सजाओ !
पर "अन्तःकालीन" राज्य में– सब वर्णों के प्रतिनिधि लाओ !!



भारतवासी आँख खोलकर– ब्रिटिश योजना निरख रहे थे।
और 'जवाहरलाल नेहरू'– बड़े ध्यान से परख रहे थे॥
शीघ्र राष्ट्रपति ने भारत में– काँगरेस की सभा बुलाई।
बाँच 'दीर्घकालीन योजना'– 'मन्त्री-दल' की वहाँ सुनाई॥

जननायक की बात मानकर, काँगरेस ने छाप लगादी।
मान योजना 'मन्त्रि मिशन' की–प्रथम किरण की झलक दिखादी॥
पर अन्तरिम योजना तज दी, नाम 'सवर्ण हिन्दु' से चिढ़कर।
काँगरेस ने अस्वीकृति दी, 'मुस्लिम लीग' जम गई उस पर॥

'मन्त्रि मिशन' ने काँगरेस के– बिना उसे इन्कार कर दिया।
इसी फूट की चिनगारी ने– आग लगाकर ज़हर भर दिया॥
बाट देखकर काँगरेस की– पुनः 'मन्त्रिदल' ही अकुलाया।
तार भेज तत्काल उन्होंने– पुनः "नेहरू" को बुलवाया॥

कहा कि अपने रंग ढंग से– "अस्थायी सरकार" बनाओ !
जो राष्ट्रीय धीर मुस्लिम हैं– उनको अपने साथ बसाओ !!
सुनकर उनकी बात "नेहरू"– गाँधी जी के पास पधारे।
बापू बोले, लगा सकोगे– इसी तरह अब नाव किनारे॥

आज योजना 'मन्त्रीदल' की– इसी तरह स्वीकार करो तुम।
बीच भँवर में नाव देश की– इसी तरह से पार करो तुम॥
मेरी अभिमति यही इस समय– "मन्त्रि मिशन" की बात मानलो।
दो पल बाद दिवस निकलेगा, यह ढलती सी रात मानलो॥

मानो तुम 'अन्तरिम योजना'– स्वीकृति दे दो 'मन्त्रीदल' को।
सच्चाई से लो स्वतन्त्रता, हवा न छूने देना छल को॥
यत्न लीग के लिये बराबर– अन्त समय तक करते रहना।
मृत्यु साम्प्रदायिक के विष से– जीना है तो डरते रहना॥





'अस्थायी सरकार' बनी, पर– 'जिन्ना' ने इन्कार कर दिया।
स्वतन्त्रता की स्वर्ण-रश्मि पर– दहका कर अंगार धर दिया॥
स्वतन्त्रता के प्रथम चरण पर– बिगड़ 'लीग' ने लात लगाई।
भभक उठी सस्ती भावुकता, सुलग उठी पथ की परछाई॥

इधर "नेहरू" ने भारत में– 'अस्थायी सरकार' बनाई।
भारतमाता की छाती पर– उधर 'लीग' ने आग जलाई॥
सीधा हमला किया लीग ने "खुली कार्रवाई" अति बोली–
आज जलेगी, आज जलेगी, गाँधी! स्वतन्त्रता की होली॥

हत्या करने, आग लगाने– निकल पड़ी गुण्डों की टोली।
रोली थाल सजाती थीं जो, पुछने लगी उन्हीं की रोली॥
वह 'सोलह अगस्त' जिस दिन हा! 'कलकत्ता नरमेध' हुआ वह।
जिस दिन दीवारें रँगते थे– शोणित के पतनाले बह बह॥



जब दीप जलाकर भारत के– मस्तक पर धरने चले ताज।
जननी के चरण चूमने जब– सब खड़े हुए राजाधिराज॥
तब 'बंग' भूमि की छाती पर– हत्यारा 'पाकिस्तान' चढ़ा।
चढ़ गया खून, बढ़ चली 'लीग', कायरता से 'इस्लाम' बढ़ा॥

हाथों में खूनी छुरे लिये, घुस गये घरों में 'मुसलमान'।
लाशों पर दाँत चलाने को, या मरघट में घुस गये श्वान॥
देखो! बूढ़े बंगाली को– घर के खम्भे से बाँध दिया।
फिर क़त्ल "बंग" जननी को कर– आँखों के आगे खून पिया॥

उसके जवान अन्तस्तल को– कुण्ठित कटारियों से काटा।
दुधमुँहे बिचारे बच्चे का– माँ के आगे लोहू चाटा॥
भालों की नोकों के ऊपर– संगीनों पर बच्चे टाँके!
नंगी कर अंग काटते थे– अपनी दुखिया भारत माँ के॥

उस सती साधना सुकुमारी, बंगालिन नारी को खींचा।
फिर उसकी गोदी के शिशु को– दो सख्त मुट्ठियों ने भींचा॥
घुट गया वहीं दम बच्चे का, फिर खींच बीच से चीर दिया।
फिर माँ की आँखों के आगे– उसके बच्चे का खून पिया॥





यह देख रो पड़ी वेशर्मी, धरती की देवी चीख़ पड़ी।
क्या तुम मनुष्य हो? डूब मरो! रो रही आज मैं खड़ी खड़ी॥
ओ कृष्ण! सुदर्शन कहाँ गया? सो गया कहाँ वह शंख-घोष?
छिप गया कहाँ भैया 'सुभाष'? छिप गये कहाँ 'अरविन्द घोष'??



ये बहिनें टेर रहीं तुमको, गाँधी बापू! भैया पटेल!
लुट रही यहाँ मेरी अस्मत, खिल रहा ख़ून से यहाँ खेल!!
ओ वीर जवाहरलाल! आज- 'बंगाल' ख़ून में रँगा पड़ा।
ओ मुसलमान! तेरा 'क़ुरान'- यह देख रहा है खड़ा खड़ा॥

तू स्वतन्त्रता के दीपक की- बत्ती पीछे से खींच रहा।
तू अपनी ही माँ बहिनों के- शोणित से क़िस्मत सींच रहा॥
तू ख़ून 'जफ़र' के बेटों का- अपने माथों से धो न सका।
तेरे मुँह पर कालिमा लगी, पर तू हाथों से धो न सका॥

किसने मनुष्य को सिखा दिया- इंसानों का आमिष खाना?
झगड़े बढ़ते ही गये किन्तु- ख़ूनी भेड़िया नहीं माना!!
'कलकत्ते' का सूखा न ख़ून, रँग गया लाल 'नोआखाली'।
पशुता के नंगे नर्तन में- बजती थी गुण्डों की ताली॥

'लीगी' थी सरकार 'बंग' में, दिन में तामिस्रायें घेरीं।
'सुहरावर्दी' ने कानों पर- उँगली रख कर आँखें फेरीं॥
ले टट्टे की आड़ 'लीग' ने- ख़ून हिन्दुओं के करवाये।
'लीग मन्त्रिमण्डल' थे जिनमें- उन प्रान्तों में पशु शर्माये॥

ख़ून ख़राबा मारकाट वह- बलात्कार का राज्य वहाँ था।
'केन्द्र' इसलिये चुप बैठा था, "वेवल" वायसराय यहाँ था॥
'नोआखाली' के काण्डों का- वह ख़ूनी इतिहास हाय! हा!
बहिनों का अपहरण हाय वह! वह नंगा अन्याय हाय! हा!!

महा लोमहर्षण पशुता वह, बहिनों को ले गये उठाकर।
वे सुकुमारी कोमल बहिनें- आज मुसलमानी हैं घर घर॥
काँप रही लेखिनी शर्म से, कहते कहते आँसू आते।
हा! सुकुमारी एक कली का- मैं क्या कहूँ कि क्या कर जाते!



पड़ी ख़ून में लथपथ देखो– नंगी चौराहे के ऊपर।
जिसका ख़न निचोड़ लिया है– उन गुण्डों ने चाब चाब कर॥
कितने 'ईरानी' हरमों' में– बहिनों से टाँगे दबवाईं।
किये धर्म परिवर्त्तन कितने, कितनी नवयुवतियाँ उठाईं॥

पहिले पशुता, फिर अंगों में– वे संगीने चढ़ा रहे हैं।
हाय! हिन्दुओं के मातम में– मीठी ईदें मना रहे हैं॥
वहाँ हिन्दुओं की लाशों पर– किसका वह चिराग़ जलता है।
जिस चिराग़ से देश जल रहा, धरती का सूरज ढलता है॥

दो दो चार चार आनों में– बेची हैं बेटियाँ हमारी।
काट गँडासों से शिशुओं को– पका रहे हैं वे तरकारी॥
'नोआखाली' ज़िला कि जिसके– गाँव गाँव में शोणित बरसा।
यही 'रामपुर', यही 'फतहपुर', यही 'दासपाड़ा' जो तरसा॥

"बादलकोट" आदि ग्रामों की– ये हैं रक्त रँगी तस्वीरें।
पूरा वर्णन कर न सकेंगी– लिखी हुई ये चार लकीरें॥
धूँ धूँ जलते हुए गाँव वे– जिनमें बच्चे ज़िन्दा जलते।
वे आँसू बह रहे कि जिनसे– पत्थर गिरते, पत्थर गलते॥

पर मनुष्यता नंगी होकर– वहाँ ख़ून में नाच रही है।
डूब रही है शर्म ख़ून में– 'लीगी' इन्सानियत बही है॥
वह है 'नन्दीग्राम' कि जिसमें– लाखों गुण्डे घुसे जा रहे।
जला रहे घर, लूट रहे धन, नोच नोच कर माँस खा रहे॥

नन्ही नन्ही कलिकाओं से– सड़कों पर था बलात्कार जब–
क्या समाधि ही में बैठा था, ओ 'प्रलयङ्कर शंकर!' तू तब?
ओ धरती! तू फटी न क्यों तब? गिरा नहीं आकाश! तले क्यों?
जो सतीत्व को लूट रहे थे, कहो न वे पाषाण गले क्यों?

डगमगाती मेदिनी पर– नग्न ने नारी नचायी।
अंग में भाले घुसेड़े, लाज तब भी तो न आयी॥
आग उगली आँसुओं ने, आँधियाँ आईं उमड़ कर।
बिजलियाँ कड़कीं गगन में, डोलते देखे डगर डर॥







जनायक

प्रलय पारावार दौड़ा, क्रोध के अंगार फूटे।
शेष शैया से उठे हरि, सिन्धुओं के बाँध टूटे॥
कौन रोकेगा प्रलय जल, कह रहा यह कौन किससे ?
कौन है ऐसा धरा पर, रुक सकेगी प्रलय जिससे ??

कौन नागिन के फणों को, फूक देगा फूक ही से ?
कौन पूछेगा नयन जल, भावना की हूक ही से ??
मेदिनी भखी तड़पती, भीख चुटकी भर न मिलती।
दीप की लौ काँपती है, कँपकँपी से धरा हिलती॥

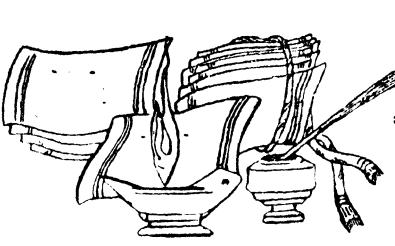
मानव दानव आज धरा पर—
खून निचोड़ उछाल रहा है।
खा कर माँस बसा विष पी कर—
पागल दाँत निकाल रहा है॥

मानवता पर थूक रहा नभ,
शोणित में शमशान पड़ा है।
शेष न एक रहा धरती पर,
केवल शान्त मसान खड़ा है॥









अष्टाविंश सर्ग



फैलाये फण आ रहा उदधि, मानो क्रोध ही आ रहा।
पीड़ा है, बड़वाग्नि है, प्रलय मानो मेदिनी ला रही॥
देखो! मानव रोकता उदधि को, जैसे दुखी को दया।
देते हैं करुणा-सुधा सुमन जैसे वे, कला गा रही॥

रक्तपात से धरती दहली, काँप उठा आहों से अम्बर।
आसन डोल उठा बापू का, काँप उठे जननायक थर थर॥
डगमग करते उठे चरण वे, तीनों लोक काँपते पाये।
"नोआखाली" की यात्रा को- जननायक ने क़दम बढ़ाये॥

दुखियों के दुख दर्द मिटाने- चला लँगोटी वाला बाबा।
साथ चली भक्तों की टोली, आगे पीछे 'काशी' 'काबा'॥
उन चरणों के साथ साथ ही- हवा बदलती चली अगाड़ी।
प्रश्न कर रही थी पग ध्वनि यह, फुलवाड़ी किस लिये उजाड़ी?

हिली "बंग सरकार" डगों से, "सुहरावर्दी" ने रुख बदला।
'लीग मन्त्रिमण्डल' का आसन, उनकी पग ध्वनि सुनकर सँभला॥
'कलकत्ते' से स्टीमर द्वारा- बापू 'नोआखाली' आये।
ग्राम "चौमुहानी" ने पहिले- जननायक के दर्शन पाये॥

मन-मन्दिर में 'राम' साथ थे, और अमृत वर्षा आँखों में।
जो ज्वाला को पानी करदे, कौन एक ऐसा लाखों में?
पीड़ायें सुनते लोगों की, द्रावक दशा देख रो पड़ते।
सुन खड़े रह जाते थे वे, जब राख घर में जब बढ़ते॥







जननायक

देख रक्त-रंजित कमरों को, जले भुने शव पड़े देखकर-
'राम !' कहा, फिर मौन हो गये, अपनी छाती पर रख पत्थर ॥
गाँव गाँव श्मशान बना था, घोर वेदना फूट रही थी।
धरती माता की आँखों से- आँसू सरिता छूट रही थी ॥



बहुत दुःख माना बापू ने, बहुत सूक्ष्म आधार कर दिया।
गये 'खिजरखिल' गाँव, जहाँ पर- शून्य सृष्टि में शब्द भर दिया ॥
इसी गाँव में जननायक ने- सन्ध्या में प्रार्थना-सभा की।
मुसलमान भी झुके पगों में, जय हो ! जय हो ! अमर प्रभा की ॥
गाँव गाँव में मुसलमान आ- बापू को देते आश्वासन।
उन चरणों में लगे बरसने, अंगारे बन बन कर सावन ॥
'रामगंज' में गये, जहाँ पर- अपना भोजन और घटाया।
'नन्दनपुर' में गाँधी जी ने- अपने तन को और सुखाया ॥
घोर वेदना थी मानस में, रह रह मनुष्यता रोती थी।
जन जन के पीड़ित हृदयों के- घाव आँसुओं से धोती थी ॥
गाँव सैकड़ों जले जहाँ पर, लाखों घर बर्बाद हो गये।
वहाँ चार आँसू पीड़ा के- युग युग को आबाद हो गये ॥
धन जन की उस घोर हानि से- बापू सिसक सिसक कर रोये।
पुनः बसाने को उजड़े घर, आँसू उस खँडहर में बोये ॥
वहाँ अरबपतियों को पाया- दो गज़ का चीथड़ा लपेटे।
नंगे भूखे तड़प रहे थे, भारत माता के वे बेटे ॥
वे लाखों विधवायें जिनकी- अमिट वेदना कसक रही थी।
जननायक के नर्म हृदय में- उनकी पीड़ा चसक रही थी ॥
गाँव गाँव में जा जननायक- जादू भरा प्रभाव डालते।
खँडहर जहाँ मनाते मातम- वे उस घर में दीप बालते ॥
पैदल यात्रा करते चलते, चलतीं दीपशिखायें जलतीं।
मानो सूरज निकल चल रहा, चारों ओर रश्मियाँ चलतीं ॥
साथ मण्डली ग्रामीणों की- प्रेम-सुधा पीती चलती थी।
मानो माया ब्रह्म बीच में- जग में रूप-ज्योति जलती थी ॥







या तापस की शुद्ध अहिंसा– मृत्यु-लोक में सगुण विचरती।
या कि आँसुओं के आँगन में– भावुकता की साध निखरती॥
'भोर भया, उठ जाग मुसाफ़िर!' जागृति सोई सृष्टि जगाती।
या कि उषा की उज्ज्वल आभा– पग पग पर आलोक रचाती॥

ओ३म् शान्ति! रस रसना पीती, शान्ति उसी पल छा जाती है।
दुःख दूर होते दुनिया के, पीड़ा पूर्ण प्रभा पाती है॥
चमत्कार करते पग पग पर, जननायक आगये "रामपुर"।
मानो राम नगर में आये, राम राम! जपते सारे सुर॥

आसन यहाँ लगा बापू का, गौरव मिला गाँव वालों को।
जीवन-सागर की यात्रा को, नाविक मिला नाव वालों को॥
कहा मण्डली से बापू ने– अलग अलग सब कार्य करो अब।
सत्य अहिंसा प्रेम एकता, कूट कूट कर यहाँ भरो सब॥

और अकेला मैं जन जन में– जा जा कर सद्भाव भरूँगा।
या तो शान्ति यहाँ पर होगी, वर्ना मैं बस यहीं मरूँगा॥
'नोआखाली' के ग्रामों में– जब तक शान्ति नहीं पाऊँगा–
तब तक सेवा यहीं करूँगा, वापिस लौट नहीं जाऊँगा॥

घबरायी मण्डली उन्हों की, बोली बापू! क्या एकाकी?
कैसे तुम्हें अकेला छोड़ें, बिना तुम्हारे क्या है बाकी??
ये गुण्डों के गाँव भयानक, दैत्य यहाँ दिन रात डोलते।
खून लगा है उनके मुँह को, वे दाँतों से खाल खोलते॥

ये डरावने गाँव, इन्हों में– रहते हैं खूँखार भेड़िये।
बच्चा हो या बूढ़ा कोई, खाने को तैयार भेड़िये॥
मुस्का कर बोले जननायक, इस दुनिया में कौन दुकेला?
एकाकी आता जाता है, चलनेवाला चला अकेला॥

"चलो एकला रे!" सत पथ पर, मार्ग-प्रदर्शक राम-नाम है।
कैसा हिन्दू! मुसलमान क्या! हर मनुष्य से मुझे काम है॥
किसका भय? किसको भय? क्यों हो? जो आया है वह जायेगा।
जैसी जिसकी पूजा होगी, वह वैसा प्रसाद पायेगा॥







जननायक

मन मन में बोले जननायक- सन्त मोह वश मुझे न जाने।
चिपटा भ्रम का भूत इन्हों को, इससे मुझे नहीं पहिचाने॥
तब जननायक उनसे बोले, आँखें बन्द करो पल भर को।
मुझे टटोलो अब अदृश्य में, देखो सब अपने अन्तर को॥



अन्तर की आँखों से देखो, मैं सब जगह दिखाई दूँगा।
व्यापक जो सर्वत्र उसी से- जीवन की गहराई लूँगा॥
भ्रम में पड़े हुए भक्तों का- गाँधी ने भ्रम भूत उतारा।
माया का पर्दा हटते ही- सन्तों को मिल गया किनारा॥

उस रस की अनुभूति मुझे, पर- कहना चाहूँ तो गूँगा हूँ।
जिसकी दमक स्वयम् ही देखूँ, मैं ऐसा मोती मूँगा हूँ॥
यहाँ मुसलमानों में बापू- ऐसे थे जैसे 'कुरान' हो।
या कि भक्ति के पूर्ण स्रोत में- गोते खाता हुआ ध्यान हो॥

ग्यारह मुस्लिम यहाँ भेंट को- ले सिन्दूर चूड़ियाँ आये।
अपनी झुकी हुई आँखों से- रोली में आँसू बरसाये॥
बोले, हम सिन्दूर चूड़ियाँ- उनके लिये यहाँ लाये हैं-
पुत्रे यहाँ सिन्दूर जिन्हों के, जिन पर यहाँ ज़ुल्म ढाये हैं॥

आँसू टुलकाये बापू ने, बोले- करो प्रार्थना प्रतिदिन।
सब के गाँधी जी सब के हित- करते वहाँ अर्चना प्रतिदिन॥
जब प्रार्थना सभा में बापू- देते थे उपदेश प्रेम का।
ज्ञान ध्यान बतलाते थे जब, देते मधु रस देश प्रेम का॥

तीनों लोकों में लय होकर- तब सुरगण मंगल गाते थे।
जननायक के चरणों में आ- शाश्वत फूल चढ़ा जाते थे॥
मन ही मन में बापू उनको- करते बार बार अभिवादन।
ईश्वर से भी कहीं बड़ा है- उसके भक्तों का आराधन॥

पूजा में बापू बैठे थे, दीप समझ कर शलभ आ गये।
चन्दा समझ चकोर चल पड़ा, मेघ समझ कर मोर छा गये॥
स्वाति समझ कर चातक दौड़े, सूर्य समझ कर कमल खिल गये।
मन-सागर में नये ज्वार थे, भक्तों को भगवान मिल गये॥





जननायक

चाँद समझ चाँदनी आगई, शरद पूर्णिमा थी सावन में।
मृतकों को जीवन मिलता था, जननायक के आश्वासन में॥
समझ बसन्त सन्त बापू को- पतझड़ में ऋतुराज राजता।
सावन भादो समझ उन्हों को- कृषियों पर झूला विराजता॥

जननायक की बजी बाँसुरी, सुर लय पहुँची गाँव गाँव में।
चलीं प्रार्थना में बापू की- भाव भरी सब चाव चाव में॥
बनी प्रेम में पागल सी सब- जननायक की ओर चल पड़ीं।
किधर चलें, हर ओर तान वह, इधर उधर रह गईं वे खड़ीं॥

बच्चा रोता रहा किसी का, तवा किसी का चढ़ा रह गया।
थाली परसी रही किसी की, दूध किसी का उफन बह गया॥
सास टेरती रही किसी को, अरी! साथ शिशु को भी लेजा!
अभी आ रही हूँ अम्मा जी! हवा बनी सर्राटे से जा॥

पीछे पीछे बालक लेकर- सास उधर ही को चल देती।
कोई सेज छोड़ कर चलदी, कोई साथ न बुर्क़ा लेती॥
जननायक की तान छिड़ी जब- छोड़ दिया सबने सब धन्धा।
बापू के प्रकाश के आगे- रहा न कोई भी तो अन्धा॥

बीन वही है जिसके आगे- काले विषधर भी झुक जायें।
आकर्षण तो वह है जिससे- भौतिक आकर्षण शर्मायें॥
बापू की प्रार्थना सभा में- हिन्दू मुसलमान सब आये।
बापू का उद्देश्य यही है- जो भी आये उसे तिराये॥

जीवन का सन्देश यही है- पथ भूले को पथ बतलाये।
बोल उसी के मुँह से निकले- जो रसना से रस बरसाये॥
शुरू प्रार्थना सभा हुई वह, प्रभापुंज जननायक बोले-
उन पर रस धारा बरसादो, जला चुके जो कुछ भी शोले॥

प्रेम भाव से एक रहो सब, जो उजड़े घर, उन्हें बसाओ!
'क्षमा करो वह भला करो' की- नीति प्रेम से सब अपनाओ!!
जब तक एक नहीं होओगे- मैं जाऊँगा नहीं यहाँ से।
मेरे हरे भरे उपवन में- ले आये अंगार कहाँ से?







जननायक

सबकी आँखें झुकी हुईं थीं- जननायक जब बोल रहे थे।
मानो शर्मीयी आँखों से- धरती में रस घोल रहे थे॥
बापू की वाणी सुन सुन कर- अपने फटे हृदय सब सीते।
शेर और बकरी दोनों मिल- एक घाट पर पानी पीते॥



इसी तरह प्रतिदिन जननायक- उन सब में घुलते मिलते थे।
इसी तरह कीचड़ से ऊपर- प्रतिदिन नये कमल खिलते थे॥
रोज़ टहलते सुबह शाम वे, उजड़े हुए घरों में जाते।
ईश्वर की प्रार्थना वहाँ कर- आँसू से वे दीप जलाते॥

एक ध्वस्त खँडहर में बापू- पहुँचे जब कि प्रार्थना करने-
धूलि उड़ा कर किया रुदन से- बापू का स्वागत खँडहर ने॥
कहा ध्वस्त खँडहर ने उनसे- बापू ! मेरी सुनो कहानी!
मेरे ऊपर बीत चुके हैं- बापू ! लाखों युग तूफ़ानी॥

कैसा भी तूफ़ान भयंकर- आया लेकिन नहीं झुका मैं।
बड़े बड़े अंगारे बरसे, किन्तु किसी से नहीं फुका मैं॥
मेरे घर का जलता दीपक- बुझा न पाये आँधी पानी।
पर जब इस आँगन में देखी- नन्हे शिशुओं की कुर्बानी-

जब देखा नन्ही बच्ची को- संगीनों पर वे उछालते-
जब देखा घर की रानी पर- वे अपने मन की निकालते-
जब देखा उन शैतानों ने- बूढ़े बच्चे क़त्ल कर दिये-
जब देखा अस्मत के ऊपर- अन्धों ने अंगार धर दिये-

जब देखा शोणित में लथ-पथ- अपने आँगन की रानी को-
जब अपनी बिटिया पर देखा- उन पशुओं की शैतानी को-
एक बार जी चाहा तब यह- इन के ऊपर गिरूँ टूट कर।
बरसादूँ अन्तिम गुस्से से- इन ख़ूनी चीतों पर पत्थर॥

चाहा नभ के तारे तोड़ूँ, चाहा आज प्रलय कर डालूँ।
चाहा पत्थर मार मार कर- अपनी नन्ही कली छुड़ालूँ॥
पर फिर सोचा ये पापी जो- घोर पाप में पशुता करते-
जो ख़ूनी हत्यारे पागल- ख़ून नहीं करने से डरते-





जननायक

उन्हें पाप से छुड़ा उन्हों का- करने को कल्याण रहा मैं।
इसीलिये तो टूक टूक हो- अपने रोके प्राण रहा मैं॥
उनकी पशुता से लज्जित हो- मैं धरती में गड़ा पड़ा हूँ।
अब तुम तूफ़ानों से लड़ना, मैं तो अब तक बहुत लड़ा हूँ॥

खँडहर के ठिकरों पर अंकित- मेरी बीती हुई कहानी।
मेरी आँखों में बन्दी है- उन सब की आँखों का पानी॥
प्रलय न हो जाये इस डर से- उस पानी को नहीं छोड़ता।
गला रुँध गया कहते कहते, बापू! अब मैं हाथ जोड़ता॥

उसी ध्वस्त खँडहर पर बापू- आँखों ही आँखों में रोये।
ईश्वर की प्रार्थना वहाँ की, आँखों से वे खँडहर धोये॥
वहीं शिला पर बैठ राम ने- दीप जला आरती उतारी।
हाथ जोड़ गिर पड़ी पगों में- तीनों लोकों की अँधियारी॥

ग्राम ग्राम में जले हुए घर- अपनी विपदायें कहते थे।
ग्राम ग्राम में जले घरों से- बुझे हुए आँसू बहते थे॥
जले घरों में जा जा बापू- मरघट को फिर नगर बनाते।
हिन्दू मुसलमान दोनों हो- जननायक पर फूल चढ़ाते॥

गाँधी अपना मर्म हृदय ले- गाँव गाँव घर घर में जाते।
सुनो भाइयो! बहिनों आओ! धर्म गया वापिस लौटाते॥
कितनी ही हिन्दू महिलायें- फिर से हिन्दू करीं उन्होंने।
शान्ति-अमृत से जीवन दे दे- शुद्ध अहिंसा भरी उन्होंने॥

चलती फिरती कुटिया उनकी- जहाँ पहुँचती लिये सबेरा-
मेरे जननायक बापू का- जहाँ कहीं लगता था डेरा-
पल भर में उनकी कुटिया पर- लगता गाँव गाँव का मेला।
दुनिया पीछे पीछे चलती, चला गया वह जिधर अकेला॥

किसी कृषक के कच्चे घर में- बूढ़े बाबा कभी अतिथि थे।
जिस में चाँद सूर्य मिलते हैं- गाँधी बाबा वे शुभ तिथि थे॥
महाप्रलय के जल-प्लावन में- तैर रहा था वही सन्तरण।
मानवता की परिभाषा के- गाँधी जी थे शुद्ध उद्धरण॥









उधर हिन्दुओं की रग रग में– ख़ून खौलने लगा लाल हो।
चीख़ पड़ी भारत की बेटी, महाकाल हो! महाकाल हो!
ये काले विषधर जिनको हम– दूध पिला कर पाल रहे हैं।
ये खूनी भेड़िये जिन्हें हम– माँस खिला कर पाल रहे हैं॥



उधर भेड़िया दाँत निकाले– माँ बहिनों का खून पी रहा।
और इधर माँ की अस्मत दे– भारत माँ का शेर जी रहा॥
डूब मरो तुम कोटि कोटि हो, चुल्लू भर गन्दे पानी में।
थू थू! उठती हुई जवानी, थू थू! ऐसी नादानी में॥
अपनी बहिन बेटियाँ दे दे– उनसे नाता जोड़ रहे हो।
बार बार वे छुरा दिखाते, बार बार तुम छोड़ रहे हो॥
बारह वर्ष रही नलकी में, फिर भी कुत्ते की दुम टेढ़ी।
वे हो सकते नहीं तुम्हारे, काट धरो तुम चोटी एड़ी॥
जब वे घर तक में घुस आये– तब भी आँखें बन्द पड़ी हैं।
देखो! आँख खोल कर देखो– वे नंगी नारियाँ खड़ी हैं॥
उनके मुँह से सुनो कहानी– जो बर्बाद बने भिखमंगे।
जिनके घर छिन गये, मरे जो, और खड़े जो भूखे नंगे॥
नये सृजन में काली रातें, गा गा नया सवेरा लाओ!
छोड़ दिये हथियार 'पार्थ' ने, 'गीता' का उपदेश सुनाओ!!
अभी माँस की भूख उन्हें है, अभी खून की प्यास उन्हें है।
अभी और झूठे टुकड़ों की– इधर उधर से आश उन्हें है॥
अभी दूर बैठे बैठे भी– आग फूस वे मिला रहे हैं।
अभी हमारी माँ बहिनों का– खून उन्हें वे पिला रहे हैं॥
अभी और फुंकार रहे हैं– इधर उधर से विषधर काले।
अभी और वे छील रहे हैं– भालों से छाती के छाले॥
माँस खा रहा खड़ा भेड़िया, भावुक! तुझे मोह ने घेरा।
चला तीर तम चीर हटा दे, लादे जग में नया सवेरा॥
उधर खड़े वे खूनी कब से– भारत माँ को काट रहे हैं।
उधर देख स्वाधीन देश को– वे लाशों से पाट रहे हैं॥







उधर देख! बूढ़े बच्चों पर- उन गुण्डों की बर्बरता है।
उधर द्रौपदी को दुःशासन- सड़कों पर नंगी करता है॥
इस नंगे नर्त्तन में भारत! तुझको धनुष उठाना होगा।
इन लम्बे लम्बे दाँतों पर- तुझको तीर चलाना होगा॥

आज माँस खानेवालों को- खाने निकल पड़ो प्रलयंकर!
आज खून पीनेवालों को- डसने निकल पड़ो शिवशंकर!!
काली स्याही के रोग़न से- पुछा हुआ खूनी मुँह उनका।
सब कुछ दिया, मगर अब तक भी- खुला हुआ खूनी मुँह उनका॥

धधक उठी ज्वाला 'बिहार' में, हिन्दू मुसलमान पर टूटे।
काट काट सर होली खेली, लोहू के पतनाले छूटे॥
ताज़ा गर्म लहू पीने को- निकल पड़ी तलवार भवानी।
लाल हो गई धरा खून से, नंगी हो नाची नादानी॥

लोथें कहीं, कहीं सर उछले, कभी आग धधकी कण कण में।
शोणित की वर्षा होती थी- सारी दुनिया में क्षण क्षण में॥
ओ पागल हिन्दू! रुक कर सुन, यही वीरता है क्या तेरी?
खून भाइयों का करता है, यही धीरता है क्या तेरी?

हैवानों को देख देख कर- ओ मनुष्य! हैवान न बन तू!
यह तेरा प्रतिशोध नहीं है, अपनों को तूफ़ान न बन तू!
ऐसा पागलपन कर पागल! अपना घर बर्बाद न कर तू!
अपने पाँखुड़ियों से घर को- काँटों से आबाद न कर तू!

ऐसी आग लगा मत जिससे- स्वतन्त्रता देवी जल जाये।
फूस इकट्ठा कर घर ही में- तूने क्यों अंगार घुसाये?
स्वतन्त्रता आने से पहिले- जला न तू इन अंगारों से।
मनुष्यता की पाँखुड़ियों को- अरे! काट मत तलवारों से॥

लपटें लपक रही थीं लपलप, गाँधी जी का जी जलता था।
अग्नि साम्प्रदायिक की लौ से- बापू का जीवन बलता था॥
बापू बोले, यदि "बिहार" का- रक्त-पात यह शान्त न होगा-
तब तक को अनशन कर दूँगा- जब तक खून समाप्त न होगा॥







पर "बिहार सरकार" निमिष में- झगड़ों पर बरसी बादल बन।
क्रुद्ध हिन्दुओं के सीनों पर- बरस पड़ीं गोलियाँ दनन दन॥
बापू के प्रण-प्राण घोष ने- रक्तपात दो दिन में रोका।
दो पल ने उन दो आँखों का- जल प्रपात दो दिन में रोका॥



उन आँखों के जल-प्रपात से- जल-प्लावन के मेघ न रुकते।
बापू का अनशन सुनते ही- धरती हिलती, अम्बर झुकते॥
स्वतन्त्रता आने से पहिले- ये तूफ़ान यहाँ पर आये।
दीप जलाने से पहिले ही- किसने ये अंगार जलाये!

'अस्थायी सरकार' देश में- नये सृजन के दीप जलाती।
पर प्रभात के जल प्रपात में- लीग भयंकर आग लगाती॥
परिवर्त्तन की इस बेला में- परिवर्त्तन होते हैं पल पल।
पल में घोर घटायें घिरतीं, पल में सूर्य दीखता उज्ज्वल॥

यह अस्थायी दुनिया, इसमें- क्रीड़ा करती रहती कम्पन।
परिवर्त्तन ही तो नवीनता, दुख सुख का होता परिवर्त्तन॥
कभी अँधेरा, कभी उजाला, शाम सुबह आते जाते हैं।
कभी फूल खिलते सरसों के, और कभी पतझड़ आते हैं॥

'अस्थायी सरकार' बन गई, पहिले उसमें "लीग" न आई।
भौंक भौंक कर खिसयाई सी- पीहर को चल पड़ी लुगाई॥
पीछे पीछे "वेवल" दौड़े, लाये उसे मनाकर घर में।
काले बाल सफ़ेद कर दिये, कड़वा तेल रगड़ कर सर में॥

मनोनीत हो गई "लीग" भी- 'अस्थायी सत्ता' के अन्दर।
आँख मिलाकर हाथ धर दिया- चतुर "लियाक़त" के कन्धे पर॥
मिले 'नेहरू' और 'लियाक़त', मिले नयन, पर मिले नहीं मन।
रह 'विधान परिषद्' से बाहर- करी "लीग" ने टेढ़ी गर्दन॥

"गुटबन्दी" में हुए न शामिल, फिर से डाला नया अड़ंगा।
सीधी गंगा लगे रोकने, लगे बहाने उल्टी गंगा॥
वह सारी योजना लौट दी, जो कि "मई सोलह" को आई।
उल्टे घड़े भर रहे पानी, 'उल्टे बाँस बरेली' लाई॥







वही झाड़ झंकाड़ कि जिसने- ऐसे काँटों में उलझाया।
सुलझाने या उलझाने को- उसने 'लन्दन' पुनः बुलाया॥
तीखे काँटों की झाड़ी ने- फूलों का खिलवाड़ बनाया।
दूध और पानी करने को- दोनों को "लन्दन" बुलवाया॥
चले "जवाहरलाल" 'विलायत', मानो मनहर चाँद चल रहा।
राजनीति का नौनिहाल वह- बन तारों का दीप जल रहा॥
भारत की तक़दीर बदलने- गाँधी जी का प्यार जा रहा।
भारत माँ का मुकुट सजाने- कवियों का शृङ्गार जा रहा॥
उस तट से स्वतन्त्रता लेने- नौका वह पतवार जा रही।
"जिन्ना" भी जा रहे उधर ही, जीत जा रही, हार जा रही॥
'जिन्ना' लिये 'लियाक़त' पहुँचे- 'लन्दन' की चिकनी सड़कों पर।
पैर फिसल जाता है उनका- जो देखा करते हैं अम्बर॥
"चर्चिल" के मखमली कोच पर- गोरे "जिन्ना" गेंद बन गये।
रंग कहूँ या कहूँ ख़ून में- जिसमें उनके हाथ सन गये॥
सज्जन से सज्जन मिलते हैं, चालबाज से चालबाज ही।
मूल नहीं कौड़ी भी ली पर- भारत को खा गया ब्याज ही॥
दुनिया देख रही थी क्या हो, क्या कैसा होगा परिवर्त्तन?
'कट्टरपंथी' कूट नीति में- नयी नीति करती थी नर्त्तन॥
उधर "जवाहरलाल नेहरू"- रंग बदलते देख रहे थे।
स्वतन्त्रता पर अंग्रेज़ों को- ज़हर उगलते देख रहे थे॥
'सोलह मई योजना' की फिर- विस्तृत व्याख्या हुई वहाँ पर।
बदल श्लेष से अर्थ भाव सब- बदला शब्द शब्द वह अक्षर॥
शब्द शब्द अक्षर अक्षर का- अर्थ अनर्थ यहाँ होता है।
क्या क्या अर्थ लगाती दुनिया- लेखक देख देख रोता है॥
अभिधा में लक्षणा व्यंजना- वहाँ कूट भाषा में देखी।
परुषा में गौरी पाँचाली- भौतिक अभिलाषा में देखी॥
दिया यही निर्णय 'ब्रिटेन' ने- 'जिन्ना' अर्थ ठीक करते हैं।
प्रतिध्वनि में कह दिया किसी ने- कुत्ते यहाँ घास चरते हैं॥









'अस्थायी सरकार' बनी जो– 'लीग' पृथक् है उसमें रहकर।
आवश्यकता नहीं कि आये– वह "विधान परिषद्" के अन्दर॥
इस भाषा का अर्थ यही है– 'गुटबन्दी' में 'लीग' न आये।
यह भी सम्भव हो सकता है– रवि से धूप अलग हट जाये॥

पूज्य 'जवाहरलाल नेहरू'– कुछ चिन्तित से खड़े रह गये।
सदा बहे हैं, सदा बहेंगे, आँसू अपनी कथा कह गये॥
जीवन के उत्थान पतन में– जाने यह दुनिया कैसी है?
पल पल परिवर्त्तन होता है, दुनिया जैसी थी वैसी है॥

बैठा सा मन ले 'लन्दन' से– भावुक अपने देश चल पड़े।
आज 'जवाहरलाल नेहरू'– लहरों के मँझधार थे खड़े॥
लहरें अपनी ओर खींचतीं, वे लहरों के उलटे चलते।
कभी निकलते घटा चीर कर, कभी सान्ध्य लाली में ढलते॥

इसी सोच-सागर में डूबे– आ पहुँचे वे "नोआखाली"।
धरा-गोद में खेल रही थी– जहाँ कि बापू की उजियाली॥
दुनिया की आँखों का तारा– बापू ने ले लिया गोद में।
या अपनी आँखों का तारा– दुनिया ने दे दिया गोद में॥

प्रेम पगे 'नेहरू' नयन ने– गोदी में मोती ढुलकाये।
मन के मोती गिरे अंक में, मन के हंस उन्हें चुग लाये॥
आँसू पूछ कहा बापू ने– अरे लाडले! चिन्ता मत कर।
तुझे भरोसा मेरे ऊपर, मुझे भरोसा है ईश्वर पर॥

"नोआखाली" में बापू की– कुटिया मन्दिर मस्जिद ही थी।
सारी प्रतिमाओं की सुन्दर– छाया जिसमें सज्जित सी थी॥
नये 'राष्ट्रपति कृपलानी' वह– 'शंकर राव देव' मन्दिर में।
जिसमें 'राम' 'खुदा' की पूजा– सस्मित चाव देव मन्दिर में॥

जहाँ बैठते थे गाँधी जी– वही जगह मन्दिर बन जाती।
तीनों लोकों की निधि गा गा– वहीं प्रेम से रास रचाती॥
देख उदासी नेताओं की– बापू मन मन में मुसकाये।
मुसकाने की मधुर ज्योति से– चारों ओर उजाले छाये॥





फिर सब नेताओं से बोले- सब नारायण की माया है।
शब्द किये निर्माण उसी ने, अर्थ उसी ने करवाया है॥
शब्दों का संसार सकल वह, कवि कोविद शब्दों का राजा।
शब्दों का रचयिता राम है, शब्दों में संसार विराजा॥

जो कि 'दिसम्बर छः' को की है- बदली हुई श्लेष से व्याख्या।
उसी व्याज निन्दा प्रतोष में- बाक़ी अभी शेष से व्याख्या॥
हम को खेल खिलाने वाले- खेल स्वयम् उस में खेलेंगे।
चाहे जितने पर्वत टूटें- पर हम स्वतन्त्रता ले लेंगे॥

ये रंगीन मेघ कहते हैं- मीठा ख़ून अभी बरसेगा।
स्वतन्त्रता आने से पहिले- आँखों का पानी तरसेगा॥
चाहे जितना ख़ून लगे पर- फूल खिलाने ही हैं हमको।
इस उजड़े उपवन में फिर से- पेड़ लगाने ही हैं हमको॥

अतः ब्रिटिश का "श्लेष लेख" वह- हर्ष मान स्वीकार करो तुम!
मणिवाला वह साँप मिल रहा, डरो न उससे, प्यार करो तुम!!
कहा 'जवाहर' ने बापू से- कैसे साँप गले में डालें?
ज़हर मिला है जिस मीठे में- उस मीठे को कैसे खालें?

कितना भी गुणवान दुष्ट हो, उस से दूर दूर ही शुभ है।
सर्प शूल है मणिवाला भी, दुख देता रहता चुभ चुभ है॥
हाथ पीठ पर फेर प्यार से- नीति निपुण जननायक बोले-
शिव ही तो 'शिवशंकर' होते, आँसू से उगते हैं शोले॥

वे हैं साँप, मदारी हो तुम, वे विष हैं, तुम शिवशंकर हो।
सत्य नहीं जलता ढलता है, सत्यम् शिवम् सुन्दरम् हर हो॥
राजनीति के दाँव पेच में- मैंने हार नहीं सीखी है।
अटल सत्य पर जो है उसने- झूठी रार नहीं सीखी है॥

बात समझ में आई सब के, सब ने राजनीति पहिचानी।
हार जीत बन गई निमिष में, जब बापू की वाणी मानी॥
कूटनीति हारी बापू से, दाँतों नीचे उँगली दाबी।
भारत के भविष्य पर चमका- एक निमिष में रंग गुलाबी॥







जननायक



एक जगह बैठे थे लेकिन- गाँधी जी सर्वत्र विराजे।
राजनीति ने माथा टेका, बजने लगे जीत के बाजे॥
'लन्दन' की वह श्लेष योजना- सारे नेताओं ने मानी।
लेकर मुकुट रक्त-सागर से- लड़ने चली देश की रानी॥

'नोआखाली' से संन्यासी- सृष्टा और सृष्टि में लय था।
भूत भविष्यत् वर्तमान सब- उसकी दिव्य दृष्टि में लय था॥
ग्राम 'रामपुर' में बापू के- चरणों ही में बस विराम था।
सतयुग था उस समय वहाँ पर, पर्ण-कुटी में राम धाम था॥

'कृपलानी' 'नेहरू' आदि ने- चरण-धूलि का अंजन डाला।
अन्धकार खो गया हृदय का, आँखों में आगया उजाला॥
राम ग्राम के दर्शन पाये, नयनों ने अपनी निधि पाई।
नेताओं के दर्शन करने- जनता उमड़ उमड़ कर आई॥

बापू की कुटिया पर सब ने- नेताओं के दर्शन पाये।
जनता को सब नेताओं के- गाँधी जी ने हृदय दिखाये॥
बोले, ये भारत के नेता, इनसे गहराई का नाता।
सच्चे देशभक्त हैं ये सब, ये भारत के भाग्य-विधाता॥

ग्राम 'रामपुर' से नेता गण- पवन वेग से "दिल्ली" आये।
ओर उधर बापू ने अपने- डगमग करते चरण बढ़ाये॥
अपनी लम्बी लकुटी लेकर- जब झुक खड़े हुए जननायक-
जितने झुकते गये शान्ति से- उतने बड़े हुए जननायक॥

हाथ "सुशीला" के कन्धे पर- धर कर जब वे बढ़े अगाड़ी-
चरण चूम बोली वह धरती- क्यों मन्दिर की मूर्त्ति उजाड़ी?
मन्दिर की प्रतिमा! बोलो तुम, मन्दिर छोड़ कहाँ जाते हो?
दो पल में अपनी कर मुझको, नाता तोड़ कहाँ जाते हो?

विरह सहन गोपियाँ करेंगी, मैं उपासिका रह न सकूँगी।
आँखों से बहते बहते भी- बिना तुम्हारे बह न सकूँगी॥
मैं न प्रतीक्षा में पल भर भी- जीवन चला सकूँगी मर मर।
जीवन नहीं गला सकती हूँ- मैं रो रो कर भी जीवन भर॥





मेरी तो साकार अर्चना, निराकार क्यों बनते हो तुम ?
जीत बने थे, पर जीवन की- कहो हार क्यों बनते हो तुम ?
डेरा उठने लगा उन्हों का, ग्रामवासियों ने पग घेरे।
किस पर हमें छोड़ कर जाते, हे जीवन के स्वर्ण सवेरे !

प्रतिध्वनि में डग चाप कह उठी- वहाँ चली मैं जहाँ अँधेरा।
चलती फिरती कुटिया चल दी, उखड़ गया बापू का डेरा ॥
बच्चे बोले, बूढ़े बोले, विरह तुम्हारा सह न सकेंगे।
पागल बन जायेंगे हम सब, रोते रोते रह न सकेंगे ॥

हवा रुक गई चलते चलते, पकड़ लिया बापू का आँचल।
विधवा सी मामूम खड़ी थी, चुप थी पात पात की पायल ॥
जननायक बढ़ चले अगाड़ी, रोने लगे ग्रामवासी सब।
भंगी के बालक ने पूछा- गाँधी जी ! अब आओगे कब ?

खा पछाड़ गिर पड़ा पेड़ वह- जिसने उन पर फूल बढ़ाये।
ग्रामवासियों की आँखों ने- लगातार आँसू बरसाये ॥
बूढ़े बालक युवक युवतियाँ- रोने लगीं हिचकियाँ भर भर।
ग्राम छोड़ चल पड़े साथ ही- सब जननायक के चरणों पर ॥

ग्रामीणों का प्रेम देखकर- बापू की छाती भर आई।
जिन्हें न माया मोह, उन्हों ने- प्रेम अश्रु की धार बहाई ॥
कहा गाँववालों से रो कर- अब हमको आगे जाने दो !
उजड़े गाँव बहुत बाक़ी हैं, उनको फिर से बसवाने दो !!

मैं जाता हूँ, लेकिन हर पल- प्रेम तुम्हारा साथ रहेगा।
आत्मा सब के साथ साथ है, हृदय तुम्हारे हाथ रहेगा ॥
महिलायें बोलीं, ओ बापू ! कैसे किस पर यहाँ रहें हम ?
लाखों दुःख सहे हैं लेकिन- सहन नहीं कर सकते यह ग़म ॥

जब यह देखा जननायक ने- प्रेम-विभोर हो गईं ये सब-
भूल गईं अपने को भी ये, मधु में डूब खो गईं ये सब-
तब जननायक ने उन सब पर- पल को अपनी माया फेरी।
जड़वत् सब हो गये निमिष को, जननायक ने करी न देरी ॥







जनानायक

जल्दी जल्दी क़दम बढ़ा कर– बापू थे आँखों से ओझल।
पल भर बाद चेतना आई, इधर उधर दौड़े बन पागल॥
एक दूसरे से कहता था– कहो किधर को चले गये वे?
हमें प्रेम से छल कर छलिया– किस 'राधा' से छले गये वे!!



जिसने हमें प्रेम में बाँधा, कहाँ गया वह मुरलीवाला?
जिसका यह प्रकाश अब भी है, कहाँ गया वह मूर्त्त उजाला!!
अरी! किसी ने देखा हो तो– उसे बताओ! उसे बताओ!
अरी! किसी ने देखा हो तो– उसे दिखाओ! उसे दिखाओ!!

प्रेम-विरह में पागल सी सब– खा खा कर पछाड़ गिरती थीं।
सभी गोपियाँ बनी हुई थीं, पगली सी रोती फिरती थीं॥
किस पथ से किस ओर गये हैं, मनमोहन मन मन में बस कर?
हमें जिन्होंने दिया सहारा, कहाँ गये वे हम को तज कर॥

आज 'यशोदा' गैया बन कर– मोहन! मोहन! रम्भाती है।
ओ मेरी आँखों के तारे! छाती आज फटी जाती है॥
बापू के पद-चिह्न ढूँढती– कोई चलती ही जाती थी।
कोई बियाबान जंगल में– बापू! बापू! चिल्लाती थी॥

कोई कोयल से कहती थी– बापू को सन्देश सुना आ!
कोई पवनराज से कहती– जा! बापू को दौड़ बुला ला!!
कोई तोते से कहती थी– चिट्ठी बाँध गले में दे आ!
गिरा हंस से कहती थी यह– जा उड़कर बापू को ले आ!!

जहाँ प्रार्थना करते थे वे– याद वहाँ हिचकी भर रोयी।
कहता था प्रार्थना समय यह– कहाँ मनोहर मैना खोयी?
चारा छोड़ दिया गउओं ने, चुग्गा छोड़ दिया चिड़ियों ने।
चन्दा से चाँदनी न निकली, सब शृङ्गार तजे तियों ने॥

बकरी ने पत्ते खाने तज– बापू! बापू! रटा रात दिन।
बापू के वियोग में शशि ने– रात बिताई तारे गिन गिन॥
सारे दुःख सहे जाते हैं, विरह वेदना सही न जाती।
दीप टिमटिमाया करता है, स्नेह-शिखा मरघट में गाती॥



बापू ! बापू ! लट हम गये- हैं, कहाँ हो सहारे ?
बोलो बोलो ! हृदय बिरवे, भावना के किनारे ॥
तारों वाली, तृषित लहरें, बाट में हैं तुम्हारी ।
तूफ़ानों में, पवन कर दी, नाव न्यारी हमारी ॥

बापू ही हैं, पवन तन में, प्राण हैं वे सभी के ।
पूनों हैं वे, शरद ऋतु की, त्राण हैं वे सभी के ॥
मायावी वे, मनन मन में, प्यास में आश भी हैं ।
आँखों में हैं, ललित लय वे, दूर हैं पास भी हैं ॥

भौंरे आये, कमल खिलते, प्रेम में वे बहे हैं ।
जाते हैं वे, जिधर बिरले, चाँद शर्मा रहे हैं ॥
क्रीड़ा होती, सघन बन में, काकली गा रही है ।
बापू जाते, कुमुद शशि से, चाँदनी जा रही है ॥

श्वासों में वे, सघन कविता, कण्ठ में गीत हैं वे ।
कानों में हैं, मधुर मुरली, हार में जीत हैं वे ॥
रोती राधा, विरह वन में, प्राण में प्रीति हैं वे ।
भाषा हैं वे, हृदय गति की, प्रीति की रीति हैं वे ॥

जा रे तोते ! विरह व्रत के, चार आँसू दिया तू !
कैसे मेरा, हृदय वह है, सूचना तो लिया तू !!
आँखो ! जाओ, उधर बरसो, सार से सींचने को ।
मेघो ! जाओ, कुसुम-कुल को, प्यार से सींचने को ॥

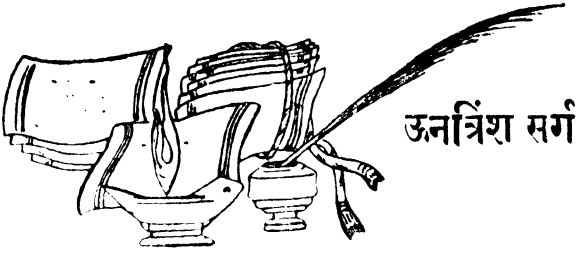
चन्दा ! बापू, थकित जब हों, चाँदनी ही बिछाना ।
बैठें बापू, जब कि तप को, ध्यान में मेघ ! छाना ॥
आ आ माली ! कुसुम वन में, रागिनी राग गा तू !
सन्ध्ये ! जाओ, समय वह है, राम को ढूँढ ला तू !











ऊनत्रिंश सर्ग



योगी उसी विरह में तरु और छाया।
मानो किसी विगत की अब याद हैं वे॥
यात्री चला लहर सा पथ धन्य है तू!
पा पद्म से चरण वे कविता विराजी॥

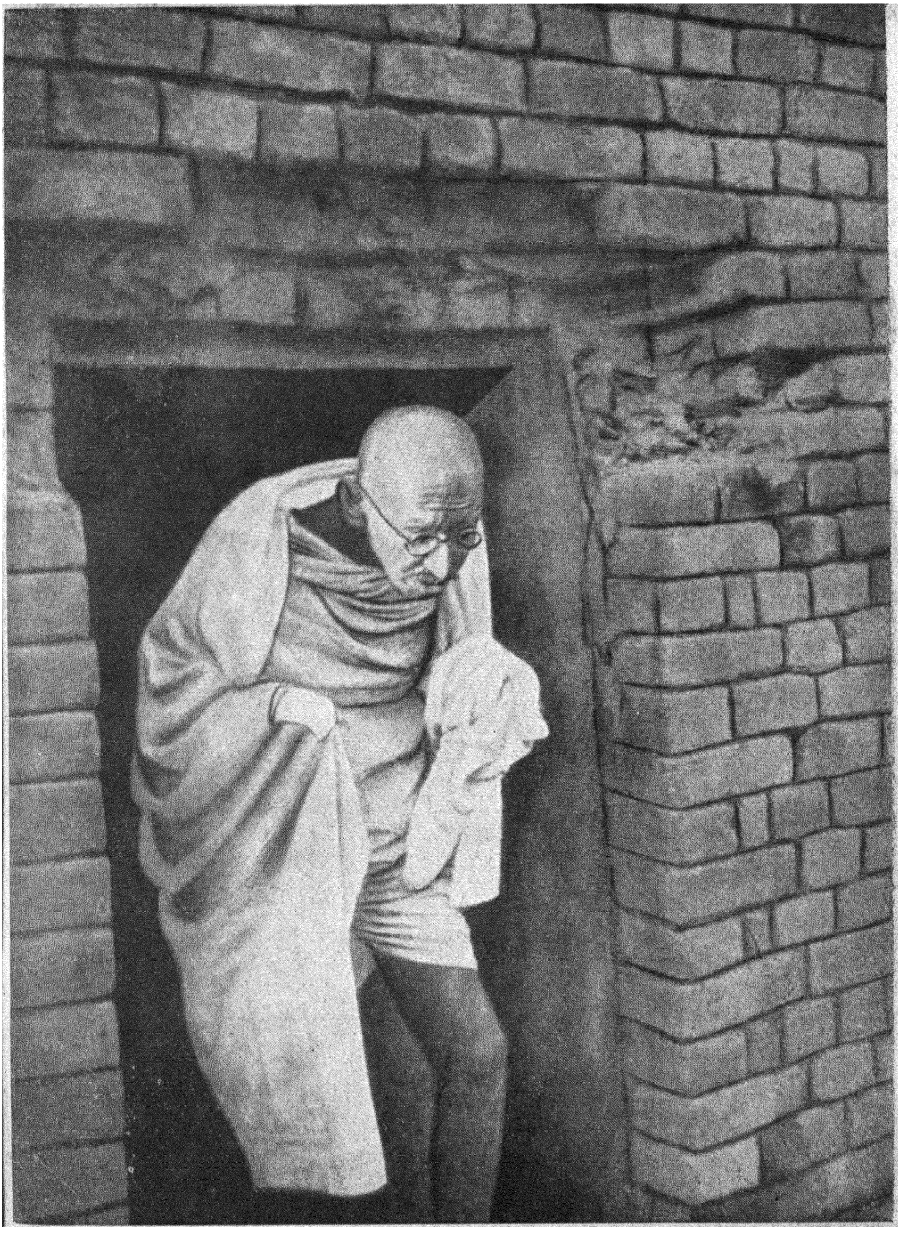
जाते प्रकाश पथ से तरु साथ जाते।
खोये उलूक दिन का जब तेज छाया॥
जैसे किसी सुजन से अति हार जाती-
ऐसे शिवं पथिक से पथ हार माना॥

ऐसे चले पथिक वे निज मण्डली में-
जैसे खिले जलज में भगवान हो हों॥
जैसे खुले नयन में पुतली बसी है-
ऐसे बसे हृदय में मन मोह से वे॥

जैसे किसी हृदय में रहती प्रिया है-
जैसे किसान मन मोहन मोह लेता-
जैसे हताश कवि को प्रिय काव्य होता-
ऐसे बसे हृदय में प्रिय देवता वे॥

जैसे किसी कृपण के घर चंचला हो-
बापू इसी तरह से घर दुष्ट के थे॥
जैसे प्रकाश मन का दृग खोल देता-
बापू इसी तरह से पथ थे दिखाते॥







जैसे उड़ान वश में करते तपस्वी–
रोड़े कठोर पथ के प्रिय यों दबाते ॥
ऐसे झुके चरण में सब फूल देखो–
जैसे दया हृदय की मन को झुकाती ॥

चुभ रहे काँटे पगों में, फूल खिलता चल रहा है।
आ रहे तूफ़ान लेकिन– दीप मेरा जल रहा है॥
प्रलय-पारावार में भी– नाव गति से चल रही है।
तिमिर के धूमिल डगर में– ज्योति शाश्वत जल रही है॥

चल रहे बापू जिधर से– अर्घ्य आँखों से बरसता।
छू हवा उनके पगों की, पेड़ पतझड़ में सरसता॥
व्यजन झलती वायु चलती, छाँह ताने मेघ चलते।
पेड़ स्वागत कर रहे हैं, मार्ग में नभ-दीप जलते॥

नीर बरसाते चले वे, आग बुझती जा रही है।
सूर्य पर किरणें लुटाकर– गीत कोयल गा रही है॥
ग्राम स्वागत में उन्हों के– खेतियाँ लाये सजा कर।
प्रकृति स्वागत कर रही है– पेड़ के पत्ते बजा कर॥



पेड़ों की छाया में बापू– चले जा रहे थे छाया से।
बटिया नयी बनाता हर डग, उस मायावी की माया से॥
पेड़ सुपारी के झुक झुक कर– बापू को प्रणाम करते थे।
धरती के श्रमकण बापू के– चरणों में विराम करते थे॥

गाँव गाँव की पैदल यात्रा– इसी तरह करता था राही।
हृदय हृदय पर राज्य करे जो– जग में वही ज़िन्दगी शाही॥
काम क्रोध मद लोभ मोह पर– अडिग खड़े मात्सर्य विजेता।
महापुरुष में बोल रहे हैं– सब युग सतयुग द्वापर त्रेता॥

उसी चित्र में राम खिँचे हैं, उनमें 'बुद्ध', 'कृष्ण' चित्रित हैं।
वे "ईसा" के चित्र दूसरे, उसमें प्रलय सृजन अंकित हैं॥
बापू के जीवन का हर डग– हमें दे गया नया कथानक।
महाकाव्य कितने ही लिख लो, इतने विस्तृत हैं जननायक॥





जननायक

'रामचन्द्र' की 'वनयात्रा' के- दृश्य दिखाई दिये अनेकों।
एक "अहिल्या" क्या! बापू ने- पत्थर मानव किये अनेकों॥
धरती पर, अम्बर पर, जल पर- चित्रित चरण चाप बापू की।
पा न सकूँगा, लिख न सकूँगा, पूर्ण असीम माप बापू की॥



उस यात्री की अमर कहानी- जितनी लिखता उतनी बढ़ती।
उस ऊँची सीढ़ी के ऊपर- गिरा थक गई चढ़ती चढ़ती॥
आओ! अब बापू के दर्शन, करलें हम चल कर "बिहार" में।
यहाँ वहाँ सब जगह सुनो तुम, ऐसी लय है उस सितार में॥

मानवता के उस मोती में- हर प्राणी के लिये दमक थी।
हिन्दू हो या मुसलमान हो, हर मनुष्य के लिये चमक थी॥
जहाँ धधकती ज्वाला देखी- वहीं बुझाने चला गया वह।
वह समतल पर चला निरन्तर- भूल भेद सब भुला गया वह॥

बापू बोले, अरे हिन्दुओ! अमृत कुंज के सरस बिहारी!
इस रसाल वन को कटुता से- नोच रही क्यों यह फुलवारी?
क्या हिन्दू का जाता बोलो? क्या जाता है मुसलमान का?
भला नहीं होता 'गीता' का, भला नहीं होता 'कुरान' का॥

उसके जी से पूछो जिसके, घर को अन्धे जला रहे हैं।
उनके जी से पूछो जिनको- खारे आँसू गला रहे हैं॥
वे न जलेंगे, वे न गलेंगे, तुम जलते हो, तुम गलते हो।
बच्चों के टुकड़े कर करके- ख़ूनी टुकड़ों पर पलते हो॥

मुसलमान पागल बनता है, तो क्या हिन्दू भी बन जाये?
हिन्दू अगर भूल करता है, मुसलमान भी क्या खे खाये?
ख़ून नहीं प्रतिशोध ख़ून का, यह कोई प्रतिकार नहीं है।
जो थोड़े हैं उन्हें सताना- बहुतों का अधिकार नहीं है॥

ज़ुल्म न ज़ुल्मों से जीतोगे, उनको जीतो गले लगा कर।
राज्य विश्व पर कर सकते हो- वैर भाव का भूत भगा कर॥
माथों से काले शोणित के- जननायक ने धब्बे धोये।
देख देख दुर्दशा देश की- जननायक पग पग पर रोये॥



उनके मानस में चुभतीं थीं- पराधीनता की ज़ंजीरें।
उनकी पग-ध्वनि बना रही थी- बिगड़े भारत की तक़दीरें॥
चाह फूल की बुलबुल को है, प्यास प्रेम की है बदली को।
काट नहीं सकतीं तलवारें- सत्य अहिंसा की तकली को॥

एक पाँखुड़ी से जननायक- काले कलियुग से लड़ते थे।
फूल खिला ही रहा बराबर, काँटे पैरों में गड़ते थे॥
उन डगमग करते चरणों से- अंग्रेज़ों का शासन डोला।
अपनी थाती आप सँभालें- ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल यह बोला॥

'बीस जून सन् अड़तालिस' तक- हम भारत निश्चित छोड़ेंगे।
प्रेमनिमज्जित सद्भावों से- हम सब से नाता जोड़ेंगे॥
धन्य धन्य "एटली" कि जिसने- भाषण में मधु घोल उड़ेला।
उसके मुँह में घी शक्कर भर- जिसके मुँह से सुनी सुवेला॥

ब्रिटिश राज्य की सार्वभौमता- भारत पर से उठ जायेगी।
अमृतकुंज में अमर भाव ले- छम छम स्वतन्त्रता गायेगी॥
'वेवल' वायसराय वहाँ से- अब हम 'लन्दन' बुलवायेंगे।
"एडमिरल माउँटबेटन" अब- उनकी जगह वहाँ जायेंगे॥

आशा करता हूँ सब मिल कर- भारत का विधान रच लेंगे।
चाहे भी जैसे लेना तुम, हम तो स्वतन्त्रता दे देंगे॥
निश्चित तिथि तक जल्दी ही अब- सत्ता हस्तान्तरित करेंगे।
भारत माँ का राजमुकुट हम- उसके सर पर शीघ्र धरेंगे॥

भारत ही क्या! दुनिया भर में- स्वागत! स्वागत! की लय लहरी।
लेकिन 'लीग' और "चर्चिल" की- ख़ूनी चाह हो गई बहरी॥
आशा की इस स्वर्ण किरण पर- कोई फूल चढ़ाने आया।
और किसी ने आशाओं पर- काला अंगारा दहकाया॥

अंग्रेज़ों की नयी घोषणा- उड़ी यहाँ रंगीन हवा में।
खेल रक्त से लगे खेलने- हो हो तेरह तीन हवा में॥
छुरे मुसलमानों के चमके, चमकी कूटनीति 'चर्चिल' की।
ख़ूनी डायन चीख़ पड़ी यह- आज निकालूँगी मैं दिल की॥







जननायक



'जिन्ना' का ख़ूँख़ार भेड़िया– उबल ख़ून में चला डूबने।
अत्याचार सहे ख़ुरपों के– इस दुनिया में हरी दूब ने॥
नीच ख़ूनियों की बर्बरता– नंगी हो कर लगी नाचने।
अपनों ही के हाथों भारत– माँ की क़िस्मत लगी फूटने॥

वह ख़ूनी "पंजाब" कि जिसकी– धरा रक्त में नहा रही है।
शोणित में बैठी भारत की– क़िस्मत आँसू बहा रही है॥
वे 'पठान' पागल 'क़बायली'– वहाँ हिन्दुओं पर चढ़ आये।
माता के आगे बच्चों पर– हत्यारों ने छुरे चलाये॥

फिर बच्चों के क़तले करके– चूल्हे पर कड़ाह में डाले।
पति को लगा दिया चूल्हे में, गर्म तेल में ख़ूब उबाले॥
फिर माँ के मुँह में बच्चे के– भुने हुए वे क़तले ठूसे।
और नमक भर भर क़तलों में– माँ को दिखा दिखा कर चूसे॥

फिर दुखिया माँ को नंगी कर– छाती पर वे खड़े हो गये।
पहिले मनमानी की फिर उस– गर्म लहू में हाथ धो गये॥
घेर हिन्दुओं के सारे घर, सब को बाहर खड़ा कर लिया।
अलग जवान लड़कियाँ ले लीं, सब बूढ़ों को क़त्ल कर दिया॥

बच्चे काट दिये, पतियों को– कोड़े मार मार कर मारा।
जो अधेड़ थीं उनको काटा, बुढ़ियाओं पर चला दुधारा॥
पर अधेड़ को तब काटा जब– ख़ून सैकड़ों चूस चुके थे।
झुकी हुईं थीं आँख, हृदय में. कवियों के अंगार फुके थे॥

जी में आया वीणा छोड़ूँ, शंख फूक दूँ डगर डगर में।
जो न बुझाये बुझे आज वह– आग लगा दूँ नगर नगर में॥
गली गली में, गाँव गाँव में, नगर नगर में नाच रहे वे।
जिनके लेखे लिख न सकेंगे– इतने अत्याचार सहे वे॥

जो ये ज़ुल्म ढा रहे उनको– कहो कौन इंसान कहेगा?
ख़ूनी! तुझको भी मरना है, तू न सदा ही अमर रहेगा॥
हाय! बिचारे हिन्दू लुट कर– छोड़ छोड़ घर भाग रहे हैं।
जानेवालों को खाने को– पथ में भी पशु जाग रहे हैं॥





कोई स्वामी के मरते ही- चीख़ मार कर वहीं मर गई।
कोई सती कूद ज्वाला में- अपने तन को राख कर गई॥
'कलकत्ते', 'नोआखाली' की- अब तक बुझी नहीं चिनगारी।
'सिन्ध' और 'पंजाब' एक क्या! जगह जगह चल पड़ी कटारी॥

मुसलमान के पागलपन से- हिन्दू भी पागल बन भभके।
दबे हिन्दुओं की छाती में- बदले के अंगारे धधके॥
नीच नीचता से मानेंगे- कहते कहते निकल पड़े वे।
अब तक जो आँखों ही में थे, अब ख़ूनी आँसू उमड़े वे॥

हुंकारा पंजाब पंचनद- महा भयानक आग बन गया।
किया बाप ने गुन्हा पुत्र पर- गुस्सा बन कर ख़ून तन गया॥
भारत माता ने जब देखा- मेरे बच्चे कटते जाते।
निर्दोषों का माँस अभी तक- थके नहीं वे खाते खाते॥

इस से तो अच्छा है अपने- हाथ पैर इन से कटवालूँ।
अपने अंग कटा कर इन से- अपने खिलते फूल छुड़ालूँ॥
एकाकी बापू बैठे थे, भारत माता गई वहाँ पर।
गाँधी जी ने आसन छोड़ा, बैठे माँ के चरण पकड़ कर॥

माँ! क्या करूँ बताओ मुझको? माँ से पहिले बापू बोले-
चार बुझाता, आठ दहकते, धरती माता पर ये शोले॥
दोनों हाथ उठा कहता हूँ- कोई मेरी नहीं मानता।
आज न मेरी सुनता कोई, मनुज आज शोणित उछालता॥

अब तुम ही बतलाओ माँ! मैं- इन दंगों में आज करूँ क्या?
ख़ून चाटने वाले जग में- माँ मैं अपना अमृत भरूँ क्या??
हाथ फेर सर पर बापू के- बोली, मुझको कटी मान ले!
टुकड़े होने दे अब मेरे, अपने जी में जुड़ी जान ले!!

पानी पर कटार चलने से- क्या पानी कटता है बेटे?
धूलि डालने से सागर में- क्या सागर पटता है बेटे??
'पाकिस्तान' मान ले अब तू, हिन्दुस्तान अलग होने दे।
मेरे ही शोणित से उसको- अपना लाल कफ़न धोने दे॥







जननायक



सुन कर माँ की बात एक दम- बापू चौंके, खड़े हो गये।
मानो सत्य अहिंसावादी- पल को अपने होश खो गये॥
बोले, माँ ! यह कभी न होगा, देखूँ कौन तुझे काटेगा ?
सत्य अहिंसावादी अब माँ ! बस उसका शोणित चाटेगा॥

बापू ने यह कहा कि पल में- प्रलय ! प्रलय ! बोले परमेश्वर।
भारत माता ने बापू को- फौरन रोका हाथ पकड़ कर॥
माता ने वात्सल्य अमृत से- शान्त किया उस शान्तिदूत को।
थपकी देकर माथा चूमा, शान्त किया अपने सपूत को॥

बोली, पुत्र ! वचन दे मुझको, माता तुझसे भीख माँगती।
वचन मुझे दे ! वचन मुझे दे ! दाता ! तुझसे भीख माँगती !
माता ने आँचल फैलाया, बापू चिपट गये आँचल से।
माँगो ! माँगो ! दूँगा ! दूँगा ! बापू कहते थे पागल से॥

बात विभाजन की मानो अब, "पाकिस्तान" अलग बनने दो !
'जिन्ना' की तलवार आज तुम- मेरे शोणित में सनने दो।
माँ ! क्या मेरी ही छाती पर- तेरा निर्मल खून गिरेगा ?
माँ ! क्या मेरी चिता किनारे- मुझे ढूँढता फूल फिरेगा ?

मेरे होते यदि माँ ! तेरे- कोई अंग भंग कर देगा-
तो मेरे ही शव के ऊपर- स्वतन्त्रता का ध्वज लहरेगा॥
आँसू बहा कहा माँ ने यह- आवश्यकता अगर पड़ेगी-
तो स्वतन्त्रता के मन्दिर में- मेरे सुत की भेंट चढ़ेगी॥

मेरे टुकड़े होने पर भी- अगर न वह तलवार रुकेगी-
स्वतन्त्रता के उजियाले में- तो तेरी भी लाश फुकेगी॥
देकर आशीर्वाद पुत्र को- माँ धरती में लीन हो गई।
जोड़े रहे हाथ जननायक, स्वप्न सदृश वह बीन सो गई॥

यह सारी लीला माया में- देख न पाये दुनिया वाले।
बापू का जीवन सागर मथ- कवि ने अमर रहस्य निकाले॥
अन्तर्धान हो गई माता, अद्भुत ने सारा जग देखा।
होनी तक को चली जीतने- मेरे जननायक की रेखा॥





नये सृजन की शुभ वेला में- उल्टी सीधी हवा बही थी।
पल पल के इस परिवर्त्तन में- दीपशिखा टिमटिमा रही थी॥
दीप बुझाने को चलतीं थीं- रक्त रँगी रंगीन हवायें।
फूट डंकिनी खून खेलती, जय कहतीं झण्डा फहरायें॥

राजनीति के नये रूप ने- "वेवल" को 'लन्दन' बुलवाया।
"माउँटवेटन" भारत आये, द्वार "एटली" ने खुलवाया॥
वायसराय नये भारत के- भारत पत्नी सहित पधारे।
चन्द्रमुखी के साथ चाँद सी- पुत्री ने भी पंख पसारे॥

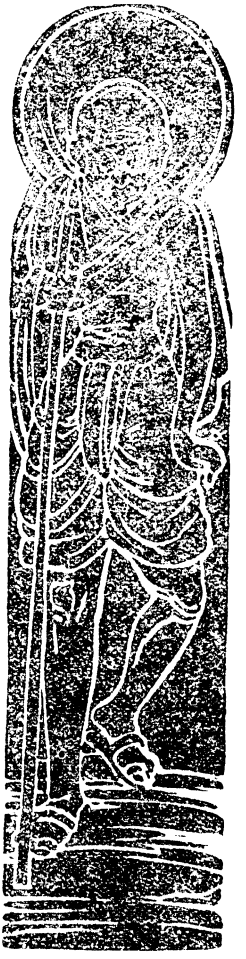
मानो फूल गुलाब "पामिला", तितली के नर्त्तन जैसी थी।
जैसे मधुर हँसी बिखरी हो- वह कोमल कलिका ऐसी थी॥
अधरों की मुस्कान सुनहरी- मानस के दर्शन देती थी।
आँखों की मनहर रंगीनी- मन के फूल चूम लेती थी॥

वह थी फूलों की प्रदर्शिनी, आकर्षण से सजी हुई थी।
सुषमा से वात्सल्य पूर्ण था, सुन्दरता से लदी हुई थी॥
मन के तारों की जाली में- महक महक खिल रही कली थी।
काश्मीर के गहने पहिने- तितली उड़ती हुई चली थी॥

वह बिजली का फूल गुलाबी, तन पर थे बसन्त के गहने।
मधुकर आँखों में बन्दी थे, कविता चली कामना कहने॥
सौरभ से उड़ने थे उसके- श्यामल सुन्दर बाल हवा में।
विरह सजा कर साध गा रही, चली निराली चाल हवा में॥

जब कि हवा में हँसी उड़ी हो, और उमड़ती हो अँगड़ाई।
अँगड़ाई पर एक ज्योति में- बोल रही हो शुभ शहनाई॥
स्वतन्त्रता की प्रथम रश्मि सी- माँ की उँगली पकड़े आई।
भारत ने जिसके स्वागत में- मनमन्दिर की ज्योति बिछाई॥

युग युग की इन्द्राणी "दिल्ली", राजाओं की रूप जवानी-
आज नया स्वागत करती थी, जनता की वह अमर कहानी॥
नये सृजन के अभिलेख से- वायसराय भवन में आये।
उनकी चन्द्रमुखी पत्नी से, झेंपे कुमुद, चाँद शर्माये॥







चन्दा से भी बढ़ कर थी वह, क्योंकि रात दिन जगमग जगमग।
मीठी थी रसाल कानन सी, टीं वी टीं वी करते मन-खग॥
बोली, प्रियतम! थके हुए हो, तुम लेटो, मैं चरण दबाऊँ।
फूलों की माला! आओ मैं- तुम्हें कण्ठ का हार बनाऊँ॥



चली हवा, चाँदनी खिल गई, प्याला दिया रात-रानी ने।
स्वप्नों में संसार सो गया, करी गुदगुदी दीवानी ने॥
रात अगर होती न कहो फिर- सुख की नींद कौन सो पाता?
हारा थका पथिक दो पल को- कैसे दुःख भूल सो जाता?
बिना अँधेरे के जीवन में- कब किसने प्रकाश देखा है?
जिसके मन में प्यास नहीं है- उसने कब विकास देखा है?
जाग मुसाफ़िर! हुआ सबेरा, वायसराय उठ गये सो कर।
नयी ज़िन्दगी बरसाता है, जग में नया सबेरा हो कर॥
जननायक की कुटिया पर वह- राजमहल का राजा आया।
बादशाह के उस प्रतिनिधि को- गाँधी जी ने गले लगाया॥
बोला वायसराय उन्होंसे- बापू! राजभवन में आओ!
"जिन्ना" को भी बुलवाया है, किसी तरह गुत्थी सुलझाओ!!
अच्छा है यदि सब मिल जुल कर- भारत की स्वतन्त्रता लोगे।
बापू बोले, मैं राज़ी हूँ, यदि "जिन्ना" को समझा दोगे॥
टूटी की बूटी न विश्व में, पर उपचार अन्त तक कर लें।
इस अशान्ति के विषम विश्व में- जितना मधु भर पायें भर लें॥
'वायसराय भवन' में बापू- गये समस्या सुलझाने को।
फूस लिये 'जिन्ना जी' पहुँचे- दियासलाई सुलगाने को॥
'माउँटबेटन' ने दोनों को- ब्रिटिश राज्य की नीति सुनाई।
करो नीति कार्यान्वित मिलकर- प्रेम-पगी यह सन्धि सुझाई॥
'जिन्ना' बोले, सब से पहिले- बात विभाजन की वह मेरी।
आबादी अदला बदली में- पल भर की भी करो न देरी॥
हिन्दू 'पाकिस्तान' छोड़ दें, मुसलमान 'भारत' से जायें।
दोनों अपने अपने घर में- अपनी अपनी राधा गायें॥



बापू बोले, लेकिन ये जो- मन्दिर, मस्जिद यहाँ वहाँ हैं-
ये कैसे उठकर जायेंगे ? ये कल्पित बुद्धियाँ कहाँ हैं ?
कैसे नदियाँ काटोगे तुम, कैसे जागीरें बाटोगे ?
जिनके घर हैं यहाँ वहाँ पर- कैसे उनके घर ला दोगे ?

लम्बे चौड़े महाद्वीप के- टुकड़े करने में क्या फल है ?
साथ पड़ौसी भी फिसलेंगे, यह ऐसी फिसलन दलदल है ॥
लम्बे चौड़े महाद्वीप के- टुकड़े कर कमज़ोर बनो मत !
'जिन्ना' लाल आँख कर बोला- मुझसे ज़्यादा बात करो मत !!

देश बटेगा और देश की- आबादी भी बदलेगी ही।
इधर उषा होली खेलेगी, उधर अँगीठी उबलेगी ही ॥
बापू बोले, बता कि क्या यह- खेल खून का मानवता है।
'जिन्ना' बोले, मैं कहता हूँ- दानवता है, दानवता है ॥

मैं न खेलता खेल ख़ून का, खेल रहे जो उनको रोको !
रोक अगर सकते हो तुम तो- अपने घर के घुन को रोको !!
इसका एक इलाज वही है, जो मैं कहता वही करो तुम !
कवि ने कहा, तुम्हारी इच्छा ! पाकिस्तानी घास चरो तुम !!

बापू बोले, अच्छा ! हम तुम- सब से करें अपील शान्ति की।
मार झपट्टा हस्ताक्षर ले- उड़ी हवा में चील शान्ति की ॥
उस संयुक्त शान्ति की भाषा, एक हाथ की बजी हथेली।
रुका नहीं वीभत्स खेल वह, भावों से वह भाषा खेली ॥

रहे ढाक के तीन पात फिर- बन्द रहा क़िस्मत का तारा।
बात न मानी अनहोनी ने, भाग्य एशिया भर का हारा ॥
दीप एशिया का जलता था, 'जिन्ना जी' ने फूक मार दी।
मानस के सुन्दर सुमनों की- गुँथी हुई माला उतार दी ॥

बापू ने देखा कि 'एशिया'- आज अँधेरे में चलता है।
गर्वोन्नत 'योरोप' खड़ा है, सूर्य 'एशिया' का ढलता है ॥
आज एशिया का चन्दा जब- चीर घटायें निकल रहा है।
किसने मेरे कानों में आ- बना नया एशिया कहा है ॥









जनायक

बुला 'जवाहरलाल' कुटी पर, बापू बोले, जगा 'एशिया'।
बीच भँवर में डोल रहा है, एक किनारे लगा 'एशिया'॥
सभी एशियायी देशों का- भारत में सम्मेलन कर तू!
एक बना 'एशिया' विश्व में, जग में नयी ज़िन्दगी भर तू॥



इधर मिला आदेश, उधर बस- 'पण्डित जी' ने क़दम बढ़ाया।
सब देशों को भेज निमन्त्रण- भारत सम्मेलन बुलवाया॥
'दिल्ली' का वह क़िला पुराना, जहाँ कि गत इतिहास व्याप्त है।
जहाँ 'पाण्डवों' का प्रभात था, जिसे अटल अभिमान प्राप्त है॥

जो सदियों से देख रहा है- दुनिया की रंगीन कहानी।
जिसकी ईंटों में सोई है- भारत की जाज्वल्य जवानी॥
आज उसी के आँगन में यह- दीप्तिमान सम्मेलन होता।
आज युगों के बाद पिपासा- सूखे ओठ नीर से धोता॥

अमर 'एशिया' के प्रतिनिधि ये- अधिवेशन में शोभा देते।
वे तैरे, तैराया करते- जो इनके दर्शन पा लेते॥
'बर्मा', 'चीन', 'अरब', वह 'लंका', 'हिन्द एशिया' आन बिराजे।
'फिलिपाइन', 'ईरान', 'मिश्र' वह- 'मंगोलिया', 'कोरिया' साजे॥

वे 'अफ़ग़ानिस्तान' आदि के- ज्ञानी प्रतिनिधि राज रहे हैं।
'शहरियार' की चमक दमक है, 'सुतन', 'सैदिवी' साज रहे हैं॥
अद्भुत शोभा राज रही थी, अध्यक्षा भारत-सरोजिनी।
जिसका वर्ण जैसा भाषण, वह निर्मल सावन-सरोजिनी॥

उठे 'जवाहरलाल' मंच पर, बोले मधु-जीवन बरसाते।
बापू की प्रेरणा त्याग से- हम सब मस्तक आज उठाते॥
मानवता का मूर्त्त रूप वह- मानव की सेवा में रत है।
उसी तपस्वी की सेवा से- ऊँचा आज उठा भारत है॥

मानव मात्र धर्म है जिसका, उसी महात्मा गाँधी की जय।
जब तक जल थल नभ है तब तक- गूँजेगी उस मानव की जय॥
अभिमानी साम्राज्यवाद की- दीवारें गिरती जाती हैं।
सत्य अहिंसा के आँगन में- कोमल कवितायें गाती हैं॥







अगर 'एशिया' की स्वतन्त्रता- तो दुनिया में शान्ति रहेगी।
जब तक अणु बम का घमण्ड है- तब तक जग में क्रान्ति रहेगी॥
इस पीड़ित दुनिया में बापू- सत्य प्रेम की रचना करता।
रचनात्मक भाषण से भारत- सत्यम् शिवम् सुन्दरम् भरता॥

गंगा से गाँधी जी आये, सब स्वागत में खड़े हो गये।
जय बापू की! जय बापू की! जय जय में सब शब्द खो गये॥
आते ही 'सरोजिनी' बोलीं- महा महामानव आये ये!
'नोआखाली' से आये हैं, जग के लिये सुधा लाये ये!!

जय जननायक! जय जगपालक! जय जय भारत-भाग्य-विधाता!
जिसने दीप दिया दुनिया को- जय जय जय वह "पुतली" माता!!
जिस प्रकाश का पार न मिलता- जय हो उस सब के त्राता की!
जिसने हमें प्रेम से पाला- जय जय उस भारत माता की!!

सत्य प्रेम साकार हो गये, महा महात्मा उठे मंच पर।
सतयुग का उपदेश दे रहे- दसों दिशाओं को गा गा कर॥
सत्य प्रेम से जीतो जग को, पश्चिम करो प्रेम से वश में।
दुनिया को सन्देश अमर दो, डूबे रहो सत्य के रस में॥

पश्चिम 'अणु बम' से पीड़ित है, 'अणु बम' जग के लिये नाश है।
घोर अँधेरे में मानव को- सत्य प्रेम का ही प्रकाश है॥
यह सन्देश वही जो 'ईसा', 'बुद्ध' और "ज़ोरोस्टर" का है।
सार यही 'मन्मूर' आदि का, यही पाठ परमेश्वर का है॥

जितने भी पैग़म्बर आये- उन सबका उपदेश यही था।
'राम', 'कृष्ण' कह गये यही सब, ऋषियों का सन्देश यही था॥
सिर्फ़ बुद्धि पर नहीं, हृदय पर- प्रेम-पूर्ण अधिकार चाहिये।
केवल तर्क न मुक्ति-मन्त्र है, श्रद्धा का सत्कार चाहिये॥

जिस भाषा में बोल रहा मैं- वह न राष्ट्रभाषा है मेरी।
यह है राज विदेशी भाषा- जिसने सारी दुनिया घेरी॥
भारतीय भाषा विदेश में- चलते चलते अभी चलेगी।
यह अन्तर्राष्ट्रीय ग़ुलामी- जलते जलते अभी जलेगी॥







जननायक



'दिल्ली' या 'बम्बई' आदि में- भारत की तस्वीर नहीं है।
बड़े बड़े शहरों के अन्दर- दुनिया की तक़दीर नहीं है॥
असली भारत ग्रामों में है, सत्य गाँव की झोपड़ियों में।
सात लाख ग्रामों में देखो ! प्रेम घास की झोपड़ियों में॥

युग बीते तब चले खोजने- कुछ वैज्ञानिक प्रेम सत्य को।
भिन्न भिन्न देशों में पहुँचे- वे पाने आनन्द-नृत्य को॥
जब भारत के किसी गाँव में- गया एक राही वैज्ञानिक।
छोटे से टूटे छप्पर में- पाया उस राही ने नाविक॥

वह भंगी का छोटा छप्पर- जिस में सत्य प्रेम रहते हैं।
जिसने ढूँढा उसने पाया- जिसे कि कहाँ ? कहाँ कहते हैं ?
मैं जो कुछ भी बोल रहा हूँ, अनुभव ही है उसकी आत्मा।
मुझे प्रेरणा वही दे रहा- जो है हम सब का परमात्मा॥

पश्चिम का जो ज्ञान आज वह- पूरब ही की पूर्व देन है।
सब का भला करो जीवन से, जीवन का घुल रहा फेन है॥
पश्चिम की पाश्चात्य सभ्यता- झूठी तड़क भड़क दिखलाती।
आज 'एशिया' की संस्कृति को- नयी सभ्यता डसती जाती॥

उठो ! पुरातन नया करो फिर, तुम अतीत के रत्न न खोओ !
नया वही जो नया रूप ले, स्वप्निल सज धज में मत सोओ !
बापू का रसनामृत सब ने- मानस-घट में भरा भाव से।
चूम लिये भावी विधान ने- जननायक के चरण चाव से॥

सब प्रतिनिधियों ने बापू पर- अपनी श्रद्धा न्यौछावर की।
जीवन उतना बता रहा मैं, जितनी थाह मिली सागर की॥
सब देशों के प्रतिनिधियों ने, अपना अपना रस बरसाया।
महा महात्मा के चरणों पर- सबने मानस-अर्घ्य चढ़ाया॥

पर अब तक पैशाचिक लीला- नाच रही थी नंगी हो कर।
कौन डंकिनी खेल रही थी, ख़ून माँस धरती पर बो कर ?
वह "लाहौर" कि जिसके आगे- "इन्द्रलोक" लज्जित होता था।
वह 'लाहौर' कि जो धरती पर- रूप जवानी में बोता था॥





वह 'लाहौर' कि जिधर निकलते- सौरभ ही सौरभ उड़ता था।
जिसकी मधुर "अनारकली" पर- यौवन से जीवन जुड़ता था॥
उस में आग लगाई ऐसी, जो न बुझाये कभी बुझेगी।
यह तो वह विष बोया जिसकी- बेल फैलती हुई उगेगी॥

शुरू हो गई मारकाट फिर, बना भयंकर बूचड़खाना।
दुनिया कैसे भूल सकेगी- 'जिन्ना'! तेरा वह अफ़साना॥
देख देख यह ख़ून ख़राबा- वायसराय गये फिर 'लन्दन'।
क्या करते! जल भुन कर लाये. जला भुना सा काला चन्दन॥

ब्रिटिश राज्य की नयी योजना- फिर वे नये रूप में लाये।
गाँधी जी के पास बैठ कर- नये नये वे चित्र दिखाये॥
बोले, हम पन्द्रह अगस्त को- सत्ता हस्तान्तरित करेंगे।
जितनी देर करेंगे उतने- हिन्दू मुस्लिम कटे मरेंगे॥

हिन्दुस्तान इधर हो जाये, 'पाकिस्तान' उधर बन जाये।
ऐसा साँप दूर ही अच्छा, दूध पिलाने पर जो खाये॥
रहा न कोई अन्त दूसरा, ख़ून ख़राबे से डरता हूँ।
बापू बोले, नेताओं से- अच्छा! परामर्श करता हूँ॥

हारे थके 'राम' में लय हो- गाँधी जी कुटिया पर आये।
खाये कुछ खजूर आश्रम में, उबले हुए साग कुछ खाये॥
फिर कुछ देर बैठ बापू ने- एकाकी की प्रभु से बाते।
कभी प्रश्न करते थे बापू, कभी प्रेम से चरण दबाते॥

फिर बापू ने नेताओं को- अपनी कुटिया पर बुलवाया।
आज युगों के बाद धरा ने- नेताओं का संगम पाया॥
आज "जवाहरलाल नेहरू"- नये सृजन से वहाँ पधारे।
भाव भरे आसन पर बैठे- "मौलाना आज़ाद" हमारे॥

तेजपुंज से चमक रहे थे- 'भारत बल्लभ भाग्य सितारे'।
ऊँचे आसन पर बैठे थे- नीति निपुण 'सरदार' हमारे॥
रम्य राष्ट्रपति के आसन पर- शोभित कलाकुंज "कृपलानी"।
नये सृजन में नये रूप से- 'राजा जी' ने लिखी कहानी॥







बैठे वहाँ 'नरेन्द्र देव' थे, 'जयप्रकाश नारायण' की जय।
'सरोजिनी नायडू' वहाँ थीं, 'पुरुषोत्तम टण्डन' की थी लय॥
सब नेताओं के संगम में- जननायक थे सबके संगम।
जिस जिस के जो भाव वहाँ थे- बापू के थे सब हृदयंगम॥

ऋषियों के शाश्वत संगम में- संयम समारोह रचनायें।
युग युग के वरदान वहाँ पर, चलो फूल चुग चुग कर लायें॥
आँखें सफल करो दर्शन कर, अमर बनोगे चरणामृत पी।
इनके पदचिह्नों पर चल चल- जीवन बनते जीवन मृत पी॥

फूलों की क्यारी में बापू- सब फूलों की अमर चाह थे।
राह नहीं थी जहाँ, वहाँ वे- लक्ष्य पथिक के लिये राह थे॥
मृग सा दौड़ लगाता जाता- राह पकड़ कर उस तारे की।
उठे 'जवाहरलाल' मंच पर, चर्चा छेड़ी बटवारे की॥

'तीन जून' की ब्रिटिश योजना- 'बी.', 'सी.' गुट का है बटवारा।
'ए. गुट' सारा भारत में है, अतः मान लें हम वह धारा॥
पशुता के नंगे नर्त्तन से- अच्छा अलग अलग ही होना।
मानवता का ध्येय नहीं है, खूनी बन पशुता में खोना॥

खड़ी कल्पना के पंखों पर- बालू की हलकी दीवारें।
क्या नदियों को काट सकेंगी- रेतीली कल की दीवारें॥
कौन पहाड़ों को काटेगा? कैंची से धरती न कटेगी।
धरती पर जो नीली छत्री- वह छुरियों से नहीं फटेगी॥

कुछ विरोध के बाद वहाँ पर- "पंडित जी" की बात मान ली।
मधुर तर्क के बाद तरी ने- सागर की सब थाह जान ली॥
रावी से सागर तक गूँजे- सेनानी "पटेल" के नारे।
हरा भरा यह देश करेंगे- पग चूमेंगे क्रूर किनारे॥

अब वे दिन भी दूर नहीं हैं- जब होगी साकार कल्पना।
जीवन सागर में साथी है, कवियों की पतवार कल्पना॥
काँगरेस की कार्य समिति ने- देखे शुभ निर्माण सन्त में।
"तीन जून की ब्रिटिश योजना"- करी वहाँ स्वीकार अन्त में॥







आशीर्वाद दिया बापू ने- युगपरिवर्त्तक ! अमर रहो तुम !
संसृति के सूखे मानस में- सरिता बन कर सदा बहो तुम !!
श्यामल बादल ! बरस बरस कर- काले पीले धब्बे धो दो !
जो मनुष्यता के सुहाग हों- धरती पर वे मोती बो दो !!

धरती माता को पहिनाओ- हरी भरी सुन्दर हरियाली ।
फूलों के गहने पहिनाओ, माँ की साड़ी बने उजाली ।।
चन्दा का टीका माथे पर, सूरज का झूमर पहिनाना ।
स्वतन्त्रता के राजमुकुट पर- 'काश्मीर' का तिलक लगाना ।।



भारतीय काँग्रेस हुई फिर, देशभक्त सब वहाँ पधारे ।
भव्य मंच पर भावुकता से- बैठे थे आँखों के तारे ।।
धीरे धीरे अधिवेशन में- राष्ट्रपिता गाँधी जी आये ।
स्वागत में उठ सब फूलों ने- उन चरणों पर हृदय चढ़ाये ।।

सब की चाहों ने बापू के- स्वागत में आरती उतारी ।
नृत्य कर रहीं थीं सौरभ में- उस पल ऋद्धि सिद्धियाँ सारी ।।
मानो घोर अशान्त सृष्टि में- आया धैर्य स्वरूप शान्त-रस ।
मानो मधुर वीर रस बरसा, लोप हो गया सर्व भ्रान्त-रस ।।

मानो चाँद धरा पर उतरा, खेला चामर की गोदी में ।
चाँद दूर सागर से कितना, पर है सागर की गोदी में ।।
धीरे धीरे चढ़े मंच पर, मानो रूप बिजलियाँ चलतीं ।
कम्पित हो निष्कम्प रूप से- मानो दीपशिखायें जलतीं ।।

मानो रिमझिम रिमझिम वर्षा- बरस रही हो हरियाली में ।
मानो मस्ती मचल रही हो- नीर भरी बदली काली में ।।
बापू बोले महामंच से, भाषण सुनने लगे लोक सब ।
अवतारों के बोल विश्व में- सुनने को मिलते हैं कब कब ?

घर घर में रेडियो खुल गये, बैठ गये सब कान लगा कर ।
'बोल प्रसारक' से बापू ने, 'ब्रिटिश योजना' कही सुझा कर ।।
बोले, 'तीन जून' को बदलीं- रेखायें भारत प्रदेश की ।
रूप वही स्वीकार करो तुम, क़िस्मत बदली काँगरेस की ।।





जनायक

'कार्य-समिति' के नेताओं ने- अन्तिम यह योजना मान ली।
'श्री राजेन्द्रप्रसाद' प्रभा ने- बदली की पहिचान जान ली॥
'रावी-तट' से 'अन्तरीप' तक- इसी तरह स्वाधीन बनेंगे।
अन्य तरह अब कट कट मर मर- हम सब तेरह तीन बनेंगे॥

साढ़े तीन अलग होते हैं, अन्त अलग उनको होने दो!
थोथे से लालच में दब कर- उनको बड़ा भाग खोने दो!!
तुम अपने भावी भारत की- सीमायें निर्धारित कर लो!
सब धन जाता देखो यदि तो- जितना भर सकते हो भरलो!!

आया यह प्रस्ताव सभा में- बटवारा स्वीकार करें हम।
"टण्डन जी" बोले विरोध में- बटवारा बिल्कुल काला तम॥
'वन्देमातरम्!' व्यर्थ तुम्हारा, इतने दिन तक व्यर्थ लड़े तुम!
वर्षों तक चलते चलते भी- अभी वहीं के वहीं खड़े तुम!!

बटवारे पर मत लोगे यदि- तुम जनता में जा जन जन से।
मान नहीं सकता कोई भी- भारत का बटवारा मन से॥
सब के उत्तर में बापू ने- कहा कि धरती गोल मोल है।
चले जहाँ से आज वहीं पर- मानवता का बड़ा बोल है॥

क्या इतिहास भूल बैठे हो. सब कुछ खोकर दबे हुए थे।
पराधीनता की तह पर तह, जिनके अन्दर दबे हुए थे॥
भारत पूज्य कभी था लेकिन- अब तो सदियों से गुलाम था।
और कहूँ क्या! स्वयम् समझलो- कहाँ आज नर, कहाँ 'राम' था॥

क्या 'अशोक' के बाद देश का- इतना भाग स्वतन्त्र रहा है?
सिर्फ़ अहिंसा का युग है जो- लहरों के प्रतिकूल बहा है॥
बापू जो कहते थे वह तो- परिभाषा में युग बाँधेंगे।
अरे! आज कल परसों ही क्या! गाँधी को युग युग मानेंगे॥

बापू के प्रभाव से सचने- माना वह प्रस्ताव भाव से।
स्वतन्त्रता की प्रथम किरण ने- चूमे उनके चरण चाव से॥
बापू ही मिट्टी में से भी- सोने को निकाल लेते थे।
बापू ही थे जो आँखों से- काँटों को निकाल लेते थे॥







बापू ही दोषों में से भी– मूल्य मोतियों के निकालते।
बापू ही थे जो गिरतों को– अपने जीवन से सँभालते॥
बापू ही थे जो पतझड़ में– पीले पीले फूल खिलाते।
एक नदी के दो कूलों को– बापू ही तो गले मिलाते॥

बापू के जीवन का प्रतिपल– एक नया निर्माण दे गया।
बीच धार में डूब रहे थे, बापू आ कर पार ले गया॥
जनता के शुभ से सज्जित हो, चला केसरी 'काश्मीर' को।
प्रकृति चाँदनी बाट देखती, याद कर रही थी समीर को॥

गाँधी जी चल पड़े, मार्ग में– उनकी गाड़ी पर बम मारा।
गाँधी जी को आँच न आई, घायल स्वयम् हुआ हत्यारा॥
'काश्मीर' पहुँचे गाँधी जी, चन्दाओं ने चरण पखारे।
स्वागत में कल कल करते थे– सरिताओं के कलित किनारे॥

भारत के उत्तर पश्चिम में– 'काश्मीर' का मुकुट भाल पर।
मानो खेती मुस्काती है– मिट्टी से सोना निकाल कर॥
मानो अम्बर से उतरी हैं– मेघों की परियाँ बल खातीं।
मानो बिजली की मुस्कानें– कोमल केसर पर मुस्कातीं॥

मानो श्वेत कमल के ऊपर– थिरक रही चाँदनी उषा सी।
मानो युग युग बाद विरह में– प्राण-दीप बन गया प्रवासी॥
हरे हरे तरुओं की माला– पहिने खड़ी प्रकृति पटरानी।
केसर की साड़ी में सजकर– नाच रही यह कौन दिवानी॥

लदे हुए फल फूलों से तरु– बने भारवाही संसृति के।
कोमल किसलय चाँद सितारे– आभूषण बन गये प्रकृति के॥
नील कमल सी निर्मल आँखें– खींच रहीं बरबस दुलार को।
अंजन भरी धनुष सी आँखें– बजा रहीं जग के सितार को॥

शैल श्रेणियाँ नाच रहीं थीं, मानो पहिना हार प्रकृति ने।
जल-विहार करतीं नौकायें, मानो नयन भरे संसृति ने॥
रिमझिम रिमझिम झरने झरते, झुरमुट में झड़ की झनकारें।
कहीं कहीं बिजलियाँ दमकतीं, मानो खिँची हुई तलवारें॥







जननायक

शैल श्रेणियों से बादल दल- बापू पर मोती बरसाते।
लहरों पर चलने वाले घर- सुख से बापू को सहलाते॥
जहाँ खड़े होते थे गाँधी- लाखों पगडण्डी बन जातीं।
चन्दन की झोंपड़ियों में से- जल तरंग पर कलियाँ गातीं॥



फूलों की खिड़कियाँ खुली थीं, चांद अनेकों झाँक रहे थे।
जननायक के जीवन धन को- चाँद अनेकों आँक रहे थे॥
जन जन के मन के राजा से- भेंट करी जन के राजा ने।
'काश्मीर' के प्रिय पराग से- भेंट करी तन के राजा ने॥

वहाँ तीन दिन में बापू ने- 'काश्मीर' की रचना रच दी।
एक नयी तस्वीर बनाई, शूली गड़ी तूलिका तज दी॥
यह वह गति थी जब कि समय का- पल पल परिवर्त्तन लाता था।
गाँधी का हर पग दुनिया में- मिट्टी से सोना पाता था॥

'काश्मीर' से विदा हुए जब- काश्मीर की केसर बोली।
मैं भारत की मुरली, मेरी- राक्षस पूछ रहे हैं रोली॥
मैं स्वतन्त्र भारत की बिन्दी- बन कर माथे पर चमकूँगी।
मैं भारत के राजमुकुट में- अमिट दामिनी सी दमकूँगी॥

मैं भारत की सुषमा, मुझको- भारत माँ से दूर न करना।
मैं सीता सी शक्ति प्रभो! तुम- 'राक्षस रावण' से मत डरना॥
भाषा और भाव से गाँधी- जीवन यात्रा में गाते थे।
जहाँ कहीं भी जाते बापू- काव्य वहीं पर बन जाते थे॥

'काश्मीर' से चला पथिक वह, 'हरिद्वार' के तट पर आया।
'हरिद्वार' हर की पैड़ी पर- 'हर हर महादेव' की माया॥
निर्मल जल पर तैर रही थी- चन्दा की चाँदी चमकीली।
मानो लदी हुई सोने से- नील धार थी पीली पीली॥

दिव्य देवियाँ नहा रहीं थीं, दमक पड़ रही थी पानी पर।
आग समझ जल के पानी को- भाग चली मछलियाँ फुदक कर॥
खेल रहीं युवतियाँ नीर में, नयनों की मछलियाँ बन गईं।
तन पर कौंध पड़ी किरणों की, आँखों में बिजलियाँ छन गईं॥





जीवन आँक रहे जननायक,
तोल रहे जल की तरुणाई।
तैर चली जल की लहरों पर–
स्वर्णिम सूरज की अरुणाई॥

राम खड़े हरि-द्वार पड़े हम,
पागल से पहिचान न पाये।
पैर छुवे तट-पत्थर ने पर,
मूक रहे हम आँख झुकाये॥

तट पर भक्त घिस रहे चन्दन, आँखें घूर रहीं हैं जल में।
माला घूम रही हाथों में, चुटकी चलती अन्तस्तल में॥
एक दिवस रह 'हरिद्वार' में, जननायक फिर 'दिल्ली' आये।
अमर लोक के उस माली ने– फूल खिलाये, पेड़ लगाये॥

छुरे उन्हीं पर चला रहे थे– 'पाकिस्तान' बनाने वाले।
करवट बदले ही जाते थे– माँ का हृदय जलाने वाले॥
लूटमार वह मारधाड़ की– अभी नहीं तलवार रुकी थी।
गले काट कर हँसने वाली– अभी न ख़ूनी धार रुकी थी॥

सारा 'पाकिस्तान' ख़ून में– नहा रहा था, नाच रहा था।
तोल नहीं सकता शब्दों से, हा! वह जितना ख़ून बहा था॥
'क़बायली फ़ौजी पठान' वे– भोली जनता पर चढ़ आते।
निर्दोषों पर ख़ूनी फ़ौजी– ज़ुल्मों की बन्दूक चलाते॥

सोती थी सरकार वहाँ की? नहीं! साथ थी उन गुण्डों के!
ज़ुल्म देखकर खुश होते थे– वे उन गुण्डों के झुण्डों के!!
ले जाते लड़कियाँ उठाकर, घर पर क़ब्जा कर लेते थे।
टाँग किसी की, हाथ किसी के, काट काट धक्के देते थे॥

डर कर इधर उधर से छिप छिप– जो कि बिचारे घर से भागे–
बचकर जा न सके गुण्डों से, खड़े हो गये गुण्डे आगे॥
पथ रोका, कपड़े तक छीने, नंगा करके उन्हें निकाला।
कैसे बुझ पायेगी बोलो! उन सब के मानस की ज्वाला?









जनायक



हमने देखी हैं वे रेलें– जिनमें शरणार्थी आते थे।
शोणित से लथपथ रेलों में– घायल ही घायल पाते थे॥
हाथ किसी के, कान किसी के, पैर किसी के कटे हुए थे।
रेलों के दर्वाज़ों पर धड़, फटे हुए सर टँके हुए थे॥

रेलों के पेशाबघरों में– बहिनों की ठठरियाँ पड़ी थीं।
डिब्बे डिब्बे में बहिनों की– जली हुई हड्डियाँ खड़ी थीं॥
लोहू में लथपथ लोथों की– मैंने देखीं वे तस्वीरें॥
जो कि गुदा से सर में निकलीं– मैंने देखीं वे शमसीरें॥

वे क़ाफ़िले दर्गों में अब भी– जिनमें पुरुषार्थी आते थे।
मैंने देखा है लाशों को– कुत्ते नोच नोच खाते थे॥
मैंने देखा है पेड़ों से– बाँध बाँध कर आग लगाना।
मैंने देखा है लोहू में– उन पशुओं का रोज़ नहाना॥

फूक दिया वह गाँव आज, कल– लाखों काट दिये स्टेशन पर।
लूट लिया कल उन लाखों को, फाड़ दिये उन लाखों के सर॥
उस पशुता का एक एक पल– कैसे लिखूँ, धधकती ज्वाला!
खोज रहा हूँ मिले कहीं से– मुझको भी 'प्रताप का भाला'॥

वह मनुष्य का महापतन था, झगड़े बढ़ते ही जाते थे।
भारत में भी प्रति क्षण प्रति पल, ख़ून खौलते ही जाते थे॥
बढ़ता था गृहयुद्ध देश में, स्वतन्त्रता आने से पहिले।
विधवा करते थे स्वतन्त्रता, हा! सुहाग गाने से पहिले॥

रक्त-रंजित मेदिनी पर– नाचती नंगी दनुजता!
रक्त बहता, आग जलती, जल रही जिसमें मनुजता॥
यह प्रलय का नाच है या– नाच कलियुग का भयंकर।
या सृजन के दीप लेकर– नाचते विकराल शंकर॥

आज राक्षस युवतियों के– अंग में भाले चढ़ाता।
फूल सी सुकुमारियों को– सड़क में नंगी नचाता॥
चाँद से नादान शिशु को– क़त्ल करता दैत्य-दल वह।
ख़ून खौलाता हृदय में– आज तक वह ख़ून बह बह॥







आ रहे भूखे बिचारे, सामने पल्ला पसारा।
चार आँसू के सहारे, देखते हैं मुँह तुम्हारा॥
आज ये नंगे खड़े हैं, आज ये भूखे खड़े हैं।
घाव छाती में छिपाये, आज दर दर पर पड़े हैं॥
कह रहे आँसू बहा कर, हा! सुनो उनकी कहानी।
'राम!' बस बाकी बचा है, दृगों में दो बूँद पानी॥
ये भिखारी से खड़े हैं, सामने पल्ला पसारे।
भीख तुमसे माँगते हैं, सिर्फ दृग-जल के सहारे॥
भीख तुमसे माँगते ये. दान तुमसे माँगते यह।
शरण तुमसे माँगते ये, मूक अपना दर्द कह कह॥
सिर्फ तुम अपने बचे हो! और क्या जग में हमारा?
बाल बच्चे कट चुके हैं, अब तुम्हारा ही सहारा॥
राम! यह कन्या हमारी– ख़ून में लथपथ खड़ी है।
राम! वह 'सीता' तुम्हारी– बन्द 'लंका' में पड़ी है॥
मूक होकर देखते हो– ख़ून का यह खेल नंगा।
दीन दुखियों की चिता से– टेरता तुमको तिरंगा॥



ख़ून बरसता देख धरा पर, बापू का जीवन जलता था।
जलते देख फूल भारत के, धरती का सूरज ढलता था॥
हत्याओं के इन नाचों से– हंस रो रहा था धरती का।
गाँधी के जीवन का हर क्षण– ख़ून धो रहा था धरती का॥
जहाँ कहीं भी ज्वाला धधकी– वे गंगा बन गये वहीं पर।
अभी यहाँ हैं, अभी वहाँ वे, अभी पूछते अश्रु कहीं पर॥
अभी किसी मुस्लिम के घर को– जननायक ने स्वर्ग बनाया।
अभी किसी हिन्दू के घर का– बुझा हुआ फिर दीप जलाया॥
कभी किसी हरिजन के घर में– गाँधी जी गीता पढ़ते हैं।
कभी पहाड़ों पर गाँधी जी– क़दम क़दम आगे बढ़ते हैं॥
'नोआखाली' जाने को फिर– गाँधी जी 'कलकत्ते' आये।
उग्र प्रदर्शन मिले कहीं पर, कहीं फूल कुम्हलाये पाये॥





बारह वर्षों बाद कभी तो- कूड़ी के भी भाग्य जागते।
पता नहीं क्या! कूड़े ही से- दुनियावाले दान माँगते॥
यह परिवर्त्तन की दुनिया है, निशि के बाद भोर भी आता।
पहिले मिट्टी में मिलता है, तब ही बीज मुकुट बन पाता॥

जननायक की चरण-धूलि से- गिरती गिरती दुनिया सँभली।
परिवर्त्तन 'लन्दन' में आया, 'लोकसभा' बदली सी बदली॥
पास 'एटली' ने करवाया- 'स्वतन्त्रता बिल' लोकसभा में।
मानो जान लाश में आई, हास्य छा गया शोक-सभा में॥

कहा 'एटली' ने, भारत में- औपनिवेशिक राज्य रहेगा।
दुनिया में 'पन्द्रह अगस्त' से- भारतवर्ष स्वतन्त्र बहेगा॥
अब कुर्सी पर बैठायेगा- चुन कर वही 'गवर्नर जनरल'।
अपने ही विधान से भारत- जगती तल पर होगा उज्ज्वल॥

स्वतन्त्रता का रूप देखने- वाणी भारतवर्ष आ गई।
रंग बदलने लगा देश का, रंग बिरंगी छींट छा गई॥
यह "विधान परिषद्" है जिसमें- भारत की तस्वीर बन रही।
बनता है विधान भारत का, दुनिया की तक़दीर बन रही॥

हे विधान निर्माताओ! तुम- प्रजातन्त्र के अमर यन्त्र हो।
स्वतन्त्रता के पूज्य पुजारी, मानवता के महामन्त्र हो॥
किन्तु प्रार्थना मेरी यह है- कहीं 'राम' को भूल न जाना।
भारत के भावी विधान में- गाँधी जी का रूप बनाना॥

वह देखो "विधान परिषद्" में झगड़े का प्रस्ताव आ गया।
झगड़ा लेकर खड़े "नेहरू", झगड़ा चारों ओर छा गया॥
झगड़े का प्रस्ताव पेश कर- बोले 'पण्डित जी' झगड़े पर।
मैं झगड़े पर बोल रहा हूँ- स्वीकृति गाँधी जी से लेकर॥

हम जितने भी बढ़े अगाड़ी- वह सब बापू का प्रसाद है।
इस झगड़े के तार तार में- गाँधी जी की अमर याद है॥
पराधीनता में भी उसने- भारत का सम्मान बढ़ाया।
उसी महामानव ने हमको- अन्तिम मंज़िल पर पहुँचाया॥





जनायक

यह स्वतन्त्र भारत का झण्डा, जिसे आप ऊँचा लहरायें।
सत्य प्रेम आदर्श भक्ति का, हम झण्डे में रूप रचायें॥
यह जनता का प्यारा झण्डा, चिह्न नहीं साम्राज्यवाद का।
यह आदर्शों का प्रतीक है, फल है बापू के प्रसाद का॥

जीव मात्र की भाषा है यह, यह न किसी का हक़ छीनेगा।
यह प्रतीक है स्वतन्त्रता का, लहरों से सौरभ बीनेगा॥
यह 'अशोक-युग' की आत्मा है, अंकित सत्य 'अशोक-चक्र' से।
इस में है एकता वीरता, यह न डरेगा किसी वक्र से॥

जहाँ कहीं जायेगा झण्डा, साथ मित्रता ले जायेगा।
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् सूचक- स्वतन्त्रता के गुण गायेगा॥
यह 'अशोक' का विजय-चिह्न है, यह देगा सन्देश शान्ति का।
वीर भाव के रंग भरेगा, केसरिया यह रंग क्रान्ति का॥

श्वेत रंग जाज्वल्य ज्योति है, अन्धकार में अमर उजाला।
हरा रंग हरियाली का है, धागे हैं गौरव की माला॥
इस में तीनों लोक तिरंगे, इस में बही त्रिवेणी गंगा।
लहर लहर में मुक्ति मन्त्र है, संगम बन कर उड़ा तिरंगा॥

पाँचों तत्त्वों का प्रतीक यह, प्रहरी है आनन्द लोक का।
इस झण्डे से बोल रहा है- भाषण तेजस्वी 'अशोक' का॥
अपने दोनों हाथ उठा कर- फिर 'सरोजिनी देवी' बोलीं।
मानो आलिंगन को माँ ने- अपनी दोनों बाँहें खोलीं॥

बोली, इस झण्डे का स्वागत- उठ कर इसे प्रणाम करो सब!
सब ने उठ कर करी वन्दना, देव लोक में दीप जले तब॥
यह जो झण्डा आज उठा है- क़सम तुम्हें है झुका न देना।
इस झण्डे को ले कर जग में- वीरो! सदा भलाई लेना॥

आई 'तिथि चौदह अगस्त' की, वे युग परिवर्त्तक पल आये।
बारह बजे रात के प्रिय पल- भारत को स्वतन्त्रता लाये॥
परिवर्त्तन का क्षण आता है, दुनिया नयी बदल जाती है।
पल में दमक दामिनी जाती, पल में धूप निकल आती है॥







वह देखो ! "विधान परिषद्" में- भारत स्वतन्त्रता लेता है।
देखो ! आज समय को देखो, एक नयी दुनिया देता है॥
अधिवेशन प्रारम्भ हो गया, सब ने वन्देमातरम् गाया।
भक्ति 'सुचेता कृपलानी' ने- वन्देमातरम् मूर्त्त दिखाया॥

बजती थी सितार जैसी वह, वीणा जैसी बोल रही थी।
गाती मंगल गीत मनोहर, स्वर में रोली घोल रही थी॥
फिर 'राजेन्द्र प्रसाद' मंच पर- खड़े हुए, जय जय ध्वनि छाई।
बरसाया रसना से भाषण, मानो मीठी वर्षा आई॥

बोले, धन्यवाद ईश्वर को, बापू को शत-शत प्रणाम है।
'राम' रम रहा है कण कण में, सब का दाता वही राम है॥
सर्वशक्ति ही भाग्य विधाता, नारायण को धन्यवाद दो!
प्रेमभाव से स्वतन्त्रता का- समतल पर सब मिल प्रसाद लो॥

धन्यवाद बापू का जिसने- आज रात में दिन दिखलाया।
श्रद्धांजलि उस महापुरुष को, जिसने हमें स्वतन्त्र कराया॥
और शहीदों को प्रणाम उन- भारत पर बलिदान हुए जो।
स्वतन्त्रता के अमर पुजारी- देव लोक के ज्ञान हुए जो॥

जिन के रक्त बिन्दुओं से यह- झण्डा ऊँचा गड़ा हुआ है।
जिन के बलिदानों से भारत- सिर ऊँचा कर खड़ा हुआ है॥
बारम्बार प्रणाम उन्हें है, वीर शहीदों की जय जय जय!
एक साथ गूँजी लोकों में- जय जय में मिल कर सब की लय॥

जो शहीद होते हैं उन के- मन्दिर मस्जिद बन जाते हैं।
जो शहीद हो स्वर्ग सिधारे- यहाँ वहाँ वे फल पाते हैं॥
बापू अमर प्रकाश स्तम्भ हैं, शाश्वत मार्ग-प्रदर्शक हैं वे।
वे जीवन हैं, वे संस्कृति हैं, आशा हैं, आकर्षण हैं वे॥

वे आचार्य, अहिंसा वे हैं, जिससे हम आज़ाद आज हैं।
जो जो हैं, जो जो भी होंगे, बापू में सम्पूर्ण साज हैं॥
दुःख विभाजन पर है हमको, पर होनी हो कर रहती है।
अब तो हम यह कह सकते हैं- उल्टी गंगा भी बहती है॥







फिर लेकर प्रस्ताव शपथ का, खड़े हुए 'नेहरू' मंच पर।
मानो मध्य रात्रि में आया– सूरज काली रात चीर कर॥
बोले, जब कि सो रही दुनिया, भारत जागा और जगाता।
परिवर्त्तन का क्षण आता है, पल में नया ज़माना आता॥

आज राष्ट्र की दबी युगों से– आत्मा पल में जाग जी उठी।
जो युग युग से दबी पड़ी थी– भारत की वह माँग जी उठी॥
भारत, मानवता, जनता की– सेवा का व्रत लेते हैं हम।
सुन कल्याणी वाणी उन की, नाचीं दसों दिशायें छम छम॥

बोले, सब से बड़े व्यक्ति उस– बापू की है यह अभिलाषा।
एक एक आँसू पुछ जाये, रहे न कोई यहाँ पिपासा॥
जब तक आँसू नहीं पुछेंगे, शान्त न होगी पीड़ा जब तक–
हमें न तब तक शान्ति मिलेगी, शान्त नहीं बैठेंगे तब तक॥

शपथ सदस्यों ने ली, बोले– शपथ उठा कर मैं कहता हूँ–
वह मिट्टी चन्दन कर दूँगा, मैं जिस मिट्टी में रहता हूँ॥
भारत वह जनता की सेवा– तन मन धन से सदा करूँगा।
विश्व-शान्ति में साथी हूँ मैं, हर प्राणी में अमृत भरूँगा॥

सतत सत्य पर दृढ़ रह कर मैं, फैलाऊँगा सदा भलाई।
भूतल स्वर्ग बनेगा जल्दी, गले मिलेंगे भाई भाई॥
बारह बज कर अर्ध मिनट पर– घण्टे वह घड़ियाल बज गये।
शंख बजे, जय जय ध्वनि गूँजी, दीपों से बाज़ार सज गये॥

शंख बजे घड़ियाल बजे अलि!
रात गई दिनमान खिला है।
भारतवर्ष स्वतन्त्र धरा पर,
आज हमें अभिमान मिला है॥

रंग उमंग उड़ेल रहीं मधु,
दौड़ रहीं लहरें जनता में।
रास लिये मधुमास लिये अलि!
आज बहीं लहरें जनता में॥











जननायक

दीप जले रजनी न रही अलि !
तारक ये दिन में निकले हैं।
नाच रहीं लहरें लहरों पर,
मानस मोर लिये फिसले हैं॥

रंगबनी जनता रस में रँग,
चाँद धरा पर खेल रहा है।
रंग लिये ऋतुराज खड़ा अलि !
शान्त सुगन्ध उड़ेल रहा है॥



शर्मीली स्वतन्त्रता आई, माता ने आरती उतारी।
शुभ्र चाँदनी की साड़ी थी, तीन रँगों की जड़ी किनारी॥
मानो सुन्दरता रजनी में- कर चौसठ शृङ्गार आ रही।
मानो मनमोहन की मुरली- रुनझुन करती आज गा रही॥

अम्बर की थाली में देखो, यह कितना दहेज लाई है।
धरती की गोदी में देखो, आज नयी दुलहन आई है॥
फूलों की पाँखुड़ियों पर यह- यौवन की बरसात हो रही।
आज चाँदनी के चौके में- प्रकृति प्रिया से बात हो रही॥

आज हवा उड़ रही निराली, आज घटा छा रही उजाली।
रजनी मोती लुटा रही है, आज रात है हँसने वाली॥
स्वतन्त्रता की करी घोषणा, फिर 'राजेन्द्र प्रसाद' धीर ने।
भारत की 'विधान परिषद्' में- आँसू पूछे आज पीर ने॥

'माउँटबेटन' को 'परिषद्' ने- घोषित किया "गवर्नर जनरल"।
गाँधी जी की जय जय में था- स्वतन्त्रता का उत्सव उज्ज्वल॥
फिर 'राजेन्द्र प्रसाद' शान्त शुभ- और 'जवाहर लाल नेहरू'-
गये 'गवर्नर जनरल' के घर, ले दीपों का थाल 'नेहरू'॥

स्वतन्त्रता की अमर आरती- ले कर पहुँच गये वे उज्ज्वल।
स्वतन्त्रता की पूज्य आरती- ले कर उठे 'गवर्नर जनरल'॥
आज आरती राज भवन में, आज दिवाली, आज दिवाली!
आज उजाली! आज उजाली! आज उजाली! आज उजाली!!





आज आरती स्वतन्त्रता की, जगमग दीपक जलते।
नीली मणियों की थाली में– झिलमिल दीपक चलते॥

दीपमालिका चन्द्रोदय का– रूप आँकने आई।
घूँघट में से तारों वाली– तरी झाँकने आई॥
आज नवेली स्वतन्त्रता की– मुँह दिखलाई है क्या?
चन्दा तारों से दीपों ने– होड़ लगाई है क्या?

जगमग जगमग झिलमिल झिलमिल नभ के दीप निकलते।
आज आरती स्वतन्त्रता की, जगमग दीपक जलते॥

स्नेह शहीदों का दीपों में– जलता, जले पतंगे।
गली गली में, नगर नगर में– लहरा रहे तिरंगे॥
आज उजाली के आँगन में– बही त्रिवेणी धारा।
दीप जला पहरा देता है– झण्डा प्यारा प्यारा॥

बदल बसन्ती चोला लाखों– इन दीपों पर बलते।
आज आरती स्वतन्त्रता की, जगमग दीपक जलते॥

दीपक ले कर थका बटोही– मंज़िल पर चलता है।
दीपशिखा पर जलने वाला– दीप जला, जलता है॥
वही दिवाली जिसमें काली– रात उजाली हो अलि!
भारत माता के मन्दिर में– रोज़ दिवाली हो अलि!

स्वतन्त्रता के प्रहरी बन कर– मणिमय दीपक चलते।
आज आरती स्वतन्त्रता की, जगमग दीपक जलते॥



छम छम छम छम रुनझुन रुनझुन– आई स्वतन्त्रता शर्मीली।
सोने में पीली पीली थी, चाँदी सी सफ़ेद चमकीली॥
'दिल्ली' के दर्बार चौक में– भारत बैठा सिंहासन पर।
सभी राजपद हुए सुशोभित, जनता आई उमड़ उमड़ कर॥





जनायक



धन्य ! राजदर्बार जहाँ पर- लाखों लोग प्रसन्न घूमते।
गूंज रहे जयकारे जग में, लोग तिरंगे लिये झूमते॥
यही राजदर्बार जहाँ से- अब शाही जलूस निकलेगा।
'कौंसिल हाउस' से भारत का- अब न कभी निशान फिसलेगा॥

आहा ! वाह ! जलूस चल पड़ा, 'कौंसिल हाउस' तक जायेगा।
उतर 'यूनियन जैक' वहाँ से- आज तिरंगा फहरायेगा॥
'माउंटबेटन', उनकी पत्नी, और 'पामिला' राजकुमारी।
आगे आगे चली जा रही- वह विलायती राजदुलारी॥

'देश-रत्न' 'नेहरू' आदि सब- भारत-भाग्य-विधाता चलते।
क़दम क़दम पर झण्डे गड़ते, क़दम क़दम पर दीपक जलते॥
बाजे बजते, शंख बज रहे, फूल बरसते, मंगल गाये।
फूलों की मालायें पहिने, नाचे मोर मेघ घिर आये॥

किन्तु महामानव गाँधी जी- 'कलकत्ते' में व्रत करते हैं।
अपने रचनात्मक जीवन में- सच्ची स्वतन्त्रता भरते हैं॥
ईश्वर की उपासना में रत- बापू चर्खा कात रहे हैं।
उस असीम के परम प्रेम में- गाँधी जी के नयन बहे हैं॥

पूज्य महात्मा गाँधी की जय ! जयकारों से गूंज रहा जग।
जग जलूस में देख रहा है- जननायक की जगमग जगमग॥
स्वतन्त्रता के इस जलूस में- मानो "राम" बनों से आये।
वर्षों से भटकी आँखों ने- स्वतन्त्रता के दर्शन पाये॥

चली सवारी स्वतन्त्रता की, जनता के जय जयकारों में।
'कौंसिल हाउस' पर जलूस से- बिजली दमक उठी तारों में॥
राज-प्रसाद प्रभात प्रभा में- स्वागत ! स्वागत ! गीत गा रहा।
परिक्रमा कर राज-भवन में- ज्योतिर्मान जलूस जा रहा॥

आगे बढ़े "गवर्नर जनरल"- तरुण तिरंगा फहराने को।
खींच 'यूनियन जैक', तिरंगा- आज चले ये लहराने को॥
उतर गया 'यूनियन जैक' वह, झण्डा फहरा दिया तिरंगा।
आज तपस्या से बापू की- जग में बही त्रिवेणी गंगा॥





फिर 'विधान परिषद्' में आये, जहाँ नागरिक, नेतागण थे।
स्वतन्त्रता के सुन्दर पल वे- कोटि कोटि पुण्यों के क्षण थे॥
पूज्य महात्मा गाँधी की जय! जिसके जीवन का प्रभात यह।
पूछ रहा पीड़ा के आँसू, 'कलकत्ते' में महापुरुष वह॥

भारत की 'विधान परिषद्' में- आज राजदूतों की जगमग।
पूजा कर लो! फूल चढ़ा लो! ढूँढ ढूँढ कर बापू के डग॥
शुभ सन्देश विदेशों के पढ़, जय बोली 'राजेन्द्र' दीप ने।
मोती बरसाये आँखों ने, मंगल गाये महाद्वीप ने॥

फिर 'माउँटबेटन' ने उठ कर- पढ़ा "किंग" का शुभ सन्देशा।
सुख से ऋद्धि सिद्धि फल पाये- प्यारा भारतवर्ष हमेशा॥
सुख से रहे आपकी जनता, मानवता की फले भलाई।
मेरी शुभ कामना साथ है, भारत की हो खूब बड़ाई॥

सब स्वतन्त्रता प्रेमी सज्जन- हर्ष मनायेंगे साथी बन।
मुझ को हार्दिक हर्ष आज है, आज आप सब का अभिनन्दन॥
यद्यपि आज आप के आगे- गहन समस्यायें उलझी हैं।
पर आदर्श त्याग मति गति से- गहन समस्यायें सुलझी हैं॥

त्याग और बलिदान आपका- देख मुझे विश्वास बहुत है।
आप विज्ञ हैं और आप में- साहस बुद्धि विकास बहुत है॥
गाँधी जैसा गुरु जिसमें हो- कैसे विजयी देश न हो वह?
अमर अजय अभिमान श्लाघ्य वह, कैसे देश दिनेश न हो वह??

सर्व शक्ति जननायक जन का- वरद हाथ हो सब के ऊपर।
फूलें फलें आप दुनिया में, दया करे वह सब का ईश्वर॥
फिर 'माउँटबेटन' ने अपने- भाषण की गंगा बरसाई।
उस दीपक को अभिवादन है- जिसने जल जल राह दिखाई॥

आज आपने चुना "गवर्नर- जनरल" मुझ को वैध्य रीति से।
मुझे आपने मोह लिया है, अपनी मनहर रीति प्रीति से॥
अपने ही में से समझें अब- आप मुझे अपना ही भाई।
जिसको सच्ची मिली मित्रता, उसने सर्व सम्पदा पाई॥







जनायक

मैंने बापू के चरणों में- प्रेमामृत का पान किया है।
मैंने यह पद आज आप का, सेवा को स्वीकार किया है॥
जो उलझनें आप के आगे, सुलझाऊँगा साथ बैठ कर।
आज ऐतिहासिक दिन पर हम, फूल चढ़ायें गाँधी जी पर॥



जिसने सत्य अहिंसा शुभ से- भारत की स्वतन्त्रता ला दी।
जिसने इस जलती दुनिया में- प्रेम भरी दुनिया लहरादी॥
जिसकी आत्मा सभी जगह है, हम सब श्लाघ्य सन्त-वाणी से।
फूले फले देश की संस्कृति, परम्परागत कल्याणी से॥

भारत माँ के पूज्य पुजारी- भारत के नेता प्रभात हैं।
ये सब अमर अमृत के झरने, ये गंगा-जल के प्रपात हैं॥
चली सुगन्धित वायु विश्व में, फर फर उड़ने लगा तिरंगा।
तोपें छूटीं, हुई रोशनी, जग में बही प्रेम की गंगा॥

राष्ट्र-मुकुट मृत्युंजय मानव, दीप 'जवाहर लाल' चल रहे।
जगमग जगमग आज दिवाली, स्वतन्त्रता के दीप जल रहे॥
फिर "इण्डिया गेट" पर आकर-- फहरा दिया तिरंगा झण्डा।
और 'युद्ध स्मारक" पर पल में- लहरा दिया तिरंगा झण्डा॥

'भारत द्वार' आज हर्षाया, उत्सव में हो रहे प्रदर्शन।
बाजे बजते, तोप छूटतीं, टूटे आज युगों के बन्धन॥
उमड़ उमड़ जनता घिर आई, तिल धरने को जगह न मिलती।
फ़ौजों के हो रहे प्रदर्शन, डाल डाल पर कलिका खिलती॥

वायुयान उड़ रहे गगन में, फूल देवता चढ़ा रहे हैं।
स्वतन्त्रता की बेला आई, प्रेम-नदी में कूल बहे हैं॥
सुनने वालो! सुनो ध्यान से, जड़ भी तो कुछ बोल रहे हैं।
कटु जीवन में अमृत प्रेम का, चुपके चुपके घोल रहे हैं॥

स्वतन्त्र मातृभूमि है, छा रही प्रसन्नता।
प्रभात का प्रकाश ले, आ रही प्रसन्नता॥
प्रसन्न देवियाँ चलीं- थालियाँ सजा सजा।
प्रसन्न बाल कूदते- तालियाँ बजा बजा॥





जनायक

प्रसन्न लोग प्रेम से- आज गीत गा रहे।
प्रसन्न देश के लिये- आज फूल ला रहे॥
जलूस में चले सभी- आज झूमते हुए।
धरा गगन रसाल में- आज घूमते हुए॥

प्रसन्न नाद आज है, गूँजती गली गली।
उमंग आज रंग में. चाँद चूमती चली॥
असंख्य आज गा रहे- जय स्वतन्त्र देश की।
असंख्य ताज गा रहे- जय स्वतन्त्र देश की॥

आज रसाल बबूलों पर है, रसना में रस घोल रहे हैं॥
नेताओं की शाश्वत भाषा- आज रेडियो बोल रहे हैं।
फिर सब आये 'लाल क़िले' पर, जिस की आँखें बरस रहीं थीं।
स्वतन्त्रता के लिये युगों से- जिस की आँखें तरस रहीं थीं॥

जिसकी आँखों के आगे ही- बड़े बड़े इतिहास बन गये।
जिसकी छलनी सी छाती में- जाने कितने खून छन गये॥
उसी क़िले पर चढ़े 'नेहरू', तले 'यूनियन जैक' उतारा।
राष्ट्र-मुकुट ने 'लाल क़िले' पर- फहरा दिया तिरंगा प्यारा॥

आज देश में दीप जल रहे, किन्तु कहाँ आँखों का तारा?
आज देश में सब कुछ, लेकिन- नहीं दीखता "बोस" हमारा॥
अरे! कौन ले गया चुरा कर- उस चालीस कोटि के धन को?
किस निर्मोही ने फूका है- मेरे उस चन्दन के बन को??

आज यहाँ सारे भारत को- उसका अभिनन्दन करना था।
उस सेनानी के मस्तक पर- सब को आज मुकुट धरना था॥
आज दिवस वह जिस दिन के हित- देश छोड़ परदेश गया वह।
आज दिवस वह जिस दिन सब को- याद आ रहा है वह रह रह॥

'लाल क़िले' पर आज तिरंगा- झण्डा हमने गाड़ दिया है।
अपने सेनानी 'सुभाष' की- उम्मीदों को प्यार किया है॥
प्यार किया है "भगतसिंह" को. 'शेखर' का सम्मान किया है।
आज शहीदों की समाधि पर- घी का दीपक बाल दिया है॥









जनायक

टूट कर गिरीं बेड़ियाँ आज, आज माँ के मस्तक पर ताज–
ताज पर 'सिंह-चक्र' का छत्र !
मनाओ दीपमालिका सब ! शहीदों की पूजा करलो !!

खिलादो संसृति पर श्री फूल, भूल जाओ सब अपनी भूल।
लगाओ सारे जग को कूल।
हंस की तरह न्याय कर दो, प्रेम से सब कौली भरलो !

हिमालय की चोटी पर चढ़ो !
शेर से वीरो ! आगे बढ़ो !!
गाड़ दो अपना झण्डा अचल।
सूर्य सा रहे राज्य यह अटल ॥

रचो अब अपना नया समाज ! बनो सारे जग के सरताज !
रहो तुम यत्र तत्र सर्वत्र।
कहो सब भारत माँ की जय ! विश्व में जय जय जय भर दो !
टूट कर गिरीं बेड़ियाँ आज, आज माँ के मस्तक पर ताज।
ताज पर 'सिंह चक्र' का छत्र।
मनाओ दीपमालिका सब ! शहीदों की पूजा करलो !!

मेदिनी शस्य श्यामला रहे।
सुधा-धारा सी गंगा बहे ॥
चितायें जलें दुखों की यहाँ।
बाँसुरी बजे सुखों की यहाँ ॥

आज फिर भारत हुआ अशोक, ताजपोशी करता आलोक।
तिरंगा चूमे तीनों लोक।
विश्व की उजड़ी सूखी कूपि, सत्य शिव सुन्दर से भर दो !
टूट कर गिरीं बेड़ियाँ आज, आज माँ के मस्तक पर ताज।
ताज पर 'सिंह-चक्र' का छत्र।
मनाओ दीपमालिका सब ! शहीदों की पूजा कर लो !!





सत्यम् शिवम् सुन्दरम् उज्ज्वल, ध्वज लहराता रहे तिरंगा।
सुरभि उड़े, संसार मुग्ध हो, बहती रहे अमृत की गंगा॥

सेवा के शाश्वत पराग पर- स्वर्ण रश्मियाँ रास रचायें।
अमर अखण्डित प्रेम-ज्योति से- हृदय-हृदय में दीप जलायें॥
संसृति को सन्देश सुमन दे, तारों तक उत्तुङ्ग उड़े यह।
पूर्ण प्रकाश विकास निमज्जित- गीत उड़ें लहरों से बह बह॥

हरियाली उजियाली गति ले- लहरे मुक्ति-पर्व की गंगा।
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् उज्ज्वल- ध्वज लहराता रहे तिरंगा॥

शान्ति शिखा पर दीपक लेकर- भारत माँ आरती उतारे।
चरणों में पूजा करते हों- बापू की आँखों के तारे॥
मानवता की विजय तूलिका- आदर्शों के चित्र रचाये।
झंझा के झोकों में झण्डा- प्राणों की पतवार बनाये॥

अमर अजय आदर्श बनो तुम, जन जन से यह कहे तिरंगा।
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् उज्ज्वल- ध्वज लहराता रहे तिरंगा॥

मेघों की माला में लहरे, फूलों की केसर पर थिरके।
गति पर झुक झुक नाच रही हो, बदली घुमड़ घुमड़ घिर घिर के॥
स्वतन्त्रता का स्वर्ण सवेरा, छाया निधि, रहस्य निधि खोले।
ऊँचा उड़ता रहे तिरंगा, दुनिया ऊँचे स्वर से बोले॥

गंगा यमुना सरस्वती सी- बहती रहे त्रिवेणी गंगा।
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् उज्ज्वल- ध्वज लहराता रहे तिरंगा॥

भारत माँ के आँसू पूछे, आज तिरंगा झण्डा फहरा।
ये झण्डे की लहरें हैं या- आज हवा में सागर लहरा॥
यह इतिहास शहीदों का है, या वीरों की अमर निशानी।
लहर लहर पर लिखी हुई है- गाँधी जी की अमर कहानी॥







स्वतन्त्रता जब चली क़िले में, बिना जलाये दीप जल गये।
स्वतन्त्रता ने घूँघट खोला, ऋषि मुनियों के पुण्य फल गये॥
स्वतन्त्रता के दर्शन पाकर, बिना सजाये लोक सज गये।
स्वतन्त्रता की रुनझुन सुनकर, बिना बजाये साज बज गये॥



स्वराज्य रागिनी छिड़ी अगस्त-अस्त रात को।
प्रभात रश्मि दीप से रिझा रहा प्रभात को॥
किसान झूम झूम गा! प्रणाम है प्रणाम है।
किसान घूम घूम गा! प्रणाम है प्रणाम है॥

लुटा रही प्रसन्नता विहाग सी स्वतन्त्रता।
झुला रही उषा प्रिया सुहाग सी स्वतन्त्रता॥
समीर नाचता चला विकास दीपिका जली।
खिले गुलाब फूल ले हिलोर हासिनी चली॥

दिनेश दे रहा प्रकाश आरती उतार लो!
सरस्वती! सितार से स्वतन्त्रता दुलार लो॥
कि पेड़ हो गये हरे कि चाँदना खिला यहाँ।
कि रात ही नहीं रही कि एकला मिला यहाँ॥

स्वतन्त्र पायलें बजीं कि मोर नाचने लगे।
कि चाँद आगया चकोर रूप जाँचने लगे॥
प्रमुक्त हो गई धरा कि पाद-पद्म चूम लो!
खिला सरोज मुक्त भृङ्ग चाँद चूम झूम लो॥

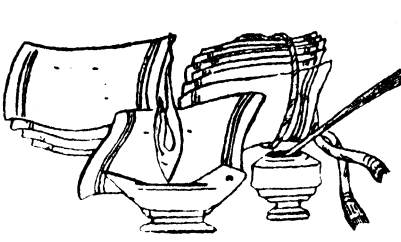












त्रिंश सर्ग



पतंग दीप-स्नेह से जले कि चाँदनी खिली।
ध्वजा विकास की उड़ी, विभा प्रकाश की मिली॥
कि बीज धूलि में मिले, सुगन्ध फूटती चली।
शहीद की जली चिता, अनन्त दीपिका जली॥

चारु चाँदनी की चादर पर- तैर रहे हैं चन्दा तारे।
हरी घास पर उषा प्रिया से- खेल रहे हैं आँसू खारे॥
प्रकृति प्रभा पर शरद पूर्णिमा- पूजा के प्रिय दीप जलाती।
फूल पत्तियों के मेले में- कोयल गाती राग प्रभाती॥

सरसों के पीले फूलों पर- बिखरे हैं आँखों के मोती।
खेतों पर किसान जाते हैं, कृषि हीरों के हार पिरोती॥
शीतल मन्द समीर कली में- सिहर गुदगुदी भर देता है।
खिले फूल की साध साधना- चंचल अलि पर धर देता है॥

मुस्काती स्वर्णिम किरणों पर- मचल रहे हैं गाल गुलाबी।
रंग लिये ऋतुराज खड़ा है, होली! रंग उछाल गुलाबी॥
ऋतुरानी देवर बसन्त से, दूर खड़ी कर रही ठिठोली।
फैला है गुलाल गालों पर, खेल रही है दुनिया होली॥

फूलों के महलों में बैठी, प्रकृति प्रभा को चूम रही है।
अपने कवि का आलिंगन कर, कवि की कविता झूम रही है॥
घूँघट में पुतलियाँ प्यार की- शर्माती सी घूम रही हैं।
मन की सरिताओं में लहरें- परियों जैसी झूम रही हैं॥







बौछारों की जालीवाली, बल खाती रेशमी हवा है।
यह सौरभ की चहल पहल है, या सुन्दर सैंधवी हवा है?
यह स्वतन्त्रता की आभा है, या जग में जल रही शमा है?
यह मुस्काती हरियाली है, या नयनों का प्यार जमा है?

'काश्मीर' की केशर है यह, या 'पंजाब' देश की रानी।
मन को मूर्च्छित कर देती है, मृगनयनी की चढ़ी जवानी॥
उसकी बड़ी बड़ी आँखों में- लिखी नयी से नयी कहानी।
कविताओं से होड़ लगा मत, ओ 'पंजाब' देश की रानी!

चार दिनों की मधुर चाँदनी, लहरों पर मृग-मूर्त्ति सिहरती।
बिजली सी जब चलती हो तुम, कवि के मन की साध निखरती॥
बापू के जीवन-सागर में- मेरी हुई कल्पना पूरी।
मैं रोके से नहीं रुकूँगा, मेरी पूजा नहीं अधूरी॥

स्वतन्त्रता की बजी बाँसुरी, स्वर्ग लोक उतरा भूतल पर।
हरियाली का हृदय रिझाया, कृषि पर कृषकों ने गा गा कर॥
स्वतन्त्रता की चहल पहल में- जनता फूली नहीं समाई।
स्वतन्त्रता के दर्शन करके- चन्दा की दुलहन शर्माई॥

पर वह मुक्त मयंक विश्व में- सच्ची मुक्ति सृजन करता था।
वह आलोक ज़िन्दगी का पथ- नयी उजाली से भरता था॥
लघु में दीर्घ, दीर्घ में लघु है, रचना वह रचयिता एक है।
मेरे दुख सुख के जीवन में- ईश्वर ही बस एक टेक है॥

प्रान्त प्रान्त में देख रहे थे, चित्र बदलती हुई हवा के।
व्यजन झल रहे थे बापू पर- पंख निकलती हुई हवा के॥
कुँवे कुँवे का पानी पीते- चले भ्रमण करते जननायक।
सीमा से विस्तार बन गये, आँसू के आधार विधायक॥

रचना रचते हुए राष्ट्र की, राह बने, रचनात्मक निकले।
गाँव गाँव में, शहर शहर में- कविता बने कलात्मक निकले॥
पूज्य महामानव पीड़ा के- पूछ रहा था आँसू खारे।
खून धो रहा था धरती का- सन्त एक लंगोटी धारे॥







पागल बने पिशाच घूमते, घोल घोल कर माँस खा रहे।
बिलो बिलो कर वसा पी रहे, मरघट में हैवान गा रहे॥
रक्त रँगी पिलपिली खोपड़ी, भरे हुए लोथड़े गिलगिले।
बिना दाँत के बूढ़े खाते, बूढ़ों के लोथड़े पिलपिले॥

हाथ काट छोटे बच्चों के, चम्मच बना खा रहे चावल।
छुरे और काँटे घुसेड़ कर, आँतें खींच खा रहे पागल॥
जीभ निकाले डायन जैसी- फूट ख़ून पी रही देश का।
स्वतन्त्रता पर ख़ून छिड़कती, माँस खा रही काँगरेस का॥



यह जला दीप! वह बुझा दीप!

सिन्दूर माँग में भरा और- पुछ गया मृत्यु के आँचल से।
छुट गया आलता पैरों का, मुँदती आँखों की पायल से॥
अपना रँग देने से पहिले- हाथों की महँदी छूट गई।
कंगन खुलने से पहिले ही- दुखिया की क़िस्मत फूट गई॥

यह जला दीप! वह बुझा दीप!!

दीपक में स्नेह भरा, लेकिन- वह फूट गया कर से गिर कर।
काले तम में रह गई खड़ी, आलोक ढूँढती पथ पथ पर॥
मिट्टी में मिले जले फूटे- दीपों को जोड़ रहा बापू।
उल्टी दुनिया को फिर सीधी- गंगा में छोड़ रहा बापू॥

यह जला दीप! वह बुझा दीप!!

जितना ज़हर फैलता था, वह- गाँधी जी पल में पी जाते।
भूधर से भूचाल भयंकर- गाँधी जी को हिला न पाते॥
बापू ने उपवास कर दिया, काँप उठा 'कलकत्ता' थर थर।
मानवता की नींव रोक ली, नर नारायण ने अनशन कर॥

शासन रोक न पाया दंगे, रोक दिये बापू ने पल में।
काले पाप धुला करते हैं, निर्मल उज्ज्वल गंगा-जल में॥
मूर्त्त अहिंसा के चरणों में- सब ने ला हथियार धर दिये।
जो ख़ूनी थे उनमें गुरु ने- मनुष्यता के अश्रु भर दिये॥







जनायक



इधर बुझाते, उधर दहकते- सुलग रहे थे भीषण शोले।
फूले फले हरे खेतों पर- बरस रहे थे नाशक ओले॥
'मेवों' के लग गया ख़ून मुँह, गाँव गाँव में आग लगादी।
'लीगी' गुण्डों ने 'दिल्ली' की- धरती में बारूद बिछादी॥

तहख़ानों में शस्त्र छिपाये, बड़े बड़े बम छिपा धरे थे।
बाहर से वे बने नमाज़ी, पर अन्दर अंगार भरे थे॥
'दिल्ली' पर 'लीगी' झण्डों के - ये थे भीषण स्वप्न भयंकर।
बड़े बड़े बम छिपे हुए थे, 'फतहपुरी मस्जिद' के अन्दर॥

पर षड्यन्त्र खुल गये उनके, देख लिये बादल 'पटेल' ने।
ख़ून खौलने लगा रगों में, यही नतीजा दिया मेल ने।
रक्त वर्ण हो गये नयन दो, मानो लाल लाल अंगारे।
अंगारों से नाच रहे थे- भौरों से आँखों के तारे॥

टूट पड़े गुण्डों पर सहसा- राजपूत तलवार खींच कर।
सिक्ख गोरखा जाट फ़ौज ने- किया आक्रमण षड्यन्त्रों पर॥
उधर सफ़ेदपोश डाकू थे, इधर स्वतन्त्र देश की सेना।
ओक लगाये 'दिल्ली' कहती- मुझे ख़ून पीने को देना!

खप्पर लिये चण्डिका फिरती, खप्पर आज ख़ून से भरदो!
जीभ निकाले 'काली' कहती- बकरे काट काट कर धर दो!!
भूत प्रेत भूखे बैठे थे, सूना मरघट चीख़ रहा था।
बटवारे के बाद ख़ून ही- ख़ून बरसता दीख रहा था॥

छिपे हुए हथियार उठाकर- गुण्डों ने गोलियाँ चलाईं।
ये हैं वफ़ादारियाँ इनकी, खिली फूल पत्तियाँ जलाईं॥
इधर देश के वीर सिपाही, उधर छिपी गुण्डों की टोली।
पिचकारियाँ बनीं बन्दूकें, खेलो ख़ूब ख़ून से होली॥

भारत की सच्ची सेना से- गुण्डे जूझ न पाये दो दिन।
क़ैदी बना ले गई सेना- एक एक गुण्डे को गिन गिन॥
गुण्डों के घर खोद खोद कर- सेना ने हथियार निकाले।
बुझी हुई हिन्दू जनता ने- अब अपने हथियार सँभाले॥







जनायक

दबा हुआ प्रतिशोध हृदय का– ज्वाला बन कर धधक रहा था।
आज मुसलमानों पर पिछला– पाप भयंकर भभक रहा था॥
काट काट सर गेंद बना कर– हिन्दू बच्चे खेल रहे थे।
पागल कुत्ते के काटे से– वे भी उल्टी ओर बहे थे॥

हाय! सभी का डॉक्टर "जोशी"– गोली का बन गया निशाना।
पागल मुसलमान! तू ने क्यों– सीखा है बस दीप बुझाना?
पागल हिन्दू! क्या तू भी अब– पागल कुत्ता बन जायेगा?
कव्वा यदि गन्दा खाता है, तू भी क्या गन्दा खायेगा?

पर वे बदले के अंगारे– बुझे न नेताओं के जल से।
गउओं जैसे घायल हिन्दू– रुके नहीं सेना के बल से॥
पागल बन कर निकल पड़े वे– मुसलमान का नाम मिटाने।
अन्धे बन कर आज चले वे– 'दिल्ली' को शमशान बनाने॥

सारे नेता हारे, हिन्दू– स्वतन्त्रता को लगे जलाने।
वश के रहे न नेताओं के– जब ये झगड़े शान्त कराने—
तब यह तार दिया बापू को, बापू! 'दिल्ली' जल्दी आओ!
'दिल्ली' जलने ही वाली है, जल्दी आकर इसे बुझाओ!!

'कलकत्ते' से 'दिल्ली' आया, गाँधी एक लँगोटीवाला।
मुण्डमालिनी घूम रही थी, लुढ़काती मुण्डों की माला॥
जले हुए घर पड़े हुए थे, लाशें लेटीं थीं सड़कों पर।
ख़ून दिखाती थी "दिल्ली" का, यमुना बापू को पुकार कर॥

पर जैसे ही बापू आये, हर हर कर सब खड़े हो गये।
शीतल बादल बरस बरस कर– धरती का सब ख़ून धो गये॥
मानो उस वीभत्स काण्ड में– आये सत्य शान्त रस गाँधी।
पल को पलक उठे बापू के, बहती हुई रुक गई आँधी॥

डगमग डगमग पग आये वे, शान्त हो गये ख़ूनी दंगे।
मनुष्यता के महाचौक में– फर फर उड़ने लगे तिरंगे॥
चमत्कार से डगमग पग वे, 'भंगी बस्ती' ने आ चूमे।
मिला विरह को मिलन मनोहर, कमल समझ कर भौंरे झूमे॥









जननायक

वहाँ निराश्रित की आशा वे, आँसू पूछ रहे थे तारे।
'भंगी बस्ती' से गाँधी जी- आकर "बिड़ला भवन" पधारे॥
जीवन के दुर्गम पथ पर भी- गाँधी थके न चलते चलते।
धन्य धन्य उनका जीवन है, जो फिसलन पर नहीं फिसलते॥



प्रति पल बापू की आँखों में- रहती थी तस्वीर 'राम' की।
'तुलसी' या बापू से पूछो- महिमा कितनी 'राम' नाम की॥
उस माली से सब ऋतुओं में- सब लोकों का बाग हरा है।
बापू का नैसर्गिक जीवन- वैध और सन्देश भरा है॥

उठ कर शौच गये गाँधी जी, लिखा पढ़ी का काम किया फिर।
शहद मिला पानी में पी कर, दिनचर्या का ज्ञान दिया फिर॥
दाँतन कुल्ला कर गाँधी जी, चले प्रकृति का रूप देखने।
जननायक जा रहे घूमते, मनुष्यता के भूप देखने॥

पाँच बजे प्रातः सड़कों पर- भंगी झुक दे रहा बुहारी।
खुरच रही गोबर सड़कों पर- उस भंगी की वह सुकुमारी॥
फटे चीथड़े में रोटी ले- गाता हुआ किसान जा रहा।
और उधर वह कुली रेल से- बोझ किसी का लिये आ रहा॥

ऊँचे महल खड़े हैं, नीचे- सड़क किनारे श्रमिक सो रहे।
उधर नाच है लाल परी का, रोटी को मज़दूर रो रहे॥
किसी शूद्र की रानी है यह, जगत इसे कह रहा चमारी।
सड़क कूट कर पड़ी हुई है, सड़क किनारे कौन बिचारी?

कौन चीथड़ों में लिपटी यह- बता रही दुनिया का परिचय।
दुनियावाले दिखा रहे हैं- तरह तरह के अद्भुत अभिनय॥
कंकड़ पत्थर पर सोती है, हा! यह सड़क कूटने वाली।
इसने ही वे महल बनाये, जिन महलों में रोज़ दिवाली॥

कराता पेट मज़दूरी, कूटती सुकुमारी यह सड़क।
चल रहे ठुकरा ठुकरा सब, अरी! हट बच जा भिड़क भिड़क॥
पास बैठा गोदी का शिशु, चबाता सड़कों के पत्थर।
चीथड़ा चादर में तन ढक, कूटती सन्ध्या तक कंकर॥







कभी ढोती गारा सर पर, कभी ढोती ईंटें सर पर।
कभी जब रोने लगता शिशु, उढ़ाती आँखों की चादर॥
लगा छाती से दूध पिला, हाथ में दे देती कंकर।
खेलने लगता जब वह शिशु, स्वयम् ढोती ईंटें पत्थर॥

डस रहा इसका रूप इसे, छेड़ती गुण्डों की टोली।
गालियाँ ताँगेवालों की, सुना करती है यह भोली॥
और कहता है कोई यह– अरी! क्यों करती मज़दूरी?
वासना-पशु कब समझा है– दुखी नारी की मजबूरी!

धूप जाड़े में पिस पिस कर– बनाती मर मर सुपथ सड़क।
तपस्या भंग किया करती– जहाँ फ़ैशन की तड़क भड़क॥
एक रेशम की साड़ी का– डाल उल्टा पल्ला चलती।
एक की दीपमालिका है, एक की सुन्दरता जलती॥

एक आँखों से ढलती है, एक प्रति पल मानव छलती।
एक पत्थर पर सोती है, एक मद में अकड़ी चलती॥
दुरंगी दुनिया में प्रति पल, बिरंगे रंग बदलते हैं।
करोड़ों प्रति दिन खिलते हैं, करोड़ों प्रति दिन जलते हैं॥

धूप में जलती सुन्दरता।
धूलि में ढलती सुन्दरता॥
किसी के घर में छम छम है।
किसी के अन्तर में ग़म है॥

ईश्वर! तेरी यही विषमता, क्या जग ऊँच नीच को कहते?
बड़े न छोटों को ठुकराते, जो समतल पर ही सब रहते॥
सूखे पत्तों के ढेरों पर– लग जायेगी जो चिनगारी–
तो न बुझाये आग बुझेगी, ज्वाला उगलेगी फुलवारी॥

फुलवारी में घूम रहे हैं, बापू मधुकर वह माली से।
खिले फूल बातें करते हैं, हँस हँस झूम झूम डाली से॥
झुक झुक कर प्रणाम करते हैं, मधुकर से मोहन मालो को।
रंग रंग की फूल पत्तियाँ– चूम रहीं हैं उजियाली को॥









ज
न
ना
य
क



पूजा करते हुए प्रकृति की, जननायक आगये घूम कर।
पिया मौसमी का मीठा रस, रस से जग का पात्र गया भर॥
मला बदन पर तेल उन्हों ने, मल कर तेल नहाये जीवन।
पूजा के आसन पर आकर- बैठे ध्यान लगा प्रिय पावन॥

सारे काम छोड़ कर पहिले- ईश्वर की उपासना कर मन!
नारायण को भूल गये जो, सदा दुखी रहते हैं वे जन॥
फिर जननायक ने अपने सब- सिद्धान्तों के पौधे सींचे।
जो गड्ढों में पड़े हुए थे, उन के हाथ पकड़ कर खींचे॥

बारह बजे बैठ बापू ने- सादा भोजन किया शान्ति से।
रूखी सूखी खा बापू ने- ठण्ढा पानी पिया शान्ति से॥
गाँधी ने गौ-ग्रास निकाले, भाग पक्षियों का भी छोड़ा।
जितना भी है, सब मिल खालो- बाँट बाँट कर थोड़ा थोड़ा॥

पर पागल मनुष्य कलियुग में- नंगा होकर नाच रहा है।
अब मनुष्य पागल कुत्ता बन- स्वतन्त्रता को काट रहा है॥
स्वतन्त्रता की इस वेला में- मनुष्यता की चिता जल रही।
आदर्शों का ख़ून हो रहा, सत्य प्रेम की नींव गल रही॥

चोरबज़ार घूसखोरी या- माया माया! हाय हाय! धन!
धरा धर्म से शून्य हो रही, जले जा रहे चन्दन के बन॥
चन्दा आग उगलता है अब, सूरज अन्धकार बरसाता।
स्वतन्त्रता के राज-भवन में- कौन ज़हर का धुँवा उड़ाता?

गाँधी के उपदेशों ही में- दुखी विश्व के लिये शान्ति है।
जिसकी रचना 'राम'- रूप है, उस रचना में अमर कान्ति है॥
कलियुग में डूबते विश्व को- गाँधी ही हैं एक सहारे।
जहाँ कहीं था भँवर, वहीं पर- गाँधी जी बन गये किनारे॥

काम क्रोध मद लोभ मोह ने- गाँधी जी पर जाल बिछाये।
लाखों माया-मृग बापू की- स्वतन्त्रता को हरने आये॥
चूक गये थे 'राम', 'कृष्ण' को- छल ने छीन लिया 'द्वापर' में।
किन्तु 'बुद्ध' 'ईसा' की आत्मा- बापू विजयी रहे समर में॥





मानव की दुर्दशा देख कर- बापू मुरझाये जाते थे।
फूलों पर कालिमा देख कर- गाँधी कुम्हलाये जाते थे॥
ऐसा विष फैला फूलों में, माली तक पर फण फैलाये।
स्वतन्त्रता के फूल खिले तो- ये तुषार के पत्थर आये॥

ऐसा ज़हर बढ़ा भारत में, गाँधी तक को बुरा बताया।
जग ने किस का हृदय न बींधा, जग ने किस को नहीं रुलाया?
गाँधी जी प्रार्थना सभा में- सब के प्रश्नों के हल करते।
सत्य नहीं शूली से डरता, पापी नहीं पाप से डरते॥

राम-नाम या भली बात में- कलियुग में मन शान्ति न लेता।
कलियुग में सच्चे मनुष्य को- कलि का भूत बुराई देता॥
कलियुग में सच्चे प्राणी को- रहने का अधिकार नहीं है।
बुरे व्यक्तियों की दुनिया में- सच्चों का सत्कार नहीं है॥

कलियुग में तो वही रहे जो- जेब काट कर दाँत निकाले।
कलियुग में ज़िन्दगी उसी की- जो पड़ौसियों को भी खा ले॥
कलियुग में जो कहे भले की- उल्टा चोर वही कहलाता।
कलियुग में जो गले काटता- वही प्रेम से पूजा जाता॥

आज जौहरी की दुकान पर- बिकते हैं कोयले करारे।
दुनिया में रौनक़ न रही अब, बरस रहे हैं आँसू खारे॥
सड़कें तक रो रहीं हाय! यह- कैसा काला काल भयंकर?
अपना ही विश्वास नहीं जब, और यक़ीन करें किस किस पर?

स्वप्न जागते हुए देखते, जग में किस को मानें अपना?
जीवन में यदि शान्ति चाहिये, दो क्षण राम राम भी जपना!
लो, वे शान्त समागम बापू- आ पहुँचे प्रार्थना-मंच पर।
मानो छोड़ शेष शैया को, धरा-गोद में बैठा ईश्वर॥

सुनो, भाइयो! बहिनो! देखो- बापू भजन 'राम धुन' गाते।
प्रवचन शुरू हुआ गाँधी का, सब सतयुग के दर्शन पाते॥
बीच भंगियों के रहने में- मुझ को बड़ी खुशी होती है।
कथनी करनी अगर एक हो- तो न कभी दुनिया रोती है॥







जनायक



क्या या क्यों करने का बिल्कुल- रक्षक को अधिकार नहीं है।
करने या मरने को शासक- यदि शुभ हित तैयार नहीं है-
वह कर्त्तव्य विमुख शासन है, जहाँ न अल्प जातियों को सुख।
उस शासन में शान्ति न होगी, अल्प संख्यकों को जिसमें दुख॥

गया आज 'मक़बरे हुमायूँ', और "जामिया मिलिया" देखा।
मरे कटे बर्बाद वहाँ पर- दिखा रहे थे मौन परेखा॥
मौत सभी को आती है पर- समय तरीक़े का अन्तर है।
दुनिया क्या है पूछ रहे हो! दुनिया प्रश्न और उत्तर है॥

आज एक सिख भाई बोले- पोथी रही 'ग्रन्थ साहब' की।
सच्चा 'सिख' न दिखाई देता, श्रद्धा वही 'ग्रन्थ साहब' की॥
तब विनम्रता से मैं बोला- मैं सच्चा सिख हूँ हे भाई!
मेरा धर्म सनातन हिन्दू, कैसी मेरी और पराई?

सच्चा मुसलमान भी हूँ मैं, मैं मनुष्य हूँ प्रेम-पुजारी।
अरे! क्रोध से मत फूको तुम- स्वतन्त्रता की सुन्दर क्यारी॥
स्वतन्त्रता के सेब सुनहरी, महँगे दामों तुम्हें मिले हैं।
आग लगाओ मत फूलों में, बहुत दिनों के बाद खिले हैं॥

गुस्सा मुझ को भी आता है, पर मैं उसको पी जाता हूँ।
मैं पीड़ित का दुःख देख कर- उस से अधिक दुःख पाता हूँ॥
'पाकिस्तानी' भूल गये पथ, ले जाते बीवियाँ उठा कर।
तो क्या हम भी जाहिल बन कर- ज़ुल्म करें बीवी बच्चों पर॥

वे घर फूकें, तुम भी फूको, यह तो अच्छा काम नहीं है।
शरणार्थी आ रहे बिचारे, सुबह नहीं है, शाम नहीं है॥
उन्हें बसाओ और धरा पर- सब धर्मों की बेल बढ़ाओ!
जो रोते हैं उन के आँसू- निज आँचल से आज सुखाओ!

स्वप्निल जग में हर मनुष्य को- जलता गलता देख रहा हूँ।
मैं मनुष्य को गिरगिट जैसा- रंग बदलता देख रहा हूँ।
आत्म-शान्ति के लिये पतन में- मानव आज भटकता फिरता
जिसे बड़े दुःखों से पाला, वह पौधा फूलों से चिरता॥





युग युग बाद सितार बजा जो, अब तुम उसके तार न तोड़ो !
बहुत सरल है फूल तोड़ना, बात तभी जब टूटे जोड़ो !!
यह जो नदी ख़ून की बहती, जिस में बहे जा रहे हम सब ।
क्या स्वतन्त्रता के फूलों को- तुम ही तोड़ डुबा दोगे अब ?

मनुष्यता की परिभाषा को- भूल रहे हैं पागलपन में ।
युग युग के निर्माण करो कुछ- अपने क्षणभंगुर जीवन में ।।
शलभ दीप पर जल मर जाते, पर दीपक को नहीं बुझाते ।
फूलों की शोभा डाली पर, गुलदस्तों में मुरझा जाते ।।

चाहे यौवन में मतवाली- उन्हें गले का हार बनाये ।
अपने ईश्वर की प्रतिमा पर- चाहे कोई उन्हें चढ़ाये ।।
पर डाली से हटते ही वे- पैरों से रौंदे जाते हैं ।
देखो वे शरणार्थी आते, दर दर की ठोकर खाते हैं ।।

रक्तपात में क्या रक्खा है ? धर्म न कहते कटो मरो तुम ।
तुम मनुष्य हो, भूल सुधारो, सत्य प्रेम से सृजन करो तुम ।।
मुझ बूढ़े की बात मान लो, मैं कहता हूँ बात भले की ।
पेड़ मधुर फल ही देता है, खा खा कर भी चोट डले की ।।

क्या हम भी वह करें कि जो कुछ- पागल 'पाकिस्तान' कर रहा ?
मैं तो उसे जहाज़ मानता, लहरों के प्रतिकूल जो बहा ।।
कहा किसी ने 'जिना' वहाँ पर- बाँट रहा हथियार सभी को ।
मैं तो कहता हूँ 'जिन्ना' ने- बाँटे वे अंगार सभी को ।।

क्या हथियार चलाने का ही- काम शेष रह गया आज है ।
वह हथियार राज्य को दे दे- मनुष्यता की जिसे लाज है ।।
सब हथियार चलायेंगे यदि- तो फिर अन्न कौन बोयेगा ?
सब कुछ तो खो चुका बावला, शेष रहा क्या जो खोयेगा ?

क्या 'पटेल' को दुःख नहीं है, क्या न 'जवाहर लाल' दुखी है ?
कौन शान्त है इन झगड़ों में, इस दुनिया में कौन सुखी है ?
आज तुम्हारे नेताओं की- आँखों में मुस्कान नहीं है ।
अपने भले बुरे की तुम को- अब बिल्कुल पहिचान नहीं है ।।







दोनों हाथ उठा कहता हूँ– मेरी नहीं मानता कोई।
नाश चढ़ा आता छाती पर, मनुष्यता की भाषा खोई॥
वह "दिल्ली" जिसकी चोटी पर– अभी तिरंगा लहराया है–
वह 'दिल्ली' जिस में स्वराज्य का– शीशा हमने लटकाया है–



आज उसी 'दिल्ली' में ज्वाला, आज उसी 'दिल्ली' में हलचल।
सत्य प्रेम के लिये लगाओ, मानव-जीवन के अमूल्य पल॥
'दिल्ली' में यदि शान्ति रखो तुम– तो 'पंजाब' चला जाऊँ मैं।
अपनी पलकों के आँचल से– आँसू वहाँ पूछ आऊँ मैं॥
बिगड़ी इंसानियत बनाने– 'पाकिस्तान' मुझे जाना है।
मेरे लिये मनुष्य एक सब, मैंने ईश्वर पहिचाना है॥
प्रति दिन ही प्रार्थना सभा में– बापू अमृत-प्रपात बहाते।
प्रति दिन ही प्रवचन से बापू– जग में नया प्रभात दिखाते॥
किन्तु अमृत के उस झरने में– कल कल का कलनाद नहीं था।
गीत वेदना के गाता था, गीत सुनहरी याद नहीं था॥
ओ बेरहम मनुष्य! बता क्यों– जनता के झोंपड़े उजाड़े?
ओ हैवान! बता क्यों तूने– हरे भरे ये खेत उखाड़े?
शरणार्थी के बीते दिन की– छावनियाँ कह रहीं कहानी।
'मौन वार' को लिखित पढ़ा था, बापू की आँखों का पानी॥
एक वाक्य में 'गीता' कहते, एक वाक्य में सब 'रामायण'।
दुनिया बहती थी बहाव में, पर न बहे मेरे नारायण॥
मुसलमान से कहते थे वे– पहिले मैं, पीछे तुम मरना।
सब धर्मों का मूल एक है– ईश्वर की उपासना करना॥
हिन्दू यदि तुम को काटे तो– तुम हँसते हँसते कट जाना।
जो हिंसा का हत्यारा है– उसे अहिंसा से शर्माना॥
बापू के विरोध में हिन्दू– धधक उठे बन कर अंगारे।
दाँत पीसने लगे कड़ड़ कड़– बापू पर गुस्से के मारे॥
'हिन्दुस्तान हिन्दुओं का है'– उठा हिन्दुओं का यह नारा।
लाल रंग ले बही देश में– हिन्दू-राष्ट्र ध्वजा की धारा॥





जनायक

अत्याचार दिखा मुस्लिम के- खड़ी हो गई तानाशाही।
किन्तु हिमालय सा हलचल में- अडिग खड़ा था अद्भुत राही॥
ख़ून उतर आया आँखों में, हिन्दू पागल बन कर भभका।
भारत माता की छाती पर- लाल लाल अंगारा धधका॥

पागल कुत्ते के काटे से- पागल बन कर भौंक रहे थे।
सब बहते देखे बहाव में, सब कुत्ते से हौंक रहे थे॥
क्रोध भयंकर पागल कुत्ता, जिसे देखता उसे काटता।
जब मनुष्य पागल हो जाता, तब अपना भी ख़ून चाटता॥

जब न सहन होती है पीड़ा, तब मनुष्य बन जाता पागल।
अपना माँस स्वयम् खाता है, रोता हँसता गाता पागल॥
नंगा होकर तभी नाचता- जब आँसू भी साथ छोड़ता।
ईश्वर! कितना निर्मम यह जग. भावुक का लोहू निचोड़ता॥

यहाँ प्यार के बदले हमने- पागल बन अंगारे पाये।
धरती कभी नहीं सूखेगी, इतने आँसू यहाँ बहाये॥
यह तो बदले की दुनिया है, प्यार नहीं मिलता है पगले!
खुली डाल के जग-झूले पर- सुमन नहीं खिलता है पगले!

पीड़ा के आँसू न रुके हा! धधकी पागलपन की ज्वाला।
सभी तरफ फुंकार रहा था- धुँवा भयंकर काला काला॥
तड़प-दामिनी दमक रही थी, मेघ बरसते थे बापू के।
आँखों की बरसात देखकर- प्राण तरसते थे बापू के॥

पर पागल मन प्यार किसी का- बोलो कब पहिचान सका है?
बापू के मानस की पीड़ा- बतलाओ कब जान सका है??
गाँधी जी को लगे कोसने, गुस्से में पागल मतवाले।
बूढ़ा मर जाये तो अच्छा, चीख़ रहे थे दिल के काले॥

गाँधी जी के मानस में थी- सारे निर्मम जग की पीड़ा।
गाँधी जी थे हर मनुष्य के, वे थे हर मनुष्य की व्रीड़ा॥
संसृति के शाश्वत गीतों में- एक वही बजता सितार था।
हिन्दू पर भी ख़ून चढ़ गया, पागलपन उस पर सवार था॥







ज
न
ना
य
क



रेलों में खेला लोहू से, चीरा फाड़ा बाहर डाला।
उसी आग का तो उड़ता है- धुँवा आग से काला काला॥
बढ़ते बढ़ते बापू तक भी- पहुँच गई वह काली ज्वाला।
बापू के शीतल जीवन को- अंगारों ने बहुत उबाला॥

पर गाँधी जी के जीवन में- आया नहीं उबाल कभी भी।
दुनियावाले डाल न पाये- जननायक पर जाल कभी भी॥
पर उनकी प्रार्थना सभा में- हल्ला गुल्ला लगे मचाने।
जिन्हें न होश लँगोटी तक का- वे बापू को चले सिखाने॥

एक बीच में बोल उठा यह- क्यों 'क़ुरान' की आयत पढ़ते?
कैसे भाई? किसके भाई? क्यों न मुसलमानों से लड़ते?
राजनीति का क्षेत्र छोड़कर- जंगल में जाओ गाँधी जी!
मैं तो अब पत्थर फेकूँगा, तुम ईंटें खाओ गाँधी जी!

हिन्दुस्तान हिन्दुओं का है, मुसलमान की बात मत करो।
निशा उजाली से कहती है- दिन में काली रात मत करो!
जग को छोड़ किसी जंगल में- कुटी बनाओ तो अच्छा है।
बसो 'हिमालय' पर जा बापू! आश्रम जाओ तो अच्छा है॥

बापू बोले, 'राम' 'खुदा' तो- नाम और उपनाम सदृश हैं।
फुलहारी या मालिन कह दो, नाम भिन्न, पर काम सदृश हैं॥
तपोभूमि तो वहीं जहाँ पर- राम नाम ले करें भलाई।
पठीवन किन्तु पाकशाला में, क्या मनुष्य की है सुघड़ाई॥

कर्म योग से बड़ा योग तो- अब तक जग में हुआ न होगा।
जो न मानते बात बड़ों की- केवल दुःख उन्हों ने भोगा॥
इस बूढ़े की बात मान लो, मनुष्यता के आँसू बोले।
इस बूढ़े की बात मान लो, बालक बोले भोले भोले॥

लेकिन हत्यारे हाथों को- रोक न पाये आँसू खारे।
मूक अदृश्य प्रार्थना में थे- गाँधी जी के अश्रु बिचारे॥
बापू ने सबके विरोध को- सर आँखों पर सहन किया है।
'सीता' के आँसू ही ने तो- दुर्द्धर 'लंका-दहन' किया है॥





वीणा की झनकार रो रही, मेघ बरसते आँखों से।
स्वर लय अम्बर में उड़ते हैं, आग बाँध कर पाँखों से॥
आँसू से दीपक जलते हैं, जग-सागर में नाव चली।
ज्वालाओं के रंगमहल में- बार बार बरसी बदली॥

सावन भादो की रिमझिम से- घन में फूल नहीं खिलता।
पीड़ाओं के महासिन्धु का- पारावार नहीं मिलता॥
तारे चाँद न छू पाते हैं, रह जाते आँसू पी कर।
पलकों के तट पर प्राणी को- जीना पड़ता जीवन भर॥

पर प्रभात को भी यह दुनिया- काली रात बताती ही है।
जननायक पर भी यह दुनिया- कल्पित दोष लगाती ही है॥
जननायक तो हर प्राणी को- देते थे सुलझन का अवसर।
पत्थर सरिता रोक न पाये, डूबे हैं पानी में पत्थर॥

लहरों के लाखों झोकों में- अचल हिमालय खड़ा रहा वह।
सिन्धु-लहरियों में तिल भर भी- अडिग हिमालय नहीं बहा वह॥
वह 'चित्तौड़ दुर्ग' था जिसको- जीत न पाये अजय आज तक।
वह चट्टान खड़ी है जिसके- चरणों में झुक गये ताज तक॥

उसी सन्तरण ने भारत की- महा प्रलय में नाव सँभाली।
उसी सन्तरण ने स्वतन्त्रता- तूफ़ानों में तैर निकाली॥
मुँह फाड़े भूचाल भयंकर- आये स्वतन्त्रता आने पर।
डूब गये जल-प्लावन में सब, खड़े रहे नीरज पर ईश्वर॥

'काश्मीर' की कलियों पर भी- धधक उठी प्रलयंकर ज्वाला।
'काश्मीर' की केसर पर भी- धुँवा छा गया काला काला॥
'काश्मीर' के चाँदों पर भी- कड़क उठी प्रलयंकर बिजली।
सुन्दर 'काश्मीर' डसने को- 'पाकिस्तानी' डायन निकली॥

स्वतन्त्रता के उस गुलाब पर- ख़ूनी 'क़बायली' चढ़ आये।
'काश्मीर' में घुसे लुटेरे, रंग बिरंगे बादल छाये॥
कुसुम-कुंज से 'काश्मीर' पर- काली पीली लपटें भभकीं।
संसृति के उस राजमहल में- अंगारों सी आँखें धधकीं॥







जनायक



बटवारे के बाद भभकती- आँखें लपकीं 'काशमीर' पर।
ख़ून खौल कर उबल रहा था- स्वतन्त्रता के शान्त तीर पर॥
यहाँ लुटेरों की बस्ती है, लूट मार व्यापार यहाँ है।
हँसता देख न सकता कोई, डसने को तैयार यहाँ है॥

चन्दाओं के 'काशमीर' को- लूट मार से चाहा खाना।
'पाकिस्तानी' दुनालियों का- 'काशमीर' बन गया निशाना॥
चाह मचलती थी 'जिन्ना' की- झण्डा 'काशमीर' पर लहरे।
दोज़ख़ के कीड़े कहते थे- झण्डा स्वर्गलोक पर फहरे॥

जिसके घर में आग लगादी, उसे चाहते अपना करना।
यहाँ अमृत की बूँद नहीं है. बहता यहाँ ख़ून का झरना॥
'काशमीर' का राजा जागा, सावधान होकर यह बोला-
मत धधका केसर क्यारी पर- 'जिन्ना!' महानाश का शोला॥

पर न बात मानी ज़ालिम ने, 'काशमीर' की जनता जागी।
जनता की सरकार बना कर- शीघ्र मदद भारत से माँगी॥
गये 'शेख़ अब्दुल्ला' 'दिल्ली', 'काशमीर' की कही कहानी।
उठे "जवाहर लाल" भोर से, तड़प उठा गंगा का पानी॥

'काशमीर' के चाँद पकड़ने- शंख बजे, सेनायें चलदीं।
बहिनों ने राखियाँ बाँध दीं, माताओं ने महँदी मलदीं॥
चलीं चीरती चट्टानों को, शैल-शिखाओं पर चढ़ जातीं।
खाई पाट, चीर पर्वत को- 'काशमीर' का मार्ग बनातीं॥

कहीं लेट कर पुल बन जाते, फ़ौजें पार चली जातीं थीं।
फाँद पहाड़ों की ऊँचाई, सेनायें जय जय गातीं थीं॥
महा भयंकर बर्फ़ शिलायें, जिन पर बढ़ते चले सिपाही।
अम्बर आग और पानी में- बढ़े जा रहे थे वे राही॥

जीवन और जवानी सी वह- भारत की तलवार जा रही।
आज युगों के बाद हाथ में- भारत की तलवार गा रही॥
यह स्वतन्त्र भारत की सेना, 'काशमीर' सी ही जाती है।
आज जवानी उमड़ उमड़ कर- घुमड़ घुमड़ फर फर गाती है॥





फर फर यान उड़ रहे नभ में, बापू फूले नहीं समाते।
बोले, हर्ष मुझे होता है, उड़ते हुए यान जब जाते॥
बापू की वाणी सुन सुन कर- सेना में उत्साह उमड़ता।
मानो तपी तृषित खेतों पर- गीता का घन-ज्ञान घुमड़ता॥

बापू बोले, 'काश्मीर' को- पाकिस्तानी हड़प न सकते।
राज्य बढ़ा करते सेवा से, कभी पाप से पनप न सकते॥
सब प्रकार से उचित किया है, भारतीय सेना ने जा कर।
भारी काम किया भारत ने, 'काश्मीर' में क़दम बढ़ा कर॥

'काश्मीर' की रक्षा में यदि- सारी जनता भी मर जाये।
चाहे 'काश्मीर' में सारे- नेताओं की बलि चढ़ जाये॥
मेरी आँखों से आँसू की- एक बूँद भी नहीं ढलेगी।
अमर वीरता की वेदी पर- मनुष्यता की बेल फलेगी॥

'काश्मीर' से भारत-सेना- अन्तिम श्वासों तक न हटेगी।
'काश्मीर' के कुसुम-कुंज पर- भारत की चाँदनी पटेगी॥
हिन्दू मुस्लिम एक्य भाव का- उदाहरण उज्ज्वल अनुपम यह।
पाप धरा के धो देती है- निर्मल गंगा-धारा बह बह॥

कला प्रदर्शन 'काश्मीर' पर- चढ़े आक्रमणकारी पापी।
जिनके लिये मौत बन निकली- भारत माँ की फ़ौज प्रतापी॥
पर्व वीरता का आया यह, वीरो! चलो नहाने गंगा।
स्वर्ग रचायेगा भूतल पर, फर फर उड़ता हुआ तिरंगा।

मुक्ति मिल गई है, मुक्त विश्व को करो!
एक दिन मरोगे, फिर न मौत से डरो!
सिन्धु की तरह से- सिंह! गर्जते चलो!
युद्ध छिड़ गया है, आज आग से जलो!

दीप जल रहे हैं, मुक्ति-द्वार खुल गये!
फूल खिल गये, दिलों के दाग़ धुल गये!
शंख बज रहा है, 'काश्मीर' को चलो!
प्यास कह रही है- वीर! नीर को चलो!







जननायक

बिजलियों से टूट युद्ध-क्षेत्र में गिरो !
घेरते रहेंगे शूल, फूल से घिरो !
भौंकते रहेंगे श्वान, पर न तुम रुको !
हार कर झुके गगन भी, पर न तुम झुको !
क्रान्ति मच रही है, शान्ति विश्व में खिले ।
देश से अलग हुआ जो वह गले मिले ।
भीत तोड़ दो जो आज बीच में खड़ी ।
ज़िन्दगी निकाल लो जो कीच में पड़ी ॥



'बारामूला', 'उरी', 'पुंछ' की– शैल श्रेणियों पर बम बरसे ।
भारत माँ के वीर सिपाही– निकले कफ़न बाँध कर सर से ॥
रक्त रोहिणी का हुंकारा, धधक उठी पानी से ज्वाला ।
प्रलयंकर तूफ़ान तिमिर में, गाँधी गूँथ रहे थे माला ॥

जो गुलाब का फूल उसे भी– यह जग ज्वाला बतलाता है ।
पर वह देता है सुगन्ध ही, हरी डाल पर मुस्काता है ॥
चाहे कहो काग कोयल को, पर उस के गुण नहीं बदलते ।
समय उसे भी कहते हैं जब– चींटी के भी पंख निकलते ॥

जन जन में जननायक बापू, ईश्वर ही ईश्वर पाते थे ॥
हिंसा के आगे छाती कर, गीत वीरता के गाते थे ।
दीपमालिका पर गांधी जी– गये रेडियो पर भाषण को ।
ऊँचे आसन पर देखा था– हम ने उस दिन नारायण को ॥

बोल रेडियो से बापू ने, सारे जग को दिया उजाला ।
शरणार्थी के आँसू पूछे, जग को दिया अमृत का प्याला ॥
अन्धा वह जो दुखी न देखे, कोढ़ी वह जो दिल का काला ।
आज दिवाली, किन्तु कहाँ है– इस दुनिया में दीप्त उजाला ?

दीप खुशी में ही जलते हैं, इन दीपों में खून भरा है ।
गली गली में मातम होते, बोलो यह क्या आज करा है ?
हरी फ़सल में खेती सूखी, सावन में बरसात नहीं है ।
जो मर गये उन्हें लौटा कर– लाना बस की बात नहीं है ॥







पर जो ज़िन्दा हैं उन में तो- मनुष्यता से शान्त रहें हम।
मेलजोल से प्रेम बढ़ायें, कुत्सित पथ पर नहीं बहें हम॥
बापू ने देखा "दिल्ली" में- हलचल शान्त नहीं होती है।
बापू ने देखा धरती माँ- अत्याचारों से रोती है॥

बापू ने देखा हिन्दू भी- मुसलमान को लगे काटने।
अपने प्राणों से जननायक- गहरी खाई लगे पाटने॥
अनशन शुरू किया बापू ने, नारायण से ध्यान लगाया।
दिव्य देवता ने धरती पर- निज प्राणों का दीप जलाया॥

बोले, जब तक शान्ति न होगी, साफ़ न होंगे लोगों के दिल-
इसी तरह जलता जायेगा- जग में मेरा जीवन तिल तिल॥
मैं उपवास तभी छोड़ूँगा- जब आत्मा विश्वास करेगी।
आत्मा की आवाज़ मुझे है, जग में वही प्रकाश करेगी॥

आत्मा की पुकार से व्रत है, कोई भी नाराज़ न होना।
आँखें नहीं देख पाती हैं, मिट्टी में होता है सोना॥
जब भी मुझको अनुभव होगा- मैं उल्टे पथ पर जाता हूँ-
तभी क़दम वापिस ले लूँगा, मैं न सत्य में शर्माता हूँ॥

सत्य शान्ति के लिये हर समय- मरने में भी हर्ष मुझे है।
मैं तो पानी उसे कहूँगा- जिस से जलती आग बुझे है॥
दिन में नहीं दीखता जिसको, उसको मैं कैसे समझाऊँ?
बर्बादी जो देख रहा मैं, उस से अच्छा है मर जाऊँ॥

चमत्कार था उन चरणों में, दुनिया देखी उस प्रभात से।
अनशन शुरू किया बापू ने, काँपे तीनों लोक पात से॥
जननायक ने स्वयम् जगाया, पागलपन का भूत न भागा।
महा तपस्वी के अनशन से- सोया पत्ता पत्ता जागा॥

नेताओं के हृदय हिल गये, धन 'राजेन्द्र' शान्ति से बोले-
गाँधी जी पर बरसाते हो- तुम अपने पापों से शोले॥
पाप हम करें और हमारे- बापू भोगें पापों का फल।
मनुष्यता को दाग़ लगा कर- कभी नहीं हो सकते उज्ज्वल॥









जननायक



ज़हर उगलते हो तुम जितना, बापू वह सब पी जाते हैं।
आज मनुष्यों के पापों से- नयन हमारे शर्माते हैं॥
दिन प्रति दिन बापू अनशन से, खिले फूल से मुरझाते हैं।
पाप शान्त हो! पाप शान्त हो! पीड़ा के आँसू गाते हैं॥

कल्पना के पंख काँपे, सूखती गंगा हृदय की।
भावनाओं के किनारे- बाढ़ आती है प्रलय की॥
आज जग की ज़िन्दगी के- तार टूटे जा रहे हैं।
आज किस के आँसुओं से- भाव लाखों आ रहे हैं॥

सावधान पागल मनुष्य हो! डुबा न अपनी नाव पाप से।
खो न स्वयम् को बापू खो कर, बचा स्वयम् को घोर शाप से॥
अनशन छोड़ो हे जननायक! पेड़ पेड़ पर कोयल बोली।
अनशन छोड़ो! अनशन छोड़ो! बोली ग्राम ग्राम की रोली॥

देश विदेशों में बापू के- अनशन से थी गहरी हलचल।
काली हत्यारी दुनिया में- केवल एक वही था उज्ज्वल॥
उसने 'पाकिस्तान राज्य' को- रुपया पाँच करोड़ दिलाया।
मनुष्यता की परम्परा को- उसने कभी न दाग़ लगाया॥

कौन दीप बन कर जलता है, कौन मिला है परवानों में।
उसी महामानव के व्रत से- हलचल हुई मुसलमानों में॥
महा तपस्या के आँगन में- "मौलाना आज़ाद" पधारे।
बापू की अनशन कुटीर में- आ बैठे 'आज़ाद' किनारे॥

मुरझाया वह फूल देख कर, हलचल देख हृदय में भारी।
धरती माता की आँखों से- टपक पड़े दो आँसू खारी॥
'मौलाना' बोले बापू से, यह है पाप हमारों का फल।
तुम से ही तो हम पवित्र हैं, हे आबेहयात गंगाजल!

बापू बोले, मैं मनुष्य हूँ, मनुष्यता के लिये मरूँगा।
मुसलमान की रक्षा में मैं- प्राणों का बलिदान करूँगा॥
बापू! अपना अनशन छोड़ो! हम से पीड़ा सहन न होती।
कैसे ग्रास गले में उतरे, इंसानियत आज की रोती?





मैं तो अन्न तभी खाऊँगा, जब सब मुझे यक़ीन दिलायें।
शर्तें सात मान कर मेरी, मिल कर सभी गले लग जायें॥
मुसलमान सब रहें सुरक्षित, धर्मों पर कुछ आँच न आये।
आज़ादी से मुसलमान हर- मस्जिद में नमाज़ पढ़ पाये॥

छीन मुसलमानों की मस्जिद- जिनमें अब हिन्दू रहते हैं-
जो मस्जिदें बनाईं मन्दिर- जिनमें रोज़ ख़ून बहते हैं॥
वे मस्जिदें मुसलमानों को- मनुष्यता से वापिस कर दें।
हिंसा के ख़ूनी शस्त्रों को- मनुष्यता के आगे धर दें॥

जो जो मुसलमान रहते थे- झगड़ों से पहिले जिस घर में।
मुसलमान सब वापिस जायें- अपने सभी उसी उस घर में॥
वहाँ उन्हों के रहने में अब- बाक़ी रहे न कोई बाधा।
रेलों में यात्रा कर पायें, मैंने राम ख़ुदा आराधा॥

मुसलमान को भाई मानें, आर्थिक बहिष्कार को छोड़ें।
ईश्वर एक, एक हैं हम सब, भेद-भाव के बन्धन तोड़ें॥
जो 'दिल्ली' से चले गये हैं- मुसलमान वे वापिस आयें।
स्वतन्त्रता से मुसलमान को- भेद भूल कर गले लगायें॥

सभी जातियों के नेता यदि- मुझको यह विश्वास दिलायें-
तो उपवास छोड़ दूँगा मैं, सब सच्चे मनुष्य बन जायें॥
ये नैतिक शर्तें बापू से- "मौलाना" लिखवा कर लाये।
ये सातों शर्तें सुनते ही- आँख निकाले हिन्दू आये॥

बोले, आग धधकती उर में, हम बदला ले कर मानेंगे।
चाहे गाँधी जी मर जायें, हम तो अभी ख़ून छानेंगे॥
हिन्दू-राष्ट्र बने यह नारा, कटु विष फैलाये जाता था।
अपनों के विष के प्याले पी- बापू मुस्काये जाता था॥

कोठी पर 'राजेन्द्र' धीर की- सभी दलों के नेता आये।
गाँधी जी के व्रत से सब के- गीले नयन कमल शर्माये॥
गाँधी जी की सातों शर्तें- 'मौलाना' ने रक्खीं आगे।
बापू के प्रत्येक वाक्य से- पागल भूत प्रेत सब भागे॥









जननायक



बापू की शर्तों पर सब ने- हस्ताक्षर कर दिये हृदय से।
कितने ही 'नारद' शर्माये- जननायक की महाविजय से॥
शर्तों पर हस्ताक्षर करके, बापू की कुटिया पर आये।
क़समें खाईं, करी प्रतिज्ञा, बापू के आगे शर्माये॥

आज छठा दिन था अनशन का, त्याग तपस्या चमक रही थी।
गाँधी जी की अमर साधना- 'ध्रुव तारे' सी दमक रही थी॥
'मौलाना' ने नींबू का रस- उन्हें दिया ग्लूकोस मिला कर।
गाँधी जी ने अनशन छोड़ा, जय नारायण! जय जय ईश्वर!

गोविन्द! गोविन्द! गोपाल! गोपाल!
हे राम! हे राम! हे राम! हे राम!
हरि ओ३म्! हरि ओ३म्! हरि ओ३म्! हरि ओ३म्!
हे श्याम! हे श्याम! हे श्याम! हे श्याम!
सत् शान्ति! सत् शान्ति! सत् शान्ति! सत् शान्ति!
भज नाम! भज नाम! भज नाम! भज नाम!
हे राम! हे राम! हे राम! हे राम!
हे राम! हे राम! हे राम! हे राम!

जननायक राष्ट्रपिता प्रभु ने-
व्रत से, सत से धरती रख ली।
कवि ने उसके रस में रत हो-
रसना लय से करुणा चख ली॥
कर लो शत बार प्रणाम उसे-
जिसने सब पाप पछाड़ दिये।
परखो अभिवादन से उसको,
जिसने सब खोल किवाड़ दिये॥

यहाँ अमृत देने वाले को- ज़हर पिलाया ही जाता है।
जो प्रकाश देता है उसको- यहाँ जलाया ही जाता है॥
यहाँ दृगों से आँसू गिर कर- पत्थर पर फूटा करते हैं।
मुस्काते ही फूल यहाँ पर- डाली से टूटा करते हैं॥







कितना कठिन ज़िन्दगी का पथ, लेकिन चलना ही पड़ता है।
जीवित जलना ही पड़ता है॥

यहाँ आँसुओं की मंज़िल पर- ख़ाक छाननी ही पड़ती है।
हँसते रोते हुए आग से- जीवन की भाषा लड़ती है॥
यहाँ स्वार्थ है क़दम क़दम पर, यहाँ आग है क़दम क़दम पर।
तूफ़ानों से लड़ता ही चल, सागर की लहरों में घुस कर॥
जो सागर पी गया घूँट भर, वह छेड़े से रो पड़ता है।
ठोकर खा खा कर उठता है. ठोकर खा खा कर लड़ता है॥

बिजली सी तड़पन होती है. लेकिन हँसना ही पड़ता है।
कितना कठिन ज़िन्दगी का पथ, लेकिन चलना ही पड़ता है॥
आगे बढ़ना ही पड़ता है।

जननायक की शत्तें सुन कर- इधर उधर को दौड़े पागल।
गाँधी जी को लगे कोसने, जग में यही भलाई का फल॥
बिच्छू ने काटना न छोड़ा, जननायक ने ज़हर न छोड़ा।
बापू ने प्रार्थना सभा में- सब वेदों का सार निचोड़ा॥

प्रति दिन वे प्रार्थना सभा में- अमृत पिलाते थे प्राणों से।
प्रति दिन ही जननायक जग में- दीप जलाते थे प्राणों से॥
किन्तु हवा के लाखों झोंके- दीप बुझाने को आते थे।
दुनिया के उस एक फूल पर- लाखों पत्थर बरसाते थे॥

आज प्रार्थना में जब बापू- अमृत धरा पर बरसाते थे।
अन्धकार से जब प्रकाश में- वे दुनिया को ले जाते थे॥
तब उनकी प्रार्थना सभा में- फेंका एक बावले ने बम।
आँच न आई जननायक पर, लेकिन लज्जित से थे सब हम॥

और उस समय जननायक तो- खिले फूल से मुस्काते थे।
उस दिन सत् से जननायक को- ज्वाला में बैठा पाते थे॥
बोले, यदि तुम शान्त रहे तो- मैं तन धारण किये रहूँगा।
वर्ष सवा सौ तक जीऊँ मैं, मनुष्यता के लिये रहूँगा॥







जनायक

अन्त समय तक हर प्राणी की- सेवा मेरा परम धर्म है।
इच्छा जो सब की इच्छा है, जीवन क्या है! शुद्ध कर्म है॥
पर जीने की इच्छा तब है- जबकि मनुष्य मनुष्य रहेगा।
'राम' न यहाँ मुझे छोड़ेगा- इसी तरह यदि ख़ून बहेगा॥



मेरी यह प्रार्थना आप से- इस दुनिया को स्वर्ग बनाओ!
बहुत खो चुके, शेष रही जो, उससे अपनी बेल बढ़ाओ!!
बुरी बात करने सुनने से- अच्छी बातें खो जाती हैं।
जो निश्चय पर दृढ़ रहते हैं- उनको आँच नहीं आती है॥

निश्चय-आत्मक बुद्धि उसी की, स्थिर है जो जग की लहरों पर।
जल में ऐसे रहे श्वेत रँग, जैसे कमल कीच से ऊपर॥
सेवा सुख सब को समान दे, जैसे हरे वृक्ष की छाया।
तरु सा स्थिर निष्काम रहे मन, रसना ने रसाल फल पाया॥

विषय भोग में स्थिर रहता जो- उसकी बुद्धि नहीं होती स्थिर।
जहाँ व्यक्तिगत इच्छा रहती- वहाँ बसी अँधियारी घिर घिर॥
आत्मा में सन्तुष्ट पुरुष ही, निश्चय-आत्मक शुद्ध बुद्धि है।
जो दुःखों में डोल न जाये- वही पुरुष है, वही शुद्धि है॥

उलझातीं इन्द्रियाँ पुरुष को, पर स्थिर बुद्धि निवृत्त भोग से।
जिसने वश में करीं इन्द्रियाँ, मुक्ति उसी को मिली रोग से॥
काम क्रोध के वशीभूत जो, वह विष पिये बिना ही मरता।
इच्छा के विरुद्ध होने पर- भूत भयंकर पागल करता॥

शक्ति उसी के चरण चूमती, जिसे नहीं आसक्ति घेरती।
ब्रह्मानन्द प्राप्त उसको है, जिसको भगवत्-भक्ति घेरती॥
रिस से ज्ञान शक्ति मिट जाती, भ्रमित बुद्धि साधन से गिरता।
ईश्वर में आनन्द जिसे है, वही सुधा-सागर में थिरता॥

जो कि कामना त्याग बर्तता, परम शान्ति उसको मिलती है।
ब्रह्मानन्द प्राप्त है जिसको, ज्योति उसी जन से खिलती है॥
कर्म शून्य को सुख न जगत में, ज्ञान न कर्म बिना होता है।
जीवन अन्न, अन्न वर्षा से- दानी ही दाने बोता है॥







मानवता के मोती हो तुम, गुँथो कर्म कृषि की माला में।
सब कुछ जिसे प्राप्य है वह भी– घुला कर्म रस की माला में॥
क्रोध बड़ा वैरी मनुष्य का, ढक देता पापों से दर्पण।
काम क्रोध मद लोभ मोह की– लहरों पर थिर जल का तर्पण॥

ईश्वर तक पहुँचाने वाला– मुक्ति-मार्ग निष्काम कर्म है।
मानवता सच्चिदानन्दमय– मनुष्यता ही परम धर्म है॥
जिस के मन में संशय है वह– प्राप्त न कर पाता परमात्मा।
जैसे पागल कुत्ता ऐसे– भटका करता शंकित आत्मा॥

सच को कोई दोष नहीं है, सच में सारी विजय प्राप्त हैं।
सत्संगति में, सद्ग्रन्थों में– सारे सुख निर्बाध व्याप्त हैं।
जागो! और स्वयम् को बदलो! ईश्वर पर विश्वास न छोड़ो!
जिस बटिया पर गन्दी बातें, उस से सदा दूर मुँह मोड़ो!!

प्रेम पूज्य निर्मल गंगा है, और वासना गन्दा नाला।
बचो! भयंकर धधक रही है– भस्मसात् करने को ज्वाला॥
मुक्ति-मार्ग पर चलो निरन्तर, जीतो बुरे भलाई करके।
पश्चात्ताप नहीं प्रायश्चित, परिवर्त्तन में भाव अमर के॥

जीवन की आवश्यकतायें– इतनी कम करते जाओ तुम।
एक दिवस हर आवश्यकता– छोड़ किनारे पर आओ तुम॥
इस के बाद "उर्स" में बापू– मुस्लिम जनता में ईश्वर थे।
शिल्पकला दरगाह पूजने– बापू नारायण से नर थे॥

जन जन के भगवान भावमय, जन जन में पूजे जाते थे।
मुस्लिम जनता में जननायक– महा मसीहा कहलाते थे॥
मुसलमान अंग्रेज़ सभी के– गांधीजी हैं प्रेम पात्र प्रभु।
कलियुग में सारी जनता के– जननायक ही एक मात्र प्रभु॥

आत्म-शुद्धि में सारे सुख हैं, आग न बरसाओ नारी पर।
जो लड़कियाँ सतायीं जातीं, उठ मानव! उन की रक्षा कर॥
जितनी मुसलमान कन्यायें– यहाँ हिन्दुओं के घर रहतीं।
जो हिन्दू लड़कियाँ वहाँ पर– आँखों के पानी में बहतीं॥







जनायक

मुसलमान उन माँ बहिनों को– वापिस कर दें उन के घर पर।
जन्म जन्म में नर्क मिलेगा, अत्याचार नारियों पर कर॥
शर्म न आती पाकिस्तानी– ज़ुल्म नारियों पर ढाते हैं।
कोमल कोमल कलिकाओं का– आमिष नोच नोच खाते हैं॥



उन की जो लड़कियाँ यहाँ हैं, हमें चाहिये वापिस करदें।
राज्य चलाना है यदि हम को, मनुष्यता के मोती भरदें॥
'पाकिस्तानी' जनता मुझको– अगर बुलाये, मैं जाऊँगा।
जो मनुष्यता खोई वह मैं– उन में फिर से फैलाऊँगा॥
भाषावार प्रान्त बन जायें, पर 'दिल्ली' के हों अन्तर्गत।
एक संघ से अमर रहेगा– भारत माँ का शासन शाश्वत॥
काले काले मेघ टल गये, अब वह दिन है आने वाला।
हर ग्रामीण शीघ्र देखेगा– स्वतन्त्रता का शुभ्र उजाला॥
शहरों की दासता घनों सी– उन के सर से हट जायेगी।
स्वतन्त्रता की स्वर्ण उजाली– महल कुटीरों में गायेगी॥
सारे वर्ग एक होंगे जब, तब स्वतन्त्रता सच्ची होगी।
जो न बहावों में बहता है, वही वीर है सच्चा योगी॥
दुनिया में गुण दोष भरे हैं, हंस चुगा करते हैं मोती।
दुष्ट सज्जनों से भी जलते, मन्द नहीं सज्जनता होती॥
मनुष्यता की भाषा बोलो, मनुष्यता को आँच न आये।
स्वतन्त्रता के भव्य भाल पर– बूँद न शोणित की पड़ पाये॥
रोको ये तूफ़ान भयंकर, डूब न जाये नाव प्रलय में।
स्वतन्त्रता के लिये आग बन– उठें न पागल भाव हृदय में॥
यह जो हवा बह रही है वह– सदा नहीं है रुकने वाली।
जो पागल हैं बकने दो तुम, लगी नहीं रहती है गाली॥
आज चोर बाज़ार चल रहा, आज घूसखोरी की स्याही।
पता नहीं कब हंस उड़े यह, सँभल सँभल कर चल ओ राही!
जन जन में विश्वास नहीं है, जनता में पीड़ा के आँसू।
भारत की आँखों से गिरते– आज यहाँ व्रीड़ा के आँसू॥





इच्छा के प्रतिकूल बात से- धधका करता है क्रोधानल।
सब का राजा वह किसान है, जिसके स्वेद-बिन्दु गंगा जल॥
धरती के रोमांच मनोहर, जिस राजा का स्वागत करते।
जिस किसान राजा के धन से- भूखे पेट हमारे भरते॥

स्वालम्बन पर आश्रित है जो, वह न रहेगा भूखा नंगा।
उद्योगों की अमर शिखा पर- ऊँचा उड़ता रहे तिरंगा॥
भूखा वही, वही नंगा है, जिसे नहीं स्वालम्ब सुहाता।
वीर स्वावलम्बी राजा है, वह हँसता है और हँसाता॥

तुम को किसकी आवश्यकता, स्वावलम्ब का पल्ला पकड़ो!
तन कूटे से क्या होता है, अपना हृदय शान पर रगड़ो!!
मुसलमान जो पाप कर रहे- वे इस्लाम बिगाड़ रहे हैं।
कन्याओं को उठा उठा कर- अपनी जड़ें उखाड़ रहे हैं।

'काश्मीर' में 'मीरापुर' है, जिस पर चढ़े आक्रमणकारी।
'मीरापुर' से बहू बेटियाँ- ले जाते हैं अत्याचारी॥
उन की अस्मत लूट, उन्हों पर- अत्याचार शौक़ से करते।
कहाँ 'कुरान' 'ख़ुदा' को भूले, राक्षस नहीं पाप से डरते॥

यदि खाने को लूटपाट हो- तो भी बात समझ में आती।
किन्तु लड़कियों पर ज़ल्लादी- स्वतन्त्रता की बेल जलाती॥
यह न 'क़ुरानशरीफ़' सिखाता, बर्बादी पर दाँत निकालें।
कोई धर्म न यह कहता है, माँ बहिनों का ख़ून उछालें॥

मेरी मिन्नत है उन सब से- जो बहिनें ले गये उठा कर।
प्रायश्चित कर वापिस करदें, उन सब बहिनों को उन के घर॥
लुट लुट कर रोते आये हैं, भारत में "मीरापुर-वासी"।
कितना ख़ून तुम्हें पीना है, डायन! तू है कितनी प्यासी?

यह शैतानी नाच, इसे तुम- धर्म धर्म चिंघाड़ रहे हो।
अपना धर्म बिगाड़ रहे हो, अपनी बात बिगाड़ रहे हो॥
यह अधर्म है, धर्म नहीं यह, रोते देखो पीड़ित घायल।
माँस घायलों का खाते हैं, आज "बहावलपुर" में पागल॥







वहाँ घायलों की सेवा को- आज "सुशीला" बहिन जा रही।
साथ "लेसली क्रास" रहेंगे, पीड़ा उन से प्यार पा रही॥
ईश्वर का है हाथ उन्हों पर, मेरा आशीर्वाद साथ है।
हिन्दू हो या मुसलमान हो, सब दुखियों का वही नाथ है॥

भेद नहीं भगवान भेजते, भेद किये हैं इंसानों ने।
नारायण के नियम एक से, काँटे बाँटे हैवानों ने॥
दुखियों की सेवाओं में सब- अब तन मन धन से लग जाओ!
दुःख न दो दुनिया को भाई! सब दुखियों का दुःख बटाओ!

घाव तुम्हें आवाज़ दे रहे, आँसू तुम्हें पुकार रहे हैं।
इन्हें दया की भीख चाहिये, आगे हाथ पसार रहे हैं॥
दुखियों की सेवायें करना- जग में सब से बड़ा धर्म है।
मर्यादा में मानव रहना- जग में सब से बड़ा कर्म है॥

भारत माता की गोदी में- दूर दूर से दुखी आ रहे।
लँगड़े लूले अन्धे भाई- मनुष्यता के घाव ला रहे॥
कोई पीड़ा से पागल हो- मुझे मानता शत्रु भयंकर।
मुझ से कहता, अरे महात्मा! छोड़ चला जा तू हिमगिरि पर॥

गुस्से में लिखते हैं मुझ को, यहाँ हिन्दुओं को मरवाते।
भाग जंगलों में जाओ तुम, हमें तुम्हारे भाषण खाते॥
मैं उस भाई से कहता हूँ, तुम कहते हो तो क्या जाऊँ?
क्या मैं भी पापी पागल बन, पीड़ित जनता को मरवाऊँ??

कोई कहता, यहीं रहो तुम, कोई मुझे सुनाता गाली।
पर मैं तो सारी जनता को- बाँट रहा हूँ अमर उजाली॥
ईश्वर का जो हुक्म मुझे है, वही कर रहा हूँ मैं भाई!
जननायक के शब्द रूप में- आकर्षित थी अमर भलाई॥

दुखियों का बेली परमेश्वर, सब का दुःख दुःख है मेरा।
मुझ में सब, सब में मैं रहता, मुझे न आता मेरा तेरा॥
चाहे जितना कोसो भाई! जब आयेगी, तभी मरूँगा।
जैसी नारायण की इच्छा, मैं तो जग में वही करूँगा॥









मेरा यह विश्वास अटल है, मैं ईश्वर की बात मानता।
पीड़ा क्रोध पाप में भूला– प्राणी मुझको नहीं जानता॥
'राम'-बुलावे से जाऊँगा, चाहे जितना कहो कि मरजा!
कोई कहता, बूढ़े बाबा! दुनिया छोड़ हिमालय पर जा!
रहना वहाँ पसन्द पड़ेगा, पर मैं हिमगिरि कैसे जाऊँ?
तुम्हें छोड़ कर इस अशान्ति में– कैसे स्वयम् शान्ति मैं पाऊँ?
मैं अशान्ति में शान्ति चाहता, या अशान्ति में ही मर जाऊँ।
दुनिया त्राहि त्राहि करती है, कैसे हिमगिरि पर सुख पाऊँ?

अगर आप सब चलें हिमालय, तो मुझको भी साथ ले चलें।
सभी दुःख सुख में साथी हैं, सब जीवन की ज्योति बन जलें॥
दुःख मिटाना अगर चाहते, अगर चाहते सुख निकालना।
करो दुःख में भी सेवायें, शाश्वत सीखो कर्म पालना॥

कर्म दुखी भी करें प्रेम से, कर्म किये से दुःख टलेंगे।
दुःख जलेंगे शुभ कर्मों से, मौज शौक़ से नहीं जलेंगे॥
'गीता' का उपदेश यही है, 'वेदों' का सन्देश अमर यह।
शेष यज्ञ-फल मिले तुम्हें जो– कर्मवीर का भोग मात्र वह॥

करे नहीं कुछ, बैठा खाये, मनुष्यता का यह न धर्म है।
चाहे निर्धन या करोड़पति, सेवा श्रम ही परम कर्म है॥
जो न कर्म करता दुनिया में, इस धरती पर भार वही है।
यदि अन्धा लँगड़ा लूला हो, उसकी तो यह बात सही है॥

पर जो तगड़े आँखों वाले, हाथ पैर चौकस चलते हैं।
वे यदि काम नहीं करते कुछ, तो अपने ही को छलते हैं॥
शिविरों में शरणार्थी हैं जो, करें वीर वे काम निरन्तर।
कमर बाँध कर लगें कर्म में, कृत्रिम मौज शौक़ सब तज कर॥

बने न बोझ किसी पर कोई, काम करे कुछ चर्खा काते।
पाखाना तक भी ढोने में– हम न तनिक भी हैं शर्माते॥
यदि सब कर्मवीर बन जायें, तो यह शक्ल बदल जायेगी।
सड़ा पड़ा जो आज उसी की– सूरत नयी निकल आयेगी॥









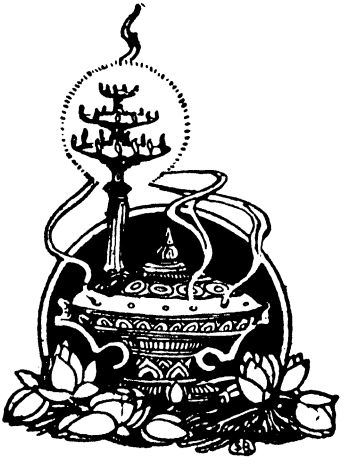
जननायक

कर्मवीर सच्चा किसान है, राजा है वह जीवन दाता।
जिसने बहा देह से मोती, अन्न निकाला! वही विधाता॥
खानेवाले आज बहुत हैं, गिने चुने हैं करने वाले।
भारत के भगवान कृषक हैं, दुनिया के वे दिव्य उजाले॥

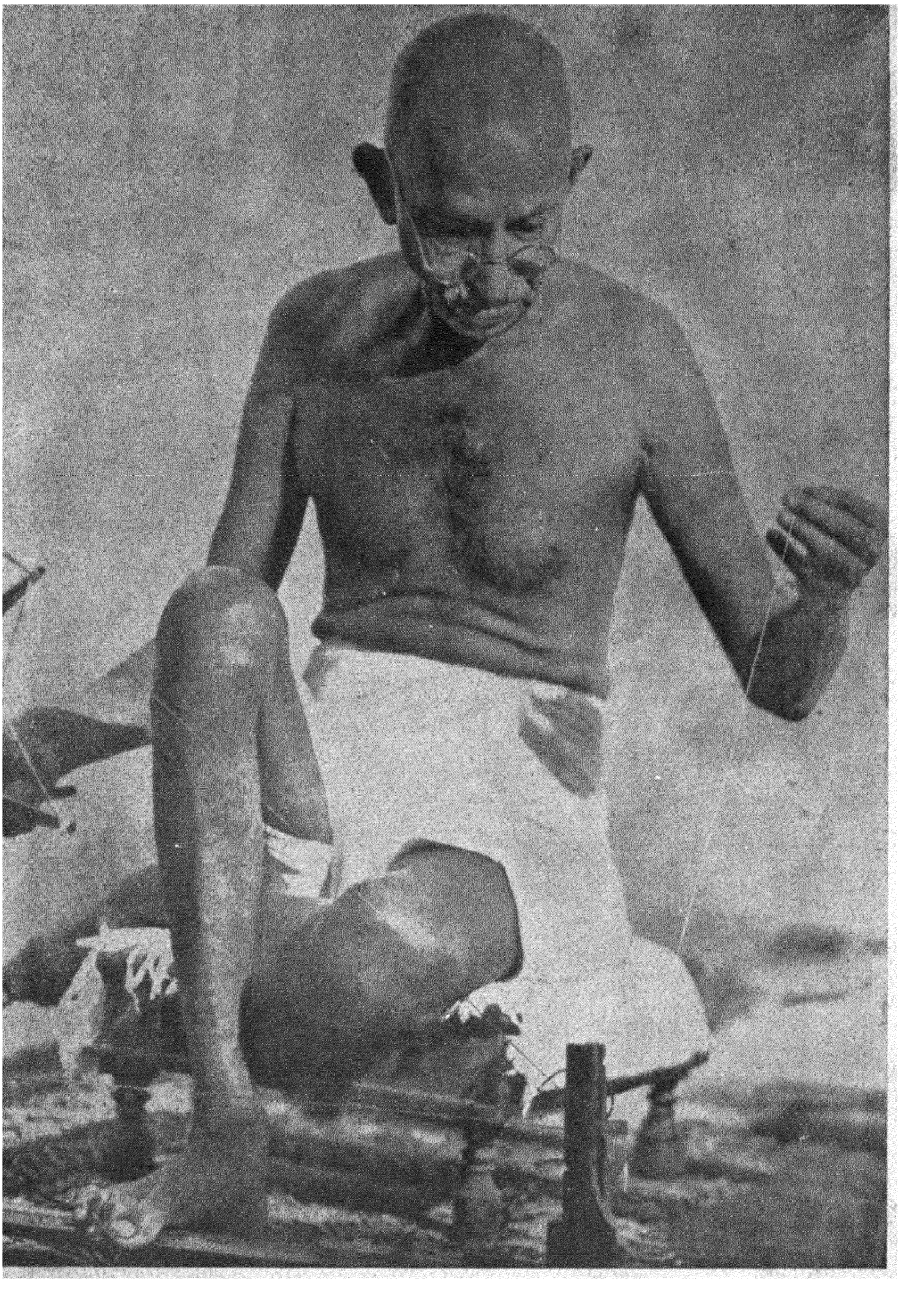


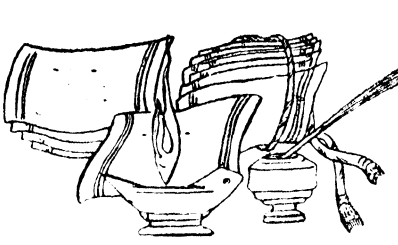
पर पाश्चात्य रंग में रँग अब, हम ग़ुलाम बनते जाते हैं।
छोड़ कुदाली टोप ओढ़ कर– मेज़ कुर्सियों पर खाते हैं॥
पर खाना तो तभी मिलेगा, जब हल जोतोगे खेतों पर।
बिना किये बरसाने वाला, नहीं दिखाई देता ईश्वर॥
सादा जीवन ही गौरव है, कर्म किये से सुख मिलता है।
माली बोता और सींचता, फूल तभी फलता खिलता है॥
मुक्ति कर्म में, पूर्त्ति कर्म में, कीर्ति इसी में, सत्य यही है।
जिस बापू की वाणी है यह, सब कर्मों की पूर्त्ति वही है॥

करो भला दया धर्म।
शिवं सदा सुखी रहा॥
प्रभात दे गया मुक्ति।
विकास स्वस्ति सत्य से॥









एकत्रिंश सर्ग



खेतों में हरि हैं किसान, हर हैं भादो भरे मेघ में।
मेघों की मृगछाल, भाल पर शोभा चाँद की हासिनी॥
गोदी में गिरिजा, सरोज सर नाभी में, प्रभा भस्म है।
नागों की लहरें, बहीं गगन-गंगा रुद्र के वक्ष से॥
मानो श्यामल मेघ ही हृदय में बैठे शिवं राम हैं।
शम्पा है तप का प्रभात. दृग तारे, शान्त है वायु भी॥
आँखों में शिवजी बसे, धनुष धारे राम जाते कहाँ?
बोले राम, मनुष्य की विजय बापू ने बुलाया मुझे॥
मेघों में उड़ते कपोत जल धारा से, अहिंसा तरी।
गाता सागर गीत, शान्त घन हैं, पृथ्वी हरी है हँसी॥
गाँधी जी तट हैं, प्रजा जलधि, मर्यादा महीं है जहाँ।
घेरे है जनता, उठा जलज, जागो हे! निशा जा रही॥

उसी महान के लिये बसन्त फूल ला रहे।
उसी प्रभात के मयूर मेघ-गीत गा रहे॥
चलो बढ़ो उठो खिलो! शिखा सिखा रही तुम्हें।
दया यहाँ दिया लिये, दिया दिखा रही तुम्हें॥

उषा प्रकाश पुंज पूज आरती उतारती।
समीर की कला उसी उदार को पुकारती॥
दुखी न एक भी रहे कि कौन गा रहा सखी!
पिता यही प्रकाश है. प्रभात ला रहा सखी!







जनायक



कौन पुजारिन पूज रही पग,
फूल लिये कलियाँ उतरी हैं।
रूप अनूप निहार सजा विधु-
अम्बर की परियाँ उतरी हैं॥
कोमल कोपल कुन्दन सा तन,
सूरज की किरणें सहलातीं।
धर्म गभीर लिये चिड़ियें सब,
जाग मुसाफ़िर! गीत सुनातीं॥

फूल खिला करते कलिका पर,
फूल यहाँ झड़ते रहते हैं।
पंकज सूरज से खिलते अलि!
नीरज से झरने बहते हैं॥
पल्लव कोमल प्यार लुटा कर-
सूख गये, ऋतुराज न बोला।
प्रश्न किया किससे किसने यह-
क्यों रसपूर्ण रहस्य न खोला॥

निर्मम रात यहाँ दिन को डस,
दीप जला करती अठखेली।
घूम रही दृग-बिन्दु चुरा यह-
सूरज को डस कौन अकेली?
पूछ रही किससे धरती यह-
सूरज को किसने पहिचाना?
दुःख यहाँ सुख ढूँढ रहा अलि!
दुःख गया पर दर्द न जाना॥

जन्म यहाँ पर, मृत्यु यहाँ पर,
नाच यहाँ यदि तो गम भी है।
मान यहाँ, अपमान यहाँ पर,
दीपक है यदि तो तम भी है॥





जननायक

स्वर्ग यहाँ पर, नर्क यहाँ पर,
अश्रु यहाँ पड़ते बरसाने।
संसृति की इस ज्योति-शिखा पर,
प्यार चढ़ा जलते परवाने॥

संसृति के गतिशील मंच पर- समय भयंकर भी आता है।
परिवर्त्तन की समय-शिला पर- अन्धकार आता जाता है॥
समय न पल भर को भी रुकता, प्राणी समय व्यर्थ खोता है।
चार दिनों के स्वप्निल जग में- हर प्राणी हँसता रोता है॥

तारे छिटके, चन्दा चमका, दमक रही दामिनी रात में।
प्रकृति आज रो रही खड़ी क्यों, क्यों तारे निकले प्रभात में!
जननायक प्रार्थना सभा में- जन मन अमर लोक की भाषा।
पंकज पर परमेश्वर थे वे, या थे जनता की अभिलाषा॥

उषा अनेकों जननायक पर- किरणें बरसाने आती थीं।
सुख के गीतों में सन्ध्यायें- बापू की भाषा गाती थीं॥
किन्तु आज सन्ध्या की आँखें- क्यों ये गीले गीत गा रहीं!
लाल लाल आँखोंवाली ये- कौन भयंकर आग ला रहीं!!

अम्बर की आँखों में आँसू, डाल डाल पर फूल रो रहे।
आज न जाने क्या होने को- असगुन क्यों ये आज हो रहे!
किस बीती स्मृति में खोया सा- 'बिड़ला भवन' घटाओं में है।
चारों ओर मेघ मँडराते, बापू पूर्ण घटाओं में है॥

दिनचर्या दिनमान उन्हीं की, दुनिया को दे रहे उजाला।
छिपा हुआ फुंकार रहा था- समय सर्प सा काला काला॥
गये 'पटेल' चरण छू उनके, गये प्रार्थना में जननायक।
'मनु गाँधी' 'आभा गाँधी' के- कन्धों पर धर हाथ सहायक॥

जग की कुटिया से जननायक- उस कुटिया की ओर जा रहे।
मानो हरे भरे खेतों में- धीरे धीरे भोर जा रहे॥
चरण चल रहे डगमग डगमग, फूल जा रहा है मुस्काता।
अस्ताचल की ओर जा रहा- सूरज बापू से शर्माता॥









जननायक

उत्सुकता से बैठी जनता- दर्शन करके हरी हो गई।
ऐसी शान्ति मिली जनता को, सुख से सारी सृष्टि सो गई॥
मुक्ति-मंच की ओर मुक्त ने- जब पूजा से चरण बढ़ाये।
दिव्य देवताओं ने उन पर- देवलोक के फूल चढ़ाये॥



किन्तु एक पागल हिन्दू ने- चुपके से पिस्तौल निकाला।
देख उसे मुस्काये बापू, वह मीठी मुस्कान उजाला॥
खून देख उसकी आँखों में, खिला हुआ था कमल फाग सा।
वह उन्मत्त भयानक बन कर- लाल लाल हो गया आग सा॥

पल भर में पागल मनुष्य ने- बापू पर पिस्तौल चलादी।
तीन गोलियों से पागल ने- दुनिया भर की ज्योति बुझादी॥
अन्धकार छा गया निमिष में, धरा धँसी, आकाश खो गया।
हवा रुक गई चलते चलते, ईश्वर! यह क्या आज हो गया?

आज विश्व के किन पापों ने- दुनिया भर का दीप बुझाया!
रक्त रोहिणी देख धरा पर, या उसने बलिदान चढ़ाया॥
सीने में गोलियाँ लगीं वे, मानो भौंरे खिले कमल में।
सब आशायें राख हो गईं, सारी जनता की उस पल में॥

मुँह से 'राम राम!' 'हे प्रभु!' कह, गाँधीजी गिर पड़े धरा पर।
गोदी में ले लिया पुत्र को, धरती माँ ने आँखें भर भर॥
रँगे हाथ हत्यारा पकड़ा, बापू थे शोणित में लथपथ।
जननायक को लेने आया- देवलोक से फूलों का रथ॥

कौन 'गोडसे' बन्दी है यह, हिन्दू-कुल को डसने वाला?
अमर कभी मर भी पाते हैं, व्यर्थ किया अपना मुँह काला॥
लोहू में लथपथ बापू को- उनकी कुटिया में ले आये।
जननायक के अन्तिम दर्शन- बस वे ही हम सब कर पाये॥

पुण्य दिवस की उस सन्ध्या में- पार्थिव तन को छोड़ चले वे।
धरती से ऊपर अम्बर में- धरती हित दिनमान जले वे॥
उनकी भाषा, भाव उन्हीं के, सूरज के प्रकाश में देखो!
उनकी वाणी, उनकी पग-ध्वनि, मानव के विकास में देखो!!





किन्तु बिछड़ने से बापू के, जनता फूट फूट कर रोयी।
हंस उड़ा, गउएँ डकरायीं, धरती हिचकी भर भर रोयी॥
अन्धकार में खड़ा 'जवाहर', बालक जैसा आज रो रहा।
लोह पुरुष कट्टड़ 'पटेल' भी- आँसू से संसार धो रहा॥

हा! 'राजेन्द्र प्रसाद' शान्त भी- खोये खोये से रोते हैं।
बापू का बलिदान-दिवस है, हम सब हा! अनाथ होते हैं॥
बोलो, कहाँ गये जननायक किस पापी ने हंस उड़ाया!
माँ की गोदी आज छिन गई, हा! उठ गई पिता की छाया॥



वन उपवन बोले रो रो कर- खोया आज हमारा माली।
हाय! लुट गई सारी जनता, दुनिया की लुट गई दिवाली॥
कोई सूरज से खिलता है, भाता नहीं प्रकाश किसी को।
गाँधी जी गोली से मारे, यह न हुआ विश्वास किसी को॥

पल भर में यह खबर हवा से- सब लोकों में गई मरण सी।
कविता फूट पड़ी अन्तर से- आदि काव्य के प्रथम चरण सी॥
जो सुनता था वह कहता था- झूठ खबर है, झूठ बात है।
पर प्रतिध्वनि में पीड़ा कहती- धरती पर आँसू प्रपात है॥

डाल डाल पत्ते पत्ते पर- आज दिखाई देता मातम।
शरद चाँदनी में अँधियारी, कभी नहीं देखा ऐसा तम॥
आज पक्षियों की आँखों से- आँसू गिरते हैं धरती पर।
सड़कों पर मुर्दनी छा रही, सृष्टि बह रही है रो रो कर॥

बापू चले गये दुनिया से, बोल उठा पल भर में कण कण।
स्वतन्त्रता सम्राज्ञी बोली- कभी नहीं सूखेगा यह व्रण॥
जो मिलता था वह कहता था- गाँधी जी गोली से मारे।
बच्चे माँओं से कहते थे- गाँधी बाबा स्वर्ग सिधारे॥

रोते हुए रेडियो बोले- हमने खोया पिता हमारा।
प्रभु की गोदी में जा बैठा- ज्योतिपुंज ईश्वर का प्यारा॥
ईश्वर की इच्छा! गाँधी जी ..... कानों में पड़ता था यह स्वर।
प्रतिध्वनि में पीड़ा कहती थी- आज गई सारी दुनिया मर॥





आँसू बोले, हृदय-निधि का, कौन बाक़ी सहारा ?
नौका टूटी, भँवर जल में, दूर कोसों किनारा ॥
साया होगा, दुखित जग का, कौन बापू ! बताओ !!
आँखो ! रोओ, तड़प बरसो, दाग़ काला मिटाओ !!
रोओ रोओ, नयन जल से, घाव धो दो धरा के ।
बोया जो था, ज़हर हमने, रंग लाया हरा के ॥
पापों के ये, अधम फल वे, स्वाद फीका मिलेगा ।
माली खोया, नलिन-नर ने, फूल कैसे खिलेगा ?
छीनी लूटी, नयन निधि क्यों, काल काले बता तू ?
हत्यारे, क्यों- ज़हर उगला, व्याल वाले बता तू !
खोया तूने, अमर पद को, सूर्य खोया सवेरे ।
क्या पाया है, शरद ऋतु में, चाँद खो के अँधेरे !
जलज ने जल में तम से कहा-
तिमिर तू ! दिन को हर ले गया ।
हृदय का वह दीप बुझा दिया,
हँस रहा तम ! तू दिन को चुरा ॥
जगत में किसको सुख है मिला !
मरण में मन की गति रो रही ।
नयन में जल भी जल में जला,
प्रलय ले मन में घन छा रहे ॥



सुनते ही बापू का मरना, बहुतों ने तो प्राण दे दिये ।
धड़कन बन्द हुई बहुतों की, बहुतों ने संन्यास ले लिये ॥
जिसने ख़बर सुनी मरने की, वही सुन्न सा खड़ा रह गया ।
जिसने मरण सुना बापू का, शोक-सिन्धु में वही बह गया ॥
चुग्गा छोड़ दिया चिड़ियों ने, गउओं ने छोड़े तृण खाने ।
जलचर थलचर नभचर जड़चर- दुःख दृगों से लगे बहाने ॥
पल भर में सब पत्ते टूटे, ऋतु बसन्त में पतझड़ आया ।
सूरज ने मुँह ढका शर्म से, जो देखा वह रोता पाया ॥



जीवन भार स्वरूप हो गया, मानो छाया घोर बुढ़ापा।
धरती माता छाती धुन धुन- पीट रही थी अपना आपा॥
जो मिलता था वह कहता था- हाय लुट गये! हाय लुट गये!
माताओं के रुके न आँसू, गोदी में से लाल छुट गये॥

बच्चे रोये, बूढ़े रोये, दुनिया का हर प्राणी रोया।
ऐसा लगता था दुनिया में, हर मनुष्य मरघट में सोया॥
जनता का विलाप मत पूछो, मानो हुई बाल-विधवा वह।
मानो जल सूखा सरिता का, मछली तड़प रही थी रह रह॥

रो रही जनता बिचारी, बन गईं बरसात आँखें।
चल नहीं पाती हवा भी, कट गईं हैं आज पाँखें॥
बोल दो बापू! तनिक तुम, आज ये आँसू न रुकते।
बुझ न पाती चिता मन की, जी रहे पर प्राण फुकते॥

तुम हृदय थे, प्राण थे तुम, भाव भाषा बुद्धि थे तुम।
हंस थे कवि के हृदय के, शिवं सुन्दर शुद्धि थे तुम॥
तुम दया थे, शक्ति थे तुम, पाप के उद्धार थे तुम।
बहुत कोमल थे कमल तुम, करुण के करतार थे तुम॥

तुम अँधेरे में उजाले, पंगुओं की पूर्ण गति थे।
थकित पीड़ित त्यक्त जन को- देव! तुम ही शान्ति यति थे॥
रात थे हम, चाँद थे तुम, पाप थे हम, पुण्य थे तुम।
मौन तुम ऐसे हुए अब, हो गये सब आज गुम सुम॥

कौन अब पीड़ित हृदय को- थपकियाँ दे शान्ति देगा?
कौन गड्ढे में गिरे को- दे सहारा खींच लेगा??
कौन पापी से नहीं! पर- घृणा पापों से करेगा?
कौन बहते आँसुओं को- हृदय-आँचल में भरेगा??

हाहाकार हुआ सारे में, शोक-सिन्धु पर घन मँडराये।
जहाँ सो रहे थे जननायक, जन जन वहाँ दौड़ कर आये॥
शीशे के कमरे में बापू, जन जन उन्हें पुकार रो रहे।
क्यों न बोलते हे जननायक! जाने कैसे आज सो रहे?







ज
न
ना
य
क

मध्य रात्रि के बाद देह को– यमुना-जल से स्नान कराया।
मानो गंगा-जल पर हमने– यमुना-जल का अर्घ्य चढ़ाया॥
खादी के फूलों की माला– बापू पहिने हुए सो रहे।
शान्त ध्यान में मग्न राम के, भक्ति तपस्या भाव हो रहे॥



बापू का परिवार विश्व है, पल भर में सब दौड़े आये।
या तो जनता थी बापू में, या बापू सारे में छाये॥
शव के तट पर बैठ सभी जन– 'गीता' और 'वेद' पढ़ते थे।
मानो गीता' 'वेद'-मार्ग पर– सब धीरे धीरे चढ़ते थे॥

'वेदों' की ध्वनि गूंज रही थी– अनल वितल भूतल कण कण में।
मानो सारा विश्व आज था– 'वेद-मन्त्र' की परम शरण में॥
ऐसा लगता था कलियुग में– सतयुग आज स्वर्ग ले आया।
मानो बापू ने निज शव पर– विधि से ऋषि-आश्रम बनवाया॥

धरती की गोदी में शव है, चारों ओर मन्त्र बुलते हैं।
मुक्ति-मन्दिरों के दर्वाजे– वेदों की ध्वनि से खुलते हैं।
शव के पास जल रहा दीपक, उड़ती है सुगन्ध कण कण में।
कण कण आँसू बरसाता है– जननायक के महामरण में॥

फूलों से शव ढका हुआ है, जल के अन्दर जलज सो रहा।
चन्दा की चाँदनी बिछी है, मेरा मानस आज रो रहा॥
फूलो ! बड़े भाग्यशाली हो, चढ़े महामानव के शव पर।
आँसू नहीं हमारे रुकते, ईश्वर ! आज दया हम पर कर !

फूल खिले शव केसर से उग,
या इन में जननायक सोते।
सौरभ या न रहा इन में अब,
फूल पड़े धरती पर रोते॥
या अब अर्घ्य बने जल में जल–
ये जननायक के पग धोते।
या बलिदान चढ़ा अपना अब,
सौरभ का बलिदान सँजोते॥







सुन्दर फूल बिछे धरती पर,
सौरभ है जननायक मानो।
पंकज दूर नहीं तुम से अलि !
सूरज को मन में पहिचानो ॥
फूल हमें सब दीख रहे पर–
लाश सुवास नहीं दिखती है।
फूल सुगन्ध मिली तुम को वह–
क्यों फिर पास नहीं दिखती है ॥

ढूँढ रहे शव हाय ! कहाँ शव !
पाँव छुवें वह लाश मिले जो !
सौरभ आज बना इन में शव,
ये सब सुन्दर फूल खिले जो ॥
क्योंकि बसा इन में वह सौरभ,
आ शव ऊपर फूल पड़े थे।
फूल पड़े पर लाश कहाँ वह !
ढूँढ रहे सब मूक खड़े थे ॥



फूलों में शव ऐसे जैसे– फूलों में सत् सौरभ व्यापक।
काँटों की दुनिया को तज कर– फूलों में सोये जननायक ॥
पौधे छोड़ दिये फूलों ने, बापू के शव पर आ बरसे।
या जग छोड़ फूल जाते हैं, इस पापी दुनिया के डर से ॥
राष्ट्रपिता के नयन मुँदे थे, मानो मुँदे कमल सोये हों।
मानो मरे नहीं जननायक, मानो हम भ्रम में खोये हों ॥
बाँध क़तार भीड़ जनता की, दर्शन करने को आती थी।
जननायक को अभिवादन कर, आँसू लिये चली जाती थी ॥
आँसू बरस रहे थे ऐसे, वर्षा हो पानी पर जैसे।
हृदय फटा जाता है मेरा, वर्णन करूँ वेदना कैसे !
जन जन की बरसाती आँखें– सारी "दिल्ली" भिगो रही थीं।
उन दर्शन की प्यासी आँखें– मानो मोती पिरो रही थीं ॥







जननायक



जनता उमड़ घुमड़ घिरती थी, सारी 'दिल्ली' भरी उसाउस।
हम ने बहुत जगाया रो रो, बापू हुए नहीं टस से मस॥
धरती देख रहे थे नेता, फूट फूट 'राजेन्द्र' रो रहे।
बिखर बिखर रो रहे "जवाहर", बापू कैसे आज सो रहे!
सब देशों के राजदूत आ, चढ़ा रहे चरणों में मोती।
दुनिया आज अनाथ हो गई, धरती फूट फूट कर रोती॥
भारत माँ छाती धुनती है, छाई है विषाद की रेखा।
हमने मुस्काते फूलों को- टूट टूट कर रोते देखा॥
ग्यारह बजे महामानव की- शव-यात्रा का समय आगया।
झुके विश्व भर के सब झण्डे, छाया से आकाश छा गया॥
राजकीय शव यात्रा थी वह, सेना और सवार आगये।
छाया काला रंग शोक का, मानो काले मेघ छा गये॥
रक्खा शव सफ़ेद खादी में, ऊपर थी केसरिया चादर।
शव पर मानस-फूल भाव से- चढ़ा रहे थे जन आ आ कर॥
पेड़ों पर, खम्भों पर, पथ पर- जनता ही जनता छाई थी।
कोटि कोटि जनता बापू के- अन्तिम दर्शन को आई थी॥
तिल धरने को जगह नहीं थी, जन-समुद्र उमड़ा पड़ता था।
चरण चूमने को बापू के, आज गगन घुमड़ा पड़ता था॥
'प्यारेलाल' आदि भक्तों ने- शव अर्थी पर धरा उठा कर।
अर्थी उठा चले कमरे से, गगन गया जयकारों से भर॥
राजकीय गाड़ी पर अर्थी, फूल बरसते हैं अम्बर से।
धन्य धन्य अर्चना पिता की, आज बने नारायण नर से॥
शंख बजे, जय जय ध्वनि गूंजी, शव-यात्रा में चले साथ सब।
बापू की अन्तिम झाँकी की, आँखों में तस्वीर वही अब॥
अर्थी पर जननायक जाते, दर्शन कर लो, फूल चढ़ा लो!
नेताओं के आँसू गिरते, चुग आँचल में इन्हें उठा लो!!
हिन्दू मुस्लिम सिक्ख सभी मिल- खींच रहे हैं शव की गाड़ी।
कोटि कोटि जय जय की लय में- चली जा रही शव की गाड़ी॥







जनता का विश्वास जा रहा, माँ किस पर अभिमान करेगी ?
बोलो, किस साकार सत्य का, काव्य-कला सम्मान करेगी ??
हम अनाथ बच्चों को बोलो, बाक़ी किसका रहा सहारा ?
माँझी चला गया दुनिया से, आज हुआ मँझधार किनारा ॥

अर्थी ऐसे जाती जैसे- स्वतन्त्रता की शान जा रही।
अर्थी ऐसे जाती जैसे- भारत माँ की जान जा रही ॥
अर्थी ऐसे जाती जैसे- जाती हो भूखे की रोटी।
अम्बर ऊपर गया धरा से, धरती बहुत हो गई छोटी ॥

जननायक की अर्थी जाती, सरिता सिन्धु ताल सब सूखे।
आगे की सन्तति पूछेगी- हरे भरे पौधे कब सूखे!
हृदय-विदारक चिर विलाप में- यमुना-तट पर अर्थी आई।
चन्दन की लकड़ी चुन चुन कर- "राजघाट" पर चिता बनाई ॥

जनता से मैदान भरा था, यमुना में था आँखों का जल।
चरण धो रहा था बापू के, धीरे धीरे यमुना-जल चल ॥
नभ से बापू की अर्थी पर- बरसे फूल पुष्प-यानों से।
मानो जलता हुआ दीप वह- घिरा हुआ था परवानों से ॥

पन्द्रह मन चन्दन था, जिसका- सौरभ उड़ता था सारे में।
दो मन सामग्री थी, जिससे- पवित्रता थी गुण न्यारे में ॥
पूजित फल नारियल एक मन, पन्द्रह सेर कपूर श्वेत घृत।
चर्चित चिता सजी अर्थी से, जीवित से थे शैया पर मृत ॥

फूलों की असंख्य मालायें- बरस पड़ीं बापू के ऊपर।
मानो नाच रहीं पाँखुड़ियाँ- आज खड़ीं बापू के ऊपर ॥
फूलों में बापू का सौरभ- उड़ उड़ कर सन्देश दे रहा।
बापू का बलिदान देश को- युग युग का आदेश दे रहा ॥

सूरज ढलने लगा जिस समय- "रामदास" ने चिता जलाई।
जननायक के बड़े पुत्र ने- विधिवत आकर अग्नि लगाई ॥
धूँ धूँ करके चिता जल उठी, बरस पड़ा आँखों से पानी।
जननायक चल दिये जगत से, कण कण में लिख अमर कहानी ॥







जिनको कभी न रोते देखा, फूट फूट वे नेता रोते।
कहती चलीं चिता की लपटें– बापू जैसे रोज़ न होते॥
धरती फटती नहीं रुदन से, गिरता नहीं गगन धरती पर।
अब तक तो धरती थे बापू, लेकिन आज बन गये अम्बर॥



कुछ घण्टों के बाद चिता जल, एक राख का ढेर रह गया।
अन्त यही है हर प्राणी का, आँसू का इतिहास कह गया॥
मान्य महामानव धरती पर– बहा रहा था अमृत सरोवर।
धर न सके धरतीवाले धन, कहाँ राम की गई धरोहर!

प्रकृति पुरुष को तड़प रही है, दूर देश चल दिया प्रवासी।
दीप बुझ गया, अन्धकार है, पूछो माँग, छा रही उदासी॥
आँखों से बहते पानी पर– राष्ट्रपिता की चिता जल रही।
हाय! चिता के साथ साथ ही– जग की जीवन-ज्योति ढल रही॥

चाह जल रही, आह निकलती, नाव पड़ी रह गई राह में।
स्वतन्त्रता की सुख सम्राज्ञी– हाय! खड़ी रह गई राह में॥
हाथों में से हंस उड़ गया, मन के मोती कहाँ मिलेंगे?
सूर्य अस्त हो गया, कहो फिर– कैसे जग के कमल खिलेंगे?

आँखों के मोती चुगने को– हंस कहाँ से लायें अब हम?
दाह हो रहा, स्नेह नहीं है, कैसे दीप जलायें अब हम?
आँखों के खारी सागर से– दिल का दाग़ नहीं धुल सकता।
सागर के चौदह रत्नों से– सुख का द्वार नहीं खुल सकता॥

अब तो तब तक रोओ जब तक– पत्थर सा दिल टूट न जाये।
जब दीपक ही घर को फूँके कैसे क़िस्मत फूट न जाये॥
मरनेवाला अमर, काल ने– व्यर्थ खून में हाथ रँग लिये।
स्वतन्त्रता की फुलवारी पर– पागल ने अंगार धर दिये॥

सत्ता के भूखे पिशाच ने– जग का जलता दीप बुझाया।
धवल चन्द्रमा की चाँदी पर– काला अमिट कलंक लगाया॥
पत्थर ने माँ की छाती में– मारी है किस दिल से गोली!
बिंधवा सी रह गईं उमंगें, दहकादी हृदयों में होली॥







हृदय जल रहा है जन जन का, हरे खेत में आग लगादी।
स्वतन्त्रता के खिले फूल पर- पापी! तू ने चिता जलादी॥
जब तू ने गोली मारी थी, गिरे न तेरे हाथ टूट कर।
जल न गया बापू के दृग से, गिर न पड़ा पिस्तौल छूट कर॥

पर बापू तो क्षमाशील थे. कैसे तुझे जला देते वे!
अपने गंगा-जल से मन पर- कैसे ख़ून लगा लेते वे!!
सुनते हैं 'औरंगज़ेब' ने- 'शाहजहाँ' को क़ैद किया था।
लेकिन अब इतिहास कहेगा- राष्ट्रपिता का ख़ून पिया था॥

भारत माँ! क्या ढूँढ रही है? ढूँढ रही हूँ खोया धन वह।
आँखें उसे टटोल रही हैं, याद आ रहा है वह रह रह॥
धरती का देवता रूठ कर- स्वर्ग-लोक को चला गया है।
मानवता का बुझता दीपक- चलता चलता जला गया है॥

दीपक पर जलनेवाले की- याद तड़प कर रह जाती है।
छुई मुई सी स्मृति पीड़ा से- बिजली सी कुछ कह जाती है॥
आँखों में सागर भर बादल- आँसू बरसाने आते हैं।
जननायक के पदचिह्नों पर- मोती ढुलकाने आते हैं॥

सरसों के पीले फूलों का- मुकुट लिये ऋतुराज आ रहा।
फर फर उड़ता हुआ तिरंगा- राष्ट्रपिता के गीत गा रहा॥
लहरों पर बापू की कोयल- मीठी बोली बोल रही है।
खोल रही कटुता की गाँठें, जीवन में रस घोल रही है॥

या बापू के फूल बीन कर- सौरभ प्रकृति उड़ा लाई है।
या स्वतन्त्रता पर संगम की- भस्म मिलन बनकर छाई है॥
रजनी! इतने दीप जला कर- तू किसकी पूजा करती है?
क्या बापू की यादगार पर- मणिमण्डित दीपक धरती है??

नीलम की थाली में दीपक, पगली! कैसी आज दिवाली?
सौरभ है पर फूल नहीं है, मुरझाई है डाली डाली॥
अम्बर के इतने तारों में- 'ध्रुव तारा' दे रहा दिखाई।
उसके आस पास ही, देखो! बापू भी देंगे दिखलाई॥







यमुना की श्यामल लहरों ने- मन-मोहन के चरण पखारे।
'राजघाट' की चिर समाधि से- फूट रहे हैं गीत हमारे॥
हमने स्वतन्त्रता का दीपक- फूक मार कर बुझा दिया है।
गिरते हुए आँसुओं का बल- हाय! राम ने उठा लिया है॥

हाय! हमारे ही हाथों से- अन्धे की लाठी टूटी है।
हाय! हमारे ही पापों से- भारत की क़िस्मत फूटी है॥
हाय! मनुजता के कन्धों पर- आशाओं की लाश चली है।
हाय! हृदय के मलयानिल पर- मनुष्यता की चिता जली है॥

ऐसी एक दिवाली आई, जबकि दीप से हृदय जला है।
मृत्युलोक से देवलोक को- मानवता का दीप चला है॥
तरुण तिरंगे के पहरे में- धरती का सूरज डूबा है।
स्वतन्त्रता के उजियाले में- नारायण से नर ऊबा है॥

हाहाकार मचा दुनिया में, झगड़े झुके सभी देशों के।
सम्वेदना प्रकट की सब ने, अन्त नहीं थे सन्देशों के॥
"बर्नार्डशा" विश्व कवि बोले, मानो विश्व-वेदना बोली।
बापू का व्यक्तित्व कह गई- याकि धधक मानस की होली॥

"जग में अधिक भला होना भी- कितना ख़तरनाक होता है!"
रात चाँद को कब रख पाती, दिवस उजाले को खोता है॥
'ब्रिटिश किंग' का तार मिला तत्- सम्राज्ञी सम्राट-हृदय का।
गाँधी जी की मृत्यु बड़ा दुख, सारा विश्व कृतज्ञ अजय का॥

मानवता एवं 'भारत' की- यह क्षति कभी न पूरी होगी।
पाप किया हम सब ने, लेकिन- करनी जननायक ने भोगी॥
वह खम्भा था जिसे पकड़ कर- हम दरिया में कूद रहे थे।
नाविक वह निकाल लेता था, हम जब जब भी डूब बहे थे॥

और 'एटली' के आँसू ने- जननायक का सार सुनाया।
हत्यारे ने गाँधी जी को- इसा नहीं, दुनिया को खाया॥
शान्ति और भाईचारे की- जो आवाज़ उठा करती थी—
आज हुई वह शान्त सदा को, जग में वही गूँज भरती थी॥









पर उन की आत्मा दुनिया को– शिक्षा शान्ति सदा ही देगी।
गड्ढे में गिरनेवाले को– वाणी अमर पकड़ ही लेगी॥
'अमेरिका' से 'ट्रूमन' बोले– बापू अमर विश्व की निधि थे।
जन जन-मन की मधुर मूर्ति थे, मनुष्यता की मति गति विधि थे॥

कोटि कोटि जनता पर उन के– उपदेशों का अमर उजाला।
राजनीति आध्यात्म सभी का– आज सो गया रचनेवाला॥
आदर्शों के लिये जिये वे, आदर्शों के लिये मर गये।
सब से बड़ा वही स्मारक है, वे जो कुछ भी यहाँ कर गये॥

भ्रातृ-भाव का अमर पुजारी, क्षमा धैर्य की महामूर्ति वह।
वह जीवन साकार शान्ति था, आदर्शों की अमर पूर्ति वह॥
'अफ्रीका' से कहा "स्मट्स" ने– युग के महापुरुष थे गाँधी।
उस दीपक को बुझा न पाई– जग की कोई भी तो आँधी॥

पूज्य महापुरुषों से थे वे, मान्य मानवों के आदर थे।
जिस में कमी न किसी रत्न की, वे ऐसे विशाल सागर थे॥
मेरे युग का महापुरुष वह, देवों में देवता महा था।
दुनिया के प्रत्येक व्यक्ति पर– महापुरुष का अमृत बहा था॥

"भारत-कोकिल" स्वर 'सरोजिनी'– टूटे तार जोड़ती बोली–
अडिग तैरती हुई सिन्धु में– चली गई बापू की डोली॥
पर वह यात्री छोड़ गया है– पदचिह्नों को, चलो उन्हों पर।
जनता जननायक बन जाये, उन के सिद्धान्तों को ले कर॥

क्षीण शरीर जला बापू का, पर न जला वह अमर अनश्वर।
चाहे जब देखो बापू को, प्रेम-प्रणेता सत्य-मार्ग पर॥
सम्राटों का महाशिरोमणि– निर्मल यमुना-तट पर सोया।
'दिल्ली' ने उसके चरणों को– अपनी अमृत-धार से धोया॥

मुट्ठी भर जर्जर शरीर वह– सब वीरों में महावीर था।
जो न मिटाने से मिट सकती– वह ऐसी अद्भुत लकीर था॥
शान्त शान्ति में आत्मा वह अब, उदित काव्य में उस की रेखा।
प्रेम प्रेरणा सत्य जहाँ हैं, बापू वहीं बोलता देखा॥







पूज्य प्राण 'राजेन्द्र' हृदय से- बोले गंगा-जल बरसाते।
अब वे कोमल चरण नहीं हैं, जिनका स्पर्श प्रेम से पाते॥
वरद हस्त वे नहीं रहे अब, जिन का आशीर्वाद प्राप्त है।
अब न सुनेंगे मधुर शब्द वे, जिन में सारा विश्व व्याप्त है॥

दयापूर्ण वे नेत्र प्यार के, अमृत बरसता था जिन से छन।
अब न रहे वे अमृत-सरोवर, अब न रहा वह सुन्दर सावन॥
पर बापू ही बता गये हैं- देह अनित्य, अमर है आत्मा।
देवलोक से देख रहा है- हम सब को सब का परमात्मा॥

बापू का व्यक्तित्व महा है, अमर आज धरती का तारा।
उस पवित्र आत्मा के पथ पर- चलने से सम्मान हमारा॥
गाँधी जी का स्मारक उनके- कार्यों का लम्बा लेखा है।
प्रेम अहिंसा के प्रतीक में- मानव का समाज देखा है॥

हृदय-विदारक दुर्घटना यह- ज़हर साम्प्रदायिक ने की है।
वह नन्ही सी जान विश्व की- हत्यारे राक्षस ने ली है॥
गाँधी से बढ़कर दुनिया में- कोई हिन्दू हुआ न होगा।
हम सब के पापों का फल उस- हम सब के ईश्वर ने भोगा॥

ओ मनुष्य! अब किस मुँह से तू- अपने को इंसान कहेगा?
बता अरे! किस के बल पर अब- भारत का सम्मान रहेगा?
झुक झुक कर दुनिया के झण्डे- उस को आज प्रणाम कर रहे।
हर मनुष्य उस को रोता है, मुस्लिम उसे सलाम कर रहे॥

हाथों से खो हृदय-धन को चाँदनी रात रोती।
क्या ऐसा भी समय करता जीत में हार होती॥
रोओ रोओ प्रलय धधके रो रही है कहानी।
रोको रोको जलधि-जल को, ज्वार में आग पानी॥

बापू की हत्या से सब के- धधक उठी हृदयों में होली।
मेरे केवल दो बेली थे, "मीराबेन" तड़प कर बोली॥
ईश्वर एक, दूसरे बापू, अब वे दोनों एक हो गये।
उन को मूँद लिया आँखों में, मन में पैर पसार सो गये॥



मुझे खबर जब मिली कि बापू- इस दुनिया से स्वर्ग सिधारे।
बन्द हृदय की गहराई में- खुले बन्द आत्मा के द्वारे॥
और पूज्य बापू की आत्मा- मन के मन्दिर में मुस्काई।
आत्मा में बैठा बापू को, मैंने सकल शीघ्र लगाई॥

उस पल से शाश्वत के नूतन- भाव रम गये मेरे मन में।
उसी समय से देख रही हूँ- मैं जननायक को जन जन में॥
बापू की आत्मा पहिले से- अब ज़्यादा नज़दीक हो गई।
एक समय बापू बोले थे, याद मुझे वह बात आ गई॥

जब मेरा पार्थिव शरीर यह, इस दुनिया में नहीं रहेगा।
जुदा नहीं होंगे तब भी हम, जल में जल मिल सदा बहेगा॥
बाधा रूप देह जग में है, बापू ने ये शब्द कहे थे।
श्रद्धा से ये शब्द सुने थे, कानों में वे बसे रहे थे॥

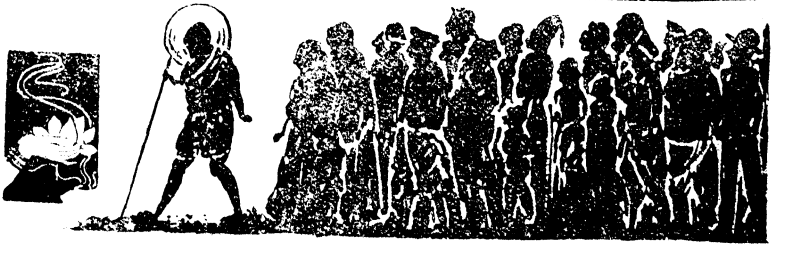
अब अपने अनुभव से मैंने- उन शब्दों का सार निकाला।
सत्य समझ पाई हूँ अब मैं, अन्तर में हो गया उजाला।
भूत भविष्यत् वर्तमान का- ज्ञान हो चुका था बापू को।
इस होनेवाली घटना का- ज्ञान हो चुका था बापू को॥

मैंने पूछा था बापू से, जब 'ऋषिकेश' जा रही थी मैं।
मानो आँखों पर पट्टी धर- परम प्रसाद पा रही थी मैं॥
जब गोशाला बन जायेगी, उद्घाटन को आप चलेंगे?
गाय शरीब दुखी बापू से- पा कर आशीर्वाद पलेंगे?

उत्तर में बोले जननायक, गाँधी नहीं वहाँ जायेगा।
बात स्वयम् से कर कुछ बोले- मुर्दा क्या कुछ कर पायेगा?
सुन कर शब्द भयंकर ये मैं- काँप गई पर कहे न जग से।
चन्दन लगा लिया माथे पर, मैंने जननायक के पग से॥

अनशन आ कर चला गया जब, मैं समझी आपदा टल गई।
पर भविष्य-वाणी न रुकी वह, आशाओं की चिता जल गई॥
उस विधि निर्मित सन्ध्या को जब- बन बैठी थी अचल ध्यान मैं।
सारे जग में देख रही थी, पीड़ा को अपने समान मैं॥







सारे जग को ढकनेवाली, एक आदमी हार दे गया।
मानव-मुक्ति हेतु फिर जग में- ख़ून नया अवतार दे गया॥
पाप नहीं वह एक व्यक्ति का, सारे जग को ढका पाप ने।
युग युग तक अभिशाप रहेगा, प्रतिध्वनि में कह दिया शाप ने॥



भक्तों का बलिदान पाप की- धो सकता है दुनिया काली।
हम तो तब जानें जब कर दो- चन्दा से तुम दूर उजाली॥
प्रेम दया के सागर थे वे, फूलों से कोमल मन वाले।
किन्तु वज्र से भी कठोर थे, यदि मुँह फाड़ खड़े हों काले॥
अन्तर के दोषों पर जय पा, बाहर के दोषों को ढाया।
आओ! चलो! बढ़ो उस पथ पर- बापू ने जो मार्ग दिखाया॥
'बिड़ला जी' के आँसू बहकर- बापू की लिख गये कहानी।
बापू की पूजा को आया- शोक-सिन्धु का खारी पानी॥
बोले, एक बुझ गया दीपक, छोड़ गया पर हमें उजाला।
धोते धोते धुल न सकेगा, दाग़ कलेजे का यह काला॥
मैं बाईस वर्ष का था जब, गाँधी जी को तब पाया था।
गुजराती धोती पगड़ी में, मानव मुस्काता आया था॥
पहिने हुए अँगरखा बापू, नंगे पैर चले आते थे।
अब भी वह तस्वीर दृगों में, जो उस दिन जग में पाते थे॥
उस दिन बापू के स्वागत में- दौड़ दौड़ कर जनता आई।
उस दिन बापू की वाणी में- दुनिया भर की भाषा पाई॥
उस दिन से सम्पर्क आज तक- उन से चलता रहा बराबर।
धन्य धन्य यह देश हो गया, जन जन में जननायक पा कर॥
बापू के जीवन-सागर में- जितना गहरा चला गया मैं-
उतनी ही अमूल्य निधि पाई, कालापन धो गला गया मैं॥
बापू के जीवन की मुझ पर- ज्योतिपुंज सी अमर छाप है।
उस गंगा-जल से मनुष्य को- मुक्ति मिली है, धुला पाप है॥
जन्म जन्म के पुण्य फले जो- चरण-कमल बापू के पाये।
श्रद्धा से सद्भाग्य हमारा, जो गौरव गाँधी जी पाये॥



राजनीति के नेता थे वे, सन्त महामानव पावन थे।
जिस से हरी भरी खेती हो, वे ऐसे सुन्दर सावन थे॥
वे कमाल के महापुरुष थे, मैत्री की मनहर प्रतिमा थे।
उनका कोई शत्रु नहीं था, वे अद्भुत गौरव गरिमा थे॥

निर्णय में वे पूर्ण दक्ष थे, सहनशक्ति में धरती माता।
भूल अगर हो भूल मानते, व्यवहारों में सब के भ्राता॥
साहस में वे महावीर थे, हिमगिरि से दृढ़ थे निश्चय पर।
रुके न आग और पानी से, बापू अपना क़दम बढ़ाकर॥

मुझे याद है राजनीति में- जिस दिन बिल्कुल सन्नाटा था।
तब गाँधीजी ने सीपी से- वह अथाह सागर पाटा था॥
लहरें उन्हें खींचतीं उल्टा, पर प्रतिकूल चले जननायक।
झंझाओं में दीपक बन कर, जग के लिये जले जननायक॥

डगमग डगमग चरण चले जब, जनता उन के साथ चल पड़ी।
शूलों के आगे छाती कर, उस इंगित पर सृष्टि अड़ खड़ी॥
बापू का आत्मैक्य अमर है, उन का चाहा टला न टाले।
उन की मनचाही होती है, जो जन नहीं हृदय के काले॥

दयामूर्ति के मधु मानस में- सब की पीड़ाओं की रेखा।
जाड़े धूप आग पानी में- बापू ने रोगी को देखा॥
पड़ी रुग्ण-शैया पर मेरी- पत्नी ने जननायक पाये।
दुःख देखते ही प्राणी का, बापू नंगे पैरों आये॥

कुष्ठ रोग से घिरे "परचुरे", बापू ने सेवा से सींचा।
भय का भूत भगा बापू ने- कुष्ठ रोग आँखों से खींचा॥
गाँधी जी का 'वर्धा आश्रम', स्वर्ग इसी भूतल पर देखो!
'सेवाग्राम' चले जाओ तुम, सेवा करते ईश्वर देखो!!

जहाँ के आश्रम-वासी भाई- हर सेवा करते जन जन की।
स्वयम् साफ़ करते पाख़ाना, थाह नहीं बापू के मन की॥
बापू हर मनुष्य की निधि थे, सब के सूरज थे धरती पर।
किस को अपना नहीं बनाया, बापू ने आत्मैक्य निभा कर॥









अन्तिम अनशन पर बापू के, मैंने कहा कि अनशन छोड़ो।
त्राहि त्राहि दुनिया में होगी, और न अपना अमृत निचोड़ो॥
मेरे घर में भूखे रह कर, मुझे न यम की तरह बनाओ।
ब्राह्मण भूखा रहता है जब, तब क्या जी सकते बतलाओ?
"पर मैं तो ब्राह्मण न तुम्हारा", "बापू! आप महा ब्राह्मण हैं।
महा ब्राह्मणों से भी ऊँचे, आप महा ब्राह्मण के प्रण हैं॥"
यह सुन कर हँस पड़े प्राण वे, पर अपना उपवास न छोड़ा।
प्रण पूरा कर के बापू ने- अपना अन्तिम अनशन तोड़ा॥
पर इस बार तोड़ कर नाता, बापू चले गये इस जग से।
अब भी सब कुछ पा सकते हैं, गाँधी जी के पावन पग से॥
कितनी सन्ध्यायें आती थीं, बापू पर छाया छाने को।
किन्तु आज सन्ध्या काली बन- आई बापू को खाने को॥
बापू की प्रार्थना-सभा में- अच्छे बुरे सभी आते थे।
गाँधी जी निर्मल वाणी से- अमृत सभी पर बरसाते थे॥
'बम घटना' के बाद उन्हों की- रक्षा को रख दिये सिपाही।
पथ पर चलता रहा निरन्तर, राम-भरोसे का वह राही॥
कहा उन्हों से जो आयेगा, अब हम उसकी झाड़ी लेंगे।
बापू बोले, मेरी रक्षा- राम करेंगे तो कर देंगे॥
मेरे वैद्य 'राम' हैं केवल, मेरी दवा 'राम' ही हैं बस।
मेरी रक्षा कर सकता है- केवल 'राम' नाम का ही रस॥
अन्त 'राम' ही के मन्दिर में- चला गया वह राम-दुलारा।
तिल तिल कर जल गया देश पर, जनता की आँखों का तारा॥
वह मनुष्य जो जन जन में रह, रटता था ईश्वर की माला।
आया कैसी घोर घटा में- चन्दा सूरज का उजियाला॥
मोतें आईं और लौट कर- चली गईं उन के सर पर से।
'तीस जनवरी' की सन्ध्या को- स्वप्न रह गया मरण-खबर से॥
स्वप्न देखता रहा रात भर, बापू से करता था बातें।
जाने बीत गईं दुनिया में- इसी तरह से कितनी रातें॥





कहा स्वप्न में उठ बापू ने, काम न यह नादान एक का।
यह पूरा षड्यन्त्र भयंकर– भारत पर छाया अनेक का॥
इधर उधर की और अनेकों– बातें करते रहे प्यार से।
मेरी भारी जीत हुई है, हिंसा की इस बड़ी हार से॥

लो ग्यारह बज गये, आप अब– मुझ को मरघट ले जायेंगे।
यमुना के उस प्रेम-किनारे– सुख से मुझे सुला आयेंगे॥
बस चैतन्य रूप में मैंने– वे अन्तिम दर्शन पाये थे।
आँख खुली तो बापू खोये, अन्धकार जग में छाये थे॥"

शोक-सिन्धु में हर प्राणी की– पीड़ा आँसू बहा रही थी।
संसृति ने लहरों पर उस दिन– शोक-सिन्धु की कथा कही थी॥
ऐसा प्राणी कौन कि जिसकी– आँखों से सागर न बहा हो।
शायद ही इस जड़ चेतन में– कोई रोये बिना रहा हो॥

राजनीति ही नहीं उस समय– हर निर्मिति मरघट में रोयी।
मानो शुभ सिद्धान्तों की माँ– हम सब के पापों से सोयी॥
सब लोकों के सब राष्ट्रों में– पीड़ा-पारावार उमड़ते।
फूल भूल से उच्छ्वास से– काले काले मेघ घुमड़ते॥



वेदना के फूल गीले, शूल से आँके।
शूल से आँके कि अपनी भूल से आँके॥

दृगों से मोती बरस कर बज्र पर टूटे।
सुमन पत्थर पर चढ़ा कर भाग्य ही फूटे॥
काव्य को विज्ञान के अभिशाप से तोला।
हृदय के वरदान शिशु को पाप से तोला॥

बूँद के प्यासे पपीहे कूल पर झाँके।
वेदना के फूल गीले, शूल से आँके॥





जननायक

कल्पना की लहरियों में विष न घोला क्या ?
दीप की जय-ज्योति पर उल्लू न बोला क्या ?
कृषक के आँसू धरा पर प्राण बन बरसे ।
प्राण ही पर प्राण पाने के लिये तरसे ॥



चाँद सूरज के निलय में राहु भी झाँके ।
वेदना के फूल गीले, शूल से आँके ॥

देश की स्वाधीनता में तम न झाँका क्या ?
प्यार को धिक्कार से जग ने न आँका क्या ?
भाग्य को वैधव्य के लघु तूल से तोला ।
अर्चना में भूल से विष भूल ने घोला ॥

धवल राका में बहे हैं अश्रु भी गाँ के ।
वेदना के फूल गीले, शूल से आँके ॥

चले फूल चुगने बापू के, 'राजघाट' पर चिता-किनारे ।
फूल चिता के चमक रहे हैं, या धरती पर चन्दा तारे ॥
चिता शान्त है, बापू सोये, धीरे धीरे फूल उठाओ !
जाग न जायें मेरे बापू, यमुने ! धीरे धीरे गाओ !!

अमृत दुग्ध से अभिसिंचित कर, जननायक के फूल उठाये ।
चुन चुन गंगा-जल में धो धो, ताम्र-पात्र में फूल सुलाये ॥
चन्दन केसर दुग्ध नारियल, गुणातीत तुलसीदल डाला ।
सागर आज भरा गागर में, जल थल नभ में उदित उजाला ॥

आज आरती की थाली में- बापू बन कपूर जलते हैं ।
भस्मी से सौरभ उड़ता है, चाँद चाँदनी में चलते हैं ॥
गंगा यमुना सरस्वती का- संगम लिये त्रिवेणी धारा--
फूल बसाने को मानस में, गीत सुनाती प्यारा प्यारा ॥





शान्त त्रिवेणी के गीतों पर– रीझे आज रिझाने वाले।
बन कर फन चले गाँधी जी, मानस! माला नयी बनाले!
तीर्थ त्रिवेणी के संगम पर– बापू की अस्थियाँ ले चले।
लहरें रोक न पाईं उनको, बापू अपनी नाव खे चले॥

'आशा खाँ– मन्दिर' की प्रतिमा, "बा" के फूल त्रिवेणी-जल में—
बाट देखते थे दीपक ले, आँखों की निर्मल छल छल में॥
पुण्य त्रिवेणी में प्यासी "बा"– निर्मल जल को सींच रही थी।
दूर देश से प्रिया प्राण को– पवित्रता से खींच रही थी॥

'राजघाट' से ताम्र-पात्र में– भस्मी भर संसार चल पड़ा।
तारो! तुमसे कहीं बड़ा है– गाँधी का परिवार यह बड़ा॥
वेदों की ध्वनि में घट लेकर– चली त्रिवेणी जनता सारी।
फूलों की वर्षा करती थी– फूलों पर फूलों की क्यारी॥

स्वतन्त्रता चलती थी ऐसे– जैसे विधवा की सुन्दरता।
जैसे नीर भरे प्यासे दृग, जैसे दुखिया की दुर्बलता॥
'दिल्ली' से विशेष गाड़ी में– बापू की अस्थियाँ ले चले।
फूलों से भर गई रेल वह, आँसू फूट दृगों से निकले॥

जननायक की जय जय गूँजी, स्वर लय से संसार भर गया।
श्रद्धा के श्यामल फूलों से– सारा शाश्वत सार भर गया॥
स्टेशन पर जनता ही जनता, गाड़ी में था सारा दर्शन।
वेद मन्त्र पढ़ते आकर्षण, मानो शिव का कोमल नर्त्तन॥

ऋषियों की सिद्धियाँ वहाँ थीं, निर्गुण वेद-मन्त्र पढ़ते थे।
संसृति वेदों की ध्वनि सुनती, शब्द शून्य नभ में चढ़ते थे॥
जन जन में आदर्श उस समय– मानो सगुण रूप रँग धारे।
आँसू धर्मशास्त्र पढ़ते थे, फूलों के कल्पना-किनारे॥

भारी भीड़ दर्शकों की थी, दर्शन करते थे दर्शन के।
फूलों में दर्शन कर लो तुम, जननायक जाते जन जन के॥
ताम्र-पात्र में फूल फूल के– देते हुए सुगन्ध जा रहे।
जन से जननायक बन कर थे– लेते हुए सुगन्ध जा रहे॥









जनायक

धरती माँ ने करवट बदली, नाच रहे ताण्डव-नटनागर।
सागर वहाँ जहाँ धरती है, धरती वहाँ जहाँ था सागर॥
यह मुट्ठी भर भस्म प्रलय की- मनचाही मिल कर रोकेगी।
फूलों की मुट्ठी भर भस्मी- तूफ़ानी सागर सोखेगी॥



चरण-धूलि चन्दन है इनकी, भस्मी उनका बन कर जाती।
आज रेल के इस डिब्बे में- मानो सोमलता लहराती॥
जाती आज जगत की आभा, मनुष्यता की ज्योति जा रही।
आज रेल के इस डिब्बे में- गंगा निर्मल गीत गा रही॥
ये उसकी अस्थियाँ जा रहीं- जिसमें तीनों लोक व्याप्त हैं।
जिसके फूल जा रहे उससे- फूलों में फल फूल प्राप्त हैं॥
लिये उजाला आया था वह, दिये उजाला चला जा रहा।
बत्ती बन, भर स्नेह हृदय का, देखो! दीपक जला जा रहा॥
जितने फूल हुए, होंगे जो, वे उन सब फूलों की माला।
माली सोया, फूल रो रहे, सूरज का रो रहा उजाला॥
आज उजाले में यह कैसा- अन्धकार है काला काला।
पत्थर! तब तक रो जब तक यह- भरे नहीं मानस का छाला॥
फूलो! क्यों अब हँसी नहीं है? क्योंकि नहीं वह फूल हमारा।
तारो! क्यों अब चमक न तुम में? क्योंकि आज छूटा 'ध्रुवतारा'॥
पेड़ो! किसे प्रणाम कर रहे? उसे जिसे पहिचान न पाये।
बादल! कब बरसा करते हो? बापू हमें याद जब आये॥

पग-पद्म पखार रहे किसके-
दृग-फूल लिये जल के झरने।
झरने झरते, करुणा झरती,
भव-भाव चले कविता करने॥
बरसे दृग-बादल काव्य भरे,
उन फूल सुगन्ध सुधा धन में।
यह तृप्ति चली जन के मन की,
सरिता नभ सागर के मन में॥



जय गूंज रही, चल रेल पड़ी,
दिनमान निहार रहे विधि को।
जनता उमड़ी पड़ती पथ में,
दृग देख रहे अपनी निधि को॥
चल रेल रही जिस मंज़िल से,
जननायक के जन झाँक रहे।
यमुना-तट संगम से मिलता,
यमुना जल-संगम आँक रहे॥

रसना रस-वेद उड़ेल रही,
जननायक की जय हो! जय हो!
तरुओं पर कोयल बोल रही,
सुखदायक की जय हो! जय हो!!
उड़तीं चिड़ियें जय बोल रहीं,
उड़तीं उड़तीं कविता कहतीं।
लहरें रस काव्य उछाल रहीं,
कविता सरिता रस में बहतीं॥

धुन में "धुन राम" सुना कलिके!
बलिदान सुने जनता सुनले।
इस फूल सुगन्धित सावन को,
कवि! काव्य-सरोवर से चुनले॥
अलि गूंज रहे रस-सागर में,
जब फूल लिये जनता चलती।
जलते तब दीप सुधाकर से,
जब ज्योति दिवाकर की ढलती॥

श्यामल बादल सौरभ लेकर,
नीर भरा मधुमास लुटाते।
फूल खिले रँगरेज बने घन,
रंग धरा पर छींट बिछाते॥







मानव की वह राख चली अलि !
मेघ बिखेर रहे दृग-मोती।
पल्लव से बिखरी सरसों पर–
कौन खड़ी दृग-हार पिरोती ?

पीपल सूख गये धरती पर,
सावन सूख गये, दृग-गीले।
सूख गई सरिता गति रो कर,
आज पड़े सब के मुँह पीले॥
हाय ! किसे अब स्वागत दे अलि !
कोयल गा कर गीत रसीले।
दीप गया बुझ, सूख गये तरु,
सुन्दर फूल पड़े सब पीले॥

किसने यह बाग़ उजाड़ दिया ?
किसने सुख के तरु तोड़ दिये ?
मन-मोहन से गउएँ बिछुड़ीं,
बन में फिरतीं, तृण छोड़ दिये॥
चल फूल रहे, झड़ फूल रहे,
पथ चूम रहे, पग चूम रहे।
चल फूल रहे, कृषि मूक खड़ी,
तरुओं पर पल्लव झूम रहे॥

रजनी भर याद लिये किसकी–
नभ-तारक बालक से रोते।
किसकी यह पीरभरी लय है ?
तरु, नीड़ गिरे, उड़ते तोते॥
तरु टूट गये, गिर नीड़ पड़े,
उड़ प्राण चले, करुणा छाई।
किसको उड़ ढूँढ रहे जुगनू ?
किसकी पग-धूलि हवा लाई ??



बरसात रुकी, रुक वायु गई,
पथ साथ चला, सरिता चलती।
जलती पथ की बटिया पथिका,
झरते झरने, धरती जलती॥
जल रेल धुँवा घुटता उड़ता,
मछली जल में जल के मरतीं।
सरिता-गति आज रुकी, लहरें–
जल में दुबकीं, जग से डरतीं॥

चन्दन धूलि लगा जन-गौरव,
तीर्थ 'प्रयाग' प्रभा पर आये।
फूल बिछे उस के पथ में अलि!
सुन्दर फूल 'जवाहर' लाये॥
शाश्वत फूल धरे मन में जब–
रेल रुकी प्रभु के गुण गाती।
गूंज उठे जय-घोष धरा पर,
दीपक गा रज दीप जलाती॥

कवियो! कविता करुणा-रस में,
सरिता पर संगम की प्यासी।
कविता कहती कवि! आज मुझे–
रच दे जननायक की दासी॥
पग-धूलि उठा रचना रच लो,
कविता कहती विधवा जैसी।
सुख देख हँसी, दुख देख हँसी,
दुनिया रँगती रचना कैसी?



कण कण में सौरभ बरसाते, शाश्वत फूल 'प्रयाग' आ गये।
भस्म आ गई चन्दन बन कर, धरा गगन पर मेघ छा गये॥
ताम्र-पात्र वह जिसके अन्दर– सब तत्त्वों के फूल धरे थे।
जितने रस रसना के अन्दर, वे सब घट में आज भरे थे॥





जननायक



चला जलूस भस्म का अद्भुत, मानो दिग्विजयी जाता है।
या जलूस यह बन-यात्रा का, रो रो राम राम गाता है॥
मानो आज प्रकृति रो रो कर- हरियाली को विदा कर रही।
सूखा सिन्धु और यह बदली- रो जलूस में नीर भर रही॥
खादी के फूलों की वर्षा- अम्बर से नभयान कर रहे।
आज फूल पेड़ों से झड़ झड़- धरती का दर्बार भर रहे॥
कात सूत की माला बुन बुन- पहिना रहीं देवियाँ रो रो।
अपनी आँखों के पानी में- हा! हा! वहाँ देवियाँ रो रो॥
यह जलूस कैसा जाता है, जनता उमड़ घुमड़ कर आती।
यह कैसा फूलों का घट है, जनता फूल चढ़ा कर जाती॥
अम्बर छिपा आज जनता से, धरती पर जनता की चादर।
जिस में सागर भरा हुआ है, आज जा रहा है वह गागर॥
फूलों का सौरभ जाता है, धरती का सौन्दर्य जा रहा।
ठहरो! मुझे चरण छूने दो, रोता हुआ किसान आ रहा॥
नीड़ों में रो रहे पखेरू, यह नीड़ों की नींव जा रही।
कवि का हृदय फटा जाता है, कोयल! कैसे गीत गा रही?
छोड़ गई बचपन में जननी, वह स्वतन्त्रता का शिशु रोता।
बीज पड़े रह गये अधूरे, माली सोया बोता बोता॥
फूल त्रिवेणी में जाते हैं, तरुण तिरंगे की छाया में।
किस पागल ने दाग़ लगाया- सोने सी सुन्दर काया में?
गंगा यमुना सरस्वती के- संगम पर संगम जाता है।
आज त्रिवेणी लिये तिरंगा- संगम बन कर लहराता है॥
मानो नभ-गंगा बापू पर- लहरों की निधि चली लुटाने।
जननायक की जय हो! जय हो!! गीत त्रिवेणी लगी सुनाने॥

अर्घ्य लिये पग पूज रही अलि!
फूल भरा घट देख त्रिवेणी।
संगम ले कर दौड़ पड़ी गति,
खोल रही विधवा वह वेणी॥





फूल धरे उस नाव नयी पर,
जो थल में जल में चलती है।
नाव चली अलि! नीर भरे दृग,
अर्घ्य लिये कविता ढलती है॥

'थल-जल मोटर' में घट धर कर– बैठे जगतपिता के बालक।
बोल उठीं संगम की लहरें– जय जय जय जय जय जगपालक!
'देवदास' वह 'रामदास' के– साथ 'पटेल', 'जवाहर' जल में।
अस्थि-पात्र ले चली नाव वह– माँ के शीतल अन्तस्तल में॥



चल नाव पड़ी, जय गूंज उठी,
जननायक की जय हो! जय हो!
जलवाद्य बजे करुणा-रस में,
जगपालक की जय हो! जय हो!!
जल को दृग-नाव निहार रही,
लहरें रस-धार उड़ेल रहीं।
जल की परियें जननायक से–
जल की लहरों पर खेल रहीं॥

जल में मिल के जल रूप बने–
मछली कछुवे जल के वासी।
पद-पद्म पखार रही जल से,
सरिता चिर दर्शन की प्यासी॥
वह एक अनेक विवेक वहाँ,
लहरें जिसमें करतीं क्रीड़ा।
घुलतीं मिलतीं चलतीं लहरें,
अवगुण्ठन में जग की व्रीड़ा॥

लहरों की माला पर नौका, नौका पर घट घट का वासी।
तैर रहा घट, लहरें लपकीं, बदली बरस रही है प्यासी॥
लहरें चक्कर काट रही हैं, मानो परिक्रमा करती हैं।
या वे अर्घ्य चढ़ातीं घट पर, भाव त्रिवेणी में भरती हैं॥







जननायक



चक्कर लगा त्रिवेणी-तट पर, अस्थि-नाव संगम पर आई।
संगम पर तीनों नदियों ने- लहरों की माला पहिनाई॥
वेद-मन्त्र जल में से गूंजे, सुने स्वस्ति-वाचन कण कण में।
वेद सुनाता था दुनिया को- मिलता हुआ क्षितिज क्षण क्षण में॥

अस्थि प्रवाह करीं बापू की, 'रामदास' ने निर्मल जल में।
मानो दूध धरा ने छोड़ा, दुग्ध-उत्स थे उज्ज्वल जल में॥
संगम में अस्थियाँ छोड़ दीं, अर्घ्य बन गया वह पवित्र जल।
जल में जलज मिल गया पल में, नीर बन गया नीरज निर्मल॥

ऐसे फूल मिले संगम में, जैसे दूध दूध में मिलता।
ओ३म् ओ३म् तत सत् में स्वर लय, पुष्प लहरियों में मिल खिलता॥
सौरभ शान्त समीर सुमन वे, सत्यम् शिवम् सुन्दरम् शाश्वत।
शान्त शान्ति में शयन कर रहा, या कि शेष शैया भव भारत॥

चित्रकार ने एक रंग से- रंग बिरंगे चित्र बनाये।
श्यामल बादल किस पर रीझे, रिम झिम करते झुक झुक आये॥
क्यों तारे धर लिये हृदय में, क्यों चन्दा को चुरा ले गये?
क्यों वियोगिनी के नयनों में- अपना खारी नीर दे गये??

मेघों से कह रही पुजारिन, मुझे अर्घ्य के लिये नीर दो!
जिसकी तस्वीरें आँखों में, उस को मेरी मधुर पीर दो!!
मैं उस की स्मृति में बदली हूँ, जिसके छाया चित्र चल रहे।
मैं युग युग से जला रही हूँ, अम्बर में जो दीप जल रहे॥

मूक तारे जल रहे हैं- गगन-गंगा के किनारे।
दीप बुझ कर कह रहे हैं- टूटते रहते सितारे॥
फूल जग से कह रहे हैं- अर्चना बलिदान क्या है!
कह रही यात्रा पथिक से- पगों की पहिचान क्या है!!

प्रेम-तरु को ढूँढती है- लीन हो कर आज छाया।
कह रही धरती गगन से- मेघ नयनों को बनाया॥
धूप सौरभ में मिली अलि! धूप में सौरभ मिला वह।
मिल गया जल में जलज अलि! नीर नयनों से गया बह॥



घास की गठरी धरा पर- धर खड़ी वह कौन रोती !
कौन पतझड़ सी प्रलय में- आँसुओं का बोझ ढोती !!
ये फटे मानस धरा के, तुम इन्हें कहते गुफ़ायें।
पर्वतों की पंक्तियों पर- क्यों न पत्थर दृग झुकायें ॥

ह्रस्व हरियाली हुई है, दीर्घ सत विस्तार में लय।
करुण कोमल कल्पना से, काव्य घन पर कुसुम किसलय ॥
साथ हरियाली बटोही, स्वर्ण पगडण्डी जगत की।
लूट ली किसने न जाने, हाय ! मन-मण्डी जगत की ॥

स्वप्न जो जग देखता था, याद उसकी रह गई है।
रह गई है बात बाक़ी, दीपिका जल बह गई है ॥
राख मुट्ठी में लिये जग- हँस रहा है, रो रहा है।
स्वप्न ही में क्या ! मनुज तो- जागरण में सो रहा है ॥

नीड़ जिस तरु पर लगाया, पेड़ ही वह गिर पड़ा अब।
दे रहा आवाज़ किसको, कौन जंगल में खड़ा अब ?
बावले ! संसार में तो- बुलबुले का साथ केवल।
विश्व भंगुर स्वप्न है यह, चल रहा तू एक दो पल ॥

गिर पड़े जो वेदना से, वे बने चट्टान टीले।
क्या धरा पर ढूँढते हैं- खँडहरों के नयन गीले ?
वेदना रोती विजन में, ग्राम गिरते जा रहे हैं।
मूक कच्चे घर व्यथा से- धूलि-स्वर में गा रहे हैं ॥

मोतियों के कोष भर भर, ग्राम किसके पूजते पग ?
घूमते विस्तार बनकर- पूज्य जिसके पैर डगमग ॥
रत्न धरती में छिपा कर, ग्राम निर्धन से खड़े ये।
गाय मानो खो गईं सब, 'कृष्ण' खोये से पड़े ये ॥

मूक 'वृन्दावन' न जाने- ढूँढता पग-धूलि किसकी ?
आज 'गोकुल' में खड़ी हैं- बेसहारे गाय जिसकी ॥
'गोपियाँ' जिसके विरह में- बावली सी डोलती हैं।
ग्राम-बालायें उसी से- शब्द लेकर बोलती हैं ॥







जनायक

वह खड़ा है देख लो सब, शान्त 'सेवाग्राम' बन कर।
शान्त शुभ 'साबरमती' से– आ रही वह हवा छन कर॥
आज के निर्माण में से– वह सुगन्धित पवन बहता।
आ रही यह ध्वनि कहाँ से– मैं सदा सब ओर रहता॥



तुम धरती पर पेड़ लगाना, मैं हरियाली बन आऊँगा।
तुम धरती पर फूल खिलाना, मैं सौरभ बन बस जाऊँगा॥
तुम जग में कृषि केसर बनना, मैं उसमें फल फूल बनूँगा।
तुम सरिता में तरिणी बनना, मैं सरिता का कूल बनूँगा॥
तुम बन यत्न अगर ढूँढोगे, तो मैं सिद्धि बना आऊँगा।
तुमने यदि निर्माण किया तो, मैं निर्मिति का फल लाऊँगा॥
दीपक के दिल में लौ जलती, ज्वाला में वह तप करता है।
घोर तमिस्रा में तब ही तो– दीपक का प्रकाश भरता है॥
मैं ही दीपक में प्रकाश हूँ, मैं ही हूँ मनुष्य की भाषा।
मैं ही हूँ मेघों की वर्षा, मैं ही हूँ कवि की अभिलाषा॥
जिज्ञासा से मिलता हूँ मैं, मानव मेरा ही स्वरूप है।
दीख रहा यह जो कुछ वह सब– मेरा ही प्रतिबिम्ब रूप है॥

मानस मन्दिर में मनमोहन–
भावुकता कवि की बन आये।
शब्द सुधा उसकी रसना पर,
पाहुन-प्राण प्रसून चढ़ाये॥
शान्ति सुधा-रस सार वही अब,
राम स्वरूप किसान वही है।
स्वर्ग वही, जगदीप वही गुण,
गोकुल-गौरव ज्ञान वही है॥
प्राण वही, मनुहार वही प्रिय,
पावस की झनकार वही है।
नीरद, नीरज, नीर वही अलि!
नाव वही, पतवार वही है॥



काव्य वही, श्रम-सार वही रस,
खेत वही, गुण ग्राम वही है।
सूरज चाँद वही रस-सागर,
शान्ति वही, अभिराम वही है॥

गोकुल का वह कृष्ण कलाधर,
मानव की जय-ज्योति वही है।
कुञ्ज वही, अलि-गुंज गिरा वह,
संगम की सुखधार वही है॥
मानस मोर मराल वही शिव,
सौरभ-सार बयार वही है।
निर्धन मित्र दरिद्र मिला जब,
मोहन की दृगधार वही है॥

श्वास बने घन, सागर लेकर,
चूम रहे नभ में शशि का मुख।
रो कर आज किसान रहा कह–
छीन लिया वह सावन का सुख॥
अम्बर लेकर दीप गया जब,
हा! दुनिया पहिचान सकी तब।
जीवन लेकर मेघ गये जब,
जीवन को यह जान सकी तब॥

क्यों अलि! गूंज रहे कमलों पर?
पागल! ये पग पंकज उज्ज्वल।
क्यों शलभो! जलते जलतों पर?
भावुकते! जय-दीप रहे जल॥
सूरज! क्यों तुम दूर गये बस?
क्यों कि धरा पर पाप गये चढ़।
अंक सजा नभ में उसके हित,
सागर लेकर मेघ गये चढ़॥







जनायक



वृन्त ! कहो किसके पग पावन–
पूज रहे प्रिय फूल झुला कर ।
वायु ! झुला मत भाव लता पर,
डोल रही स्मृति प्रीति भुला कर ॥
चंचल आँचल में स्मृति ले उड़,
ला मनमोहन पास बुला कर ।
स्वप्न मुझे वह याद नहीं अब,
पाँव गये कब स्वप्न सुला कर ॥

सागर में अमरत्व मिला वह,
मेघ बनी मनुहार तपस्या ।
अम्बर में रस-धार गई वह,
प्रश्न हुए हल शून्य समस्या !!
इन्दु ! कहाँ वह चिन्दु कलाधर ?
सिन्धु ! सुधाकर आज कहाँ है ?
ले चल चारु चकोर वहीं पर–
पूर्ण प्रभाकर प्यार जहाँ है ॥
नीरज आज खिले जिससे वह–
सूरज की मुख ज्योति कहाँ है ?
तापस कौन कहाँ तप में रत,
जो तम में तप तेज यहाँ है ॥
फूल खिला किस ओर कहाँ अलि !
जो घनसार सुगन्ध यहाँ है ।
सौरभ फैल रहा जिसका यह,
केसर का वह फूल कहाँ है ?



